श्री प्रभाचंद्रसूरि कृत

श्री प्रभावक चरित्र

गुजराती अनुवाद

संपादक
मु. श्री जयानंदविजयजी

।। णमो वद्धमाणस्स ।।

।। णमो राइंदसूरिस्स ।।

ॐ

श्री प्रभाचंद्रसूरि कृत

श्री प्रभावक चरित्र

(जेमां जुदा-जुदा बावीस महान् पुरुषो (आचार्य महाराजो)ना
चरित्रो ऐतिहासिक दृष्टिए आपवामां आवेला छे.)

: आशीर्वाद :

आचार्यदेव श्री विद्याचंद्रसूरीश्वरजी

मुनिराज श्री रामचंद्रविजयजी

: संपादक :

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

प्राप्तिस्थान

शा. देवीचंद छगनलालजी
सुमति दर्शन, नेहरू पार्क के सामने,
माघ कोलोनी, भीनमल-343029 (राज)
फोन : (02969) 220387

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढी
साँथू - 343026
जिला : जालोर (राज.)
फोन : 02973 - 254221

श्री विमलनाथ जैन पेढी
बाकरा गाँव- 343025 (राज.)
फोन : 02973 - 251122 / 9413465068

शा. नागालाल वजाजी खींवसरा
गोपीपुरा, काजी का मैदान
शांतिविला अेपार्टमेन्ट, सुरत, (गुजरात)
फोन : 2422650

महाविदेह भीनमाल धाम
तलेटी हस्तिगिरि, लिंक रोड,
पालीताणा - 364 270
फोन : (02848) 243018

: प्रकाशक :

श्री गुरु रामचंद्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, राज

: संचालक :

१. सुमेरमल केवलजी नाहर, भीनमाल, राज.

२. मीलियन ग्रुप, सूराणा, राज. मुंबई, दिल्ली, विजयवाडा

३. एम.आर. इम्पेक्स, १६-ए हनुमान टेरेस, दूसरा माला, तारा टेम्पल लेन
लेमीग्टन रोड, मुंबई-७, फोन-२६८०१०८६

४. श्री शांतिदेवी बाबुलालजी बाफना चेरीटेबल ट्रस्ट, मुंबई,
महाविदेह भीनमालधाम, पालीताना, ३६४२७०

५. संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप,
राज, जैनम, अक्षत बेटा पोता कुंदनमलजी भुताजी
श्री श्रीमाळ वर्धमान गौत्रीय आहोर (राज.)
कल्पतरु ज्वेलर्स, ३०५ स्टेशन रोड, संघवी भवन, थाना, (५) ९

६. दोशी अमृतलाल चीमनलाल पांचशो वोरा, थराद
पालीताना में उपधान कराया उसकी साधारण की आय में से ।

७. शत्रुंजय तीर्थे नव्वाणुं यात्रा के आयोजन निमित्ते शा. जेठमल,
लक्ष्मणराज, पृथ्वीराज, प्रेमचन्द, गौतमचंद, गणपतराज, ललीतकुमार, विक्रमकुमार,
पुष्पक, विमल, प्रदीप, चिराग, नितेष बेटा-पोता कीनाजी संकलेचा परिवार मेंगलवा,
फर्म-अरिहन्त नोवेल्हटी, GF3 आरती शोपींग सेन्टर,
कालुपुर टंकशाला रोड, अहमदाबाद.

८. थराद निवासी भणशाळी मधुबेन कांतिलाल अमुलख भाई परिवार

९. शा कांतिलाल केवलजी गांधी सियाना निवासी द्वारा २०६२ में
पालीताना में उपधान करवाया उस समय साधारण की आय से ।

१०. लहेर कुंद ग्रुप, शा जेठमलजी कुंदनमलजी मेंगलवा (जालोर)

११. २०६३ में चातुर्मास एवं उपधान करवाया उस समय पद्मावती सुनाने के उपलक्ष में शा
चंपालाल, जयंतिलाल, सुरेशकुमार, भरतकुमार प्रिन्केश, केनित, दर्शित, चुन्नीलालजी
मकाजी कासम गौत्र त्वर परिवार गुड़ा बालोतान्
'जय चिंतामणी' १०-५४३ संतापेट नेल्लूर (आ.प्र.)

१२. पू. पिताश्री पूनमचंदजी मातुश्री भुरीबाई के स्मरणार्थे
पुत्र पुखराज, पुत्रवधु लीलाबाई पौत्र फुटरमल, महेन्द्रकुमार, राजेन्द्रकुमार अशोक कुमार,
मिथुन, संकेश, सोमील, बेटा पोता परपोता
शा पूनमचंदजी भीमाजी रामाणी गुडाबालोतान्
नाकोडा गोल्ड, ७० कंसारा चाल, बीजा माले रुम नं. ६७, कालबादेवी मुंबई

१३. शा सुमेरमल, मुकेशकुमार, नितीन, अमीत, मनीषा, खुशबु बेटा पोता
पेराजमलजी प्रतापजी रतनपुरा बोहरा परिवार, मोदरा (राज.)
राजरतन गोल्ड प्रोड., के.वी.एस. कोम्पलेक्ष, ३/१ अरुंडलपेट, गुन्टूर.

१४. एक सद् गृहस्थ, धाणसा

१५. गुलाबचंद राजकुमार छगनलालजी कोठारी अमेरीका, आहोर (राज.)

१६. शांतिरुपचंद रवीन्द्रचंद्र, मुकेश, संजेश, ऋषभ, लक्षित, यश, ध्रुव, अक्षय
बेटा पोता मिलापचंदजी मेहता, जालोर-बेंगलोर.

१७. वि. सं. २०६३ में आहोर में उपधान तप आराधना करवायी एवं
पद्मावती श्रवण के उपलक्ष में पिताश्री थानमलजी मातुश्री सुखीदेवी,
भंवरलाल, घेवरचंद, शांतिलाल, प्रवीणकुमार, मनीष, निखिल,
मित्तुल,आशीष, हर्ष, विनय, विवेक बेटा पोता कनाजी हकमाजीमुथा
शा. शांतिलाल प्रवीणकुमार एण्ड को. राम गोपाल स्टीट,विजयवाडा

१८. बाफना वाडी में जिन मन्दिर निर्माण के उपलक्ष में मातुश्री प्रकाशदेवी
चंपालालजी की भावनानुसार पृथ्वीराज, जितेन्द्रकुमार, राजेशकुमार, रमेशकुमार,
वंश, जैनम, राजवीर,
बेटा-पोता चंपालालज सांवलचन्दजी बाफना, भीनमाल.
नवकार टाइम, ५९,नाकोडा स्टेट न्यू बोहरा बिल्डींग, मुंबई - ३.

१९.शा शांतिलाल, दीलीपकुमार, संजयकुमार, अमनकुमार, अखीलकुमार
बेटा पोता मूलचंदजी उमाजी तलावत आहोर (राज.)
राजेन्द्र मार्केटींग, पो.बो. नं. १०८, विजयवाडा.

२०. श्रीमती सकुदेवी सांकलचंदजी नेथीजी हुकमाणी परिवार, पांथेडी, राज.
राजेन्द्र ज्वेलर्स, ४ रहेमान भाई बि.एस.जी. मार्ग, ताडदेव, मुंबई-३४.

२१. स्व. हस्तीमलजी भलाजी नागोत्रा सोलंकी स्मृति में हस्ते परिवार बाकरा(राज.)

२२.शा दूधमल, नरेन्द्रकुमार, रमेशकुमार बेटा बोता लालचंदजी मांडोत परिवार बाकरा (राज.)मंगल आर्ट, दोशी बिल्डींग ३-भोईवाडा,भूलेश्वर,मुंबई २

२३.कटारीया संघवी लालचंद रमेशकुमार,गोतमचंद,दिनेशकुमार, महेन्द्रकुमार, रवीन्द्रकुमार बेटा पोता सोनाजी भेराजी धाणसा (राज.)
श्री सुपर स्पेअर्स, ११-३२-३ए पार्क रोड, विजयवाडा, सिकन्द्रबाद.

२४.शा समरथमल सुकराज, मोहनलाल महावीरकुमार, विकासकुमार,कमलेश अनिल, विमल, श्रीपाल भरत फोला मुथा परिवार सायला (राज.)
अरुण एन्टरप्राईजेस, ४ लेन, ब्राडी पेठ, गुन्टूर-२.

२५. शा नरपतराज, ललीतकुमार महेन्द्र, शैलेष, निलेष, कल्पेश, राजेश, महीपाल, दिक्षीत, आशीष, केतन, अश्वीन, सींकेश, यश
बेटा पोता खीमराजजी थानाजी कटारीया संघवी आहोर (राज.)
कलांजली ज्वेलर्स, ४/२, ब्राडी पेठ, गुन्टूर-२.

२६.शा तीलोकचंद मयाचंद एन्ड कं. ११६, गुलालवाडी, मुंबई - ४.

२७.शा लक्ष्मीचंद, शेषमल, राजकुमार, महावीरकुमार, प्रवीणकुमार, दीलीपकुमार, रमेशकुमार बेटा पोता प्रतापचंदजी कालुजी कांकरीया, मोदरा (राज.) गुन्टूर.

२८. एक सद्गृहस्थ (खाचरौद)

२९. शा भंवरलाल जयंतिलाल, सुरेशकुमार, प्रकाशकुमार, महावीरकुमार, श्रेणिककुमार, प्रितम, प्रतीक, साहिल, पक्षाल बेटा पोता - परपोता
शा समरथमलजी सोगाजी दुरगाणी बाकरा (राज.)
जैन स्टोर्स, स्टेशन रोड, अंकापाली - ५३१००१.

३०. शा.गजराज,बाबुलाल,मीठालाल,भरत,महेन्द्र,मुकेश,शैलेष,गौतम,
नीखील, मनीष, हनी बेटा पोता, रतनचंदजी, नागोत्रा सोलंकी
साँथू (राज) फूलचंद भंवरलाल, १०८ गोवींदप्पा नायक स्ट्रीट, चेन्नई-१

३१. शेठ माँगीलाल, मनोहरमल, बाबुलाल जयंतिलाल जुठमल बेटा पोता
सुमेरमलजी कुन्दनमलजी लुंकड गोल उमेदाबाद (राज.)

३२. संघवी भंवरलाल मांगीलाल, महावीर नीलेश, बन्टी, बेटा पोता
हरकचंदजी श्री श्रीमाल परिवार आलासनराजेश इलेक्ट्रीकल्स
४८, राजा बिल्डींग, तिरुनेलवेली - ६२७ ००१

३३. भंसाली भंवरलाल, अशोकुमार, कांतिलाल, गोतमचंद,
राजेशकुमार, राहुल, आशीष, नमन, आकाश, योगेश,
बेटा बोता लीलाजी कसनाजी
मु. सरत. मंगल मोती सेन्डीकेट, १४/१५ एस. एस. जैन मार्केट,
एम.पी. लेन चीकपेट क्रोस, बेंगलोर - ५३.

३४.स्व. मातृश्री मोहनदेवी पिताजी श्री गुमानमलजी की स्मृति में
पुत्र कांतिलाल जयन्तिलाल, सुरेश, राजेश सोलंकी जालोर
प्रविण एण्ड कं. १५-८-११०/२, बेगम बाजार, हैदराबाद - १२.

३५. शा. कान्तीलालजी, मंगलचन्दजी हरण, दाँसपा, मुम्बई

३६. गोल्ड मेडल इन्डस्ट्रीस प्रा. ली., रेवतडा, मुम्बई, विजयवाडा, दिल्ली

३७. राज राजेन्द्रा टेक्सटाईल्स एक्सपोर्टस लिमीटेड
१०१, राज भवन, दौलतनगर, बोरीवली (ईस्ट), मुम्बई, मोधरा निवासी

३८. संघवी पुखराजजी नेकाजी, *धाणसा निवासी*
संघवी इलेक्ट्रीकल्स, १३०, ओपनकारा स्ट्रीट, कोइमबटूर - ६४१ ००१.

३९. शा. ताराचन्दजी भोनाजी, आहोर, मुंबई.

आर्थिक सहयोगी

मु: श्री जयानंद विजयजी

मु. श्री दिव्यानंद विजयजी मु. श्री. वैराग्यानंद विजयजी

मु. श्री. तत्वानंद विजयजी मु. श्री रैवतचंद्र विजयजी

आदि ढाणा एवं शासन दीपिका प्रवतिनी विदुषी

सा. श्री मुक्तिश्रीजी की सुशिष्याआ का

चातुर्मास एवं इनकी ही निश्रा में उपधान तप गुडा नगर में

शा चंपालालजी चुनीलालजी मकाजी कासम गोत्रत्वर परिवार

गुडा बालोतान निवासी ने

वि. सं. २०६३ में करवाया उस समय की ज्ञान खाते

की आय में से इस ग्रंथ का प्रकाशन करवाया

प्रत १०००

द्रव्य सहायक

श्री आदिनाथ श्री पार्श्वनाथ आदि जिन बिंब

श्री पुंडरिकस्वामी श्री गौतमस्वामी

श्री राजेन्द्रसुरि गुरु मूर्ति की प्रतिष्ठा

आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा.

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में

संवत् २०५० वैशाख सुदि ६ को संपन्न हुई उसके आलंबन में

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढी

सांथू - ३४३ ०२६

प्रत ७५०

आर्थिक सहयोगी

सरत निवासी शा सागरमलजी लीलाजी भंसाली

मांगीलाल, नेमीचन्द, उत्तमचंद, अमितकुमार,

अभिषेक कुमार, मनोहर, नरेश, जिनेन्द्र कुमार

भेरु स्टील हाउस

३३०, एवन्यु रोड, बेंगलूर - ५६० ००२.

प्रत २५०

ग्रंथ संबंधी वक्तव्य

आ ग्रंथमां बावीस आचार्य महाराजाओना जीवन वृतान्त आपवामां आवेल छे. वर्तमानकाळमां थयेला महापुरुषोना अनेक चरित्रो होवा छतां आ **''प्रभावक चरित्र''**ना जेवो ग्रंथ जैन साहित्य-जैन ईतिहासमां उच्च कोटीमां मूकवा जेवो होइ तेवा ग्रंथो बहु ओछा छे. आ ग्रंथ चरित्रनो होवा छतां ऐतिहासिक छे अने जे-जे सैकामां जे-जे महान् आचार्य विद्यमान हता ते समयमां देशनी सामाजिक, नैतिक, राजकीय अने धार्मिक प्रवृत्ति केवी हती ते जाणवा साथे भव्य जीवोने ते-ते महान् पुरुषोना चरित्रो अने ते-ते वखतना देश, काळ, भावमांथी पोताना व्यवहार अने धार्मिक जीवनमां अनुकरण करवुं केटलुं शक्य छे तेनो पण अनुभव थाय छे.

आवा जीवन चरित्रोना वांचनथी श्रद्धा दृढ थाय छे, आत्मानी निर्मळता थाय छे अने मननपूर्वक वांचनथी तेवा महान् पुरुष थवानी घडीभर भावना प्रगट थाय छे.

कहेवामां आवे छे के सामान्य मनुष्य पण श्रद्धा, ज्ञान अने चारित्रथी पोतानुं जीवन उत्तम बनावी शके छे अने **तेवुं उन्नत जीवन बनाववा माटे आवा प्रबंधो वांचवानी पण तेटली ज अगत्य छे.**

धार्मिक शिक्षण क्रममां जीवन चरित्रोनुं शिक्षण आवश्यक क्रम छे. कारण के वार्ता के कथा द्वारा बाळ जीवोने धार्मिक शिक्षण आपवानी रीत सरल अने सुंदर छे; आवा आवा अनेक कारणोथी आ सभा तरफथी सीरीझ-ग्रंथमाळा प्रगट करवानो धारो करी उत्तम अने पवित्र आत्माओना जीवन चरित्रो प्रगट करवामां आवे छे. आ अगाउ **श्री नेमिनाथ** चरित्र, **श्री सुपार्श्वनाथ** चरित्र, **श्री विमलनाथ** चरित्र, **श्री चंद्रप्रभु** चरित्र अने ते सिवाय अन्य महा पुरुषो अने महा सतीओना चरित्रोना ग्रंथो प्रगट करवामां आवेल छे, ते जो के गया काळना-केवळज्ञानी महा पुरुषोना वखतना छे, परंतु आ वर्तमानकाळ (पंचम आरामां) थयेल महान् आचार्यो-पवित्र आत्माओना चरित्रो पण साथे-साथे आपवा जोईए, तेम धारी आ **''प्रभावक चरित्र''** प्रगट करवामां आवेल छे; तेमां आवेल चरित्रो घटनाओ ऐतिहासिक छे. ग्रंथ कर्ता, ग्रंथ रचवानो काळ अने प्रशस्ति संबंधी उल्लेख वगेरे प्रस्तावनाना लेखक महात्माए आपेल होवाथी अहिं जरूर नथी.

आ सभानी विनंतिथी विद्वद्वर्य मुनिराज **श्री कल्याणविजयजी** महाराजे आ प्रबंध उपर लखेली विस्तृत पर्यालोचना के जे आपवामां आवेली छे ते प्रथम वांचवाथी आ प्रबंधनी खास उपयोगी घटनाओनुं विशेष ज्ञान थशे अने उपयोगिता जणाशे.

आ ग्रंथनी गौरवता अने उपयोगिता माटे आचार्य महाराज **श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी**ना शिष्यरत्न पंन्यास **श्री ललितविजयजी** महाराजे घणी प्रशंसा करतां आ सभा तरफथी प्रगट करवा सेक्रेटरीने आज्ञा करी हती, तेमज केटलीक उपदेश द्वारा सहाय पण मळी हती, जेथी तेओश्रीनो पण आभार मानतां आ सभा तरफथी आ ऐतिहासिक साहित्यनो अमूल्य ग्रंथ प्रगट थतां तेनी अभिवृद्धि थई छे.

आ ग्रंथना भाषांतरनी शरूआत करतां पहेलां परमकृपाळु, प्रातःस्मरणीय, शांतिमूर्ति प्रवर्तकजी महाराज **श्रीकान्तिविजयजी** महाराजने पाटण मुकामे जई आ सभाना सेक्रेटरीए आ ग्रंथनुं भाषांतर सभा तरफथी प्रगट करवानी ईच्छा जणावी, तथा तेनी शुद्ध प्रतो क्यां हशे? ते संबंधी सेक्रेटरीए विनंति करतां उक्त महात्माए जणाव्युं

के, में केटलीक प्रतो जोई छे, परंतु तेनी शोधेली (शुद्ध) प्रत हजी सुधी जोवामां आवी नथी, जेथी मूळ ग्रंथ छपायेल छे तेना उपरथी भाषांतर करावव्युं अने ज्यां स्खलना लागे त्यां ईतिहासनो विषय जेमनो होय तेवा विद्वान् पुरुषनी दृष्टिए मूकी छपाववुं. एटला उपरथी परमकृपाळ मुनिराज **श्री कल्याणविजयजी** महाराजने आ ग्रंथ दृष्टिगोचर करवा तेमज तेना उपर ऐतिहासिक दृष्टिए प्रस्तावना-पर्यालोचना लखवा आ सभा तरफथी विनंति करवामां आवतां ते स्वीकारी ते काम तेओश्रीए हाथ धर्युं अने तेनी प्रस्तावना तथा पर्यालोचना घणा ज परिश्रम वडे ऐतिहासिक दृष्टिए लखी आपी; तेमज ग्रंथशुद्धि करी आ ग्रंथनी गौरवतामां वृद्धि करी छे अने ग्रंथने सर्वांग सुंदर बनाव्यो छे ते माटे आ सभा पोतानो आनंद जाहेर करवा साथे ते महात्मानो जेटलो उपकार माने तेटलो ओछो छे.

उपरोक्त बताव्या प्रमाणे आपवामां आवेली सुचना माटे पूज्य कृपाळु **प्रवर्तकजी** महाराजनी आ सभा आभारी छे तेटलुं ज नहि परंतु उक्त महात्मा अने तेमना शिष्य-अने प्रशिष्यरत्न मुनिराज **श्री चतुरविजयजी** महाराज तथा मुनिराज **श्री पुण्यविजयजी** महाराज, के जेमना अमूल्य प्रत्यनो वडे अने तेओनी विद्वत्तानो संपूर्ण लाभ मेळवी आ सभा तरफथी प्रगट थतां विविध साहित्यना मूळ ग्रंथो प्रगट करी आ सभा साहित्यसेवा करी रहेल छे, तथा जैन समाज आनंदपूर्वक तेने वधावी ले छे अने जैनेतर आ देश अने युरोपीयन विद्वानो ते प्रगट थतां साहित्य माटे पोतानो संपूर्ण आनंद जाहेर करवा साथे सभानी प्रशंसा करे छे जे माटे त्रणे महा पुरुषोनी आ सभा सदा माटे अत्यंत ऋणी अने आभारी छे.

आ ग्रंथमां आवेल प्रभावशाळी आत्माओना जीवनचरित्रो श्रद्धा तथा मननपूर्वक वांचता आत्मामां शांत रस उत्पन्न थवा साथे, धर्मरूपी महा मंगळने प्रगट करावी आत्मभावना, आत्मदर्शन अने आत्मानंद प्रगट थाय छे. छेवटे आ उत्तम ग्रंथना श्रवण, मनन अने पठन पाठनथी अनेक भव्यात्माओ तेवा उच्चपदना अधिकारी बने तेवी आ सभा परमात्मानी प्रार्थना करे छे.

आत्मानंद भवन
संवत १९८७ कल्पधर

गांधी वल्लभदास त्रिभुवनदास
सेक्रेटरी.

विनय धर्म का मूल होने से आराधक आत्मा को अपने जीवन में विनय को अग्रस्थान देकर प्रत्येक क्रिया में प्रत्येक वचन में, प्रत्येक चिंतन में विनय को अपनाना चाहिए।

विनय हीन व्यक्ति कितने ही सेवा के कार्य कर लेगा पर उसके वे कार्य अशुभकर्मोपार्जन के खाते में जाकर उसको दुःखदायक ही बनते हैं।

विनय धर्म का पालन केवलज्ञानी भी करते है तो हमें तो अवश्य करना चाहिए।

- जयानंद

प्रस्तावना

ग्रंथनी उपयोगिता —

वर्तमान जैन साहित्यमां सेंकडो चरित्रग्रंथो विद्यमान छे; छतां **'प्रभावक चरित्र'**नी कोटिना ग्रंथो विरल हशे. जो के पूर्वे **द्वासप्तति** प्रबंध जेवा अनेक ऐतिहासिक ग्रंथरत्नो जैन साहित्यमां मोजूद हता पण आजे ते क्यांय अस्तित्व धरावता होय तेम जणातुं नथी; हा, केटलाक छूटा छवाया प्राचीन प्रबंधो हजीपण भंडारोमां मळी आवे छे, तेमज कथावलि वगेरेमां पण आमांना केटलाक प्रबंधो संग्रहायेला छे; छतां प्रस्तुत ग्रंथमां जेटला प्रभावकोना प्रबंधो संग्रहीत थया छे तेटला बीजे क्यांय जोवामां आवता नथी. प्रबंध चिन्तामणि, चतुर्विंशति प्रबंध आदि संग्रह ग्रंथो आजे विद्यमान छे खरा पण तेमां केवळ प्रभावकोनां ज चरित्रो नथी, पण जैन तथा जैनेतर राजाओ, मंत्रिओ अने कविओना प्रबंधो पण त्यां वर्णवेला होई प्रभावक जैन आचार्योना प्रबंधो संख्यामां घणा ज थोडा जोवाय छे. आवी परिस्थिति होवाथी उपर्युक्त कथन बिलकुल अतिशयोक्ति विनानुं गणाशे के प्रभावकचरित्रनी कोटिना ग्रंथो विरल हशे!

नामकरण —

आ ग्रंथनुं **'प्रभावक चरित्र'** ए प्रसिद्ध नाम ग्रंथकारनुं पोतानुं आपेलुं छे के पाछला लेखकोनुं? ते निश्चित कही शकाय तेम नथी, केमके मूल ग्रंथमां क्यांय पण आ नामनो उल्लेख जोवातो नथी; पण प्रत्येक प्रबंधना अंतमां तेमज ग्रंथनी समाप्तिमां ग्रंथकार पोतानी आ कृतिने **''पूर्वर्षि चरित्र रोहणगिरि''** आ नामथी ओळखावे छे. हा, ग्रंथना प्रारंभ भागमां एक स्थले ग्रंथकार ''प्रभावक मुनीन्द्राणां वृत्तानि'' आवो उल्लेख करे छे अने आ उल्लेखना ज फलितार्थ रूपे तेमणे आनुं बीजुं नाम **''प्रभावक चरित्र''** राख्युं होय तो नवाई जेवुं नथी. कारण के आमां वर्णवेलां दरेक आचार्य कोईने कोई प्रकारे प्रभावक हता अने तेमनुं चरित्र आमां वर्णवेल होवाथी आ प्रचलित नाम पण बराबर बंधबेसतुं ज छे.

प्रभावक शब्दनी परिभाषा —

'प्रभावक' शब्दनो सामान्य अर्थ 'प्रभावशाळी' एवो थाय छे, पण जैनशासनमां आनो कंईक पारिभाषिक अर्थ मानेलो छे, तेथी आ स्थळे 'प्रभावक' शब्दनो अर्थ 'जैनशास्त्रना अतिशय ज्ञानथी, उपदेशशक्तिथी, वादशक्तिथी के विद्या आदि गुणथी जिनशासननी उन्नति करनार जैन आचार्य' आवो लेवानो छे.

जैन शास्त्रोमां आवा आठ प्रकारना प्रभावको मानेला छे, जेनो निर्देश नीचेनी परंपरागत गाथामां थयेलो छे–

पावयणी १ धम्मकही २ वाई ३ नेमित्तिओ ४ तवस्सीय ।
विज्जा ६ सिद्धोय ७ कई ८ अट्ठेव पभावगा भणिया ।।

अर्थात् – प्रावचनिक, धर्मकथी, वादी, नैमित्तिक, तपस्वी, विद्यावान्, सिद्ध अने कवि आवी रीते आठ प्रकारना प्रभावक कह्या छे.

प्रभावक चरित्रना वर्णनने अनुसारे आना मुख्य चरित्रनायक **वज्र स्वामि** आदि २२ महापुरुषो नीचे मुजब प्रभावकता गुणविशिष्ट कही शकाय छे.

१.	**श्री वज्र स्वामि**	–	प्रावचनिक, धर्मकथी अने विद्याबली
२.	**श्री आर्यरक्षित**	–	प्रावचनिक
३.	**श्री आर्यानन्दिल**	–	प्रावचनिक अने सिद्ध
४.	**श्री कालकसूरि**	–	प्रावचनिक अने सिद्ध
५.	**श्री पादलिप्तसूरि**	–	कवि, विद्याबली अने सिद्ध (पादलिप्तसूरिना प्रबंधमां रुद्रदेवसूरि, श्रमणसिंह, आर्य खपट अने उपाध्याय महेन्द्रनुं पण वर्णन छे, जेओ अनुक्रमे सिद्ध, नैमित्तिक, विद्याबली अने सिद्ध कही शकाय.)
६.	**श्री विजयसिंहसूरि**	–	सिद्ध
७.	**श्री जीवदेवसूरि**	–	सिद्ध
८.	**श्री वृद्धवादी**	–	वादी (वृद्धवादीनी साथे, सिद्धसेनदिवाकरनो प्रबंध पण छे. सिद्धसेनने कवि अने सिद्ध कही शकाय.)
९.	**श्री हरिभद्रसूरि**	–	वादी, प्रावचनिक अने नैमित्तिक
१०.	**श्री मल्लवादी**	–	वादी
११.	**श्री बप्पभट्टि**	–	कवि.
१२.	**श्री मानतुंगसूरि**	–	कवि अने सिद्ध
१३.	**श्री मानदेवसूरि**	–	प्रावचनिक अने विद्याबली
१४.	**श्री सिद्धर्षि**	–	धर्मकथी अने कवि
१५.	**श्री वीरगणि**	–	विद्याबली
१६.	**श्री शांतिसूरि**	–	कवि, वादी अने प्रावचनिक
१७.	**श्री महेन्द्रसूरि**	–	नैमित्तिक
१८.	**श्री सूराचार्य**	–	कवि अने वादी
१९.	**श्री अभयदेवसूरि**	–	प्रावचनिक
२०.	**श्री वीरसूरि**	–	वादी अने विद्याबली
२१.	**श्री देवसूरि**	–	वादी
२२.	**श्री हेमचंद्रसूरि**	–	प्रावचनिक, धर्मकथी अने कवि.

प्रस्तुत चरित्रमां वर्णवेल कया आचार्य कया प्रकारना प्रभावक हता ते उपर आपेल तालिकाथी जणाशे.

ग्रंथनुं ऐतिहासिक महत्त्व —

प्रभावक चरित्र कंई पौराणिक चरित्र ग्रंथ नथी, पण प्रभावक पूज्य जैनाचार्योनो ईतिहास छे. संभव छे के आमां कवि कल्पनानो रंग चढ्यो हशे अने क्यांक दंतकथाओनो पण समावेश थयो हशे के जेनो ग्रंथकार प्रथमथी ज नीचेना शब्दोमां एकरार करे छे—

बहुश्रुत मुनीशेभ्यः प्राग्ग्रन्थेभ्यश्च कानिचित्
उपश्रुत्येति वृत्तानि वर्णयिष्ये कियन्त्यपि ।।१-१५।।

अर्थात् – केटलाक चरित्रो बहुश्रुत आचार्योथी सांभळी अने केटलांक प्राचीन ग्रंथोमां जोईने अत्रे वर्णन करीश.

आवो ज आशय ग्रंथकारे ग्रंथनी समाप्तिमां पण प्रगट कर्यो छे. आथी आटलुं तो सिद्ध छे के **प्रभावक चरित्र**मां जे हकीकत तेना कर्ताए लखी छे, ते बधी प्राचीन ग्रंथोमां लखेली न ज हती, आमां लखेलां कतिपय वृतान्तो मात्र वृद्ध पुरुषोने मुखे सांभळेलां हतां अने चरित्रने सरस तथा सर्वांगीय बनाववाने खातर आमां उमेर्यां हतां. आवी रीते वस्तुस्थितिनुं स्पष्टीकरण करीने ग्रंथकारे पोतानी जवाबदारी ओछी करी छे. **कालान्तरमां लखेल ग्रंथोनी हकीकत अक्षरे अक्षर साची ज होय एवो दावो करी शकाय नहि** अने सांभळेली हकीकत तो तेथीए ओछी वजनदार गणाय, आवी स्थिति होवाथी आ चरित्रमां क्यांक क्यांक अप्रमाणिकता अथवा विरुद्धता आवी गई होय तो ते स्वाभाविक छे अने ते क्षन्तव्य गणावी जोईए.

वीसमी सदीनी परिष्कृत दृष्टिथी जोनारा विद्वानोने भले **"प्रभावक चरित्र"** विशुद्ध ईतिहास न जणाय पण चौदमी सदीनी सादी अने कथारस प्रधान दृष्टिनो विचार करतां **आचार्य प्रभाचंद्र**नी आ कृति, एना कर्तानी संग्रहशीलता अने ईतिहासप्रियतानी एक साक्षी पूरे छे; एटलुं ज नहि पण भिन्न-भिन्न समयना जैन ईतिहासनां सुंदर प्रकरणो पूरां पाडे छे. कया समयमां जैनधर्मनी केवी स्थिति हती, तेनो कया भागमां विशेष प्रसार हतो, तेना पर समयनी शी असर थई हती अथवा रही हती, ए बधी वातोनां स्पष्ट अने गर्भित पूरावा आ ग्रंथनां भिन्न-भिन्न प्रबंधो उपरथी जाणी शकाय छे. आ बधी वातोनो विचार करतां आ ग्रंथ केटलुं बधुं ऐतिहासिक महत्त्व धरावे छे ते विचारक पाठकगण स्वयं विचारी लेशे.

ग्रंथरचनानो उद्देश —

प्रस्तुत ग्रंथनी रचना करवामां कर्तानो शो उद्देश होवो जोईए? ए प्रश्ननुं समाधान ग्रंथकारनां वचनोथी ज थई जाय छे, प्रशस्तिना १७मा पद्यमां जणाव्युं छे के—

श्रीवज्रानुप्रभूतप्रकटमुनिपतिप्रष्ठवृत्तानितत्तत्-
ग्रन्थेभ्यः कानिचिच्च श्रुतधरमुखतः कानिचित् संकलय्य ।
दुष्प्राप्यत्वादमीषां विशकलिततयैकत्र चित्रावदातं,
जिज्ञासैकाग्रहाणामधिगतविधयेऽप्युच्चयं स प्रतेने ।।१७।।

अर्थात् - आ भिन्न-भिन्न प्रबंधो जिज्ञासुओने एक ठेकाणे मळवा मुश्केल हता, तेथी जाणवा निमित्ते वज्रस्वामी अने ते पछीना धुरंधर आचार्योनां वृतान्तो ते ते ग्रंथो थकी अने शास्त्रना जाण आचार्योना मुखथी सांभळीने आचार्यप्रभाचंद्रे बधानो आ संग्रह कर्यो.

आ कथनथी स्पष्ट जणाय छे के ग्रंथकारनो उद्देश मात्र आ ऐतिहासिक प्रबंधोने एकत्र संग्रह करीने वाचक गणनी जिज्ञासा पूर्ण करवानो हतो. **विषयगत सत्यासत्यनी परीक्षा के प्रबंध वर्णित घटनावलीना समय परत्वे प्रबंधकारे कंई पण उहापोह कर्यो नथी.** आर्यवज्र, कालकाचार्य अने सिद्धर्षि जेवानो सुप्रसिद्ध सत्तासमय पण प्रबंधमां लखवानी ग्रंथकारे तस्दी लीधी नथी. आथी आ वात तो चोक्कस छे के ग्रंथ रचवामां ग्रंथकारनो उद्देश ईतिहास प्रतिपादन करवानो नहि पण पूर्वाचार्योनी कथा लखवा पूरतो हतो, एटलुं छतां पण ग्रंथकारनी दृष्टि मर्यादाशील होय तेम जणाई आवे छे. केमके **कथा लखवा छतां तेमणे ईतिहास बगाड्यो नथी** अने **कविता रस पोषवा छतां कल्पनाजाळ नीचे सत्य ढांक्युं नथी.**

प्रबंधोनो अनुक्रम —

प्रबंधकारे पोतानी मान्यता प्रमाणे प्रत्येक प्रबंध कालानुपूर्वीथी राख्यो छे; छतां आमां सर्वत्र कालक्रम

जळवायो नथी. दाखला तरीके आमां **कालक प्रबंध** ४थो राख्यो छे, पण कालक्रम प्रमाणे आ प्रबंध २जा अथवा ३जा नंबरमां मूकवो जोईतो हतो. **हरिभद्रसूरि**नो प्रबंध ९मा नंबरमां मूक्यो छे अने मल्लवादिसूरिनो १०मामां, पण जोईए एथी विपरीत (श्री मल्लवादिनो ९मामां अने श्री हरिभद्रसूरिनो १०मामां) कारण के हरिभद्रसूरि करतां मल्लवादी प्राचीन हता. ११-१२ अने १३ नंबरना **बप्पभट्टिसूरि, मानतुंगसूरि** अने **मानदेवसूरि**ना प्रबंधो अनुक्रमे १३-१२ अने ११मा नंबरे जोईता हता, केमके कालक्रमथी प्रथम मानदेव पछी मानतुंग अने ते पछी बप्पभट्टि थई गया छे. **शांतिसूरि, महेन्द्रसूरि** अने **सूराचार्य** आ त्रणे आचार्यो सम कालीन हता; छतां आमां महेन्द्रसूरि कंईक वृद्ध छे अने तेथी आ त्रणमां एमनो नंबर प्रथम राख्यो होत तो वधारे योग्य गणात, बाकीना प्रबंधोनो क्रम लगभग कालानुक्रम प्रमाणे ज छे.

प्रबंध नायकोना कार्यक्षेत्रनो विचार करीए तो १. वज्र, २. आर्यरक्षित अने आर्यानन्दिलनुं मुख्य कार्यक्षेत्र मालवदेश हतुं. ४. कालकसूरि अने ५. पादलिप्तसूरिनो मगधदेश, मालवो अने प्रतिष्ठाननगर (आंध्र) ६. विजयसिंहसूरिनुं भरूच (गुजरात), ७. जीवसूरिनुं वायड (गुजरात), ८. वृद्धवादि अने सिद्धसेननुं उज्जयनि (मालवो), भरूच (गुजरात) अने कर्मारनगर (गौडदेश) वगेरे, ९. हरिभद्रसूरिनुं चित्तोड (मालवो), १०. मल्लवादिनुं भरूच अने वल्लभी (गुजरात), ११. बप्पभट्टिनुं कनोज अने ग्वालियर (मध्यप्रदेश), १२. मानतुंगसूरिनुं बनारस अथवा कनोज, १३. मानदेवसूरिनुं नाडोल (मारवाड), १४. सिद्धर्षिनुं भिन्नमाल (ते वखते भूगोळ प्रमाणे गुजरात अने आजना प्रमाणे मारवाड), १५. वीरगणिनुं भिन्नमाल, थराद, थरा अने पाटण (गुजरात), १६. शांतिसूरिनुं थराद, पाटण (गुजरात) अने धारानगरी, १७. महेन्द्रसूरिनुं धारानगरी (मालवो), १८. सूराचार्यनुं पाटण अने धारा, १९. अभयदेवनुं पाटण, धोलका, थांभणां, पत्यपद्र, २०. वीरसूरिनुं , २१ देवसूरिनुं अने २२. हेमचंद्रसूरिनुं मुख्य कार्यक्षेत्र पाटण (गुजरात) हतुं प्रबंध नायकोना आ कार्यक्षेत्रना विवेचन उपरथी आपणे ईतिहासना एक महत्त्वपूर्ण प्रकरणनो स्फोट करी शकीए छीए. भगवान महावीरना शासननो अभ्युदय पूर्वदेशमां थई तेनो प्रकाश अनुक्रमे उत्तरभारत, मध्यभारत अने पश्चिमभारतमां थईने हूणोना समयमां दक्षिण तरफ वळ्यो अने राजपूताना तथा गुजरातमां फेलाणो, आवी जे ईतिहास अन्वेषकोनी मान्यता छे तेने आ प्रबंध नायकोना प्रादेशिक कार्यक्षेत्र विषयक क्रमथी टेको मळे छे. विक्रमनी पांचमी सदीथी गुजरातमां जैनोनो फेलावो थवा मांड्यो हतो अने बारमी तेरमी सदी सुधीमां गुर्जरभूमि जैनधर्मनुं मुख्य स्थळ बन्युं हतुं. आ प्रकारना अनुमानने पण आ प्रबंधो उपरथी पुष्टि मळे छे.

ग्रंथकार अने ग्रंथरचनानो समय —

हवे आपणे प्रस्तुत ग्रंथ **प्रभावक चरित्र**ना कर्ता आचार्य **प्रभाचंद्रसूरि** अने एमना आ ग्रंथना निर्माणसमयनो विचार करीए.

प्रभाचंद्रसूरिए प्रस्तुत ग्रंथना अंतमां लखेली विस्तृत प्रशस्ति उपरथी जणाय छे के तेओ चंद्रकुलमांथी प्रगटेल राजगच्छना आचार्य **चंद्रप्रभसूरि**ना शिष्य हता.

आचार्य प्रभाचंद्रना कहेवा प्रमाणे प्रद्युम्नसूरिनी पासे त्रिभुवनगिरिना स्वामी 'कर्दम' राजाए दीक्षा लीधी अने ते **धनेश्वरसूरि** नामना आचार्य गच्छपति थया त्यारथी चंद्रगच्छ ए 'राजगच्छ'ना नामथी प्रसिद्ध थयो.

प्रभाचंद्रे ए प्रशस्तिमां पोतानी एक गुर्वावली आपेली छे जेमां प्रद्युम्नसूरिथी मांडीने पोता सुधी १० आचार्योनो परिचय कराव्यो छे, आपेल परिचय प्रमाणे एमनी वंशावली नीचे प्रमाणे बने छे.

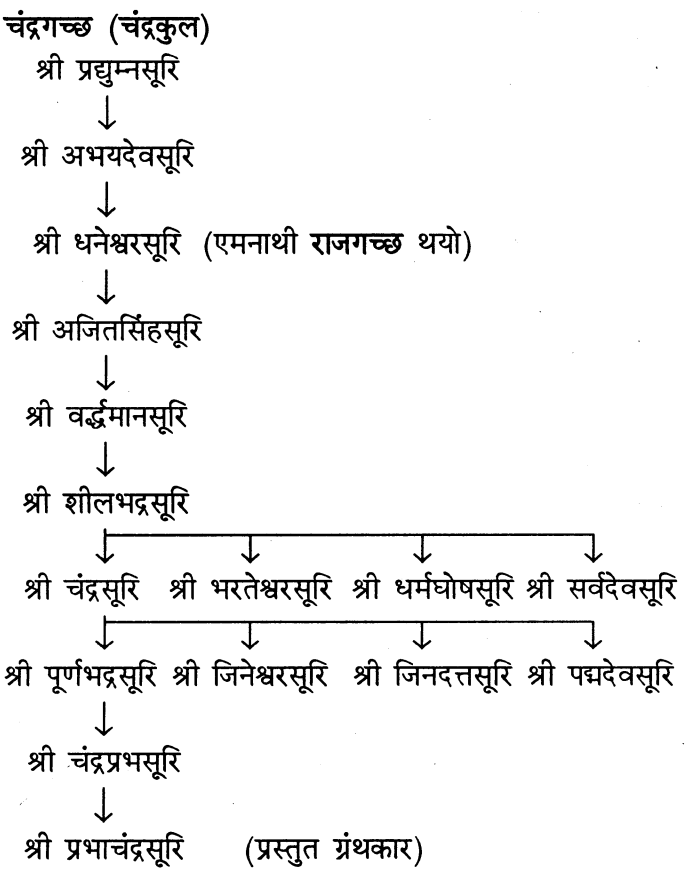

आ पट्टावलि प्रमाणे प्रस्तुत ग्रंथकार आचार्य **प्रभाचंद्र** चंद्रगच्छ अथवा चंद्रकुलना राजगच्छनी परंपराना आचार्य हता; प्रसिद्ध वादमहार्णव ग्रंथकार **आचार्य अभयदेवसूरि** एमना आठमा पट्टगुरु थता हता.

ग्रंथकारे प्रत्येक प्रबंधनी समाप्तिमां **चंद्रप्रभसूरि**नो गुरु तरीके, **प्रद्युम्नसूरिनो ग्रंथशोधक** तरीके अने पोताने ग्रंथकार तरीके नामोल्लेख कर्यो छे अने साथे ज पोताने 'राम अने लक्ष्मी'ना पुत्र बतावीने पोताना मातापिताना नामो पण सूचवी दीधां छे.

आचार्य प्रभाचंद्र पोते **चंद्रप्रभसूरि**ना शिष्य हता छतां एमने **प्रद्युम्नसूरि** उपर अनन्यतुल्य श्रद्धा हती, एना परिणामे एमणे प्रथम, तृतीय, पंचमादिक दरेक एकांतरितनप्रबंधना अंतमां **प्रद्युम्नसूरि**नी प्रशंसामां एक एक खास पद्य लख्युं छे अने तेमां क्यांय तीर्थोरूपे, क्यांक कल्पवृक्षरूपे, क्यांय लौकिक देवोरूपे, क्यांय वाणी सुधारक तरीके, क्यांक काव्य विषयक अर्थदाता तरीके **प्रद्युम्नसूरि**नी स्तुति करी छे अने एक ठेकाणे तो पोतानो तेमना शिष्य तरीके उल्लेख कर्यो छे. आथी समजाय छे के **प्रद्युम्नसूरि**ए प्रस्तुत ग्रंथनुं संशोधन मात्र ज नहि कर्युं होय, पण **प्रभाचंद्रसूरि**ने साहित्यनो अभ्यास करावीने कवि बनावनार पण **प्रद्युम्नसूरि** ज होय तेम लागे छे अने एज सबबथी (कारणथी) **प्रभाचंद्राचार्ये** पोताने तेमना शिष्य तरीके उल्लेख्या हशे.

ग्रंथकारे पोतानो प्रस्तुत ग्रंथमां जे परिचय आप्यो छे तेनो सार उपर प्रमाणे छे; एथी वधारे आपणे एमना संबंधमां जाणता नथी अने **प्रभावक चरित्र** उपरांत बीजो पण कोई ग्रंथ प्रस्तुत ग्रंथकारे बनाव्यो हशे के केम? ते कही शकाय तेम नथी; केमके प्रस्तुत ग्रंथ अने एमां आपेल परिचय सिवाय **प्रभाचंद्राचार्य**ना संबंधमां विशेष

हकीकत अमारा जोवा के जाणवामां आवी नथी, पण प्रस्तुत ग्रंथनी लेखनशैली अने केटलाक शब्द प्रयोगो उपरथी जणाय छे के **'प्रभावक चरित्र'** ए **प्रभाचंद्रसूरिनी** जुवान अवस्थानी कृति छे अने आ कृति एमने योग्य ग्रंथकार अने कवि तरीके पूरवार करी आपे छे, तेथी आपणे एमनी बीजी कृतियोनी पण आशा तो राखीए ज. जो आ ग्रंथकारे लांबी उंमर भोगवी हशे तो ए उपरांत बीजा पण केटलाक ग्रंथो बनाव्या ज हशे, पण एमनो बीजो कोई पण ग्रंथ दृष्टिगोचर न थवाथी ए विषयमां कंई पण निश्चित कही शकाय तेम नथी.

प्रस्तुत ग्रंथ रचाईने विक्रम संवत् १३३४ना **चैत्रसुदि** ७ शुक्रवार अने पुनर्वसु नक्षत्रमां संपूर्ण थयो हतो, एम ग्रंथना अंतमां कर्ताए ज जणाव्युं छे एटले ए विषयमां उहापोह करवानी जरूर नथी.

उपसंहार —

प्रभावक चरित्र मूल ग्रंथ संवत १९६५मां निर्णयसागर प्रेसमां छपायो हतो, पण ते पुस्तक एटलुं बधुं अशुद्ध रही गयुं हतुं के साधारण वांचनारने माटे ते लगभग निरुपयोगी जेवुं हतुं अने हजारो अशुद्धिओथी भरपूर आ पुस्तकने आधारे आनुं भाषांतर करवुं तो तेथीए वधारे मुश्केल हतुं, आथी आना **भाषांतरमां केटलाक अंशमां खामी रही गई छे** ते वांचको ध्यानमां राखशे अने ज्यां क्यांय अर्थमां गडबड जणाय अथवा **जैन शैलीथी** विपरीत अर्थ जणाय तो ते अशुद्ध पुस्तकनुं परिणाम जाणी क्षन्तव्य गणशे अने सुधारीने वांचशे एवी आशा छे. अमोए घणी महेनते मूल पुस्तकने घणे अंशे सुधारी लीधुं छे अने ते सुधारेल मूल पुस्तकना आधारे ज ''प्रबंधपर्यालोचना''ना शीर्षक नीचे दरेक प्रबंधनी संक्षिप्त समालोचना लखी छे, जेमां केटलाक प्रबंधोनो संक्षिप्त कथासार अने समालोचना बंने लख्यां छे अने केटलाकना खास मुद्दाओ उपर आलोचना मात्र लखी छे. समय अने साधनोनी कमीना कारणे प्रबंधो उपर जेटलुं ऐतिहासिक अवलोकन लखी शकाय तेटलुं लख्युं नथी छतां जे कंई **''प्रबंधपर्यालोचन''**मां लख्युं छे तेथी ईतिहास रसिको संतुष्ट थशे एवी आशा छे.

वाचकगणने प्रार्थना छे के तेओ पुस्तक वांचे ते पहेलां आ 'प्रबंधपर्यालोचन' वांची ले. आ उपरथी तेमने प्रबंधनी खास खास घटनाओ संबंधी ऐतिहासिक तथ्यनी साथे भाषांतरगत केटलीक **अस्पष्ट वातोनो** पण खुलासो मळी रहेशे.

मु. कवराडा (मारवाड)
ता. १४/८/३१

– मुनि कल्याणविजय

सत्य का शोधन करना प्रत्येक चिंतक का कर्तव्य होता है। स्वयं के चिंतन में आगम सम्मत्त जो सत्य दिखायी दे उसे जगत के सामने रखना ही चाहिए।

आज्ञा से समझने योग्य पदार्थों में तर्क को स्थान न देना और तर्क से समझने योग्य हकीकतों को आज्ञा में न ले जाना, यह सत्य जीवन में उतारना चाहिए।

– जयानंद

प्रस्तावना

परम कृपाळु परमात्माना शासनमां अनंता आत्माओ अनादिना कर्म समूहने खपावीने अनंत सुखने पाम्या. ते आत्माओना अपेक्षा भेदे बे भेद पाडी शकाय. एक स्व-पर कल्याण करीने अव्याबाध स्थानने पाम्या. एक स्वकल्याण ज करनारा थया. अर्थात् पोते पोतानुं ज कल्याण करवामां निमग्न रह्या.

स्व-पर कल्याण करनाराओमां आठ भेद पूर्वाचार्योए बताव्या छे. जेमने प्रभावक कह्यां छे.

पावयणी धम्मकही वाई नेमित्तिओ तवस्सीय ।
विज्जा सिद्धो य कई अट्ठेव पभावगा भणिया ।।

अर्थात् - १. प्रावचनिक, २. धर्मकथी, ३. वादी, ४. नैमित्तिक, ५. तपस्वी, ६. विद्यावान्, ७. सिद्ध, ८. कवी आ आठ प्रकारना प्रभावक कह्या छे.

प्रभावक शब्दनो अर्थ शासननी प्रभावना करनारा. एमां पण कोईक पोते पोताना कल्याणमां शिथिल आदरवाळा अने शासननी प्रभावना, शासनरक्षा माटे सतत प्रयत्न शील पण होय छे.

श्री प्रभाचंद्रसूरिजी कृत आ श्री प्रभावक चरित्रमां श्री वज्रस्वामिथी लईने श्री हेमचंद्रसूरिजी सुधी २२ आचार्योना चरित्रो शासननी प्रभावना करनाराओनी अपेक्षाए लेवामां आवेल छे.

बावीस चरित्रोनी अन्तर्गत पण केटलाक ए महापुरुषो जे प्रभावकनी कोटिमां आवे एमना पण चरित्रोनो समावेश थयो छे.

प्रतिक्रमण, कथा, सामान्य ज्ञानना पुस्तको लखता, छपावता. मारो विचार पूर्वजो द्वारा लिखित साहित्यने पुनः प्रकाशित करवानो थयो अने ए विचार अमलमां मूक्यो. अने श्री दशवैकालिक टीकानुं भाषांतर, श्री पन्नवणा सूत्र टीकानुं भाषांतर, श्री ठाणांगजी टीकानुं भाषांतर छपाव्या अने साथे जे कोई लेख मने समाजोपयोगी लाग्या ते लेखो पण पुस्तकाकारे छपाव्या. तेथी लखवानुं ओछुं थयुं. मने एम लाग्युं के हुं जे लेख लखुं एवा ज लेखो कोईना लखेला मळे तो ए ज लेखनो एमना नामे ज प्रचार करवो ए वधारे हितावह छे. एथी ए कार्य ज्ञानना जिर्णोद्धारना रूपे करुं छुं.

हवे आ श्री प्रभावक चरित्र वांच्युं अने छपाववानो विचार थयो. ते वाचकोना करकमलमां छे.

आ चरित्रोना विषयमां पंडित पंन्यास श्री कल्याण विजयजी जालोरवाळाओ ए पर्यालोचनामां सुंदर प्रकाश पाड्यो छे. वाचकोए पर्यालोचना वांचीने पुस्तक वांचवुं जेथी समज फेर न थाय.

विशेषमां आ पुस्तकमां मने पण जे मुद्दाओ विचारणीय लाग्या ते पण अहीं मूकुं छुं. विद्वानो एना पर पण विचार करे.

१. श्री वज्रस्वामिने देवोए आकाश गामिनी विद्या आपी हती. तो पछी आचारांग सूत्रना महापरिज्ञा अध्ययनमांथी आकाश गामिनी विद्याना उद्धारनी वात कई रीते संगत थाय?
२. आ पुस्तकना मंगलाचरणमां लक्ष्मीदेवीने नमस्कारनी वात एक आचार्यश्रीने माटे कई रीते संगत थाय?
३. नागकांता देवीए एक सो पुत्रोने जन्म आप्यो. एम लखेल छे. तो शुं देवीओ पुत्रोने जन्म आपे? के आ केवल आख्यान ज छे.

४. 'अमे त्यां आवतां पर्युषण पर्व करवुं' एम लखेल छे. तो आ वात निश्चित थायने के ए समयमां पर्युषण भाद्रवा सुद ५ पहेलां थतां हतां.

५. राजाए आपेल द्रव्यने 'गरीब साधर्मी बंधुओ अने चैत्योना उद्धार माटे ते द्रव्यनो एक साधारण भंडार कर्यो. अर्थात् गुरु चरणे धरेल द्रव्यनो गरीब साधर्मिकना उद्धारमां पण उपयोग थयेल छे. पर्यालोचनमां पण आज वात लखेल छे.

आथी सूरिराज उपालंभपूर्वक सरस्वतीने कहेवा लाग्या—जिनशासनना विरोधीने तुं केम पोषे छे? कारण के पूर्वजो पासेथी एम सांभळवामां आव्युं छे के तुं सम्यग्दृष्टि होय छे. देवीए कह्युं—**हुं जैननी विरोधी नथी.**

आ प्रश्नोत्तरमां सरस्वतीदेवी नियमा सम्यग्दृष्टि छे ए मान्यता सत्य देखाती नथी. बीजी वात देवीए कह्युं के हुं **जैननी विरोधी नथी. तो जैनोनी ज छुं. एम पण नथी ज.**

एटले सम्यग्दृष्टि होत तो देवी आम कहेत के हुं जैनोनी ज छुं एम न कह्युं ए अने बौद्ध पंडितने गुटिका आपी. ए परथी सिद्ध थाय के आ सरस्वती देवी समकिति ज छे आ बाबत पण वर्तमानना जैन संघे विचारवानी छे.

आ प्रभावक चरित्रनी अन्तर्गत जे महापुरुषोना चरित्रो वर्णवेला छे तेओनी अन्तर्गत शिथीलाचारी पण छे. जेओ हाथी पर बेठेला छे. पण एओना कार्यो द्वारा शासननी प्रभावना थवाथी ज एमने प्रभावकोनी गणतरीमां लीधेल छे.

शासन प्रभावना पण बीजा बौद्धादिदर्शनोना सिद्धांतोने पडकारी जैन सिद्धांतोनी सत्यता स्वीकृत करावववा द्वारा करी अनेकोने जैनधर्मावलंबी बनाववानुं कार्य करेल छे अने तेथी एमनी शिथिलता पण गौण बनी गयी हती.

वर्तमानना जे आचार्यादि मुनिओ नेताओने बोलावी शासन प्रभावनाना नामे स्वप्रभावनानुं कार्य करे छे एओ ए विचारवुं जोईए के पूर्वना राजाओ आचार्योने बोलावता हता अने आजना आचार्यो राजनेताओने बोलावे छे. तो शुं एनाथी शासन प्रभावना थाय के शासन हीलना. आनापर वर्तमानना सकल संघे विचारवुं जोईए.

आ ग्रंथनी जे प्रति संस्कृतमां छे ते अशुद्ध होवाथी भाषांतरमां पण अशुद्धिओ रहेल छे एम प्रस्तावनामां पंडित पंन्यास श्री कल्याणविजयजीए लखेल छे ज. आ पुस्तकनुं बीजु प्रुफ आवी गया पछी आ.श्री मुनिचंद्र सूरीश्वरजीए संशोधित करीने श्री प्रभावक चरित्र छपावेल छे ते जाणवाथी एमनी पासे ए चरित्र मंगावीने जेटलुं बन्युं एटलुं एना आधारे सुधारेल छे. अने टीप्पणो एना आधारे लख्या छे. आ प्रसंगे ए **आचार्यश्री मुनिचंद्र सूरीश्वरजीनो आभार मानुं छुं**

शुभम्

२०६३ फागण वद ६
भांडवपुर आदीश्वरदादानी
पारणा होलमां मूर्ति स्थापन प्रसंगे.

– जयानंद

आ. श्री मुनिचंद्रसूरीश्वरजी संपादित श्री प्रभावकचरित्र अन्तर्गत संपादकीय-विवरण

प्रसिद्ध ईतिहासविद् पं. श्री कल्याणविजयजी गणिवरे लखेल अनेक ऐतिहासिक चर्चाओथी समृद्ध 'प्रबंध पर्यालोचन' साथे आ. श्री प्रभाचंद्रसूरि विरचित **'प्रभावकचरित्र'** ग्रंथ गुजराती अनुवाद अनेक टिप्पणो अने परिशिष्टो साथे प्रगट थई रह्यो छे ते घणा हर्षनो विषय छे

आ ग्रंथनी रचना विक्रम संवत् १३३४मां थइ छे. आचार्य श्री वज्रस्वामिथी मांडीने आचार्यश्री हेमचन्द्रसूरि म.सा. सुधीना २२ प्रभावक पुरुषोना प्रबंधोनी गुंथणी आ ग्रंथमां करवामां आवी छे. आ उपरांत पण आ ग्रंथमां बीजा घणा प्रभावकोना जीवन आदि अति मूल्यवान सामग्रीओनो खजानो छे. आ उपरांत पण आ ग्रंथमां बीजा घणा प्रभावकोना जीवन आदि अति मूल्यवान सामग्रीओनो खजानो छे. 'प्रबंध' अने 'चरित्र'नी व्याख्या करतां आ. श्री राजशेखरसूरिजीए प्रबंधकोशना प्रारंभमां कह्युं छे के—''तीर्थंकरो अने आ. श्री आर्यरक्षितसूरिजी सुधीना आचार्योना चरित्रोने 'चरित्र' अने पाछळना आचार्योना अने श्रावकोना चरित्रोने 'प्रबंध' कहेवाय.''

प्रस्तुतग्रंथने उपरोक्त बन्ने व्याख्याओ लागु पडी शके तेम छे. जो के दरेक चरित्रना अंते 'पूर्वर्षि-चरित्ररोहणगिरि' विषे आ आटलामुं शिखर पूर्ण थयुं एवुं लखाण मळे छे अने ग्रंथना अंते 'पूर्वर्षिचरित्र' संपूर्ण थयुं एवो उल्लेख ग्रंथकारे स्वयं कर्यो होवा छतां आ चरित्र 'प्रभावक चरित्र' तरीके ज प्रारंभथी ख्याति पामी चुक्युं छे.[1]

ग्रंथ अने ग्रंथकार :-

५७०४ श्लोकप्रमाण कद धरावतां आ ग्रंथनुं सर्वप्रथम प्रकाशन ई.स. १९०९मां (विक्रम संवत् १९६५) निर्णयसागर प्रेस तरफथी थयेल. पं. हीरानंद शर्मा द्वारा संपादित आ संस्करण अनेक अशुद्धिना भंडार जेवुं छे.

आ अशुद्ध संस्करणना आधारे आ ग्रंथनो गुजराती अनुवाद करावी श्री जैन आत्मानंद सभाए विक्रम संवत् १९८७मां प्रभावक चरित्रनुं भाषांतर प्रसिद्ध करावेल छे. आ ग्रंथनुं भाषांतर करावावानी भावना थवाथी श्रीआत्मानंदसंभाना कार्यवाहकोए प्रवर्तक मुनिश्री कांतिविजयजी म. पासे एनी शुद्ध प्रत आदिनी मांगणी करी त्यारे प्रवर्तकश्रीए कह्युं के—

'में केटलीक प्रतो जोई छे, परंतु तेनी शोधेली (शुद्ध) प्रत हजी सुधी जोवामां आवी नथी. जेथी मूळ ग्रंथ छपायेल छे तेना उपरथी भाषांतर करावबुं अने ज्यां स्खलना लागे त्यां इतिहासनो विषय जेमनो होय तेवा विद्वान पुरुषनी दृष्टिए मुकी छपाववुं.'

आ पछी सभाना संचालकोए विनंती करतां पं. श्री कल्याणविजयजी गणिवरे (त्यारे मुनि) आ भाषांतर शुद्ध करी आप्युं. अने घणा परिश्रम पूर्वक 'प्रबंधपर्यालोचन' लखी आप्युं.

जो के आ पछी पंडित श्री जिनविजयजीए आ ग्रंथनुं घणी प्रतोना उपयोग पूर्वक संशोधन-संपादन करेलुं छे अने इ.स. १९४०मां सिंघी ग्रंथमाळामां ग्रंथ सुदर रीते छपाइने प्रसिद्ध थयो छे.

ए पछी फरी आ ग्रंथ दुर्लभ बनतां ए ज सींघी संस्करणनुं पुनर्मुद्रण ताजेतरमां आ. श्री रामचन्द्रसूरि ग्रंथमाला-सूरत द्वारा थयुं छे.

प्रस्तुत अनुवाद उपरोक्त जिनविजयजी संपादित संस्करणना आधारे शुद्ध करी अनेक सुधारा वधारा करवा पूर्वक प्रसिद्ध थइ रह्यो छे.

---

1. विक्रम संवत् १५०४मां शुभशीलगणिए पण 'प्रभावक चरित्र' रच्युं छे.

ग्रन्थ अने ग्रन्थकार :-

आ ग्रंथना रचयिता आचार्य श्री प्रभाचन्द्रसूरिजी राजगच्छनी चन्द्रशाखामां थई गया छे. **'प्रबंध चिंतामणि'** नामनो आवो ज ऐतिहासिक प्रबंध संग्रह २७ वर्ष पछी विक्रम संवत् १३६१मां आ. मेरूतुंगसूरिजीए रच्यो छे. अने तेओ पण आ. चन्द्रसूरिना पट्टधर होवाथी आ. श्री प्रभाचन्द्रसूरिजीना गुरुभाई थाय छे.

प्रस्तुत ग्रंथ अने ग्रंथकार विषे पं. श्री कल्याणवि. गणिवरश्रीए एमनी प्रस्तावनामां विगते लख्युं छे.

श्री जिनविजय 'प्रभावकचरित्र' ना प्रस्ताविक वक्तव्यमां आ ग्रंथनो परिचय आपतां लखे छे के—

''इस ग्रंथ में न केवल जैन आचार्यों का ही इतिवृत ग्रथित है, परंतु साथ में तत्कालीन अनेक राजाओं, प्रधानों, विद्वानों, कवियों और अन्यान्यमहाजनों के भी प्रसंगोपात कितने ही महत्त्व के उल्लेख और ऐतिहासिक तथ्य अन्तर्निहित हैं। चक्रवर्ती सम्राट् हर्षवर्द्धन, प्रतिहार सम्राट् आमराज (नागावलोक), विद्याविलासी परमार नृपति भोजदेव, चालुक्य चकवर्ती भीमदेव, सिद्धराज जयसिंह और परमार्हत राजर्षि कुमारपाल आदि कई इतिहासप्रसिद्ध राजाओं, एंव कविचक्रवर्ती भट्ट बाण, कविराज वाक्पीत, महाकवि माघ, सिद्धसारस्वत धनपाल, कवीन्द्र श्रीपाल आदि भारत के साहित्य-सम्राटों की भी इसमें कितनीक विश्वस्त ऐतिह्य घटनाएं उल्लिखित है, जिनका सूचन अन्यत्र अप्राप्य है।

रचना की दृष्टिसे भी यह ग्रंथ उच्च कोटि का है। इसकी भाषा प्रवाहिक होकर प्रासादिक है। वर्णन सुसंबद्ध और सुपरिमित है। कहीं भी अतिशयोक्ति या असंभवोक्ति दृष्टिगोचर नहीं होती। महाकवि और प्रभावशाली धर्माचार्यों को ऐतिहासिक वर्णन करनेवाला **इसकी कोटि का और कोई दूसरा ग्रंथ समग्र संस्कृत साहित्य में उपलब्ध नहीं है।**''

''इन चरितों-प्रबनधों के अवलोकन से विद्वानो को इस विषय की बडी विशिष्ट बातें ज्ञात होंगी कि जैन धर्म को जो यह रूप मिला है वह किन महान् विद्वान् और प्रभावशाली आचार्यो के कृतित्व का फल है। किस तरह जैनदर्शन को धीरे धीरे एक संघटित जैनसंघ और धार्मिक समुदाय का रूप मिला, किस तरह जैन धर्मानुयायी स्वतंत्र जातियों का और कुलों का संगठन हुआ, किस तरह जैन तीर्थों और मन्दिरों का निर्माण हुआ, किस तरह जैन वाङ्मय का ऐसा विशाल और अपूर्व विकास हुआ, किस तरह **जैन धर्म के इतने संप्रदायों और गच्छों का आविर्भाव हुआ और कैसे उन में पक्ष-विपक्ष बनें** इत्यादि विषयक, जैन धर्म और जैन समाज के क्रम-विकास या क्रम-परिवर्तन का और तथ्यपूर्ण इतिहास इन प्रबन्धों के अध्ययन मनन से उत्तम प्रकार से हो सकेगा''

ग्रंथकारना विशयमां लखतां श्री जिनविजयजी जणावे छे के—

''इसमें कोई शक नहीं कि प्रभाचन्द्र एक बडे समदर्शी, आग्रहशून्य, परिमितभाषी, इतिहासप्रिय, सत्यनिष्ठ और यथासाधन प्रमाणपुरःसर लिखनेवाले प्रौढ प्रबन्धकार है। उन्होंने अपने इस सुंदर ग्रंथ में जो कुछ भी जैन पूर्वाचार्यो का इतिहास संकलिक किया है। वह बड़े महत्त्व की वस्तु है। इस ग्रंथ की तुलना करनेवाले केवल जैन साहित्य में नही अपितु समुच्चय संस्कृत साहित्य में भी एक-दो ही ग्रंथ है।''

''प्रभावकचरितकार बहुत कुछ आधारभूत बातों ही का प्रायः वर्णन करते है। उन्होंने अपने ग्रंथ में यह स्पष्ट ही निर्देश कर दीया है कि उस ग्रंथ में जो कुछ उन्होंने कथन किया है उसका आधार या तो पूर्व लिखित प्रबन्धादि है या वैसी पुरानी बातो का ज्ञान रखनेवाले विश्वस्त वृद्ध-जन है।'' (कथाकोष प्रकरणनी प्रस्तावना पृ. २१, ३७)

''आमां आपणने गुजरातीनी संस्कृतिनी सामग्री सारा प्रमाणमां मळी आवे छे.'' (प्राचीन गुजरातना सांस्कृतिक ईतिहासनी साधना सामग्री ले. जिनविजय पृ. २५)

डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी लखे छे के 'आ महत्वपूर्ण ग्रंथ (प्रभावक चारित्र) सिवाय ग्रंथकारनी अन्य

कोई कृति मळती नथी. आ. प्रभाचन्द्रसूरिए धर्मकुमाररचित धन्यशालिभद्रचरितनुं (१३३८) सशोधन कर्युं हतुं.' जैन साहित्य का. बृ. इ. भा. ६. पृ. २०५)

आचार्यश्री प्रभाचन्द्रसूरिजीए पुराणी घटनाओ प्रसंगो तो आधार मेळवी लख्या ज छे पण एमना काळमां (विक्रम संवत् १३३४मां) ए घटनानुं अनुसंधान के आचार्यनी परंपरा विषे कंइ विगत मळी होय तो. ते पण लखी छे.

आवी केटलीक बाबतो आ प्रमाणे छे.

आजे पण... :-

- अद्यापि अश्वावबोधतीर्थमां तेमना संतानीय प्रभावक आचार्यो विद्यमान छे.
- तेमना वंशमां अद्यापि
- समर्थ आचार्ये प्रतिष्ठा करेल होवाथी अद्यापि ते (वायड) तीर्थ अभंग छे.
- अचिंत्य शक्तिवाळी ते (भवन) देवीने अद्यापि धार्मिक पुरुषो पूजे छे.
- वायड नगरमां तेमणे स्थापन करेल जैनो साथे स्नेह संबंध अद्यापि त्यां चाल्यो आवे छे.
- अद्यापि तेमना वंशमां प्रभावक आचार्य थाय छे.
- (तालारासक गामना) ते भव्य मंदिरमां अद्यापि भव्य जनो दर्शन करी पावन थाय छे.
- त्यां (तक्षशिलामां) अद्यापि पित्तळ अने पाषाणना बिंबो भोंयरामां छे एम वृद्धजनो कहे छे.
- शांतिस्तव अद्यापि प्रवर्तमान छे.
- तुर्कोए भंग कर्यो ते पहेलां ते (अष्टापदना) अक्षत उपाश्रयमां हता.
- राजपुरी गाममां नेमनाथ प्रभु तेमनी शाश्वत याद रही.... बे शाखामां आजे पण आचार्यो विद्यमान छे.
- 'देवनिम्मल' इत्यादि प्राकृत स्तुति अद्यापि विद्यमान छे.
- भक्तामर स्तोत्र अद्यापि प्रख्यात छे.
- भयहर (नमिउण) स्तवन अद्यापि प्रवर्तमान छे.
- अद्यापि वृद्धो पासेथी 'वृद्धदेवसूरि' एवुं नाम सांभळवामां आवे छे.
- ते लिंग अद्यापि पूजाय छे.
- आजे पण ते तेज प्रमाणे वर्ते छे.
- अद्यापि 'जयति जगद्रक्षाकर' इत्यादि शांतिदेवीनुं स्तवन विद्यमान छे.
- (आम्रेश्वर) चैत्यमां पोताना नामनी देवकुलिका करावी के जे आजे पण विद्यमान छे.
- जेना वंशमां आजे पण आ. वीरसूरि जेवा वीरपुरुषो प्रगट थाय छे.
- (धोळकामां) उदावसति नामे ते चैत्य अद्यापि विद्यमान छे.
- आ (गिरनार) तीर्थमां आसन पर न बेसवुं....इत्यादि सिद्धराजनी मर्यादा अद्यापि शाश्वती वर्ते छे.
- ते तीर्थ (सोपरक)मां आजे पण तेमनी पूजनीय (गुरु) मूर्तिओ विद्यमान छे.
- (बुद्धपुत्रनी मूर्ति) अद्यापि 'निर्ग्रंथनमित' एवा नामथी तेवी ज स्थितिमां छे.
- रैवताचल नीचे दुर्ग पासे नागार्जुने दशार्हमंडप, उग्रसेननुं राजभवन तथा वेदिकापर विवाहादिकनी व्यवस्था करावी जे अत्यारे पण त्यां गयेल धार्मिक जनोना जोवामां आवे छे.
- ते अंबादेवी आजे पण श्री नेमनाथना तीर्थमां भक्तजनोने सहाय करे छे.
- (तारंगा उपर श्री अजितनाथ भगवाननो) प्रासाद अद्यापि संघजनोने दर्शनीय छे.
- ते वखते शैवाचार्यो पण मिथ्याधर्ममां आदर रहित थया. अने वंदन माटे जटामां स्थापनाचार्य धारण करवा लाग्या तथा श्री वीतरागनी पूजा करीने तेओ परमेष्ठि नमस्कारमंत्रनुं परावर्तन करवा लाग्या.

- आजे पण जन्मकल्याणक महोत्सवमां पहेलो कळश धोळकाना श्रावको करे छे.

प्रभावक चरित्रमां विशेष जाणवा जेवी घणी बाबतो छे. केटलीक आ प्रमाणे :-

- तेमणे पादलिप्ता नामनी भाषा बनावी के जेमां बीजा कोइ समजी न शके एवो अर्थ राख्यो.
- विक्रम संवतना दोढसो वर्ष जतां जाकुटी श्रावके समळी विहारनो तथा गिरनारपर्वतना मुगट समान श्रीनेमनाथ भगवानना मंदिरनो उद्धार करावतां त्यां वर्षाकाळने लीधे पडी गयेल मठमांनी प्रशस्ति थकी उद्धृत करेल छे.
- (नयचक्रग्रंथना) आरंभे अने प्रांते चैत्यपूजन करवामां आवे छे.
- क्रूर मुहूर्ते वादि-प्रतिवादि सभामां आव्या
- चरलग्न अने क्रूर मुहूर्ते (वाद माटे) प्रस्थान कर्युं.
- (दिगंबरमुनिने) वस्त्रखंडमां परिग्रह नडे छे तो तांबाना पात्रमां परिग्रह शा माटे नहीं?
- मरीना चूर्ण विना साकर दुर्जर छे.
- मूल मूर्ति रूपे सरस्वती देवी काश्मिरना प्रवरपुरमां छे.
- (मानदेवसूरिः) अहींना संघनी रजा विना माराथी आवी शकाय तेम नथी.
- आ (विहार) सबंधमां प्रधान आचार्य सहित श्री संघनी अनुमति लेवानी जरूर छे.
- पूर्वे कमठे प्रकाशित करेल अने अत्यारे आ देवीए बतावेल पार्श्वनाथ प्रभुनो श्रेष्ठमंत्रछे.
- (गुजरातमां) वरिष्ठ वेषना लीधे वृद्धजनोनी जरा वर्तांती नथी.
- (आचार्य मः) अमारो वेष लीधा विना अमारी पासे रही ज न शकाय.
- (आर्यरक्षितसूरिः) मारी पासे दीक्षा लीधा विना न रहेवाय तेम होवाथी तुं दीक्षा धारण करी ले.
- सर्प करडेलने फरी जीवाडवा खाडामां नांख्यो.
- चिंतातुर (सर्वदेव ब्राह्मण) बिछाना विनाना खाटला पर नीचुं मुख करी सुई गयो.
- हनुमाने करेल प्रशस्ति माटे मत्यस्यनी चरबी आंजीने मीणनी पाटी लई दरियामां पड्या. त्यां बीजी तेलयुक्त लाखनी पाटी बनावी ते प्रशस्ति दबावी अक्षरो उद्धरी लखी दीधा.
- प्रमेह रोगवाळाने घी न गमे.
- दृष्टिदोषथी शोभनमुनि ज्वरथी पीडित.....स्वर्गे.
- नजर लागवाथी रामचन्द्रमुनिनी एक आंख बगडी गई.
- दक्षिणापथमां मामानी पुत्री साथे संबंध थाय छे. सौराष्ट्रमां भाभी दियरने परणी शके.
- ते (कर्णावतीथी) त्रण पहोरमां पाटण पहोंच्यो.
- तेने (संघना आदेशने) ललाटे स्थापन करी खोलीने आचार्य (देवसूरि म.) वांचवा लाग्या.
- तमारा विजय निमित्ते अहीं (पाटणमां) त्रणसो श्रावक अने सातसो श्राविका आयंबिल करे छे.
- श्री मुनिचन्द्रसूरि म. ए स्वप्नमां जणाव्युं छे के वत्स! तारे स्त्री निर्वाणनो प्रयोग करवो.
- गीतार्थ मुनिओए शिबिकामां रहेल गुरुना (मृत) शरीरने उपाड्युं.
- शिबिकामां गुरुना शरीरने पधरावी वार्जित्रोन नाद साथे वहन करता साधुओ
- साध्वीजीए कह्युं : जिनागमनो अभ्यास करवानी अमने गुरुनी अनुमति छे, पण तेनुं विवेचन करवानी आज्ञा नथी.
- श्वेतांबर मुनिओ रात्रे पाणी पण पोतानी पासे राखता नथी.
- कुवलीना कोमळ फळना चूर्णथी वज्रपण भेदाय छे.
- सोपारकमां आजे पण तेमनी पूजनीय मूर्तिओ विद्यमान छे.

- त्यारथी आ (उज्जिंत सेल) गाथा चैत्यवंदनमांथी सिद्धस्तवनी त्रण गाथानी उपर लेवामां आवी. तेमज शक्रस्तवनी जेम प्राचीन श्रुतवृद्धोए मान्य करेल अष्टापदनी स्तुति पण आबाल-वृद्ध मान्य थई.
- भावाचार्यना चैत्यना बलानक उपर धजा चडाववानी प्रथा शरु थई.
- चार पाटमां श्री वर्द्धमानस्वामिनुं बिंब चितर्युं...पाटणमां म्लेच्छभंगथी पूर्वे मोढचैत्यनी अंदर हतुं.
- (पाटणमां 'कुमारविहार' मां कुमारपाळ) राजाए शिखरना शुकनाशमां मोक्षक नामनुं छिद्र मुकावुं. पछी पूर्णिमानी अर्धरात्रे रोगीजननी प्रार्थनाथी छिद्र खोलवामां आवतुं ते बिंबमाथी अमृत झरतुं हतुं. तेना प्रभावथी लोकोना चक्षु वगेरेना रोगो दूर थतां.

प्रभावक चरित्रमां ठेर ठेर सुभाषितो पण जोवा मळे छे. केटला नमुना आ प्रमाणे छे :-

- भ्रमथी पण साकर खावाथी पित्तनो नाश करे छे.
- भावनाथी प्रभावना श्रेष्ठ छे.
- जे विद्याथी गर्व वधे ते विद्या नथी मति भ्रम छे.
- गरम क्षीर पित्तनो नाश करे छे.
- अक्षतना वधामणां अने मुंडन माथानुं होय भवांनुं नहीं.
- अकस्मात् भयथी हेडकी चाली जाय छे.
- दुग्धपानथी धतुरानी मूर्च्छानी जेम तेनो भ्रम नाश पाम्यो.

प्रबंध पर्यालोचन :-

- पं. श्री कल्याणविजय गणिवरजीए 'प्रबंधपर्यालोचन' मां प्रारंभमां ते ते प्रबंधनो सार बहु थोडा शब्दोमां घणुं कहेवानी एमनी शैलीने 'गागरमां सागर' जेवी कही शकाय अमे आ प्रबंधपर्यालोचन जुनी आवृत्तिमांथी नहींवत् सुधार साथे अहीं आप्युं छे.
- प्रबंधसार लख्या पछी ते ते प्रबंधगत मुद्दाओनी चर्चा करी छे. प्रबंधनायकना समय गुरुपरंपरा, आदि अनेक बाबतो उपर तेओअे चर्चा करी छे. अने घणी उपयोगी जाणकारी आपी छे.
- क्यांक प्रबंधना उल्लेखमांथी शुं फलित थाय छे ते जणाव्युं छे, जेम के—
  'वज्रस्वामिनो जन्म वैश्यकुलमां थयो हतो. अने ते कुलना मनुष्यो परंपराथी जैनधर्मना अनुयायी हता'.
- क्यारेक गेर समजो दूर करी छे.
- चरित्रनायक वगेरेनी पट्टावली, गुरुपरंपरा वगेरे अहीं न अपाई होय तो पण अन्य संदर्भो टांकीने जणावी छे.
- चरित्रनायकना समयनी परिस्थितिनुं वर्णन ग्रंथांतरोना आधारे कर्युं छे.
- चरित्रनायक आदिनी ग्रंथरचनानी विगतो आपी छे.
- चरित्रनायक व.ना आयुष्य, दीक्षाकाळ, युगप्रधानत्वकाळ, स्वर्गवास आदि विगतो ग्रंथांतरोना आधारे आपी छे.
- प्रभावक चरित्रमां वर्णवेली घटनाओ अने अन्य ग्रंथोमां विसंगति जोवा मळती होय तो त्यां विविध मतांतरोना चर्चा करी छे.
- प्र. च. मां उल्लिखित राजा वगेरेनी ऐतिहासिकतानी चर्चा सप्रमाण करी छे. विशेष विगतो आपी छे.
- प्र. च. उल्लिखित राजा आदिनी ऐतिहासिकता तपासवा संशोधन करवा विद्वानोने सूचन कर्युं छे.
- प्रभावकोना स्थविरावली, पट्टावली वगेरेमां आवतां उल्लेखो, समय आदिनी चर्चा करी छे.
- विशेष चर्चा जोवा पोताना अन्य लेखो जोवा भलामण करी छे.

- प्र. च.मा निर्दिष्ट स्थळ अत्यारे क्यां आव्युं छे तेनी सप्रमाण चर्चा करी छे.
- ग्रंथकारनी भूल जणाती होय तो तेनो पण निर्देश कर्यो छे.
- क्यारेक ग्रंथकारनी भूलनुं कारण जणावी समाधान कर्युं छे.
- ग्रंथकारनी वात करतां विरुद्ध उदाहरणो मळतां होय तो तेनी पण विगतो आपी छे.
- प्र. च.नी घटनाना अनुसंधानमां पोताना चिंतनना परिपाक रूपे केटलाक तारणो आप्या छे. जे आपणने घणी नवी जाणकारी आपे छे.
- ऐतिहासिक घटनाओ अंगे मतांतरोनी चर्चा करी पोतानो अभिप्राय आप्यो छे.
- एक नामना वधु प्रभावको थया होय त्यारे एमना क्रम, समय, एमने सबंधित घटनाओनुं पृथक्करण, तारण आप्या छे.
- ओसवाळज्ञाति अने भोजकोना मूळ बाबत चर्चा करी पोताना अभिप्राय आप्या छे.
- चैत्यवासीनी अने सुविहितोनी प्रवृत्ति बाबत गेरसमजो दूर करी छे.
- शिथिलाचार, चैत्यवासना प्रभाव वगेरेनी चर्चा करी छे.
- प्रबंधगत वाक्यना बे अर्थ थता होय त्यारे क्यो अर्थ संगत छे ते जणाव्युं छे.
- गच्छनी उत्पत्ति बाबत विगते चर्चा करी छे.
- प्र. च.मा पाठ खूटतो जणाय तो तेनी नोंध करी छे.
- विशेष विगतो पण आपी छे.

टिप्पणो :-

- प्रबंधमां आवतां भौगोलिक-स्थळविषे वर्तमानमां विशेष विगतो मळी होय तो ते आपी छे.
- प्रबंध पर्यालोचनमां जे चर्चा पं. श्री कल्याणविजय म.ए करी छे ते बाबत पाछळथी तेओए कोई विशेष उहापोह चिंतन कर्युं. पोतानो मत बदल्यो होय ते....
- प्रबंधमां उल्लिखित राजा के आचार्य आदिनो अन्य ग्रंथोमां उल्लेख आवतो होय तो जरूर पडे निर्देश आप्यो छे.
- प्रबंधपर्यालोचननी वातनुं समर्थन करतां संदर्भ आप्या छे.
- प्रबंधपर्यालोचनना मत करतां जुदो मत बतावनारनी नोंध पण आपी छे.
- प्रभावक चरित्रना पाठथी घटना समजाती न होय, कंइक खूटतुं जणाय त्यां ग्रथातरमांथी तेनुं विवरण आप्युं छे.
- प्रभावक चरित्र के प्रबंधपर्यालोचननी विगतोमां विशेष जोवा संदर्भ टांक्या छे.

अनेक अनेक घटनाओथी सभर आ ग्रंथनुं वांचन करी महापुरुषो प्रत्येना आपणा आदरभावमां वृद्धि थाय एज मंगळ कामना.

: शुभस्थळ :
श्री गिरनार महातीर्थ तलेटी,
फागण सुद १५, विक्रम संवत् २०५६
ता. २०-३-२०००

पू. आ. भ.श्री भद्रसुरीश्वरजी म.सा.ना शिष्यरत्न
पू. मुनिराजश्री जिनचन्द्रवि. म.सा .ना विनेय
आ. विजय मुनिचन्द्रसूरि

आ पुस्तकमां वांचजो अने विचारजो

- वज्रनो जन्म वैश्य कुलमां थयो हतो अने कुलमां मनुष्यो परंपराथी जैन धर्मना अनुयायी हता. (1)
- आचार्य वज्रस्वामीनो समय संयम प्रधान हतो. (1)
- आचार्य वज्रस्वामिना समय सुधी साधुओ प्रायः वनमां रहेता अने गृहस्थोना परिचयथी दूर रहेता हता. (2)
- ते कालमां संयम धर्ममां थोडो पण अपवाद लगाडवाने साधुओ खुशी न हता. (2)
- ते समयमां जैन समाजमां मूर्तिपूजानो महिमा छेल्ली हद सुधी पहोंचेलो जणाय छे. (2)
- आचार्य वज्रस्वामीनी आ प्रवृत्तिनुं आलंबन लईने ज पाछलना आचार्यो धीमे धीमे चैत्य संबंधी सावद्य कार्योमां प्रवृत्त थया हता. (2)
- पूर्वे पंचमंगल महाश्रुतस्कंध पृथक् सूत्र हतुं. एनी ऊपर घणी निर्युक्तिओ, घणां भाष्यो अने घणी चूर्णिओ हती. पण काल दोषथी तेनो ह्रास थतो गयो. (2)
- आ चारे आचार्योनी मूर्तिओ हजी सुधी सोपारकमां पूजाई रही छे. (3)
- गमे ते जातिना मनुष्यो पोतानी जातिमां रहीने जैन धर्मनुं पालन करी शकता हता.(4)
- आज काल जेओ कहे छे के १६ वर्षनी नीचेनी वयवाळाने दीक्षामां आज्ञानी जरूर छे. उपरनाने नहीं. तेओ विचार करे के २२ वर्षनी अवस्थामां वगर रजाए आर्यरक्षितसूरिनी दीक्षाने शिष्यचोरी केम कही हशे? (4)
- ते वखते वस्त्र परिधान कारण प्रसंगे ज थतुं हशे. (4)
- आर्यरक्षितसूरिनो समय संयम प्रधान हतो छतां कंईक सगवडतानो विचार पण ते वखते थयो हतो. (5)
- आर्यरक्षितसूरिनो समय अवनति अभिमुख हतो. (5)
- कालकाचार्य नामना आचार्य वधारे संख्यामां थया होय तो नवाई जेवुं नथी. (7)
- मूलवृतान्तमां कालान्तरे केवी रीते ऊमेरा थया छे ते आ ऊपरथी जणाशे. (10)
- राजन्! अमारा शिष्यो आ लोक अने परलोकमां पोतानुं हित करवानी इच्छाथी अमारी आज्ञानुं पालन करे छे. (11)
- गणिकाए कह्युं हुं पादलिप्तसूरि सिवाय बीजा कोईनी स्तुति करती नथी. (14)
- ए जीवदेवसूरिनो समय चैत्यवासिओना प्राबल्यनो समय होवो जोईए अने ए आचार्य पण केटलेक अंशे शिथिलाचारी होवा जोईए अन्यथा यज्ञोपवीत (सुवर्णनी) ने (ब्रह्माना मंदिरमां) अभिषेकनी शरतो करावे नहीं. (25)
- एज ब्राह्मणो कालांतरे भोजको थया हता एम हुं मानुं छुं. (25)
- दाक्षिण्यवश (सिद्धसेन) आचार्य पण राजाना आग्रहने पाछो ठेली न शक्या अने शिथिलाचारमां पडी गया.

(26)

- आ आश्चर्यथी (विक्रमादित्य) राजा सिद्धसेनसूरिनो परमभक्त बन्यो अने जैन धर्मनो सहायक थयो. (27)
- वृद्धवादी आचार्य अने सिद्धसेन दिवाकरने विक्रमना चौथा-पांचमा सैकाना वचगाळामां मूकवा एज युक्तियुक्त गणाय. (28)
- सिद्धसेने 'योनि प्राभृत'ना प्रयोगथी घोडा बनाव्यानो पण उल्लेख मळी आवे छे.(28)
- अमने पण आ प्रबंधमां लखेली हकीकत प्राचीन अने यथार्थ जणाय छे. (29)
- बजारमां आवेल मालनी खरीदी करवानो एने संकेत कर्यो. (31)
- (हरिभद्र सूरि) प्रबंधमां केटलाक बनावो अतिशयोक्ति पूर्ण अने कल्पित जेवा लागे छे. (32)
- आ बन्ने मल्लवादीओनी भेलसेल थयेली हकीकत आ प्रबंधमां वर्णवायेली छे. (35)
- बप्पभट्टसूरिनो समय शिथिलाचारनो हतो. (43)
- पूर्वे जैनमंदिरोमां धार्मिक नाटक खेलवानो रिवाज हतो. आज कारणे जैनमंदिरोना अग्रमंडपो हजी पण रंगमंडप, खेलामंडप अने प्रेक्षामंडप वगेरे नामोथी प्रसिद्ध छे.(44)
- पट्टावलीवाला मानतुंगसूरिनी साथे मयूर-बाणवाली हकीकत जोडीने पट्टावली लेखकोए आ बन्ने आचार्योंने एक मानी लेवानी स्पष्ट भूल करी छे. (46)
- मारवाडमां नाडोल अने कोरटा नामना स्थानों केटला बधा पुराणा छे ते आ प्रबंध उपरथी जणाई आवे छे. (48)
- सुविहितो करतां चैत्यवासि साधुओनी संख्या वधी गई हती. (48)
- चैत्यमां धर्मोपदेश करनारने चैत्यवासी मानी लेवानी कोई भूल न करे. (50)
- वीर गणिनो समय शिथिलाचार प्रधान हतो. छतां वीर जेवा गर्भश्रीमंतोए क्रोडोनी संपत्तिनो त्याग करीने जे उग्र त्यागमार्गनो दाखलो बेसाड्यो हतो ते जणावतो हतो के आ समये पण खरा त्यागीओनो अभाव न हतो. (52)
- (शांतिसूरि) एमना गच्छना उपाश्रयने प्रबंधकारे बे ठेकाणे 'मठ'ना नामथी उल्लेख्यो छे. आथी पण एमनी गुरु परंपरामां शिथिलाचारनो प्रवेश हशे एम जणाय छे.(54)
- सुविहितोनो पण त्यां (पाटण) विहार थवा मांड्यो हतो अने धीरे धीरे तेमना माटे उपाश्रयोनी सगवड थवा लागी हती. (54)
- आचार्य महेन्द्रसूरिनो समय शिथिलाचार प्रधान हतो छतां ए पोते सुविहित क्रियापात्र साधु हता एम जणाय छे. (56)
- बधा दर्शनियोने केद कर्या आ हकीकत एक कल्पना जेवी लागे छे. (57)
- **दादा गुरु गोविंदसूरिनी निश्रानुं पाटणमां एक प्रसिद्ध जिनचैत्य हतुं अने तेमां पर्व दिवसोमां नाटक अने नर्तकीनो नाच थतो हतो.** (57)
- **हाथीनी सवारीए (सूराचार्यनो) प्रवेश अने पाटणमां हाथीनी सवारीए प्रवेश थयो.** प्रबंधकार आवी विहार

संबंधी क्रियाओनुं प्रायश्चित्त अपावे छे पण आ प्रवृत्तिओ शिथिलाचारनी निशानीओ छे एमां तो कंई पण संशय जेवुं नथी. (57)

- कालवशात् टीकाओना नाशथी अभयदेवाचार्य शासनदेवीना आदेशथी नवी टीकाओ बनावी ए हकीकत दंतकथा मात्र ठरे छे. (59)
- देवीए आपेल आभूषण भीमराजाने भेट करवा अने तेणे त्रण लाख द्रम्मआपवा संबंधी हकीकत पण केवल दंतकथा जणाय छे. (60)
- **पगारथी नोकरी करवानी हद सुधी चैत्यवासीओ पहोंची गया हता.** (60)
- **पूर्णचंद्रनी दीक्षा पछी एनां माता पितानी जीवनपर्यंत सारसंभाल भरूचना श्रावकगणे करी.** (63)
- जे जे वातो बनेली छे तेनुं ज आ प्रबंधमां वर्णन छे अने जे वातो (कुमारपाल प्रबंधमां) पाछळथी प्रसिद्ध थई छे ते आमां नथी. (73)
- एक दिवसे आचार्य महाराज स्थंडिल भूमिए गया. (79)
- गीतार्थ मुनिओ बधा गोचरीए चाल्या गया हता. (79)
- **जेमने जीवन अने मरणमां आकांक्षा न होय, तेमने देवताओ शुं करवाना हता?**(82)
- महापुरुषोथी जे ख्याति पामे, ते अचलताने पामे छे. (82)
- ते तीर्थमां अद्यापि तेमनी (गुरुओनी) पूजनीय मूर्तिओ विद्यमान छे. (83)
- सामायिक भंगना भयने लीधे (आर्य रक्षितने) आशीषथी वधाव्यो नहीं. (84)
- अभ्यास करेल बहुशास्त्र पण मारे तुच्छ जेवुं छे के जेथी मारी माता तो संतोष न ज पामी. (84)
- **मारी पासे दीक्षा विना न रहेवाय** तेम होवाथी तुं दीक्षा धारण करी ले. (87)
- **माटे हवे नग्नावस्था ज भले रही.** (91)
- गुरु वचनमां अचल श्रद्धा राखनार महापुरुषोने वारंवार नमस्कार थाओ. (91)
- मारुं श्रुत विस्मृत न थाय एवा हेतुथी ते अहोरात्र अभ्यास कर्या करे छे. (92)
- रूप, शोभा, धन, तेज, सौभाग्य, अने मोटाई ए बधुं स्त्रीओने पिताना प्रभावथी ज प्राप्त थाय छे. (95)
- प्रतिगृहे कांई चैत्यगृह होता नथी. (95)
- जेना शिर पर जिनाज्ञा रूप मुगट हशे. (96)
- साधुजननो द्रोह करनारने एवी गति मले, एतो ते कर्मनुं अल्प फल ज छे. (101)
- लौकिक पर्व आवतां लोकोनुं चित्त धर्मकार्यमां उत्साह युक्त थतुं नथी. (102)
- **अमे त्यां आवतां श्री पर्युषणा पर्व करवुं** (102)
- आपणो दुर्विनय हवे शाखा रूपे विस्तार पाम्यो (103)
- स्वामी विना स्त्री, सेवक अने शिष्योनी अवज्ञा थाय छे (103)
- लोकोमां स्त्रीओने अपत्यनो मोह छे, ते तेमना मानसिक सुखनो विनाश करे छे (105)
- पोतानी प्रज्ञाथी तत्त्वने जाणनार एवी कलाओथी कोण वश न थाय (107)

- तेजमां वयनुं कांई कारण नथी (107)
- **सिंहना नाना बच्चांने यज्ञमां लाववानी कोण उमेद करे?** (107)
- चिरकालथी साथे वसता जनोष्ट बालकने बाल क्रिडाने माटे अवकाश आपवो जोइए (109)
- **वारंवार राजकार्योनुं कथन ए पापनुं कारण रूप छे.** (111)
- जैनो असाधारण शक्ति धरावे छे (114)
- सिद्ध पुरुषने पण क्षुधा सहन करवी दूर्लभ छे (116)
- मिष्टान्न प्राप्त थतां तुच्छ भोजन कोने भावे? (116)
- आपत्तिकाले धर्मोपदेश कार्य साधनार थाय छे (117)
- गर्दभना मुखमां थी शांतिजल कदि नीकले शुं? (118)
- (साधुओए) दया लावी जल सिंचनथी तेने आश्वासन आप्युं अने पंच परमेष्ठी रूप मंत्र संभलाव्यो (122)
- ए प्रतिमानां पृथ्वी तत्त्वो कांई निराला ज हता के जेथी तेने अग्निदाहनी असर न थई (124)
- गुरुनी तेवी माननीय माता रत्नखाणनी जेम कोने अधिक आदर पात्र न थाय? (127)
- सविकार मुखने धारण करतां तेणे माता तरफ जोयुं (127)
- ईक्षुभक्षण करता कुंजर (गज)नी साथे कोण समानता करी शके? (128)
- **पूज्यना वचननुं उल्लंघन करवुं ए पण कष्टरूप ज छे** (128)
- तेवा तुच्छ जनो शुं एवा प्रभावी गुरु पासे आवी शके? (128)
- चैत्यमां अमारा गुरु बिराजे छे ते धर्म कही संभलावशे (129)
- क्षमा धारण करवाथी उपसर्गो नष्ट थशे. एज आपणुं रहस्य (तत्त्व) छे (131)
- जीवदेवनी गादी उपर जे नवीन आचार्य बेसे तेने सुवर्णनी जनोई पहेरावीने प्रतिष्ठित आचार्यने ब्राह्मणोए ब्रह्ममंदिरमां पट्टाभिषेक करवो (132)
- **गीतार्थ मुनिओए शिबिकामां रहेल गुरुना शरीरने उपाडयुं** (133)
- **सर्व कार्योमां सर्वनी भवितव्यता तो जाग्रत ज होय छे** (134)
- **सुकार्यमां उतावल करवी ज सारी कहेल छे. विलंब करवाथी तेमां अवश्य विघ्न आवे छे** (134)
- वृद्धपणाने लीधे अत्यंत आग्रही बनेला (134)
- शांत समये वचनयोगनो संकोच राखवो ते उचित छे (134)
- गुरु दूर रहीने ज शिष्यनो प्रभाव जूए छे (136)
- गरीब साधर्मी बंधुओ अने चैत्योना उद्धार माटे ते द्रव्यनो एक साधारण फंड क्यों (136)
- कालना दोषथी तेवा समर्थ (सिद्धसेन दिवाकर) पुरुषोनी पण तेवा पूर्वगत ग्रंथो वांचवानी योग्यता तेना (देवीना) जोवामां न आवी, पण सत्त्व हानिनो संभव तेणे जोयो (137)
- सुखासन तथा हस्ती वगेरे उपर (गुरुने) देवपाल (गुरुने) बेसाडतो अने तेओ राजभवनमां जता (137)
- आचार्ये त्यां एक उन्नत्त जिनमंदिर करावीने तेमां श्री ऋषभदेव प्रभुनी प्रतिमा स्थापन करी (141)

卐 वचननी प्रतिष्ठा (प्रतिज्ञा) दुर्लंघनीय छे (144)
卐 **गुरुने विरहमां नांखीने क्यो कुलीन शिष्य निरुपद्रव मार्गे पण गमन करे?** (146)
卐 **हवे तमने हित कहेवुं ते उचित नथी जे थवानुं हशे ते थशे ज** (146)
卐 कोई वार आवा कार्यमां विद्वानोनी मति पण स्खलना पामे छे (146)
卐 **अविनयनुं आ उग्रफल अत्यारे अवश्य आपणने उपस्थित थयुं** (146)
卐 भविष्यतां कदि टली न शके (146)
卐 सारी रीते चलावेल मति कोने सहाय करती नथी (147)
卐 गुरुना चरणकमलनो समागम क्यांथी? (148)
卐 शल्यसहित मरण पामे तेनी परभवमां सद्गति न थाय (148)
卐 अधम दिवसोमां देव-देवी याद आवे छे (151)
卐 जे में शास्त्रों रच्यां छे ते लखावीने तारे पुस्तकारुढ करवा अने योग्य साधुओने ते आपवा के जेथी सर्व लोकोमां प्रचार पामे (153)
卐 अन्यथी पराभव पामेल सामान्य माणस पण ते नगरमां कोण रहे? (155)
卐 वहाण प्राप्त थतां समुद्रथी कोण पार न उतरे (155)
卐 **आ पुस्तक पूर्व संबंधी छे माटे आने उघाडीश नहीं** (155)
卐 अज्ञ जनोनें श्रुतनुं तेवुं पात्र मलवुं बहु दूर्लभ छे (156)
卐 ए ग्रंथ प्रगट करतां द्वेषी देवो उपद्रव करे तेम छे (156)
卐 पोताना घरमां बेसीने तो लोको राजानी पण निंदा करे (157)
卐 ते पुस्तको पेलो व्यंतर कोईने वांचवा देतो न हतो (158)
卐 विकसित कमल उपर शुं भ्रमर न बेसे? (159)
卐 महापुरुषो परनी आस्था निष्फल जती नथी (160)
卐 आचार्य महाराज चपटी वगाडतां विचारवा लाग्या (160)
卐 आमना सैन्यमां बे लाख अश्वो चौदसो रथो अने हाथीओ तथा करोडो सेनिको-पदातिओ हता (161)
卐 गजारोहण करता अमारी प्रतिज्ञानो भंग थाय (162)
卐 आचार्यपद प्राप्त थया पछी अमने सिंहासन पर बेसवुं कल्पे (162)
卐 ब्रह्मचर्यनी तारे वारंवार संभाल राखवानी छे (163)
卐 तेमां जिनमंदिर सर्वना आधाररूप छे के ज्यां जिनो अने श्रुतधरो संघने प्रतिबोध आपता रही शके (163)
卐 एकसो हाथ ऊँचुं जिनमंदिर तैयार थयुं (163)
卐 थाकेली नजरने विश्रांति आपवा (आचार्ये) नृत्यांगनाना लीला कंचवा उपर द्रष्टि स्थापी (171)
卐 मारुं निर्लज्ज मन हजी विषयने माटे तरसे छे (171)
卐 अमे पाषाण जेवा छीए तो तारा शरीरने वृथा खेद शा माटे आप छे (172)

- दुनियाने दुःख आवतां कंईक विश्रांति आपवाथी निद्रा उपकारिणी थाय छे. (173)
- पत्थर लोह अने व्रज ते नहीं पण श्वेतांबर मुनि दुर्भेद्य छे (173)
- अज्ञ जनो श्राप वगेरेमां प्रवृत्त थाय छे (173)
- घृत पिंडमां जेम स्नेह (चीकाश) तेम जलमां हिमनो निश्चय थाय छे (175)
- जिनशासनना विरोधीने तुं (सरस्वती) केम पोषे छे? कारण के पूर्वजो पासेथी तो एम सांभलवामां आव्युं छे के तुं सम्यग्दृष्टि होय छे. (177)
- देवीए कह्युं- हुं जैननी विरोधी नथी. (177)
- चौद श्लोक कदापि प्रगट न करता, कारण के ते सांभलतां तो मारे साक्षात् आववुं पडशे. हे मुनीश्वर! केटला पुण्यहीन पर हुं प्रसन्न थाउं? (177)
- स्त्री पुरुषनी जेम स्वतंत्र आचरण करे, त्यारे ते घर नाश पाम्युं समजवुं (178)
- राजानी जेम श्रेष्ठ छत्र अने चामरथी शोभता अने सिंहासन पर बेठेला एवा श्री नन्नसूरि आम राजाना जोवामां आव्या (178)
- विषय कषायथी जे पराजित छे तेमनी रेखा जगतमां भुंसावानी छे (180)
- चित्तथी कर्म बांधेल छे, तेथी ते चित्त वडे ज दूर थाय तेम छे (182)
- **जो सारंभी गृहस्थ सारंभी गुरुने माने अने पूजे, तो कादवथी कादव धोवा जेवुं छे.** (184)
- संकटमां कुलीन कांताओने पोतानुं पीयर ज शरण रूप छे (188)
- विश्वनो व्यवहार (शुद्ध) ए महत्वनुं स्थान छे (190)
- गुणी एक बीजा पर मत्सर धरावे छे, ए वात सत्य छे (195)
- परभवना साधक एवा अमो निःस्पृह मुनिओ माटे ते भुमि उचित नथी. (197)
- जे विद्याधी गर्व वधे ते विद्या नहीं पण एक प्रकारनो मतिभ्रम छे (198)
- हे नरेन्द्र! सुपात्र, अनुकंपा अने उचित ए त्रण प्रकारना दानमां रूचि कर (199)
- व्यसनथी मुक्त थवुं मुश्केल छे (203)
- त्यां धर्मशालामां सदाय द्वार उघाडुं ज रहेतुं (204)
- गरम क्षीर पण पित्तनो नाश करे छे (204)
- अमारो वेष लीधा विना अमारी पासे रही ज न शकाय (205)
- नाव मलतां महासागरथी पार पामवानी कोण इच्छा न करे? (205)
- व्यसनी पुरुष कर्कश वचनथी नहीं पण हलवे हलवे समजावी शकाय (205)
- जो मातानुं वचन हुं यावज्जीव पालुं तोज मारी अखंड कुलीनता गणाय (205)
- हे वत्स! अभ्यास करवामां असंतोष राखवो ए के जो सारूं छे (206)
- बुद्धिनो नाश करनार शास्त्रमां प्राणीओनुं सत्त्व काई चालतुं नथी (206)
- सत्यप्रतीज्ञ कोण पोतानी प्रतिज्ञानो भंग करे? (207)

卐 शस्त्रघातथी जेम कोद्रव-कोदरामां थयेल मीणनो भ्रम दूर थाय (208)
卐 पुत्र प्रत्ये मातानुं असाधारण वात्सल्य वचनातीत होय छे (209)
卐 चिंतामणि हाथमां आवतां क्यो मूर्ख तेनी अवगणना करे (210)
卐 अखंड व्रतधारी ते एवा भयथी डरता न हता (211)
卐 तुर्कोए ए (अणहिल्लपुर) नगरीनो भंग क्यों ते पहेलां ते (अष्टापदना) अक्षत उपाश्रयमां हता (213)
卐 रात्रे सरस्वती देवीए भारे प्रसाद लावीने तेमने स्पष्ट शब्दोमां आदेश क्यों के- (217)
卐 आ तो भस्मतां घृत नांखवा जेवुं थयुं (218)
卐 थारापद्र चैत्यनी पासे आवेल मठमां गुरु हता (219)
卐 अहंकारी प्रत्ये मृदुता वापरवी एज तेने शांत करवानुं परम औषध छे. (219)
卐 तेनी पासेथी थनार उत्तम शिष्यनो लाभ विचारीने कहेवा लाग्या (221)
卐 पितानो आदेश बजाववा उपरांत पुत्रोनो अन्य धर्म नथी (223)
卐 जैन मुनिओ तो सत्यना निधान अने तपथी उज्ज्वल होय छे (223)
卐 तेमनी संगति तो सद्भाग्यथी ज पामी शकाय (223)
卐 याचको घर थकी खाली हाथे जाय, ए महा अधर्म छे (224)
卐 **ब्रह्मचर्य हीन होय ते गुरु शी रीते होई शके?** (225)
卐 बलवंत पुरुषो जे प्रवर्तावे ते पाछलथी अन्य लोकोना आचाररूप थई पडे छे (225)
卐 यज्ञमां हणायेला प्राणिओ जो स्वर्गे जता होय तो माता, पिता, पुत्र अने बांधवोनो यज्ञ केम करतो नथी? (226)
卐 पूर्वकृत कर्मोनो विषम विपाक प्राणिओने पायमाल करे छे (228)
卐 सज्जनो मान हानि थाय त्यां स्थिति करता नथी (230)
卐 योगिनीए तेना मुखमां अमृत समान ईक्षुरसनो कोगलो नाख्यो अने तेना हस्तक पर पोतानो हाथ राख्यो पछी ते सरस्वतीदेवी क्षणवारमां अदृश्य थई गई (231)
卐 तेवा प्रकारनो पुण्योदय विद्यमान छतां विलंबने अवकाश क्यांथी होय (237)
卐 ज्यां आवा कविओ विद्यमान छे ते देश पराभव केम पामे? (237)
卐 गुणो एज पुरुषनी प्रतिष्ठाने वृद्धि पमाडे छे (237)
卐 क्रोध रिपु तेवा समर्थ पुरुषोने पण कोईवार सतावे छे (237)
卐 जे जेनी साथे जोडायेल होय ते तेनी पाछल आवे (238)
卐 चोला मांथी घेवर न थाय (238)
卐 राजाए सुवर्ण अने मणि माणक्यना सिंहासन पर (गुरुने) बेसाडया (239)
卐 बंधु पर भक्ति धरावनार तेणे (राजाए सूराचार्यनी साथे) एक हाथी पांचसो अश्वो अने एक हजार पदाति साथे आप्या (239)

- हाथी पर बेसवाथी साधुना आचारनो भंग थतो होवाथी पोते एनुं प्रायश्चित करी लेशे एवो निर्णय करी आरूढ थया (239)
- राजानी पासे सामे चालीने आववुं जवुं अेम करता नथी (241)
- जैनोने कोण पोतानी प्रज्ञाथी वधाववानुं न होय (245)
- लागेल अतिचार गुरुपासे निवेदन करी तपरूप प्रायश्चित्त लई ते शुद्ध थया (246)
- तमारा जेवा धीर पुरुषो संकट मां पण सत्त्वने मुकता नथी (247)
- चैत्यबाह्य श्वेतांबरोने अहीं स्थान मलतुं नथी (249)
- **दर्शनोमां भेद राखवो ए मिथ्यामतिनुं लक्षण छे** (250)
- एवा अज्ञ पणाथी क्यांक उत्सूत्र कहेवाई जाय (250)
- प्रासाद करावववा माटे श्रावकोए त्यां द्रव्य एकठुं कर्युं (251)
- मंदिरना कार्य माटे आमेश्वर नामना चैत्यवासीने एक द्रम्म पगारथी नियुक्त कर्या (252)
- भाग्यने लीधेज पोतानी प्रज्ञा उदयमान होय छे, अन्य थकी प्रतिष्ठा थती नथी (254)
- सिद्धिना स्नेहमां पुण्यहीन अमे खोल समान छीए (254)
- बालक शुं पोताना अनुमान थी बोलतो नथी (254)
- राजाए आनंदपूर्वक तेमने छत्र अने चामरयुगल राजचिह्न आप्या (255)
- कागडो प्रासादना शिखर उपर बेसे तेथी शुं ते गरुड बनी जशे (256)
- श्री भावाचार्यना चैत्यनी पताका बलानकमां चडती हती. कारण के महापुरुषे करेल कालांतरे पण नाश पामतुं नथी (257)
- समान वयवालानो ज वाद होय (257)
- बाल्यावस्थामां पण पुण्य तो जाग्रत ज होय छे (258)
- सद्गुरुनो निश्चय करवा त्रण उपवास करीने तेणे शासन देवीनी आराधना करी (260)
- मुक्ता मोतीओनी जेम आपणो वेध गुणथी जोडावा माटे थशे (262)
- योग्य शिष्यने आचार्यपदे स्थापी अमारे आत्मसाधन करवुं उचित छे (271)
- श्री गौतमादि सूरिश्वरोए अबाधितपणे आराधेल सूरिमंत्र तेमने कानमां संभलाव्यो (272)
- माता साध्वीने तेज दिवसे दीक्षा अने प्रवर्त्तिनी पद अपाव्यु अने तेने सिंहासन पर बेसवानुं श्री संघ पासे तेमणे कबूल रखाव्युं. अहो उत्तम पुरुषोनी मातृभक्ति केवी अद्भूत होय छे (272)
- पछी प्रतिमासे ज्ञानपंचमीना दिवसे ते प्रश्नो पूछी लेतो अने त्यां अभ्यासमां प्रवृत्त थयेला विद्यार्थिओने राजा कंकणादिथी विभूषित करतो. एम ए शास्त्रमां तैयार थयेला जनोने राजा रेशमी वस्त्रो, कनकाभूषण सुखासन अने आतपत्रथी अलंकृत करतो हतो (274)
- आ धन मने संपूर्ण छे, ते सात पेढी सुधी मने चाले तेटलुं छे. हुं प्रमाण पूरतुं ज लउं छुं. ते करतां अधिक कंई पण लेतो नथी. एम कहीने ते चारण पोताना ईष्ट स्थाने चाल्यो गयो (274)

卐 राजाए प्रजाना विचारोमां आवनार दुराचार अटकाववो जोइए (275)
卐 जगतना स्वभावमां कोई पण हेतु निरर्थक नथी. (276)
卐 शांत जैन मुनिओ विना कोने अभिमान नड्युं नथी (277)
卐 दर्शनना आधार रूप आवा विद्वानो पण आम पोतानी मर्यादा लोपीने कुत्सित कर्म करे छे (280)
卐 महापुरुषनी दृष्टि तो गुणने जोवानी ज होय छे (281)
卐 **विरोध शमाववो ए व्रतधारीओनो प्रथम धर्म छे** (282)
卐 राजाए तेमने वाहनपर आरोहण करवानी अभ्यर्थना करी पण चारित्र स्थित आचार्ये तेनो निषेध क्यों (282)
卐 अविरोध एज मुक्तिनुं परम कारण छे (283)
卐 पोताना दुर्भाग्यने जोयां छतां बीजा पर रोष लावनार सुज्ञ न गणाय (287)
卐 पोताना कर्मने लीधे आ लोकमां ज केटलाक लोको राजाओथी पराभव पामे छे (291)
卐 कर्ताने सर्वत्र सहन करवुं पडे छे (292)
卐 आ मारा कनकनो कोण जाणे कोण मालिक थशे? माटे वृथा क्लेश कोण अंगीकार करे? (294)
卐 छींक न आवे त्यारे सूर्यनुं ज शरण लेवाय (297)
卐 नरकमार्गमां यान समान पादुकानो पण त्याग कर्यो (299)
卐 महासागरमां मलेल नावनो कोण त्याग करे? (299)
卐 चैत्र, माघ अने आसो महिनाना महोत्सवोमां देवीओ अहिंसाथी प्रमोद पामी (300)
卐 गुणमां मत्सर कोण धारण करे? (301)
卐 ते वखते शैवाचार्यो पण मिथ्या धर्ममां आदररहित थया अने वंदन करवा माटे जटामां स्थापनाचार्यने धारण करवा लाग्या (301)
卐 राजाए मान्य करेल धर्मनो पण लोको आदरथी स्वीकार करे छे (301)
卐 ते वखते मोटी मोटी शिलाओने लीधे पर्वतपर आरोहण करवानुं दूष्कर समजीने राजाए (कुमारपाले) भूमि (तलेटी)मां रहेता ज श्री नेमिनाथ भगवंतनी पूजा करी (301)
卐 जिनयात्रामां महोत्सव करीने ते पोताने कृतकृत्य मानवा लाग्यो (301)
卐 ए चरित्रोमां संप्रदायना भेदने लईने जे कांई स्खलना थई होय (303)

प्रबंधपर्यालोचन

लेखक–मुनि कल्याणविजय

१. श्री वज्रस्वामी

प्रभावक चरित्रमां सर्व प्रथम प्रबंध **आ. वज्रस्वामी**नो छे. आचार्य **हेमचंद्रसूरि**ए पोताना परिशिष्ट पर्वमां **वज्रस्वामी** सुधीना प्रसिद्ध स्थविरोनां चरित्रो वर्णव्यां छे, ज्यारे **आ. प्रभाचंद्रसूरि**ए **आ. वज्रस्वामी**थी आरंभीने ते पछीना प्रसिद्ध प्रभावकोना प्रबंधो लख्या छे. अहीं एक प्रश्न थई शके के ज्यारे हेमचंद्राचार्ये **आ. वज्रस्वामीचरित्र** लखी दीधुं हतुं तो पछी प्रभाचंद्राचार्ये अहीं फरी वज्रनो प्रबंध शा माटे लख्यो? एना उत्तरमां एम कही शकाय के आचार्य हेमचंद्रे वज्रचरित्र घणुं विस्तृत लख्युं छे अने ते सिवाय **आ. आर्यरक्षितसूरि**नुं चरित्र पण तेनी साथे वर्णव्युं छे ज्यारे अहीं केवल **वज्रस्वामीचरित्र** अने ते पण संक्षिप्तमां वर्णव्युं छे अने **आ. आर्यरक्षितसूरि**नो प्रबंध जुदो लख्यो छे.

भगवान् **वज्रस्वामी**नो जन्म आजथी १९६२ वर्ष पूर्वे मालव देशान्तर्गत **तुम्बवन**[1] संनिवेशमां थयो हतो. **प्रभावकचरित्र**मां एमनी ३ वर्षनी अवस्थामां दीक्षा थवानुं लख्युं छे, एनो अर्थ ए छे के ३ वर्षनी अवस्थामां आचार्ये तेने पोताना क्षुल्लक (भाविशिष्य) तरीके स्वीकारीने तेवा प्रकारनो वेष आप्यो हशे के जेथी तेने आहारपाणी आपवामां हरकत न थाय. टीकाग्रंथोमां पण आवाज तात्पर्यनो उल्लेख छे के 'त्रण वर्षनी अवस्थामां वज्रने दीक्षा आपी हती पण तेने ते वखते साध्वीओना उपाश्रयमां ज राख्या हता अने ज्यारे ते आठ वर्षना थया त्यारे साधुओए तेने पोताना संघाडामां भेळवी लीधा हता.' युगप्रधान पट्टावलियोमां **आ. वज्रस्वामी**नो गार्हस्थ्य पर्याय ८ वर्षनो लख्यो छे ते बरोबर ज छे. कारण के ज्यारथी **आ. वज्रस्वामी** आठ वर्षना थई साधुओनी साथे विचरवा लाग्या त्यारथी ज तेमनो दीक्षा पर्याय गणवामां आव्यो छे.

आ. वज्रस्वामीना पिता **धनगिरि** श्रेष्ठिपुत्र हता. एथी आ वात स्वतः सिद्ध छे के **वज्रनो जन्म वैश्य कुलमां थयो हतो अने ते कुलमां मनुष्यो परम्पराथी जैन धर्मना अनुयायी हतां;** कारण के एमना बाप अने मामाए एमनो जन्म थया पूर्वेज दीक्षा ग्रहण करेली हती.

आ. वज्रस्वामीने पूर्वजन्मना ज्ञानथी वैराग्य उत्पन्न थयो हतो अने ते ज कारणे तेमणे बालपणमां दीक्षा ग्रहण करी हती.

आ. वज्रस्वामीना गुरु **आ. आर्यसिंहगिरि आ. आर्यसुहस्ति सूरि**नी परम्पराना कोटिक गणना आचार्य हता. कल्पस्थविरावलीमां एमना मुख्य ४ शिष्योमां **वज्रनो नंबर आर्यसमित**ना पहेलां लखेलो छे; परंतु चरित्र ग्रंथोमां **आर्यसमित**नो नंबर वज्रनी पहेलां मळे छे, आ पाठान्तरनुं कारण ए जणाय छे के **वज्रस्वामी** पाछळथी युगप्रधान बन्या होवाथी कल्पसूत्रमां तेमनो नामोल्लेख **आर्यसमित**नी पूर्वे कर्यो छे.

आ. वज्रस्वामीनो समय संयमप्रधान हतो. दुष्कालना समयमां विद्यापिण्ड भोगववाने बदले अनशन

1. इसकी स्थिति अब पुरातत्त्व से निश्चित हो गयी है। प्राचीन काल के 'तुंबवन' का अर्वाचिन नाम 'तुमेन' है। यह स्थान गुना जिल में है। बीना-कोटा लाईन पर स्थित टकनेरी से ६ मील दूर दक्षिण-पूर्व में तुमेन स्थित है।.... इस तुमेन में से एक शिलालेख मिला है, जिस में 'तुम्बवन' का उल्लेख है।
आ श्री विजेन्द्रसूरि लि. 'तुम्बवन और आचार्य वज्र' लेख, मुनि हजारीमल स्मृति ग्रंथ पृ. ६८३

ग्रहण करवानुं **आ. वज्रस्वामी**ना शिष्योए पसंद कर्युं हतुं; ए जणावे छे **ते कालमां संयमधर्ममां थोडो पण अपवाद लगाडवाने साधुओ खुशी न हता;** साथे ज **ते समयमां जैन समाजमां मूर्तिपूजानो महिमा छेल्ली हदे पहोंचेलो जणाय छे.** अन्य धर्मीओना प्रतिबन्ध सामे संयमशिरोमणि **आ. वज्रस्वामी** जेवा जैन चैत्यो माटे पुष्प निमित्ते कमर कसे छे अने बहु दूर प्रदेशथी पुष्पो लावीने श्रावक वर्गनी इच्छा पूर्ण करे छे, ए बधुं बतावे छे के ते कालमां चैत्यपूजानुं कार्य एक महान धर्मनुं अंग मनावा लागी चूक्युं हतुं अने जो उंडा उतरीने जोईए **तो आ. वज्रस्वामीनी आ प्रवृत्तिनुं आलंबन लईने ज पाछळना आचार्यो धीमे धीमे चैत्य संबंधी सावद्य कार्योमां प्रवृत्त थया हता.** आवश्यक निर्युक्ति-भाष्य उपरथी स्पष्ट जणाय छे के, चैत्यवासियो वज्रस्वामीना आ दृष्टांतथी संयमधारियोने पण द्रव्य पूजा करवानो उपदेश करता हता अने पोतानां सावद्य कर्तव्योनो बचाव करता हता.

आ. वज्रस्वामीना समय सुधी साधुओ प्रायः वनमां रहेता अने **गृहस्थोना परिचयथी दूर रहेता हता.**

आ. वज्रस्वामीना समयनी स्थिति बहु सारी नहि गणाय; उपराउपरी बधे बारवर्षीय दुष्काळ पडवाथी देशनी एमांय खास करीने उत्तर हिन्दुस्थाननी प्रजा अस्तव्यस्त थई गई हती. उत्तर अने मध्य भारतवर्षनी घणी वसति ते समयमां दक्षिण भारत तरफ वळी हती. जैन संघनी दशा पण बहु सारी न हती. दुष्काळनी असरोथी श्रुतनी पठन पाठन प्रवृत्ति मंद थई रही हती; खरुं जोता संघनी स्थिति अस्ताभिमुख हती.

आ. वज्रस्वामीनुं मुख्य विहारक्षेत्र मालवा, मगध, मध्यहिन्दुस्थान अने वराड हतुं. ए उपरांत एकवार दुष्काळना समयमां संघनी साथे तेओ पुरी (जगन्नाथपुरी) सुधी पण गया हता.

आ. वज्रस्वामीनी मुख्य प्रवृत्ति धर्मोपदेश अने श्रुत पाठन हतुं, एमना शिष्यो उपरांत प्रसिद्ध अनुयोगधर **आर्यरक्षिते** एमनी ज पासे पूर्वश्रुतनो अभ्यास कर्यो हतो.

आ. वज्रस्वामीए कोई ग्रंथो, प्रकरणनी रचना करी हती के नहि ते जाणवामां आव्युं नथी[1]; पण तेमणे आचारांगसूत्रना महापरिज्ञाध्ययनमांथी आकाशगामिनी विद्यानो उद्धार कर्यानो उल्लेख शास्त्रमां मळे छे. ए सिवाय **वज्रस्वामी**ना संबंधमां महत्त्वनो उल्लेख महानिशीथसूत्रना त्रीजा अध्ययनमां मळे छे; जेनो सार ए छे के **पूर्वे पंचमंगल महाश्रुतस्कन्ध (पंच नमस्कार) पृथक् सूत्र हतुं एनी उपर घणी निर्युक्तिओ, घणां भाष्यो अने घणी चूर्णियो हती, पण कालदोषथी तेनो ह्रास थतो गयो,** ए पछी महर्द्धि प्राप्त पदानुसारी शक्तिवाला द्वादशांग धारी **आ. वज्रस्वामी** थया जेमणे आ पंचमंगल पण श्रुतस्कन्धने मूल सूत्रोमां लख्युं. आ उपरथी जणाय छे के नमस्कारसूत्र पूर्वे स्वतन्त्र सूत्र हतुं; पण **आ. वज्रस्वामी**ए सूत्रोना आरंभमां गोठव्या पछी आज पर्यन्त ते सूत्रोना आरंभ मंगळ तरीके सूत्रोनी साथे ज जोडायेल छे.

आ. वज्रस्वामीए बीजा दुर्भिक्षनी शरूआतमां एक पर्वतपर जईने अनशनपूर्वक देहत्याग कर्यो हतो. देहत्याग पछी इंद्रे त्यां आवी पोताना रथ साथे प्रदक्षिणा करी हती अने ते कारणथी ज ते पर्वतनुं नाम **'रथावर्त पर्वत'** पड्युं हतुं. रथावर्त पर्वत जैनोनुं एक प्रसिद्ध तीर्थ हतुं, आ पर्वत संभवतः दक्षिण मालवामां विदिशा (भेलसा) नी पासे हतो. आचारांग निर्युक्तिमां पण आनो तीर्थ तरीके उल्लेख थयो छे. हवे जो **वज्रस्वामी**ना स्वर्गवास पछी ज आ नाम प्रसिद्धिमां आव्युं होय तो आनो अर्थ एटलोज थाय के—रहावत्तनगं आवो उल्लेख करनारी आचारांग निर्युक्तिनी रचना **आ. वज्रस्वामी** पछी थई छे अने जो आचारांग निर्युक्तिने श्रुतकेवली भद्रबाहु कर्तृक मानवामां आवे तो 'रथावर्त्त' ए नाम 'वज्रस्वामी' ना स्वर्गवासना समयथी नहि पण ते पूर्वनुं छे एम मानवुं जोईए.

वज्रस्वामीना आयुष्य के स्वर्गवासना समयना संबंधमां चरित्रकारे कंई पण उल्लेख कर्यो नथी, पण

1. विविध तीर्थकल्प पृ. पू मां श्री वज्रस्वामिए 'कल्प प्राभृत' रच्यानुं जणाव्युं छे.

युगप्रधान पट्टावलियोमां ए बधी वातोनो खुलासो करेलो छे. **वज्रस्वामी** प्रथम उदयना १८मा युगप्रधान हता, एमनुं कुल आयुष्य ८८ वर्षनुं हतुं, जेमांना ८ वर्ष गृहपर्यायमां, ४४ वर्ष सामान्य श्रामण्य पर्यायमां अने ३६ वर्ष युग प्रधानत्व पर्यायमां व्यतीत थयां हतां, वीर निर्वाण संवत् ४९६ (विक्रम संवत् २६) मां वज्रस्वामीनो जन्म, वीर निर्वाण संवत् ५०४ (विक्रम संवत् ३४) मां दीक्षा, वीर निर्वाण संवत् ५४८ (विक्रम संवत् ७८) मां युगप्रधानपद अने वीर निर्वाण संवत् ५८४ (विक्रम संवत् ११४) मां अंतिम दशपूर्वधरनो स्वर्गवास थयो हतो. वज्रस्वामीना प्रबंधना परिशिष्टरूपे आ. वज्रसेनना नागेन्द्रादि चार शिष्योनी जे हकीकत आमां लखेली छे ते जरा विचारणीय छे. कारण के कल्प स्थविरावलीमां वज्रसेनना ४ शिष्यो लख्या छे खरा पण तेमनां नाम १. आर्यनाईल, २. आर्यपौमिल, ३. आर्यजयन्त अने ४. आर्यतापस. ए प्रमाणे लख्यां छे. आमांनुं नाईल नाम तो कदाच नागेन्द्रनुं पूर्व रूप मानी लईए पण बाकीनां त्रण नामोनो मेळ मळतो नथी. वळी नाईलादि ४ थी ४ ते ते नामनी शाखाओ नीकळ्यानी सूचना कल्प स्थविरावली करे छे, ज्यारे प्रभावक चरित्रकार आ नागेन्द्रादि शिष्योना नामोथी गच्छो प्रसिद्ध थयानुं जणावे छे. अने वधारेमां लखे छे के **आ चारे आचार्योनी मूर्तिओ हजी सुधी सोपारकमां पूजाई रही छे.** आ उपरथी एटलुं तो जणाय छे के नागेन्द्र आदिनी हकीकत सूत्र स्थविरावलियोमां न होवा छतां छे बहुपुराणी, एथी या तो कल्प स्थविरावलीवाळां नाईलादि नामो नागेन्द्र आदिनां ज नामान्तरो होय अने नहि तो नागेन्द्रादि नाईलादिथी भिन्न व्यक्तिओ हशे अने दीक्षापर्यायमां सहुथी नाना होवाथी तेमनां नामो कल्पस्थविरावलीमां नहि लखायां होय; गमे तेम होय पण नागेन्द्रादिनी सत्ता ऐतिहासिक होवामां तो शंका जेवुं नथी, पण एमनाथी गच्छो निकळवा संबंधी हकीकत बराबर जणाती नथी, एमनाथी गच्छो तो नहि पण कुलो प्रसिद्ध थयां हता एम कहीए तो वांधा जेवुं नथी. विक्रमना अगियारमा सैका सुधी ए नामना कुलो जैन श्रमण संघमां प्रचलित हतां, पण ते पछी ते कुलोए 'गच्छ' नुं नाम धारण कर्युं हतुं.

देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणे नन्दीस्थविरावलीमां 'नाईल कुलवंश' नो उल्लेख कर्यो छे. आचारांगादिना प्रसिद्ध टीकाकार **शीलाचार्य** पोताने **निर्वृत्ति** कुलीन जणावे छे अने उपमिति भवप्रपंच कथाकार **सिद्धर्षि** पण उक्त कथानी प्रशस्तिमां पोताना प्रगुरु **सूराचार्यने 'निर्वृत्तिकुलोद्भूत'** लखे छे. प्रसिद्ध आचार्य **हरिभद्र** पोताना ग्रंथोमां पोताना गुरु **जिनदत्तसूरि** ने 'विद्याधर कुलतिलक' लखे छे एटलुं ज नहि पण विक्रम संवत् १०६४ मां शत्रुंजय उपर एक मासनुं अनशन करीने स्वर्गे जनार **'संगम'** नामना सिद्ध मुनिने प्राचीन **पुण्डरीकना** लेखमां 'विद्याधर कुलनभस्तल मृगांक' लख्या छे.

विक्रमनी अगियारमी सदीमां **आ. शांतिसूरि**, बारमी सदीमां **अभयदेवसूरि** अने ते पहेलां पछीना बीजा अनेक ग्रंथकारोए पोताना ग्रंथोमां **चंद्रकुलना** उल्लेखो कर्या छे.

उपरना उल्लेखोनो विचार करतां जणाशे के अगियारमा सैका सुधी तो नागेन्द्र, निर्वृत्ति, विद्याधर अने चंद्र नामना कुलो ज प्रसिद्ध हतां तथा ते पछी धीरेधीरे ए कुलो गच्छना नामथी प्रसिद्ध थयां हतां, एज कारण छे के **प्रभाचंद्रसूरि** उक्त नामना गच्छो प्रसिद्ध थयानुं जणावे छे.

प्रबंधनी समाप्तिमां ग्रंथकार पोताने **आ. चंद्रप्रभसूरिना** पट्टधर तरीके ओळखावे छे अने पोते **श्रीराम** अने **लक्ष्मीना** पुत्र छे एम जणावे छे. ते पछी ग्रंथना नामनो अने एना संशोधक **आ. प्रद्युम्नसूरिनो** उल्लेख करे छे अने एज हकीकत प्रत्येक प्रबंधना अंतमां पण जणावी छे. मात्र प्रबंधनुं नाम अने संख्या बदले छे; ए उपरांत तेओ प्रत्येक तो नहि पण एकान्तरित प्रबंधोनी समाप्ति पछी आ ग्रंथना संशोधक **आ. प्रद्युम्नसूरिनी** स्तुति करे छे. आ प्रबंधने अंते पण **आ. प्रद्युम्नसूरिनी** स्तुति छे अने तेमां अष्टापद, विमलगिरि (शत्रुंजय), तारण (तारंगा), अपापा (पावा), स्तंभन (थांभणां), उज्जयंत (गिरनार), चारूरूप (चारूप) अर्बुद (आबु) आ आठ तीर्थोनी श्लेषमां उपमा आपीने तेमनुं वर्णन कर्युं छे. आ उपरथी ते समयमां प्रसिद्ध तीर्थोनो ख्याल आवे छे.

२. श्री आर्यरक्षिताचार्य

आ. आर्यरक्षितसूरि मालावान्तर्गत **दशपुर** (मंदसोर) ना राजा **उदायन**ना ग्रासभोगी पुरोहित **सोमदेव**ना पुत्र हता. ए २२ वर्षनी वयमां पाटलीपुत्र (पटना) मां ब्राह्मण धर्मना शास्त्रोनो अभ्यास करीने घरे आव्या हता. एमना आगमनथी आखुं नगर खुशी थयुं पण एमनी माता **रुद्रसोमा** के जे जैनधर्मनी उपासिका हती ए बहु खुशी थई नहि. आनुं कारण आर्यरक्षिते जाण्युं अने ते बीजे ज दिवसे **तोसलिपुत्र** नामना जैन आचार्य पासे जैन पूर्वश्रुतनो अभ्यास करवा गया, जैन दीक्षा सिवाय जैन सूत्रनुं अध्ययन न थई शके एम जाणी आर्यरक्षिते जैन दीक्षा ग्रहण करी अने शास्त्रनो अभ्यास शरू कर्यो, गुरु पासे जेटलुं श्रुतज्ञान हतुं ते बधुं भणीने ते पछी तेओ आगळ भणवा माटे **वज्रस्वामी** पासे उज्जयनी गया. त्यां प्रथम वज्रस्वामीना विद्यागुरु **भद्रगुप्तसूरि**ने उपाश्रये जईने तेमने अनशननी आराधना करावी अने ते पछी **आ.वज्रस्वामी** पासे जईने साडानव पूर्वनो अभ्यास कर्यो. ते दरमियान तेमनो नानो भाई **फल्गुरक्षित** पण त्यां आव्यो अने तेने पण **आर्यरक्षिते** जैनी दीक्षा आपीने पोतानी पासे राख्यो ए पछी कालान्तरे तेओ **वज्रस्वामी**नी आज्ञा लईने दशपुर गया अने त्यां पोताना माता पिता अने अन्य कुटुंबी जनोने पण जैनधर्ममां दीक्षित कर्यां.

पुरोहित **सोमदेव**नो आश्रयदाता **'उदायन'** कोण हतो ते जाणी शकायुं नथी. शोधक विद्वानोए ए विषयनी शोध करवी जोईए.

आर्यरक्षितसूरिनी माता जैनधर्मनी परम उपासिका हती ए उपरथी जणाय छे के ते समयमां **गमे ते जातिना मनुष्यो पोतानी जातिमां रहीने जैनधर्मनुं पालन करी शकता हता.**

आर्यरक्षिते कुमारावस्थामां माता पितानी आज्ञा सिवाय दीक्षा लीधी ते बाबतमां प्रभावक चरित्रकारे कंई पण टीका करी नथी, पण अन्य ग्रंथकारो आ संबंधमां लखे छे के **आर्यरक्षित**नी दीक्षा ते महावीरना शासनमां पहेली शिष्य निष्फेटा (चोरी) छे. आजकाल जेओ कहे छे के १६ वर्षथी नीचेनी वयवाळाने दीक्षामां आज्ञानी जरूर छे, उपरनाने नहि, तेओ विचारे के २२ वर्षनी अवस्थामां वगर रजाए थयेली **आर्यरक्षितसूरि**नी दीक्षाने शिष्यचोरी केम कही हशे?

आर्यरक्षितसूरि के एमना गुरुना गण, कुल के शाखानो क्यांय पण निर्देश थयो जणातो नथी पण एटलुं तो निश्चित छे के तेओ **आर्यसुहस्तीसूरि**नी परंपराना स्थविर हता.

आर्यरक्षितसूरिना समय सुधी संयम प्रवृत्ति निरपवाद हती, साधुओमां वस्त्र-पात्रनो परिग्रह परिमित हतो, चोलपट्टादि जरूरी उपकरणो जरूरतना समयमां ज उपयोगमां लेवातां हतां. आम **आर्यरक्षितसूरि**ना पिताना संभाषणो उपरथी स्पष्ट जणाई आवे छे. **सोमदेव** बीजा गार्हस्थ्य चिन्हो छोडवाने तैयार थई जाय छे पण नीचेनुं वस्त्र बदलवाने ते तैयार थता नथी, ते कहे छे ''नग्नैः शक्यं किमु स्थातुं स्वीयात्मजसुतापुरः'' अर्थात् पोताना पुत्र पुत्रीओनी आगळ नग्न केम रहेवाय? वळी श्रावकना छोकराओ तेमनो आ गृहस्थोचित वेष जोई वंदन नथी करता ते उपर **सोमदेव** कहे छे-''नग्नौ न स्यामहं यूयं मा वन्दध्वं सपूर्वजाः'' अर्थात् 'हुं नग्न नहि थाउं, भले तमे अने तमारा पूर्वजो कोई पण वन्दन न करो' ए उपरथी जणाशे के ते वखते **वस्त्र परिधान कारण प्रसंगे ज थतुं हशे,** जेवो के प्राचीन शास्त्रोनो आदेश छे.

आम छतां पण एटलुं तो कहेवुं पडशे के साधुओमां कंईक शिथिलता प्रवेशवा लागी हती अने तेथी **आर्यरक्षितजी**ने समयनो विचार करी कठोर नियमो कंईक मंद करवा पड्या हता एनुं एक उदाहरण 'मात्रक' राखवाना आदेश संबंधी छे. एटले के पूर्वे एक साधुने केवल एक ज पात्र राखवानुं विधान हतुं, पण तेथी साधुओने कंईक अडचण पडती हशे तेथी **आर्यरक्षितसूरि**ए साधुओने वर्षाऋतुना ४ मास माटे पात्र उपरांत

एक मात्रक (नानुं पात्र) राखवानी आज्ञा आपी हती. जेनुं विस्तृत वर्णन व्यवहारसूत्रना आठमा उद्देशकनी चूर्णिमां आपेलुं छे.[1] आथी जणाय छे के **आर्यरक्षितसूरि**नो समय संयम प्रधान हतो **छतां कंईक सगवडतानो विचार पण ते वखते थयो हतो.**

आर्यरक्षितनो समय अवनत्यभिमुख हतो. एनुं बीजुं उदाहरण साध्विओनो आलोचना देवानो अधिकार रद थवो ते छे, एटले के **आर्यरक्षित**नी पूर्वे साधुओ साधुओनी पासे आलोचना लेता तेम साध्विओ साध्विओनी पासे आलोचना-प्रायश्चित्त लेती हती, पण **आर्यरक्षित**थी साध्विओनो ए अधिकार रद थयो अने साधुओनी माफक साध्विओने पण साधुओनी पासे आलोचना करवानुं ठर्युं.[2]

त्रीजो अने सौथी मोटो फेरफार **आर्यरक्षितजी**ना समयमां अनुयोग पृथक्त्वनो थयो, [3]वज्रस्वामीपर्यन्त धर्मकथानुयोग, चरणकरणानुयोग, द्रव्यानुयोग अने गणितानुयोग ए चारे अनुयोगो साथे ज चालता हता; पण अध्यापक **विंध्यमुनिनी** प्रार्थनाथी आर्यरक्षिताचार्ये आ चारे अनुयोगो जुदा कर्या जे आज सुधी तेवी ज रीते जुदा छे.[4] आ बधां परावर्तनो जेवां तेवां नथी, आ परावर्तनो **जबर्दस्त संयोगोमां करवां पड्यां हशे** अने ए उपरथी तत्कालीन परिस्थिति केवी हशे ते जाणवुं मुश्केल नथी, खरुं जोतां आर्यरक्षिताचार्य एक युगप्रवर्तक पुरुष हता. प्राचीन श्रमण संस्कृतिनो ह्रास अने नवीन आचार पद्धतिनो प्रारंभ आर्यरक्षिताचार्यना शासनकालमां ज थवा मांड्यो हतो एम कहेवामां भाग्ये ज वांधा जेवुं होय. आर्यरक्षिताचार्यनुं मुख्य विहारक्षेत्र मालवदेश हतुं अने ए उपरांत तेओ मथुरा तरफ तेमज मध्यहिन्दुस्थानना बीजा देशोमां पण विचर्यां हता.

आर्यरक्षितसूरि १९मा युगप्रधान हता. वाल्लभीयुगप्रधान पट्टावलीने अनुसारे एमनुं संपूर्ण आयुष्य ७५ वर्षनुं हतुं. जेमांना २२ वर्ष गृहमां, ४४ सामान्य श्रामण्यमां अने १३ वर्ष युगप्रधानत्वपर्यायमां व्यतीत थया हता. एमनो जन्म वीर निर्वाण संवत् ५२२ (विक्रम संवत् ५२) दीक्षा वीर निर्वाण संवत् ५४४ (विक्रम संवत् ७४) मां, युगप्रधानपद वीर निर्वाण संवत् ५८४ (विक्रम संवत् ११४) मां अने स्वर्गवास वीर निर्वाण संवत् ५९७ (विक्रम संवत् १२७) मां थयो हतो, पण माथुरी वाचनाने अनुसारे **आर्यरक्षितसूरि**नो स्वर्गवास निर्वाण संवत् ५८४ मां सिद्ध थाय छे. आ मतान्तर माथुरी अने वाल्लभी आ बे वाचनाओ वच्चेना १३ वर्षना मतभेदनुं परिणाम छे. आ मतभेदनुं बीज अने एनुं समाधान केवी रीते थाय छे ते जाणवुं होय तो **'वीर निर्वाण संवत् और जैन कालगणना'** नामनुं अमारुं हिन्दीभाषानुं पुस्तक वांचवुं, अहींया चर्चा करीने बहु विस्तार करवानो अवसर नथी.

आर्यरक्षिताचार्ये पोतानी पाट पर **पुष्पमित्राचार्य**ने बेसाडीने तेने शिक्षा आपतां कहेलुं के—'मारा मामा, भाई अने पिताने विषे मारी जेवुं वर्तन राखवुं' बीजी तरफ पोताना पिता अने भाई वगेरेने पण तेमणे शिखामण आपेली. आथी जणाय छे के आर्यरक्षिताचार्यनो स्वर्गवास थयो त्यां सुधी तेमना पिता सोमदेव जीवित हता. निशीथसूत्रना पहेला उद्देशानी चूर्णिमां आर्यरक्षिताचार्यना पिताने वृद्धावस्थाना दीक्षित लख्या छे; शास्त्रना नियम प्रमाणे ६० वर्षथी उपरनी अवस्थावाळाने 'वृद्ध' कही शकाय. आ बधो विचार करतां सोमदेवमुनि लगभग १०० वर्षथी अधिक जीव्या हशे एम जणाय छे; कारण के आर्यरक्षिताचार्य दीक्षा लई

1. व्यवहार भाष्य गा. ३६०५-६ अने टीकामां आ वातनो उल्लेख छे.
2. व्यवहार भाष्य गा. २३६५-८ अने टीकामां आ वातनो उल्लेख छे.
3. साधु को अग्रावतार के बदले में चोलपट्ट बांधना और झोली में भिक्षा लाना ये सभी आर्यरक्षित सूरि के परिवर्तनों का फल है.... अनुयोगों का पार्थक्य और कालिक श्रुत में नयवाद का गोपन जैसे महान कार्य करने का साहस किया है। प्रबंध-पारिजात पृ. ११-१२-२१)
4. निशीथ भाष्य पृ. १८७मां आ घटनानो उल्लेख छे.

पूर्वभणीने आव्या हशे त्यां सुधी तेमनी अवस्था ३२ वर्षनी आसपास हशे अने त्यारे **सोमदेवे** ६०-६२ वर्ष उपरनी अवस्थामां दीक्षा लीधी होय तो सोमदेवमुनि आर्यरक्षिताचार्यथी ३०-३२ वर्षे मोटा गणाय, आर्यरक्षिताचार्ये ७५ वर्षनुं आयुष्य पुरूं कर्युं त्यां सुधी सोमदेव जीवित हता एनो अर्थ एज थाय के **सोमदेव** ओछामां ओछुं १०० वर्षथी वधारे जीव्या हता.

आर्यरक्षितनो स्वर्गवास क्यां थयो ते चरित्रमां जणाव्युं नथी[1] पण संभव प्रमाणे तेओ **दशपुर** नगरमां ज स्वर्गवासी थया हशे.[2]

३. श्री आर्यानन्दिल

प्रबंधमां नाम **आर्यनन्दिल** लख्युं छे. तेमज केटलीक स्थविरावलीओमां पण एमनुं नाम 'नन्दिल' ज जणाव्युं छे, पण नन्दिनी मूल स्थविरावलीमां अने एमना ज रचेला **वैरुट्यास्तवमां** 'अज्जानन्दिल' एवो उल्लेख होवाथी हुं एमनुं खरुं नाम 'आर्य आनन्दिल' गणुं छुं अने एज कारणथी शीर्षकमां 'आर्यानन्दिल' लख्युं छे.

आर्यानन्दिल आर्यरक्षिताचार्यना शिष्य अथवा तो शिष्यना शिष्य हशे; कारण के एमने चरित्रकारे साडानवपूर्वधारक अने **'आर्यरक्षितवंश्य'** लख्या छे. जो के छापेल नन्दीस्थविरावलीमां अने **मेरुतुंगसूरि** व्याख्यान स्थविरावलीमां एमनो उल्लेख **आर्यमंगूआचार्यनी** पछी अने **नागहस्ती**आचार्यनी पहेलां कर्यो छे;

1. "इस प्रसंग पर उपाध्याय श्री धर्मसागरजी महाराज एक शंका उपस्थित करते है और उसका समाधान न होने से प्रश्न बहुश्रुतों के ऊपर छोडते है। सागरजी का वह शंका निम्नोद्धृत है :

'तत्र श्रीवीरात् त्रयस्त्रिंशदधिकपञ्चशतवर्षे श्री आर्यरक्षितसूरिणा श्री भद्रगुप्ताचार्यो निर्यामित : स्वर्गभागिति पट्टावल्यां दृश्यते। परं दुष्षमासंघस्तवयन्त्रानुसारेण चतुश्चत्वारिंशदधिक पंचशत ५४४ वर्षातिक्रमे श्री आर्यरक्षितसूरीणां दीक्षा विज्ञायते तथा चोक्तसंवत्सरे निर्यामणं न सम्भवतीत्येतद् बहुश्रुतगम्यम्'

सागरजी का प्रश्न वास्तविक है, परंतु इसका समाधान अशुद्धिपूर्ण यन्त्रकों के आधार से नहीं हो सकता। हमारी गणना के अनुसार आर्यरक्षितजी का स्वर्गवास जिन निर्वाण से ५८३ में आता है। आर्यरक्षितसूरीजी के सर्वायुष्य का अंक ७५ वर्ष और कुछ महिनों का था। उन्होंने २२ वर्ष की उम्र में 'तोसलिपुत्राचार्य' के पास दीक्षा ली थी। ५८३ वर्ष में से ७५ वर्ष बाद करने पर आर्य रक्षितजी का जन्म समय ५०८ में आता है। उसमें २२ वर्ष गृहस्थाश्रम के जोडने पर ५३० में दीक्षा का समय आता है। दीक्षा लेकर दो-ढाइ वर्ष तक अपने गुरु के पास पढकर विशेष अध्ययन के लिए वज्रस्वामी के पास जा रहे थे जब कि उज्जैनी में स्थविरभद्रगुप्त की निर्यामणा करने का अवसर मिला था। और भद्रगुप्त के स्वर्गवास के बाद वज्रस्वामी के पास पहुंचे थे। इस प्रकार से उपाध्यायजी की शंका का समाधान ठीक ढंग से हो जाता है।

इसी प्रकार आर्यरक्षितसूरि के स्वर्गवास समय के बारे में उपाध्यायजी महाराज ने अपने पट्टावली-सूत्र की टीका में एक शंका उपस्थित कि है जो निम्न शब्दो में है—

'श्रीमदार्यरक्षितसूरिः सप्तनवत्यधिकपंचशत ५९७ वर्षान्त स्वर्गभागिति पट्टावल्यादौ दृश्यते, परमावश्यकवृत्त्यादौ श्रीमदार्यरक्षितसूरिणां स्वर्गगमानन्तरं चतुरशीत्यधिकपञ्चशत ५८४ वर्षान्ते सप्तमनिह्नवोत्पत्तिरुक्तास्ति तेनैतद् बहुश्रुतगम्यमिति।'

उपाध्याय की यह शंका भी वास्तविक है और इसका समाधान भी यह है कि—"आर्यवज्र तथा आर्य रक्षितसूरि के स्वर्गवास के समय में जो १८-१८ वर्ष अधिक आये है उनको हटा दिया जाय। क्योंकि **इस प्रकार की अशुद्धियां प्रकीर्णक अशुद्ध गाथाओं के ऊपर से पट्टावलीयो में घुस गयी है, जिनका परिमार्जन करना आवश्यक है।**" पट्टावली पराग पृ. १३७-८

2. एमना स्वर्गवास साथे त्रीजो संघयणनो विच्छेद थयो. (व्यवहारभाष्य गा. ३७८० अने टीका) "प्रकल्पाध्ययन (निशीथ) आर्य रक्षित की कृति है।"..... जब तक आगम-व्यवहार रहा तब तक 'उत्कृष्ट गीतार्थ' भी रहे, जब से आर्यरक्षितसूरि तथा उनके शिष्य आर्य दुर्बलिका पुष्यमित्र परलोकवासी हुए तब से उत्कृष्ट गीतार्थता भी समाप्त हो चली।" (प्रबन्ध पारिजात पृ. १२,२)

पण मूलनन्दीस्थविरावलीमां एमनुं स्थान **आर्यरक्षिताचार्य** पछी बताव्युं छे. जो **मेरुतुंग**नी स्थविरावली अने नन्दीनी मुद्रित स्थविरावलीने यथार्थ मानीने **आर्य आनन्दिलसूरि**ने मंगूआचार्यना अनन्तर भावी स्थविर मानीए तो एमनुं आर्यरक्षित वंश्यत्व साबित थाय तेम नथी. केमके आर्यमंगूआचार्यना युगप्रधानत्वनो समय वीर निर्वाण संवत् ४५१ थी ४७७ सुधीनो हतो, ज्यारे **आर्यरक्षितसूरि**नो समय वीर निर्वाण संवत् ५४४ थी ५९७ सुधीमां हतो, आ दशामां जो आर्य आनन्दिलसूरिने मंगूआचार्यना पट्टधर मानीए तो तेमनो समय **आर्यरक्षितसूरि**नी पूर्वे लगभग १०० वर्ष उपर आवे छे अने आवी रीते तेओ **आर्यरक्षितसूरि**ना वंश ज नहीं पण पूर्वज ठरे छे, पण प्रबंधमां एमने **आर्यरक्षितसूरि**ना वंशज लख्या छे अने ए लखवुं संभवित पण छे. तेथी ए मंगूआचार्यना पट्टधर नहीं पण माथुरी युगप्रधान पट्टावलीने अनुसारे ते **आर्यरक्षितसूरि** पछीना युगप्रधान स्थविर हता एम मानवुं वधारे सयुक्तिक छे अने आवी रीते **आर्यरक्षितसूरि**ना पृष्ठभावी गणतां एमनो सत्तासमय निर्वाण संवत् ५९७ पछीनो ठरे छे.[1]

प्रबंधमां **आर्यानन्दिलसूरि**नो मात्र एटलो ज चरित्र साथे संबंध छे के तेमणे 'वैरुट्य'' नामनी एक बाईने क्षमा धर्मनो उपदेश आपीने सुखी बनावी, ते बाई मरीने धरणेन्द्र नागराजनी तेज नामनी देवी थई.

आर्यानन्दिलसूरिनी आज्ञाकारिणी थई एटलुं ज नहि पण आठ नागकुलो पण आ महात्माने आज्ञाधीन थयां अने **आर्यानान्दिलाचार्ये वैरूट्यास्तवनी** रचना करी. **वैरुट्या** कोण हती? तेने शुं दुःख हतुं अने क्षमा राखवाथी केवी रीते ते दुःखमुक्त थई ईत्यादि हकीकत आ प्रबंधमां विस्तारथी जणावी छे. वास्तवमां आ प्रबंधने **आर्यानन्दिल प्रबंध** कहेवा करतां **वैरुट्या-प्रबंध** कहेवो वधारे उपयुक्त गणाय.

आ प्रबंधमां एक साथे आवतां 'पद्मिनीखंडपत्तन, पद्मप्रभराजा, पद्मावती राज्ञी, पद्मदत्तश्रेष्ठी, पद्मयशा भार्या, पद्माभिध पुत्र आ बधा पकारादि नामो ऐतिहासिक हशे के कविकल्पित ते जाणवुं अशक्य छे.

४. श्री कालकाचार्य

जैन शास्त्रो अने स्थविरावलीओ उपरथी ओछामां ओछा त्रण **कालकाचार्यो**नुं अस्तित्व सिद्ध थयुं छे अने एथी पण **वधारे संख्यामां ए नामना आचार्य थया होय** तो नवाई जेवुं नथी.[2] जेम **कालकाचार्यो** अनेक थया छे तेम आचार्य कालकना नामनी साथे जोडायेली घटनाओ पण जैन शास्त्रोमांथी अनेक मळी आवे छे. आज सुधीमां **कालकाचार्य**ना नामनी साथे संकळायेली नीचे प्रमाणे ७ घटनाओ जाणवामां आवी छे.

१. दत्तराजानी आगळ यज्ञना फल कथन संबंधी.
२. इन्द्रनी पासे निगोदना व्याख्यान संबंधी.[3]
३. आजीविको पासे निमित्त पठन संबंधी.
४. अनुयोग निर्माण संबंधी.
५. गर्दभिल्लोच्छेद संबंधी.
६. चतुर्थी पर्युषण करण संबंधी.
७. अविनीत शिष्य परित्याग संबंधी.

1. पुराणों के अनुसार नागवंश ने विदिशा, कांतिपुरी, मथुरा और पद्मावती में राज्य किया। विदिशा के नागवंशी १३ राजाओं ने लगभग २०० वर्षों (ई. पू. १०० से ७८) तक राज्य किया। इस दृष्टि से भी आर्यानन्दिल का समय शताब्दि ई. के तृतीयांश के बीच ही समीचीन ठहरता है।'' प्रबंध कोश का ऐतिहासिक विवेचन लेखक डो. प्रवेश भारद्वाज पृ. ८१ 2. रत्न संचय प्रकरण गा. २७२-२७६ में कालकाचार्य का वर्णन है। 3. आवश्यकनिर्युक्ति गा. ७७४ पृ. ३९७ की चूर्णि में इंद्र के सामने आर्यरक्षितजी के निगोद के व्याख्या का वर्णन मिलता है। पं. कल्याण विजय महाराजनो लेख 'आर्यकालक' द्विवेदि अभिनंदन ग्रंथ पृ. ३७

आमांनी पहेली घटनानुं वर्णन आवश्यक चूर्णिमां करेलुं छे अने आ घटनानो संबंध घणे भागे प्रथम आचार्य कालकनी साथे छे के जेओनो सत्तासमय वीर निर्वाण संवत् ३०० थी ३७६ सुधीनो हतो. अने कदाच ए घटना प्रस्तुत त्रणे कालकाचार्यथी भिन्न कोई अन्य कालकाचार्यनी साथे संबंध धरावती होय तो पण असंभवित नथी. बीजी घटना स्थविरावलीना उल्लेख प्रमाणे तो उपर्युक्त प्रथम कालकाचार्यनी साथे ज संबन्धित छे, पण उत्तराध्ययन निर्युक्तिना लेख प्रमाणे आ घटनानो संबंध निर्वाण संवत् ४५३ नी आसपास थयेल बीजा कालकाचार्यनी साथे छे. आ घटनानुं वर्णन कथावली आदि ग्रंथोमां आपेलुं छे.

त्रीजी घटनानो उल्लेख पंचकल्पचूर्णिमां (पत्र २४) छे.

चोथी घटनानुं वर्णन पंचकल्पचूर्णि तथा प्रकीर्णक गाथाओमां छे.

पांचमी घटनानुं वर्णन निशीथचूर्णि, (उ. १० गाथा २८६० भाग ३ पृष्ठ ५९) व्यवहारचूर्णि, कथावली (२/२८५) अने कालक कथाओमां (गा. ८०) मळे छे.

छट्ठी घटनानुं वृत्तान्त निशीथचूर्णि (भाग ३ पृष्ठ १३१) कथावली आदिमां मळे छे.

सातमी घटनानुं वर्णन आवश्यकचूर्णि, कल्पचूर्णि अने कथावली आदिमां करेलुं छे.

उपरनी त्रीजीथी सातमी सुधीनी पांचे घटनाओनो संबंध उपर्युक्त बीजा कालकाचार्यनी साथे छे.

उपर्युक्त घटनाओ पैकी प्रस्तुत प्रबंधमां मात्र ५मी, ६ठ्ठी अने ७मी आ त्रण घटनाओनुं वर्णन आपेलुं छे. ३जी अने ४थी ए बे घटनाओ प्रायः अप्रसिद्ध छे अने २जी घटनानो अति देशमात्र कर्यो छे अने १ली घटना अन्यकालकाचार्य संबंधी जाणीने छोडी दीधी लागे छे. आ बधी घटनाओ पैकी कई घटना कया समयमां बनी ते संबंधी उहापोह अमोए अमारा "**वीरनिर्वाण संवत और जैन कालगणना**" तथा "**आर्यकालकाचार्य**"[1] नामना निबंधोमां कर्यो छे अने परिणामे जे समयनी अटकळ करी छे ते वाचकोने अवलोकवा निमित्ते नीचे आपीए छीए—

१. यज्ञफल निरुपण-निर्वाण संवत ३०० थी ३३५ सुधीमां
२. निगोद व्याख्यान-निर्वाण संवत ३३६ थी ३७६ सुधीमां
३. निमित्त पठन-४५३नी पहेलां पांच-दश वर्ष उपर
४. अनुयोग निर्माण-४५३नी पूर्वे.
५. गर्दभिल्लोच्छेद-४५३ना वर्षना अंते
६. चतुर्थी पर्युषणा-४५७ अने ४६५ नी वचमां
७. अविनीत शिष्यत्याग-४५७ पछी ४६५नी पहेलां

आटलुं प्रासंगिक विवेचन करी हवे प्रस्तुत प्रबंध उपर आवीए.

कालकाचार्य धारावासनगरना **राजा वीरसिंह**ना पुत्र अने भरूचना **राजा बलमित्र भानुमति**ना मामा हता अने एमनां सर्व कामो क्षत्रियोचित हतां; ए बधी वातोनो विचार करतां एओ जातिना क्षत्रिय हशे एमां कंई शंका जेवुं नथी.

---

1. आ लेखमां लेखक श्री ए उपर्युक्त सात घटना बे कालकाचार्योना जीवनमां घटी छे एम जणाव्युं छे. आ लेख द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथमां (पृ. ६८-११६) प्रसिद्ध थयेल छे.
डॉ. उमाकांत शाह एमना लेख 'सुवर्ण भूमि में कालकाचार्य'मां बधी घटनाओ एक ज कालकाचार्य जोडे संबंध धरावे छे. एवी वात रजू करी छे. अने आज लेखमां कालकाचार्य जे सुवर्णभूमिमां गया हता तेनो प्रयोग सुमात्रा वगेरे भारत बहारना प्रदेशो माटे थतो हतो ए बाबत विस्तृत विवेचन कर्युं छे.

कालके जैन **आचार्य गुणाकर**ना उपदेशना परिणामे कुमारावस्थामां ज जैन दीक्षा ग्रहण करी हती, एटलुं ज नहि पण एमनी बहेन **सरस्वती**ए पण ते ज मार्गनुं अनुसरण कर्युं हतुं के जेना निमित्ते गर्दभिल्लोच्छेदवाली घटना बनवा पामी हती.

प्रस्तुत प्रबंधकारे कालकाचार्यनी मददे आवेल ९६ शक राजाओने शाखिदेशथी आव्या बताव्या छे, पण खरी रीते तेओ ईरानथी आव्या हता. निशीथचूर्णिमां आ शको 'पारसकुल' ना हता एम जणाव्युं छे, ज्यारे प्राकृत कालकाचार्यकथामां तेओ 'शककुल' थी आव्यानो उल्लेख छे. 'पारसकुल' एनो अर्थ फारसनी खाडी पासेनो देश एवो जणाय छे, त्यांना शको उपरथी ते शककुल पण कहेवातो होय; 'शाखिदेश' ए कंई देशनुं वास्तविक नाम नथी, पण प्राकृत 'साहि' शब्दनुं संस्कृत रूप छे अने 'साहि' ए राजावाचक 'शाह' नो अपभ्रंश छे. आथी ए सिद्ध थाय छे के जे ९६ मंडलिको कालकाचार्यनी प्रेरणाथी हिन्दुस्थानमां आव्या हता, ते जातिना 'शक' अने 'शाह' उपाधिधारी ईरानना मंडलिको हता. तेओए पहेलवहेली काठियावाडमां पोतानी सत्ता जमावी अने ते पछी उज्जैनी उपर जईने गर्दभिल्लने पदभ्रष्ट करी त्यांनो कबजो लीधो हतो.

प्रस्तुत प्रबंधमां तेमज व्यवहारचूर्णि आदिमां उज्जैनीना सिंहासन उपर 'साहि'ने बेसाडवानो लेख छे; ज्यारे कथावलीमां उज्जैनीना राज्यासन उपर लाटना[1] राजा **बलमित्र**ने बेसाड्यानो उल्लेख कर्यो छे. आ बे परस्पर विरुद्ध लेखोनो समन्वय ए छे के लडाई जीत्या पछी तरत ते उज्जैनीनी गादीए शक ज बेठो हतो, पण ते त्यां बहु टक्यो लागतो नथी. लगभग ४ वर्ष राज्य कर्या पछी **बलमित्र-भानुमित्रे** तेमने उज्जैनीमांथी काढीने पोतानो कबजो कर्यो हतो, आ कारणथी कथावलीनो लेख पण अपेक्षाथी साचो ज छे.

प्रबंधकार लखे छे के **कालकाचार्य बलमित्र, भानुमित्र**ना आग्रहथी भरूचमां वर्षाचोमासुं रह्या, पण पुरोहितनी खटपटना परिणामे तेमणे चोमासामां ज विहार करी **प्रतिष्ठान**मां जईने चतुर्थीने दिवसे पर्युषणा करी हती, प्रबंधनो ए लेख पण विचारणीय छे. केमके निशीथचूर्णिमां (उ.१० गा.३१५६ भा.३ पृ.१३१)मां स्पष्ट लखेलुं छे के तेमणे उज्जैनीमां चोमासुं कर्युं हतुं अने त्यांथी ज तेओ प्रतिष्ठानपुर गया हता. **बलमित्र-भानुमित्र** भरूचना राजा तरीके ज विशेष प्रसिद्ध हता, केमके उज्जेणीनो अधिकार तेमणे पाछळथी मेळव्यो हतो अने त्यां तेओए ८ वर्ष सुधी राज्य कर्युं हतुं. ज्यारे भरूचमां तेमणे ५२ वर्ष सुधी राजपद भोगव्युं हतुं. आथी ते प्रायः ठेठ सुधी भरूचना राजा तरीके ज प्रसिद्ध रह्या लागे छे अने एज प्रसिद्धिना परिणामे प्रबंधकारे कालकाचार्यने भरूचथी प्रतिष्ठाननी तरफ विहार कराव्यो लागे छे. वास्तवमां कालकसूरि भरूचथी नहि पण उज्जैनीथी प्रतिष्ठान जईने **सातवाहन**ना कहेवाथी चतुर्थीना दिवसे पर्युषणापर्वनुं आराधन कर्युं हतुं.

अविनीत शिष्य परित्यागवाळी घटनाना वर्णनमां पण **प्रस्तुत प्रबंधकारे एक मोटी भूल करी छे.** तेओ लखे छे के 'शिष्योना अविनयथी कंटाळीने कालकाचार्ये तेमने मूकीने छाना विशाल अर्थात् उज्जैनी तरफ चाल्या गया अने त्यां पोताना प्रशिष्य सागरसूरिनी पासे रह्या' कालकाचार्ये पोताना शिष्योनो क्यां त्याग कर्यो ते अहीं जणाव्युं नथी, पण तेमने छोडीने तेओ उज्जैनी गया एम बताव्युं छे; ज्यारे खरी हकीकत ए छे के कालकाचार्ये उज्जैनीमां पोताना शिष्योनो त्याग कर्यो अने त्यांथी एकला विहार करीने सुवर्णभूमिमां पोताना प्रशिष्य **सागरसूरि** श्रमणनी पासे तेओ गया हता; ''उज्जेणी कालखमणा सागरखमणा सुवर्णभूमिसु'' आ उत्तराध्ययन निर्युक्तिनी गाथा (१२०मी)मां तेमज अन्य ग्रंथोमां पण आ हकीकत घणी प्रसिद्ध छे; छतां प्रभाचंद्रे आ विषयमां आवी भूल केम करी हशे ते कही शकाय तेम नथी.

1. व्यूलर के अनुसार 'लाट' मध्यभारत है परंतु अधिकांश इतिहासकारों के अनुसार लाट दक्षिणी गुजरात है। जिसमें सुरत, भडौच, खेडा और बडौदा के हिस्से सम्मिलित थे। प्रबंधकोश का ऐतिहासिक विवेचन पृ. ४५

अंतमां प्रबंधकारे कालकाचार्यना मुखे सागर प्रति अष्टपुष्पीना स्वरूपनो प्रश्न कराव्यो छे, पण प्राचीन पुस्तकोमां आ विषयनो कंई पण उल्लेख जोवातो नथी. **मूल वृतान्तमां कालान्तरे केवी रीते उमेरा थाय छे ते आ उपरथी जणाशे.**

कालकाचार्यना गुरु अने गच्छ संबंधी कंई पण वृत्तान्त जाणवामां आव्युं नथी तेमज तेओ श्रुतज्ञानना केवा अभ्यासी हता ते पण नथी जणातुं, पण तेमणे करेल अनुयोग निर्माण उपरथी जणाय छे के तेमनी ते कालीन श्रुतधरोमां गणतरी अवश्य होवी जोईए.

कालकाचार्यनो समय संयम प्रधान हतो. तेमना समयमां **रेवतीमित्रआचार्य, आर्यमंगूआचार्य** अने **आर्यसमुद्रआचार्य** जेवा अनुयोगधरो विचरता हता. मध्यहिन्दुस्थान अने कोकन वगेरेमां जैन धर्मनुं विशेष प्राबल्य हतुं, छतां राज्यक्रान्तिना कारणे देशमां कंईक अशांति जेवुं हशे. पश्चिम भारतथी लईने मालवा सुधीमां शकोना टोळां फेलाई गयां हतां अने आ सर्व आपत्तिनुं मूलकारण **गर्दभिल्ल** द्वारा साध्वी **सरस्वती**नुं अपहरण हतुं, जो **गर्दभिल्ल कालकाचार्यना** उपदेशथी समजी गयो होत अथवा अन्य कोई पण भारतीय राजाए **कालकाचार्य**नी फरियाद सांभळी होत तो तेओ पारसकुल सुधी जईने शकोने न लाव्या होत.

कालकाचार्य जबरदस्त युगप्रवर्तक पुरुष हता. तेमणे राज्यक्रान्ति ज करावी हती एम नहि पण धर्ममार्गमां पण तेमणे सूत्रोना पद्यबन्ध प्रकरणोना अनुवाद करीने **गंडिकानुयोग**नी प्रवृत्ति चलावी हती अने प्रथमानुयोग नामथी एक कथा विषयक **आकर सिद्धान्त ग्रंथ**नी रचना करी हती अने ते उपरान्त तेमणे लोकानुयोगमां **कालक संहिता** नामनी निमित्त विषयनी संहिता बनावी हती. परंपराथी भाद्रवा सुदि ५ ने दिवसे पर्युषणापर्व थतुं हतुं ते एमणे चतुर्थीने दिवसे कर्युं अने खूबी ए हती के पोतानां आ सर्व अभिनव कार्यो जैन संघनी पासे तेमणे **''प्रामाणिक'' तरीके मंजुर कराव्यां हतां.** आ उपरथी कालकाचार्यनो जैन संघमां केवो प्रताप हशे ते वाचको स्वयं जाणी शकशे. कालकाचार्यनी विहार भूमी पण घणी विस्तृत हती. पूर्वमां पाटलिपुत्र (पटना) मां ते संघने पोताना कर्तव्यनुं दिग्दर्शन करावे छे, दक्षिणमां प्रतिष्ठानमां पंचमी थकी चतुर्थीमां सांवत्सरिक पर्व करे छे, पश्चिममां तो तेओ छेक फारसनी खाडी सुधी शकिस्तानमां पहोंची जाय छे अने ए उपरांत सुवर्णभूमि सुधी ते पोतानो विहार लंबावे छे. आथी कालकाचार्य क्यां सुधी पोतानो विहार लंबाव्यो हतो ते जणाशे.

कालकाचार्य क्यां अने क्यारे स्वर्गवासी थया ए जणायुं नथी पण घणे भागे तेओ वीर निर्वाण संवत ४६५ नी लगभगमां परलोकवासी थया हशे, एम हुं मानुं छुं.

५. श्री पादलिप्तसूरि

पादलिप्तसूरिनो प्रबंध ते एक प्रबंध संग्रह छे, आमां पादलिप्तसूरि उपरान्त **रुद्रदेवसूरि, श्रमणसिंहसूरि, आर्यखपट, महेन्द्र उपाध्याय** अने **नागार्जुन सिद्ध**ना प्रबंधो पण आव्या छे अने आ बधा महापुरुषोने सम सामयिक बताव्या छे. अमो आ प्रबंधोनुं जुदुं-जुदुं अवलोकन करीने ते विषयमां ऐतिहासिक तत्त्वनुं अन्वेषण करशुं.

पादलिप्तनो जन्म कोशलापुरी (अयोध्या) मां **विजयब्रह्म राजा**ना राज्य कालमां थयो हतो. एमना पितानुं नाम **'फुल्ल श्रेष्ठी'** अने मातानुं नाम **प्रतिमा** हतुं. वैरोट्या नामनी नाग जातिनी देवीए बतावेल उपाय करवाथी एमनो जन्म थयो हतो तेथी मातापिताए एमनुं नाम **'नागेन्द्र'** आप्युं हतुं.

नागेन्द्रने बालपणामां ज एनी माताए विद्याधर गच्छना आचार्य **आर्यनागहस्ति**ने अर्पण कर्यो हतो. पण मोटो थाय त्यां सुधी पालवानी आचार्यनी भलामणथी तेने माताए पासे राखीने ७ वर्ष सुधी पाळ्यो हतो. ८मा वर्षमां आचार्ये तेने पोताने कबजे लीधो अने पोताना गुरुभाई **संगमसिंहसूरि**ने तेना संबंधमां उचित करवानी आज्ञा आपी. **नागेन्द्र**ने आठ वर्षनी ज अवस्थामां दीक्षा आपीने एनी सेवा शुश्रूषा अने अध्ययननुं कार्य **मण्डन** नामना गणिने सोंपवामां आव्युं.

दीक्षा आपीने **नागेन्द्र**नुं शुं नाम पाड्युं ते जणायुं नथी; पण एनुं **पादलिप्त** नाम केम पड्युं ते प्रबंधकारे जणाव्युं छे कहे छे के **नागेन्द्र**नी एवी तीक्ष्ण बुद्धि हती के ते जे सांभळतो ते तेने याद रही जतुं हतुं. आवी शीघ्र ग्राहिणी बुद्धिना प्रभावे तेणे एक ज वर्षनी अंदर व्याकरण अने साहित्यमां सारो प्रवेश करी दीधो हतो अने ते साधारण कविता पण जोडी काढतो. एकवार तेणे एक गाथा पोतानी भिक्षाचर्यांना वर्णनमां लखी जेमां युवतिस्त्रीनुं वर्णन जोई गुरुए एने प्राकृत भाषामां कह्युं के ''पलित्तोसि'' अर्थात् 'तुं रागाग्निमां सळगी गयो छे' गुरुनुं ए वाक्य सांभळीने एणे कह्युं—'हे पूज्य! आ 'पलित्त' शब्दमां एक 'कानो' वधारी आपवानी कृपा करो के जेथी हुं 'पालित्त' पादलिप्त-(पगे लेप करनारो) थई जाउं. अने गुरुए एने आशिर्वाद आप्यो के **'पादलिप्तो भव'** आ प्रमाणे **नागेन्द्रनुं पादलिप्त** नाम पड्युं. **पादलिप्त**नी चतुराई अने बुद्धिथी प्रसन्न थईने **आर्यनागहस्ति**ए दशमा वर्षे एमने पोताना उत्तराधिकारी पट्टधर तरीके कायम करीने मथुरा नगरीए मोकल्या.

केटलोक समय मथुरामां रहीने **पादलिप्तसूरि**ए पाटलीपुत्र तरफ विहार कर्यो.

पाटलीपुत्र नगरमां आ वखते **मुरुण्ड** नामक राजा राज्य करतो हतो. तेणे पादलिप्तनी तात्कालिक बुद्धिना विषयमां प्रशंसा सांभळीने तेमनी अनेक प्रकारे परीक्षा करी, जेमां सर्वत्र **पादलिप्तसूरि**ने पोतानी प्रतिभानो अपूर्व परिचय बताव्यो अने **मुरुण्ड**ना मनमां सद्भाव उत्पन्न कर्यो.

कहे छे के एकवार **मुरुण्डराज**ने मस्तकनी पीडा उत्पन्न थई, जेनी खबर तेणे प्रधानोनी मारफत **पादलिप्तसूरि**ने आपी; आथी आचार्ये पोतानी तर्जनी आंगळी ढींचण उपर फेरवीने राजानी वेदना शांत करी. आ प्रसंगनी सूत्रिका गाथा निशीथभाष्यमां नीचे प्रमाणे छे—

जह जह पएसिणिं जाणुअंमि पालित्तओ भमाडेइ ।
तह तह से सिरवियणा[1] पणस्सइ मुरंडरायस्स ।। गाथा ४४६०।।

पादलिप्तसूरिना आ लोकोत्तर प्रभावथी खेंचाईने **मुरुण्डराज** घोडेस्वार थई नमस्कार करवाने तेमना उपाश्रये गयो अने प्रणाम करीने त्यां बेसी तेमनी साथे धर्मगोष्ठी करवा लाग्यो, दरमियान तेणे आचार्यने पूछ्युं—'महाराज, अमो अमारा सेवकोने पगार आपीए छीए छतां ते मन लगाडीने काम करता नथी, तो आपना आ शिष्यो वगर पगारे केवी रीते आपनी आज्ञामां रहेता हशे?' आचार्ये कह्युं—**'राजन्! अमारा शिष्यो आ लोक अने परलोकमां पोतानुं हित करवानी इच्छाथी अमारी आज्ञानुं पालन करे छे.'**

आ उपरथी राजाए कह्युं—हुं आ वात मानी शकतो नथी, केमके लोकप्रवृत्तिनुं मुख्य कारण 'धन' छे, ज्यां धनप्राप्तिनी आशा न होय ते काममां लोक प्रवृत्ति करे एम मानी शकातुं नथी. आचार्ये कह्युं—आ वातनी खातरी करी शको छो. ते पछी राजाए पोताना प्रधानने अने आचार्ये पोताना एक नवीन शिष्यने गंगा कई तरफ चाले छे ते तपास करीने कहेवानी आज्ञा आपी; अने कोण केटले अंशे आज्ञानुं पालन करे छे तेनी खानगीमां तपास रखावी जेथी जणायुं के राजानो प्रधान त्यांथी तो जो हुकम करीने गयो, पण तेणे कशी तपास कीधी नहीं अने ३-४ घडी पछी आवीने राजाने 'गंगा पूर्व तरफ वहे छे' ए उत्तर आप्यो. पण आचार्यनो शिष्य गंगाने

1. सीसे वियण-निशीथभाष्यमां पाठ छे. सीसे वेयणा एवो त्यां ज चूर्णिमां पाठ छे. भा. ३ पृ. ४२३

कांठे गयो, गंगानो प्रवाह जोयो-तपास्यो अने लोकोने पूछीने निश्चय कर्या बाद आवीने तेणे गुरुने कह्युं—'गंगा पूर्वमुखी वहे छे.'

ए ज प्रसंगनी सूचना विशेषावश्यक भाष्यमां जिनभद्रगणिए नीचेनी गाथामां करी छे—

निवपुच्छिएण भणिओ गुरुणा गंगा कुओ [उ] मुही वहइ ।
संपाइयवं सीसो जह तह सव्वत्थ कायव्वं ।।

पादलिप्तसूरिने संघनी साथे शत्रुंजयनी यात्रा करवा माटे प्रार्थना करतां तेमणे **शत्रुंजय**नी यात्रा करी अने त्यांथी तेओ **कृष्णराज पालित मानखेट** गया. आ अवसरे प्रांशुपुरथी विहार करता योनिप्राभृतना जाणकार आचार्य **रुद्रदेवसूरि** अने विलास नगरना राजा प्रजापतिना मानीता निमित्तविद्याप्रविण आचार्य **श्रमणसिंहसूरि** पण मानखेटमां गया हता.

ए पछी **आर्य खपट**[1] **आचार्य** अने एमना शिष्य **उपाध्याय महेन्द्र**नुं वृत्तान्त लख्युं छे.

आर्य खपट आचार्य कालकाचार्यना भाणेज **बलमित्र-भानुमित्र**ना समयमां भरूचमां थया हता; एमणे बौद्धोने वादमां जीतीने अश्वावबोध तीर्थनो कबजो कर्यो हतो. **गुडशस्त्रपुरना** संघनी प्रार्थनाथी एमणे त्यां जई व्यन्तराने वश कर्यो हतो अने त्यांना राजाने जैनधर्मनो अनुयायी बनाव्यो हतो.

एज समयमां पाटलीपुत्र नगरमां मिथ्यादृष्टि **'दाहड'** नामनो राजा राज्य करतो हतो, ते राजाए सर्व दर्शनियोने तेमनो आचार-व्यवहार छोडवानी आज्ञा करी अने कह्युं के जे मारी आज्ञानो भंग करशे तेने प्राणान्तदण्ड करवामां आवशे, आ धमाल दरमियान राजाए, जैन साधुओने ब्राह्मणोने प्रणाम करवानो आदेश कर्यो हतो. आथी त्यांनो जैन श्रमणगण खळभळी उठ्यो अने आ मूर्खतापूर्ण राजाज्ञानो प्रतीकार करवा माटे तेणे बे गीतार्थ साधुओ भरूच **उपाध्याय महेन्द्र**ने बोलावबा मोकल्या. **उपाध्याय** पाटलीपुत्र पहोंचीने राजाने मळ्या अने ब्राह्मणोने प्रणाम करवा माटे दिन नक्की कर्यो. ठरावेल दिवसे सर्व ब्राह्मणो जैन साधुओ पासे प्रणाम करावबा सभामां एकत्र थया, निश्चित समय उपर **महेन्द्रोपाध्याय** सभामां गया अने कह्युं, प्रथम पूर्व मुखवाळाओने नमीए के पश्चिमाभिमुखवाळाओने? आम कहीने तेणे कणेरनी सोटी तेमना सामे अने पाछळ फेरवी अने सर्व ब्राह्मणो निश्चेष्ट अने निर्जीवप्रायः थई गया, ते देखीने राजानुं मुख झांखुं पडी गयुं. तेमना संबंधीओ रोवा-ककळवा लाग्या. लोकोए राजानी अनीतिनी निन्दा करवा मांडी अने राजा ते ज वखते **महेन्द्रउपाध्यायना पगमां पड्यो,** पण **महेन्द्रोपाध्याये** तेने दाद दीधी नहि. अने कह्युं—आ जैन यक्षोए कोप कर्यो छे, पण राजाए **महेन्द्रन्द्रोपाध्यायनो** केडो न छोड्यो अने कह्युं—'हे दयावान्! मारा उपर दया करीने आ ब्राह्मणोने साजा करो.' **महेन्द्रोपाध्याये** कह्युं—'हुं देवताओने शांत करीश.' अने तेमणे कह्युं—''जे जैन यक्ष अथवा यक्षिणीओए कोप कर्यो होय ते शांत थाओ; राजाना अज्ञानथी ब्राह्मणोए आ अपराध कर्यो छे.' ए ज समये आकाशथी दैवी वाणी प्रगटी के ''आ ब्राह्मणो जैन दीक्षा ग्रहण करे तो ज ब्राह्मणोनो छूटकारो छे अन्यथा नहि.'' आ पछी अभिषेक करीने ब्राह्मणोने बोलता करीने ते विषे पूछ्युं, तेओए कह्युं—''दीक्षा लेवी कबूल छे, अमने प्राणदान आपो.' ए पछी **महेन्द्रोपाध्याये** बीजी कणेरलता तेमना उपर फेरवी अने तेओ सर्व सचेत थईने उठ्या अने **महेन्द्रोपाध्याय** महोत्सव पूर्वक पोताना उपाश्रये आव्या.

पाटलिपुत्रना श्रावक संघे ब्राह्मणोनी दीक्षा निमित्ते उत्सव करवा मांड्यो पण 'ए विषे **आर्य खपट** प्रभु जाणे' आम कहीने **महेन्द्रोपाध्याये** ते रोकाव्यो अने ब्राह्मणोने साथे लईने ते **आर्य खपट आचार्य** पासे भरूच

1. प्रबंधकोशमां आर्य खपट, प्रभावक चरित्रमां अहिं आर्यखपुट ए प्रमाणे उल्लेख छे. निशीथचूर्णिमां 'खउड' छे. भा. १ पृ. २२ भाग २ पृ. ४६५

गया अने त्यां आर्य **खपटसूरिनी** पासे पाटलिपुत्रना ब्राह्मणोने दीक्षा आपीने जैन श्रमण बनाव्या.

आर्य खपटसूरिनी पाटे सिद्ध उपाध्याय महेन्द्र बेठा. आ प्रभावक आचार्यनी परम्परामां हजी पण अश्वावबोधतीर्थ (भरूच) मां प्रभावक आचार्यो वर्तमान छे.

उपर्युक्त **आर्य खपटसूरि**नी पासे **पादलिप्तसूरि**ए सातिशय शास्त्रोनो अभ्यास कर्यो हतो.

पादलिप्तसूरिए 'पादलिप्ता' भाषानी रचना करी हती जे तेना संकेतना जाण विद्वानो सिवाय बीजा कोईथी समजाती न हती.

पादलिप्तसूरिना गुणथी **कृष्णराज** अने एनी सभा घणी ज आकृष्ट थई हती. राजा आचार्यने पोताना नगरथी विहार करवा देतो न हतो; छतां आचार्य कोई कोईवार तीर्थ यात्राने बहाने त्यांथी विहार करीने अन्य स्थळे पण जता हता.

पूर्वे **पाटलिपुत्र**ना ब्राह्मणोने जे बलात्कारे दीक्षा आपी हती, ते कारणथी भरूचना ब्राह्मणो जैनोनी घणी ईर्ष्या करता हता. भरूचना संघे आ हकीकत होशियार माणसोद्वारा **पादलिप्तसूरि**ने जणावी जे उपरथी तेमणे कह्युं के 'हुं कार्तिकी पूर्णिमाने दिवसे त्यां आवीश.'

ते पछी आचार्य राजाने पूछीने पूर्णिमाना पूर्वाण्ह समयमां ज गगनमार्गे भरूच आवी पहोंच्या, पण आचार्यनी आवी अलौकिक शक्तिथी डरीने ब्राह्मणो त्यांथी नासी गया.

पादलिप्तसूरिना आगमनथी त्यांना संघमां आनंद व्यापी गयो, राजा पण त्यां आव्यो अने आचार्यना दर्शन करीने बोल्यो के—'राजा कृष्ण भाग्यवान् छे के जेनो पूज्य संग छोडता नथी. ज्यारे अमे दर्शनने पण योग्य नथी ए शुं?' ए पछी राजाए आचार्यने केटलाक दिवस स्थिरता करवानी विनंति करी पण आचार्य स्थिरता करी शक्या नहि.

एकवार **पादलिप्तसूरि** तीर्थयात्राक्रमथी सौराष्ट्र (काठियावाड)मां विचरता विचरता टंकापुरी[1] (टंकारा) मां गया ज्यां एमने सिद्ध **नागार्जुन**नो समागम थयो.

नागार्जुन 'संग्राम' नामक क्षत्रियनो पुत्र हतो. एनी मातानुं नाम **सुव्रता** हतुं.[2]

नागार्जुनने बालपणथी ज रसायनसिद्धिनी प्रक्रियामां रस पडवा लाग्यो हतो अने ए कारणथी एणे वन, नदी अने पर्वतोने पोतानुं घर बनाव्युं हतुं, परिणामे एने सुवर्णरसनी प्राप्ति थई हती, पण आकाशगमन माटे अनेक उपाय करवा छतां एने कंईपण सफळता न मळी, छेवटे तेणे **पादलिप्तसूरि**नी साथे मैत्री जोडवानो विचार कर्यो. पोतानी पासेना वेधक रसनी भेट दईने पोताना शिष्यने **पादलिप्तसूरि**नी पासे मोकल्यो, पादलिप्तसूरिए पण पोतानी भेट **नागार्जुन**ने पहोंचाडी अने आ रीते एकबीजानो परिचय थतां **नागार्जुन** पादलिप्तसूरिनी पासे आवीने तेमनी सेवामां रह्यो. **पादलिप्तसूरि**ने पादलेपनी सिद्धि हती, तेओ औषधिओनो पगे लेप करीने आकाशगमन करता हता, **नागार्जुन**ने एज सिद्धिनी घणी जरूर हती, ते आचार्यनी खास सेवामां रह्यो अने लेपवाळा पग धोतो अने रस गंध आदिथी लेपनी औषधिओने ओळखतो. आम करतां तेने आंशिक सफळता मळी अने आचार्यनी प्रसन्नता थतां तेने संपूर्ण लेपआम्नाय प्राप्त थयो.

नागार्जुने पोताना गुरु **पादलिप्तसूरि**ना स्मरणरूपे शत्रुंजयनी तलाटीमां **'पादलिप्तपुर'** (पालीतणा)नामनुं

1. प्रभावक चरित्रना सिंधी जैन ग्रंथमालाना संस्करणमां श्लोक २४८मां 'ढंकानाम महापुरी'' पाठ छे. डो. प्रवेश भारद्वाज लखे छे के ढंक पर्वत गुजरात में आधुनीक ढांक है। गोंडल (२२° ७०.५०) के पास ढंकगिरि ऐतिहासिक विवेचन पृष्ठ ४६। विदेशी लेख अलबेरुनी (ई. १०३०) नागार्जुन विषे लखे छे के यह सोमनाथ के समीपवर्ती दैहक कोट का रहनेवाला था। (अलबेरुनी का भारत भा. २ पृ. ११२)
2. प्रबंध कोशमां माता-पिताना नाम भोपाल देवी - वासुकीनाग छे.

नगर वसाव्युं अने शत्रुंजयनी उपर जिनचैत्य करावीने तेमां **महावीर प्रभु**नी प्रतिमा स्थापन करी अने तेमां ज **पादलिप्तसूरि**नी मूर्ति पण स्थापन करी. **पादलिप्तसूरि**ए आ महावीर प्रभुनी मूर्ति आगळ स्तुतिरूपे 'गाहाजुअलेण' ईत्यादि स्तोत्र बनाव्युं जेमां तेमणे गुप्त रीते सुवर्णसिद्धिनो आम्नाय गोपव्यो पण आधुनिक मनुष्यो ते समजी शकता नथी.

पादलिप्तसूरिए गिरनार पर्वत नीचे किल्लानी पासे नेमिनाथना चरित्रनुं व्याख्यान कर्युं हतुं, जे सांभळीने **नागार्जुने** तेमां वर्णव्या प्रमाणे त्यां दशार्हमण्डप, उग्रसेननो महेल, अन्य मकान, विवाहमंडप अने चउरी आदि सर्व दृश्यो कौतुकार्थे बनावराव्यां जे हजी पण त्यां जोवामां आवे छे.

एज समयमां **पृथ्वीप्रतिष्ठान** नगरमां चक्रवर्ती सरखो **सातवाहन**[1] राजा राज्य करतो हतो, **भरूच**मां आ वखते **कालकाचार्य**ना भाणेज **बलमित्र**नुं राज्य हतुं. **सातवाहने** बलमित्र उपर चढाई करी, बार वर्ष सुधी लडाई थई छतां नगर मळ्युं नहि, त्यारे **सातवाहन**नो मंत्री-जे **पादलिप्तसूरि**नो शिष्य हतो-भागवतनो वेष करीने नगरमां गयो अने लडाई चाले त्यां सुधी धार्मिक स्थानो करावव अने समरावव‌ानो **बलमित्र**ने उपदेश कर्यो. राजाए तेना उपदेश प्रमाणे चालीने खजानो खाली करी नाख्यो. परिणामे **सातवाहने** किल्लो ग्रहण कर्यो अने राजाने दण्ड करीने पोताना देशमां गयो.

एक अवसरे **सातवाहन**नी सभामां ४ शास्त्रसंक्षेप कवि आव्या अने ते चारे जणे मळीने एक श्लोकमां चार शास्त्रोनो सार राजाने संभळाव्यो ते आ प्रमाणे—

जीर्णे भोजन मात्रेयः, कपिलः प्राणिनां दया ।
बृहस्पतिरविश्वासः, पाञ्चालः स्त्रीषु मार्दवम् ।।

अर्थात्—**आत्रेय** पंडिते कह्युं—पाचन थया पछी भोजन करवुं ते वैद्यकनो सार छे.
कपिल कहे—प्राणिओनी दया करवी ते धर्मशास्त्रनो सार छे.
बृहस्पति कहे—कोईनो विश्वास न करवो ते राजनीति शास्त्रनो सार छे. अने
पांचाल विद्वान कहे—स्त्रीओने विषे कोमलपणुं राखवुं ते कामशास्त्रनो सार छे.'

पंडितोना आ वक्तव्यनी राजाए प्रशंसा करीने तेमने दान आप्युं. पण राजाना परिवारे पंडितोनी प्रशंसा न करी, पंडितोए आ विषे राजाने पूछ्युं; **राजाए भोगवती गणिकाने पंडितोनी स्तुति करवा कह्युं, पण तेणीए कह्युं के हुं पादलिप्तसूरि सिवाय बीजा कोईनी स्तुति करती नथी,** आम कहीने तेणीए **पादलिप्तसूरि**ना गुणोनी स्तुति करी. ए सांभळी राजाना संधिविग्रहिक शंकरे ईर्षा करीने कह्युं के आकाशमां उडवुं एमां कंई महत्त्व नथी. ए काम तो पोपट वगेरे पक्षिओ पण करे छे; पण जे मरीने जीवता थाय तेमनुं अमे पाण्डित्य कबूल करीए, आ सांभळी भोगवतीए कह्युं—आ वात पण ते महात्मामां संभवित छे.

सातवाहने ए पछी कृष्णने पूछीने पादलिप्तसूरिने मानखेटथी प्रतिष्ठानपुर बोलाव्या अने महोत्सव पूर्वक नगर प्रवेश कराव्यो. बृहस्पति पंडिते पादलिप्तसूरिनी परीक्षा माटे गरम करेल घीथी भरीने कच्चोलुं तेमनी पासे मोकल्युं; पादलिप्तसूरिए ते घीमां सूई थंभावीने पाछुं मोकल्युं जे जोईने बृहस्पति खिन्न थयो.

पादलिप्तसूरिए राजानी आगळ पोतानी **तरंगलोला** (तरंगवती) कथानुं व्याख्यान कर्युं. जे सांभळी **पांचाल**

1. श्री वीरे शिवं गते ४७० विक्रमार्को राजा तात्कालीकनोऽयं सातवाहनस्तत्प्रतिपक्षत्वात्। प्रबंधकोष पृ. ७४ सातवाहन राजा वासिष्ठी पुत्र पुलुमावि द्वितीय (८४-११८ ई.) हो सकता है। प्र. को. ए. वि. ७८ विक्रम की तरह सातवाहन की बहुत सी कथायें परंपरा से चली आती है।.... सातवाहन चरित्र भी बना हुआ है। संस्कृत के 'कथासरित सागर' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ में सातवाहन की बहुत सी कथायें गुंथी है। (प्रबंध चिंतामणी) हिन्दी भाषांतर पृ. १२ टि. १ अलबेरुनीए पण सातवाहननो प्रसंग लख्यो छे. अलबेरुनी का भारत भा. २ पृ. ४३

कविने घणी ईर्षा थई, तेणे कह्युं—**बैरा अने छोकरांओ समजे एवी प्राकृत भाषामां** बनावेली आ कथा पंडितोनुं मनरंजन करे तेम नथी.

एकवार पादलिप्तसूरिए प्राण कपाले चढावीने पोतानुं कपटमृत्यु बताव्युं, लोकोमां तेमनुं मृत्यु थयाना समाचार फेलाणा अने मांडवीमां शरीर स्थापन करीने **साधुओ उठावीने परठववा चाल्या.** वाजिंत्र शब्दपूर्वक मांडवी **पांचाल** कविनी घरनी आगळ थईने चाली ते वेळा **पांचाले पादलिप्तसूरि**ना मरण निमित्ते पोतानो शोक प्रगट कर्यो अने कह्युं—

सीसं कह वि न फुट्टं, जमस्स पालित्तयं हरन्तस्स ।
जस्स मुहनिज्झराओ तरंगलोला नई वूढा ।।

अर्थात् - पादलिप्तनुं हरण करनार एवा यमनुं मस्तक केम फूटी न पडयुं के जेना मुखरूप निजरणाथी तरंग लोला (कथा) रूप नदी प्रगट थई.

पांचालना आ कथन पछी तरत ज आचार्य बोल्यां—''**पांचाल**ना सत्य कथनथी हुं पाछो जीवतो थयो छुं', आ बनावथी लोको घणा हर्षित थया अने ईर्षाळु **पांचाल**नी निंदा थई, राजा पण आ गुणद्वेषी कवि उपर गुस्से थयो पण आचार्ये तेने शांत कर्यो.

पादलिप्तसूरिए दीक्षा अने प्रतिष्ठाविधि विषयक ''**निर्वाण कलिका**'' नामनो ग्रंथ रच्यो, ज्योतिष विषयमां ''**प्रश्नप्रकाश**'' नामना ग्रंथनुं निर्माण कर्युं. प्रबंधमां आ बे ज ग्रंथोनो उल्लेख छे छतां सूत्रोनी चूर्णिओमां **पादलिप्तसूरि**कृत ''**कालज्ञान**'' नामना ग्रंथनो अनेक स्थळे उल्लेख आवे छे.

पादलिप्तसूरिना गृहस्थ शिष्य **नागार्जुन**ना ग्रंथो विषे अहीं उल्लेख नथी, पण **'योगरत्नावली' 'योगरत्नमाला', 'कक्षपुटी'** आदि ग्रंथो **नागार्जुन** कृत मनाय छे.

पादलिप्तसूरिए अंतिम समयमां शत्रुंजय उपर ३२ बत्रीस दिवसना उपवास करीने स्वर्गवास प्राप्त कर्यो.

उपर प्रमाणे **पादलिप्तसूरि** प्रबंधमां पादलिप्तसूरि उपरांत **रुद्रदेवसूरि, श्रमणसिंहसूरि, आर्य खपट आचार्य** अने **उपाध्याय महेन्द्र** आ ४ प्रभावकोनुं पण वर्णन आप्युं छे. आमां **रुद्रदेवसूरि अने श्रमणसिंहसूरिनो पादलिप्तसूरि**नी साथे सीधो के आडकतरो कशो संबंध नथी, मात्र एटलो ज आ स्थळे संबंध बताव्यो छे के जे वखते पादलिप्तसूरि मानखेट गया छे ते ज वखते आ बंने आचार्यो पण त्यां गया हता. ए सिवाय पादलिप्तसूरिनी साथे एमनो कंई पण प्रसंग जणातो नथी.

आर्य **खपटसूरि** अने **महेन्द्रसूरि**नी साथे पण पादलिप्तसूरिनो विशिष्ट संबंध जणातो नथी, आमां आपेल **आर्य खपट** आचार्यनी हकीकत एक स्वतंत्र प्रबंध छे अने आ आखा प्रबंध दरमियान **पादलिप्तसूरिनो** क्यांय नामोल्लेख पण नथी. छेवटे ए प्रबंध पूरो करीने पछी लख्युं छे के आचार्य **पादलिप्तसूरिए** चमत्कारपूर्ण शास्त्रोनुं अध्ययन पूर्वोक्त गुरु (**खपट आचार्य**)नी पासे कर्युं हतुं. ए उपरांत **उपाध्याय महेन्द्रनो** संबंध जणावनारो एक आ पण उल्लेख छे के 'महेन्द्रे पाटलिपुत्रना ब्राह्मणोने बळजबरीथी दीक्षा आपवाना कारणे भरूचना ब्राह्मणो जैनोना द्वेषी थया हता. जेथी त्यांना संघे पादलिप्तसूरिने त्यां बोलाव्या हता.' आटला संबंध व्यंजक उल्लेख सिवाय **पादलिप्तसूरि**नी साथे **आर्य खपट आचार्य** तथा तेमना शिष्य **महेन्द्रनो** संबंध द्योतक कोई प्रसंग नथी. आ उपरथी आ पांचे प्रबंध नायक आचार्यो सम सामयिक हशे के भिन्नकालीन ते कही शकाय तेम नथी.

पादलिप्तसूरि के बीजा कोईपण आचार्यना सत्ता समय विषे प्रबंधकारे उल्लेख कर्यो नथी, पण ए पछीना विजयसिंहसूरिना प्रबंधमां आर्य खपट आचार्यनो अस्तित्व समय बतावनारी नीचेनी आर्या आपी छे-

श्री वीरमुक्तितः शत-चतुष्टये चतुरशीति संयुक्ते ।
वर्षाणां समजायत, श्रीमानाचार्यखपटगुरुः ।।

आमां वीर संवत् ४८४ मां **आर्य खपट आचार्य** थया एम लख्युं छे,[1] पण खरुं जोतां आ वर्ष खपट आचार्यना स्वर्गवासनुं होवुं जोईए; जो उक्त पद्यमां बतावेल समय अने अमारी कल्पना सत्य होय तो **आर्य खपट** आचार्यनो समय भरूचना **बलमित्र, भानुमित्र**ना पाछला समयमां अने **नभस्सेन**ना प्राथमिक समयमां आवे छे. भरूच उपर प्रतिष्ठानना **सातवाहन**नी चढाई विषे आ प्रबंधमां जे वर्णन आप्युं छे तेनो संबंध पण **पादलिप्तसूरि**ना समयनी साथे नहि पण **आर्य खपट आचार्य** नी साथे ज संगत थाय छे, कारण के **बलमित्र**ना समयमां **आर्य खपट आचार्य**नुं अस्तित्व हतुं एटलुं ज नहि पण **आर्य खपट आचार्य**नुं मुख्य स्थान पण भरूच ज हतुं. **सातवाहन**ना मंत्रीने **पादलिप्तसूरि**नो शिष्य कहेवा करतां **आर्य खपट आचार्य**नो शिष्य कहेवो वधारे संगत छे.

आर्य खपटसूरिनो विद्यासिद्ध तरीके निशीथचूर्णिमां बे स्थळे निर्देश छे.[2] तेम बीजा पण प्राचीन साहित्यमां आर्य **खपटसूरि**नुं पूर्वाचार्य तरीके वर्णन होवाथी एमां शंका नथी के ए महापुरुष घणा जुना छे. एमना समयमां पाटलिपुत्रमां **दाहड** नामनो मिथ्यादृष्टि राजा होवानुं अने तेणे ब्राह्मणोने प्रणाम करवा जैन श्रमणोने आज्ञा कर्यानुं वर्णन प्रबंधमां आवे छे, आ हकीकत पण ऐतिहासिक सत्यनुं प्रतिपादन करनारी जणाय छे. ए समयमां पाटलिपुत्रमां **शुंगवंश**नुं राज्य हतुं, ते वंशना राजाओए जैन अने बौद्ध धर्मनो नाश करी वैदिक धर्मनी उन्नति करवाने अनेक उपायो कर्या हता अने तेमां तेओने सफळता पण मळी हती. सेंकडो वर्षोथी मगधमां दृढमूल थयेल जैन अने बौद्ध धर्मनी जडो ए वखते ढीली थई हती अने ब्राह्मणोनुं प्राबल्य वध्युं हतुं. आश्चर्य नथी के **'दाहड'** ते आ वंशनो छेल्लो राजा **'देवभूति'** होय अने पोताना पूर्वजोनी करणीनुं अनुकरण करवा एणे ब्राह्मणोने प्रणाम करवानो जैन श्रमणोने हुकम कर्यो होय. शुंग देवभूति जे समये पाटलिपुत्रमां राज्य करतो हतो ते ज समय भरूचमां **बलमित्र**नुं राज्य हतुं अने **आर्य खपट आचार्य** अने तेमना शिष्य **उपाध्याय महेन्द्र** त्यां विचरता हता आ उपरथी जणाशे के **आर्य खपटाचार्य** अने **उपाध्याय महेन्द्र**नी विद्यमानता विक्रमना पहेला सैकामां अने एनाथी पण कंईक पूर्वना समयमां हती.

पादलिप्तसूरिनी प्राथमिक अवस्था मथुरामां अने पाटलिपुत्रमां व्यतीत थाय छे अने तेओ पोतानी विद्याशक्तिथी **पाटलीपुत्र**ना मुरुण्ड राजनुं ध्यान पोतानी तरफ आकर्षे छे, ते पछी ए कृष्णराजना मानखेटमां लांबा समय सुधी रहे छे अने छेवटे प्रतिष्ठानपुरमां पोताना गुणोनो प्रकाश करीने काठियावाड तरफ जाय छे अने अंते त्यां ज आयुष्य पूर्ण करे छे.

पादलिप्तना जीवनना आ भिन्न-भिन्न संबंधोने जरा तपासीए.

ए आचार्यना गुरु अयोध्या अने मथुरा तरफ अधिक रहेता हता. आथी जणाय छे के उत्तर हिन्दमां जैनोनी जाहोजलालीना समयमां **पादलिप्त**नो जन्म थयो हतो. आथी **पादलिप्तसूरि** विक्रमनी पांचमी सदीनी पहेलांना

1. श्रीवीरात् त्रिपञ्चाषदधिक चतुःशतवर्षातिक्रमे ४५३ भृगु कच्छे आर्य खपुटाचार्य इति पट्टावल्यां प्रभावकचरित्रे तु चतुरशीति अधिक चतुःशत ४८४वर्षे आर्य खपुटाचार्यः "तपागच्छ पटावली" इन दोनों उल्लेखों को एक दूसरे के पूरक, अर्थात् वीरनि. सं. ४५३ में उनके आचार्य काल का प्रारंभ और वीरसंवत् ४८४ में अवसान मान लिया जाय तो उपरोक्त दोनों उल्लेख संगत और आर्यखपुट के आचार्यकाल के निर्णायक बन सकते है। जैन धर्म का मौलिक इतिहास भा. २ पृ. ५३१
आ आचार्य श्रीना समये तारंगानुं तारादेवीनुं मंदिर अने पाछणथी सिद्धायिका मंदिर बन्या हता. तेमज तेमणे गुडशस्त्र-गुडसत्थना राजा वेणी वच्छराजने प्रतिबोधी जैन धर्मी बनाव्यो हतो. जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास पृ. १००

2. भा. १ पृ. २२ अने पृ. ४६५मां. 3. जुओ आवश्यक सूत्र मलयगिरिवृत्ति पत्र ५४१.

आचार्य हता ए निश्चित छे, हवे पांचमां सैकानी पूर्वे कया समयमां थया ते विचार करवानो रह्यो. प्रबंधमां तेमज अनेक चूर्णि आदि प्राचीन ग्रंथोमां लख्या प्रमाणे **पादलिप्तसूरि** पाटलीपुत्रना **मुरुण्ड** राजाना मानीता विद्वान हता. मुरुण्ड ए शकभाषानो शब्द छे अने एनो अर्थ 'स्वामी' एवो थाय छे. कुशानवंशी राजा कनिष्क अने एना वंशवाळाओने अत्रेना लोको **'मुरुण्ड'**ना नामथी ओळखता हता. भारतवर्षमां कुशानवंशनुं राज्य विक्रम संवत् ९७ थी २८३ सुधी रह्युं हतुं, पण **पाटलिपुत्र** उपर एमनी सत्ता कनिष्कना समयमां थई हती ए मतने सत्य मानीए तो **पाटलिपुत्र**मां विक्रम संवत १७७ पछी अने २१९ नी वच्चे **मुरुण्ड** राज्य थयुं एम मानवुं जोईए जे **मुरुण्ड** पाटलिपुत्रमां राज्य करतो हतो अने जेनी सभामां **पादलिप्तसूरि**नुं मान हतुं ते मुरुण्ड कनिष्क पोते तो होवानो संभव नथी, केमके ते पोतानी राजधानी **पेशावर**मां रहेतो हतो ज्यारे **पाटलिपुत्र**मां तेनी ज जातनो तेनो सूबो रहेतो हतो. पुराणोमां मगधना राजा तरीके **विश्वस्फटिक, विश्वस्फरणि, विश्वस्फूर्जि** ईत्यादि नामोथी जे बलिष्ठ व्यक्तिनुं वर्णन कर्युं छे ते मुरुण्डना नामथी ओळखाता कनिष्कना आ सूबानुं ज होवुं जोईए, एम अमारुं मानवुं छे, विद्यावारिधि बाबू काशी प्रसादजी जायसवालना मत प्रमाणे आनुं शुद्धनाम 'विनस्फर्णि' हतुं; पण आ विदेशी नामने बगाडीने पुराणकारोए विचित्र बनावी दीधुं छे, आ विनस्फर्णि मुरुण्डनी ज राजसभामां पादलिप्तसूरिनो प्रवेश हशे एम अनुमान करी शकाय अने जो आ अनुमान खरुं होय तो पादलिप्तसूरिनुं अस्तित्व विक्रमना बीजा सैकाना अंतमां अने त्रीजा सैकाना पूर्वार्धमां होवानुं सिद्ध थई शके.[1]

पादलिप्तसूरिना दीक्षागुरु **आर्यनागहस्ति** हता, नंदीनी स्थविरावलीमां **आर्यनागहस्ति** वाचकनुं वर्णन छे, तो स्थविरावलीना क्रम प्रमाणे आ आचार्य २२मां पुरुष हता, युगप्रधान पट्टावलियोमां पण २२मा युगप्रधान तरीके आचार्य **नागहस्तिने** गणाव्या छे अने तेमनो अस्तित्व समय विक्रम संवत् १५१ थी २१९ सुधीमां बताव्यो छे अने उपर जणाव्या प्रमाणे पादलिप्तसूरिनो समय पण लगभग एज अरसामां आवे छे. कल्पचूर्णि वगेरेमां **पादलिप्त**ने पण 'वाचक' ए पदवीनी साथे उल्लेख्या छे. **नंदीवाळा वाचक अने युगप्रधान नागहस्ति ए बंने एक ज हता** अने एज नागहस्ति वाचक **पादलिप्तना** गुरु हता एम मारुं मानवुं छे.

पादलिप्तने १० वर्षनी नानी अवस्थामां ज आर्यनागहस्तिए पोताना पट्टधर तरीके पसंद करीने आचार्यपद आपी दीधुं हतुं. आथी जणाय छे के ते वखते आर्य नागहस्ति स्थविर अधिक वृद्ध थई गया हशे अने जो आ अनुमान खरुं होय तो संवत २१९मां नागहस्ति अने कनिष्के आयुष्य पूर्ण कर्युं ते वखते **पादलिप्ताचार्य** युवावस्थामां पहोंच्या हशे.

पादलिप्तसूरि ज्यारे पहेल वहेला पाटलिपुत्रमां मुरुण्डनी सभामां गया हता ते वखते तेओ घणी नानी अवस्थामां हता एम वर्णनो उपरथी पण जणाय छे. आ बधा संयोगो जोतां **पादलिप्तसूरि**नो समय मोडामां मोडो विक्रम संवत २१६ पछी शरू थयो एम मानी शकाय. पण जो एमनी दीक्षा पछी एमना गुरु आर्य नागहस्ती १०-१५ वर्ष सुधी जीवित रह्या होय तो पादलिप्तसूरिनी दीक्षा त्रीजा सैकाना प्रारंभमां थई मानी शकाय. आ समय निर्धार उपरथी **पादलिप्तसूरि आर्य खपट** आचार्यना समकालीन थई शकता नथी जेवा के प्रबंधकारे जणाव्या छे.

हवे **पादलिप्तसूरि**नी साथे मानखेट नगरना राजा **कृष्ण**नो संबंध तपासीए.

प्रबंधमां जणाव्या प्रमाणे **पादलिप्तसूरि कृष्णराज**ना आग्रहथी **मानखेट**मां वधारे रह्या हता.

ईतिहासमां **मानखेट** अने **कृष्णराज**नी हकीकत तो मळे छे; पण ए कृष्णनो समय घणो अर्वाचीन छे. **मानखेट** (जे आज काल निजाम राज्यमां मालखेड ए नामथी प्रसिद्ध छे) ना राजा कृष्ण पहेलांनो समय विक्रम

1. आ बाबतमां एन. बी. झवेरीनो मत भिन्न छे. जुओ 'कंपरेटीव एन्ड क्रीटीकल स्टडी ओफ मंत्र शास्त्र' पृ. १७६

संवत ८७१ थी ९३३ सुधीमां मनाय छे अने आवी स्थितिमां **पादलिप्तसूरि** अने मानखेटना कृष्णराजनुं समकालीनपणुं कोईपण रीते संभवित नथी तेथी **पादलिप्तसूरि**ना समयनुं मानखेट अने कृष्णराज ईतिहास प्रसिद्ध मानखेट अने कृष्णराजनुं ईतिहास प्रसिद्ध मानखेट भिन्न होवा जोईए पण जो तेम न होय तो कृष्णराजना समयना **पादलिप्तसूरि** कोई जुदा ज पादलिप्त होवा जोईए अने आम मानवामां पण प्रमाण न होय तो **पादलिप्तसूरिए** कृष्णराज के तेना मानखेटने नजरे जोयुं नथी एम ज कहेवुं जोईए, **पादलिप्तसूरि** प्रतिष्ठानपुर गया हता एमां शंका जेवुं नथी, आ समये प्रतिष्ठानमां सातवाहनना वंशजोनुं राज्य हतुं अने संभव प्रमाणे ते काळमां त्यां गौतमीपुत्र **यज्ञश्री शातकर्णि** अथवा **शातकर्णि** त्रीजानुं राज्य हशे.

आ. पादलिप्तसूरि भरूचमां गया होय तो एमां पण शंका करवानुं कारण नथी, पण ते **महेन्द्रोपाध्याय** ब्राह्मणोने बलात्कारे दीक्षा आपी ते निमित्ते जागेल ब्राह्मणोना विरोधने दबाववा माटे आव्या हता ए मानवामां जरूर विचार करवो पडे छे, कारण के ब्राह्मणोनी दीक्षाने ते वखते २५० वर्ष जेटलो समय व्यतीत थई गयो हतो. आटला लांबा समये उक्त कारणथी जैनो साथे ब्राह्मणोने विरोध जागे ए जरा विचारणीय विषय छे.

आ बधा विवेचन उपरथी जणाशे के आ प्रबंधमां वर्णवेला बीजा महापुरुषोनो **पादलिप्तसूरि**नी साथे संबंध के समकालीनता होवामां कांईपण प्रमाण नथी, आर्य खपट आचार्यनो समय तो खुल्ली रीते **पादलिप्तसूरि**ना समयथी लगभग २०० थी २५० वर्ष जेटलो पहेलानो ठरे छे तेथी **खपट आचार्य**नी पासे **पादलिप्तसूरि** चमत्कारक शास्त्रो भण्यानी वात निराधार ठरे छे. प्रबंधमां **पादलिप्त आचार्य**ना गुरु **आर्यनागहस्ति**ना गच्छनो उल्लेख कर्यो छे, जेनो आशय ए छे के 'नमिविनमि विद्याधरोना वंशमां पूर्वे **कालकाचार्य** थया तेथी तेमनो गच्छ विद्याधर नामथी प्रसिद्ध थयो जेमां **आर्य नागहस्ति** थया.'

एज ग्रंथकार **वृद्धवादि**ना प्रबंधमां लखे छे के **'पादलिप्त**[1] **प्रभु अने गुरु वृद्धवादी** विद्याधर वंशना हता ए वात गिरनारना एक मठनी प्रशस्ति उपरथी लखी छे.'

कालकाचार्यथी 'विद्याधर' गच्छ निकळ्यानी वात दंतकथाथी अधिक प्रामाणिक जणाती नथी अने गिरनारनी प्रशस्ति आजे विद्यमान नथी एटले ए उपर पण बहु वजन न मूकी शकाय; छतां ए वात मानी लईए के पादलिप्तसूरिनी गुरु परंपरानी साथे विद्याधर शब्दनो प्रयोग थतो हतो, पण ए प्रयोग केवी रीते थतो हतो?, शाखा तरीके, कुल तरीके के गच्छ तरीके? कल्पस्थविरावलीना लेख प्रमाणे **आर्यसुहस्ती**ना शिष्य युगल **सुस्थित-सुप्रतिबुद्ध**थी निकळेल कोटिकगणनी एक शाखानुं नाम 'विद्याधरी' हतुं, जे एज स्थविर युगलना शिष्य 'विद्याधर' **गोपाल**थी प्रगट थई हती अने **वज्रसेनाचार्यना** शिष्य 'विद्याधर' थी 'विद्याधर कुल' नी उत्पत्ति थयानो पण लेख छे. आ विद्याधर स्थविर पट्टावलिओनी गणना प्रमाणे विक्रम संवत १५०ना वर्षमां **वज्रसेनाचार्य**ना पट्टधर थया हता अने ए ज वर्षमां **आर्यनागहस्ति** आचार्य **वज्रसेन आचार्य** पछी युगप्रधान बन्या हता अनें ६९ वर्ष पर्यन्त युगप्रधान पद पर रह्या हता. आथी ए आचार्य विद्याधरना समकालीन होवा छतां विद्याधर करतां अवस्थामां अने ज्ञानमां अधिक स्थविर हशे एम जणाय छे. आ संयोगोमां **आर्यनागहस्ति आचार्य वज्रसेन आचार्यना** शिष्य 'विद्याधर' थी प्रसिद्ध थयेला 'विद्याधर कुल'ना होवा संभवता नथी, त्यारे हवे एमने विद्याधर गोपालनी 'विद्याधरी शाखा'ना ज स्थविर गणवा युक्तियुक्त गणाय छे.

प्राचीन समयनी केटलीक शाखाओ कालांतरे 'कुल'ना नामथी प्रसिद्ध थई अने पछीना समयमां कुलो 'गच्छो'ना

1. पादलिप्तसूरिजी ए ज्योतिष करंडक अने शत्रुंजय कल्पनी रचना करी छे. ज्योतिष्करंडक प्रस्तावना. डॉ. मोती चंदना मते तित्थो गालीमां कल्किना समकालीन. 'पाडीवत' ज आ पादलिप्त छे./पंडित विश्वनाथना मते अत्यारे मलतुं 'संखित्त तरंगवई दुहा' बृहत् तरंगवतीनुं ज लघु संस्करण छे. – श्रमण ऑक्टो. १९९५

नामथी प्रसिद्ध थयां एज हकीकत **आर्यनागहस्ति**ना 'विद्याधर गच्छ'ना संबंधमां पण बनवा पामी लागे छे. घणा जुना कालमां ए 'विद्याधरी' शाखा हशे अने कालान्तरे ते शाखा मटीने 'कुल'ना नामथी पण प्रकाशमां आवी हशे अने छेवटे कुलनुं पण नाम छोडीने 'गच्छ' नुं नाम धारण कर्युं हशे एम लागे छे आ उपरथी **पादलिप्तसूरि**ने (विद्याधर) कुलना अथवा विद्याधर वंशना कहीए तो कंईपण हरकत नथी.

६. श्री विजयसिंहसूरि

विजयसिंहसूरिनुं वृत्तान्त प्रबंधकारे सांभळीने लख्युं हशे एम प्रबंधना प्रारंभिक लेख उपरथी जणाय छे अने ए ज कारणे एमना माता पिता, जन्म भूमि अने गुरु आदि वातोनो कंई पण उल्लेख कर्यो नथी. मात्र एटलुं ज लख्युं छे के—'ए सिद्ध महात्मा भरूच नगरमां आर्य खपट आचार्यना वंशमां थई गया छे' अने ए ज प्रसंगथी भरूचना प्राचीन ईतिहास अश्वावबोध तीर्थनी उत्पत्ति अने शकुनिका विहारनुं वृत्तान्त लख्युं छे, आ बधी हकीकत पौराणिक ढबनी होवाथी एमां ऐतिहासिक चर्चाने अवकाश नथी; छतां एटलुं तो खरुं छे के भरूचमां घणा ज प्राचीन कालथी वीसमा तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीनुं तीर्थरूप चैत्य हतुं जे प्रथम **'अश्वावबोध'** ए नामथी ओळखातुं हतुं अने सिंहल राजानी पुत्री **सुदर्शना**ए तेनो जीर्णोद्धार करावीने **'शकुनिका विहार'** ए नाम पाड्युं हतुं.

ते पछी संप्रति राजाए ए तीर्थनो जीर्णोद्धार कराव्यो हतो अने ए कार्यमां व्यन्तरोए उपसर्ग कर्यो जेनुं निवारण **गुणसुन्दर** शिष्य **कालकाचार्ये** कर्युं हतुं.

ते पछी **सिद्धसेन दिवाकर**ना उपदेशथी **विक्रमादित्य** राजाए ए तीर्थनो उद्धार कर्यो हतो. वीर संवत ४८४मां आ तीर्थमां **आर्य खपट** नामना आचार्य थया जेमणे बौद्ध व्यन्तर अने बौद्ध दर्शनिओना कबजामांथी आ तीर्थ छोडाव्युं.

वीर संवत् ८४५मां वल्लभीनो भंग तुरूष्क लोकोए कर्यो अने ते पछी ते भरूचनो नाश करवा आवता हता, पण **सुदर्शना देवी**ए तेमने पाछा हठाव्या.

वीर संवत् ८८४मां **मल्लवादी**ए बौद्ध अने तेमना व्यन्तरो उपर जीत मेळवी.

सातवाहन नामना राजाए आ तीर्थनो जीर्णोद्धार कराव्यो अने **पादलिप्त सूरि**ए एना ध्वज दण्डनी प्रतिष्ठा करी.

आर्य खपट आचार्यना वंशमां थयेल आ **विजयसिंहसूरि**ए संयमोद्धार (क्रियोद्धार) करीने शत्रुंजय, गिरनार आदिनी तीर्थयात्रा निमित्ते काठियावाड तरफ विहार कर्यो, **ते वेळा तेमने गिरनार उपर अंबादेवी**ए **प्रसन्न थईने सिद्धगुटिका आपी हती.**

ए ज प्रसंगे अंबादेवीना पूर्व भवनी कथा पण लखी छे. **विजयसिंहसूरि**ए स्वरचित **''नेमिः समाहितधियां''** आ पदथी शरू थता स्तोत्रथी गिरनार उपर नेमिनाथनी स्तवना कीधी हती ते पछी तेओ विहार करता पाछा भरूच आव्या हता.

एक दिवसे भरूचमां आग लागी जेथी लगभग आखुं शहेर बळीने भस्म थयुं, एमां **मुनिसुव्रतस्वामी**नुं प्रसिद्ध **शकुनिकाविहार चैत्य** अने पाषाण अने पीतल वगेरेनी मूर्तिओ पण बळी गई,[1] फक्त एक **मुनिसुव्रतस्वामी**नुं मूलबिंब अखंडित रह्युं. आ नगरदाहमां बळेल चैत्यनो पुनरुद्धार करवा माटे **विजयसिंहसूरि**ए नगरमांथी ५००० पांच हजार रूपिया एकठा कर्या अने शिल्पीओने रोकीने श्रेष्ठ काष्ठनुं जिनालय तैयार कराव्युं अने ते अति जीर्ण

1. ई.सं. १३६९मां गयासुद्दीन तुगलके शकुनिका विहारनुं मस्जीदमां रूपांतर कर्युं. जुओ 'बरसात की एक रात' लेखक गणेश ललवानी.

थयुं त्यारे उदयन मंत्रीना पुत्र **अंबडे** आ चैत्यनो जीर्णोद्धार करावीने संवत १११६मां प्रसिद्ध **आचार्य हेमचंद्रसूरि**ना हाथे प्रतिष्ठा करावी.

ए पछी **विजयसिंहसूरि**ना स्वर्गवासनुं सूचन करीने ग्रंथकार कहे छे के हजी पण एमना वंशमां प्रभावक आचार्यो उत्पन्न थाय छे. हवे आ प्रबंधमांनी केटलीक घटनाओ विषे विचार करीए.

संप्रति राजाए शकुनिकाविहारनो जीर्णोद्धार कराव्यो ते वखते **गुणसुन्दरना शिष्य कालकाचार्य**नी विद्यमानता आ प्रबंधना लेखके जणावी छे. पट्टावलियोमां संप्रतिनो स्वर्गवास वीर संवत् २९५ अथवा २९३मां होवाना उल्लेख मळे छे, ज्यारे युगप्रधान पट्टावलियोनी गणना प्रमाणे **कालकाचार्ये** वीर संवत् ३००मां दीक्षा लीधी अने ३३६मां ते युगप्रधान थया हता. आवी रीते संप्रतिना मरण पछी ५-७ वर्षे कालकनी दीक्षा थवाथी संप्रतिना समयमां तेमनी विद्यमानता संभवती नथी; परंतु अमारी गणना प्रमाणे संप्रति वीर संवत् २९५मां गादीए बेठा होवाथी कालकमुनि सामान्य श्रमणावस्थामां तेना समकालीन होई शके.

शकुनिकाविहारनो उद्धारक **विक्रमादित्य** अने तेना उपदेशक आचार्य **सिद्धसेन**दिवाकरना समय परत्वे **वृद्धवादिसूरि**ना प्रबंधमां विशेष उहापोह करवामां आवशे, जिज्ञासुओए एमनी समय विषयक विचारणा ते प्रबंधमां जोवी.

वीर संवत् ४८४मां **आर्य खपट आचार्य** थयानो उल्लेख छे ते आर्य खपट आचार्यनो स्वर्गवास सूचक छे, एटले वीर संवत् ४८४मां आर्य खपट आचार्य स्वर्गवासी थया एम समजवानुं छे.

वीर संवत् ८४५मां वल्लभीनो तुरकोए भंग कर्यो एम प्रबंधकारे जणाव्युं छे, परंपरागत ''अठहि पणयाल वलहिखओ'' आ गाथामां पण वल्लभीनो भंग वीर संवत् ८४५मां ज थयो जणाव्यो छे, पण आधुनिक विद्वानो आ वर्ष वीरसंवत्नुं नहीं पण विक्रम संवत्नुं छे एम जणावे छे अने कहे छे के 'विक्रम संवत् ८२३ पछी आरबोने हाथे वल्लभीनो नाश थयो हतो.'[1]

पण अमारुं निश्चित मानवुं छे के उपर्युक्त वल्लभीभंग सूचक वर्ष वीरसंवत्नुं ज छे अने आ वल्लभीभंग ते तुरूष्ककृत नहि पण राजा **कनकसेन** कृत पहेलो वल्लभीभंग छे. **कर्नल टॉड**ना लखवा प्रमाणे **सूर्यवंश**नो **कनकसेन** राजा विक्रम संवत् २०० अथवा २०१मां पोतानी राजधानी अयोध्या छोडीने गुजरात तरफ आव्यो हतो, पण हुं धारूं छुं के आ कनकसेन गुप्तवंशी राजाओनो सेनापति हशे अने चंद्रगुप्त प्रथम गादीए बेठो ते ज वर्षमां अथवा तो तेना पहेला वर्षमां तेणे गुप्तराज्य तरफथी गुजरात उपर चढाई करीने वल्लभीनो कबजो कर्यो हशे, जे प्रसंगने जैन लेखकोए प्राचीन गाथाओमां 'वल्लभीभंग' तरीके वर्णव्यो छे अने ए घटनानुं निर्वाण संवत्नुं ८४५मुं वर्ष गणाव्युं छे. आ **कनकसेन** ते पुराणोमां स्त्री राज्यनो भोक्ता कनक कह्यो छे ते ज जणाय छे. विष्णुपुराणमां कनकने 'त्रैराज्य' अने 'मुषिक' देशनो भोक्ता कह्यो छे. ब्रह्मांड पुराणमां एने 'स्त्रीराष्ट्र' अने 'भोजक' देशनो भोक्ता लख्यो छे, त्यारे वायु पुराणमां 'स्त्रीराष्ट्र' अने 'भक्ष्यक'नो भोक्ता जणाव्यो छे, मारा मत प्रमाणे 'त्रैराज्य' अथवा 'स्त्रीराष्ट्र' ए कामरूप देशनां नामो नहि पण 'सौराष्ट्र'ना अपभ्रष्ट रूपो छे अने 'भोजक' तथा 'मुषिक जनपद' ए वडनगर अने एनी आसपासना प्रदेश माटे वपरायेल प्राचीन नामो हशे, **कनकसेने** ए ज प्रदेशोने जीतीने त्यां शहेरो वसाव्यां हतां. आ विजेता **कनकसेन** मूलमां गुप्तोनो सेनापति हशे पण पाछळथी आवा महान् पराक्रमोना बदलामां एने पोताना स्वामी तरफथी विजित प्रदेशो भोगवटामां मळ्या हशे. विक्रम संवत् ५९३ सुधी एना वंशजो 'सेनापति' अने 'महासामंत'नां बिरुदो धारण करता हता. आथी पण अमारा उपरना अनुमानने पुष्टि मळे छे. वल्लभीमां गुप्त संवत् वल्लभी संवत्ना नामथी

1. प्रबंधकोशमां आ प्रमाणे थोडो फेर छे. विक्रमादित्यभूपालात् पञ्चर्षित्रिक (५७३) वत्सरे जातोऽयं वल्लभीभंगो ज्ञानिनः प्रथमं ययुः ॥६६॥ - (मल्लवादी प्रबंध)

प्रचलित थयो. आ उपरथी पण जणाय छे के **कनकसेन** गुप्तोनो सेनापति ज हशे अने तेणे गुप्त संवत्ना प्रारंभ कालमां वल्लभीने जीतीने त्यां ते संवत्सर चलाव्यो हशे; पण वल्लभीनी राज्यक्रान्तिनुं अने गुप्तसंवतनुं एक ज वर्ष होवाथी ते संवत् वल्लभीना राज्यक्रान्ति सूचवनार 'वल्लभी संवत्' ना नामथी प्रसिद्ध थई गयो हशे.

ए ज **वल्लभी**नो बीजीवार विक्रम संवत् ८२४नी आसपासमां म्लेच्छ अथवा आरबोने हाथे भंग थयो लागे छे, पण प्रथम अने बीजा भंगनी भिन्नता न समजवाथी पाछळना लेखकोए बंने भंगनुं एकत्र वर्णन करी दीधुं छे, पण खरी वात तो ए छे के जे वीर संवत् ८४५मां वल्लभीभंग थयो हतो ते म्लेच्छ कृत नहि पण सेनापति कनकसेनकृत हतो अने जे सातमा शीलादित्यना समयमां वल्लभीनो बीजीवार भंग थयो हतो ते वीर संवत् ८४५मां नहि पण विक्रम संवत् ८२३ पछी नजीकना समयमां थयो हतो. वीर संवत् ८८४मां **मल्लवादि**ए बौद्धोने जीत्यानुं प्रबंधकारे एक पद्यमां वर्णन आप्युं छे, पण आधुनिक विद्वानो **मल्लवादी**ने विक्रम संवत् ८८४मां थया माने छे; कारण के मल्लवादिए धर्मोत्तरना न्यायबिन्दु उपर टिप्पण लख्युं छे अने धर्मोत्तराचार्यनो सत्ता समय विक्रम संवत् ९०४नी आसपासमां गणाय छे. पण अत्रे जे संवत् मल्लवादीनी जीतनो आप्यो छे ते तो वीर संवत् ज छे, कारण के आ प्रसिद्ध मल्लवादीने विक्रमनी नवमी सदीमां कोई रीते मूकी शकाय तेम नथी; केमके **विक्रमना आठमा शतकना प्रसिद्ध आचार्य हरिभद्रसूरि पोतानी कृति अनेकान्त जयपताकामां अनेक स्थळे आचार्य मल्लवादीनो नामोल्लेख करे छे,** जो आचार्य मल्लवादीने नवमी सदीनी व्यक्ति मानी लेवामां आवे तो आचार्य हरिभद्रसूरिए करेल तेमना नामनिर्देशनो समन्वय कोई रीते थई शके नहि. आथी आचार्य मल्लवादीनो समय वीर संवत् ८८४नी आसपास मानवो ए ज युक्ति संगत छे.

त्यारे हवे आचार्य मल्लवादीए धर्मोत्तरना ग्रंथ उपर टिप्पण केम लख्युं? ए प्रश्ननुं निराकरण करवुं रह्युं.

वादी **देवसूरि**ना स्याद्वादरत्नाकर उपरथी वृद्ध धर्मोत्तर अने लघु धर्मोत्तर एम धर्मोत्तर नामना बे बौद्धाचार्यो थई गया लागे छे. ते ज रीते हुं धारुं छुं के **'मल्लवादी'** नामथी पण त्रण जैन आचार्यो थई गया छे.

प्रथम आचार्य मल्लवादी के जे बौद्धविजेता तरीके प्रसिद्ध छे अने जेमनो **हरिभद्रसूरि**ए पोताना ग्रंथमां बहुमानपूर्वक नामोल्लेख कर्यो छे ते वीर संवत् ८८४नी आसपासमां थया.

बीजा आचार्य मल्लवादी विक्रमनी दशमी सदीना अंतमां थया के जेमणे लघु धर्मोत्तरना न्यायबिन्दु उपर टिप्पण बनाव्युं.

त्रीजा आचार्य मल्लवादी विक्रमनी तेरमी सदीमां थया के जेमनी कवितानी **मंत्री वस्तुपाल-जेवा विद्वाने** प्रशंसा करी हती.[1]

शकुनिकाविहार तीर्थनो उद्धारक **सातवाहन पादलिप्तसूरि**नो समकालीन **यज्ञश्री शातकर्णि** अथवा **त्रीजो शातकर्णि** हशे, **पादलिप्तसूरि**ना समयनो विचार तेमना प्रबंधना विवेचनमां कर्यो छे.

आ प्रबंधना चरित्रनायक **विजयसिंहसूरि**ना अस्तित्व समय विषे प्रबंधमां कंई पण उल्लेख के सूचना

1. विशेष माटे जुओ. जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. ३७६ थी अने द्वादशारनयचक्र (आ श्री लब्धिसूरिजी संपादित) भा. ४ प्रस्तावना पृ. ३० पं. श्री विक्रमविजयजी.
श्री जितेन्द्र शाह एमना लेख 'वादीन्द्र मल्लवादी क्षमाश्रमणनो समय (निर्ग्रंथ १ पृ. ३-४) मां श्वेतांबर परंपरामां त्रण अने दिगंबर परंपरामां एक 'मल्लवादी' थयानुं जणावे छे.
प्रबंध चिंतामणीमां जणाव्युं छे के—वल्लभी भंग पूर्वे वल्लभीमांथी अंबादेवी अने क्षेत्रपाळनी मूर्ति आकाशमार्गे श्री चंद्र प्रभास पाटणमां आवीने स्थिर थई. आजे प्रभास पाटणना श्री चंद्रप्रभ स्वामिना जिनालयमां चोकीना गोखलामां बिराजमान अंबिका देवीनी मूर्ति नीचे आ प्रमाणे लेख मळे छे. संवत १३६४ वर्षे वैशाषवदि पू. बुधे... श्री चंन्द्रप्रभस्वामि चैंत्ये पूर्वं व्योममार्गेण समागतायाः अंबिकाया.
'मूर्ति...जिर्णोद्धारः कृतः सुहडसीहेन कारितः पेटलापद्रीय श्रीमद् धर्मदेवसूरिभिः प्रतिष्ठिता' 'श्री चन्द्रप्रभाचार्य पाटणतीर्थ महात्म्य' पृ. २०

नथी.[1] विशेष माटे जुओ. जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. ३७६ थी अने द्वादशारनयचक्र (आ श्री लब्धिसूरिजी संपादित) भा. ४ प्रस्तावना पृ. ३० पं. श्री विक्रमविजयजी.

श्री जितेन्द्र शाह एमना लेख 'वादीन्द्र मल्लवादी क्षमाश्रमणनो समय (निर्ग्रंथ १ पृ. ३-४) मां श्वेतांबर परंपरामां त्रण अने दिगंबर परंपरामां एक 'मल्लवादी' थयानुं जणावे छे.

प्रबंध चिंतामणीमां जणाव्युं छे के—वल्लभी भंग पूर्वे वल्लभीमांथी अंबादेवी अने क्षेत्रपाळनी मूर्ति आकाशमार्गे श्री चंद्र प्रभास पाटणमां आवीने स्थिर थई. आजे प्रभास पाटणना श्री चंद्रप्रभ स्वामिना जिनालयमां चोकीना गोखलामां बिराजमान अंबिका देवीनी मूर्ति नीचे आ प्रमाणे लेख मळे छे. संवत १३६४ वर्षे वैशाषवदि पू. बुधे... श्री चन्द्रप्रभस्वामि चैत्ये पूर्वं व्योममार्गेण समागतायाः अंबिकाया.

'मूर्ति...जिर्णोद्धारः कृतः सुहडसीहेन कारितः पेटलापद्रीय श्रीमद् धर्मदेवसूरिभिः प्रतिष्ठिता' 'श्री चन्द्रप्रभाचार्य पाटणतीर्थ महात्म्य' पृ. २०

तेथी एमना समय विषे विचार करवो मुश्केल छे, पण एमणे जे भरूचमां मुनिसुव्रतस्वामीनुं काष्ठमय चैत्य कराव्युं हतुं तेनो अति जीर्णावस्थामां संवत् १११६मां अंबडे जीर्णोद्धार कराव्यानो आमां लेख छे, आथी अनुमान करी शकाय के अंबडथी आ आचार्य वधारेमां वधारे २५० थी ३०० वर्ष पूर्वेना होई शके अने जो आ कल्पना मानवायोग्य होय तो **विजयसिंहसूरि**नो समय-विक्रमनी दशमी सदीथी पहेलांनो मानी शकाय नहि, छतां एमना समय विषेनी कोईपण कल्पना अटकळथी वधु वजनदार गणाय नहि. ए नामना बीजा पण अनेक आचार्यो थई गया छे, पण आमांथी कोईपण दशमी सदीनी पूर्वे-थयानुं प्रमाण मळतुं नथी.

ए आचार्ये **'नेमिस्तव'** उपरांत कोई ग्रंथनी रचना कर्यानो प्रबंधमां उल्लेख नथी, **'प्रतिक्रमणचूर्णि'** नामनो ग्रंथ **विजयसिंहसूरि**कृत गणाय छे अने एना कर्तानो समय दशमी सदी होवानुं पण याद छे; छतां ते ग्रंथकार अने प्रस्तुत आचार्य एक छे के भिन्न ते कहेवुं मुश्केल छे; केमके आ वखते ते ग्रंथ के ते विषे लखेली केफियत अमारी पासे नथी. भरूच ए विद्याधर कुलना आचार्योनुं मुख्य मथक होय तेम आ प्रबंध उपरथी स्पष्ट जणाई आवे छे. **आर्य खपट** आचार्यना समयथी ए क्षेत्र विद्याधर कुलनुं चाल्युं आवतुं हतुं अने प्रबंधकार कहे छे तेम तेमना वखतमां (संवत् १३३४मां) पण ए परंपराना आचार्यो आ क्षेत्रमां विद्यमान हता.

७. श्री जीवदेवसूरि

[1]आचार्य **जीवदेव** वायडनिवासी वायडज्ञातीय शेठ **धर्मदेव**ना पुत्र हता. एमनी मातानुं नाम **शीलवती** हतुं. **जीवदेव**नुं गृहस्थाश्रमनुं नाम **महीधर** हतुं, एमने एक **महीपाल** नामे नानो भाई हतो जे घणे भागे देशान्तरमां ज फर्या करतो हतो.

महीधरे वायडगच्छना आचार्य **जिनदत्तसूरि**नी पासे दीक्षा लीधी अने भणी गणीने गीतार्थ थतां, आचार्य **जिनदत्तसूरि**ए एमने आचार्य पद आपीने पोतानी शाखाने अनुसारे **'राशिलसूरि'** ए नाम पाडीने पोताना पट्टधर बनाव्या अने पोते परलोक साधन कर्युं.

महीपालने पण राजगृह नगरमां दिगम्बराचार्य **श्रुतकीर्ति**ए दीक्षा आपीने एनुं **'सुवर्णकीर्ति'** ए नाम पाड्युं. **सुवर्णकीर्ति** पण श्रुतकीर्तिना पट्टधर शिष्य थया एटलुं ज नहि, पण तेमणे पोताना गुरु पासेथी अप्रतिचक्राविद्यानो आम्नाय अने परकायप्रवेश विद्या प्राप्त करी हती.

राजगृह तरफना व्यापारिओना मुखथी **महीपाल**नी माताए एनी दीक्षा शिक्षाना समाचार सांभळ्या अने ते पोतना पुत्रने मळवा निमित्ते राजगृह तरफ गई. पोताना बे पुत्रोमां पण दिगम्बर अने श्वेताम्बर एम बे मत जोई

1. प्रबंध कोशमां आ प्रबंध साथे केटलोक तफावत आवे छे.

शीलवतीए **सुवर्णकीर्ति**ने कह्युं—'जिन भगवाननो एक ज मार्ग, तेमां ए भेद केवा? अने एमां साचो मार्ग कयो तेनो निर्णय अमारे केवी रीते करवो? तमो बंने भाई एकठा थईने खरा-खोटानो निर्णय करो के जेथी हुं पण ते ज मार्गनो स्वीकार करुं.' पोतानी मातानां आ वचनोने अनुसारे **सुवर्णकीर्ति** वायड तरफ आव्या. माताए बंने मुनिओनो आचारमार्ग अने त्याग वगेरे जोयो अने श्वेताम्बर मार्गनुं वास्तविकपणुं जणातां **सुवर्णकीर्ति**ने श्वेताम्बर मार्ग ग्रहण करवानो अनुरोध कर्यो. **राशिलसूरि**ए पण तेमने समजाव्या जे उपरथी दिगम्बर मुनिए वस्त्रनो स्वीकार करी श्वेताम्बर मार्गमां प्रवेश कर्यो. थोडा ज समयमां आ संप्रदायना सिद्धान्तो भणीने गीतार्थ थतां **राशिलसूरि**ए पोताना बन्धु **सुवर्णकीर्ति** मुनिने आचार्यपद आप्युं अने पोताना उत्तराधिकारी **'जीवदेवसूरि'** नामे पट्टधर शिष्य बनाव्या.

जीवदेवसूरिना शिष्यनी एकवार कोई योगिए वाचा बंध करी दीधी हती, तेमज एक वार तेमना समुदायनी साध्वी उपर योगचूर्ण नाखीने परवश करी नाखी हती, पण आचार्ये पोतानी अपूर्व शक्तिना प्रभावे बंने स्थळे योगिनो पराजय करीने तेने योग्य शिक्षा करी हती.

ए अवसरे उज्जयनीमां **विक्रमादित्य** राजा राज्य करतो हतो, तेणे संवत्सर चलाववा माटे पृथ्वीनुं ऋण चूकाववा निमित्ते देशोदेश पोताना मंत्रीओने मोकल्या, तेमांथी 'लिंबा' नामनो प्रधान वायड पण आव्यो, त्यां तेणे महावीरना मंदिरने जीर्ण देखीने तेनो उद्धार कराव्यो अने तेना ध्वजदंडनी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् ७मां जीवदेवसूरिना हाथें करावी.

वायडमां एक **'लल्ल'** नामनो कोटिध्वज शेठ वसतो हतो, लल्ल ब्राह्मणोनो भक्त हतो, तेणे सूर्यग्रहणमां एक लाख रूपिया धर्मार्थ कर्या हता अने ते द्रव्यथी तेणे एक महायज्ञ शरू कराव्यो हतो, पण पाछळथी तेनुं ए क्रिया उपरथी मन उठी गयुं हतुं अने **जीवदेवसूरि**ना उपदेशथी ते जैनधर्मी थई गयो हतो. धर्मार्थ करेल द्रव्यमांथी लगभग ५०००० रूपिया तो यज्ञक्रियामां खर्चाई चूक्या हता अने बाकीनाथी तेणे **'पिप्पलानक'** नामना गाममां जिनचैत्य करावववा मांडेल, पण तेटलामां त्यां आवेल कोई अवधूते ते स्थळे स्त्रीनुं शल्य होवानुं अने ते काढीने पछी जिनालय बनाववानुं कह्युं. ए उपरथी थयेल काम पाछुं उकेलवा मांड्युं पण ते समयमां ते न उकेलवा कोई अज्ञात आदेश थयो. आ उपरथी आचार्ये ध्यान कर्युं. जेथी एक देवी प्रत्यक्ष थईने कहेवा लागी के 'हुं कान्यकुब्जना राजानी पुत्री हती अने मने सुखडीमां आपेल आ देशमां सुखपूर्वक रहेती हती, पण मने 'आ देशनो म्लेच्छोथी भंग थशे' ए भय लाग्यो तेथी हुं कूवामां पडीने मरी गई. अने आ भूमीनी अधिष्ठायिका देवी थई छुं. आ स्थळे मारुं घणुं धन पडेलुं छे माटे अत्रेथी शल्य (अस्थि-हाडकां) नहि काढवा दउं, पण **जीवदेवसूरि**ए तेणीने त्यां भुवनदेवी तरीके स्थापवानी शरते शांत करीने तेनी अनुमतिथी भूमि शुद्ध करीने चैत्य तैयार कराव्युं अने तेमां भुवनदेवीनी पण देहरी बनावी, ते देवी हजी पण धार्मिकोथी पूजाय छे.

ज्यारथी **लल्लशेठ** जैन थयो हतो त्यारथी ज वायडना ब्राह्मणो तेना उपर अने खास करीने **जीवदेवसूरि** उपर द्वेषभाव राखवा लाग्या हता. परिणामे एकवार तेमणे एक मृतप्राय गाय **जीवदेवसूरि आश्रित भगवान महावीरना देहरा**मां वाळी दीधी. प्रभात समयमां साधुओए जोयुं के चैत्यना खास स्थानमां मरेल गाय पडी छे, तेमणे ए वात **जीवदेवसूरि**ने करी, जे उपरथी तेमणे एकान्तस्थानमां बेसीने पोताना शरीरमांथी प्राण काढी गायना शरीरमां प्रवेश्या अने गाय त्यांथी उठीने ब्रह्माना मंदिरमां गर्भगृहमां जईने पेसी गई अने ते पछी निर्जीव थई गई. आ आश्चर्यकारक घटनाना समाचार पूजारीए ब्राह्मणोने कह्या, ब्राह्मणो अने सर्व विचारवान मनुष्योने आ घटना एक उत्पात जेवी लागी अने पहेला दिवसे ब्राह्मण जुवानोए जे जैनोनी छेडछाड करी हती तेनुं ज ए परिणाम होवानो

तेमणे निश्चय कर्यो अने **जीवदेवसूरिने** आवीने आजीजी करी के आ गाय जीवती थईने उठीने बहार जाय एवो उपाय करो, पण **आचार्य जीवदेवे** तेमना कहेवा उपर बहु लक्ष्य न आप्युं त्यारे तेमणे त्यां बेठेल **लल्ल** शेठने प्रार्थना करी के 'ते आचार्यने कहीने आ संकटमांथी अमारो उद्धार करावे' आ सांभळी **लल्ले** टीका करतां कह्युं के 'आजकाल तमे लोकोए जे उत्पात मचाव्यो छे तेना परिणामे जेटली दुर्घटनाओ न थाय तेटली थोडी छे.' पण ब्राह्मणोए कोई पण शरते आ संकटमांथी उगारवानी ज प्रार्थना करी. जे उपरथी **लल्ले** जैनोनी साथे आ प्रमाणे शरतोनी साथे शरतो कबूल करावीने सुलहेनामुं तैयार कर्युं के ''जैनो वायडमां गमे ते धार्मिक उत्सवो करे तेमां कोईए कोईपण प्रकारनुं विघ्न नाखवुं नहि, (वायडमां जे कंईपण धार्मिक कार्यव्यवस्था थशे तेमां) भगवान महावीरना साधुओनो भाग पहेलो रहेशे. **(जीवदेवनी गादी उपर) जे नवीन आचार्य बेसे तेनो ब्राह्मणोए सुवर्णनुं यज्ञोपवीत पहेरावीने ब्रह्माना मंदिरमां पट्टाभिषेक करवो.**''

लल्ले उपर प्रमाणे मर्यादा बांधवा कह्युं अने ब्राह्मणोए ते प्रमाणे कबूल कर्युं. ते पछी तेणे **जीवदेवसूरिने** महास्थान (वायड) नो उद्धार करवा कह्युं अने आचार्ये एकान्तमां जई पोताना प्राण खेंचीने गायमां प्रवेश्या, गाय उठीने त्यांथी बहार नीकळीने दूर चाली गया पछी आचार्ये तेमांथी पोताना प्राण खेंची लीधा.

ए घटना पछी जैनो अने ब्राह्मणो वच्चे जे भाईओना जेवो संबंध स्थापित थयो हतो ते आजे पण त्यां चाली रह्यो छे.

जीवदेवसूरिए पोतानुं मरण निकट जाणीने वायडमां आवी पोताना गच्छनी व्यवस्था करीने ते पछी अनशन कर्युं अने समाधिपूर्वक आयुष्य पूर्ण कर्युं.

कहे छे के एमना स्वर्गवासना समयमां ते सिद्ध जोगी-के जेने पूर्वे **जीवदेवसूरिए** पराजित कर्यो हतो-वायडमां आव्यो अने मृतक **जीवदेवसूरिनुं** मुख देखवा माटे आग्रह कर्यो हतो. आनुं प्रयोजन ए हतुं के **जीवदेवसूरिनुं** कपाळ एक खंडनु होई योगीने लेवुं हतुं, पण आचार्ये प्रथम आपेल सलाह प्रमाणे गणावच्छेदके तेने फोडी नाख्युं हतुं तेथी योगीनी मुराद पूरी न थई, आथी तेणे निराशा प्रगट करतां कह्युं ''**राजा विक्रमादित्यने** अने आ मारा मित्र आचार्यने एक खंड कपाल हतुं जे पुण्यवान पुरुषनुं लक्षण कहेवाय छे.'' आ पछी योगीए अगरु अने चन्दनना काष्ठो लावीने आचार्यना अग्निसंस्कारमां भाग लीधो.

प्रबंधनी समाप्ति करतां चरित्रकार कहे छे के आजे पण तेमना वंशमां अमरना जेवा तेजस्वी प्रभावक आचार्यो थाय छे. अत्रे वापरेल 'अमर' शब्दथी तेमणे ए वायड गच्छना आचार्य **जिनदत्तसूरिना** शिष्य बालभरत, काव्य कल्पलता प्रभृति ग्रंथोना प्रणेता प्रसिद्ध कवि **अमरचंद्रसूरिनी** सूचना करी छे, आथी जणाय छे के संवत् १३३४ सुधी **अमरचंद्र कवि** विद्यमान हशे.

वायड गच्छ अने वायडज्ञाति जे स्थानना नामथी आज पर्यन्त प्रसिद्ध छे ते **वायड** स्थान आजे पण डीसा (जील्ला पालनपुर)नी पासे एज 'वायड' नामथी प्रसिद्ध छे. पूर्वे ए महास्थानोमां गणातुं पण हमणां गामडाना रूपमां वर्तमान छे. वायड ज्ञाति तो आजे पण गुजरातमां वर्तमान छे; पण **वायड** गच्छना साधु के आचार्य वर्तमान समयमां क्यांये जोवाता नथी. आ गच्छना पट्टधर आचार्योनां नाम घणे भागे **जिनदत्तसूरि, राशिलसूरि** अने **जीवदेवसूरि** ज हतां अने आ गच्छनी परंपरा विक्रमना तेरमा शतक सुधी वर्तमान हती. वस्तुपालना समयमां ए गच्छना **जिनदत्तसूरि** अने तेमना शिष्य **अमरचंद्र** विद्यमान हता. एज **जिनदत्तसूरिए** विवेकविलास अने शकुनशास्त्रनी रचना करी छे. ए पछी आ गच्छनी परंपरा क्यां सुधी चाली ते निश्चित नथी.

विक्रमादित्यना मंत्री **लिंबाए** वायडना भगवान महावीरना चैत्यनो उद्धार कराव्यानो अने विक्रम संवत् ७मां **जीवदेवसूरिए** तेनी प्रतिष्ठा कराव्यानो प्रबंधमां उल्लेख छे अने आ उपरथी **जीवदेवसूरि विक्रमादित्यना**

समकालीन हता एम मानवाने कारण मळे छे, पण वास्तवमां ए आचार्य एटला बधा प्राचीन न हता एम प्रबंधनी केटलीक वातो उपरथी सिद्ध थाय छे. पहेली वात तो एज छे के जीवदेव प्रथम **श्रुतकीर्ति**ना शिष्य **सुवर्णकीर्ति** नामे दिगम्बर मुनि हता एम प्रबंधकारे जणाव्युं छे. **श्रुतकीर्ति** क्यारे थया ते आपणे जाणता नथी; छतां बंने संप्रदायोना लेख उपरथी एटलुं तो निश्चित छे के विक्रमनी बीजी शताब्दिमां दिगम्बर अने श्वेताम्बरोनी परम्पराओ जुदी पडी हती, आ स्थितिमां **जीवदेव**ने प्रथमावस्थामां दिगम्बर मानीने तेमने विक्रमादित्यना समकालीन मानवा ए युक्तिसंगत नथी.

कान्यकुब्जना राजानी पुत्रीना गुजरातमां आवनार म्लेच्छोना भयथी कूवामां पडीने मरवा संबंधी हकीकतो पण आ वृतान्तनी प्राचीनतामां शंका उत्पन्न करे तेवी छे.

जीवदेवसूरिनी परम्परामां नवो आचार्य पाट बेसे त्यारे तेने सुवर्णनुं यज्ञोपवीत पहेरावववा अने ब्रह्माना मंदिरमां अभिषेक करवा विषेनी लल्लशेठे ब्राह्मणो पासे जे शरत करावी छे, ए जोतां जणाय छे के **ए जीवदेवसूरिनो समय चैत्यवासिओना प्राबल्यनो समय होवो जोईए** अने **ए आचार्य पण केटलेक अंशे शिथिलाचारी होवा जोईए,** अन्यथा यज्ञोपवीत अने अभिषेकनी शरतो करावे नहि. पट्टावलियो अने भाष्य, चूर्णि आदि आगम साहित्य उपरथी जणाय छे के **विक्रमनी पांचमी शताब्दि सुधीमां चैत्यवासनी सार्वत्रिक प्रवृत्ति थई गई हती अने तेनी साथे ज शिथिलाचार पण वधी रह्यो हतो.**

पूर्वोक्त वृतान्तो उपरथी ए वात सहेजे सिद्ध थाय छे के प्रस्तुत प्रबंधना चरित्रनायक **जीवदेवसूरि** प्रसिद्ध **विक्रमादित्य**ना समयना नहि पण ए समयथी लगभग ५००-६०० वर्ष पछीना पुरुष हता. [1]**लल्ल** शेठ द्वारा जे ब्राह्मणोए जैनोनी साथे शरतो करेली ते ज ब्राह्मणो कालान्तरे सत्ताहीन अने जागीरहीन थता जैनोना आश्रित भोजको थया हता एम हुं मानुं छुं.

भोजक जातिनुं हजी पण आदर सूचक विशेषण ''ठाकोर'' छे, ए सूचवे छे के पूर्वे ए जाति जागीरदार हशे, ए निश्चित छे. ए लोकोनुं पालनपुरनी आसपास प्रदेशमां ढागर परगणामां जेमां वायड पण आवेल छे त्यां-मान छे अने जैनो उपर केटलाक परंपरागत लागा छे. आथी पण ए लोकोनो आ प्रदेशमां पूर्वे अधिकार अने वसवाट होवानुं जणाई आवे छे.

ज्यारथी ए लोकोए वायड खोयुं त्यारथी ज अधिक परिचय अने संबंधना कारणे एमणे जैन मंदिरोनी पूजा भक्ति करवानुं शरू कर्युं हशे अने जैनोए एमने लागा बांधी आप्या हशे. दंतकथा प्रमाणे एमने **आ. हेमचंद्रे** जैन बनाव्यानुं, के बीजी दंतकथा प्रमाणे खरतरगच्छीय जिनदत्तसूरिए **जैनधर्ममां** लेवडाव्यानुं अने जैनोना घरे भोजन करवाथी 'भोजक' नाम पड्यानुं कथन यथार्थ जणातुं नथी, कारण के **'भोजक' शब्द नवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिना वखतमां पण प्रचलित हतो** अने तेनो अर्थ 'पूजक' ए थतो हतो. आथी मानवाने कारण मळे छे के प्रसिद्ध **आचार्य हेमचंद्र** अने **जिनदत्तसूरि**नी पहेलां ज ए लोकोने वायडगच्छना ज कोई आचार्ये जैन मंदिरोना पूजक तरीके कायम करी लीधा हशे. अने ते आचार्यनुं नाम **'जिनदत्तसूरि'** पण होय, तो नवाई नथी, कारण के वायडगच्छमां दरेक त्रीजा आचार्यनुं नाम **'जिनदत्तसूरि'** ज अपातुं हतुं.

1. निर्ग्रंथ २ पृ. ४०-४८मां श्री शिवप्रसादनो लेख 'वायडगच्छ का ईतिहास' प्रगट थयो छे. तेमां लख्युं छे के, 'वर्तमान युग के विद्वानों ने विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर इनका काल विक्रम की ८वीं शताब्दि के आसपास बतलाया है।
श्री रूपेन्द कुमार पगारिया लखे छे के—प्राचीन समयमां वायडमां श्री मुनि सुव्रतस्वामिभ. अने जीवंत स्वामिनी प्रतिमा वस्त्रयुक्त हती. – (संबोधि वोल्युम १३ पृ. ५१)

८. श्री वृद्धवादीसूरि

वृद्धवादी गृहस्थावस्थामां गौडदेशमां **कोशलाग्राम**ना रहेवासी **मुकुन्द** नामना ब्राह्मण हता. प्रसिद्ध अनुयोग प्रवर्तक अने **पादलिप्तसूरि**ना परंपराशिष्य विद्याधर कुलीन आचार्य **स्कन्दिलसूरि**नी पासे **मुकुन्दे** वृद्धावस्थामां जैन दीक्षा लीधी हती.

भरूचमां ''नालिकेरवसति'' नामना चैत्यमां करेल आराधनाना परिणामे थयेल सरस्वतीनी प्रसन्नताथी वृद्ध **मुकुन्द ऋषि**ने अपूर्व वादशक्ति प्राप्त थई हती तेथी ए 'वृद्धवादी' ए नामथी सर्वत्र प्रसिद्ध थया हता. **स्कन्दिलाचार्य**ना स्वर्गवास पछी **वृद्धवादी**ए तेमना पट्टधर आचार्य थईने उज्जयिनी तरफ विहार कर्यो.

ते समयमां **विक्रमादित्य** पृथ्वीनुं पालन करतो हतो. अन्य दिवसे कात्यायन गोत्रीय **देवर्षि**-ब्राह्मण अने **देवश्री**नो पुत्र **'सिद्धसेन'** नामनो विद्वान ब्राह्मण त्यां आव्यो. नगरनी बाहर ज **वृद्धवादीसूरि** तेने मळ्या अने त्यांज तेमनी साथे वाद करीने तेमनो **कुमुदचंद्र** नामे शिष्य थयो.

वर्तमान कालीन जैन शास्त्रोनो अभ्यास करीने गीतार्थ थतां कुमुदचंद्रने **वृद्धिवादिसूरि**ए आचार्यपद आप्युं अने **'सिद्धसेन'** ए प्रथमनुं ज नाम आपीने पोताना गच्छना उत्तराधिकारी बनाव्या.

एकवार सिद्धसेनाचार्ये पोतानी कवित्व शक्तिथी **विक्रमादित्य**ने खुश कर्यो हतो, जे उपरथी राजाए तेमने क्रोड सोनैया आपवा मांड्या पण **तेमणे ते द्रव्य साधारण खाताना फंडमां अपाव्युं अने तेथी गरीब श्रावकोनो अने जिनमंदिरोनो उद्धार कराव्यो.**

एकवार ए चित्तोडगढ गया हता. त्यां एमनी नजरे विचित्र स्तंभ पड्यो, जे न पत्थरनो हतो, न माटीनो अने न लाकडानो. आचार्ये आथी तेनी बारीक तपास करी तो ते लेपमय लाग्यो, आथी तेमणे विरुद्ध द्रव्योथी घसीने तेने एक छिद्र पाड्युं तो ते पुस्तकोथी भरेलो जणायो. आचार्ये तेमांथी एक पुस्तक काढीने तेनुं एक पत्र लईने वांच्युं एटलामां **ते पुस्तक तेमना हाथमांथी अदृष्ट देवताए झुंटवी लीधुं,** पण तेमांथी तेमने सुवर्णसिद्धियोग अने सरसवोथी सुभट निपजाववानी विधि-आ बे चीजो याद रही गई. एकवार **सिद्धसेनाचार्य** छेक पूर्व देशमां गया, त्यां तेओ **कर्मार** गाममां गया ज्यां **देवपालराजा**नी तेमने मुलाकात थई. धर्मकथाथी आचार्ये **देवपाल**ने जैनधर्म तरफ खेंच्यो अने पोतानो मित्र बनाव्यो. **आचार्य सिद्धसेन देवपाल**ना आग्रहथी त्यां ज रह्या हता. तेवामां **कामरू** देशनो राजा **विजयवर्मा** मोटी सेनानी साथे **देवपाल** उपर चढी आव्यो. शत्रुनी चढाई अने तेना अधिक बलनी वात **देवपाले सिद्धसेनाचार्य**ने कहीने जणाव्युं के आ प्रबल शत्रु सामे टकी रहेवा जेटलुं मारी पासे. द्रव्य अने सेनाबल नथी, आ उपरथी सिद्धसेनाचार्ये सुवर्णसिद्धिथी द्रव्य अने सर्षपयोगथी घणा सुभटो उपजावीने तेने सहायता करी अने **देवपाले** आ मददथी **विजयवर्मा** उपर जीत मेळवी पोताने मुंझवणरूप अंधकारमां प्रकाश आप्यो एथी **देवपाले सिद्धसेनाचार्य**ने **'दिवाकर'** ए विशेषणथी बोलाव्या. **देवपाले** ए **पछी सिद्धसेनने अतिशय मान आप्युं, ते एटले सुधी के तेमने आग्रह करी करीने पालखी अने हाथी उपर बेसाडवा मांड्या, दाक्षिण्यवश आचार्य पण राजाना आ आग्रहने पाछो ठेली न शक्या अने शिथिलाचारमां पडी गया.**

वृद्धवादीसूरिए सिद्धसेनसूरिनी आ प्रमादी अवस्थाना समाचार लोकोना मुखथी सांभळ्या अने तेओ विहार करीने **कर्मारपुर** आव्या अने पालखीमां बेसीने फरता सिद्धसेनसूरिने युक्तिथी समजावीने शिथिलाचार छोडाव्यो अने ते पछी तेंने पोताना गच्छनो भार सोंपीने वृद्धवादिसूरिए परलोक वास कर्यो.

सिद्धसेनदिवाकरे एकवार मूळ जैन आगमो जे प्राकृत भाषामां बनेलां छे, ते संस्कृत भाषामां बदली नाखवानो विचार कर्यो, पण एमना ए संकल्पथी श्रमण संघे एमने ठपको आपीने १२ वर्ष पर्यन्त गच्छ अने साधु वेष छोडीने चाल्या जवानो दंड कर्यो. अने कह्युं के 'जो तमाराथी जैनधर्मथी कोई मोटी उन्नति थई संघ जोशे

तो बार वर्षनी अंदर पण तमने माफ करीने संघमां लई लेशे.' सिद्धसेनदिवाकरे आ पाराञ्चित नामनुं प्रायश्चित्त स्वीकार्युं अने गच्छ छोडीने गुप्त वेशमां निकळी गया.

सात वर्ष सुधी आम तेम भ्रमण करीने अवधूतवेष धारी **सिद्धसेनसूरि** उज्जयिनीमां गया अने कविताथी विक्रमनुं मनरंजन करीने तेनी सभाना पंडित थईने त्यां रह्या.

एकवार **विक्रमादित्य सिद्धसेनसूरि**नी साथे **कुडंगेश्वर** नामना शिवालयमां गया. पण तेमणे शिवने नमस्कार कर्यो नहि, राजाए तेनुं कारण पूछतां तेणे कह्युं के—'मारा प्रणाम सहन करे ते देव बीजा जाणवा, आ देवथी मारो प्रणाम खमाय नहि.' राजाने आ सांभळीने वधारे आश्चर्य थयुं अने आग्रहपूर्वक प्रणाम करवा कह्युं, ते उपरथी सिद्धसेनाचार्ये **'कल्याणमंदिर'** ईत्यादि पदोथी शरू थती अभिनव स्तोत्रनी रचना करीने स्तुति करवामांडी अने आ स्तोत्रनुं तेरमुं पद्य बोलतां **धरण** नामनो नागेन्द्र आव्यो अने तेना प्रभावथी शिवलिंग फाटीने नीचेनी **पार्श्वनाथ** तीर्थंकरनी प्रतिमा प्रगट थई, ते जोईने **सिद्धसेनाचार्ये** विशेष भक्तिथी स्तुति करीने राजाने कह्युं 'अमारो प्रणाम सहन करे ते देव आ छे.' आ आश्चर्यथी राजा **सिद्धसेनसूरि**नो परम भक्त बन्यो अने **जैनधर्मनो सहायक थयो.** संघे पण शेष पांच वर्षनुं प्रायश्चित्त माफ करीने **सिद्धसेनाचार्यने** संघमां लई लीधा.

कालान्तरे **सिद्धसेनदिवाकर** विक्रमने पूछीने उज्जयिनीथी प्रतिष्ठानपुरनी तरफ विहार कर्यो. तेओ ज्यारे भरूचना सीमाडामां पहोंच्या तो त्यां गोवालीया लोको एकठा थईने तेमनी पासे आव्या अने धर्मोपदेश करवानी आचार्यने प्रार्थना करी. जे उपरथी तेमणे प्राकृत भाषामां रास गाईने उपदेश कर्यो. जे सांभळीने गोवालीआओ प्रतिबोध पाम्या अने ते स्थळे पाछळथी ते लोकोए 'तालारासक' नामथी गाम वसाव्युं जे हजी पण जिनमंदिरथी शोभी रह्युं छे.

पछी **सिद्धसेनसूरि** भरूचमां गया, आ वखते भरूचमां **बलमित्र**नो पुत्र **धनंजय** नामे राजा राज्य करतो हतो. राजाए उत्सवपूर्वक आचार्यने नगरप्रवेश कराव्यो ए ज अवसरे भरूच उपर राजाना शत्रुओए हुमलो कर्यो पण **सिद्धसेनाचार्ये** आने पण सर्षपप्रयोगथी असंख्य सैनिको आपीने बचावी लीधो, आ उपरथी ज एमनुं नाम 'सिद्धसेन' खरुं पड्युं.

आखरे **सिद्धसेनदिवाकर** दक्षिणमां प्रतिष्ठानपुर गया अने त्यां ज आयुष्य पूर्ण करीने स्वर्गवासी थया.

सिद्धसेनदिवाकरना स्वर्गवासना समाचार सांभळीने एमनी बहेन **'सिद्धश्री'** जे जैन साध्वी हती तेणीए पण उज्जयिनीमां अनशनपूर्वक देहत्याग कर्यो हतो.

पादलिप्तसूरि अने तेमनी ज शिष्य परंपरामां थयेल **वृद्धवादी** 'विद्याधर' वंशना हता. एमां प्रमाण बतावता प्रबंधकार कहे छे के 'विक्रम संवत् १५०मां जाकुटि (जावड) श्रावके नेमिनाथ चैत्यनो उद्धार कर्यो, ते पछी वरसादथी पडेल मठमांथी निकळेल एक प्रशस्ति उपरथी ए हकीकत (पादलिप्त अने वृद्धवादी विद्याधरवंशीय होवानी हकीकत) उतारी छे.[1]

आ प्रबंधमां जो के वृद्धवादी के सिद्धसेनना अस्तित्व समय विषे स्पष्ट उल्लेख थयो नथी, छतां आमां आपेल **विक्रमादित्य** अने **सिद्धसेनदिवाकर**ना वृत्तान्त उपरथी ए प्रबंधना नायक **वृद्धवादी** अने **सिद्धसेनदिवाकर**ने विक्रमादित्यना समकालीन मानवानुं सहेजे प्राप्त थाय छे. बीजी तरफ आमां पूर्वदेशान्त (बंगाल) ना राजा

1. त्रिपुटीमहाराज लखे छे के—श्री नागेन्द्र कुले श्री सिद्धसेनदिवाकर गच्छे अम्माच्छुम्माभ्यां कारिता संवत् १७८६ 'जेसलमेरना भगवान चंद्रप्रभना देरासरमां एक परिकरवाळी धातुनी पंचतीर्थी उपर लेख छे. आ शिलालेख प्रमाणे आ. सिद्धसेननी नागेन्द्रकुलमां थया हशे अेम मानवुं पडे छे. जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. २६०

देवपालनुं अने कामरूप (आसाम) ना राजा **विजयवर्मा**नुं वृत्तान्त पण आवे छे अने आ बंने राजाओने **सिद्धसेनदिवाकर**ना समकालीन होवानुं जणाव्युं छे, पण आ बंने राजाओनो समय सिद्धसेनदिवाकरना समय साथे मळतो नथी.

बंगालमां **देवपाल** नामे पालवंशी राजा थयो छे; पण तेनो समय विक्रमना दसमा सैकाना प्रारंभथी शरू थाय छे अने **विजयवर्मा**नामक राजानो ईतिहासमां पत्तो लागतो नथी, कदाच प्राग्ज्योतिषमां **वर्मान्त** नामना राजाओ जूना समयमां राज्य करता हता. तेमां कोई **विजयवर्मा** नामे पण राजकर्ता थयो होय तो नवाई नथी. पण राजाओ जो **सिद्धसेनदिवाकरना** सहवासी हता एम मानीए तो विक्रमादित्यना समकालीनपणामां वांधो आवे छे.

बीजी तरफ परंपरागाथाओमां **सिद्धसेनदिवाकर** माटे ''पंचसय वरिससए, सिद्धसेणो दिवायरो जाओ' अर्थात् 'वीर निर्वाणथी ५०० वर्षे **सिद्धसेनदिवाकर** थया.' महा निशीथसूत्रमां पण **सिद्धसेन दिवाकर**नो उल्लेख आवे छे. आ बधुं जोतां एटलुं तो निश्चित छे के **सिद्धसेनदिवाकर** प्रसिद्ध पालवंशी राजा धर्मपालना पुत्र देवपालना समकालीन तो कोई रीते नथी ज.

सिद्धसेनदिवाकर एकवार भरूचमां आव्या त्यारे त्यां बलमित्रना पुत्र **धनंजयराजा**नुं राज्य होवानो प्रबंधमां उल्लेख छे अने आ उपरथी एमना **विक्रमादित्य**ना समकालीनपणाने टेको मळे छे, पण आगळ उपर जोवाशे के सिद्धसेनदिवाकरना समयमां बलमित्रना पुत्रनुं राज्य होवानो बिलकुल संभव नथी. **देवपाल राजाना आग्रहथी सिद्धसेनाचार्य हाथी अने पालखीनी सवारीनो स्वीकार कर्यो हतो.** आ उपरथी जणाय छे के तेओ विक्रमना पहेला सैकामां नहि पण चोथा पांचमा सैकामां थया होवा जोईए; कारण के ते समयमां ज आवा प्रकारनो शिथिलाचार जैन श्रमणोमां चालु थयो हतो. पहेलां नहि.

हवे आपणे एमनो वास्तविक समय कयो ते विचारीए. वृद्धवादी आचार्य प्रसिद्ध अनुयोगधर **आर्यस्कन्दिल**ना शिष्य होवानुं प्रबंधकारे लख्युं छे अने अनुयोगधर **स्कन्दिलाचार्य**नो युगप्रधानत्व समय अमारी गणना प्रमाणे वीर संवत् ८२७ थी ८४० (विक्रम ३५७ थी ३७०) सुधीमां आवे छे. ए समय दरमियान **वृद्धवादी**नी दीक्षा थई मानी लईए तो एमना शिष्य **सिद्धसेन**नो समय विक्रमना चोथा सैकाना अंतिम चरण अने पांचमा शतकना पूर्वार्धमां आवे छे अने आवी परिस्थितिमां **सिद्धसेनदिवाकर**ने प्रसिद्ध संवत्सर प्रवर्तक **विक्रमादित्य**ना नहि पण गुप्तवंशी राजा द्वितीय **चंद्रगुप्त**ना सहवासी मानी लईए तो हरकत जेवुं नथी, केमके आ राजा पण घणो प्रसिद्ध अने **'विक्रमादित्य'** आवी उपाधिधारण करनारो हतो.

गमे तेम हो, पण सिद्धसेन आचार्य चोथी पांचमी सदी पछीना तो नहि ज होय, केमके एमना युगपदुपयोगद्वयवादनुं जैन आगमोनी प्राचीन चूर्णिओमां निराकरण करवामां आव्युं छे अने निशीथचूर्णिमां- के जे विक्रमनी सातमी सदीनो टीकाग्रंथ छे. एमनो ८-१० स्थळे **'सिद्धसेण खमासमण'** अने **'सिद्धसेणायरिय'** ए नामथी उल्लेख थयेलो छे अने ते उल्लेखो उपरथी एम पण स्पष्ट जणाय छे के एमणे निशीथसूत्र उपर भाष्य अथवा ते जातना गाथाबद्धविवरण ग्रंथनी रचना करी हती अने निशीथ चूर्णिमां एक स्थळे तो **'सिद्धसेने' योनिप्राभृतना प्रयोगथी घोडा बनाव्यानो पण उल्लेख मळी आवे छे.** आथी ए चोथी पांचमी सदीना व्यक्ति होवानुं सहजे सिद्ध थाय छे, कारण के अन्य भाष्यकारो पण लगभग ए ज समयमां थई गया छे.

सिद्धसेने घोडा बनाव्यानी कथा केटली प्राचीन छे ते निशीथचूर्णिना (भा.२५.२८१) उल्लेख उपरथी जणाई आवे छे.

आवी रीते अमारा मत प्रमाणे सिद्धसेनदिवाकरनो सत्ता समय चोथा अने पांचमा सैकानो वचलो भाग

ज अनुकूळ लागे छे. कारण के **पादलिप्तसूरि**ना पुरोगामी **आर्य खपट** विक्रमनी प्रथम सदीमां थयानुं सिद्ध थाय छे, स्कन्दिलना पुरोगामी **पादलिप्तसूरि** विक्रमना त्रीजा सैकाना पूर्वार्द्धमां थवानुं साबित थाय छे अने **वृद्धवादी आचार्य**ना गुरु **स्कन्दिलाचार्य विक्रमना चोथा सैकाना आचार्य हता** एम प्रमाणित थई जाय छे तो **स्कन्दिलाचार्य**ना शिष्य **वृद्धवादी आचार्य** अने तेमना शिष्य **सिद्धसेनदिवाकर**ने चोथा पांचमा सैकाना वचगाळामां मूकवा ए ज युक्तियुक्त गणाय.

वृद्धवादी आचार्यनी साथे सिद्धसेने वाद कर्यानी हकीकत दरेक कथानकोमां आवे छे, पण अन्य कथानकोमां आ वाद भरूचनी नजीकमां थयानुं अने ते ज कारणे ते स्थळे 'तालारासक' गाम वस्यानुं वर्णन आवे छे, पण आ प्रबंधमां आ बंने विद्वानोनो वाद उज्जैननी पासे थयानुं लख्युं छे अने भरूचनी पासे सिद्धसेने गोवालियाओने रास गाईने उपदेश कर्यानी वात लखी छे. **अमने पण आ प्रबंधमां लखेली हकीकत प्राचीन अने यथार्थ जणाय छे.**

चित्तोडना स्तंभमांथी **सिद्धसेन**ने पुस्तक मळवानी वात उपरथी जणाय छे के एमना समयमां पुस्तको लखवानी अने भंडारोमां राखवानी रीत चालु थई चूकी हती.[1]

सिद्धसेनदिवाकरना समकालिन राजा **देवपाल, विजयवर्मा, धनंजय** वगेरे प्रसिद्ध **देवपाल** वगेरेथी भिन्न व्यक्तिओ होवानो संभव छे.

वृद्धवादि आचार्ये कोई ग्रंथ प्रकरणनी रचना करी हशे के नहि ते कही शकाय तेम नथी, केमके आजे एमना नामनी कोई पण कृति विद्यमान नथी; परंतु एमना शिष्य **सिद्धसेनदिवाकरे** बनावेला ग्रंथो तो जैन संघमां आजे पण प्रसिद्ध छे. न्यायावतार, द्वात्रिंशिकाओ अने कल्याणमंदिर स्तोत्र उपरांत एमनो 'सन्मतिप्रकरण' नामक जैन दर्शननां तत्त्वोनुं निरूपण करनार न्यायग्रंथ आजे पण विद्वानोना आदरनी चीज छे. [2]प्राचीन चूर्णिओमां आ ग्रंथने दर्शनप्रभावक शास्त्र कहीने उल्लेख्यो छे. आना उपर विक्रमनी पांचमी सदीना प्रसिद्ध तार्किक **आचार्य मल्लवादी**ए टीका कर्याना न्यायग्रंथोमां उल्लेख मळे छे, पण ते टीका आजे क्यांय उपलब्ध थती नथी. आजे आ ग्रंथ उपर विक्रमनी अगियारमी सदीमां बनेली **अभयदेवसूरि**नी टीका विशेष प्रसिद्ध छे.

ए सिवाय निशीथचूर्णिना उल्लेखो प्रमाणे सिद्धसेनाचार्ये जैन आगमो उपर पण टीका भाष्य वगेरे लख्यां हशे, पण आजे ते क्यांय पण अस्तित्व धरावतां नथी.

९. श्री हरिभद्रसूरि

प्रस्तुत प्रबंधमां जणाव्या प्रमाणे **हरिभद्र** चित्तोड नगरना राजा **जितारि**ना पुरोहित हता, पण कथावलीना लेखने अनुसारे ए विद्वान **'पिर्वगुई'** नामनी कोई ब्रह्मपुरीना रहेवासी हता, एमनी मातानुं नाम **गंगा** अने पितानुं

1. पुस्तको श्री पार्श्वनाथ भगवानना समयमां पण लखाता हता एवुं तत्त्वज्ञान दीपिका पृ. १३ उपर आ. श्री बुद्धिसागरसूरिजीए पुरावाओ आपीने सिद्ध कर्युं छे.
   सुमेरसभ्यता का लिखित ईतिहास चार लाख छप्पन हजार वर्ष पुराना है यानि उस समय भी पुस्तकें लिखी जाती थी।
   प्राचीन सुमेर लोग मिट्टी के पत्र पर लिखते थे। ऐसी साठ हजार पुस्तकें बगदाद से ६५ मील दक्षिण में निपुर (निपुण) नगर में एक साथ प्राप्त हो गयी है। – जीवन जीने की कला पृ. २६६ – संपादक द्वारा संपादित
2. आ उपरांत 'नयनावतार' अने आचारांग उपरनुं गंध हस्ति विवरण तेओ श्रीनी अनुपलब्ध कृतिओ होवानुं जणाय छे. जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. २५६ शक्रस्तवन नामनुं संस्कृत स्तोत्र प्रसिद्ध छे. ते पण तेओनी कृति मनाय छे. एनो अंतिम श्लोक आ प्रमाणे छे. यथेन्द्रेण प्रसन्नेन, समादिष्टोऽर्हतां स्तवः । तथाऽयं सिद्धसेनन प्रपेदे सम्पदां पदम् ।।

नाम **'शंकरभट्ट'** हतुं.

हरिभद्रे पोते प्रकाण्ड विद्वान होवाथी एवी प्रतिज्ञा करी हती के 'जेनुं बोलेलुं न समजुं तेनो शिष्य थई जाउं' आ प्रतिज्ञानी साथे चालता ते चित्तोड नगरे आव्या हता. ते अवसरे चित्तोडमां जिनभट्टसूरि (कथावली प्रमाणे जिनदत्ताचार्य) नामना **जैन** आचार्य वसता हता, तेमना संघाडामां **'याकिनी'** नामनी महत्तरा साध्वी हती, एक दिवस **हरिभद्रे** याकिनीना मुखे **'चक्किदुगं हरिपणगं'** ईत्यादि गाथा सांभळी पण ते समज्यो नहि, तेणे साध्वीने ते गाथा समजाववा कह्युं तो तेणीए पोताना पूर्वोक्त गुरु पासे जवा कह्युं. **हरिभद्रे आचार्य जिनभट्ट** पासे जईने गाथानो अर्थ पूछ्यो पण आचार्ये कह्युं के आ सूत्रोना अर्थो **जैन**प्रव्रज्या लईने विधिपूर्वक भणे तेने ज कहेवामां आवे छे, आ उपरथी तेणे **जैन** दीक्षा धारण करी अने ते पछी आचार्ये याकिनी महत्तरानो **हरिभद्रने** परिचय आप्यो, ए उपरथी तेमणे कह्युं 'आ देवतास्वरूपीणी धर्ममाताए ज मने बोध आप्यो छे.'

उपरनी हकीकत प्रबंधमां छे, पण कथावलीमां ए प्रसंगमां एम लख्युं छे के **हरिभद्रे** 'चक्किदुगं' ए गाथानो अर्थ पूछ्यो त्यारे याकिनी तेने लईने जिनदत्तसूरि पासे गई अने सर्व हकीकत कही संभळावी ते उपरथी आचार्ये ते गाथानो सविस्तर अर्थ **हरिभद्रने** कह्यो, ते सांभळीने **हरिभद्रे** पण पोतानी प्रतिज्ञानी वात कही. तेना उत्तरमां आचार्ये कह्युं—भद्र! जो एम छे तो तुं ए महत्तरानो 'धर्मपुत्र थई जा' **हरिभद्रे** कह्युं—भगवन्! धर्म केवो होय? ए उपरथी आचार्ये धर्मनुं स्वरूप कह्युं, ते पछी **हरिभद्रे** पूछ्युं धर्मनुं फळ शुं? उत्तरमां आचार्ये कह्युं—सकामवृत्तिवाळाओने धर्मनुं फळ स्वर्गादि प्राप्ति छे ज्यारे निष्कामवृत्तिवाळाओने माटे धर्मनुं फळ 'भवविरह (संसारनो अंत) छे. आ सांभळीने **हरिभद्रे** कह्युं—भगवन्! मने 'भवविरह' ज प्रिय छे माटे तमे करो जेथी भवविरहनी प्राप्ति थाय, आचार्ये कह्युं जो एवी इच्छा होय तो सर्व पापनिवृत्तिमय श्रमणवृत्ति धारण कर, **हरिभद्रे** तेम करवा खुशी बतावी अने **जिनदत्तसूरिए** तेमने **जैन**दीक्षा आपी.

जैनशास्त्रोमां प्रवीण थतां गुरुए **हरिभद्रने** आचार्यपद आपीने पोताना पट्टधर शिष्य बनाव्या.

ए पछी **हरिभद्राचार्यना हंस परमहंस** नामना बे शिष्य के जेओ संसारपक्षमां तेमना भाणेज थता हता तेमनी दीक्षा, शास्त्राध्ययन, **बौद्ध**तर्क भणवा माटे **बौद्धो**ना नगरमां गमन, त्यां तेमनी परीक्षा, त्यांथी भागवुं, रस्तामां बौद्धोनी साथे लडतांने हंसनुं मरण, परमहंसनुं **सूरपाल** राजाने शरणे जवुं, बौद्धोनो तेनी साथ वाद, त्यांथी नाशीने चित्तोड जवुं अने बनेल वृत्तान्त कहेतां कहेतां **परमहंस**नुं पण मरण, **हरिभद्राचार्यनो** क्रोध अने बौद्धोनी साथे सूरपालनी सभामां वाद, शरत प्रमाणे **बौद्धो**नुं तप्ततैल कुंडमां पडवुं, **जिनभट्टसूरि** द्वारा **हरिभद्राचार्यना** क्रोधनी शान्ति, निराशा अने ग्रंथरचना करवानो निश्चय ईत्यादि वातोनुं सविस्तर वर्णन आप्युं छे.

आ विषयमां कथावलीमां जे वर्णन छे तेनो सार आ प्रमाणे छे—'**हरिभद्रसूरिने** सर्व शास्त्रकुशल **जिनभद्र** अने **वीरभद्र** नामना बे शिष्यो हता. ते समये चित्तोडमां बौद्धमतनुं प्राबल्य हतुं तेथी **हरिभद्रसूरिना** ज्ञान अने कलानी बौद्धो घणी ईर्ष्या करता हता अने एज सबबथी **हरिभद्रसूरिना** ते बंने शिष्योने बौद्धोए एकान्तमां मारी नाख्यां, कोई पण रीते **हरिभद्रसूरिने** ए वातनी खबर पडतां तेमणे घणा ज दिलगीर थईने अनशन करवानो निर्धार कर्यो, पण प्रवचनना प्रभावक जाणीने तेमने तेम करतां रोक्या, छेवटे **हरिभद्राचार्ये** ग्रंथराशिने ज पोतानी शिष्य संतति मानीने तेनी रचनामां तेओ विशेष उद्यमवान थया.'

आगळ प्रबंधकार लखे छे के **हरिभद्राचार्ये** गुरुना उपदेशथी क्रोधनो त्याग कर्यो, पण एमना मनमांथी शिष्योना विरहनुं दुःख मटतुं न हतुं, जेथी अंबादेवीए आवीने शांत्वन दीधुं अने कह्युं के **शिष्य संतति जोगुं तमारुं पुण्य नथी** माटे ग्रंथसमूह एज तमारी संतति रहेशे. **हरिभद्राचार्ये** तेनुं वचन स्वीकार्युं अने समरादित्य

चरित्रप्रमुख १४०० ग्रंथ प्रकरणोनी रचना करी अने शिष्योना विरहनी सूचना रूपे दरेक ग्रंथ 'विरह' शब्दथी अंकित कर्यो.

आ ग्रंथराशिने लखावीने तेनो फेलावो करवा माटे तेमणे 'कार्पासिक' नामक एक गृहस्थने धूर्ताख्यान द्वारा उपदेश दईने जैन बनाव्यो. कार्पासिकने हरिभद्रसूरिना कथन प्रमाणे व्यापार करतां लाभ थयो तेथी तेणे ते द्रव्यवडे हरिभद्रसूरिना ग्रंथो लखावीने सर्व स्थळे पहोंचाड्या अने एक चोराशी देवकुलिकायुक्त जैन मंदिर पण कराव्युं. आ संबंधमां कथावलीमां कंईक भिन्नता छे तेनो सार आ प्रमाणे छे.

हरिभद्रसूरिए दशवैकालिक, न्यायप्रवेशक आदि ग्रंथोनी याकिनीपुत्र नामांकित वृत्तिओ बनावी अने अनेकान्त जयपताका समरादित्य कथा आदि भवविरहांकित ग्रंथोनी रचना कीधी. आ ग्रंथनिर्माण अने लेखनकार्यमां आचार्यने **'लल्लिग'** नामना गृहस्थे घणी मदद करी. आ लल्लिग एमना शिष्य **जिनभद्र वीरभद्र**नो काको हतो अने गरीबाईथी कंटाळीने एणे पण आचार्य पासे दीक्षा लेवानो विचार करेल पण आचार्ये एने दीक्षा न आपी अने **बजारमां आवेल मालनी खरीदी करवानो एने संकेत कर्यो. लल्लिगे** ते प्रमाणे कर्युं अने तेथी तेने घणो लाभ थयो, तेथी ते **हरिभद्रसूरि**ना कार्यमां घणी सहायता करतो, **हरिभद्रसूरि**ना उपाश्रयमां एणे एक एवुं रत्न मूकी दीधुं हतुं के तेना प्रकाशथी रात्रे पण आचार्य ग्रंथनिर्माण करता अने भींत पाटि आदि उपर लखी नाखता; जे दिवसमां लहियाओ पासे पुस्तक रूपे लखावी लेवातुं.

हरिभद्रसूरि ज्यारे भोजन करवा बेसता त्यारे **लल्लिग** शंख वजडावतो जे सांभळीने याचको त्यां आवता अने **लल्लिग** तेमने मनईच्छित भोजन करावतो, भोजन कर्या पछी याचको **हरिभद्रसूरि**ने नमस्कार करता अने **हरिभद्रसूरि** तेमने **'भवविरह करवामां उद्यमवन्त थाओ'** आवो आशीर्वाद आपता. जे सांभळीने 'घणुं जीवो भवविरहसूरि' आम बोलता ते पोताना स्थानके जता; आ प्रमाणे **हरिभद्रसूरि 'भवविरहसूरि'** ए नामथी पण प्रसिद्ध थया.

एकवार बनारसथी व्यापारार्थे आवेल **वासुकी** श्रावक पासेथी **हरिभद्रसूरि**ने वर्गकेवलीनुं मूळ पुस्तक मळ्युं अने संघना अग्रेसरोना कहेवाथी ते उपर **हरिभद्राचार्ये** विवरण लख्युं, पण पाछळथी ते ज संघप्रधानोना कहेवाथी ते विवरण रद करी नाख्युं हतुं.

भवविरहसूरिए जेटलां शास्त्रो रच्यां छे तेटलां आजना पंडितो वांचवाने पण समर्थ नथी. भगवान वर्धमानस्वामीना तीर्थने विषे **भवविरहसूरि** ए छेल्ला श्रुतधर थया.

अंते प्रबंधकार **हरिभद्रसूरि**ए महानिशीथ सूत्रनो उद्धार कर्यो तेनुं सूचन करीने प्रबंधनी समाप्ति करे छे.

प्रबंधमां के कथावलीमां पण **हरिभद्रसूरि**ना सत्तासमय विषे कंई पण उल्लेख नथी तेम एमना गच्छविषे पण कशो निर्देश नथी.

कथावलीमां **हरिभद्रसूरि**ना गुरुनुं नाम **जिनदत्ताचार्य** लख्युं छे ज्यारे प्रस्तुत प्रबंधमां एमने **'जिनभट्ट' सूरि**ना शिष्य कह्या छे, आ बंने कथन अपेक्षाकृत सत्य छे; कारण के **हरिभद्रसूरि** पोते पण आवश्यक टीकाने अंते पोते आ बंने गुरुओनो नामनिर्देश करे छे, ते आवश्यक टीकानुं वाक्य नीचे प्रमाणे छे—

''समाप्ताचेयं शिष्यहिता नामावश्यकटीका। कृतिः सिताम्बराचार्य जिनभट्टनिगदानुसारिणो विद्याधर-कुलतिलकाचार्यजिनदत्तशिष्यस्य धर्मतो याकिनी महत्तरासूनोरल्पमतेराचार्यहरिभद्रस्य।।''

उपरना वाक्यथी स्पष्ट जणाय छे के **हरिभद्रसूरि जिनभट्टसूरि**नी आज्ञामां रहेता हता अने विद्याधर कुलना आचार्य **जिनदत्त**ना पोते शिष्य हता. समरादित्यकथाना अंते पण हरिभद्राचार्ये **जिनदत्ताचार्य**ने ज पोताना गुरु जणाव्या छे, आथी एम समजाय छे के एमना गुरुनुं नाम तो **जिनदत्ताचार्य** ज हतुं अने **जिनभट्ट** एमना विद्यागुरु

अथवा गच्छनायक गुरु होवा जोईए.

उपर्युक्त आवश्यक टीकाना उद्धरण उपरथी ए वात पण स्पष्ट थई जाय छे के **हरिभद्रसूरि** पोते विद्याधर कुलना हता केमके एमना गुरु **जिनदत्ताचार्य** विद्याधर कुलना हता एम तेज टीकाना पाठमां लखेलुं छे.

प्रबंधकारे **हरिभद्रसूरि**ना शिष्योनां नाम **हंस** अने **परमहंस** लख्यां छे, बीजा पण अर्वाचीन प्रबंधोमां एज नामो जणाव्यां छे, पण कथावलीमां एमना शिष्यो **'जिनभद्र, वीरभद्र'** नामना हता एम लख्युं छे अमारा विचार प्रमाणे कथावलीनुं प्राचीन लखाण ज प्रामाणिक लागे छे, कारण के **हंस** अने **परमहंस** जेवां नामो जैन श्रमणोमां प्रचलित न होवाथी ए नामो या तो कल्पित होवा जोईए अने नहि तो उपनाम होई शके, पण आवा मूल नामो होवां संभवतां नथी.

ए सिवाय बीजी पण कथावलीमां लखेली हकीकत वास्तविक जणाय छे, **प्रबंधमां केटलाक बनावो अतिशयोक्तिपूर्ण अने कल्पित जेवा लागे छे.**

हरिभद्रसूरिना संबंधमां अष्टकटीकामां जणाव्या प्रमाणे एक एवी किंवदन्ती छे के तेओ भोजन करती वेळा शंखवादनपूर्वक याचकोने एकत्र करी भोजन अपावता अने पछी पोते भोजन करता अने आथी केटलाक विद्वानो **हरिभद्रसूरि**ने चैत्यवासी होवानुं पण अनुमान करी बेसे छे पण वस्तुतः आम नथी. भद्रेश्वरनी कथावलीमां आ प्रघोषनो खुलासो मळी रहे छे अने ते आ के **हरिभद्रसूरि** पोते ए कार्य नहोता करता पण तेमनो भक्त **लल्लिग** श्रावक शंखवादनपूर्वक याचकोने बोलावी भोजन करावतो हतो. कथावलीकारना कहेवा मुजब खरे ज **हरिभद्रसूरि छेल्ला श्रुतधर** हता, एमणे एटला बधा ग्रंथोनी रचना करी हती के आजे पण वीसियोनी संख्यामां तेमना विद्वत्तापूर्ण ग्रंथो जैनपुस्तक भंडारोमां जळवाई रह्या छे; एमना विद्यमान अने ज्ञात ग्रंथोनी नामावली अत्रे आपीने विस्तार करवो उचित नथी, जेमने ए ग्रंथोनी नामावली जोवी होय तेमणे अमारी लखेली **धर्मसंग्रहणिनी संस्कृत प्रस्तावना जोवी.**

हरिभद्रसूरिना सत्तासमय विषे केटलाक वखतथी मतभेद चाले छे.

पंचसए पणसीए विक्कमकाला उ झत्ति अत्थमिओ ।
हरिभद्दसूरिसूरो, भवियाणं दिसउ कल्लाणं ।।

आ प्राचीन परंपरागत गाथामां विक्रम संवत् ५८५मां **हरिभद्रसूरि**नो स्वर्गवास बताव्यो छे. लगभग बधी पट्टावलिओमां पण **हरिभद्रसूरि**नो समय एज गाथामां जणाव्या प्रमाणे जणाव्यो छे. पण **हरिभद्रसूरि** एटला प्राचीन थई शके के केम? ए विचारणीय छे. शक संवत् ६९९ (विक्रम संवत् ८३४) मां बनेल दाक्षिण्यचिह्ननी कुवलयमाला कथामां आ **हरिभद्रसूरि**नो नामोल्लेख होवाथी आ समयनी पूर्वे **हरिभद्रसूरि**नुं अस्तित्व हतुं ए तो निर्विवाद छे, पण एमने पूर्वकालमां क्यांसुधी लई जवा ए विचारवानुं छे.

आज पहेलां हुं **हरिभद्रसूरि**ने विक्रमनी छट्ठी सदीमां मूकनाराओमांनो एक हतो, पण हवे मने लागे छे के ए आचार्यने आ गाथोक्त समयथी लगभग बसो वर्ष पछीना समयमां मूकवा ए वधारे योग्य लागे छे, एनां कारणो आ प्रमाणे छे—'हरिभद्रसूरिए पोताना ग्रंथोमां **धर्मकीर्ति** अने **कुमारिल**ना नामोनो उल्लेख कर्यो छे अने विद्वानोए ए वात लगभग साबित करी आपी छे, के उपर्युक्त बंने बौद्ध अने मीमांसक आचार्यो विक्रमना आठमा सैकामां पूर्वापरभावी व्यक्तिओ छे, हवे जो **हरिभद्रसूरि**ने एमनाथी पूर्वकालिन मानवामां आवे तो एमनां नामो **हरिभद्रसूरि**ना ग्रंथोमां संभवे नहि.

बीजुं कारण ए पण छे के विशेषावश्यक भाष्यादि कर्ता प्रसिद्ध युगप्रधान **जिनभद्रगणि** क्षमाश्रमणना ग्रंथोनां अवतरणो **हरिभद्रसूरि**ए पोताना ग्रंथोमां आप्या छे एटलुं ज नहि पण **जिनभद्रीय ध्यानशतकादि** ग्रंथो

उपर **हरिभद्रसूरि**ए टीका पण लखी छे, आथी **हरिभद्रसूरि** करतां **जिनभद्रगणि** प्राचीन छे ए वात स्वयंसिद्ध छे अने युगप्रधान पट्टावलियोना लेख प्रमाणे **जिनभद्रगणि**नो युगप्रधानत्व समय वीर संवत् १०५५ थी ११९५ (विक्रम संवत् ५८५ थी ६४५) सुधीमां आवे छे अने ज्यारे **जिनभद्रसूरि**नो समय विक्रमनी छट्ठी सदीना उत्तरार्धमां अने सातमीना पूर्वार्धमां आवे छे, तो एमना ग्रंथोनी टीका करनार **हरिभद्रसूरि**ने एथी पण पछीना समयमां मूकवा ए ज युक्तियुक्त गणाय. **रत्नसंचय प्रकरण**मां एक बीजी परंपरागत गाथा आपी छे जेमां **हरिभद्रसूरि**ने वीरसंवत् १२५५ (विक्रम संवत् ७८५) मां विद्यमान जणाव्या छे. आपणे जो प्रथमनी विचारसार प्रकरणवाळी गाथाने बाजु पर राखीने आ गाथाने प्रमाण मानी लईए तो बधो विरोध मटी जाय छे.[1] आ गणना प्रमाणे **धर्मकीर्ति, कुमारिल** अने **जिनभद्रगणि**थी **हरिभद्रसूरि** अर्वाचीन ठरे छे अने कुवलयमालाना कर्ता दाक्षिण्यचिह्नथी प्राचीन, उपर जे रत्नसंचयनी गाथानी वात करी छे ते गाथा नीचे प्रमाणे छे.

पणपण्ण बारससए, हरिभद्दोसूरि आसिपुव्वकई ।
तेरसय वीस अहिए, वरिसेहिं बप्पभट्टिपहू ।।६५।। (रत्नसंचय)

अहीं ए शंका थई शके, जो आपणे **हरिभद्रसूरि**ने आ गाथाने आधारे विक्रमना आठमा सैकामां मूकीए तो पछी ''पंचसए पणसीए'' ए गाथानी संगति केवी रीते बेसाडवी? जो हरिभद्र छट्ठा सैकामां थया ज नथी तो पछी ए गाथामां जणावेली हकीकत केवल निरर्थक ज खरी के नहि? अने जो गाथामां जणावेली हकीकत निराधार ज होय तो आम होवानुं कंई कारण पण होई शके के नहि?

उपर्युक्त शंकानुं समाधान ए छे के उपर्युक्त गाथानो विषय **हरिभद्रसूरि** नहि पण **हारिल** युगप्रधान छे. ए युगप्रधान ज पट्टावलीमां जणाव्या प्रमाणे वीर संवत् १०५५ (विक्रम संवत् ५८५) मां स्वर्गवासी थया हता अने एमनी पाटे **जिनभद्रगणि** बेठा हता. **हरिभद्रसूरि**ने पण **जिनभद्र** नामक शिष्य हता, आम शिष्योना अने एमना पोताना नामोना सादृश्यथी पाछळना लेखको एमनी भिन्नता भूली गया अने **हारिल**ने ज **हरिभद्रसूरि** मानी तेमनो स्वर्गवास ५८५मां लखी दीधो छे. आम उक्त गाथोक्त ५८५नो समय **हरिभद्रसूरि**नो नहि पण **हारिल**नो मानी लेवानो छे. गाथोक्त अर्थनी संगति पण आवी रीते थई जशे.

१०. श्री मल्लवादीसूरि

मल्लवादीनुं गृहस्थावस्थानुं नाम **'मल्ल'** हतुं, एमनी मातानुं नाम **दुर्लभदेवी** अने मोटा बे भाईओनां नाम **'जिनयश'** अने **'यक्ष'** हतां, एओ संभव प्रमाणे **वल्लभीपुर**ना रहेवासी हता.

मल्लना मामा **'जिनानन्द'** नामना जैन आचार्य हता, तेमने भरूचमां **'बुद्धानन्द'** नामक बौद्ध आचार्ये वादमां अपमानित कर्या तेथी त्यांथी नीकळीने तेओ वल्लभी तरफ गया हता ज्यां तेमणे पोतानी बहेन **दुर्लभदेवी**ने **जिनयश** आदि त्रणे पुत्रोनी साथे जैनधर्मनी दीक्षा आपी हती.

जिनानन्दे पोताना आ त्रणे शिष्योने भणावीने विद्वान कर्या, तेमां पण **मल्ल** तो सर्वथी आगळ निकळे एवो बुद्धिशाळी निवड्यो.

1. भर्तुहरी (ई. ५६०-६५०) धर्मकीर्ति (ई. ६३५-६५०) कुमारिल (ई. ६००-६६०) और धर्मोत्तर (७००-७८०) प्रभृति विद्वानों के और उनके ग्रंथों के उल्लेख आ. हरिभद्रने अपने ग्रंथों में किये है।....अतएव हरिभद्रसूरि संभवतः (ई. ७२५-८२५) के बीच रहे हैं। प्र. को. ऐ. वि. पृ. ५३ देश के गणमान्य जैन विद्वानोंने समुचित शोध के पश्चात् इनका सत्ताकाल विक्रम संवत् ७५७ से ८२७ के बीच निर्णीत किया है। जैन धर्म का ईतिहास भा. ३ पृ. ५२६ विशेष माटे जुओ 'हरिभद्रसूरि का समय निर्णय जैन साहित्य संशोधक प्रथम अंक.'

एकवार **जिनानन्द** तीर्थयात्रामां गया हता ते वखते निषेध कर्या छतां **मल्ले** पूर्वगत श्रुतमय नयचक्र ग्रंथनुं पुस्तक छोडीने (उघाडीने) वांच्युं, तेमांनी पहेली कारिका वांचीने ते विचारे छे तेवामां तो ते पुस्तक तेना हाथमांथी श्रुतदेवताए अदृश्यपणे खेंची लीधुं, **मल्ल** आथी घणुं रोयो पण कंई वळ्युं नहि तेथी ते गिरिखण्डल नामना पर्वतनी गुफामां जईने **श्रुतदेवीनी आराधनामां बेठो.** बे बे उपवास अने पारणामां लूखा वालनुं भोजन करीने श्रुतदेवीनी आराधना शरू कीधी. चार मास सुधी आ प्रमाणे कर्या पछी तेने पारणामां घृतादि स्निग्ध पदार्थ आपवा मांड्युं, आखरे छ मास पर्यन्त परीक्षा करीने श्रुतदेवताए तेने कह्युं के 'मूळ पुस्तक तो नहि मळे, पण तेनी जे एक कारिका तें वांची छे तेनो विस्तार करीने तुं आ नयचक्रना साररूपे नवुं नयचक्र बनावी शकीश' ए पछी **मल्ले** आराधना समाप्त करी अने दशहजार श्लोकप्रमाण नवुं नयचक्र बनावीने तेनो प्रचार कर्यो. **जिनानन्दसूरि** कालान्तरे वल्लभीमां आव्या अने **मल्ल**नी विशेष योग्यता जोई तेमने पोतानी पाटे आचार्यपदे स्थाप्या. **अल्लराजा**नी सभाना वादी **श्रीनन्दक**ना कहेवाथी **मल्ल**ना मोटा भाई **जिनयशे** प्रमाण ग्रंथनी रचना करी अने विश्रान्तविद्याधर नामना व्याकरणशास्त्र उपर न्यास बनाव्यो. ते ज प्रमाणे **जिनयश**ना नाना भाई **यक्ष मुनि**ए अष्टांगनिमित्तविषयक **''याक्षी संहिता''** नामनो ग्रंथ बनाव्यो.

अन्य दिवसे **मल्लमुनि**ए स्थविरोना मुखे पोताना गुरु **जिनानन्द**नो भरूचमां बौद्धो द्वारा तिरस्कार थयो ते संबंधी वात सांभळी, आथी तेमणे वल्लभीथी भरूच तरफ विहार कर्यो अने त्यां जईने ते ज **बौद्धानन्द**नी साथे तेमणे वाद कर्यो. अने तेने हराव्यो, ते पछी तेमणे पोताना गुरु आचार्य **जिनानन्द**ने मानपूर्वक भरूच बोलाव्या. जैनसंघ अने गुरुगच्छ **मल्लसूरि**ना आ विजयथी घणा आनन्दित थया अने ते ज वखतथी **मल्लसूरि** 'वादी' तरीके प्रसिद्ध थया.

आर्चायश्री मल्लवादीए नयचक्र उपरांत २४००० श्लोकप्रमाण **'पद्मचरित'** नामक रामायणनी रचना करी[1] अने छेवटे पोताना योग्य शिष्यने गच्छनायक बनावीने पोते स्वर्गवासी थया.

कहे छे के मल्लवादीथी हारेलो बुद्धानन्द मरीने कोई व्यन्तर देव थयो अने पूर्वना द्वेषथी **मल्लवादी**कृत उक्त बंने ग्रंथो तेणे अधिष्ठित करी लीधा छे, जेथी ते पुस्तको कोईने वांचवा देतो नथी; आनो अर्थ ए जणाय छे के **मल्लवादी**ना ते ग्रंथो बौद्धोने हाथे नष्ट थई गया छे.

[2]कोई-कोई प्रबंधमां **मल्लवादि**नी माता दुर्लभदेवीने वल्लभीना राजा **शिलादित्य**नी बहेन लखीने ए **महावादी**ने **शिलादित्य**ना भाणेज ठराव्या छे, तेमज **बौद्धो**नी साथेनो **मल्लवादी**नो वाद पण **शिलादित्य**नी सभामां थयानुं जणाव्युं छे, पण प्रस्तुत प्रबंधमां आ बधी घटना भरूचमां थयानुं वर्णन छे. **मल्लवादी** वल्लभीना हता एटलुं ज आ प्रबंधथी जणाय छे. **मल्लवादी**ए तेमज एमना भाईओए करेल ग्रंथोनुं आजे क्यांय पण अस्तित्व जणातुं नथी, पण जो शोधखोळ करतां एमांथी कोई पण एक बे ग्रंथो मळी जाय तो जैन साहित्यनो अपूर्व उत्कर्ष वधारनारा थई पडे. मल्लवादीकृत नयचक्रनी टीका तो आजे पण जैन भंडारोमां मळे छे, पण मूळ ग्रंथ क्यांय मळतो नथी. ए सिवाय एक लघुधर्मोत्तर टिप्पण नामक न्यायग्रंथ पण मल्लवादी कृत जैन भंडारोमां आजे मळे छे, पण मारा विचार प्रमाणे आ मल्लवादी बीजा होवा जोईए. अल्लराजानी सभाना वादी **श्रीनन्दक** गुरुना कहेवाथी **मल्लवादी**ना जयेष्ठ भाई **जिनयशे** प्रमाण ग्रंथ बनाव्यानो उल्लेख प्रबंधकारे कर्यो छे, पण आ **'अल्लभूप'** अने तेनी सभाना वादी **'श्रीनन्दकगुरु'** कोण हता ते जणाववामां आव्युं नथी. ए ज

1. जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. ३७६-७मां त्रिपुटी म. आ बे उपरांत सम्मतितर्क उपर तर्कपूर्ण टीका रचवानुं जणावे छे. टीका मळती नथी. पण तेना अवतरणो अनेकांत जयपताका वगेरेमां मळे छे.
2. जुओ प्रबंधकोश ७मो प्रबंध.

चरित्रना **अभयदेव** प्रबंध उपरथी जणाय छे के **वर्धमानसूरि**ना समयमां कूर्चपूर (कुचेरा-मारवाड) मां **अल्लभूपाल पुत्र भुवनपाल** राजा राज्य करतो हतो, आ उल्लेखथी जणाय छे के **वर्धमानसूरिकालीन** भुवनपालनो पिता **अल्लराजा** विक्रमनी दसमी सदीना अंतमां विद्यमान होवो जोईए, वळी ए ज प्रभावक चरित्रनी प्रशस्तिमां न्यायमहार्णवकार **अभयदेवसूरि**ना गुरु **प्रद्युम्नसूरि**ए अल्लुराजानी सभामां दिगम्बराचार्यने जीत्यानो उल्लेख छे; आ अल्लू अने अल्लभूप एक ज व्यक्तिनां नामो छे अने आ रीते **प्रद्युम्नसूरि**ना समकालीन तरीके पण अल्लभूपनुं अस्तित्व विक्रमनी दशमी सदीमां ज सिद्ध थाय छे पण **मल्लवादी**ना भाई जिनयशने आ अल्लभूपनी सभाना वादी श्रीनन्दक ग्रंथ रचवानी प्रेरणा केवी रीते करी शके ते समजातुं नथी. प्रबंधमां मल्लवादीनो सत्तासमय जणाव्यो नथी छतां विजयसिंहसूरिना प्रबंधमां मल्लवादीना बौद्धविजय विषे एक
आर्या मळी आवे छे जेमां लख्युं छे के 'मल्लवादीए वीर संवत् ८८४ (विक्रम संवत् ५१४) मां बौद्धोने जीत्या' हवे जो **मल्लवादी**ने आ रीते विक्रमना पांचमा सैकामां थया मानी लईए तो एमना भाई **जिनयश अल्लराजा**नी सभाना वादी **श्रीनन्दक**ना समकालीन थई शके नहि, ए खुल्लुं छे.

आ परस्पर विरोधना प्रसंगो जोतां एम मानवाने कारणे मळे छे के जेमनो आचार्य हरिभद्रसूरिए[1] पोताना ग्रंथोमां नामोल्लेख कर्यो छे, जेमणे भरूचमां बौद्धोनो पराजय कर्यो अने जेमणे नयचक्र ग्रंथनी रचना करी ते **मल्लवादी** जुदा अने **जिनयश**ना भाई लघुधर्मोत्तरना ग्रंथ उपर टिप्पण लखनार **मल्लवादी** जुदा हता. बौद्ध आचार्य लघुधर्मोत्तरनो समय विक्रम संवत् ९०४नी आसपास मानवामां आवे छे तो एना ग्रंथ उपर टिप्पण लखनार **मल्लवादी** अवश्य दशमी सदीना अंतमां ज थया संभवे अने आ प्रमाणे **मल्लवादी**ना भाई **जिनयश** पण **अल्लराजा**ना समसामयिक सिद्ध थई शके छे, त्यारे हवे प्रश्न ए थशे के प्रभावक चरित्रकारे जे **मल्लवादी**नुं प्रबंधमां वर्णन कर्युं छे ते **मल्लवादी** प्रथम समजवा के द्वितीय? आनो उत्तर ए छे के, प्रबंधमां आपेल वर्णन घणुं खरुं तो प्रथम मल्लवादीने ज लागु पडे छे, कारण के ते समयमां ज गुजरात काठियावाडमां बौद्धोनुं विशेष प्राबल्य हतुं, दशमी सदीमां बौद्धो आ तरफथी घणे भागे पूर्व तरफ चाल्या गया हता तेथी बौद्धोनी जीत अने हारवाळी हकीकत **जिनानन्द**ना शिष्य प्रथम **मल्ल**नी साथे ज बंध बेसे छे ज्यारे त्रण भाईओवाळी हकीकतनो बीजा **मल्लवादी**नी साथे संबद्ध होय एम जणाय छे. गमे तेम हो **पण मल्लवादी बे थया हता. एक विक्रमनी [2]पांचमी सदीमां अने बीजा दसमी सदीमां. आ बंने मल्लवादीओनी भेळसेळ थयेली हकीकत आ प्रबंधमां वर्णवायेली छे.**

११. श्री बप्पभट्टिसूरि

आचार्य **बप्पभट्टि**नुं गृहस्थावस्थानुं नाम **'सूरपाल'** हतुं, एमना पितानुं नाम **'बप्प'** अने मातानुं नाम **'भट्टि'** हतुं, एमना पूर्वजो पंचाल देशना रहेवासी होवाथी **पांचाल** कहेवाता हता अने एमनुं निवासस्थान डुवातिर्थ (घानेरानी पासेनुं **डुवा**) गाम हतुं.

सूरपाल पोताना पिताथी रीसाईने घरथी नीकळी पड्यो हतो अने ते चालतो चालतो मोढेरे गयो हतो,

1. आचार्य हरिभद्र ने अपने ग्रंथों में अनेकांत जयपताका ग्रंथ में इनका वादिमुख्य करके उल्लेख किया है।
– जैन धर्म पृ. ३२६ लेखक कैलाशचंद्र शास्त्री.

2. श्री जीवेन्द्र शाह पण एमना लेख वादीन्द्र मल्लवादी क्षमाश्रमणनो समय (निर्ग्रंथ १५८)मां लखे छे के आम समग्र दृष्टिए जोतां मल्लवादी....ई.स. छट्ठी सदीना उत्तरार्धमां ठरे छे. आ ज लेखमां प्रारंभमां श्री शाह जणावे छे के मल्लवादीए द्वादशार नयचक्र, सन्मति प्रकरण अने पद्मचरित्र नामक ग्रंथोनी रचना करी हती. तेवा उल्लेखो प्राप्त थाय छे. पृ. १

आ वखते तेनी अवस्था केवल छ वर्ष जेटली हती. ए समयमां गुजरातमां पाटलपुर (शंखेश्वरनी पासे आवेल आज कालनुं पाडला) नामनुं एक प्रसिद्ध स्थान हतुं, ते पाटलपुरमां मोढेरक गच्छना **सिद्धसेनसूरि** नामना आचार्य वसता हता. **सूरपाल** जे दिवसे मोढेरामां गयो हतो तेना पहेला ज दिवसे **आचार्य सिद्धसेन** पण त्यां **भगवान् महावीरनी तीर्थयात्रा निमित्ते** आवेल हता. **आचार्य सिद्धसेन** जिनमंदिरमां गया ते ज वखते **सूरपाल** पण त्यां गयो. आचार्ये तेने जोईने परिचय पूछतां तेणे पोतानुं सर्व वृत्तान्त कह्युं. **आचार्य सिद्धसेने** बालकने तेनी इच्छा प्रमाणे पोतानी पासे राख्यो अने विद्याभ्यास शरू कराव्यो. **सूरपाल**नी बुद्धि अने स्मरणशक्ति गजबनी जणाई, ते एक ज वार सांभळीने श्लोक याद राखी लेतो अने **एक दिवसमां ते एक हजार जेटला श्लोको मुखपाठ करी लेतो. सिद्धसेनसूरि**ने आ बालकने कोई पण रीते शिष्य बनाववानी इच्छा थई अने तेओ विहार करीने तेनां माता पिता पासे डुवा गामे गया अने आ विलक्षण बुद्धिना धणी बालकने शिष्य तरीके आपवा तेना मातापितानी पासे मांगणी करी. **सूरपाल** तेनां मातापितानो एक ज पुत्र होवाथी प्रथम तो कंईक आनाकानी थई पण छेवटे आचार्यनुं वचन पाछुं न ठेलाणुं, तेओए कह्युं के 'जो अमारा बंनेना नामोथी बनेलुं आनुं नाम आपवामां आवे तो अमो एने शिष्य तरीके आपीए. आचार्ये तेमनी शरत कबूल करी अने मोढेरामां जईने [1]विक्रम संवत् ८०७मां **सूरपाल**ने दीक्षा आपीने **'भद्रकीर्ति'** एवुं नाम पाड्युं, पण शरत प्रमाणे तेनुं बोलातुं नाम **'बप्पभट्टि'** राख्युं. **बप्पभट्टिमुनि** एकवार स्थंडिल भूमि गया तेवामां वृष्टि थवा लागी तेथी एक देवळमां जईने उभा. तेवामां एक सुन्दर रूप अने भव्य आकृतिवाळो पुरुष त्यां आव्यो. देवळमां श्याम पत्थर उपर कोतरेल एक प्रशस्ति हती ते आगन्तुक पुरुषे वांची अने **बप्पभट्टि**ने तेनो अर्थ करवा कह्युं **बप्पभट्टि मुनि**ए स्पष्ट रीते तेनो अर्थ कह्यो. जे सांभळीने ते प्रसन्न थयो. वर्षा बंध थतां **बप्पभट्टि** अने ते पुरुष बंने उपाश्रये गया. **आचार्य सिद्धसेने** ते पुरुषनुं नाम पूछतां तेणे खडीना टुकडाथी पोतानुं नाम **'आम'** आ प्रमाणे लख्युं. आगन्तुक युवकना आ विवेकथी आचार्य घणा ज प्रसन्न थया अने विचार करवा लाग्या के आने छ महीनानो हतो त्यारे अमोए रामसेनमां (डीसा केम्पथी वायव्य कोणमां आशरे १० कोश उपर आवेल एक गाम) जोयेल छे. पीलुडीना वृक्षनी शाखामां आने वस्त्रनी झोलीमां सुवाड्यो हतो अने एनी माता पीलु वीणती हती. पूछपरछ करतां अमारा जाणवामां आव्युं हतुं के 'ते कनोजना मौर्यवंशी राजा **यशोवर्म**नी राणी छे अने बीजी राणीनी खटपटना परिणामे राजाए एने काढी मूकवाथी आम वन्यवृत्तिथी जीवन गुजारे छे.' आ उपरथी अमोए तेणीने आश्वासन आपीने **रामसेन**मां चैत्यना अधिकारमां रखावी हती अने ते पछी अमो आ देशमां आवी गया हता, पण पाछळथी त्यांना लोकोना कहेवाथी जणायुं हतुं के ते खटपटी राणी मरी जतां राजा **यशोवर्मे** काढी मूकेल राणीने पाछी पोताने त्यां बोलावी लीधी छे. रूप, आकृति अने अवस्था जोतां नवाई नथी के ते ज राणीनो ते बालपुत्र आ पुरुष होय. आम विचारीने आचार्ये कह्युं--'वत्स! आ तारा मित्रनी साथे निश्चिन्त थईने तुं अहीयां रहे अने विद्या-कलानो अभ्यास कर' आ प्रमाणे आचार्ये **आम**ने पोताने त्यां राख्यो अने **बप्पभट्टि**नी साथे व्याकरण, न्याय, साहित्य आदिनो अभ्यास करावीने विद्वान बनाव्यो. कालान्तरे **यशोवर्म**नी मांदगी थतां तेना प्रधानो **आमकुमार**ने लेवा आव्या. आम, आचार्य अने पोताना मित्र **बप्पभट्टिमुनि**नी रजा लईने कनोज गयो, जतां ज **यशोवर्म** राजाए **आम**नो राज्याभिषेक करावीने पोतानो उत्तराधिकारी बनाव्यो, ते पछी **यशोवर्म** परलोकवासी थयो अने आमे तेनुं **और्ध्वदेहिक** कृत्यो करावीने राज्य उपर पोतानुं शासन चालु कर्युं.

राज्याधिकार पामीने तरत ज आमे पोताना प्रधानोने गुजरात **बप्पभट्टि**ने तेडवा मोकल्या. आचार्य

1. श्री बप्पभट्टसूरिजीना जीवननी घटनाओ अंगे भिन्नभिन्न ग्रंथोमां आवतां संवत् फेर माटे जुओ मधुसुधन ढांकीनो लेख 'वादी कवी बप्पभट्टसूरि' (निर्ग्रंथ १ पृ. २६)

सिद्धसेने पण राजानो अतिशय आग्रह जोईने **बप्पभट्टिमुनिने** कनोज जवानी आज्ञा आपी अने निरन्तर प्रयाण करता **बप्पभट्टि मुनि** कनोज पहोंच्या, राजाए **अपूर्व महोत्सव पूर्वक हाथीनी सवारीए बप्पभट्टिनो नगरप्रवेश कराव्यो** अने राजसभामां जतां राजाए तेमने बेसवा माटे सिंहासन आपवा मांड्युं; पण **बप्पभट्टिमुनिए** आम कहीने ते उपर बेसवानो निषेध कर्यो के आचार्यपद प्राप्त थया सिवाय अमो ए सिंहासन उपर बेसी नहि शकीए. आथी राजाए तेमना माटे बीजुं योग्य आसन मंगाव्युं पण राजाने आथी संतोष थयो नहि.

केटलाक समय पछी आमे पोताना प्रधानोनी साथे **बप्पभट्टिमुनिने** पाछो गुजरात तरफ विहार कराव्यो. सर्वे मोढेरा पहोंच्या अने राजा तरफथी प्रधानोए आग्रहपूर्वक **बप्पभट्टिमुनिने** आचार्यपद माटे विनंति करी, **आाचार्य सिद्धसेनसूरिए** पण **बप्पभट्टिमुनिनी** योग्यता अने राजाना आग्रहने ध्यानमां लई विक्रम संवत् ८११ना चैत्र वदि ८ना दिवसे बप्पभट्टिमुनिने आचार्यपद आप्युं अने ते पछी पोतानी इच्छा न छतां **आम**ना प्रधानोना आग्रहथी **बप्पभट्टसूरिने** कनोज तरफ विहार कराव्यो. निरंतर प्रयाण करतां आचार्य कनोज पहोंच्या अने **राजाए हस्तीनी सवारीए तेमनो प्रवेश कराव्यो** अने पोताना महेलमां लई जई **गादी बिछावेला सिंहासन** उपर तेमने विराजमान कर्यां, **राजा तरफना आ अति सत्कारथी कनोजनो जैन संघ घणो हर्षित थयो.**

आचार्य **बप्पभट्टिए** आमने धर्मोपदेश प्रसंगे **जैन चैत्य** करावावामां घणो लाभ बताव्यो जेथी राजाए कनोजमां १०१ हाथनी उंचाईवाळुं **जैन चैत्य** बनावडावीने तेमां १८ भार सुवर्णनी प्रतिमानी **बप्पभट्टसूरि**ना हाथे प्रतिष्ठा करावी[1] ए सिवाय आमे ग्वालियरमां २३ हाथ उंचुं महावीर जिननुं मंदिर करावी तेमां लेप्यमय जिनप्रतिमानी स्थापना करी. कहे छे के आ **चैत्य**ना एक मंडपमां एक क्रोड सुवर्ण टकानो खर्च थयो हतो.[2]

एक वार ब्राह्मणोनी वाते लागीने **आमराजाए बप्पभट्टिने** बेसवा माटे सिंहासनने स्थाने सामान्य आसन मंडावीने कंईक मनोभेद बताव्यो. पण पाछळथी तेणे पूर्वनी माफक ज आदर बताव्यो.

एकवार **आचार्य बप्पभट्टि**नी कवितामां कंईक श्रृंगारनुं पोषण जोई राजाए तेमना उपरथी मन खेंची लीधुं, आचार्ये राजानो मनोभेद जाण्यो एटले बीजे ज दिवसे त्यांथी छानी रीते चाली नीकळ्या, **आमे** बीजे दिवसे आचार्यनी बाबतमां पूछ्युं, पण आचार्य संबंधी कोईए कंई पण निश्चित समाचार आप्या नहि, ते पछी नगरद्वारना कमाडो उपर **आचार्य बप्पभट्टिए** लखेल एक अन्योक्तिक काव्य वांच्युं, जे उपरथी तेणे जाण्युं के आचार्य बीजे क्यांय चाल्या गया छे.

बप्पभट्टिसूरिए पण कनोजथी सीधो गौडदेश (मध्य बंगाल) तरफ विहार कर्यो अने केटलाक दिवसे ते देशनी राजधानी **लक्षणावती** आवी पहोंच्या.

अत्रे धर्मराजानो सभापंडित **वाक्पतिराज** नामनो विद्वान रहेतो हतो, ते **बप्पभट्टिसूरिने** मळ्यो. अने ते पछी राजा पासे जई तेमनो परिचय आप्यो. धर्मराजा, **आचार्य बप्पभट्टि**ना नामथी परिचित हतो अने आवा विद्वाननो परिचय करवा माटे ते आतुर पण हतो. छतां एक कारणथी ते आचार्य बप्पभट्टिने विषे सशंक हतो अने ते कारण एटलुं ज के आचार्य बप्पभट्टि **आमराजाना** मानीता मित्र हता अने पोताने अने आमने आपसमां विरोध चालतो हतो. आथी जो आज पोते आचार्य बप्पभट्टिने राखे अने पाछळथी आमना बोलाव्याथी ए

1. आ प्रतिष्ठा विक्रम संवत् ८२६ लगभगमां थई एम त्रिपुटी म. लखे छे. जै. प. ई. भा. १ पृ. ५२६ विक्रम संवत् ८२६मां मथुरामां पण प्रतिष्ठा कर्यानुं 'विविध तीर्थ कल्प'मां जणाव्युं छे.
2. तपगच्छ श्रमण वंश वृक्ष पृ. ५१मां लख्युं छे के 'बप्पभट्टसूरि ए मथुरा, मोढेरा, अणहिल्लपुर, गोपगिरि, सत्तारकपुर आदिमां प्रतिष्ठा करावी हती. विविध तीर्थकल्प (पृ. १६) ना मथुरापुरी कल्पमां जणाव्या मुजब मथुरामां स्थूल्भने बप्पभट्टी सूरिना वचनथी आमराजाए समराव्यो हतो.

चाल्या जाय तो पोतानुं अपमान थाय, आ कारणथी तेणे **वाक्पतिराजने** कह्युं के तमो **आचार्य बप्पभट्टिने** पूछी ल्यो के 'जो आम राजा पोते अत्रे आवीने तमने विनंति करे तो ज तमारे जवुं अन्यथा नहि' आ शरत थई शके तेम छे? **वाक्पतिराजे** राजानो विचार **बप्पभट्टिसूरिने** जणाव्यो. ए उपरथी तेमणे कबूल कर्युं के 'ज्यां सुधी आम राजा पोते अत्रे आवीने अमने नहीं बोलावे त्यां सुधी अमे कनोज नहि जईए.'

आमना पासेथी **आचार्य बप्पभट्टि**ने गयाने केटलोक समय निकळी गयो छतां आमने तेओ क्यां गया छे ते जाणवामां न आव्युं. पण केटलाक समय पछी तेने **आचार्य बप्पभट्टि**ना खरा समाचार मळ्या, ते उपरथी तेणे पोताना प्रधानो आचार्यने बोलावी लावववा मोकल्या; पण आचार्ये तेमने साफ कही दीधुं के ज्यां सुधी **आम राजा** पोते अत्रे नहि आवे त्यां सुधी अमो प्रतिज्ञाबद्ध होवाथी आवी शकीए नहि.

आ हकीकत सांभळीने **आम** राजा पोताना प्रधानोनी साथे गुप्त रूपमां लक्षणावती गयो अने **धर्मराजा**नी सभामां आचार्य पासे जई अनेक प्रकारे ज्ञानगोष्ठी करी. ए विषे **धर्मराजा**ने आचार्ये एटले सुधी श्लेषोक्तिमां कही दीधुं के 'आ तारो शत्रु बीजो राजा छे.' पण सरल प्रकृतिना धर्मने आमां कंई खबर पडी नहि. ज्यारे **आम** त्यांथी चाल्यो गयो. अने **आचार्ये धर्म**ने विहार माटे पूछ्युं त्यारे ज तेने खबर पडी के **आम** अत्रे आव्यो हतो, राजा धर्मे निरुपाये आचार्य बप्पभट्टिने विहार करवानी आज्ञा आपी अने आचार्य बप्पभट्टि संकेतित स्थाने **आम राजा**ने जईने मळ्या अने त्यांथी **बधा उंटणियो उपर सवारी** करीने कनोज जई पहोंच्या.

आ वखते **सिद्धसेनसूरि** अति वृद्ध थई जवाथी पोतानो एक साधु **आचार्य बप्पभट्टि**ने बोलाववा मोकल्यो. जेथी **आचार्य बप्पभट्टि मोढेरे** गया, **सिद्धसेनसूरि**ए गच्छनी व्यवस्था **आचार्य बप्पभट्टि**ने भळावीने अनशन धारण कर्युं अने समाधिपूर्वक आयुष्य पुरुं करीने स्वर्गवासी थया.

थोडा समय पछी आचार्य बप्पभट्टिए पोताना मोटा गुरुभाई **गोविन्दसूरि** तथा **नन्नसूरि**ने गच्छ भळावीने **आम**ना प्रधानो साथे कनोज तरफ विहार कर्यो अने आमने मळीने पहेलानी ज माफक विद्वद्गोष्ठीमां तत्पर थया.

कहे छे के एकवार आमराजे आचार्य बप्पभट्टिनी परीक्षा माटे तेमनी पासे रात्रे गुप्त रीते एक वेश्याने मोकली अने तेणीए त्यां जई अनेक प्रकारे तेमने विचलित करवानी चेष्टा पण करी छतां **आचार्य बप्पभट्टि**नुं मन लेशमात्र पण विकारवश न थयुं. आ वात ज्यारे **आमे** जाणी त्यारे ते आचार्यनो वधारे प्रशंसक अने भक्त बन्यो.

एकवार गौडदेशना राजा धर्मे आमना पासे दूत मोकलीने कहेवडाव्युं के 'तमो मारी पासे आवीने छळ वचनोथी छेतरीने चाल्या गया ए वात अमारे माटे खेदजनक छे, अमोए आंगणे आवेल अतिथिनुं कोईपण प्रकारनुं आतिथ्य न कर्युं ए पश्चात्तापनी वात थई, पण हजी कंई वीत्युं नथी हवे पण आपणे पोतपोताना विद्वानोनां वाग्युद्ध करावीने आपणी हारजीतनो निर्णय करी नाखीए. आमां जेनो पंडित हारे ते राजानी हार मानवी ने जीतनारने पोतानुं राज्य सोंपी देवुं. जो आवी शरत मंजुर होय तो अमो अमारी सभाना पंडित बौद्धाचार्य **वर्द्धनकुंजर**ने लईने देशनी सीमा उपर आवीए, तमारे पण जे पंडितो लावववा होय तेमने लईने सरहद उपर आवी जवुं', धर्मना दूतना मुखे तेनो संदेश सांभळीने आमराजे **आचार्य बप्पभट्टि**ना सामुं जोयुं, **आचार्य बप्पभट्टि**ए ए माटे पोतानी संमति बतावी अने राजाए दूतने ते ज प्रकारनो प्रतिसंदेश दईने विदाय कर्यो.

निश्चित करेल दिवसे बंने राजाओए पोतपोतानी पंडित मंडळीनी साथे सरहद उपर जईने पोतानी केम्पो(छावणीओ) उभी करी.

वाद सभामां आमनी तरफथी **आचार्य बप्पभट्टि** अने धर्मना तरफथी **वर्द्धनकुंजर** वाग्युद्ध-शास्त्रार्थमां उतर्या अने वाद करतां लगभग छ मास वीती गया; पण कोईनी हार-जीत न थई; छेवटे **वाक्पति**नी सलाह प्रमाणे

वर्ततां वादमां **आचार्य बप्पभट्टि**नी जीत थई अने **वर्द्धनकुंजर**नी हार थई. आ उपरथी **आम राजा**ए धर्मने पोताना राज्य उपरनो हक्क छोडी देवा जणाव्युं; पण आचार्य बप्पभट्टिए आमने समजावीने धर्मनुं राज्य पाछुं तेने ज अपाव्युं. आ शास्त्रार्थना युद्ध पछी आमराज अने धर्मना आपसना विरोधनो अंत आव्यो अने ते बंनेए एक बीजा साथे संधि करी. **आचार्य बप्पभट्टि** अने **वर्द्धनकुंजरे** पण आपसनो विरोध छोडीने एकबीजा साथे मैत्री बांधी, एटलुं ज नहि पण आचार्य बप्पभट्टिना उपदेशथी तेणे जैन धर्ममां पोतानो विश्वास पण जोड्यो.

आ प्रमाणे **अहिंसक लडाईथी** बंने राज्यो वच्चे घणा काळथी चाल्या आवता वैरविरोधनो अंत आव्यो अने बंने राजाओ पोताना विद्वानोनी साथे पोतपोताना स्थाने गया.

वाक्पतिराज धर्मराजानो ग्रासभोगी पंडित हतो; छतां पूर्वोक्त शास्त्रार्थमां तेणे **आचार्य बप्पभट्टि**ने सहायता आपी हती. ए वातनी **बौद्धाचार्य वर्द्धनकुंजरे** पाछळथी **धर्मराजा**नी पासे शिकायत करी, छतां राजाए ते परमारवंशी क्षत्रिय विद्वान **वाक्पतिराज** उपरथी जरा पण मन न खेंच्युं.

एकवार राजा **यशोवर्मे** धर्म उपर चढाई करी अने युद्धमां तेने मारीने **वाक्पतिराज**ने केद करीने पोताना देशमां लई गयो. पाछळथी **वाक्पति यशोवर्म**नी प्रशंसामां 'गौडवध' काव्य बनावीने केदमांथी छूट्यो अने त्यांथी ते कान्यकुब्ज आवीने **आचार्य बप्पभट्टि**ने मळ्यो; अने ते पछी आमराजानी सभामां जईने तेनी प्रशंसामां काव्य संभळाव्या. **आम** आथी घणो प्रसन्न थयो अने आश्वासन पूर्वक लाख सुवर्णटंकनो ग्रास बांधीने पोताने त्यां राख्यो.

एक प्रस्तावे **बप्पभट्टिसूरि**ए[1] खेडाधारमंडळना हस्तिजयनगरमां रहेला पोताना गुरुभाई **गोविन्दसूरि** अने **नन्नसूरि**नी विद्वत्तानां अतिशय वखाण कर्यां, जे उपरथी **आमराज** गुप्त रीते तेमाना दर्शनार्थे गयो. त्यां छत्र चामरादि राजचिह्नो युक्त सिंहासन उपर बेठेल **नन्नसूरि**ने जोईने तेमना आ राज्यशाही ठाठनी टीका करीने चाल्यो गयो.

बीजे अवसरे **आम** त्यां गयो. तो **नन्नसूरि**ने चैत्यमां बेसीने वात्स्यायन शास्त्र (कामशास्त्र) नुं व्याख्यान करतां जोयां. आम मंदिरमां जई जिनमूर्तिने नमस्कार करीने चाल्यो गयो, **कामशास्त्र**ना व्याख्यानथी तेने लाग्युं के ए आचार्य विद्वान छे पण चारित्रवान नथी. **नन्नसूरि**ने आथी घणो ज खेद थयो, जेथी **गोविन्दसूरि**ए तेमने दिलासो आपतां कह्युं के ते पुरुष बीजो कोई नहि पण **आम राजा** होवो जोईए; माटे कोई नवो प्रबंध बनावीने नट द्वारा **आम**ने देखाडवो.

आ पछी **नन्नसूरि**ए संधिबंध **आदिनाथ** चरित्र बनाव्युं, नट ते शीखीने कनोज जई **आचार्य बप्पभट्टि**ने मळ्यो अने राजाने मळीने ते रूपक नाटकरूपे खेलीने बताव्युं. ते पछी नट पाछो गुजरातमां **नन्नसूरि**ने जईने मळ्यो अने रूपकना संबंधमां त्यां जे चर्चा अने असर थई हती ते जणावी दीधी. आ पछी **नन्नसूरि** अने **गोविन्दसूरि** पण रूप बदलीने कनोज जई **आचार्य बप्पभट्टि**ने मळ्या. अने ते पछी **आम**नी सभामां रूपक भजववा मांड्युं तेमां तेमणे **वीररस**नुं एवुं पोषण कर्युं के सभामां बेठेल राजाने एकदम शौर्य चढी जतां 'मारो, मारो' करतां तलवार खेंची काढी, तेटलामां अंगरक्षकोए तेमने चेतव्यो के आ तो युद्ध नथी पण नाटक छे. ए ज अवसरे **गोविन्दसूरि**ए प्रगट थईने राजाने कह्युं के राजन्! आ नाटकने तमे साचो बनाव मान्यो ए शुं तमे योग्य कर्युं छे? जो नहि तो **नन्नसूरि**ना वात्स्यायन शास्त्रना व्याख्यान उपरथी तेमना विषे तमने शंका केम उत्पन्न थई? शुं सर्व कोई शास्त्रमां लखेला रसोनो अनुभव करे तो ज तेनुं व्याख्यान करे? **गोविन्दसूरि**ना आ उपालंभथी **आम राजा**ए तेमनी पासे माफी मांगी अने पोताना गुरुना गच्छनी प्रशंसा करी.

1. भंवरस्लाल नाहटाना मते आ स्थळ राजस्थानमां नाकोडा पासेनुं लवणखेट छे. – श्रमण वर्ष ४० अंक ११

एकवार कनोजमां नीच जातिना गायकोनुं टोळुं आव्युं, तेमां एक सुंदरी गानारी हती. तेणीना रूप अने गायनरसथी **आम** मोहित थई गयो अने ए ज कारणे ते रात्रे पोते त्यां ज रह्यो गुप्तचरो द्वारा **आचार्य बप्पभट्टि**ने आ वातनी खबर मळी अने तरत ज तेने बोध आपनारां अन्योक्तिक काव्यो तेनी नजरे पडे तेवी रीते लखाव्यां. बीजे दिवसे ते काव्यो वांचतां ज राजाने पश्चात्ताप थयो, ते एटले सुधी के राजा अग्निमां बळीने मरवाने तैयार थई गयो; पण आचार्ये उपदेश द्वारा तेना मननुं समाधान करीने शांत कर्यो. पण वृद्ध कवि **वाक्पति**ने आ बनावथी घणुं ज खोटुं लाग्युं, तेथी तेणे कनोजनो त्याग करीने मथुरामां जईने वराह स्वामीना मंदिरमां पोतानो निवास कर्यो.

एकवार **बप्पभट्टिसूरि**ए **आम राजा**ने जैन धर्मनो स्वीकार करवा माटे कह्युं, पण राजाने आ वात गमी नहि; तेथी तेणे कह्युं के स्त्रीओ अने अज्ञानीओने जैन धर्ममां ल्यो, वाक्पति जेवा संस्कारि विद्वानोने जैन बनावो त्यारे तमारी शक्तिनी प्रशंसा थाय. राजानां आ वचनोने **आचार्य बप्पभट्टि**ए हृदयमां कोतरी लीधां अने ते पछी तरत ज तेमणे मथुरा तरफ विहार कर्यो अने वराह स्वामीना मंदिरमां अंतिम समय वीतावता वाक्पतिराजने जैन धर्मनो उपदेश आपीने जैन बनाव्यो. **वाक्पतिने जैन धर्मनी श्रद्धा** थतां ज ते वराह मंदिरथी उठीने भगवान पार्श्वनाथ स्तूपना मंदिरमां आव्यो अने त्यां आवीने जैन साधुनो वेष धारण करीने अनशन धारण कर्युं. अने **नमस्कार मंत्रनुं ध्यान करतां १८ दिवसे आयुष्य पूर्ण करीने ते स्वर्गवासी थयो.**

आ.बप्पभट्टिसूरिए त्यां तीर्थंकरने नमस्कार कर्या पछी 'जयति जगद्रक्षाकर' ईत्यादि पद्योथी शांतिदेवतानी स्तुति करी, जे स्तव हजी पण विद्यमान छे.

वाक्पतिने प्रतिबोध करीने **आ.बप्पभट्टिसूरि** पाछा कनोज गया. आमे पोते आ आश्चर्यकारक बनावथी तेमनी घणी प्रशंसा करी, जे उपरथी आचार्ये कह्युं—''ज्यां सुधी तमने प्रतिबोध न थाय त्यां सुधी अमारी शक्तिनी प्रशंसा केवी?'' आमे कह्युं—हुं बोध पाम्यो छुं के तमारो धर्म सत्य छे, छतां मने शिवधर्मनो त्याग करतां अकथ्य दुःख थाय छे; माटे तेने मूकी शकतो नथी.

एक दिवस एक चित्रकार राजानुं चित्र पट उपर चितरीने सभामां आव्यो; पण राजाए तेनी कदर न करी, त्यारे **बप्पभट्टिसूरि**ए तेनी कळानी प्रशंसा करीने राजा पासेथी लाख टकानुं ईनाम अपाव्युं. प्रसन्न थयेल चित्रकारे महावीरनी मूर्तिवाळा ४ चित्रपटो तैयार करीने बप्पभट्टिसूरिने अर्पण कर्या. बप्पभट्टिसूरिए पण ते पटोनी प्रतिष्ठा करीने तेमांथी एक कनोजना जैन मंदिरमां, एक मथुरामां, एक अणहिल्लपाटणमां अने एक सतारकपुरमां मूक्यो, तेमां पाटणमां मूकेलो पट मुसलमानोए पाटणनो भंग कर्यो त्यां सुधी त्यांना मोढगच्छना जैन चैत्यमां विद्यमान हतो.

आ.बप्पभट्टिसूरिए विद्यार्थीओ अने कविओना हितार्थे 'तारागण'[1] आदि बावन प्रबंधोनी रचना करी हती.

एकवार **आमराजे समुद्रपाल**ना राजगिरिना किल्ला उपर चढाई करी अने वर्षो सुधी घेरो राख्यो, छतां किल्ला उपर तेनो अधिकार न थयो. छेवटे **आ.बप्पभट्टिसूरि**नी सलाहथी आमना पुत्र **दुंदुककुमार**ना बालपुत्र **भोज**ने आगळ करीने लडाई करतां किल्लाना दरवाजा तुट्या अने **आम**नो राजगिरि उपर कबजो थयो अने समुद्रसेन धर्मना द्वारथी बाहर निकळ्यो.

ए पछी आम शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोनी यात्रा करवाने निकळ्यो, तीर्थोमां फरतो ते गिरनारनी तलाटीमां आव्यो, तो त्यां पूर्वे आवीने पडाव नाखी रहेला ११ राजाओने १०००० घोडाओनी सेना सहित जोया, एमनी साथे ११ दिगम्बराचार्यो हता. आ लोकोए पोते प्रथम आव्या होवाथी अने तीर्थनी मालीकी दिगम्बरोनी छे

1. आ ग्रंथ एच. सी. बायाणी द्वारा संपादित थई प्राकृत टेक्ष्ट सोसयटी द्वारा ई.स. १९८७मां प्रसिद्ध थयो छे.

एम जणावीने **आम राजा**ने प्रथम उपर चढतांने रोकवानी चेष्टा करी जेथी **आमे** ते सर्वने लडाईने माटे तैयार थवा जणाव्युं, पण **आचार्य बप्पभट्टिए धर्मनिमित्ते आवी संहारक लडाईओथी दूर रहेवा जणाव्युं;** अने श्वेताम्बर-दिगम्बर आचार्योए ज आ झगडानो निवेडो लाववानो निश्चय कर्यो. अने ते पछी **बप्पभट्टिसूरि** अने **दिगम्बराचार्यो** वच्चे ए तीर्थ संबंधी शास्त्रार्थ थयो अने **बप्पभट्टिसूरि**नो पक्ष प्रबळ ठरतां आमनो श्वेताम्बर जैन संघ प्रथम उपर चढ्यो. अने त्यां नेमिनाथनी तथा पिंडतारकमां, माधवदेवमां अने शंखोद्धारमां दामोदर हरिनी पूजा करी.

गिरनारथी उतरीने आम द्वारका थईने सोमेश्वर (प्रभास) पाटण गयो अने त्यां सुवर्णपूजा पूर्वक अनर्गल दान कर्युं.

आ तीर्थोमां फरीने **आम** पाछो पोताना नगरमां गयो, अनेक धर्मस्थानो कराव्यां अने छेवटे वृद्धावस्थाए पहोंचता पोताना पुत्र **दुंदुक**ने राज्यनो उत्तराधिकारी बनावी राजा प्रजाने छेल्ली शिखामण दईने तेण गंगाने कांठे आवेल मागधतीर्थ तरफ प्रयाण कर्युं अने नावमां बेसीने **बप्पभट्टिसूरि**नी साथे **आम** आगळ जतो हतो तेटलामां तेने गंगामांथी धूमाडो नीकळतो जणायो. पासेनुं स्थान कयुं छे ते पूछतां जणायुं के ते **मगटोडा** नामनुं गाम छे. प्रथमथी ज **आम**नुं मरण मगटोडा पासे थवानुं छे, ए वात तेने राजगिरिमां यक्षे कहेल होवाथी तेने **पोताना मरणनो निश्चय थई गयो. बप्पभट्टिसूरिए आमने ते वखते जैन धर्मनां स्वीकारनी प्रेरणा करी अने तेणे पण तेनो स्वीकार करी मनमां नमस्कार मंत्रनो जाप करवा मांड्यो** अने संवत् ८९०ना भादरवा सुदि ५ शुक्रवार अने चित्रा नक्षत्रमां दिवसना चोथा पहोरमां शांति पूर्वक आयुष्य पूर्ण कर्युं. आमनुं मृत्युकार्य तेना जातिभाईओ पासे करावीने **बप्पभट्टि आचार्य** पाछा कनोज आव्या.

दुंदुक राजानुं वर्तन सारुं न हतुं, ते **कंटी** नामनी एक वेश्याना मोहमां फसी गयो हतो. दरेक कार्य वेश्यानी सलाह प्रमाणे थवा लाग्युं अने एटला सुधी मामलो बगडी गयो के तेना पुत्र भोजकुमारना खूननां कावतरांनी वातो थवा मांडी. **दुंदुक**नी राणीए आ आन्तरिक खटपटोनी खबर पोताना भाईओने आपी जे उपरथी पुत्रजन्मना उत्सवना बहाने तेओ **भोजराज**ने पोताने त्यां पाटलीपुत्र लई गया. भोज गयो पण पाछो आव्यो नहि, आथी **दुंदुके बप्पभट्टि आचार्य**ने तकादो आपवा मांड्यो के तेओ कोई रीते **भोज**ने बोलावी लावे. आचार्ये तेने भळता उत्तरो आपीने लगभग प वर्ष काढी नाख्यां पण **दुंदुके** तेनो केडो छोड्यो नहि अने वधारे दबाण कर्युं. आ उपरथी **बप्पभट्टि आचार्य** पण अनशन करीने संवत् ८९५ना श्रावण सुदि ८ अने स्वाति नक्षत्रने दिवसे ९५ वर्षनी अवस्थामां स्वर्गवासी थया.

एकवार **भोजकुमार** अणचिन्तव्यो पोताना मामाओ साथे **कनोज** गयो अने माळीए भेट आपेल त्रण बीजोरानां फळो लईने ते महेलमां गयो. अंदर जतां ज कंटिकानी पासे बेठेल दुंदुकनी छातीमां फळोना प्रहारो करीने तेनुं खून कर्युं; अने **कनोज**नुं राज्यासन पोताना अधिकारमां लीधुं.

भोजे राजगादी हाथ कर्या पछी एक दिवस आमविहार नामना जैन चैत्यमां दर्शनार्थे गयो, त्यां बप्पभट्टि आचार्यना बे शिष्यो रहेल हता जेमणे विद्याव्याक्षेपथी राजानो उचित आदर न कर्यो, एथी राजाए गुजरातमांथी **नन्नसूरि** अने **गोविन्दसूरि**ने त्यां बोलावीने बप्पभट्टि आचार्यनी पाटे बेसाड्या अने ते पछी **नन्नसूरि**ने मोढेरा मोकल्या अने **गोविन्दसूरि**ने पोतानी पासे कनोजमां राख्या.

प्रबंधकार लखे छे के आमना पौत्र आ **भोजराजे** आमथी पण वधारे जैन धर्मनी वृद्धि अने उन्नति करी हती.[1]

आचार्य बप्पभट्टि के जे भद्रकीर्ति वादिकुंजरकेसरी, ब्रह्मचारी, गजवर, राजपूजित ईत्यादि अनेक नामो अने बिरुदोथी प्रसिद्ध हता **जैनशासन**-क्षीरसमुद्रमां कौस्तुभं मणि समान पाक्या.

प्रस्तुत **बप्पभट्टि आचार्य** प्रबंधनी मुख्य मुख्य ऐतिहासिक घटनाओनुं संक्षिप्त वर्णन उपर प्रमाणे छे. आमांनी केटलीए घटनाओ ईतिहासमां नवां प्रकरणो उमेरनारी छे अने ए ज हेतुथी अमोए आ स्थळे तेनो संक्षेप सार जणाव्यो छे, जो ईतिहास संशोधको आ विषयमां पोतानां अनुसंधानो लंबावशे तो तेमने केटलुंए नवुं जाणवानुं मळशे.

सूरपालनो परिचय आचार्य सिद्धसेने पूछ्यो त्यारे तेणे जणाव्युं हतुं के हुं पंचाल देशना बप्पनो पुत्र छुं. आ उपरथी **बप्पभट्टि आचार्य**नी जन्मभूमि पंचालदेश (कुरूक्षेत्रथी पूर्वनो प्रदेश) होवानी कल्पना थई शके, पण[2] वास्तवमां तेम जणातुं नथी. एमनां मातापिता जे गाममां रहेतां हतां ते गाम पालनपुर एजन्सीमां धानेरा गामनी पासेनुं डुवा छे. तेथी **बप्पभट्टि**नुं जन्मस्थान पण एज गाम होवानो संभव छे. एमनी जाति पांचाल होय अने तेथी **सूरपाले** (बप्पभट्टिनुं गृहस्थावस्थानुं नाम) पिताने पंचालदेश्य कह्या होय तो संभवित छे. आजे पण गुजरातमां केटलाक लोको पोताने 'पांचाल' ए जातिगत नामथी ओळखावे छे. **'सूरपाल'** ए नाम अने शत्रुओनो नाश करवानी हकीकत उपरथी **बप्पभट्टि** पांचाल जातिना राजपूत हता एम जणाई आवे छे.

बप्पभट्टि आचार्यना गुरु **सिद्धसेनसूरि** मोढगच्छना प्रमुख आचार्य हता.[3] एमनां गच्छनां चैत्यो पाटला (शंखेश्वर पासे **पाडला**) मोढेरा अने पाटण वगेरेमां हतां. **आमराज** पोते पोताने कनोजना मौर्यवंशी राजा **यशोवर्म**ना पुत्र तरीके ओळखावे छे अने पोतानी मातानुं नाम ते **'सुयशा'** जणावे छे. आ वृत्तान्त विद्वानोए परीक्षानी कसोटीए चढावीने तपासवुं जोईए, केमके ते समयथी कंईक पूर्वकालमां कनोजमां मौखरीवंशनुं राज्य हतुं तो **आम**ना पिताना समयमां (संवत ७९७ पछी) त्यां **मौर्यवंश**नुं राज्य थयुं हतुं एमां कंई प्रमाण छे?

प्रबंधकारना कहेवा प्रमाणे ते वखते **आम**ना पिता **यशोवर्म** कनोजना राज्यासन उपर विद्यमान हता, पण वर्तमान ईतिहास उपरथी जणाय छे के कनोजनो **यशोवर्म** विक्रम संवत् ७९७मां ज काश्मीरना राजा **ललितादित्य**ना हाथे मरण पाम्यो हतो. तो शुं आ मौखरी **यशोवर्म** पछी प्रस्तुत आमनो पिता मौर्य यशोवर्म तो कनोजनो राजा न थयो होय? कारण के प्रसिद्ध मौखरी **यशोवर्म**नुं मृत्यु **ललितादित्य** साथेनी लडाईमां थयानुं जणाववामां आवे छे ज्यारे **आम**ना पिता **यशोवर्म**नुं मरण स्वाभाविक रोगथी थाय छे. आमनो ग्वालियर (मालवा) उपर पण अधिकार होवानुं जणाय छे तेथी आ अनुमान थाय छे के आमनो पिता **यशोवर्म** प्रथम ग्वालियर तरफनो मौर्यवंशी राजा होय अने मौखरी **यशोवर्म** पछी कनोजनो पण ते राजा थयो होय तो नवाई जेवुं नथी. गौडदेशनो **राजा धर्म आम राजा**नो प्रतिस्पर्धी होवानुं वर्णन प्रबंधमां आवे छे अने पाछळथी आ बंने राजाओने आपसमां संधि थयानुं पण प्रबंध उपरथी सिद्ध थाय छे. आ धर्मराजाना वंश विषे कंई पण उल्लेख नथी; पण एम जणाव्युं छे के ए गौडदेशना

1. मोहनलाल द. देसाई लखे छे के, 'आ भोज ते भोजदेव अपरनाम मिहिर तथा आदिवराह ते संवत् ९०० थी ९३८ सुधी अचुक अने प्रायः ९५० सुधी गादी पर हतो.' (जै. सां. सं. ईतिहास पृ. १७९ १८०) श्री न्यायविजयजी लखे छे के 'आम राजाने एक वैश्य पत्नी हती. जेना वंशजो-पुत्रो जैन धर्म पाळता अने जेनी वंश परंपरामां कर्माशाह थया. तेमणे शत्रुंजय तीर्थनो उद्धार कराव्यो. विशेष परिचय माटे जुओ (कर्माशाह तपागच्छ श्रमण वंश वृक्ष पृ. ५१) 2. आ. श्री भद्रगुप्तसूरिजी म. लिखित 'मने तारी याद सतावे'नी प्रस्तावनामां श्रीस्नेहीदीप लखे छे के (पंजाबमां आवेल वर्तमाननुं दुलवा ग्राम ज्यां पू. श्री बुटेरायजी म. जन्म्या हता ते होई शके).

3. विलासवइकहाना अंतमा आ. श्री बप्पभट्टसूरि विषे लख्युं छे के—'वाणिज्जमूलकुले कोडियगणविउलवइरसाहाए । विमलंमि य चंदकुले वसंमि य सव्वकल्लाणे ।।१।। संताने रायसदसि हरिसिवप्पभ(ह)ट्टिसूरिस्स । जस्सभद्दसूरिगच्छे महुरादेसे सिरोहाए ।।२।।

` राजा हतो अने एनी राजधानीनुं नाम 'लक्षणावती' हतुं, आ धर्म कोण? ते आपणे जाणता नथी, गौडदेशमां पालवंशनो ४थो राजा 'धर्मपाल' नामनो थई गयो छे खरो; पण तेने आ 'धर्म' मानी लेवो ठीक नथी, कारण के एक तो आनो सत्ता समय ठीक बेसतो नथी, जनरल कनींगहोमना मत प्रमाणे धर्मपालनो समय विक्रम संवत् ८८७ थी ९०५ सुधीमां हतो अने राजेन्द्रलालमित्रनी गणना प्रमाणे एनो शासन काल विक्रम संवत् ९३२ थी ९५२ सुधीमां हतो, ज्यारे आमना विरोधी धर्मनो राजत्वकाल विक्रमनी नवमी सदीना पूर्वार्धमां आवे छे, वळी पालवंशीराजाओनी राजधानी 'ओदंतपुरी' हती. त्यारे आ धर्मनी राजधानी लक्षणावती हती एम प्रबंधमां जणाव्युं छे. आ प्रमाणे समय अने स्थान भिन्न होवाथी आ धर्म प्रसिद्ध धर्मपालनो पूर्ववर्ती बीजो धर्म होय एम लागे छे.

प्रबंधमां **वाक्पतिराज**नी बाबतमां प्रबंधकारे एक नवी हकीकत जणावी छे, ते आ के 'गौडवहो' काव्यनो प्रसिद्ध कवि वाक्पतिराज यशोवर्मनो आश्रित नहीं पण गौडदेशना राजा धर्मनो ग्रासभोगी विद्वान हतो, पण **यशोवर्मे** धर्मने युद्धमां मारीने **वाक्पति**ने केद कर्यो हतो जेथी **यशोवर्म**नी प्रशंसामां 'गउडवहो' काव्य बनावीने **वाक्पति**ए पोतानो पिंड छोडाव्यो हतो अने ते पछी ते कनोजमां आवीने **आम**नी सभामां रह्यो हतो.[1]

आजनी मान्यता प्रमाणे तो वाक्पतिराज विक्रम संवत् ७९७मां काश्मीरना ललितादित्यना हाथे मरनार यशोवर्मनो आश्रित कवि होय तो संवत् ८००मां जन्मेल **आचार्य बप्पभट्टि** अने तेमना मित्र **आम राज**नो समकालीन थई शके के केम? ए विचारणीय छे. यशोवर्मे ए धर्म उपर चढाई करवानो अने वाक्पतिने केद करवानो प्रसंग **बप्पभट्टि** अने आमनी उत्तर जिंदगीमां बनेलो प्रसंग होय एम प्रबंध उपरथी जणाय छे, आथी **वाक्पतिराज** जो आमनी सभामां आश्रय लेनार विद्वान होय तो आनो प्रथम आश्रयदाता धर्म अने एने केद करनार यशोवर्म ए बंने पुरुषो प्रसिद्ध **धर्मपाल** अने मौखरी **यशोवर्म**थी जुदा ज होवा जोईए.

पण प्रबंध उपरथी जणाय छे के धर्मने लडाईमां मारीने **वाक्पति**ने केद करनार **यशोवर्म आम राजा**नो समकालीन हतो. हवे ए जोवानुं छे के **आमनो** पिता **मौर्य यशोवर्म** ते पूर्वे काल करी गयो हतो अने मौखरी यशोवर्म तेनी पण पूर्वे मरण पाम्यो हतो तो पछी धर्मनी उपर चढाई करीने **वाक्पतिने** केद करनार आ **यशोवर्म** कयो? ए विचारणीय वात छे, जो खरेखर आ यशोवर्मने जुदा ज मानी लेवामां आवे तो मौखरी यशोवर्मनां समयमां गौडवहोना कवि वाक्पतिना अस्तित्व विषयक हकीकत खोटी मानवी पडशे. अने जो वाक्पति मौखरी यशोवर्मनो ज आश्रित विक्रमनी आठमी सदीनो पंडित हतो एम निश्चित मानी लेवामां आवे तो **बप्पभट्टिसूरि** अने आमराजना समयमां वाक्पतिनी हयाती सूचक हकीकत कल्पित अथवा भळती छे एम मानवुं जोईए. गमे तेम हो पण ए विषय संशोधकोए विचारवो जोईए.

आम राजे कनोजमां अने ग्वालियरमां जैन मंदिरो बंधाव्यां हतां, वळी **धर्म** पोताना पंडितनी साथे शास्त्रार्थ करावया माटे ग्वालियर पासे आव्यो हतो अने आम पण **बप्पभट्टिसूरि**नी साथे ए ज स्थळे आव्यो हतो अने आ स्थानने आमना राज्यनी सरहद होवानुं पण त्यां जणाव्युं हतुं. आ उपरथी जणाय छे के ग्वालियर सुधी आमनुं राज्य हतुं. आमनुं बीजुं नाम **नागावलोक** हतुं. पण ईतिहासमां एना विषे कंईपण हकीकत मळती नथी. **आम**ना विरोधी **धर्मने** लखनउनी आसपासना प्रदेशनो राजा मानीने लखनउने तेनी राजधानी लक्षणावती मानी लेवानी कल्पना करीए तो कंईक बंध बेसे खरी, पण धर्मने गौडदेशनो राजा लखेल होवाथी आ कल्पना करतां संकोच थाय छे.

आमे राजगिरिना राजा **समुद्रसेन**ना उपर चढाई करवा अने राजगिरिनो किल्लो सर करवानुं वर्णन प्रबंधमां जणाव्युं छे, पण ईतिहासमां आ **समुद्रसेन**नो कंई पत्तो नथी. आमना पुत्र **दुंदुक** अने पौत्र **भोज** विषे पण

1. तेणे 'गौडवध' अने 'महानिविनय' काव्यरचि आ. बप्पभट्टिसूरिने अने आम राजाने अमर बनाव्या हता. (तपगच्छ श्रमण वंशवृक्ष पृ. ५१)

ईतिहासमां कंईपण उल्लेख जोवातो नथी.

भोजनुं मोसाळ पाटलीपुरमां होवानुं प्रबंध उपरथी जणाय छे, पण पाटलीपुत्रमां ते वखते कोनुं राज्य हतुं ते जणायुं नथी.

बप्पभट्टिसूरिना हरीफ अने पछीथी मित्र बनेल बौद्धाचार्य **वर्द्धनकुंजर**नो पण ईतिहासमां क्यांय परिचय मळतो नथी.

बप्पभट्टिसूरिनो समय शिथिलाचारनो हतो अने बप्पभट्टि तेमज एमना गुरुभाईओ **प्रायः सवारीनो उपयोग करता हता.** एम प्रबंधमां बतावेला अनेक प्रसंग उपरथी जणाई आवे छे. छतां एमणे राजाने पक्षमां राखीने जैन संघनो जे उपकार कर्यो छे. ते खरेखर अनुमोदनीय छे. **बप्पभट्टि सूरि**ना आमां जणावेल चरित्र उपरथी जणाय छे के तेमणे पोतानुं जीवन राजाओनी सोबतमां ज गाळ्युं हतुं अने एज कारणे एमनुं 'राजपूजित' एवुं उपनाम पड्युं हतुं.

बप्पभट्टिसूरि ए साहित्य निर्माणमां पण पोतानो सारो फाळो आप्यो हतो, एम प्रबंध उपरथी जणाय छे, तेमणे साहित्य विषयक बावन प्रबंधो बनाव्यानो प्रबंधमां उल्लेख छे, तेमां मुख्य प्रबंध 'तारागण' (तारायण) नामनो हतो. प्रसिद्ध जैन कवि **धनपाले तिलकमंजरी**मां जे **भद्रकीर्ति**ना 'तारागण' नामना ग्रंथनो उल्लेख कर्यो छे, ते आज **बप्पभट्टि**कृत 'तारागण' समजवानो छे, केमके **भद्रकीर्ति** ए **बप्पभट्टि**नुं ज गुरुदत्त नाम हतुं आम आपणे प्रबंधमां जोयुं छे. पण आजे **बप्पभट्टि**कृत **'चतुर्विंशतिजिन स्तुति' अने एक सरस्वती स्तोत्र सिवाय बीजो एक पण प्रबंध उपलब्ध थतो नथी.**

बप्पभट्टिना गुरुभ्राता **नन्नसूरि**ए आदि जिननो जीव प्रसंग लईने संधिबंध बनावेल नाटकनो प्रबंधमां उल्लेख छे, पण आ विद्वाननी कोईपण कृति आजे जैन भंडारोमां अस्तित्व धरावती होय एम जणातुं नथी. पण आ उपरथी एटलुं तो निश्चित थाय छे के **पूर्वे जैनमंदिरोमां धार्मिक नाटको खेलवानो साधारण रिवाज हतो.**[1] **आज कारणे जैन मंदिरोना अग्रमंडपो, हजी पण रंगमंडप, खेलामंडप अने प्रेक्षामंडप वगेरे नामोथी प्रसिद्ध छे.**

१२. श्री मानतुंगसूरि

मानतुंग बनारस निवासी **धनदेव** शेठना पुत्र हता, एमणे प्रथम **चारुकीर्ति** नामना दिगम्बर मुनि पासे दीक्षा लीधी हती अने ते वखते एमनुं नाम **'महाकीर्ति'** राखवामां आव्युं हतुं, पण पाछळथी एमणे पोतानी बहेनना कहेवाथी **जिनसिंहसूरि** पासे श्वेताम्बर मतनी दीक्षा धारण करी हती.

आ वखते बनारसमां **हर्षदेव** नामनो ब्रह्मक्षत्रिय जातिनो राजा राज्य करतो हतो अने एज राजा **हर्ष**ना मानीता **मयूर** अने **बाण** नामना त्यां बे ब्राह्मण पंडितो रहेता हता. आ बंने पंडितोए पोतानी विद्या अने कलाथी राजा **हर्षदेव**नुं मन पोतानी तरफ अतिशय आकर्षित कर्युं हतुं.

एकवार राजाए कह्युं के 'आज काल ब्राह्मणोमां जेटली शक्ति छे तेटली शक्ति बीजा दर्शनोना विद्वानोमां जोवामां आवती नथी.'

आ सांभळीने राजाना मंत्रीए कह्युं—स्वामी जे कहे छे ते खरुं ज हशे, पण आजकाल आपना ज नगरमां **मानतुंगसूरि** नामना एक जैन आचार्य वसे छे ते पण सारा विद्वान अने समागम करवा योग्य छे, जो आपनी इच्छा होय तो तेमने बोलावीए.

1. आ रिवाज पण चैत्यवासि यतियोंना साम्राज्यना कारणे ज चालु थयो हशे. (संपादक)

राजाए आज्ञा आपी एटले मंत्री प्रार्थना करीने **मानतुंगसूरि**ने राजसभामां लई गयो. राजाए आचार्यने उद्देशीने कह्युं—'आजना वखतमां ब्राह्मणो जे शक्ति धरावे छे ते बीजे क्यांय छे?' **मयूर** पंडिते सूर्यने प्रसन्न करीने पोतानो कोढ रोग मटाड्यो अने बाण कविए चंडीने प्रसन्न करीने पोताना हाथ-पग नवा प्राप्त कर्या! शुं आवी शक्ति बीजे क्यांय छे? जो तमो पण कंई जाणता हो तों बतावो. राजानां आवां वचन सांभळीने आचार्ये कह्युं—राजन्! अमो गृहस्थ नथी के **विद्या अने गुणनुं प्रदर्शन करीने राजाओनी पासेथी धन प्राप्त करीए**, अमो जे कंई करीए ते केवळ धर्मने माटे ज, आचार्यनां आवां निरीह वचनो सांभळीने राजाए सेवकोने आज्ञा करी-'आमने सांकळोथी बांधीने अंधारी कोटडीमां पूरी द्यो.' सेवकोए राजाज्ञानुं पालन करीने **मानतुंगसूरि**ने अंधारी कोटडीमां केद कर्या, पण **मानतुंगसूरि**ए त्यां ज पोताना पूज्यदेव आदिनाथनी 'भक्तामर' आ शब्दोथी शरू थतां स्तोत्रथी स्तवना करी अने पोते बंधन अने केदमांथी स्वयं छूटीने राजाने जईने मळ्या. राजा आचार्यनी आ अद्‌भुत शक्तिथी घणो प्रसन्न थयो अने ते ज समयथी ते जैन धर्म अने जैन साधुओनो भक्त थयो.

एकवार मानतुंगसूरिने मानसिक रोग थयो, तेथी ए अनशन ग्रहण करवाने तैयार थया; पण धरणेन्द्र नागराजे आपेल १८ अक्षरना मंत्राम्नायना प्रयोगथी ते निरोगी थया अने तेथी तेमणे ते १८ अक्षरोथी गर्भित भयहर श्रीनमिऊण स्तोत्रनी रचना करी के जे हजी पण स्मरण करनारना भयने हरे छे.

मानतुंगसूरि पोतानी पाटे **गुणाकरसूरि**ने स्थापीने स्वर्गवासी थया.

मानतुंगसूरि ने पोतानी सभामां बोलावनार राजा **हर्ष** बनारसनो ब्रह्मक्षत्रिय राजा होवानुं प्रबंधमां सूचवायेल छे अने एनी सभामां पंडितो **मयूर** अने **बाण**ने पण बनारसमां जणाव्या छे, पण आ वात तो सुप्रसिद्ध छे के **बाण-मयूर** जेनी सभामां हता ते **श्री हर्ष** थाणेश्वरनो वैसवंशी राजा हतो. प्रस्तुत प्रबंधमां **श्री हर्ष**ने बनारसनो राजा लख्यो छे, एनो अर्थ एम होई शके के **मानतुंगसूरि**नी साथे आ राजाए बनारसमां मुलाकात करी होय, केमके बनारसमां पण तेनुं ज राज्य हतुं. मानतुंगसूरिना समकालीन **मयूर** अने **बाणकवि** बनारस निवासी होय तो पण आश्चर्य जेवुं नथी. गमे तेम होय पण मानतुंगनो सहवासी राजा **श्री हर्ष** ते बीजो कोई नहि पण **शीलादित्य**नो समकालीन कनोजनो राजा तरीके प्रसिद्ध थाणेश्वरनो **श्री हर्ष** ज हतो. आ राजा बौद्धधर्मी होवा छतां ब्राह्मणो अने जैनश्रमणोनो घणो सत्कार करतो हतो; एम चीन परिव्राजक हुएनत्सांगना लखेला विवरण उपरथी जणाई आवे छे.

प्रबंधमां **मानतुंगसूरि**ना समयनो निर्देश कर्यो नथी, पण **मानतुंगसूरि**ना प्रशंसक राजा **श्री हर्ष**नो राजत्व समय विक्रम संवत् ६६३ थी विक्रम संवत् ७०४ सुधीमां गणाय छे. तेथी **मानतुंगसूरि**नो समय पण विक्रमनी सातमी सदीनो उत्तरार्ध भाग होवो जोईए.[1]

पट्टावलियोमां भक्तामर स्तोत्रना कर्ता आ **मानतुंगसूरि**ने उज्जयनिना वृद्ध भोजना समकालीन जणाव्या छे अने कर्नल टोडना लखवा प्रमाणे वृद्ध भोजनो समय पण विक्रमनो सातमो सैको (संवत् ६३१) छे, एटले **मानतुंगसूरि** सातमी सदीना आचार्य होवानो ज विशेष संभव छे.

पण वर्तमान जैन गच्छोनी पट्टावलियोना लेख प्रमाणे ए आचार्य वधारे प्राचीन होय तेम जणाय छे, केमके पट्टावलिमां आमने २१मा पट्टधर आचार्य तरीके वर्णव्या छे. एटलुं ज नहि पण एमने वीर संवत् ८२६नी आसपासना समयमां थया जणाव्या छे. आ हिसाबे एमनो समय विक्रम संवत् ३५६नी आसपास आवे छे.

1. डॉ. मधुसुदन ढांकी अने श्री जितेन्द्र शाह आ बाबत लांबी चर्चा करीने अंते लखे छे के "इस तथ्य को देखते हुए मानतुंगाचार्य को हम कम से कम ई. छट्ठी शती के उत्तरार्ध में रखें तो वह उनके वास्तविक काल के विशेष समीप संभवित हो सकता है।" मानतुंगाचार्य और उसके स्त्रोत्र पृ. ६८

अंचलगच्छनी बृहत्पट्टावलीमां एमने वृद्ध भोजना समसामायिक जणावीने विक्रम संवत् २८८मां उज्जयिनीमां स्वर्गवासी थया जणाव्या छे.

उपर प्रमाणे पट्टावलियोना मतथी **मानतुंगसूरि** विक्रमनी त्रीजी अथवा चोथी सदीमां थयानुं सिद्ध थाय छे, त्यारे प्रस्तुत निबंधमां लख्या प्रमाणे एमनो समय विक्रमनो सातमो सैको सिद्ध थाय छे. आम ए आचार्यना अस्तित्व समय विषे ३००-३५० वर्षनी भूल जणाई आवे छे.

१५मा पट्टधर प्रसिद्ध **आर्यवज्र**नो स्वर्गवास वीर संवत् ५८४ (विक्रम संवत् ११४) मां थयो हतो. तो २१मा पट्टधर **मानतुंगसूरि**नो समय पण विक्रमनी त्रीजी अथवा चोथी सदी पछीनो तो नहि ज संभवे. त्यारे हवे प्रश्न ए थाय छे के जो **मानतुंगसूरि** २१मा पट्टधर ज होय तो ते **श्री हर्ष** अने तेना सभापंडित **मयूर** अने **बाण**ना समसामयिक केवी रीते थई शके? आ शंकानुं समाधान ए छे के **२१मा पट्टधर मानतुंगसूरि अने प्रस्तुत प्रबंधवर्णित मानतुंगसूरि एक नहि पण भिन्न-भिन्न व्यक्तिओ हशे एम जणाय छे.** आ बंनेने भिन्न-भिन्न मानवानुं कारण समयभिन्नता तो छे ज. पण ए सिवाय बीजा पण आंतर कारणो प्रबंधमांथी मळी आवे छे. ते आ के २१मा पट्टधर **मानतुंगसूरि मानदेवसूरि**ना पट्टधर शिष्य अने **वीराचार्य**ना पट्टगुरु होवानुं पट्टावलीयोमां वर्णन छे. त्यारे आ प्रस्तुत **मानतुंगसूरि**ने **जिनसिंहसूरि**ना पट्टधर शिष्य अने **गुणाकरसूरि**ना पट्टगुरु जणाव्या छे. आथी पण जणाय छे के पट्टावलीयोवाळा **मानतुंगसूरि** अने प्रस्तुत प्रबंधवाळा **मानतुंगसूरि** एक नहि पण जुदा-जुदा छे. **पट्टावलीवाळा मानतुंगसूरिनी साथे मयूर-बाणवाळी हकीकत जोडीने पट्टावली लेखकोए आ बंने आचार्योंने एक मानी लेवानी एक स्पष्ट भूल करी छे.**[1]

प्रबंधवर्णित **मानतुंगसूरि**ना दिगम्बरावस्थाना गुरुना **'चारुकीर्ति'** अने एमना पोताना **'महाकीर्ति'** आ नामो उपरथी पण एओ छट्ठी-सातमी सदीना होवानुं ज सिद्ध थाय छे, कारण के दिगम्बर संप्रदायमां आवां नामो बहु प्राचीन कालमां अपातां न हतां.

१३. श्री मानदेवसूरि

मानदेवसूरिनो जन्म मारवाडमां **नाडोल** नगरमां थयो हतो. एमना पितानुं नाम **धनेश्वर** शेठ अने मातानुं नाम **धारिणी** हतुं.

एज समयमां सप्तशती देशमां **कोरंटक** (शिवगंजनी पासेनुं आजकालनुं कोरटा) नामनुं नगर हतुं अने त्यां **महावीरनुं मंदिर हतुं जेनो कारभार उपाध्याय देवचंद्रना अधिकारमां हतो.**

सर्वदेवसूरि नामना आचार्य विहार करता एकवार कोरंटक तरफ गया अने उपाध्याय **देवचंद्र**ने चैत्यनो वहीवट छोडावीने आचार्यपद आपी **देवसूरि** बनाव्या, एज **देवसूरि वृद्धदेवसूरि**ना नामथी प्रसिद्ध थया.

सर्वदेवसूरिए शत्रुंजय उपर जईने अनशनपूर्वक स्वर्गवास प्राप्त कर्यो.

देवसूरि पण पोतानी माटे **प्रद्योतनसूरि**ने स्थापन करी अनशन करीने स्वर्गवासी थया.

देवसूरिना पट्टधर शिष्य **प्रद्योतनसूरि** एकवार विहार करता नाडोल गया. **मानदेवे** तेमनी पासे धर्म सांभळीने वैराग्य पामी दीक्षा लीधी अने गीतार्थ थतां गुरुए तेने सूरिपद आपीने **'मानदेवसूरि'** नामना आचार्य **बनाव्या.**

1. आ प्रमाणथी भक्तामर स्तोत्रना कर्ता २१मा पट्टधर न होईने आ प्रभावक चरित्रमां दर्शावेल छट्ठी सातमी सदीना श्री मानतुंगसूरि छे. अेम जणाय छे.

मानदेवसूरिना तप अने ब्रह्मचर्यना प्रभावथी वश थईने जया-विजया नामनी बे देविओ तेमना दर्शनार्थे आवती हती.

आ समयमां तक्षशिला एक धर्मक्षेत्र हतुं. त्यां ५०० जैन चैत्यो हतां अने मोटी संख्यामां जैन संघ वसतो हतो. ए सिवाय अन्यधर्मना देवमंदिरोनी संख्या पण मोटा प्रमाणमां हती. आ जन-धनथी समृद्ध नगरीमां ते अवसरे भयंकर महामारी फाटी निकळी हती, आ रोगमां सपडायेलनी पासे जे कोई जतुं तो ते पण ए रोगनो भोग थईने पटकातुं हतुं. एथी मडदाने काढवुं तो शुं पण मांदानी पण कोई सार नहोतुं करतुं. नगरनी बहार मडदाओना ढगला खडकाई गया हता अने घरोमां पण मडदां गंधाई रह्या हतां. **बधां देवमंदिरो अपूज पड्यां हतां.** आ महामारीना प्रकोपमां जैन संघनो केटलोक भाग काळनो ग्रास बनी गयो हतो, पण जे बच्यो हतो ते जिनालयमां भेगो थईने विचार करवा लाग्यो के शुं आ ते प्रलयकाल आवी पहोंच्यो छे? **कपर्दी, अंबा अने ब्रह्मशांति यक्ष आजे क्यां गया? अफसोस! शांतिना समयमां तो शासनदेवो पोतानो परचो बतावे छे;** पण आजे ते बधा क्यां छे? संघ उपर प्रमाणे निराश थईने किंकर्तव्य मूढ बनीने बेठो छे ते ज समये शासनदेवीए आकाशवाणी करी के आ म्लेच्छोना बलवान व्यन्तरोए करेलो उत्पात छे. तेथी आमां अमारो कोईपण उपाय नथी; पण हुं संघरक्षानो एक उपाय बतावुं छुं अने ते आ के आजकाल नाडोल (मारवाडना गोडवाड प्रांतमां) नगरमां आचार्य **मानदेवसूरि** विचरे छे तेमने अहीं बोलावी तेमनुं चरणोदक जो तमारा मकानोने छांटो तो आ उपद्रव शांत थई जाय; पण आजथी त्रीजे वर्षे आ नगरनो तुरूष्कोद्वारा भंग थवानो छे माटे उपद्रव शांत थया पछी अहींथी बीजा नगरोमां चाल्या जवुं योग्य छे.

देवादेश प्रमाणे तक्षशिलाना संघे **वीरचंद्र** नामना श्रावकने नाडोल **मानदेवसूरि**ने विनंति करवा मोकल्यो. **वीरचंद्र** जे वखते नाडोल पहोंच्यो ते वखते मध्याह्ननो समय हतो. **मानदेवसूरि** अंदरना ओरडामां ध्यानमां बेठा हता अने **जया-विजया** देवीओ ओरडामां एक खूणामां बेठी हती. **वीरचंद्र** अंदर गयो पण आ दृश्यथी तेनुं मन सशंक थई गयुं. अकाल समयमां एकान्त स्थळे स्त्रीओने जोईने **वीरचंद्र**ने **मानदेवसूरि**ना चारित्र विषे शंका थई अने ते अवज्ञापूर्वक नमस्कार करीने बेसी गयो.

वीरचंद्रना आ वर्तनथी देवीए तेने धिक्कारपूर्वक शिक्षा करीने पोतानी ओळखाण आपी जेथी ते घणुं पस्तायो अने ते पछी पोताना आगमननुं प्रयोजन कह्युं, पण देवीओए तेनी साथे जवानी आचार्यने ना पाडी दीधी. जे उपरथी आचार्ये कह्युं **'अत्रत्य (अहींना) संघनी आज्ञा न होवाथी अमो त्यां नहि आवी शकीए पण त्यांना संघनुं कार्य अहींथी ज करी आपीशुं'** एम कहीने तेमणे मन्त्राधिराज गर्भित **'शान्तिस्तव'** नामक स्तोत्र बनावी **वीरचंद्र**ने आपीने कह्युं 'आना पाठथी अशिव शांत थशे' **वीरचंद्र** ते स्तोत्र लई तक्षशिला गयो अने उक्त हकीकत कहीने **शांतिस्तव**नो पाठ शरू करावतां केटलाक दिवसे रोग शांत थयो. ए पछी तक्षशिला निवासीओ त्यांथी धीरे-धीरे बीजा स्थानोमां चाल्या गया अने त्रण वर्षे तुरूष्कोए ते महानगरीनो नाश कर्यो. आ संबंधमां वृद्ध पुरुषो कहे छे के ते समयनी पित्तल अने पाषाणनी जिनमूर्त्तिओ हजी पण भग्नतक्षशिलामां विद्यमान छे.

योग्य शिष्यने पाटे स्थापीने **मानदेवसूरि** अनशन करी देवगतिने प्राप्त थया.

मानदेवसूरिना संबंधमां बे वातो खास विचारणीय छे, तेमां एक तो एमनो अस्तित्व समय अने बीजो तक्षशिलानो भंग. पट्टावलियोमां **मानदेव** नामना बे आचार्योनुं वर्णन छे तेमां प्रथम **मानदेवसूरि**ने २० मा पट्टधर तरीके लख्या छे अने बीजा **मानदेवसूरि**ने प्रसिद्ध **आचार्य हरिभद्र**ना मित्र अने २८मा पट्टधर मान्या छे. कोई कोई पट्टावलीकारे **वृद्ध देवसूरि**ने आचार्यपद आपनार **सर्वदेवसूरि**ने १८मा पट्टधर लख्या छे. तेमना मते बंने **मानदेवसूरि** अनुक्रमे २१मा अने २९मा पट्टधर हता. आ बे **मानदेवसूरि**मां आपणा प्रस्तुत आचार्य २०मा पट्टधर प्रथम **मानदेवसूरि** छे. पट्टावलीयोमां आमनो समय वीरनिर्वाणनो आठमो सैको होवानुं जणावेल छे. अंचलगच्छनी

बृहत्पट्टावलीमां आ **मानदेवसूरि**ने २१मा पट्टधर आचार्य लख्या छे अने वीर निर्वाण ७३१ (विक्रम संवत् २६१) वर्षो वीत्या पछी गिरनार उपर स्वर्गवासी थयानुं जणाव्युं छे.

आ उपरथी स्पष्ट जणाय छे के आ **मानदेवसूरि** विक्रमनी त्रीजी शताब्दीना आचार्य छे; छतां आश्चर्य ए छे के आ **मानदेवसूरि** एमना पट्टगुरुओ अने एमना पट्टशिष्यो वगेरेनो भाष्यो अने चूर्णिओ वगेरेमां कंईपण उल्लेख थयो जोवातो नथी.

हवे आपणे तक्षशिलाना भंगवाळी घटनानो विचार करीए. प्रबंधमां आ तक्षशिलानो भंग तुरूष्को (तुरको) ना हाथे थयानुं जणाव्युं छे. आ बनाव **मानदेवसूरि**ना जीवित समयमां अथवा तेना नजीकना समयमां बनेल होवाथी आनो समय विक्रम संवत २६४ पहेलानुं कोई वर्ष होवुं जोईए.

उपर जणावेल समयमां कई विदेशी जातिए हिन्दुस्थान उपर चढाई करीने तक्षशिलानो नाश कर्यो हतो ते ईतिहास उपरथी स्पष्ट जणातुं नथी. उक्त घटना **कालकुशान** वंशना राज्यनो अंतिम अवस्थानो समय हतो अने लगभग ए ज समयनी आसपास ससेनियन राजा अर्दशीरे हिन्दुस्थान उपर चढाई करीने सिन्धु सुधीना प्रदेशोने कबजे कर्या हता. संभव छे के आ ससेनियन जातिए हिन्दुस्थान पर करेल चढाईना परिणामे तक्षशिलानो नाश थयो होय अथवा तेने वधारे नुकसान थयुं होय; अने त्यांना जैनो आ लडाईनी धमाल चाले ते पूर्वे ज पंजाब तरफ आवी गया होय. मारा विचार प्रमाणेनी ओसवाल जाति तक्षशिला वगेरे पश्चिमना नगरोथी निकळेल जैन संघमांथी उतरी आवी छे. ए जातिनी केटलीक खासियतो अने शाकद्विपि ब्राह्मणो (सेवको) नो संबंध जोतां पण ओसवालोना पूर्व पुरुषो हिन्दुस्थाननी पश्चिम दिशामांथी आव्या हशे एम खुशीथी कही शकाय.

तक्षशिलामां ५०० जैनचैत्यो होवानुं अने हजी पण पित्तल अने पाषणनी प्रतिमाओ होवानुं प्रबंधकार लखे छे अने ए कथन दंतकथा मात्र नहि पण वास्तविक सत्य होय तेम जणाय छे. हमणां थोडा ज वर्षो उपर त्यां खोद काम करतां जुना ढंगनां अनेक जैन चैत्यो जमीन नीचेथी निकळ्यां हतां, ए बतावे छे के तक्षशिला खरे ज धर्मक्षेत्र हतुं; पण अवार नवार थता विदेशीओनां आक्रमणोना परिणामे छेवटे आ नगरीनो नाश थयो हतो. अने विक्रमनी त्रीजी-चोथी सदी पछी त्यां जैनोनो वसवाट लगभग ओछो थतां जैनोनां चैत्यो अने तीर्थो उपर बौद्ध लोकोए पोतानी सत्ता जमावी हती. जैनोना अति प्राचीन तीर्थोमांनुं तक्षशिलानुं धर्मचक्र तीर्थ के जे **चंद्रप्रभजिन**नुं धाम हतुं एम **महानिशीथ सूत्र** उपरथी जाणी शकाय छे, तेना उपर पण पाछळथी बौद्धोए पोतानो अधिकार जमावी लीधो हतो. चीननो परिव्राजक हुएनत्सांग हिन्दुस्थाननी मुसाफरीए आव्यो ते समये (विक्रमना छट्ठा सैकामां) धर्मचक्र बौद्धोना ताबामां हतुं अने ते लोको आने **चंद्रप्रभ** बोधिसत्वनुं तीर्थ गणता हता.

मारवाडमां **नाडोल अने कोरटा नामना स्थानो केटलां बधां पुराणां छे** ते आ प्रबंध उपरथी जणाई आवे छे. **कोरटा**ना महावीर चैत्यनो उपाध्याय **देवचंद्र** वहीवट करता हता. आवी हकीकत प्रबंधमां जणावी छे. जो आ कथन खरुं ज होय तो चैत्यवासीओनी प्राचीनतानो ए पुरावो छे. जो के पट्टावलीयोमां वीर संवत् ८८२ (विक्रम संवत ४१२) मां चैत्यवासिओ थयानुं लखाण छे. पण खरुं जोतां चैत्यवास उक्त समयनी पूर्वे पण हतो एम जैन सूत्रोनां भाष्यो अने चूर्णिओ उपरथी पण जणाई आवे छे. ८८२मां चैत्यवासी थयानुं जे पट्टावलीयोमां जणाव्युं छे तेनो अर्थ ए छे के ते समये चैत्यवास पूरा जोर उपर आवी गयो हतो अने **सुविहितो करतां चैत्यवासी साधुओनी संख्या वधी गई हती.**[1]

1. श्री मानदेवसूरि ए सिंघ अने पंजाबमां विहार कर्यो हतो अने त्यांना सोढा रजपुत्रोने प्रतिबोध आपी जैन बनाव्या हता. [शासन प्रभावक श्रमण भगवंतो (भा. १ पृ. १७१)]

१४. श्री सिद्धऋषि

आचार्य सिद्धर्षिनो जन्म भीनमाल निवासी श्रेष्ठी शुभंकरने त्यां थयो हतो. शेठ **शुभंकर**नी भीनमालना प्रसिद्ध श्रीमंतोमां गणना हती, एनी स्त्रीनुं नाम **लक्ष्मी** हतुं, आपणा चरित्र नायक **सिद्धर्षि**नो ए ज लक्ष्मीनी कूखथी जन्म थयो हतो.

योग्य वयमां आवतां **सिद्ध**ना लग्न थयां, पण तेमां एक खोटुं व्यसन हतुं, ते जुगारीओनी सोबतमां पडी गयो हतो, दिवस अने रात तेनुं मन त्यां ज रहेतुं, रात्रे बहु ज मोडो-अर्धरात्रि पछी घरे आवतो, आथी तेनी स्त्रीने बहु दुःख थतुं, पण तेनुं चालतुं न हतुं. एक दिवस एनी माताए द्वार बंध कर्यां अने ज्यारे बहु रात गये **सिद्धे** आवीने द्वार उघाडवाने कह्युं त्यारे तेनी माता ए कह्युं—'आ समयमां ज्यां द्वार उघाडा होय त्यां चाल्यो जा' माताना आ कथनथी सिद्ध त्यांथी पाछो फर्यो अने **गर्गर्षि** नामना आचार्यना उपाश्रयनुं द्वार उघाडुं जोई तेमां गयो [1]**अने पोताने दीक्षा आपवानी आचार्यने प्रार्थना करी; पण आचार्ये कह्युं के अमे अदत्तादान लेता नथी. माटे तारा कुटुंबीजनोनी आज्ञा सिवाय दीक्षा नहि आपीए. सिद्ध त्यां ज बेठो रह्यो. प्रभातमां तपास करतां शुभंकर शेठ त्यां आव्या अने सिद्धने घरे आववाने घणुं समजाव्यो, पण तेणे मान्युं नहि अने छेवटे पितानी आज्ञा मेळवीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी.** आम मातानुं तिरस्कार वचन ए ज सिद्धना वैराग्यनुं कारण थयुं.

सिद्धर्षिना गुरु **गर्गर्षि** निर्वृतिकुलना **सूराचार्य**ना शिष्य हता एम प्रबंधकार लखे छे. **सिद्धर्षि** पोते पण उपमितिभवप्रपंचानी प्रशस्तिमां प्रथम **निर्वृतिकुल** अने **सूराचार्य**नो ज उल्लेख करे छे; पण ते पछी **देल्लमहत्तर**नो अने **देल्लमहत्तर** पछी **दुर्गस्वामी**नो नामोल्लेख करीने छेवटे **दुर्गस्वामी**ना अने पोताना दीक्षादायक तरीके **गर्गर्षि**नो निर्देश करे छे. आ उपरथी एम जणाय छे के **सूराचार्य**ना बे शिष्यो हशे पहेला **देल्लमहत्तर** अने बीजा **गर्गर्षि**, **देल्लमहत्तर**ना **दुर्गस्वामी** अने **गर्गर्षि**ना **सिद्धर्षि** शिष्य हशे अने आ बंनेनी दीक्षा **गर्गर्षि**ना हाथे थई हशे.

प्रबंधमां कुवलयमाला कथा **सिद्धर्षि**ना गुरुभाई **दाक्षिण्यचंद्रे** बनाव्यानो उल्लेख छे ते विचारवा जेवो छे, कारण के 'कुवलयमालाकथा' ना कर्तानुं नाम 'दक्षिण्यचंद्र' नहि पण 'दाक्षिण्यचिह्न' छे अने ते **सिद्धर्षि**ना गुरुभाई नहि पण चंद्रकुलना आचार्य हता. अने तेमणे विक्रम संवत् ८३५ना वर्षमां कुवलयमालानी रचना करी हती, ज्यारे सिद्धर्षिए विक्रम संवत् ९६२मां उपमितिभवप्रपंचानी रचना करी हती. आवी रीते दाक्षिण्यचिह्न सिद्धर्षिथी १२७ वर्ष पूर्वे थई गया छे. आ स्थितिमां कुवलयमाला कथाकार अने उपमितिभवप्रपंचा कथाकारने समकालीन गुरुभाई मानवामां मोटो विरोध आवे छे. कदाच दाक्षिण्यचिह्नथी दाक्षिण्यचंद्र नामना भिन्न कवि **सिद्धर्षि**ना गुरुभ्राता मानवामां आवे अने तेमणे बीजी कुवलयमाला कथा बनावी हशे एम मानवामां आवे तो पूर्वोक्त विरोधनो परिहार थई शके, पण आ नवी कल्पनाने सत्य ठरावनार प्रमाण नथी एटले ए कल्पना पण केवल कल्पना ज रहे छे.

गुरुनी इच्छा न होवा छतां **सिद्धर्षि** बौद्धतर्कशास्त्रनो अभ्यास करवा जाय छे अने त्यां बौद्धधर्मनी दीक्षा ग्रहण करे छे, पण वचनबद्ध होवाथी ते एकवार पोताना मूल गुरु पासे आवे छे अने गुरु तेने **आचार्य हरिभद्र**नी 'ललित विस्तरा' नामनी चैत्यवन्दनसूत्र वृत्ति वांचवा आपे छे. जेथी **सिद्धर्षि**नुं मन पाछुं जैन दर्शनमां स्थिर थाय छे. आ बधी हकीकत ऐतिहासिक छे एमां कंई पण शंका नथी; कारण के **सिद्धर्षि**ए पोते उपमितिभवप्रपंचा कथामां ए **हरिभद्रसूरि**नी तेवा प्रकारनी प्रशंसा करीने आ वातनुं समर्थन कर्युं छे; न्यायावतारनी वृत्ति उपरथी पण **सिद्धर्षि**ए बौद्धतर्कशास्त्रनो सारो अभ्यास कर्यानुं सिद्ध थाय छे.

1. ए समयमां साधुओ उपाश्रयोना द्वार बंध करता नहोता. सूत्रोमां पण साधुओने उपाश्रयना द्वार बंध करवानो निषेध करेल छे. (सं.)

सिद्धर्षि ज्यां तर्कशास्त्र भणवा गया हता ते नगरनुं नाम **'महाबोध'** लख्युं छे. ए नगर क्यां हतुं तेनो कंई पत्तो लागतो नथी, पण ''प्रान्तरस्थितदेशेषु गमनायोन्मनायितः'' आ वर्णनथी जणाय छे के ते स्थान 'तक्षशिलानुं विश्वविद्यालय' अथवा 'नालंदाविश्वविद्यालय' आ बेमांथी एक होवुं जोईए. प्रबंधकार **सिद्धर्षि**ने प्रसिद्ध कवि **माघ**ना पितराई भाई लखे छे, ते कहे छे के—'भीनमालना राजा **वर्मलात**ना मंत्री **सुप्रभदेव**ने दत्त अने शुभंकर नामना बे पुत्रो हता. तेमां दत्तनो पुत्र कवि 'माघ' अने शुभंकरनो पुत्र आ चरित्रनायक 'सिद्ध' थयो.

राजा **वर्मलात**नो सत्ता समय वसंतगढना एक लेख उपरथी विक्रमनी सातमी सदी सिद्ध छे. कवि माघ पण शिशुपालवध काव्यनी प्रशस्तिमां पोताना दादा **सुप्रभदेव**ने **वर्मलात**नो सर्वाधिकारी मंत्री लखे छे एटले **सुप्रभदेव** निस्संशय सातमी सदीनो व्यक्ति ठरे छे अने एना पौत्र **माघ कवि**ने सातमी सदीना अंतमां थयो मानीए तो कंई पण अघटित नथी, ज्यारे **सिद्धर्षि**नो सत्ता समय पूर्वे लख्या प्रमाणे दशमी सदीनो मध्यभाग छे. आम एकबीजाथी लगभग अढीसो वर्षने आंतरे थयेल **माघ** अने **सिद्धर्षि**ने पितराई भाई केवी रीते मानी शकाय ते प्रबंधकार ज जाणे. अमारा विचार प्रमाणे तो आ हकीकत केवल दंतकथा छे अने एमांथी जो कंई पण सारांश काढीए तो एटलो ज नीकळी शके के सिद्धर्षि प्रसिद्ध कवि माघना वंशमां थया हता.

सिद्धर्षिनो समय **चैत्यवासि**ओना साम्राज्यनो समय हतो; छतां **सिद्धर्षि** अने एमना गुरु, गुरुभाईओ वगेरे त्याग-वैराग्यवान् हता. जो के **सिद्धर्षि**ए पोते उपमितिभवप्रपंचा कथानुं व्याख्यान मंदिरना अग्रमंडपमां बेसीने कर्युं हतुं छतां ते सुविहित साधु हता, **चैत्यमां धर्मोपदेश करनारने चैत्यवासी मानी लेवानी कोई भूल न करे.** जिनमंदिरमां बेसीने धर्मोपदेश करवो. ए प्रत्येक साधुनो शास्त्रविहित अधिकार छे. [1]नूतन गच्छसृष्टि पहेलां चैत्यवासी के सुविहित साधु दरेक जिनचैत्यना अग्रमंडपमां बेसीने धर्मकथा करता हता. पण नूतनगच्छ प्रवर्तकोए अनेक प्रवृत्तिओनी जेम आ प्रवृत्तिने पण चैत्यवासीओनी प्रवृत्ति मानीने एनो निषेध करवा मांड्यो. त्यार पछी धीरे-धीरे आ प्रवृत्ति बंध पडी गई.

सिद्धर्षिनो विहार संबंधी विशेष माहिती मळती नथी. पण एमना गुरुओ अने गुरुभाईओ गुजरातमां विचर्या हता, ए जोतां एमनो विहार पण घणे भागे गुर्जरभूमिमां अने मारवाडमां थयो हशे.

सिद्धर्षि सारा व्याख्याता हता अने एथी ज एमने **'सिद्ध व्याख्याता'** आवुं बिरुद मळ्युं हतुं.

सिद्धर्षिए 'उपदेशमाळा वृत्ति' अने 'उपमिति भवप्रपंचा कथा' आ बे ग्रंथो रच्यानो प्रबंधमां उल्लेख छे. पण 'न्यायावतारवृत्ति' नामनो एक न्याय विषयनो ग्रंथ पण एमणे बनाव्यो छे. आ त्रणे ग्रंथ वर्तमानमां छे, पण ए उपरांत कोई ग्रंथ एमणे बनाव्यो हतो के नहि ते जाणवामां नथी.[2]

सिद्धर्षिनो जन्म, दीक्षा अने स्वर्गवास संबंधी समय जाणवामां आव्यो नथी. मात्र तेओ संवत् ९६२मां विद्यमान हता एम उपमितिभवप्रपंचाथी सिद्ध थाय छे.

१५. श्री वीरगणि

वीरगणि गृहस्थावस्थामां भीनमालना रहेवासी प्राग्ग्रहर **शिवनाग** शेठना पुत्र हता, एमनी मातानुं नाम **पूर्णलता** हतुं.

वीरे कोटिध्वज शेठनो पुत्र होई सात कन्याओनुं पाणिग्रहण कर्युं हतुं, छतां ते धर्मना संस्कारवाळो हतो.

1. आ वात उपरथी जिन मंदिरमां गुरु भगवंतने वंदन करवानी विधि शास्त्रोक्त सिद्ध थाय छे. तो गुरु मूर्तिने वंदना करवामां कोई दोष छे ज नहीं. 2. आ उपरांत श्री चंद्रकेवली चरित्र पण प्रसिद्ध थयेल छे.

पिताना मरण पछी तेणे पर्व दिवसोमां साचोरनी यात्रा करवानो नियम कर्यो हतो. अने पोतानी माताना मरण पछी तो वीरनुं मन संसारथी बिलकुल उतरी गयुं हतुं. तेणे पोताना धनमांथी एक-एक क्रोड एक-एक स्त्रीने आपीने बाकीनुं सर्व धन संघपूजा अने देहरासरोमां खर्चीं गृहवस्थवेशे ज परिग्रहनो त्यागी थई साचोर जईने ते भगवान महावीरनी आराधनामां लाग्यो हतो. आठ आठ उपवासने पारणे निर्विकृतिक प्रासुक भोजन करतो अने नगरनी बहार स्मशान वगेरेमां रहीने कायोत्सर्ग ध्यान करी विविध कष्टोने सहतो वीर महान् तपस्वी थईने साचोरमां रहेतो हतो.

एकवार सांजना समये कायोत्सर्ग माटे ते गाम बहार गयो, तेटलामां मथुराथी विचरता आवेला **विमलगणि** नामना मुनि मळ्या वीरे तेमने वंदन कर्युं अने तेमने धर्मलाभ आपीने कह्युं—'महानुभाव! हुं तने 'अंगविद्या'नो उपदेश करवा आव्यो छुं.' **वीर** तेमने पोताना उपाश्रये लई गयो. अने सर्व रात सेवा अने धर्मचर्चामां व्यतीत करी. मुनिराजे वीरने अंगविद्या भणवानो आग्रह करतां कह्युं—'महानुभाव! आ अंगविद्याने तुं भणीने प्रभावक था. हुं परलोकनुं साधन करवा तत्पर थयो छुं, माटे मारी पासेथी आ अंगविद्याना अर्थ सांभळी ले अने आनुं पुस्तक **थरादना** जिनमंदिरना शुकनाशमां छे माटे त्यां जईने ते वांची लेजे.' एम कहीने **विमलगणिए वीरने** दीक्षा आपीने त्रण दिवस त्यां रही अंगविद्यानो आम्नाय शीखवी तेओए शत्रुंजयनी तरफ प्रयाण कर्युं अने त्यां जई अनशनपूर्वक देहत्याग कर्यो. **वीरे** पण गुरुनी आज्ञा प्रमाणे **थराद** जईने कहेल स्थानमांथी श्रावको द्वारा पुस्तक प्राप्त कर्युं अने अंगविद्या भणीने महा शक्तिशाळी तपस्वी थया.

थरादथी विहार करीने **वीर मुनि** अणहिल पाटण तरफ जता हता त्यां वचमां स्थिरा गाम (राधनपुर पासेनुं थरा गाम) आव्युं. ज्यां **वल्लभीनाथ** अथवा **विरूपानाथ** नामना व्यन्तरोनुं स्थान हतुं, **वीरगणि** तेना स्थानमां ज रात्रि वासो रह्या अने ते क्रूर व्यन्तरने शांत करीने हिंसानो त्याग कराव्यो एटलुं ज नहि पण त्यां कोई पण रीते हिंसा न थाय ए माटे पाटणना राजा **चामुंडराज**नी महोर छापवाळुं आज्ञापत्र पण कढाव्युं. **वीरगणि**नी आवी अपूर्व शक्तिथी प्रसन्न थईने **वल्लभीनाथे** प्रत्यक्ष थईने कह्युं के—'पूर्व दिशामां डक्करीपुरी (डाकोर) मां भीमेश्वर महादेवनुं लिंग मारा प्रयोगथी फाट्युं ते हजी पण फाटेलुं ज पूजाय छे, महाबोधमां बौद्धोना पांचसो विहारोनो भंग कर्यो, महाकाल तो मारा भयथी खूणे जईने बेठो छे, ज्यारे सोमेश्वरने जीतवा हुं निकळ्यो हतो तेणे ब्राह्मणना रूपमां आवीने मने वचनबद्ध करीने अत्र स्थिर राख्यो छे के जे उपरथी आ गामनुं नाम स्थिरा (थरा) पड्युं छे. मारी आवी शक्तिनो आज पहेलां कोईए पराभव नथी कर्यो, पण आजे तमे तमारी शक्तिथी मने हराव्यो छे.' आम वलभीनाथने प्रतिबोधीने **वीरगणि** पाटण गया, ज्यां तेमने **वर्द्धमानसूरिए** आचार्य पद आप्युं. प्रबंधकार लखे छे के **वीरगणिए** आ वलभीनाथनी सहायथी अष्टापदनी यात्रा करी हती अने तेनी यादी तरीके तेओ त्यांथी दिव्य अक्षत लईने आव्या हता के जे अक्षत तुरकोए पाटणनो भंग कर्यो त्यां सुधी तेमना उपाश्रयमां अष्टापदनी स्थापनारूपे पूजाता हता.

राजा चामुंडने पुत्र न हतो, एथी तेणे पोतानी ए चिंता पोताना मंत्री **वीर** (प्रसिद्ध मंत्री विमलशाहना पिता) ने जणावी, **वीरे** आ वात **वीरसूरि**ने जणावी जे उपरथी तेमणे पोतानो वासक्षेप आपीने कह्युं के राणीओने आ वासयुक्त जलनो अभिषेक करावववाथी तेमनो गर्भस्त्रावनो रोग दूर थशे अने तेमज थयुं. चामुंडराजने वल्लभराज वगेरे पुत्रो थया.

एकवार **वीरसूरि** विहार करता अष्टादश शती देश (आबुनी आसपासनो प्रदेश)मां उंबरणी गाममां (खराडी पासे) आव्या हता. सांजे तेओ कायोत्सर्ग ध्यान माटे गामनी बहार जता हता त्यां तेमने परमार वंश्य **रुद्र** नामक पुरुष मळ्यो तेणे वंदन करीने कह्युं—महाराज! रात्रे आ भयंकर श्मसानमां न रहो, अहीं श्वापदोनो घणो ज

भय छे. राजपुत्रनी आ वात सांभळीने आचार्यना शिष्ये कह्युं राजपुत्र! तमो आ विषे कशी चिंता न करो; गुरु महाराज सदाय आवा स्थानोमां ज ध्यान करे छे. ए सांभळी ते राजपुत्र पोताने स्थानके गयो, ते दिवसे तेने जंबूफल भेटमां आव्यां हतां ते खातां तेमां तेने कीडा देखवामां आव्या, आ बनावथी तेने वैराग्य उत्पन्न थयो अने **वीरसूरि** पासे जई तेणे दीक्षा ग्रहण करी, एज **रुद्र** दीक्षित थई **वीरसूरि**ना पट्टधर शिष्य श्री **चंद्रसूरि** थया.

संवत् ९३८मां **वीरगणि**नो जन्म थयो. संवत् ९८०मां दीक्षा लीधी अने संवत् ९९१ना वर्षमां स्वर्गवास थयो.

वीरगणिनो समय शिथिलाचार प्रधान हतो छतां **वीर** जेवा गर्भश्रीमंतोए क्रोडोनी संपत्तिनो त्याग करीने जे उग्र त्यागमार्गनो दाखलो बेसाड्यो हतो ते जणावतो हतो के आ समये पण खरा त्यागीओनो अभाव न हतो.

वीरना दीक्षागुरु **विमलगणि** कया गच्छना हता ते जणायुं नथी अने तेमने सूरिपद आपनार **वर्द्धमानसूरि** कया ते पण कहेवुं मुश्केल छे. विक्रमनी अगियारमी सदीना मध्यमां थयेल चंद्रकुलीन **वर्द्धमानसूरि**ने जो एमना आचार्यपददाता मानीए तो **वीरगणि**ना समय साथे तेमनो समय मळतो नथी. **वीरे** संवत् ९८०मां दीक्षा लीधी हती, ज्यारे उक्त **वर्द्धमानसूरि** विक्रम संवत् १०८४मां विद्यमान हता.

वीरना समयमां भीनमालमां धूमराज वंशी 'देवराज' नामनो राजा होवानुं प्रबंधमां लखेल छे. धूमराज ए परमारोनो आदि प्रसिद्ध पुरुष हतो. विक्रमनी अगियारमी सदीमां जालोरमां पण **देवराज** नामनो परमार राजा राज्य करतो हतो. अने ते वखते भीनमाल जालोरने ताबे पण हतुं; छतां आ देवराज अने भीनमालनो देवराज एक हतो के भिन्न ते कही शकाय तेम नथी; कारण के आ बंनेनो समय कंईक भिन्न छे. **वीरगणि**ना समयमां पाटणमां चामुंडराजा राज्य करतो हतो. अने तेने वल्लभराज आदि पुत्रो हता एम प्रबंध उपरथी जणाय छे. मेरूतुंगनी स्थविरावली टीकाना लेख प्रमाणे पाटणमां चावडा वंशी **चामुंडराज** नामनो राजा दशमी सदीमां थई गयो छे जेनो राज्य समय संवत् ९४४ थी ९७० सुधी हतो. पण प्रबंधना लेख प्रमाणे **वीरगणि** ए संवत् ९८०मां दीक्षा लीधी होवाथी तेनी साथे आ समयनो मेळ मळतो नथी. प्राचीन राज्य पट्टावलियोना लेख प्रमाणे मूलराजनो उत्तराधिकारी चामुंडराज हतो अने तेने वल्लभराज आदि पुत्रो पण हता, पण आ चामुंडनो समय पण **वीरगणि**ना समय साथे मेळ खातो नथी. **वीरगणि**नो श्रमणत्व काल ९८० थी ९९१ सुधीनो छे ज्यारे आ चामुंडराजनो राजत्व काल १०५३ थी १०६६ सुधीमां हतो. वळी चामुंडनो मंत्री **वीर** होवानुं प्रबंधकार जणावे छे. वीरमंत्री प्रसिद्ध मंत्री **विमलशाह**ना पिता हता अने विमलनो समय विक्रमनी अगियारमी सदीनो उत्तर भाग हतो. केमके संवत् १०८८ना वर्षमां विमले आबुना मंदिरनी प्रतिष्ठा करावी हती. आथी **विमल**ना पिता वीरनो समय पण अगीयारमी सदीनो पूर्व भाग ज मानी शकाय दशमी सदीनो उत्तरभाग नहि.

उपरनी बधी वातोनो विचार करतां प्रबंधमां जणावेल **वीरगणि**नो अस्तित्व समय निर्दोष होवो मुश्केल लागे छे अने जो तेने सत्य ज मानीए तो प्रथम धूमराज वंश्य देवराजनुं ते समयना भीनमालना राजा तरीकेनुं अस्तित्व साबित करवुं जोईए. बीजुं वीरमंत्री अने चामुंडने वल्लभराज पुत्र होवा संबंधी हकीकत असत्य मानवी पडशे. पण हुं धारुं छुं त्यां सुधी ए वातो खोटी नहि पण वीरनो अस्तित्व समय ज आमां गलत बतावेल छे. खरी रीते वीरगणि अगियारमी सदीना पूर्वार्धमां थयेल व्यक्ति होवा जोईए, ते समयमां जालोरना परमार राजा चंदनना पुत्र देवराजनुं भीनमालमां राज्य हतुं. पाटणमां मूळराजपुत्र चामुंडनुं राज्य हतुं. ए बधी वातोनो समन्वय थवा साथे **वर्धमानसूरि**नुं समकालीनपणुं पण सहेजे मळी रहे छे.

१६. श्री शांतिसूरि

वादिवेताल **शांतिसूरि**नो जन्म राधनपुर पासेना **उण** नामना गाममां थयो हतो. एमना पिता शेठ **धनदेव** अने माता **धनश्री** नामे हतां. **शांतिसूरि**नुं गृहस्थावासनुं नाम **भीम** हतुं. आ अवसरे पाटणमां **'संपक विहार'** नामनुं थारापद्रगच्छाश्रित एक प्रसिद्ध जिनमंदिर हतुं अने तेनी पासे ज **थाराप्रद्रगच्छ**नो उपाश्रय हतो. ज्यां **थारापद्रगच्छीय विजयसिंहसूरि** नामना आचार्य बिराजमान हता.

विजयसिंहसूरिए कालान्तरे **उण**नी तरफ विहार कर्यो अने धनशेठने समजावी **भीम**ने दीक्षा आपी अने 'शांति' नामे पोतानो शिष्य कर्यो, **शांतिमुनि** आचार्यपद पामी **विजयसिंह**ना पट्टधर शिष्य **शांतिसूरि** थया.

शांतिसूरि पाटणमां भीमराजानी सभामां 'कवीन्द्र' तथा 'वादिचक्रवर्ती' आवा पदोथी प्रसिद्ध थया. कवि **धनपाल**नी प्रार्थनाथी **शांतिसूरि**ए मालवामां विहार कर्यो अने **भोजराजा**नी सभाना ८४ वादिओने वादमां जीतीने राजा भोजना तरफथी शरत प्रमाणे ८४ लाख मालवी रूपिया मेळव्या हता, **मालवाना १ लाखना गुजरात देशना १५ हजार थतां होवाथी** भोजे ते हिसाबे १२, ६०,००० गुर्जरदेशना रूपिया **शांतिसूरि**ने अर्पण कर्या हता, जेमांथी १२ लाख तो तेमणे त्यांज जैन जिनालय करावावामां खर्चाव्या अने बाकीना ६० हजार **थरादनगरे** मोकलाव्या अने ते रूपियाथी **थरादना आदिनाथना मंदिरना** मूलनायकनी डाबी बाजुमां देहरी अने रथ वगेरे कराव्या. पोतानी सभाना पंडितो माटे **शांतिसूरि** वेताल जेवा निवडवाथी राजा भोजे तेमने **'वादिवेताल'** ए बिरुद आप्युं. धारानगरीमां केटलोक समय रहीने **शांतिसूरि**ए महाकवि **धनपाल**नी तिलकमंजरी कथानुं संशोधन कर्युं अने ते पछी धनपालनी साथे तेओ पण पाटण आव्या. आ वखते त्यांना रहेवासी **जिनदेव** शेठना पुत्र **पद्मदेव**ने सर्पदंश थयो हतो. जेथी तेने मृत समजी भूमिमां दाटी दीधो जेने **शांतिसूरि**ए निर्विष करी सजीवन कर्यो हतो.

शांतिसूरिने ३२ शिष्यो हता जे बधाओने तेओ चैत्यमां प्रमाणशास्त्रनो अभ्यास करावता हता जे वखते नाडोलथी विहार करीने आवेला **मुनिचंद्रसूरि** पाटणनी चैत्यपरिपाटी यात्रामां फरता त्यां आव्या अने दर्शन करीने उभा उभा ज पाठ सांभळी गया, ए रीते पंदर दिवस पर्यन्त दर्शनार्थे त्यां आवीने तेमणे पाठ सांभळ्यो, सोळमे दिवसे शिष्य मंडळीनी परीक्षा करतां **मुनिचंद्रसूरि**नी बुद्धिनो चमत्कार जोवामां आव्यो. आ उपरथी **शांतिसूरि**ए **मुनिचंद्रसूरि**ने प्रीतिपूर्वक पोतानी पासे प्रमाणशास्त्रनो अभ्यास करवानो आग्रह कर्यो, जे उपरथी **मुनिचंद्रसूरि**ए पोताने माटे स्थानकनी अगवड बतावी, **शांतिसूरि**ए टंकशालनी पछवाडे एक श्रावकनी पासे मकान अपाव्युं ज्यां रहीने **मुनिचंद्रसूरि**ए षट्दर्शनशास्त्रोनुं अध्ययन कर्युं, ए पछी पाटणमां सर्व गच्छना सुविहित साधुओने उतरवा लायक उपाश्रय थया.

शांतिसूरिए उत्तराध्ययन सूत्र उपर एक विस्तृत अने तर्क पूर्ण टीका बनावी के जेना आधारे पूर्वोक्त **मुनिचंद्रसूरि**ना शिष्य **वादिदेवसूरि**ए दिगम्बर वादि **कुमुदचंद्र**ने पाटणमां सिद्धराज जयसिंहनी सभामां जीत्यो हतो.

एकवार कवि **धनपाल**ना मुखथी प्रशंसा सांभळीने कौल (शक्ति उपासक) कवि धर्म **शांतिसूरि**नी मुलाकाते पाटणमां आव्यो अने **थारापद्रगच्छ**ना उपाश्रयमां तेमनी साथे वाद करीने पराजित थयो.

ए सिवाय एक द्राविड वादीए पण **शांतिसूरि**ने हाथे पराजय मेळव्यो हतो. आ वादीनुं नाम प्रबंधमां जणाव्युं नथी. प्रबंधकार लखे छे के थरादमां नागिनीदेवी **शांतिसूरि**ना व्याख्यानमां नियमित रीते आवती हती, **शांतिसूरि**नुं ६ मासनुं आयुष्य शेष रह्युं त्यारे नागिनीए तेमने गच्छनी व्यवस्था करवानी सूचना करी हती जे उपरथी

तेमणे पोताना ३२ शिष्योमांथी **वीर, शालिभद्र** अने **सर्वदेव** आ त्रणने सूरिपद अर्पण कर्युं, आमां **वीरसूरि**नी संतति आगळ चाली नहि पण राजपुरमां 'नेमिनाथ' ए **वीरसूरि**नुं शाश्वत स्मारक रह्युं, ज्यारे **शालिभद्रसूरि** अने **सर्वदेवसूरि**नी शिष्य संतति हजी (संवत् १३३४) सुधी पाटणमां विद्यमान छे.

शांतिसूरिए पूर्वोक्त रीते गच्छव्यवस्था करीने श्रावक यशना पुत्र **सोढ**नी साथे गिरनार तरफ प्रयाण कर्युं अने थोडा ज दिवसोमां गिरनार जईने अनशन धारण कर्युं अने २५ दिवस सुधी अनशन पाळी संवत् १०९६ना जेठ सुदि ९ मंगळवार अने कृतिका नक्षत्रमां ते स्वर्गवास पाम्या.[1]

शांतिसूरिना गुरु **विजयसिंहसूरि**ना विषे विशेष जाणवामां आव्युं नथी, ए नामना अनेक आचार्यो-ग्रंथकर्ता पण-थई गया छे; पण विशेष विवरण न मळवाथी ए विषे कंई पण स्पष्टीकरण थवुं अशक्य छे. आ आचार्यनो गच्छ जे **'थारापद्रगच्छ'**ना नामथी ओळखाय छे ते जैन ईतिहासमां घणो प्रसिद्ध छे, एमां अनेक विद्वान अने धुरंधर आचार्यो थई गया छे. रामसेनना एक जैन लेख उपरथी जणाय छे के आ गच्छना आदि पुरुष 'वटेश्वराचार्य' हता के जे कुवलयमालावाळा 'वडेसर आयरिय' थी अभिन्न जणाय छे अने ए उपरथी आ गच्छनी उत्पत्ति लगभग विक्रमनी सातमी सदीमां थयानुं अनुमान करी शकाय छे.

डीसा केम्पनी पश्चिममां लगभग २५ कोश उपर आवेल आजनुं 'थराद' ते ज आ गच्छनुं उत्पत्ति स्थान प्राचीन 'थारापद्र' छे.

शांतिसूरिनुं जन्म गाम पाटणथी पश्चिमनां 'उन्नतायु' नामे प्रबंधकारे बताव्युं छे ते राधनपुर पासेनुं आजकालनुं **'उण'** नामनुं गाम समजवानुं छे.

पाटणमां भीमदेवनुं राज्य संवत् १०७८ थी ११२० सुधीमां हतुं. एथी **शांतिसूरि**ए १८ वर्ष भीमदेवनुं राज्य जोयुं अने ए समय दरमियान तेमणे **'कवीन्द्र'** अने **'वादि चक्रवर्ती'**नां बिरुद मेळव्यां गणाय.

धनपाल कविए विक्रम संवत् १०२९मां पोतानी बहेन माटे 'पाईयलच्छीनाममाला'नी रचना करी ते वखते ते जैन थई चूक्यो हतो. आथी **धनपाल** ते वखते २०-२५ वर्षनी अवस्थामां हशे एम मानीए तो तेने **शांतिसूरि**नो समवयस्क कही शकाय. भोजराजानो राजत्वकाल १०६७ थी ११११ सुधीमां हतो, आथी आ बंने विद्वानोथी भोज अवस्थामां लघु हतो एम कही शकाय, **महेन्द्रसूरि**ना प्रबंध उपरथी पण ए वातने टेको मळे छे के **धनपाल** थकी **भोज** पोते अवस्थामां नानो हतो.

शांतिसूरिनो समय शिथिलाचार प्रधान हतो, **शांतिसूरि** पोते पण अप्रतिबद्ध विहारी होय तेम ओछुं जणाय छे, एमने भोजे विजयनुं पारितोषिक आप्युं अने ते एमणे धर्ममार्गमां खरच कराव्युं, आतो एक जुदी वात छे पण एमना गच्छना उपाश्रयने प्रबंधकारे बे ठेकाणे 'मठ'ना नामथी उल्लेख्यो छे. आथी पण एमनी गुरु परंपरामां शिथिलाचारनो प्रवेश हशे एम जणाय छे.

पाटणमां **मुनिचंद्रसूरि**ने सुविहित होवाना कारणे उतरवाने उपाश्रय नहोतो मळतो अने **शांतिसूरि**ए कहीने श्रावकनुं ज मकान तेमने उतरवाने अपाव्युं, आ उपरथी पण जणाय छे के **पाटणमां ते समये शिथिलाचारिओनुं साम्राज्य** हतुं; छतां सुविहितोनो पण त्यां विहार थवा मांड्यो हतो अने **धीरे-धीरे तेमने माटे उपाश्रयोनी सगवड थवा लागी हती.**

1. तपागच्छ पट्टावली में बताया गया है कि विक्रम संवत् १०९७ में हुए धूलकोट के पतन के संबंध में शांतिसूरि ने कुछ दिन पूर्व ही भविष्यवाणी कर ७०० श्रीमाली परिवारों को मौत के मुख से निकाल लिया। तदनंतर विक्रम संवत् ११११ में कानोड में स्वर्गगमन हुआ "जैन धर्म का मौलिक ईतिहास" भा. ३ पृ. ७८५
तेमणे थरादमां चौहाणोने प्रतिबोधी जैन बनाव्या हता. तपगच्छ श्रमण वंशवृक्ष पृ. ५३

शांतिसूरिए उत्तराध्ययन टीका उपरांत **धनपाल**नी तिलकमंजरी कथा उपर एक सुंदर टिप्पण पण लख्युं छे जे पाटणना भंडारोमां आजे पण विद्यमान छे.

'जीवविचार प्रकरण' अने 'चैत्यवंदन महाभाष्य' नामना ग्रंथो पण आज शांतिसूरिनी कृति होवानुं मनाय छे.[1]

१७. श्री महेन्द्रसूरि

महेन्द्रसूरिना प्रबंधमां **महेन्द्रसूरि, शोभन, धनपाल** अने **''कौलकविधर्म''** आ चार विद्वानोनां वृतान्तो आवे छे.

महेन्द्रसूरिनी हकीकत आमां घणी ज टुंकी मळे छे, तेमना जन्म, जाति के गुरुना संबंधमां कंई पण उल्लेख नथी. प्रबंध उपरथी मात्र एटलुं जाणी शकाय छे के तेओ **चंद्र कुल**ना आचार्य हता अने तेमणे **सर्वदेव ब्राह्मण**ने तेनुं गुप्त निधान बतावीने तेना बदलामां तेना नाना पुत्र शोभनने पोतानो शिष्य बनाव्यो हतो.

धनपाल अने **शोभन** ए बंने सगा भाई हता, एमना पितानुं नाम **सर्वदेव** अने दादानुं नाम **देवर्षि** हतुं. एमनुं मूळ निवासस्थान मध्य देशमांनुं सांकाश्य हतुं, पण **देवर्षि**ना वखतथी ज ए कुटुम्ब धारामां आव्युं अने राज्यमां सारी प्रतिष्ठा पाम्युं हतुं.

महेन्द्रसूरि शोभनने एना पितानी आज्ञाथी जैन दीक्षा आपीने लई गया हता, पण **धनपाल** ए वात जाणतां घणो ज विरुद्ध थयो हतो, एटलुं ज नहि पण राजाने समजावीने ते प्रदेशमां जैन साधुओनुं आगमन ज तेणे बंध करावी दीधुं हतुं.

प्रबंधकार लखे छे के **धनपाल**ना विरोधना परिणामे १२ वर्ष पर्यन्त धारामां कोईपण श्वेताम्बर मतनो साधु आवी शक्यो नहि पण ज्यारे **शोभन मुनि**ने ए वातनी खबर पडी तो तेओ केटलाक साधुओने पोतानी साथे लई धारामां गया अने ते प्रतिबंध दूर कराव्यो एटलुं ज नहि पण खुद **धनपाल**ने पण जैन बनावी लीधो.

जैन थया पछी **धनपाले** तिलकमंजरी नामनी एक आख्यायिका बनावी हती अने भोजराजानी प्रार्थनाथी ते कविए राजाने वांची सांभळावी हती. राजाए कथाने पसंद तो कीधी पण तेना खास खास प्रसंगोमां नाम बदली नाखीने कथानी काया पलटी नाखवानी तेणे सूचना करी, पण **धनपाले** ते मंजुर राखी नहि अने राजाने जडबातोड उत्तर आप्यो के जे सांभळी राजाए गुस्से थईने कथानुं पुस्तक आगमां नाखी दीधुं, आथी कवि **धनपाल**नुं दिल खाटुं थई गयुं, जो के कथा तो तेणे पोतानी पुत्रीनी याददास्ती उपरथी पाछी लखी नाखी, पण ते पछी तेणे धारानो सदाने माटे त्याग कर्यो अने मारवाडना साचोर तीर्थमां जई भगवान महावीरनी पूजा आराधनामां पोतानुं शेष जीवन वीतावावानो निश्चय करीने त्यां रह्यो.

राजा **भोजे** थोडा वखत सुधी तो **धनपाल**नी दरकार न करी पण कौलकवि धर्मे आवीने ज्यारे तेनी सभानो पराजय कर्यो त्यारे तेने **धनपाल**नी हाजरीनी आवश्यकता समजवामां आवी, तपास करावतां तेने **धनपाल**नो पत्तो लाग्यो अने धारामां आववा माटे **धनपाल**ने बहुमान पूर्वक आमंत्रण मोकल्युं पण दुभायेल कविए तेनो स्वीकार न कर्यो, भोजे बीजीवार आमंत्रण मोकलीने कहेवडाव्युं के 'तुं मुंजनो मोटो पुत्र छे अन हुं नानो,

1. तपागच्छ पटावली भाषांतर पृ. ११६मां पं. कल्याणविजय म. उमेरे छे के—'केटलाक मोटी शांतिना रचयिता तरीके आ ज वादि वेताल श्री शांतिसूरिने स्वीकारे छे. "प्रो. हीरालाल कापडियाना मते आ. शांतिसूरिजीए 'अभिषेक विधि' याने 'पर्व पंजिका' रची छे. तेनुं सातमुं पर्व ते ज 'बृहच्छान्ति स्तोत्र' छे. जुओ शासन प्रभावक श्रमण भगवंतो भा. २ पृ. २२५

आ अवंति देश तारो छे, आ देशनी राजसभानी जीत ते तारी जीत अने एनी हार ते तारी हार छे, मारा माटे नहि पण तारा देशनी लाजनी खातर तारे आववुं होय तो आव, चाहे न आव, मारे आ विषे हवे वधारे कहेवा जेवुं नथी.'

राजानां आ वचनो सांभळीने **धनपाल** धारानगरीए आव्यो अने कौलकवि धर्मनो पराजय कर्यो.

कौलकवि धर्म भरूच निवासी **सूरदेव** ब्राह्मणनो पुत्र हतो, ए बाळपणमां तो अभण अने मूर्खप्राय हतो, पण पाछळथी कोईएक योगिनीना वरदानथी एने कवित्व शक्ति प्राप्त थई हती अने त्यारथी ज ए शाक्त बनीने घर छोडीने चाली नीकळ्यो हतो. **धनपाल** तेमज **शांतिसूरि** नामना जैन आचार्ये आ **कौलकवि धर्मने** वादमां जीत्यो हतो.

भोजना राजद्वार उपरकौलकवि धर्मे पोतानुं सूचना पत्र चोटाड्युं तेमां तेणे अनेक विद्वानोने जीत्यानी डींग हांकी हती, तेणे लख्युं हतुं के—जेणे गौड देशमां 'शंभु' नामना पंडितने धारानगरीमां 'द्विज' नामथी प्रसिद्ध विद्वानने भट्टि मंडलमां 'विष्णु' पंडितने अने कान्यकुब्जनो 'पशुपति' नामना विद्वानने जीत्यो छे ते कवि 'धर्म' आ स्वयं उपस्थित थयो छे.

आ कवि धर्म अने एणे जीतेला विद्वानोना विषयमां ईतिहास संशोधक विद्वानोए विशेष अनुसंधान करवुं जोईए. **आचार्य महेन्द्रसूरिनो समय शिथिलाचार प्रधान हतो छतां ए पोते सुविहित क्रियापात्र साधु हता एम जणाय छे.**

आचार्य **महेन्द्रसूरिए** कोई ग्रंथ प्रकरणनी रचना कर्यानो लेख जणातो नथी पण एमना शिष्य **शोभन मुनिए**-के जेओ बहु जीव्या न हता-'चतुर्विंशति जिनस्तुति'नी रचना करी हती जे हजी पण उपलब्ध थाय छे. आ **'चतुर्विंशति जिनस्तुति'** नामना ग्रंथ उपर पंडित **धनपाले** 'अवचूरि' लखेल छे.

अवचूरि उपरांत तिलकमंजरी कथा, पाईयलच्छीनाममाला, स्तुति पंचाशिका ए **धनपाले** रचेला ग्रंथो आजे उपलब्ध थाय छे.[1]

महेन्द्रसूरि, धनपाल, शोभन, कवि धर्म, राजा भोज अने **शांतिसूरि** प्रबंधमां उल्लेखायेल आ बधा विद्वानो अगियारमी सदीमां थयेल छे.

[2]प्रबंधनी समाप्तिमां ग्रंथकारे एक वधारानुं पद्य आप्युं छे जेमां आ ग्रंथना संशोधक **प्रद्युम्नसूरिना** गुरु **देवानन्दसूरिए** हैम व्याकरणथी उद्धरीने 'सिद्ध सारस्वत' नामनुं नवुं व्याकरण रच्यानो उल्लेख करेल छे.

१८. श्री सूराचार्य

सूराचार्य राजा **संग्रामसिंहना** पुत्र हता,[3] गृहस्थावस्थामां एमनुं नाम **'महीपाल'** हतुं.

महीपालनी बाल्यावस्थामां ज तेना पिता **संग्रामसिंहनुं** मरण थई गयुं हतुं तेथी एनी माताए **महीपालने द्रोणाचार्यनी** पासे संभाळवा अने भणावववा माटे राख्यो हतो, कारण के **द्रोणाचार्य** ए **महीपालना** काका थता हता.

द्रोणाचार्ये महीपालने व्याकरण, न्याय, धर्मशास्त्र आदि अनेक शास्त्रोनो अभ्यास कराव्यो अने एनी माताने समजावीने **महीपालने** जैन दीक्षा आपीने **सूराचार्य** नामना पोताना पट्टधर शिष्य बनाव्या.[4]

1. तपागच्छ पट्टावली भाषांतर मुजब आ उपरांत 'वीरस्तव' (विरुद्ध वचन)अने 'सावयविहि' नी पण रचना धनपाले करी छे.
2. आ प्रबंधनी घटनाओ साथे प्रबंध चिंतामणि, उपदेश सप्ततिका टीका अने उपदेश प्रसादमां थोडोक फेरफार जोवा मळे छे.
3. संग्राम सिंह भीमदेवना सेनाधिपति होवातुं श्री न्यायविजयजी जणावे छे. तपगच्छ श्रमण वंश वृक्ष पृ. ५२
4. गुवविली में सूराचार्य को पूर्ववर्ती तथा द्रोणाचार्य को उत्तरवर्ती आचार्य बताये है। जैन धर्म का मौलिक ईतिहास भा. ४ पृ. १६०

द्रोणाचार्य ते समयना पाटणना राजा **भीमदेव**ना मामा थता हता एमना गुरुनुं नाम **गोविन्दसूरि** होय तेम जणाय छे, कारण के प्रबंधना प्रारंभमां तो **द्रोणाचार्ये सूराचार्य**ने पोताना शिष्य बनाव्यानो उल्लेख कर्यो छे ते पण ते पछी एमने **गोविन्दसूरि**नी पासे बताव्या छे, आथी मानवाने कारण मळे छे के **गोविन्दसूरि** ए **द्रोणाचार्य**ना गुरु ज होवा जोईए.

सूराचार्य एक बुद्धिशाळी विद्वान हता, काव्य अने प्रमाणशास्त्र उपर एमनो सारो काबु हतो, पण स्वभावे जरा गर्विष्ठ अने क्रोधी होय एम जणाय छे. एमनी पोताना विद्यार्थीओ उपर घणी धाक हती. एकवार तो तेमना क्रूर स्वभावनी विद्यार्थीओने पोताना मोटा आचार्य पासे शिकायत पण करवी पडी हती, जे उपरथी गुरुए एमने उपालंभ आपतां कह्युं के 'शिष्योने वादी बनाववानी तने एटली चिंता छे तो तुं पोते भोजनी सभानो पराजय करीने आव्यो छे शुं?'

गुरुना आ मर्म वचनथी **सूराचार्य**नुं लोही उकळी गयुं अने तेमणे प्रतिज्ञा करी के 'ज्यां सुधी **भोज** राजानी सभाने जीतीने न आवुं त्यां सुधी छए विगयनो त्याग छे' ते पछी **सूराचार्य**ने घणाय समजाव्या पण तेमणे पोतानी प्रतिज्ञा छोडी नहि, छेवटे तेओ **गुरु**नी अने **भीमदेव**नी आज्ञा लईने मालवामां गया अने भोजराजाना विद्वानोने पराजय आपीने प्रतिज्ञा पूर्ण करवानी साथे तेमणे पोतानी बुद्धिनो चमत्कार बताव्यो.

राजा **भोजे** प्रथम तो **सूराचार्य**नो सत्कार कर्यो हतो पण अंते एमना अभिमान अने उद्धताईथी ते अतिशय नाराज थई गयो हतो, जो **जैन** कवि **धनपाले** समयसूचकताथी एमने न बचाव्या होत तो राजा भोज तरफथी एमने पोताना औधत्यनो शो पुरस्कार मळत ते कल्पवुं मुश्केल छे.

भोजना कोपनुं विशेष कारण ए थयुं हतुं के एमणे भोजकृत व्याकरण ग्रंथमांथी भूलो बतावीने मालवीय पंडितोनी मश्करी करी हती, आथी **भोज** तेमना उपर गुस्से थयो हतो अने तेमने सभामां बोलावी कठोर दंड करवानो हतो, पण ते पहेलां ज कवि **धनपाले** तेमने उपाश्रयमांथी गुप्त रीते पसार करीने संताडी राख्या अने पाछळथी एमने सकुशल गुजरातमां पहोंचाडी दीधा हता. **सूराचार्य**नो समय शिथिलाचारनो हतो, एमना **दादा गुरु गोविन्दसूरिनी निश्रानुं पाटणमां एक प्रसिद्ध जिन चैत्य हतुं अने तेमां पर्व दिवसोमां नाटक अने नर्तकीनो नाच थतो हतो.** सूराचार्ये पोते ज्यारे धारामां प्रवेश कर्यो त्यारे हाथीनी सवारीए अने पाछा पाटणमां आव्या त्यारे पण हाथीनी सवारीथी नगर प्रवेश कर्यो हतो. जो के **प्रबंधकार आवी विहार संबंधी क्रियाओनुं प्रायश्चित्त अपावे छे. पण आ प्रवृत्तिओ शिथिलाचारनी निशानीओ छे एमां तो कंई पण संशय जेवुं नथी.**

सूराचार्य धारामां जे **चूड सरस्वत्याचार्य**ना अतिथि बने छे ते आचार्य पण चैत्यवासि होवानो विशेष संभव छे.

सूराचार्य धारामां गया ते वखते त्यां एक विशिष्ट घटना बनवानुं वर्णन प्रबंधमां कर्युं छे, जेनो सार ए छे के राजा भोजे सर्व दर्शनवाळाओने एक ठेकाणे केद कर्या हता, जेनुं कारण ए हतुं के राजा बधाने धर्मना विषयमां एकमत करवा मागतो हतो पण **सूराचार्ये** राजाने समजावीने बधाने केदमुक्त कराव्या हता. **आ हकीकत एक कल्पित घटना लागे छे;** राजा भोज जेवो विद्वान राजा आवी घेलछा करे ए मानवा जेवी वात नथी, एम लागे छे के अन्य संबंधनी ए कथा आ वृतान्तनी साथे कविए दंतकथा रूपे जोडी दीधी छे. **सूराचार्ये आदिनाथ** अने **नेमिनाथना** वर्णनमां एक द्विसन्धान काव्य बनाव्यानो उल्लेख छे कदाच आ काव्यनुं नाम **'नेमि-नाभेय द्विसन्धान काव्य'** होय.[1]

1. आ काव्यनी रचना विक्रम संवत् १०६०मां थई होवानुं 'शासन प्रभावक श्रमण भगवतो' आवृत्ति बीजी भा.१ पृ. २२०मां जणाव्युं छे. अने सुराचार्यना समय बाबत त्यां ज पृ. २२१मां लख्युं छे के "श्री सुराचार्यनो समय विक्रम संवत् १०७० थी ११५० सुधीनो मानी शकाय."

१९. श्री अभयदेवसूरि

अभयदेवनी कथानो प्रारंभ **भोजराजा**ना समयथी थाय छे. भोजना राजत्व काळमां **धारा**मां एक श्रीमन्त शेठ वसतो हतो, के जेनुं नाम **'लक्ष्मीपति'** हतुं. ए ज लक्ष्मीपतिने त्यां रहेल[1] मध्यदेशना कृत ब्राह्मणना पुत्र **श्रीधर** अने **श्रीपति** नामना बे विद्वान जुवान ब्राह्मणोए आचार्य **वर्धमानसूरि** पासे दीक्षा लीधी अने तेओ **मुनि जिनेश्वर** अने **मुनि बुद्धिसागर** नामथी प्रसिद्ध थया हता.

वर्धमानसूरि पूर्वे कूर्चपर (कूचेरा) ना चैत्यवासी आचार्य हता ८४ **जिन मंदिरो एमनी निश्रामां हतां,** पण एमणे चैत्यवासनो त्याग करी सुविहित मार्गनो स्वीकार कर्यो हतो.

आ वखते पाटणमां चैत्यवासिओनुं प्राबल्य हतुं, ते एटला सुधी के तेमनी संमति सिवाय सुविहित साधु पाटणमां रही नहोता शकता, आचार्य **वर्धमानसूरि**ए पोताना शिष्य **जिनेश्वरसूरि** अने **बुद्धिसागरसूरि**ने त्यां मोकलीने पाटणमां सुविहित साधुओनो विहार अने निवास चालु करावववानो विचार कर्यो अने पोताना उक्त बंने शिष्योने पाटण तरफ विहार कराव्यो. जिनेश्वरसूरि अने बुद्धिसागरसूरि पाटणमां गया पण त्यां तेमने उतरवा माटे उपाश्रय मळ्यो नहि, बधे फरीने तेओ त्यांना सोमेश्वर नामना पुरोहितने त्यां गया अने पोतानी विद्वत्तानो परिचय आपी पुरोहितना मकानमां रह्या. ज्यारे चैत्यवासीओने ए समाचार मळ्या तो पोताना नियुक्त पुरुषो द्वारा तेमने पाटण छोडीने जवा जणाव्युं, पण पुरोहिते कह्युं के आ बाबतनो न्याय राजसभामां थशे, आथी चैत्यवासिओए राजानी मुलाकात लीधी अने **वनराज**ना समयथी पाटणमां स्थपायेल चैत्यवासिओनी सार्वभौम सत्तानो ईतिहास समजाव्यो, जे उपरथी पाटणनो नृपति **दुर्लभराज** पण लाचार थयो अने पोताना पुरोहितना उपरोधथी ए साधुओने अहीं रहेवा देवा माटे आग्रह कर्यो जे वात चैत्यवासिओए मान्य करी.

ए पछी पुरोहिते सुविहित साधुओना उपाश्रय माटे राजाने प्रार्थना करी, राजाए ए कामनी भलामण पोताना गुरु **शैवाचार्य ज्ञानदेव**ने करी जे उपरथी भात बजारमां योग्य जमीन प्राप्त करीने पुरोहिते त्यां उपाश्रय कराव्यो, त्यारपछी सुविहित साधुओने माटे वसतिओ थवा मांडी.

बुद्धिसागरसूरिए जालोर-मारवाडमां रहीने संवत् १०८०मां 'बुद्धिसागर' नामनुं नवुं व्याकरण बनाव्युं के जेनुं श्लोक प्रमाण ७००० जेटलुं छे.[2] कालान्तरे **जिनेश्वरसूरि**ए धारानगरी तरफ विहार कर्यो अने त्यांना रहेवासी **धनदेव** शेठना पुत्र **अभयकुमार**ने दीक्षा आपीने **अभयदेवमुनि** नामे पोताना शिष्य कर्या अने योग्यता प्राप्त थतां **वर्धमानसूरि**ना आदेशथी आचार्य पद आपीने तेमने संवत् १०८८मां **अभयदेवसूरि** बनाव्या.

वर्धमानसूरिना स्वर्गवास पछी **अभयदेवसूरि**ए पत्यपद्रपुर तरफ गया, ते समये दुर्भिक्षना कारणे सिद्धान्त छिन्नभिन्न थवा उपरांत तेनी टीकाओ के जे पूर्वे **शीलाचार्य** नामना आचार्ये बनावी हती तेमांथी पण पहेला बे अंगसूत्रोनी टीकाओने छोडीने बाकीनी बधी नाश पामी हती, आथी बधां सूत्रो कठिन कूट जेवां थई पड्यां हतां, आ विषयमां **अभयदेवसूरि**ने शेष नव अंगोनी टीकाओ बनाववानो शासनदेवीनो आदेश थयो अने ते प्रमाणे ठाणांग आदि नव सूत्रोनी टीकाओ बनावी, जे श्रुतधरोए शुद्ध करीने प्रमाण करी. ते पछी श्रावकोए ते टीकाओनी प्रतो लखावीने पाटण, खंभात, आशाल, धवलका आदि नगरोना ८४ श्रावकोए ८४ नकलो करावीने आचार्योंने भेट करी.

कहे छे के आ नवीन टीकाओनी पहेली प्रत पोताना तरफथी लखवा माटे **शासनदेवीए खर्च माटे पोतानुं**

1. खरतर गच्छनी बृहद् गुर्वावलीमां अने दानसागर ज्ञान भंडार (बिकानेर) नी हस्तलिखित गुर्वावलीमां आ प्रबंधनी घटनाओमां केटलोक तफावत छे. जुओ 'जैन धर्म का मौलिक ईतिहास' भा. ४ पृ. १४१ थी.
2. अहीं प्रबंधमां आठ हजार श्लोक प्रमाण जणाव्युं छे. परंतु ग्रंथकारे व्याख्यानी प्रशस्तिमां ७००० जणाव्युं छे. अत्यारे अपुर्ण मळतां आ व्याकरणना 'शब्द लक्ष्य लक्ष्म' 'पंचग्रंथी' नामो पण छे. आ. श्री जिनेश्वरसूरि ए पण लीलावई कहा, कथानक कोश, पंचलिंगी, षट्स्थान प्र. व. रच्या छे.

एक भूषण आप्युं हतुं, जे पाटण जई भीमराजाने भेट करतां राजाए तेना बदलामां ३ लाख द्रम्म आप्या हतां.

आ टीकाओ बनाव्या पछी **अभयदेवसूरि** धवलके गया हता; ज्यां तेमने लोहीविकारनी बीमारी थई हती, पण धरणेन्द्रना पसायथी ते पाछळथी मटी गई हती. थांभणा गाम पासे सेढी नदीने कांठे पार्श्वनाथनी प्रतिमा प्रगट करीने अभयदेवाचार्ये स्तंभनतीर्थ (ता. आणंद, जि. खेडा)नी स्थापना करी हती. पाटणमां कर्ण राजाना राज्यकालमां **अभयदेवसूरि** स्वर्गवास पाम्या.

अभयदेवसूरि एक प्रावचनिक पुरुष हता. एमणे नवांगवृत्ति उपरांत पंचाशक आदि अनेक प्रकरण ग्रंथो उपर विवरण लख्यां छे. अने आगमअष्टोत्तरि आदि प्रकरणोनी रचना करी छे.[1]

एमना गुरु **जिनेश्वरसूरि** ज्यारे पहेलीवार पाटणमां गया त्यारे पाटणमां दुर्लभराजनुं राज्य होवानुं प्रबंधकार लखे छे. **जिनदत्तसूरि** आदि खरतरगच्छीय आचार्यो पण गणधर सार्धशतक आदिमां ते वखते पाटणमां दुर्लभराजनुं राज्य बतावे छे पण खरतर गच्छवाळाओए प्रसंग संवत् १०८४मां बन्यानुं लखे छे ते बराबर जणातुं नथी, कारण संवत १०८४मां पाटणमां **दुर्लभराज**नुं नहि पण **भीमदेव**नुं राज्य हतुं.[2]

आ प्रबंधमां चावडा **वनराज**ने बाल्यावस्थामां आश्रय आपनार पंचासरना चैत्यवासी आचार्य **देवचन्द्रसूरि** बताव्या छे, ज्यारे बीजा घणा प्रबंधोमां वनराजना आश्रयदाता **शीलगणसूरि** लखेल छे, आ एक विरोध जणाशे पण वास्तवमां विरोध जेवुं जणातुं नथी, केमके **देवचंद्र** ए शीलगणसूरिना पट्टधर शिष्य हता तेथी वनराजने उछेरवाना काममां एमणे पण विशेष लक्ष्य राख्युं हशे ज अने आ कारणे ए पण **वनराज**ना पालक ज गणाय.

प्रबंधना लेख प्रमाणे अभयदेवसूरिना समयमां नव अंगसूत्रो उपर कोई टीका नहोती रही तेथी अभयदेवाचार्ये नवी टीकाओ बनावी, पण **अभयदेवसूरि**ना पोताना ज लेख प्रमाणे ते वखते सूत्रो उपर प्राचीन टीकाओ विद्यमान हती. दाखला तरीके **अभयदेवसूरि** भगवतीनी टीकामां भगवती उपर ते वखते बे प्राचीन टीकाओ होवानुं लखे छे. ए ज प्रमाणे बीजा सूत्रो उपर पण ते समये टीकाओ विद्यमान होवाना तेमना उल्लेखो छे, आ परिस्थितिमां **कालवशात् टीकाओना नाशथी अभयदेवाचार्य शासनदेवीना आदेशथी नवी टीकाओ बनावी ए हकीकत दंतकथा मात्र ठरे छे.**

प्रबंधना लेखनो भाव विचारतां अभयदेवाचार्ये पत्यपद्रनगर (पचपदरा-मारवाड) मां गया पछी ए टीकाओ बनावी हती, प्रबंधना बीजा उल्लेखोथी पण ए टीकाओ पाटणनी बहार बनेली सिद्ध थाय छे पण अभयदेवसूरिना पोताना लेखथी ए हकीकत विरुद्ध ठरे छे, कारण के तेमणे अनेक स्थळे ए टीका पाटणमां बनाव्यानो उल्लेख कर्यो छे अने पाटणना संघना अग्रेसर **द्रोणाचार्य** प्रमुख विद्वानोए ए टीकाओनुं संशोधन कर्यानुं ते लखे छे.

---

1. औपपातिक उपांग पर टीका प्रज्ञापना तृतीय पद संग्रहणी, पंच निर्ग्रंथी, छट्ठो कर्मग्रंथ महावीरस्थवो वगेरे मळी कुल साठ हजार श्लोक प्रमाण सर्जन तेओए कर्युं छे. 'श्रुतरत्नाकर'मां महावीर स्थवो. प्रसिद्ध थयेल छे.
2. "पिछली पट्टावलीओमें इस वाद-विवादका संवत दो तरह का हुआ मिलता है। विक्रम संवत् १०२४ और दूसरा है संवत् १०८०। इसमें १०२४ का उल्लेख तो सर्वथा भ्रान्त है क्योंकि उस समय पाटण में तो दुर्लभराज के प्रपिता मूलराज का राज्य था। शायद दुर्लभराज का तो उस समय जन्म भी नहीं हुआ था। दूसरा, जो १०८० का संवत का उल्लेख है वह भी ठीक नहीं है। क्योंकि निश्चित ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह स्थिर हुआ है कि दुर्लभराज की मृत्यु संवत् १०७८ में हो चूकी थी। १०८० में तो उसके पुत्र भीमदेव का राज्य प्रवर्तमान था। इसके विरुद्ध में एक और प्रमाण जिनेश्वरसूरि का स्वयंकृत उल्लेख भी विद्यमान है। संवत् १०८० में तो जिनेश्वरसूरि, जैसा कि ऊपर बताया जा रहा है, मारवाड के जावालिपुर (जालोर) में थे जब उन्होंने अपने हारिभद्रीय-अष्टकग्रंथ की टीका रचकर समाप्त की थी। अतः उस वाद-विवाद का दुर्लभराज के समय में अर्थात् १०७८ के पहले और संवत् १०६६ के बीच के किसी समय में होना ही मानना युक्ति संगत लगता है।" श्री जिनविजयजी 'कथाकोष प्रकरण'ना प्रारंभमां पृ. ८ टिप्पण.

देवीए आपेल आभूषण भीमराजाने भेट करवा अने तेणे त्रण लाख द्रम्म आपवा संबंधी हकीकत पण केवळ दंतकथा जणाय छे. कारण के भीमदेव संवत् ११२० अथवा ११२१मां परलोकवासी थई गयो हतो, ज्यारे बधी टीकाओ संवत् ११२० थी ११२८ सुधीमां बनी हती एम टीकाओना अंतमां आपेल संवतो उपरथी सिद्ध थाय छे.

प्रबंधकार **शीलाचार्य**नुं ज बीजुं नाम **कोट्याचार्य** जणावे छे, पण आमां कोई ऐतिहासिक प्रमाण जणातुं नथी, विद्वान शोधकोए ए संबंधमां अनुसंधान करवानी जरूर छे.[1]

अभयदेवसूरि सेढी नदीने कांठे प्रतिमा प्रगटाववा गया ते वखते साथे ९०० गाडां हतां, प्रतिमा स्थापन योग्य देरासर माटे त्यां टीप करीने १,००००० एक लाख द्रम्म एकठा कर्या हता अने चैत्यनुं काम शरू करावीने ते कामकाजना अध्यक्ष तरीके मेसाणावासी मल्लवादिना शिष्य आम्रेश्वरने भोजन अने रोजनो १ द्रम्म ठरावीने कायम कर्या हतां. आम्रेश्वरे आहार भिक्षावृत्तिथी लावीने ते द्रव्य बचाव्युं अने ते वडे पोताना नामनी एक देहरी बनावी हती. आ उपरथी जणाय छे के **पगारथी नोकरी करवानी हद सुधी चैत्यवासिओ पहोंची गया हता.**

प्रबंधमां **अभयदेवसूरि**ना स्वर्गवासनो संवत् आप्यो नथी मात्र एटलुं ज लख्युं छे के 'तेओ पाटणमां **कर्णराजा**ना राज्यमां परलोकवासी थया.' आ वाक्यनो बे प्रकारे अर्थ थई शके, पहेलो ए के—'कर्णना राज्यकालमां तेओ पाटणमां स्वर्गवास पाम्या' बीजो अर्थ ए थाय के 'जे समये कर्णराजा पाटणमां राज्य करतो हतो ते वखते तेओ स्वर्गवास पाम्या' पण खरतरगच्छनी पट्टावलियोमां अभयदेवसूरिनो स्वर्गवास कपडवंज गाममां होवानो लेख छे एथी आपणे अहीं बीजा प्रकारनो अर्थ ग्रहण करवो योग्य लागे छे.

पट्टावलीयोमां **अभयदेवसूरि**नो स्वर्गवास संवत् ११३५मां अने बीजा मत प्रमाणे संवत् ११३९मां होवानो लेख छे.[2]

२०. श्री वीराचार्य

वीराचार्य चंद्रकुलीन षंडिल्लगच्छना आचार्य हता, आ षंडिल्लगच्छ कोना थकी क्यारे उत्पन्न थयो ते जाणवामां आव्युं नथी. ए गच्छना आचार्य **भावदेवसूरि**थी आ षंडिल्लगच्छ 'भावडगच्छ' अथवा 'भावडहरगच्छ' ए नामथी प्रसिद्ध थयो हतो आ भावडगच्छना स्थापक **भावदेवसूरि**थी नवमा पुरुष त्रीजा **भावदेवसूरि** पार्श्वनाथ चरित्रमां पोताने **कालकाचार्य संतानीय** लखे छे अने ए ज ग्रंथनी प्रशस्तिमां देवेन्द्रवंद्य **कालकाचार्य**ना वंशमां षंडिल्लगच्छ उत्पन्न थयानुं जणावे छे. आथी एटलुं तो निश्चित छे के कालकाचार्यनी परंपरामां ज षंडिल्लगच्छ उत्पन्न थयो हतो पण कया पुरुष थकी ए नाम प्रवृत्त थयुं ते निश्चयथी कही शकाय तेम नथी. युगप्रधान **कालकसूरि**नी पाटे षंडिल्ल नामना युगप्रधान थई गया छे, तेमनो युगप्रधानत्व समय वीर निर्वाण ३७७ थी ४१४ सुधीनो छे जो आ षंडिल्ल युगप्रधानथी आ गच्छनी उत्पत्ति मानी लईए तो आ गच्छ अतिशय प्राचीन ठरे पण ए गच्छना आचार्यो पोताने **चंद्रकुलीन** जणावे छे, जो आ गच्छने षंडिल्ल युगप्रधानथी प्रवृत्त थयो मानीए तो तेमां चंद्र नामक कुल थयुं छे के केम? ए एक प्रश्न छे केमके प्रचलित 'चंद्रकुल' कोटिकगणनुं कुल छे. आ स्थितिमां ज्यां सुधी ए **चंद्रकुल** थयानुं प्रमाण न मळे त्यां सुधी षंडिल्ल गच्छनुं कुल 'चंद्र' होवाथी ए 'गच्छ' षंडिल्ल युगप्रधानथी चालु थयो मानवो युक्ति संबद्ध नथी. सुमति नागिल चोपाईना कर्ता **ब्रह्मऋषि**ना मते

1. विशेष माटे जुओ 'चउपन्न महापुरुष चरित्रं' हिन्दी प्रस्तावना पृ. ५३ थी.
2. पं. बेचरदास एमनी पुस्तिकामां 'नवांगी वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि' पृ. १०-११मां विक्रम संवत् ११५५मां स्वर्गवासनुं अनुमान करे छे.

भावडहर गच्छना मान्य **कालकाचार्य** वीर संवत् ९९३मां थयेल **कालक** छे जो आ कथन खरुं होय तो षंडिल्लगच्छनी उत्पत्ति विक्रमनी पांचमी सदी पछीनी ठरे छे, आ रीते एनी चंद्रकुलीनतानी पण संगति थई जाय छे अने आवी रीते ए गच्छ युगप्रधान षंडिल्लथी नहि पण बीजा कोई पुरुषथी उत्पन्न थयो हतो एम मानवानुं प्राप्त थाय छे.

प्रस्तुत षंडिल्लगच्छने 'भावडगच्छ' नाम अपावनार **भावदेवसूरि**नी पाटे आचार्य **विजयसिंह** अने **विजयसिंह**नी पाटे आपणा आ **वीराचार्य** थया हता.

वीराचार्य गुजरात पाटणना राजा सिद्धराज **जयसिंह**ना माननीय मित्र होई राजसभामां जता-आवता हता.

एकवार **सिद्धराजे** कंईक राज्यमद प्रदर्शित करतां मश्करीमां कह्युं के 'तमारुं जे आ महत्त्व छे ते केवळ राजाश्रयथी छे, जो मारी सभा छोडीने तमो परदेश चाल्या जाओ तो गरीब भिक्षुकोना जेवी तमारी पण दशा थाय.'

राजानां ए वचनो सांभळ्या बाद तरत ज **वीराचार्य** परदेश जवानो निश्चय करीने उठ्या अने पोतानो अभिप्राय राजाने कह्यो, जे उपरथी राजाए कह्युं 'मारा नगरमांथी तमने जवा नहि दउं' आचार्ये कह्युं 'अमने रोकनार कोई छे ज नहि' आ उपरथी राजाए पोताना नगरना तमाम द्वारपालोने आज्ञा करी दीधी के तेओ आ आचार्यने दरवाजानी बहार जवा न दे, द्वारपालोए राजाज्ञानुं सावधानपणे पालन कर्युं, पण थोडाज दिवसोमां पालीना ब्राह्मणोए **राजा सिद्धराज**ने समाचार पहोंचाड्या के, अमूक तिथि, वार अने नक्षत्रमां **वीराचार्य** अत्रे आव्या छे. **सिद्धराजे** जाण्युं के अत्रेथी ते ज रात्रे **वीराचार्य** त्यां गया छे अने बीजे दिवसे ब्राह्मणोने मळ्या छे. सिद्धराजाने निश्चय थयो के जरूर आचार्य ध्याननना बळे आकाशमार्गे थईने एकज दिवसमां पाली पहोंची गया छे. आवा सिद्ध महापुरुषनी मश्करी करवा बदल राजाने पश्चात्ताप थयो अने तेमने पाछा पाटण बोलावा माटे पोताना प्रधानोने आचार्य पासे मोकल्या, पण **वीराचार्ये** कह्युं के अमो हाल बीजा देशोमां विचरीने कालान्तरे गुजरात तरफ विचरशुं त्यारे पाटण आवशुं पहेलां नहि.

ते पछी **वीराचार्ये महाबोधपुर**मां जईने अनेक बौद्धाचार्योने वादमां जीत्या.

पाछा वळतां **वीराचार्ये** ग्वालियरमां अनेक परवादिओने जीत्या जेथी खुश थईने त्यांना राजाए छत्र चामर आदि राजचिह्न **वीरसूरि**नी साथे मोकल्यां.

त्यारपछी तेओ नागोर गया अने जिन धर्मनी उन्नति करी, आ स्थळे राजा सिद्धराजना प्रधानो बीजीवार एमने तेडवा आव्या तेथी ग्वालियरना राजाए मोकलेल लवाजमो पाछो हवाले करी (साधनो पाछा मोकली) तेमणे गुजरात तरफ विहार कर्यो, ज्यारे ए **चारूप** पहोंच्या त्यारे राजा पण परिवारनी साथे **चारूप** सुधी सामे गयो अने त्यांथी मोटा उत्सवपूर्वक आचार्यने नगर प्रवेश कराव्यो.

एकवार पाटणमां **'वादिसिंह'** नामनो सांख्यदर्शनी वादी आव्यो अने तेणे सर्व विद्वानोने चेलेंज आपी के 'जे कोई विद्वान शक्ति धरावतो होय ते मारी साथे वाद करे' आवी उद्धत चेलेंज फेंकवा छतां ज्यारे कोई विद्वान वाद करवाने बाहर न पड्यो त्यारे राजा वेश बदलीने कर्णराजाना बालमित्र अने **वीराचार्य**ना कलागुरु **गोविन्दसूरि**ने एकान्तमां जईने मळ्यो अने सांख्यवादीने वादमां जीतवा माटे सूचना करी जे उपरथी **गोविन्दसूरि**ए कह्युं के आ वादीने **वीराचार्य** जीतशे, प्रभात समयमां राजाए उक्त वादीने वाद माटे राजसभामां आववा निमंत्रण मोकल्युं पण उद्धत वादिए उत्तरमां जणाव्युं के अमारे कशी पण परवा नथी, जो राजाने अमारुं वाग्युद्ध जोवानी इच्छा होय तो ते अहीं आवीने जमीन पर बेसीने जुए. आ उपरथी राजाना मनमां वधारे कुतूहल जाग्युं अने **वीराचार्य**ने साथे

लईने ते वादिना मूकामे जईने जमीन पर बेसी गयो, वादी अर्धसुप्तावस्थामां ज वातो करतो हतो, तेवामां **वीराचार्ये** तेने वाद माटे ललकार्यो, वादी सावधान थयो अने सर्वानुवादनी शरत करी **वीराचार्य**ने मत्तमयूर छंदमां निह्नवालंकारमां पूर्व पक्ष करवा कह्युं. **वीराचार्ये** ते ज प्रमाणे उपन्यास कर्यो पण **वादिसिंह** तेनो सर्वानुवाद करी शक्यो नहि तेथी तेणे पोतानी हार कबूल करी. आ उपरथी सिद्धराजे हाथ पकडीने तेने आसन उपरथी नीचे पटक्यो, राजा हजी वधारे कदर्थना करत पण **वीराचार्ये** वचमां पडीने तेने छोडाव्यो. आ प्रमाणे **वीराचार्ये** सांख्यवादीने जीतीने 'विजयपत्र' मेळव्युं.

एकवार **सिद्धराज** मालवा उपर चढाई करीने जतो हतो त्यां वचमां **वीराचार्य**नुं चैत्य आव्युं, वीराचार्य बलानक (अग्रचोकी) मां बेठा हता, ते जोई सिद्धराजे समयोचित काव्य रचवा कह्युं, जे उपरथी **वीराचार्ये** अवसरोचित कवित्व पूर्ण पद्य रचीने राजाने संभळाव्युं, जे सांभळी राजा संतुष्ट थईने बोल्यो के तमारी आ सिद्ध वाणीथी हुं विजयपताका वरीश अने एना सत्यापनरूपे राजाए ते बलानक उपर पताका चढावी, जे उपरथी भावाचार्यना चैत्यना बलानक उपर पताका चढावानी प्रवृत्ति चाली.

एकवार पाटणमां **सिद्धराज**नी सभामां **कमलकीर्ति** नामनो दिगम्बर वादी आव्यो जेने **वीराचार्ये** स्त्री मुक्तिना विषयमां वाद करीने लीलामात्रमां जीती लीधो हतो.

उपर जणाव्या प्रमाणे **वीराचार्य** भावडगच्छना स्थापक **भावदेवसूरि**थी त्रीजा आचार्य हता, **वीराचार्य**ना पट्टधर शिष्यनुं नाम **जिनदेवसूरि** हतुं, जिनदेव पछी पाछा **भावदेव, विजयसिंह, वीर** अने **जिनदेव** नामना आचार्य थया हता, आ भावडगच्छमां एना ए ज नामना ४ आचार्यो थया हता.

वीराचार्ये जेमने हराव्या हता ते वादि **वादिसिंह** अने **कमलकीर्ति**ना विषयमां विशेष कांईपण जाणवामां आव्युं नथी तेमज **वीराचार्य**ना विद्यागुरु **गोविन्दसूरि**ने विषे पण कंई हकीकत जाणवामां आवी नथी.

वीराचार्यना समयमां एक उल्लेख योग्य राजकीय घटना बनी हती ते आ के **सिद्धराजे** मालवा उपर चढाई करी हती अने ते मालवाना राजाने जीतीने आव्यो हतो.

वीराचार्यनी जाति, जन्मस्थान, दीक्षा समय के स्वर्गवासना समयनो क्यांय पण खुलासो जोवामां आवतो नथी, पण एटलुं चोक्कस छे के ए आचार्य सिद्धराजना समकालीन अने उमरमां पण सिद्धराजना बरोबरिया हता, **सिद्धराज**नो राजत्वकाल संवत् ११५० थी ११९९ सुधी हतो तेथी **वीराचार्य**नो अस्तित्व समय पण एज बारमा सैकानो उत्तरार्ध भाग होवो जोईए.

२१. श्री देवसूरि

आ **देवसूरि** जैनसंघमां **'वादि देवसूरि'**ना नामथी ज विशेष प्रसिद्ध छे.

एमनो जन्म संवत् ११४३मां अष्टादशशती देशना मद्दाहृत गाममां थयो हतो.

आबुनी आसपासनो प्रदेश पूर्वे **'अष्टादशशती'** देशना नामथी ओळखातो अने ते गुजरात देशनो एक प्रांत गणातो हतो.

ए प्रदेशमां आवेलुं आधुनिक मदुआ स्थान ते मारा विचार प्रमाणे **देवसूरि**नुं जन्मस्थान 'मद्दाहृत' होवुं जोईए, जो के 'मद्दाहृत' शब्दनुं रूपांतर 'मंडार' पण थई शके पण मद्दाहृत 'पर्वत माळाओथी दुर्गम अने सूर्यना किरणोने अगम्य' होवानुं प्रबंधकार लखे छे, जे वर्णन मंडारने नहि पण 'मुदुआ'ने ज लागु पडे छे, मंडारना

पश्चिम भागमां मात्र एक साधारण टेकरी आवेली छे, एथी ए स्थान अंधकारनो किल्लो अने सूर्यना किरणोने अगम्य बनतुं नथी. पण ए ज वर्णन आबुनी दक्षिण उपत्यकामां आवेल वैष्णवोना तीर्थ मदुआजीने बराबर लागु पडे छे.

देवसूरि जातना पोरवाल वणिक हता. एमना पितानुं नाम **'वीरनाग'** हतुं अने मातानुं **'जिनदेवी'** देवसूरिनुं गृहस्थावस्थानुं नाम **'पूर्णचंद्र'** हतुं. **वीरनाग** महामारीना कारणे पोताना गामनो त्याग करी दक्षिण गुजरातना पाटनगर **भरूच**मां चाल्यो गयो हतो ज्यां एना गुरु **मुनिचंद्रसूरि** पण विहार करता गया अने तेमनी सूचनाथी त्यांना श्रावकोए **वीरनाग**ने त्यां राख्यो. आ वखते पूर्णचंद्र ८ वर्षनो हतो अने ते सुखडीयानो धंधो करतो हतो. तेनुं भाग्य एवुं प्रबल हतुं के ते सेकेला चणा आपीने धनवानोने त्यां द्राक्षा मेळवतो हतो. **मुनिचंद्रसूरि**ए आ भाग्यवान् बाळकने पोतानो शिष्य करवानो विचार करीने **वीरनाग** पासे एनी मांगणी करी, **पूर्णचंद्र मातापितानो एक ज पुत्र हतो** छतां **वीरनाग** पोताना गुरुनी प्रार्थनानो भंग करी न शक्यो अने ते बोल्यो—पूज्य? 'मारा ए वृद्धावस्थानो एक आधार छे, पण आपना आग्रहने हुं लोपी शकतो नथी, जो आपनी एवी ज इच्छा होय तो आ बाळक आपनो ज छे, मारे कंई पण विचार करवानो नथी.' आना उत्तरमां आचार्य **मुनिचंद्रे** कह्युं—'महाभाग! मारा गच्छमां ५०० साधुओ छे ते बधा आ तारा पुत्रना पुत्रो जेवा हो.'

ए पछी **मुनिचंद्रसूरि**ए संवत् ११५२मां **पूर्णचंद्र**ने ९ वर्षनी वयमां दीक्षा आपीने तेनुं **'रामचंद्र'** नाम पाड्युं.

पूर्णचंद्रनी दीक्षा पछी एनां मातापितानी जीवनपर्यन्त सारसंभाळ भरूचना श्रावकगणे करी.

आचार्य मुनिचंद्रे वादिवेताल **शांतिसूरि** पासेथी जे प्रमाणशास्त्रनो विशाळ बोध प्राप्त कर्यो हतो तेनो संपूर्ण खजानो पोताना शिष्य **रामचंद्र**ने अर्पण कर्यो, **रामचंद्रे** दिल खोलीने तर्कशास्त्रनो अभ्यास कर्यो अने तेनुं संपूर्ण रहस्य तेओ पी गया अने एनुं परिणाम पण अनुरूप ज आव्युं, आचार्यपदनी प्राप्ति पूर्वे तेमणे अनेक उद्भट वादिओनो मुकाबलो कर्यो अने विजय मेळव्यो. प्रबंधकारे आपेल यादी प्रमाणे एमणे धोलकामां बंध नामना द्वैतवादी **शैववादी**ने जीत्यो, काश्मीरसागर अने साचोरमां वाद करीने जीत मेळवी, नागोरमां **गुणचंद्र दिगम्बर**ने, चित्तोडमां भागवत शिवभूतिने, ग्वालियरमां गंगाधरने, धारामां धरणीधरने, पोकरणमां पद्माकरने अने भरूचमां कृष्णनामक विद्वानने जीत्यो, आम **रामचंद्रे** अनेक वादिओनो पराजय करीने चारेतरफ पोतानी ख्याति जमावी दीधी.

विमलचंद्र, हरिचंद्र, सोमचंद्र, पार्श्वचंद्र, कुलभूषण, शांति अने अशोकचंद्र ए सात **रामचंद्र**ना विद्वान मित्रो हता.

रामचंद्रनी योग्यता जोई गुरुए तेमने संवत् ११७४मां आचार्य पद आप्युं अने ते समये तेमनुं **'देवसूरि'** ए नाम स्थापन कर्युं अने ए ज अवसरे **वीरनाग**नी बहेन जे पूर्वे साध्वी थयेल हती तेणीने महत्तरापद आपीने **'चन्दनबाला'** नाम आप्युं.

वादि देवसूरिए धोलकामां त्यांना रहेवासी उदयश्रावके करावेल 'उदावसहि' नामक चैत्यमां सीमन्धर स्वामिनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी.

एकवार **देवसूरि** मारवाड तरफ विहार करता आबु आव्या अने मंत्री अंबाप्रसादनी साथे उपर चढ्या. कर्मयोगे त्यां अंबाप्रसादने सर्पदंश थयो पण पोताना चरणोदकथी तेमणे मंत्रीने निर्विष कर्यो ते अवसरे **देवसूरि**ने अंबादेवीए कह्युं के 'हे आचार्य! आ वखते तमे सपादलक्ष देश (सांभर तरफनो प्रदेश) तरफ विहार न करो, कारण के हवे तमारा गुरुनुं आयुष्य केवल ८ महीनानुं शेष छे, माटे तमे पाछा पाटण तरफ चाल्या जाओ' आथी

आचार्य पाछा गुजरात तरफ विहार करी पोताना गुरु पासे आव्या. आ वखते **देवबोध** नामक भागवत विद्वान पाटणमां आव्यो अने तेणे पाटणना विद्वानोने उद्देशीने एक श्लोक लख्यो अने एनो अर्थ करवा चेलेंज करी, ते श्लोक नीचे प्रमाणे हतो—

एकद्वित्रिचतुःपञ्च-षण्मेनकमने न काः ।
देवबोधे मयिक्रुद्धे षण्मेनकमनेनकाः ।।

छ महीना सुधी कोई विद्वाने आनो अर्थ न उकेल्यो त्यारे अंबाप्रसाद मंत्रिए ए कार्य माटे राजाने **देवसूरि**नुं नाम सूचव्युं अने राजाना आमंत्रणथी सूरिए त्यां जईने पूर्वोक्त श्लोकनी स्पष्टार्थ व्याख्या करी संभळावी.

पाटणना श्रावक बाहडे पोताना द्रव्यनो सदुपयोग कई रीते थाय ते माटे **देवसूरि**नी सलाह पूछी, आथी तेमणे जिनमंदिरनो उपदेश कर्यो जे उपरथी बाहडे त्यां मोटुं जिनचैत्य कराव्युं अने **वर्धमानजिननी** प्रतिमा तैयार करावी.

संवत् ११७८मां **मुनिचंद्रसूरि**ए आराधनापूर्वक आयुष्य पूर्ण कर्युं अने संवत् ११७९मां पूर्वोक्त **बाहडे** करावेल जिनचैत्य अने प्रतिमानी **देवसूरि**ए प्रतिष्ठा करी.

ते पछी **देवसूरि**ए मारवाडमां विहार कर्यो, नागोरमां **आल्हादन राजा देवसूरिनी मुलाकाते आव्यो** अने ते ज वेळा पूर्वोक्त **देवबोध** पण **देवसूरि** पासे आव्यो अने तेमनी प्रशंसा करी, आ उपरथी आल्हादन राजाने **देवसूरि**ना गुणनो परिचय थयो अने तेणे भक्तिपूर्वक आचार्यने पोताना नगरमां राख्या, ए दरमियान गुर्जरेश सिद्धराज आल्हादन उपर चढाई करीने आव्यो अने नगरने घेरो घाल्यो पण ज्यारे तेना सांभळवामां आव्युं के **देवसूरि** नगरमां छे तो तेणे घेरो उठावी लीधो अने सेना साथे पाछो पाटण चाल्यो गयो अने ते पछी **देवसूरि**ने पण पाटण बोलावी लीधा अने ते पछी फरी आल्हादन उपर तेणे चढाई करीने किल्लो ग्रहण कर्यो.

एकवार **देवसूरि** कर्णावतीमां त्यांना संघना आग्रहथी वर्षाचोमासुं रह्या, ते ज चोमासुं दिगम्बर भट्टारक **कुमुदचंद्र** के जे कर्णाटकना **राजा जयकेशिनो** गुरु हतो ते पण कर्णावतीमां रह्यो हतो, तेणे **देवसूरि**नी अनेक प्रकारे छेडछाड करी पण तेमणे समता राखीने बधुं सहन कर्युं, पण ज्यारे तेणे मर्यादा मूकीने धोळे दहाडे देवसूरिना गच्छनी वृद्धसाध्वीने हेरान करी त्यारथी तेमणे तेनी साथे पाटणमां सिद्धराजनी सभामां वाद करवानो निश्चय कर्यो अने आ कार्य संबंधी पाटणना संघने विज्ञापन पत्र लखीने खबर आपी, त्रण पहोरमां पत्रवाहक पाटण पहोंच्यो, **देवसूरि**नो पत्र वांचीने संघे देवसूरिनी इच्छानुं अनुमोदन कर्युं अने तेने अंगे बधुं करवानुं माथे लीधुं.

ते पछी **देवसूरि**ए पोताना संदेशवाहकनी मारफत **कुमदचंद्र**ने कहेवडाव्युं के 'अमो पाटणमां राजसभा समक्ष तमारी साथे वाद करशुं, माटे पाटण आवी जवुं, अमो पाटण जईए छीए.' **ते पछी देवसूरिए शुभ समयमां पाटण तरफ विहार कर्यो अने समहोत्सव पाटण नगरमां प्रवेश कर्यो.**

कुमुदचंद्रे पण कर्णावतीथी पाटण तरफ विहार कर्यो अने तेना पक्षवाळाओए तेनो नगरप्रवेश कराव्यो.

आ वखते **थाहड** अने **नागदेव** नामना **देवसूरि**ना भक्त श्रावकोए आ कार्यने अंगे द्रव्यनी जरूर होय तो खर्च करवा **देवसूरि**ने पोतानी इच्छा जणावी पण आचार्ये आ कामने अंगे द्रव्य खर्च करवानी जरूरत नथी एम जणाव्युं, जे उपर **थाहडे** कह्युं के **'कुमुदचंद्रे द्रव्य प्रयोगथी गांगिलमंत्री वगेरेने पोताना पक्षमां लई लीधा छे'** पण **देवसूरि**ए ते उपर कंईपण ध्यान आप्युं नहि अने कह्युं के 'आमां द्रव्य खर्चवानी कशी जरूरत नथी, देवगुरुनी कृपाथी बधुं सारुं थशे.'

कुमुदचंद्रना पक्षमां 'केशव' नामना त्रण विद्वानो अने बीजा केटलाक साधारण मनुष्यो हता, ज्यारे **देवसूरि**ना पक्षमां महाकवि 'श्रीपाल' अने 'भानु' आ बे विद्वानो हता. **महर्षि, उत्साहसागर** अने **राम** आ त्रण विद्वानो सभापतिना सलाहकार सभ्यो हता.

वि. संवत् ११८१ना वैशाख सुदि पूर्णिमाने दिवसे वादिप्रतिवादिओने सिद्धराजे वादशाळामां बोलाव्या. स्त्रीनिर्वाणना विषयमां शास्त्रार्थ थयो अने **देवसूरि**नी जीत थई,[1] जो के गांगिलमंत्री जेवा मोटा राज्याधिकारिओने कुमुदचंद्रे पोताना पक्षमां करी लीधा हता छतां सभापति अने सभ्योए निष्पक्षपणे **देवसूरि**नी जीत कबूल करी अने तेमने जयपत्र अर्पण कर्युं अने एकरार प्रमाणे पराजितवादी **कुमुदचंद्र**ने पाटण छोडी जवानी आज्ञा आपी.

देवसूरिनी आ यादगार जीतनी **हेमचंद्रसूरि, श्री चंद्रसूरि, राजवैतालिक** आदि विद्वानोए सुंदर पद्योमां प्रशंसा करी हती.

आ जीतना पारितोषिक तरीके राजाए एक लाख रूपिया **देवसूरि**ने आपवा मांड्या हता पण तेमणे लीधा नहि तेथी राजानी आज्ञाथी मंत्रिए ते द्रव्यथी ऋषभदेवनुं चैत्य अने प्रतिमा करावी अने वि. संवत् ११८३मां चार आचार्योना हाथे तेनी प्रतिष्ठा थई.

आ. देवसूरिए केटला ग्रंथो बनाव्या ते चोक्कस जणायुं नथी पण ''प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कार'' अने तेना बृहद् विवरण रूपे लखेल 'स्याद्वादरत्नाकर' नामनो प्रमाण शास्त्रनो आकार ग्रंथ विद्वानोमां घणो प्रसिद्ध छे, 'स्याद्वादरत्नाकर' ग्रंथ अने एनी भाषा उपरथी विद्वानोने **देवसूरि**नी प्रौढविद्वत्ता अने संस्कृत उपरना प्रभुत्वनो परिचय मळे छे.

आ. वादि देवसूरिए संपूर्ण ८३ वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं अने पोतानी पाटे **भद्रेश्वरसूरि** नामना आचार्यने स्थापीने संवत् १२२६ना श्रावण वदि ७ अने गुरुवारे दिवसना पाछला भागमां आयुष्य पूर्ण कर्युं हतुं.[2]

आ. देवसूरिना शिष्यगणमां **भद्रेश्वरसूरि, रत्नप्रभसूरि अने माणिक्य** ए अधिक प्रसिद्ध छे. पहेला बे शिष्योए **देवसूरि**ने 'स्याद्वादरत्नाकर' ग्रंथ बनाववामां सहकार आप्यो हतो एम ते पोताना उक्त ग्रंथमां एक स्थळे कहे छे. **देवसूरि**नुं विहारक्षेत्र मारवाड अने गुजरात हतुं ए सिवाय अन्यत्र पण एमणे विहार कर्यो हशे पण ते बहु थोडो ज.

आ. देवसूरि पोते सुविहित आचार्य हता, एमनो शिष्य परिवार पण **विद्याव्यसनी अने चारित्रवान** हतो, छतां एमनी शिष्यपरिवारना ताबामां केटलांक चैत्यो हतां एम शिलालेखोथी जणाय छे, जालोरना सुवर्णगिरिना किल्ला उपरनुं परमार्हत कुमारपाले करावेल पार्श्वनाथ चैत्य आ ज **वादि देवसूरि**ना परिवारने अर्पण करायानो त्यां लेख छे.[3]

फलोदीना प्रसिद्ध तीर्थनी पण आ ज **देवसूरि**ना हाथे प्रतिष्ठा थयानो अन्यत्र लेख छे पण आ प्रबंधमां ते विषे कंईपण उल्लेख नथी.

1. सोळमां दिवसे जीत थयानुं प्रबंध चिंतामणी पृ. ११०मां जणाव्युं छे.
2. आ उपरांत 'मणिचंदसूरिगुरुथुई' 'गुरुविरह विपाल' 'कुरुकुल्लादेवी स्तुति, पार्श्वधरणेन्द्रस्तुति, कलिकुंडपार्श्वनाथ यंत्र स्तवन, जीवाजीवाभिगम लघु वृत्ति, उपदेशकुलक, 'मनोरथकुलक' वगेरे तेओए रच्या छे. शासन प्रभावक श्रमण भगवंतो. भा. २ पृ.२५२-३
3. जालोरना लेखो माटे 'सुविर्णगिरि जालोर' लेखक भरतलाल नाहटा जोवुं.

२२. श्री हेमचंद्रसूरि

हेमचंद्रसूरिनो जन्म[1] वि. संवत् ११४५ना कार्तिक सुदि १५नी राते गुजरातमां आवेल **धंधुका** नगरमां थयो हतो एमना पितानुं नाम **चाच** अने मातानुं नाम **पाहिनी**[2] हतुं.

हेमचंद्राचार्यनुं गृहस्थावस्थानुं नाम 'चंगदेव' हतुं, एओ जाते मोढवाणिया हता.

कोटिकगणनी वज्रशाखा अने चान्द्रकुलना आचार्य **देवचंद्रसूरि**ए खंभातमां एनी मातानी आज्ञाथी चंगदेवने संवत् **११५०ना माह सुदि १४ शनिवार अने रोहिणी नक्षत्रमां पार्श्वनाथना चैत्यमां** [3]**दीक्षा आपीने एनुं नाम सोमदेव पाड्युं हतुं.**

प्रबंधकारे आ प्रसंगे **सोमदेव**नी दीक्षाना लग्न अने तेमां पडेला ग्रहोनुं वर्णन कर्युं छे जे नीचे प्रमाणे छे-

माघेसित चतुर्दश्यां, ब्राह्मे धिष्ण्ये शनेर्दिने ।।१०।।
धिष्ण्ये तथाष्टमे धर्मस्थिते चन्द्रेवृषोपगे ।
लग्ने बृहस्पतौ शत्रुस्थितयोः सूर्यभौमयोः ।।११।।

आ दोढ श्लोकमांनुं प्रथम श्लोकार्ध तो स्पष्ट छे, एटले एनो अर्थ 'माघ सुदि १४ शनिवार अने रोहिणीनक्षत्रमां' एवो थाय पण ए पछीना श्लोकार्धना 'धिष्ण्ये तथाष्टमे' आ वाक्यांशनो अर्थ बराबर स्पष्ट थतो नथी, नक्षत्रनो निर्देश उपर थई गयो छे एथी अत्रे 'आठमा नक्षत्रमां एटले पुष्य नक्षत्रमां ए अर्थ थई शके नहि, कोई कोई विद्वान् 'ब्राह्मेधिष्ण्ये' आनो अर्थ 'ब्राह्ममुहूर्तमां' आवो लईने 'अष्टमे धिष्ण्ये' नो अर्थ 'पुष्यनक्षत्रमां' आवो करे छे पण ए युक्ति संगत नथी, दीक्षा वृषलग्नमां आपेल होवाथी ते समयमां बाह्म मुहूर्त आवतुं नथी, वळी दीक्षामां पुष्य नक्षत्र वर्जित छे अने शनि पुष्यनो योग पण साथे होतो नथी. ज्यारे शनिरोहिणी अने चतुर्दशीनो त्रिक सिद्धियोग बने छे. रोहिणी अने शनि दीक्षामां विहित पण छे तेथी दीक्षा पुष्यमां नहि पण रोहिणीमां थई हती ए ज मानवुं योग्य छे.

'अष्टमे धिष्ण्ये' नो अर्थ मारा मत प्रमाणे 'आठमा मुहूर्त'मां एम करवो योग्य छे, कारण के दीक्षा माघमासना अंतमां होवाथी ते वखते सूर्य कुंभराशिना प्रारंभमां अथवा मकरना अंतमां हशे, दीक्षा वृषलग्नमां थई एटले के त्रण लग्नो व्यतीत थया पछी चोथा लग्नमां दीक्षा थई, कुंभ मीन अने मेषनो भुक्ति काल अनुक्रमे $४\frac{६०}{१६}+३\frac{४५}{६०}+३-\frac{४५}{६०}$ घडी पळनो होवाथी एकंदरे ११ घडी अने ४६ पळ जेटलो थाय, ए पछी वृषलग्नना वृषनवांशकमां दीक्षा थई मानी लईए केमके ए अंश वर्गोत्तम होवा उपरांत लग्नना मध्यभागमां होवाथी वधारे बलवान हतो अने आम करतां लगभग अर्ध वृषलग्नने भुक्त गणतां तेनो काल २ $\frac{८}{६०}$ उपर्युक्त भुक्तिकालमां गणतां एकंदर $११-\frac{४६}{६०}+२\frac{८}{६०}=१३\frac{५४}{६०}$ तेर घडी अने चोपन पळ एटले के लगभग १४ घडी दिवस चढ्या पछी **चंगदेव**नी दीक्षा थई. ए समये दिननां ७ मुहूर्तो वीतीने ८मुं विजय मुहूर्त शरू थाय छे जे सर्वे शुभकार्योमां सिद्धिदायक गणाय छे. आ अर्थ प्रमाणे 'अष्टमे धिष्ण्ये' नो अर्थ बरोबर बेसे छे.

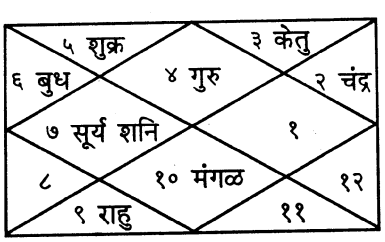

1. धंधुकामां आवेल कलिकाल सर्वज्ञजीना गुरुमंदिरमां आवेल चित्रपटमां आ प्रमाणे जन्म कुंडली चितरेली छे.

2. प्रबंधचिंतामणि ४/१४६ अनुसार याचना गोत्रदेवी चामुंडा होवाथी बधाना नाम 'च'थी शरू थता. 3. "जिन मंडन कृत कुमारपाल प्रतिबोध विक्रम संवत् १०५८ (ई.स. १०६८) का वर्ष बतलाती है। जब कि प्रबंधचिंतामणि, पुरातन प्रबंध संग्रह और प्रबंध कोश आठ वर्ष की आयु बतलाते हैं।"

– रसीकलाल छोटालाल परिख प्रमाण मीमांसा प्रस्तावना पृ. ३६

बीजा श्लोकार्धमां आगळ 'धर्मस्थिते चंद्रे' आ वाक्य छे अने आनो सीधो अर्थ 'चंद्रमा धर्मस्थानमां रहे छते' ए थाय पण आ अर्थ आ स्थळे बेसतो नथी, केमके दीक्षाने दिवसे चंद्र रोहिणी नक्षत्रमां होवाथी वृष राशिनो छे, लग्न पण वृषराशिनुं छे एथी चंद्र धर्मस्थान (नवमा स्थान) मां नहि पण तनुस्थान (लग्न)मां छे. त्यारे हवे 'धर्मस्थिते' ए विशेषणनो अन्वय चंद्रनी साथे नहि पण 'अष्टमे धिष्ण्ये' एनी साथे करवो उचित लागे छे, एनो अर्थ 'धर्म एवा आठमा मुहूर्तमां' ए थशे. 'चंद्रे तथा 'बृहस्पतौ' आ बंनेनो संबंध 'वृषोपगे लग्ने' एनी साथे जोडवो जोईए.

त्रीजा श्लोकार्धमां ''शत्रुस्थितयोः सूर्यभौमयोः'' आ उल्लेख विचारणीय छे, कारण के वृषलग्न होवाथी शत्रुस्थानमां तुलाराशि आवे छे, आ रीते सूर्य अने मंगल तुलाराशिना होय तो ज शत्रुस्थानमां होई शके, पण माघ के फागण मासमां सूर्य तुलाराशिमां होतो नथी पण मकर अथवा कुंभ राशि उपर होय छे, तेथी वृषलग्नमां मकर कुंभनो सूर्य नवमा दसमा स्थानमां होई शके छट्ठा शत्रुस्थानमां नहि.[1]

मारा विचार प्रमाणे ''शत्रुस्थितयोः'ने स्थाने शुद्धपाठ ''शून्यस्थितयोः'' ए होवो जोईए. दशमा स्थाननुं नाम 'आकाश' छे अने आकाशने माटे शून्य शब्दनो प्रयोग प्रचलित छे ए सुप्रसिद्ध ज छे.

प्रबंधमां लग्न कुंडलीना उपर जणावेल सूर्य, चंद्र, मंगल अने गुरु आ चार ग्रहोनी ज स्थितिनी चर्चा छे, बाकीना बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु अने केतुना स्थान बताव्यां नथी.

ए ज दीक्षा लग्नना संबंधमां **कुमारपाल** चरित्र महाकाव्यमां **कृष्णर्षीय जयसिंहसूरि** नीचे प्रमाणे लखे छे-

अथ श्री वर्धमानस्य प्रासादे सादितांहसि ।
माघमासस्य धवले पक्षे चातुर्दशेऽहनि ।।१६१।।
रोहिण्यां शनिवारे च रवियोगे त्रयोदशे ।
ससग्रहबलोपेते वृषलग्ने शुभे शके ।।१६२।।

आमां माघ सुदि १४ शनि अने रोहिणीमां दीक्षा अपायानो स्पष्ट एकरार छे; पण एक-बे वात आमां पण विचारणीय छे. प्रबंधकारे **पार्श्वनाथना मंदिरमां दीक्षा** आप्यानी वात लखी छे ज्यारे ए चरित्रकार **'महावीर प्रभु'ना मंदिर**मां दीक्षा अपायानो उल्लेख करे छे. आ एक मतभेद छे.

बीजुं आमां ते दिवसे तेरमो रवियोग होवानुं लख्युं ते पण संभवित नथी, केमके जो सूर्य ते समयमां मूळ नक्षत्रमां होय तो ज चंद्र रोहिणी उपर होवाथी तेरमो रवियोग बनी शके, पण तेम होई शके नहि, मूलनो सूर्य पोषमां होय, माघ सुदिमां नहि, वळी धनार्कमां शुभ कार्य करवानो निषेध छे. माटे ते दिवसे सूर्य मूळनो नहोतो पण संभव प्रमाणे धनिष्ठानो हतो तेथी तेरमो तो नहि पण नवमो रवियोग ते दहाडे थतो हतो.

चरित्रमां ग्रहव्यवस्था तो नथी जणावी, पण ते लग्नमां ७ ग्रह बळवान् हता एम जणाव्युं छे. प्रबंधकारना लेख प्रमाणे चंद्र अने गुरु वृषना अने सूर्यमंगल कुंभना हता तेथी बीजा ग्रहनो विचार करवो रह्यो.

स्थूलगणना प्रमाणे ते वखते शनि मीननो हतो अने राहु केतु तुला अने मेषना बुध ते समये मीन राशिनो होवानो विशेष संभव छे अने शुक्र मकरनो. आ बधा ग्रहोनी व्यवस्था प्रमाणे मुनि **सोमचंद्र**नी दीक्षा-लग्नकुंडली

1. सूर्य अने मंगळ पोताना शत्रु शनिना घरमां छे एम अर्थ करी शकाय.

नीचे[1] प्रमाणे बने छे—

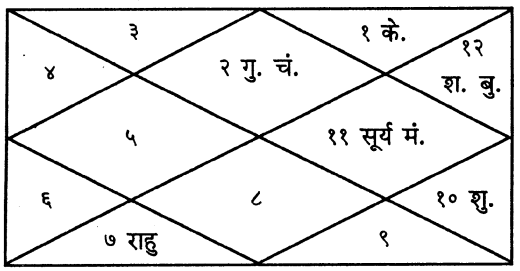

प्रबंधना ३५ अने ३६मा श्लोकनो संबंध बेसतो नथी. एम लागे छे के आ बे श्लोको वच्चेनो केटलोक पाठ त्रुटित छे.

सोमचंद्रे दीक्षा लीधा पछी व्याकरण साहित्यनो अभ्यास करीने विशेष बुद्धिविकास निमित्ते काश्मीर जई सरस्वती देवीनी प्रसन्नता मेळववानो विचार कर्यो अने ए निमित्ते तेमणे खंभातथी प्रस्थान करीने 'रैवतावतार' नामक तीर्थरूप नेमिचैत्यमां आवीने मूकाम कर्यो पण **ते ज रात्रे सरस्वतीए आवीने तेमना प्रत्ये पोतानी प्रसन्नता प्रगट करीने काश्मीर जवानो परिश्रम बंध रखाव्यो.**

संवत् ११६६मां **सोमचंद्र** मुनिने वैशाखनी तृतीयाने दिने मध्याह्नमां आचार्यपद अपायुं, आ कार्य माटे विद्वानोए जे लग्न पसंद कर्युं हतुं तेनी लग्नकुंडली नीचे प्रमाणे बने छे—

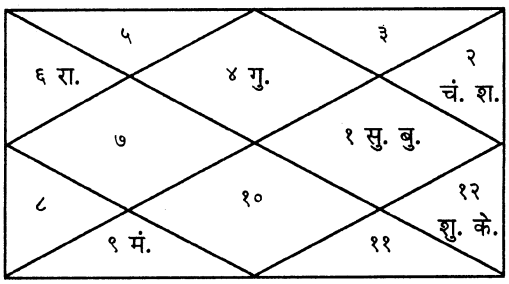

आचार्यपद पर स्थापन थतां **सोमचंद्रनुं 'हेमचंद्रसूरि'** ए नाम स्थापवामां आव्युं. पोताना **आचार्य पद प्रसंगे ज हेमचंद्रे पोतानी माता जे साध्वी थयेल हती तेणीने प्रवर्त्तिनी पद अपाव्युं अने तेने सिंहासन उपर बेसवानी पण गुरु पासे संघ समक्ष आज्ञा अपावी हती.**

हेमचंद्रसूरिए ते पछी खंभातथी पाटण तरफ विहार कर्यो ते समये पाटणना राज्यासन उपर **सिद्धराज** हतो, राजा **सिद्धराज**नी **हेमचंद्रसूरि**नी साथे पहेली मुलाकात बजारमां थई, **हेमचंद्रसूरि** सेनाना संमर्दथी एक दुकान उपर उभा हता. त्यां राजानी नजर पडी, राजाए हाथीने रोक्यो अने कंईक अवसरोचित सुभाषित बोलवा **हेमचंद्रसूरि**ने संकेत कर्यो, आचार्ये स्तुतिगर्भित एक श्लोक कह्यो जे सांभळी राजाने घणी ज प्रसन्नता थई अने **हंमेशां बपोरना पोतानी पासे आववानी आचार्यने प्रार्थना करी, सिद्धराजने हेमचंद्रसूरि**नां एवा शुभ समयमां दर्शन थयां हतां के ते पछी तेणे मालवा उपर चढाई करीने जीत मेळवी हती.[2] आ लडाईमां धारानगरीमांथी जे चीजो मळी हती, तेमां भोजराजानो पुस्तक भंडार पण सामेल हतो राजाने अधिकारीओए मालवानो भंडार बताव्यो तेमां भोजकृत

1. धंधुका स्थित गुरु मंदिरमां मुकेला चित्रपटमां दीक्षा कुंडली आ पमाणे आपी छे.

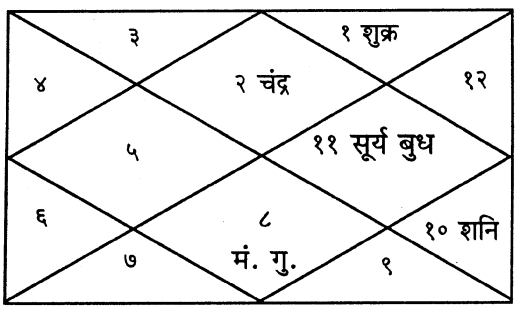

आ. श्री मुक्तिप्रभसूरिजी म, एक पत्रमां लखे छे के—आ कुंडली एक पुस्तकमांथी लखी छे. पुस्तकनुं नाम हाल याद नथी.

मुनि श्री दर्शनविजयजी (त्रिपुटी) म. सा. ए पण दीक्षा कुंडली बाबत ज्योतिष शास्त्रीयचर्या एमना लेखक 'क.स.आ. आ श्री हेमचंद्रसूरीश्वरजीनी दीक्षा कुंडली (जैन सत्यप्रकाश वर्ण २१ अंक २) आ पछी आ ज मासिकमां तेओ श्रीनो आ लेखमां सुधारो जणावेलो लेख पण प्रसिद्ध थयो छे.

मुसलगांवकर लखे छे के ज्योतिषीय गणानानुसार माघ शुक्ल चतुर्दशी शनिवार विक्रम संवत् ११५४ में पडता है। आचार्य हेमचंद्र पृ. १७८

2. यह घटना विक्रम संवत् ११६१-६२ में (ई. सं. ११३६ के प्रारंभ में) घटित हुई होगी रसीकलाल परीख प्रमाण मीमांसा पृ. ४०

व्याकरण, अलंकार तर्क, वैद्यक, ज्योतिष, राजनीति, वास्तुशास्त्र, गणित, शकुन अध्यात्म, स्वप्न, सामुद्रिक, निमित्त, आर्य सद्भावविवरण, अर्थशास्त्र, मेघमाला, प्रश्नचूडामणि आदि पुस्तक संग्रह जोईने राजाए पोताने त्यां पण भंडार करावववा अने व्याकरण शास्त्र आदिना नवा ग्रंथो बनावडावीने फेलाववा विचार कर्यो, तेणे कह्युं. 'गुजरातमां कोई एवो पंडित नथी के जे व्याकरण शास्त्र वगेरेनी रचना करीने गुजरातनुं मुख उज्ज्वळ बनावे?' राजाना आ प्रश्न उपरथी विद्वानोनुं लक्ष्य **हेमचंद्रसूरि** उपर गयुं अने तेओए ते ज वखते आ कार्य माटे **हेमचंद्रसूरि**नी योग्यतानी खातरी आपी, आथी राजाए **आचार्य हेमचंद्र**ने नवीन व्याकरण वगेरेना निर्माण माटे प्रार्थना करी अने उपयोगी सर्व सामग्री एकत्र करीने आचार्यने सगवड करी आपी, **आचार्य हेमचंद्र**नी पण इच्छा कोई नवीन व्याकरण ग्रंथ बनाववानी हती, केमके ते वखते जे 'कल्प' नामना व्याकरण ग्रंथनो अभ्यास करवामां आवतो हतो तेथी संपूर्ण व्युत्पत्ति नहोती थती अने पाणिनिना व्याकरणनुं अध्ययन करतां ब्राह्मणोने अभिमाने चढाववा पडता हता. आ कारणे राजानी प्रार्थना **आचार्य हेमचंद्र**ना कर्तव्यनी सूचना मात्र ज हती, तेमणे मनोयोगपूर्वक अनेक व्याकरण ग्रंथो एकत्र कर्या अने तेनुं अनुशीलन करीने 'सिद्धहेम शब्दानुशासन' नामनुं अभिनव व्याकरणशास्त्र रच्युं. लघुवृत्ति, बृहद्वृत्ति, धातुपारायण, लिंगानुशासन आदि सर्व उपयोगी बाबतोथी संपूर्ण करीने आचार्ये राजाने अर्पण कर्युं. राजाए देशदेशांतरथी ३०० लेखको बोलावीने ३ वर्ष सुधी तेनी नकलो करावीने सर्वत्र तेनो प्रचार कर्यो, आनी २० प्रतो काश्मीरना सरस्वती भंडारमां मोकलवामां आवी. ए सिवाय अंग, वंग, कलिंग, लाट, कर्णाटक, कोकन, काठियावाड, महाराष्ट्र कच्छ, मालवत्स, सिन्धु, सौवीर, नेपाल, पारसीक, मुरूंडक, गंगापार, हरिद्वार, काशि, चेदि, गया, कुरूक्षेत्र, कान्यकुब्ज, गौड, कामरूप, सपादलक्ष, जालंधर, सिंहल, महाबोध, बोड अने मालव, कौशिक वगेरे देशोमां आनी लिखित प्रतो मोकलवामां आवी,

एटलुं ज नहि पण एनो सक्रिय प्रचार करवानो पण राजाए बंदोबस्त कर्यो. काकल नामना कायस्थ विद्वानने आचार्ये आ नवा व्याकरणना अध्यापक तरीके मुकरर करीने विद्यार्थीओने भणाववा मांड्यां. दर महिने सुदि ५ ने दहाडे विद्यार्थीओनी परीक्षा लेवाती अने पास थनारने सुवर्णना भूषण वगेरेना राजाना तरफथी ईनाम अपातां अने आ ग्रंथनो पूरो अभ्यास करीने पाठशाळामांथी निकळनाराओने राजा तरफथी कीमती भूषण वस्त्रो उपरांत पालखी छत्र आदिनां लवाजमो अपातां हतां. आ बधा कारणोथी आचार्य हेमचंद्रना नूतन व्याकरणनी पठन पाठन पद्धति सारी रीते प्रचलित थई गई.

आचार्य हेमचंद्र प्रति सिद्धराजनुं आवुं सन्मान जोई ब्राह्मणोना मनमां ईर्ष्या थती. आथी तेओ राजाने बहेकाववाना साधनोनी तपासमां रहेता. एक वखत **हेमचंद्रसूरि** चतुर्मुख जिनालयमां नेमिचरित्रनुं व्याख्यान करता हता. जेनुं श्रवण करवा अनेक अन्य दर्शनिओ पण आवता हता, त्यां 'पांडवो शत्रुंजय उपर जईने सिद्ध थया' आवा मतलबनो अधिकार सांभळीने ब्राह्मणोए राजाने कह्युं—कृष्ण द्वैपायन व्यासे महाभारतमां युधिष्ठिर आदिनुं वृत्तान्त आप्युं छे. तेमां लख्युं छे के "पांडवोए हिमालय उपर जईने परलोकवास कर्यो." पण **हेमचंद्रसूरि** ए महाभारतना आख्यानथी विपरीत भाषण करे छे, ए माटे महाराजे ए संबंधमां घटित बंदोबस्त करवो जोईए. ए पछी राजाए **आचार्य हेमचंद्र**ने पांडवोना संबंधमां पूछ्युं. जेनो उत्तर आचार्ये आप्यो के अमारा शास्त्रोमां पांडवोए शत्रुंजय उपर देह छोड्यानो लेख छे, ज्यारे महाभारतमां तेमना हिमालय गमननुं पण विधान छे. पण ए निश्चित नथी के जैन शास्त्रमांना अने महाभारतमां वर्णवेला पांडवो एक ज छे या भिन्न-भिन्न? राजाए पूछ्युं—शुं पांडवो पांचथी वधारे थया छे? आचार्ये कह्युं—हा, आ वात महाभारत उपरथी ज सिद्ध थाय छे. भीष्मपितामहनो पवित्र

भूमिमां अग्निसंस्कार करवा माटे ज्यारे तेमनो परिवार शबने एक दुर्गम टेकरी उपर लई गयो अने अग्निदहननी तैयारी करवा मांडी ते वखते जे आकाशथी दिव्य वाणी थई हती तेनी नोंध महाभारतमां नीचे प्रमाणे छे—

अत्र भीष्मशतं दग्धं, पाण्डवानां शतत्रयम् ।
द्रोणाचार्य सहस्रं तु कर्णसंख्या न विद्यते ।।

अर्थात् - 'आ स्थळे सो भीष्म, त्रणसो पांडव, हजार द्रोणाचार्य अने असंख्यात कर्णोनो अग्निसंस्कार थयो छे.'

आम ज्यारे एक टेकरी उपर ज त्रणसो पांडवोनो दाह संस्कार थयो छे तो बीजा पण केटलाक पांडवो थया होवा जोईए? अने आटला बधा पांडवोमांथी पांच पांडवो जैन थया होय अने शत्रुंजय उपर निर्वाण प्राप्त थया होय तो आश्चर्य शुं छे? शत्रुंजय उपर पांडवोनी मूर्तिओ प्रत्यक्ष उभेली छे तेम नासिकना चंद्रप्रभ चैत्यमां अने केदार महातीर्थमां पण पांडव मूर्तिओ विद्यमान छे. **हेमचंद्रसूरि**ना आ अवसरोचित उत्तरथी राजानुं मन संतुष्ट थयुं अने ब्राह्मणो निरुत्तर थया. एकवार राजपुरोहिते जैन साधुओनी व्याख्यान सभामां स्त्रीओ आवे छे ते बाबतमां टीका करी. जेनो हेमचंद्रसूरिए ''सिंहोबली हरिण शंकर मांसभोजी'' आ श्लोकद्वारा एवो मुंहतोड उत्तर आप्यो के पुरोहित पाछो बोलवा ज न पाम्यो.

एक वखत पाटणमां **'देवबोध'** नामनो भागवत मतनो आचार्य आव्यो, राजानी इच्छा तेनी मुलाकात करवानी थई तेथी तेने राजसभामां आववा आमंत्रण कर्युं; पण निःस्पृहतानो डोळ करी तेणे सभामां आववा ना पाडी, तेणे कह्युं-'अमे काशि नरेश अने कान्यकुब्जाधिपतिने जोई लीधा छे, तो थोडा देशना धणी गुजरातना राजानी शी गणतरी छे?' राजाने आवा आडंबरी विद्वानने मळवानी वधारे उत्कंठा थई अने पोताना मित्र **कविराज श्रीपाल**ने साथे लईने ते **देवबोध**नी मुलाकाते तेना मुकाम पर गयो अने नमस्कार करीने राजा जमीन उपर बेसी गयो. ते पछी **देवबोधे श्रीपाल** तरफ संकेत करीने कह्युं 'सभा प्रवेशने अयोग्य आ कोण छे?' राजाए कह्युं—आ ते **कविराज श्रीपाल** छे, एणे दुर्लभ सरोवरनी प्रशस्ति, रुद्रमहालयनी प्रशस्ति, वैरोचन पराजय आदि काव्य प्रबंधोनी उत्तम रचना करीने 'कविराज' ए पदवी यथार्थ करी छे. आ उपर मश्करीमां **देवबोधे** कह्युं—'शुक्र एक आंखे विकल छतां कवि कहेवाणो तो बंने आंखे हीन आ पण 'कविराज' कहेवाय ते युक्तियुक्त ज छे. आवा उपहास्यथी **श्रीपाल**नुं मन ते ज समयथी **देवबोध**ना उपरथी खेंचाई गयुं; पण राजानी इच्छाने मान दई तेणे तेनी साथे केटलीक काव्य चर्चा करी. **कुमुदचंद्र**ने जीतवा बदल पारितोषिक तरीके सिद्धराजे **देवसूरि**ने अपावेल लाख द्रम्मथी तैयार थयेल जिनचैत्यनी प्रतिष्ठा महोत्सवमां **देवबोध**नी साथे सिद्धराज पण आवेल, ज्यां **देवबोधि**ए पोतानी सारस्वत शक्तिनो परिचय आपीने उपस्थित सभाने चकित करी नाखी हती, आ विद्वाननी विद्वत्ताथी राजा तेनी उपर घणो प्रसन्न थयो हतो अने तेने लाख रूपिया बक्षीस आप्या हता; पण तेनी राजसभानो **कवि श्रीपाल** अने बीजा सभ्यो एथी नाराज हता. श्रीपालनी नाराजगी तो एटली हदे पहोंची हती के ते एनां छिद्रो जोवडावतो हतो अने अंते एना गुप्त आचरणो एना जाणवामां पण आव्यां हतां, राजाए पण एनुं मदिरापाननुं व्यसन तो पोतानी नजरे जोयुं हतुं, पण एनी शक्ति उपर ते एटलो फिदा थई गयो के तेने कंई पण कही न शक्यो, पण एटलुं परिणाम आव्युं के राजाए ते पछी एनी घणी सोबत के सहायता कीधी नहि, परिणामे **देवबोध**नी गरीबाई वधी अने उपर कर्जदारी पण थई, छेवटे तेना परिवारना माणसोए तेने **हेमचंद्रसूरि**नी पास जईने मदद मांगवानी सलाह आपी अने

ते पण **हेमचंद्रसूरि** पासे आवीने नीचेनुं प्रशंसा पद्य बोल्यो—

पातु वो हेमगोपालः, कम्बलं दण्डमुद्वहन् ।
षड्दर्शनपशुग्रामं, चारयन् जैनगोचरे ।।३०४।।

हेमचंद्रसूरिए पण तेने बहु मानपूर्वक पोतानुं अर्धासन आप्युं अने **श्रीपाल**नी साथे तेनी प्रीति करावी, एटलुं ज नहि पण **सिद्धराज**ने कहीने **देवबोध**ने लाख द्रम्म अपाव्या, **देवबोधे** आ धनथी पोतानुं ऋण चूकाव्युं अने शेष द्रव्य लईने गंगा किनारे जई परलोकनुं साधन कर्युं.

सिद्धराजने पुत्र न हतो, आथी तेणे तीर्थयात्रामां जवानो निश्चय करी काठियावाड तरफ प्रयाण कर्युं. **हेमचंद्रसूरि**ने पण राजाए आ यात्रामां साथे राख्या, प्रथम शत्रुंजयनी यात्रा करी बार गामनुं शासन आपी **सिद्धराज** गिरनार गयो, गिरनारना प्राचीन मंदिरोनो जीर्णोद्धार सोरठना सूबा **सज्जन मंत्रि**ए कराव्यो हतो अने तेमां २७,००००० सत्यावीश लाख द्रम्म जेटलुं राजाना खजानानुं धन खर्च्युं हतुं जे राजाए माफ करीने **सज्जन**ने पोताना धनने सुकृतमां खर्चवा बदल धन्यवाद आप्यो.

गिरनारथी उतरीने राजा सोमेश्वरपत्तने गयो. अने त्यां अनेक मोटां दान करी कोडिनारमां अंबादेवीना दर्शनार्थे गयो, अहीयां **आचार्य हेमचंद्रे** त्रण उपवास करीने अंबाने प्रत्यक्ष करी राजाना उत्तराधिकारीना संबंधमां पूछ्युं, जे उपरथी तेमने उत्तर मळ्यो के 'सिद्धराजने पुत्र थशे नहि पण पितराई भाई देवप्रसादनो पौत्र अने त्रिभुवनपालनो पुत्र **कुमारपाल** सिद्धराजनो उत्तराधिकार भोगवशे', सिद्धराजे आ दिव्यादेशनी प्रश्न अने ज्योतिषने आधारे परीक्षा करी अने ते सत्य ज होवानो निश्चय थयो. **कुमारपाल** पोतानो उत्तराधिकारी थशे एम जाणीने तेना उपर प्रीति करवाने बदले **सिद्धराजे** द्वेष धारण कर्यो. एटलुं ज नहि पण तेनो वध करावववा सुधीनी हदे ते पहोंच्यो. **कुमारपाल**ने आ वातनी खबर पडतां ज ते घेरथी भागी गयो अने वेष बदलीने छानो रहेवा लाग्यो. एक-बे वार तो **कुमारपाल सिद्धराज**नो शिकार थतो थतो एना हितैषीओनी सहायताथी बची गयो हतो. आ संकटमां **आचार्य हेमचंद्रे** एक वार पाटणमां **कुमारपाल**ने पोताना उपाश्रयमां संताडी राख्यो हतो अने एक वार खंभातमां श्रावक पासेथी ३२ बत्रीस द्रम्म अपावीने एनी मदद करी हती. **कुमारपाले** पण पोताने संकटमां मदद करनार दरेक व्यक्तिनी राज्यप्राप्ति पछी योग्य कदर करी हती.

संवत् ११९९मां **सिद्धराज जयसिंह** परलोकवासी थयो अने **कुमारपाल** राजगादी उपर बेठो. कुमारपाले गादीए बेसीने सपादलक्ष (अजमेरनी आसपासनो देश) ना राजा **अर्णोराज** (अजमेरना आना) उपर ११ वार चढाई करी, पण तेने सफळता मळी नहि. आथी तेणे पोताना **मंत्री वाग्भट्ट**ने पूछ्युं के 'एवो कोई देव छे के जेनी मानता करीने जवाथी आपणी जीत थाय?' उत्तरमां **वाग्भट्टे** पोताना पिता मंत्री **उदय**ने करेल शत्रुंजय तीर्थना जीर्णोद्धारना संकल्प अने लडाईमां देहान्त थतां पहेलां ते माटे **कीर्तिपाल** द्वारा पोताने कहेवडावेल संदेशनुं वर्णन करीने कह्युं के पितानुं ऋण तो हुं शत्रुंजयनो उद्धार करावीश त्यारे उतरशे, पण हमणां में नगरमां एक देहरी करावी छे अने मारा मित्र श्री छड्डूक शेठे तेमां ज एक खत्तक (गोखलो) करावीने तेमां **श्री अजितनाथ**नी प्रतिमा **आचार्य हेमचंद्रसूरि**ना हाथे प्रतिष्ठित करावीने स्थापन करी छे. ते प्रतिमा घणी चमत्कारिक छे, जो स्वामी ए प्रतिमानी मानता करीने प्रयाण करे तो अवश्य सफलता मळी शके.

ते पछी **कुमारपाल** ते मंदिरमां गयो अने मूलनायक **पार्श्वनाथ**ने नमस्कार करी **अजितनाथ**ना दर्शनार्थे गयो

अने लडाईनी सफळता माटे मानता प्रार्थना करी अने ते पछी राजाए १२मी वार **अर्णोराज** उपर चढाई करी. वचमां **चंद्रावती**ना राजा **विक्रमसिंहे** राजाने मारी नाखवा कावतरुं रच्युं हतुं पण तेमांथी ते बची गयो, आ वखते तेणे लडाईमां **अर्णोराज**ने जीत्यो अने तेनुं नगर लुंट्युं, छेवटे तेनी आजीजीथी **कुमारपाळे अर्णोराज**ने योग्य शिक्षा करीने पाटण तरफ प्रयाण कर्युं. वळतां **विक्रमसिंहने** केद करीने गादी उपर तेना भाई **रामदेव**ना पुत्र **यशोधवल**ने स्थापन कर्यो अने ते पछी **कुमारपाले** उत्सव पूर्वक पाटणमां नगर प्रवेश कर्यो. आ प्रसंग विक्रम संवत् १२०७नी आसपास बनवा पाम्यो हतो. आ बनाव पछी **राजाकुमारपाले** जैनधर्मना उपदेशक गुरुना संबंधमां **वाग्भट्टने** प्रश्न कर्यो अने तेना उत्तरमां मंत्री बाडहे **आचार्य हेमचंद्रनुं** नाम जणाव्युं, राजाए **वाग्भट्ट** द्वारा आचार्यने बोलावीने जैनधर्मनुं श्रवण कर्युं अने पोते मांस निवृत्ति आदि नियम ग्रहण कर्या. ए पछी राजा जैन सिद्धान्तोनुं अध्ययन करीने धीरे धीरे खरो जैन बनतो गयो. ३२ दांतोनी शुद्धि माटे ३२ जैन मंदिर पोताना पिताना पुण्यार्थे त्रिभुवनपाल विहार चैत्य अने बीजां अनेक जिन चैत्यो कराव्यां.

संवत् १२१३मां **वाग्भट्टे कुमारपाल**नी आज्ञाथी शत्रुंजयनो जीर्णोद्धार कराव्यो.

प्रबंधमां खुलासो नथी छतां बीजा ग्रंथो उपरथी जणाय छे के संवत् १२१५नी आसपासमां कुमारपाले श्रावकना बारव्रत ग्रहण कर्या अने पोताना ताबाना सर्वदेशोमां पशुवध बंध कर्यो अने सात व्यसनो (१. जुगार, २. मांस, ३. मदिरापान, ४. वेश्यागमन, ५. शिकार, ६. चोरी, ७. परस्त्रीगमन) ने पण देशवटो दीधो, एटलुं ज नहि पण अपुत्रियानुं धन लेवानुं पण राजा कुमारपाले बंध कर्युं अने पोतानी यथार्थ धर्मपणानी छाप पाडी.

कुमारपाले अर्णोराज उपरनी चढाई वखते भगवान् **अजितनाथ**नी जे मानता करी हती, तेनी पूर्ति रूपे तेणे तारंगाजी उपर २४ चोवीस गज उंचुं देहरूं जिनालय कराव्युं अने तेमां १०१ एकसो एक आंगल [ईंच] प्रमाण प्रतिमा स्थापित करी.

मंत्री **उदयन**नो बीजो पुत्र **अंबड** के जेणे कोकणना राजा **मल्लिकार्जुन**नुं मस्तक छेद्युं हतुं अने जे अनेक मंडलोनो सुबो हतो तेणे भरूचना शकुनिकाविहारनो उद्धार कराव्यो अने संवत् १२१६मां **आचार्य हेमचंद्रसूरि**ना हाथे तेनी प्रतिष्ठा करावी.

राजा **कुमारपाल**नी **हेमचंद्रसूरि** उपर अनन्य श्रद्धा हती, ते **हेमचंद्रसूरि**नुं वचन कोई काळे लोपतो न हतो, एटलुं ज नहि पण तेणे एवी प्रतिज्ञा करी हती के 'कोई पण कार्य **आचार्य हेमचंद्र**ना काने नाख्या वगर करवुं नहि.'

कहे छे के **कुमारपाले हेमचंद्रसूरि**ना उपदेश प्रमाणे सिन्धु देशनी प्राचीन राजधानी वीतभयपत्तनमां प्राचीन खंडेरो खोदाव्यां हतां अने तेमांथी तेने प्राचीन जिन मूर्ति हाथ लागी हती, जे पाटणमां लई जईने स्थापन करी हती.

आचार्य हेमचंद्रे बे दिशामां काम कर्युं. एक तो राजाने प्रतिबोध आपीने जैन धर्मनो अने जैन सिद्धान्तोनो देशभरमां प्रचार कराव्यो अने बीजुं सर्वांगीय साहित्य रचीने केवळ जैन समाजनुं नहि पण गुजरात देशनुं पण मुख उज्ज्वल बनाव्युं.

आचार्य हेमचंद्रे रचेल विपुल ग्रंथ राशिमांथी नीचेना ग्रंथोनो नामोल्लेख प्रबंधकारे कर्यो छे.

१. योगशास्त्र, २. व्याकरण पंचांग सहित, ३. प्रमाणशास्त्र, ४. प्रमाण मीमांसा, ५. छंदशास्त्र, ६. अलंकार चूडामणि, ७. एकार्थकोश (अभिधानचिन्तामणि), ८. अनेकार्थकोश (अनेकार्थसंग्रह), ९. देश्यकोश (देशी

नाममाला), १०. निघण्टु, ११. त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र, १२. द्वयाश्रय महाकाव्य, १३. वीतरागस्तव.

आ उपरांत बीजा पण केटलाक आचार्य हेमचंद्रनां ग्रंथोनां नामो नीचे प्रमाणे जाणवामां आव्यां छे.

१. अनेकार्थशेष, २. अभिधान चिन्तामणि, ३. उणादिसूत्र वृत्ति, ४. उणादिसूत्र विवरण, ५. धातुपाठ अने वृत्ति, ६. धातुपारायण अने वृत्ति, ७. धातुमाला, ८. निघंट शेष, ९. बलाबलसूत्रवृत्ति, १०. शेष संग्रह नाममाला, ११. शेष संग्रह नाममाला सारोद्धार, १२. लिंगानुशासनवृत्ति अने विवरण, १३. परिशिष्ट पर्व, १४. हेमवादानुशासन, १५. हेमन्यायार्थ मंजूषा, १६. महावीर द्वात्रिंशिका अने वीर द्वात्रिंशिका ए उपरांत पांडव चरित्र, जातिव्यावृत्तिन्याय, उपदेशमाला अन्यदर्शनवाद विवाद, गणपाठ आदि अनेक ग्रंथो हेमचंद्रसूरि कृत गणाय छे पण ते एमना ज करेला छे के अन्यना ते निश्चित नथी.

प्रबंधना अंतमां **कुमारपाले** संघ काढीने **हेमचंद्रसूरि**नी साथे शत्रुंजयनी यात्रा करी तेनुं संक्षिप्त विवरण छे. तेमां वल्लभीनी पासेना स्थाप अने ईर्ष्यालु (ईसावल) नी टेकरीओनी नीचे ज्यां **हेमचंद्रसूरि**प्रभातनी आवश्यक क्रिया करी हती अने **कुमारपाले** तेमने वंदन कर्युं हतुं त्यां तेणे बे देहरां (चैत्यो) करावीने तेमां **हेमचंद्रसूरि**ना हाथे **ऋषभदेव** अने **पार्श्वनाथ**नी प्रतिष्ठा कराव्यानो उल्लेख छे. आ यात्रा विवरणनी साथे प्रबंध समाप्त थाय छे. आथी जणाय छे के राजा अने आचार्यनी आ छेल्ली तीर्थयात्रा हशे.

संवत् १२२९मां **आचार्य हेमचंद्रे** ८४ वर्षनी अवस्थामां पाटणमां स्वर्गवास प्राप्त कर्यो हतो.

हेमचंद्रसूरिनो प्रबंध प्रभावक चरित्रनो छेल्लो अने सर्वथी मोटो प्रबंध छे. आमां **हेमचंद्रसूरि**, सिद्धराज, कुमारपाल, मंत्री उदयन अने एना पुत्रो वाग्भट्ट अने अंबडनुं संक्षिप्त वर्णन तो छे ज; पण ए सिवाय बीजा पण श्रीपाल, देवबोध प्रमुख अनेक विद्वानो अने अर्णोराज, विक्रमसिंह, मल्लिकार्जुन, नवघण, खेंगार वगेरे राजाओ संबंधी थोडा घणा उल्लेखो थया छे जे ईतिहासमां घणां ज उपयोगी थई पडे तेवा छे.

अन्य अर्वाचीन **कुमारपाल प्रबंधो**मां कुमारपालना समयमां देवबोधि नामना विद्वाननुं आववुं अने कुमारपालने जैन धर्मथी ठगाववा माटे बतावेल चमत्कारोनुं वर्णन अने तेनी सामे **हेमचंद्रसूरि**ए बतावेल चमत्कारोनो आमां उल्लेख नथी. पण **देवबोध** विद्वान सिद्धराजना समयमां त्यां आव्या अने रह्यानो उल्लेख छे. कुमारपालनी कुलदेवीए बलि न आपवा बदल तेने करेली पीडा अने **हेमचंद्रसूरि** देवीने आपेली सजा विषे पण आमां कंई उल्लेख नथी उलटुं ए संबंधमां एम जणाव्युं छे के चैत्र आसो अने माघ महीनाना उत्सवोमां हिंसा रोकी रुधीरना कर्दमो थतां अटकाववाथी देवीगण हर्ष पाम्यो. प्रबंधमां नानी-नानी बनेली दरेक वातोना उल्लेखो कर्या छे ज्यारे उपर्युक्त वातोनो ईसारो पण कर्यो नथी एथी जणाय छे के **जे-जे वातो बनेली छे तेनुं ज आ प्रबंधमां वर्णन छे अने जे वातो पाछळथी प्रसिद्ध थई छे ते आमां नथी.**

प्रबंधमां **हेमचंद्रसूरि** एमना गुरु **देवचंद्र** अने **देवचंद्रना गुरु प्रद्युम्नसूरि**नो नामोल्लेख छे अने एमनो गच्छ 'चंद्रगच्छ' होवानुं लख्युं छे अने **हेमचंद्रसूरि**ना पट्टधर तरीके **रामचंद्रसूरि**ने जणाव्या छे. खरुं जोतां 'चंद्र' ए गच्छ नहि पण 'कुल' हतुं. जे गण अथवा गच्छनुं ए कुल हतुं ते गणनुं नाम 'कोटिकगण' हतुं अने ए ज कारणथी अमोए **हेमचंद्रसूरि**ना गुरु **देवचंद्रसूरि**ने कोटिकगणना आचार्य कह्या छे.

पण **हेमचंद्रसूरि** पोते त्रिषिष्ठशलाकापुरुषचरित्रनी प्रशस्तिमां पोताना गच्छने 'पूर्णतल्ल गच्छ' ए नामथी ओळखावे छे. आ उपरथी **हेमचंद्रसूरि**नो गच्छ कोटिक के पूर्णतल्ल? आ एक प्रश्न उपस्थित थाय छे. एनुं

समाधान ए छे के 'कोटिकगण' ए प्राचीन अने मूळ गच्छ छे, आ मूळ गच्छमांथी काळान्तरे अनेक अवान्तर गच्छो उत्पन्न थईने जुदा-जुदा नामोथी प्रसिद्ध थया छे. तेमांनो ज **हेमचंद्रसूरि**नो पूर्णतल्ल गच्छ पण एक अवान्तर गच्छ छे.

कुमारपाल चरित्र महाकाव्य अने बीजा ग्रंथो उपरथी **हेमचंद्रसूरि**नी गुरु परंपरा नीचे मुजब जाणवामां आवी छे-

कोटिकगण-वज्रशाखा—

श्री दत्तसूरि
↓
श्री यशोभद्रसूरि
↓
श्री प्रद्युम्नसूरि
↓
श्री गुणसेनसूरि
↓
श्री देवचंद्रसूरि
↓
श्री हेमचंद्रसूरि
↓
श्री रामचंद्रसूरि

मुनि सोमचंद्रना काश्मीर गमन प्रसंगे प्रबंधमां जणाव्युं छे के 'सोमचंद्रे खंभातथी प्रस्थान करीने तेओ रैवतावतार नामना नेमि चैत्यमां रोकाया' आ 'रैवतावतार तीर्थ' नो पाछळना लेखकोए 'गिरनार तीर्थ' एवो अर्थ लीधो अने **मुनिसोमचंद्र**ने गिरनार सुधी पहोंचाड्या छे अने त्यां पद्मिनी स्त्रीना सान्निध्यमां मंत्राराधन कर्यानुं वर्णन कर्युं छे, आ एक गेरसमज छे, खरी वात तो ए ज छे के 'रैवतावतार' नामनुं नेमि चैत्य खंभातनी पासे हतुं, जेमां खंभातथी विहार करीने मुनि सोमचंद्रे पहेलो मूकाम कर्यो हतो अने रात्रि समये ध्यानमां सरस्वतीनो साक्षात्कार थयो हतो.

आ प्रबंधमां बीजी पण अनेक वातो विचारणीय छे अने ते उपर लखवानी आवश्यकता पण छे; छतां समयाभावथी आनी के बीजा प्रबंधोनी प्रत्येक वातोनी आ पर्यालोचनामां चर्चा करी नथी.[1]

मु. **कवराडा**, (मारवाड)
ता. ११-८-१९३१

- मुनि कल्याणविजय

1. कवि श्रीपाल जैन हतो ए बाबत श्रीपाल परिवानो कूलधर्म (निर्ग्रंथ २ पृ. ७४-८७मां श्री मधुसुदन ढांकीए चर्चा करी छे. कुमारपाल राजाएबंधावेला वडनगरना किल्लामां प्रशस्तिकार श्रीपाल पोताना माटे लखे छे के
"एकाहनिष्पन्नमहाप्रबन्धः श्री सिद्धराजप्रतिपन्नबन्धुः । श्रीपालनामा कवि चक्रवर्ती प्रशस्तिमेतामकरोत ।।" रतलाम पासेना 'वलपाक' गाममांथी मळेली प्रशस्तिमां पण उपरोक्त श्लोक छे. (संबोधि वो. हिन्दीविभाग पृ. ७)

।। **णमो वद्धमाणस्स** ।।

।। *णमो राइंदसूरिस्स* ।।

श्री प्रभावक चरित्र

समस्त शासननी उन्नति करनार एवा अर्हत्तत्त्व (अरिहंतपणा)नी अमे स्तुति करीए छीए के जेना प्रसादथी पूर्वे घणा महर्षिओ मोक्ष-पदने पाम्या.

सर्व मंगलना विकासी, वृषभ-चिह्न (लक्षण)ने धारण करनार, मन्मथने जीतनार, गण (साधु समुदाय)ना स्वामी तथा [1]शंभु (सुख करनार) एवा **श्री आदिनाथ** तमने पावन करो.

हरिणना लांछनयुक्त, सांसारिक भोगसंपत्तिथी रहित, लोकोना त्रिविध तापने हरनार तथा अचल स्थितियुक्त एवा महाबलिष्ठ **श्री शांतिनाथ** तमारुं रक्षण करो. चंद्रमा पण मृगलांछन युक्त छतां नभोगश्री एटले आकाशमां शोभा युक्त होय छे. वळी ते लोकना संतापने टाळनार होय छे, छतां तेनी स्थिति ध्रुव (निश्चळ) होती नथी अने शांतिप्रभु तो निश्चळ स्थितिवाळा छे, ए ज आश्चर्य छे.

दश अवतार (भव) करनार, सुंदर अंजन समान कांतिवाळा अमारुं रक्षण करो. शुं ते लक्ष्मीपति? के प्रदीप? ना, ए तो **श्री पार्श्वनाथ** भगवंत समजवा. कारण के कृष्ण दश दशार्हयुक्त हता अने काजळ समान रमणीय कांतिवाळा पण हता. तेम दीपक पण दशा-वाटयुक्त अने अंजनयुक्त होय छे. माटे समानता घटित छे.

जेमनी वाणीरूपी गोव्रज भव्योरूपी गोचरमां चरी-संचरी कल्याणरूपी अमृत जेवा दूधथी पात्रने भरी दे छे एवा गोपति (गोवाळ) रूप **श्री वर्धमानस्वामी** तमारुं रक्षण करो.

चौद पूर्व अने द्वादशांगीथी प्रमोद पमाडनार विबुध के देवोने पूजनीय अने बहु पाद-चरणना उदययुक्त एवी वाणीनी जेमणे रचना करी, ते **श्री गौतम स्वामी**ने हुं स्तवुं छुं.

जेमना प्रसादथी सत्पदो अने अर्थ (धन) नी संपत्ति प्राप्त थाय छे, ते जीवने संजीवनी औषधिरूप **एवी भारती अने लक्ष्मीने हुं नमस्कार करुं छुं.**

जेमणे आपेल एक अर्थरूप कोटिगण वृद्धिने पामे, ते **श्री चंद्रप्रभसूरि** महाराजनो हुं अनृणी शी रीते थई शकुं?

जे मिथ्या आदर आपवामां तत्पर रही परना दोषने पोते गुणरूप बनावीने अमने दोषमां राखे छे. (दोषथी अज्ञात राखे छे), ते सज्जन स्तुतिपात्र शी रीते होई शके?

अथवा तो परनी स्तुति करवामां आदर रहित एवा दुर्जनो शुं स्तुतिपात्र छे? के जेओ परदोषथी अभ्यासी बनी अवसरे बीजाने उत्तेजीत करे छे.

आ कळियुगमां पूर्वे युगप्रधान **श्री हेमचंद्रसूरि** महाराजे **कुमारपाल** वगेरे राजाने प्रतिबोध पमाडवा माटे त्रेसठ शलाका पुरुषोना चरित्रो वर्णवी बताव्या छे, तेनी साथे श्रुत केवलीओ, दश पूर्वधारीओ अने **श्रीवज्रस्वामी**नुं चरित्र पण तेमणे बनावेल छे. तेमना नामरूप मंत्रनुं ध्यान करी, तेमना प्रसादथी भावना जाग्रत थतां, **श्री वज्रस्वामी** अने तेमनी पछीना शासननी उन्नति करनार एवा केटलाक प्रभावक आचार्योना चरित्रो के
जे बहुश्रुत महात्माओ तेमज पूर्वना ग्रंथोमांथी, कंईक सांभळी अने जोईने हुं ते रचवानो प्रयत्न करीश. ए मारो प्रयत्न, पगे कनकाचलपर आरोहण करवाने ईच्छनार जेम जगतमां हांसीने पात्र थाय तेना जेवो छे.

श्री देवानंदना प्रवर शिष्य **श्री कनकप्रभ** अने आ ग्रंथनुं शोधन करनार **श्री प्रद्युम्नमुनिवर** जयवंता वर्तो.

1. शंकरना पक्षमां वृषभना चिह्नयुक्त, कामदेवने बाळी नांखनार तथा गणना स्वामी.

मंगलाचरण

आ ग्रंथमां श्री वज्रस्वामी, श्री आर्यरक्षित, श्री आर्यानन्दिल, श्रीमान् कालिकाचार्य, श्री पादलिप्तसूरि, श्रीरुद्र**देवसूरि**, श्री श्रमणसिंह, श्री आर्य खपूटाचार्य, प्रभावक श्री महेंद्रसूरि, श्री विजयसिंहसूरि, श्री जीव**देवसूरि**, श्री वृद्धवादीसूरि, श्री सिद्धसेनदिवाकर, श्री हरिभद्रसूरि, श्री मल्लवादीसूरि, कवींद्र श्री बप्पभट्टिसूरि, श्रीमानतुंगसूरि, श्रीमान**देवसूरि**, श्री सिद्धर्षिसूरि, श्रीवीरगणि, वादि वेतालना बिरुदने धारण करनार श्री **शांतिसूरि**, श्री धनपाल सहित श्रीमान् महेंद्रसूरि, भोजसभामां जय मेळवनार श्री सूराचार्य, श्रीमान् अभय**देवसूरि**, कवीश्वर श्री **वीराचार्य**, श्री **देवसूरि** तथा श्री हेमचंद्रसूरि ए मुनीश्वरोना चरित्रो कहेवामां आवशे. एमना गुणकीर्तनमां मारा जेवानी अल्प मति शुं चाली शके? अथवा तो साकरनो स्वाद लेतां मुंगो माणस पण कलध्वनिथी पोतानो हर्ष जाहेर करे छे. एमना चरित्ररूपी वृक्षोथकी पुष्प-समूह एकत्र करीने गुरुवाणीना प्रभावथी हुं तेनी उत्कट माळा गुंथवानो प्रारंभ करुं छुं. तेमां आदि मंगलरूप, सौभाग्य-भाग्यना निधान एवा श्री वज्रस्वामीनुं चरित्र छे, हुं तेनुं यथामति वर्णन करुं छुं—

१. श्री वज्रस्वामी प्रबंध

पृथ्वीरूप तलावडीना कमळ समान **अवंती** नामे देश छे के जेना गुणोथी आकर्षाईने लक्ष्मी अने सरस्वती बंने मित्रता करीने त्यां रहेती हती. ते देशमां **तुम्बवन** नामे एक सुखी नगर हतुं के ज्यां निवास करवाने देवताओ पण उत्सुक थई रह्या हता. ते नगरमां **धन** नामे एक शेठ हतो के जेना अपरिमित दानथी जीतायेला कल्पवृक्षो अने कामधेनुए स्वर्गनो आश्रय लीधो. ए शेठनो **धनगिरि** नामे एक पुत्र हतो जे अर्थी जनोनी दुःस्थितिरूप नागरमोथनो उच्छेद करवामां महावराह समान अने रूपमां कामदेव जेवो हतो. बाल्यावस्थाथी ज तेनुं मन, पंडितोनी जेम विवेकथी कुशळ बन्युं हतुं. वळी महात्माओना संसर्गथी ते पाणिग्रहण करवाने ईच्छतो न हतो.

हवे ते नगरमां महा धनवान् **धनपाल** नामे एक व्यवहारी वसतो हतो के जेनी लक्ष्मी जोतां लक्ष्मीपति-कृष्णे समुद्रनो आश्रय लीधो. तेने **आर्यसमित** नामे पुत्र हतो अने **सुनंदा** नामे पुत्री हती. ए बंनेनो समागम त्यां लक्ष्मी अने कौस्तुभ जेवो शोभारूप हतो. त्यां **सुनंदा**ने यौवन पामेल जोईने तेना पिता **धनपाले** तेने माटे महागुणवान् **धनगिरि** वर धारी लीधो. तेनो पुत्र **आर्यसमित** गृहवासमां वसतां पण विनश्वर भोगोमां विरक्त थईने रहेवा लाग्यो अने ते पछी तेणे श्रुतरूप चंदनना मलयाचलरूप तथा निर्वृति-स्थाननी नजीक पहोंचेला एवा **श्रीसिंहगिरि** प्रभु पासे दीक्षा लीधी.

पछी एक दिवसे सुज्ञ **धनपाले धनगिरि**ने कह्युं के--'**सागर** ने **रेवा** नदीनी जेम मारी **सुनंदा** पुत्रीनो तुं स्वीकार कर.'

त्यारे **धनगिरि** बोल्यो--'तमारा जेवा सहृदय मित्रो, तत्त्वने जाणनार एवा मने संसाररूप केदखानाना बंधनमां नाखे, ए शुं उचित कहेवाय?'

धनपाले कह्युं—'हे भद्र! पूर्वे ऋषभदेव स्वामी आ तृण समान भोगकर्मने भोगवीने भवसागरथी मुक्त थया. तो आ कांई अनुचित नथी, माटे हे महानुभाव! मारुं वचन तुं मान्य कर.'

आ प्रमाणे तेमना आग्रहथी पोतानुं मन विरक्त होवा छतां **धनगिरि**ए तेमनुं वचन कबूल राख्युं. पछी शुभ लग्ने मोटा ओच्छवपूर्वक तेणे **सुनंदा**नुं पाणिग्रहण कर्युं अने ईतर सामान्य मनुष्योने दुर्लभ एवा विषयसुखने ते आसक्ति राख्या विना भोगववा लाग्यो.

एवामां एकदा **श्री गौतमस्वामी**ए अष्टापद पर्वतना शिखरपर जे वैश्रमण जातिना एक देवताने प्रतिबोध आप्यो हतो, ते देव पोतानुं आयुष्य क्षीण थतां **सुनंदा**नी कुक्षिरूपी सरोवरमां अवतर्यो, एटले पोताना मित्रदेवोथी वियोग पामतां तेमणे पूर्वना दृढ प्रेमने लीधे **सुनंदा**ने श्रेष्ठ स्वप्नो बताव्यां.

आ वखते अवसर मळवाथी पोताने धन्य माननार **धनगिरि**ए, पुत्रना अवलंबनथी संतुष्ट थयेल पत्नी पासे व्रत लेवानी अनुमति मागी अने **जीर्ण दोरडीनी जेम प्रेमबंधनने छेदीने**, जाणे तेना पुण्ययोगे त्यां पधार्या होय एवा श्री **सिंहगिरि**नी पासे ते गयो. त्यां लोचपूर्वक सामायिक उच्चरीने तेणे दीक्षा धारण करी अने निरंतर दुस्तप तप तपतां प्रसन्नताथी ते **धनगिरिमुनि** काळ निर्गमन करवा लाग्या.

हवे अहीं समय पूर्ण थतां एकदां **सुनंदा**ए उत्तम पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. तेणे पोताना तेजथी रत्नदीवाओने पण झांखा पाडी दीधा. ते वखते **सुनंदा**ना संबंधीओए आनंदपूर्वक पुत्रनो जन्म-महोत्सव प्रवर्ताव्यो, के जे बाळकने जोवाथी देवताओ पोताना अनिमिषपणाने सार्थक मानवा लाग्या. एवामां महोत्सव वखते कोईए बाळकने उद्देशीने कह्युं क—'हे बाल! जो तारा पिताए दीक्षा लीधी न होत, तो आ महोत्सवमां भारे आनंद आनंद उछळी रहेत.'

ए प्रमाणे सांभळतां पूर्वना देवभवना ज्ञानांशथी ते बाळक संज्ञीनी जेम विचारवा लाग्यो के—'अहो! मारा पिताए चारित्र लीधुं, तेथी ते महा भाग्यशाळी कहेवाय. वळी मारे पण संयमथी ज भवनो निस्तार थशे.' एम धारी तेमां तेणे बाळपणाने उचित रुदनरूप उपाय शोधी काढ्यो अने रोवानुं शरू कर्युं, ते अनेक रीते बोलावतां, स्नान के अंग दाबतां, अश्व के हाथी बतावतां अने बीजा पण अनेक कौतुकथी लोभावतां पण छानो न रह्यो. कारण के **जे कपटनिद्राथी जागतो सुतो होय, ते केम बोले?** त्यारे **सुनंदा** कंटाळीने चिंतववा लागी के-'आ बाळक तो सर्व रीते दृष्टिने आनंद आपे तेवो छे, परंतु मोटेथी रुदन करीने ए जे कंटाळो आपे छे, तेथी मारुं मन भारे दूभाय छे. ए रीते छसो वर्ष तुल्य छ महिना व्यतीत थई गया.

एवामां **सिंहगिरि** गुरु विचरता-विचरता ते नगरमां पधार्या. त्यां गोचरीने माटे जता एवा धनगिरि मुनिने तेमणे पक्षीओना शब्दज्ञानना निमित्तथी जाणीने कह्युं--'हे मुनि! आजे सचित्त, अचित्त के मिश्र जे कांई द्रव्य (वस्तु) मळे, ते सर्व विचार कर्या विना तमारे लई लेवुं.'

गुरुनुं ए वचन मान्य करीने **धनगिरि मुनि आर्यसमितसहित**, पवित्र बुद्धिथी प्रथम ज **सुनंदा**ना घेर गया. त्यां तेमनो **धर्मलाभ** शब्द सांभळतां केटलीक सखीओ आवीने **सुनंदा**ने कहेवा लागी—'आ **धनगिरि** मुनिने तुं पुत्र आपी दे.' एटले ते प्रथमथी ज भारे कंटाळी गई हती, तेथी पुत्रने छाती पर लईने **सुनंदा** कहेवा लागी—'आ रुदन करतां तमारा पुत्रे मने आकुळ व्याकुळ करी मूकी छे, माटे एने लईने तमे तमारी पासे राखो, तेम करतां जो ए सुखी रहेशे, तो तेटलेथी ज हुं संतोष पामीश.'

त्यारे **धनगिरि** मुनि स्पष्ट रीते बोल्या—'हे भद्रे! हुं मारा पुत्रने ग्रहण करीश, परंतु स्त्रीनुं वचन पंगुनी जेम बराबर चालतुं नथी, तो भविष्यमां कोई प्रकारनो विवाद थवा न पामे, तेने माटे आ बाबत साक्षीओ राखवानी जरूर छे. बस, हवे आजथी तारे पुत्रने माटे कांई कहेवुं नहि.'

सुनंदा बहु कंटाळी गई हती, तेथी तेणे कही दीधुं के--'आ बाबतमां **आर्यसमित** मुनि अने आ मारी सखीओ साक्षी छे. हवे पछी हुं कंई पण बोलवानी नथी.' (एम कहीने तेणिए बाळकने मुनिराजनी झोळीमां वहोरावी दीधो) तरत ज पापना बंधरहित तथा रागादि आंतर शत्रुने दूर करनार एवा **धनगिरि** मुनि, रुदनथी विराम पामेल अने भारे संतुष्ट थयेला ते बाळकने **सुनंदा**ने बतावी, पोतानी झोळीमां लई, गृहांगणथी बहार नीकळतां भारथी भुजाने वांकी वळता ते गुरु महाराजनी पासे आव्या. एवामां वांका वळीने आवता तेमने जोतां गुरु तेमनी सन्मुख आव्या अने तेमनी भुजामांनी झोळी गुरुए पोताना हाथमां लई लीधी, एटले तेमां वजन लागवाथी गुरु बोल्या--'हे मुनि! आ वज्र जेवुं तमे शुं लावीने मारा हाथमां मूक्युं? में तो हाथमांथी मारा आसन पर मूकी दीधेल छे.' एम कहीने गुरुए, साधुओना मुखरूप चंद्रकांतमणिने अमृतस्त्रावना कारणरूप अने चंद्रमा समान कांतिवाळा ते बाळकने जोयो. एटले गुरुए ते बाळकनुं **वज्र** एवुं नाम आप्युं अने साध्वीओना उपाश्रयमां ते श्राविकाओने सोंप्यो. पछी पोते त्यांथी अन्यत्र विहार करी गया.

हवे गुरुभक्ति अने ते बाळकना भाग्य-सौभाग्यथी वश थयेल श्राविकाओ, दुग्धपान वगेरे शुश्रूषाथी, पोताना बाळक करतां पण अधिक वात्सल्य लावीने **वज्र**ने उछेरवा लागी अने रात्रे साध्वीओना उपाश्रयमां वस्त्रनुं पारणुं बांधीने तेमां तेने आनंदपूर्वक झुलावती हती. त्यां रहेतां ते विचक्षण बाळक, साध्वीओए वारंवार आवृत्ति करेल अगीयारे अंग सांभळीने शीखी गयो.

पछी ते कंईक विशेष आकारथी सुशोभित थयेल बाळकनी परिचर्या करवा माटे **सुनंदा** पण त्यां आवी अने ते बाळकने जोतां तेना पर तेने मोह उत्पन्न थयो. एटले तेणे साध्वीओ पासे प्रार्थना करी के--'आ बाळक मने आपो.'

त्यारे साध्वीओ बोली--'वस्त्र अने पात्र समान आ गुरुनी थापण कहेवाय, तो अमाराथी ए बाळक तने केम आपी शकाय? तारे अहीं आवीने ज ए बाळकनुं लालन पालन करवुं; परंतु गुरुनी अनुमति विना एने तारे पोताना घरे न लई जवो.'

एवामां एकदा गुरु महाराज त्यां आव्या. एटले **सुनंदा**ए गृहस्थनी जेम पतिनी पासे पोताना बाळकनी मागणी करी. त्यारे **धनगिरि** मुनिए तेने समजावतां कह्युं के--'हे धर्मज्ञे! राजाना आदेशनी जेम, सज्जन पुरुषना वचननी जेम अने कन्याना दाननी जेम महाजनो एक ज वचनी होय छे; परंतु बाळकना वस्त्रनी जेम तेओ वचन स्वीकारीने मूकी देता नथी, अथवा तो हे भद्रे! तुं विचार कर के आ बाबतमां आपणा साक्षीओ पण छे.'

एम मुनिए समजाव्या छतां निर्विचारपणे तेणे ज्यारे पोतानो कदाग्रह न मूक्यो; त्यारे संघना प्रधान पुरुषोए तेने मधुर वचनथी बहु बहु समजावी; छतां ते वचननो स्वीकार न करतां **सुनंदा** राजानी पासे गई, एटले राजाए संघ सहित साधुओने बोलाव्या. एटले त्यां न्यायाधिकारमां नियुक्त अधिकारीओए तेमना बंने पक्षोनी हकीकत बराबर पूछी लीधी अने तेमनो परस्पर कोलकरार सांभळतां तेओ न्याययुक्त चुकादो आपतां मुंझवणमां पडी गया. तेमणे विचार कर्यो के--'एक तरफ जेना उपकारनो बदलो कोई रीते वळी न शके एवी माता पोते पुत्रनी मागणी करे छे अने बीजी बाजु तीर्थंकरोए पण मान्य करेल एवो श्री संघ (पोताने भीक्षामां आपेल) बाळकनी मांगणी करे छे.'

पछी छेवटे राजाए पोते विचार कर्यो के--'आ बाळक पोतानी इच्छानुसार जेनी पासे जाय, ते एने लई जाय, बीजो विवाद करवानुं अहीं कोई प्रयोजन नथी.' एम धारीने ए बाबतमां राजाए प्रथम ते बाळकनी माताने आज्ञा करी. एटले **सुनंदा**ए रमकडां, तेमज मधुर मीठाई वगेरे बतावीने बाळकने पोतानी पासे बोलाववानो प्रयत्न कर्यो, तथा तेने अनेक प्रकारे ललचाव्यो; परंतु बाळक तेनी पासे न जतां त्यांने त्यां ज उभो रह्यो, त्यारे राजाए

तेना पिता **धनगिरि** मुनिने आज्ञा करी. एटले रजोहरण ऊँचे करीने तेणे निर्दोष वचनथी जणाव्युं के--'हे वत्स! जो तने तत्त्वनुं ज्ञान होय अने चारित्रनी भावना होय, तो कर्मरूप रजने दूर करवा माटे आ रजोहरण ग्रहण कर.' एम सांभळतां मृगनी जेम कूदको मारीने ते बाळक तेमना उत्संगमां आव्यो अने चारित्ररूप राजाना चामर समान ते रजोहरण तेणे लई लीधुं. ते वखते मंगलध्वनिपूर्वक समस्त वाजिंत्रोना नाद साथे तरत जयजयारव प्रगट थयो. आथी राजाए श्री संघनी पूजा करी. पछी श्रावक समुदायथी परवरेला श्री गुरु पोताना स्थाने आव्या.

आ बधुं जोतां **सुनंदा**ए विचार कर्यो के--'मारा भ्राता, आर्यपुत्र (पति) अने पुत्र पण मुनि थया, तो हवे मारे पण संयमनुं शरण लेवुं उचित छे.'

हवे **वज्र** त्रण वरसनो छतां व्रतनी इच्छाथी ते स्तनपान करतो न हतो. तेथी गुरु महाराजे दीक्षा आपी अने तेनी माता सहित तेने त्यां मूक्यो. साध्वीओना उपाश्रयमां ते आठ वरसनो थयो, त्यारे **सिंहगिरि** गुरु पोताना परिवार सहित त्यां आव्या अने **'वज्रमुनि'**ने साथे लई विहार करीने अन्यत्र चाल्या. अप्रतिबंधपणे तेओ ईर्यासमितिपूर्वक विचरवा लाग्या.

एवामां पर्वतनी नजीकनी भूमिमां ते **बाळमुनि वज्र**ने जोईने तेनी परीक्षा करवा तेना पूर्वभवना, मित्र जृंभक देवोए वैक्रिय मेघमाळा प्रगट करी, एटले मयूरोना केकारवथी मिश्र थयेल, सारस पक्षीओना स्वरथी मधुर बनेल नाद श्रोत्रेंद्रियने सुधास्वाद जेवो थई पड्यो. ते वखते निरंतर उत्कट रीते प्रगट थई खडखड करता जळप्रवाहथी ओतप्रोत थयेल पृथ्वी जाणे जळथी ज बनावेल होय तेवी भासवा लागी. आवा समये जीवोनी विराधनाने न ईच्छता गुरु महाराज एक विशाळ गिरिगुहामां (गुफामां) बेसी रह्या. एम घोर घनाघन कोई रीते विराम न पाम्यो, एटले ज्ञानध्यानथी तृप्त थयेला मुनिओ उपवासी थईने रहेवा लाग्या. ते वखते जगत-जीवनना पोषणने माटे शंका पामेल सूर्य पण विश्वमां रसनी स्थापना करवा माटे प्रगट रीते उदय पाम्यो, एवामां सागरमांथी जळ लावीने पृथ्वीने पूरी दीधा पछी मेघ पण मार्गना श्रमथी पथिक जेम विसामो ले, तेम ते विराम पाम्यो, एटले **वज्रमुनि**ना सुंदर व्रतथी संतुष्ट थयेला देवताओए वणिक बनीने पारणा माटे तेमने निमंत्रण कर्युं, एटले त्रण एषणामां उपयोग राखनार अने आहारमां आदर रहित एवा वज्रमुनि गुरुनी अनुमति लईने त्यां आहार वहोरवा गया. ते वखते द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनो तेमणे उपयोग दीधो. तो द्रव्यथी कोळानो पाक जोवामां आव्यो, क्षेत्रथी **मालव** देश हतो अने काळ ग्रीष्मऋतु हती, पण भावनो विचार करतां ते देवता नीवड्या. तेमना चरणन्यास पृथ्वीतलनो स्पर्श करता न हता अने तेमनी पुष्पमाळा अम्लान हती. आथी **वज्रमुनि** विचारवा लाग्या के—'अमो चारित्रधारीओने देवपिंड कल्पे नहि, एम धारी तेमणे आहारनो निषेध कर्यो. तेथी देवो परम हर्षने पाम्या अने पोते प्रगट थईने, सद्व्रतना (सद्वर्तनना) तेजथी सूर्य समान देदीप्यमान एवा **वज्रमुनि**ने तेमणे वंदन कर्युं.

पछी गुरु महाराज साथे तेमणे अन्यत्र विहार कर्यो. एवामां एकदा प्रथमनी जेम ते देवोए **वज्रमुनि**ने घेबरनुं निमंत्रण कर्युं. त्यां पण ज्ञानोपयोगथी तेमणे निषेध कर्यो एटले देवोए प्रसन्न थईने तेमने **आकाशगामिनी विद्या आपी** कारण के तेवा भाग्यवंत सत्पुरुषोने जगतमां कांई दुर्लभ नथी.

हवे **एक दिवसे श्री गुरु महाराज स्थंडिलभूमिए गया** अने शुभ एषणामां उपयोगवाळा एवा **गीतार्थ मुनिओ बधा गोचरीए चाल्या गया हता.** एटले **वज्रमुनि**ने अवकाश मळ्यो तेथी बाल्यभावनी चपळताथी तेमणे बधा मुनिओना उपकरणो नामवार भूमिपर स्थापन करी, गुरुए स्वमुखे प्रकाशेल एवा प्रत्येक श्रुतस्कंधना समूहनी महाउद्यमथी प्रत्येक वाचना आपवी शरु करी. एवामां श्रीमान् **सिंहगिरि** महाराज वसतिनी नजीकमां आव्या अने मेघना जेवो **वज्रमुनि**नो गंभीर शब्द तेमना सांभळवामां आव्यो जे सांभळतां विचार कर्यो के—'शुं मुनिओ आवीने

आ शास्त्राध्ययन करे छे?' त्यां एक **वज्रमुनि**ना शब्दो धारीने तेमने भारे संतोष थयो. तरत ज तेमणे चिंतव्युं के-'अहो! आ गच्छ धन्य छे के ज्यां आवा बाळमुनि पंडित छे.'पछी आ **वज्रमुनि** क्षोभ न पामे एम धारी तेमणे ऊँचा अवाजे **निसीहि**नो उच्चार कर्यो एटले गुरुनो शब्द सांभळतां **वज्रमुनि** पण उपकरणोने यथास्थाने **मूकीने लज्जा** अने भय पामता ते गुरुनी सन्मुख आव्या अने तेमना चरण पुंजी, प्रासुक जळथी पखाळीने **वज्रमुनि**ए ते पादोदकने वंदन कर्युं, आवा तेना विनयने जोतां गुरुए अत्यंत हर्षपूर्वक तेमनी सामे जोयुं. पछी **'वैयावृत्यादिकमां आ लघु मुनिनी अवज्ञा न थाय'** एम विचारीने गुरुए शिष्योने कह्युं के—'हवे अमे विहार करीशुं.'

एम सांभळतां मुनिओ कहेवा लाग्या—'हे प्रभो! अमने वाचना कोण आपशे?'

गुरु बोल्या—'आ **वज्रमुनि** तमने वाचना आपीने संतोष पमाडशे.' एटले तेमणे (कोईपण जातनो) विचार कर्या विना गुरुनुं वचन कबूल कर्युं, अहो! **एवा स्वगुरुभक्त शिष्योने वारंवार नमस्कार छे.**

पछी पडिलेहण करीने ते मुनिओ **वज्रमुनि** पासे आव्या, एटले तेमणे तेमने वाचना आपवानो प्रारंभ कर्यो, विना प्रयासे तेमणे शास्त्रनुं रहस्य एवी रीते समजाववा मांड्युं के मंदबुद्धि पण जे सहेलाईथी समजी शके.

हवे केटलाक दिवस पछी आचार्य महाराज त्यां आव्या एटले मुनिओ तेमनी सन्मुख गया. गुरुए वाचना संबंधी बधो वृत्तान्त पूछ्यो त्यारे ते बधा साथे मळीने कहेवा लाग्या के—'आप पूज्यश्रीना प्रसादथी अमने वाचनानुं भारे सुख थई पड्युं. तो हवे सदाने माटे **वज्रमुनि** ज अमारा वाचनाचार्य थाओ.

एम सांभळतां गुरु बोल्या—'एम धारीने ए मुनिना अद्भुत गुणगौरव तमने जणाववा माटे ज में विहार कर्यो हतो.' अहीं गुरुना आगमन सुधीमां **वज्रमुनि**ए तपस्या विधानथी संशुद्धि युक्त वाचनापूर्वक आगमनो अभ्यास करी लीधो. पछी गुरु पोते **दशपुर**मां जई **वज्रमुनि**ने शेष श्रुतनो अभ्यास करवा माटे **अवंती**मां आदर सहित **श्री भद्रगुप्तसूरि** पासे मोकल्या. गुरुनी आज्ञाथी त्यां जतां तेमणे रात्रे नगरनी बहार निवास कर्यो.

एवामां अहीं गुरुए हर्षपूर्वक पोताना शिष्योने स्वप्ननी वात जणावी के—'दुग्धपूर्ण मारुं पात्र कोई अतिथि आवीने पी गयो.[1] तेथी समस्त दशपूर्वनो अभ्यास करनार कोई आवशे.' एम ते बोलता हता, तेवामां **वज्रमुनि** तेमनी समक्ष आवी वंदन करीने उभा रह्या. एटले गुरुए तेमने पोते भणेल समग्र श्रुतनो अभ्यास कराव्यो. अनुक्रमे अभ्यास करावीने **भद्रगुप्तसूरि**ए **ते सिद्धांतनी अनुज्ञा माटे तेमने पुनः गुरु पासे मोकल्या.**

एवामां पूर्वभवना मित्र देवोए ज्ञानथी जाणीने **वज्रमुनि**नी आचार्य प्रतिष्ठा अवसरे अद्भुत महोत्सव कर्यो. त्यां शुभ लग्ने गुरु महाराजे सर्व अनुयोगनी अनुज्ञा आपी अने प्रमोदपूर्वक सर्व जिनेश्वरोना तेज-तत्त्वने तेमनामां स्थापन कर्युं.

हवे गुरु महाराज स्वर्ग-गमन करतां **श्री वज्रस्वामी** प्रभु **पाटलीपुत्र** नामना नगरना उद्यानमां आवीने समोसर्या. त्यां एकदा तेमणे पोतानुं कुरूप बनावीने धर्मनुं व्याख्यान आप्युं. त्यारे लोको कहेवा लाग्या के—'अहो! आ गुणने अनुरूप नथी.' पछी बीजे दिवसे सुंदर रूपथी तेमणे धर्मोपदेश कर्यो. एटले लोको कहेवा लाग्या के—'अहो! नगरने क्षोभ न थाय, एवा भयथी आचार्य महाराजे पोतानुं कुरूप बनाव्युं हतुं.'

हवे अहीं साध्वीओ पासे **वज्रस्वामी**ना गुणग्रामना गान श्रवण करवाथी **धनश्रेष्ठी**नी **रुक्मिणी** नामे कन्या प्रथमथी ज तेमना प्रत्ये भारे आदरयुक्त अनुरक्त थई बेठी हती. तेणे पोताना पिताने जणाव्युं के—'हे तात! मारुं एक सत्य वचन सांभळो. मने **श्री वज्रस्वामी** साथे परणावो, नहि तो मारे अग्निनुं शरण लेवुं पडशे.' एटले पोतानी पुत्रीना आवा आग्रहथी शतकोटि धन सहित पोतानी पुत्रीने लईने धन शेठ **वज्रस्वामी** पासे आव्यो त्यां

1. आवश्यक मलयगिरि वृत्ति पत्र ३८६मां सिंहनुं बच्चुं आवीने पी गयानुं जणाव्युं छे.

अंजलि जोडीने तेणे सूरिने विनंती करी के—'तमने मारी पुत्री पति करवाने ईच्छे छे. ए रूप अने यौवनयुक्त छे, माटे एनो स्वीकार करो, तेमज जीवन पर्यंत दान अने भोगथी पण क्षीण न थाय, तेटलुं आ धन ग्रहण करो. हुं तमारा चरणो धोउं छुं.'

एम सांभळता **श्री वज्रस्वामी** कहेवा लाग्या के—'हे श्रेष्ठिन्! तमे तो सरल लागो छो. पोते सांसारिक बंधनमां बंधाईने दूर रहेला बीजाओने पण बंधनमां नाखवा इच्छो छो. वळी हे भद्र! रेणुंथी रत्नराशि, तृणथी कल्पवृक्ष, गर्ताडुक्करथी गजेंद्र, काकथी राजहंस, मातंगगृहथी राज महेल अने क्षार जळथी अमृतनी जेम कुद्रव्य अने विषयास्वादथी तमे मारा तपनुं हरण करवा इच्छो छो. विषयो तो तरत अनायासे ईन्द्रियोने विकसित करे छे अने महा भोगोयुक्त धन तो केवळ आत्माने बंधनमां ज नांखे छे. तो ए तमारी पुत्री जो मारामां अनुरक्त होय अने छायानी जेम मने अनुसरवा मागती होय, तो में स्वीकारेल ज्ञान-दर्शन युक्त व्रतने धारण करे.' ए प्रमाणे सांभळतां अभिलाषारूप विष दूर थवाथी रुकिमणी प्रतिबोध पामी अने संयम लईने ते साध्वीओनी पासे रही. ते वखते **आचारांगसूत्र**मां रहेल **महापरिज्ञा** नामना अध्ययनमांथी श्री वज्रस्वामीए **आकाशगामिनी** विद्या उद्धृत करी.

एवामां एकदा वृष्टिना अभावे त्यां भयंकर दुष्काळ आवी पड्यो, जेथी पृथ्वीपर सचराचर प्राणीओनो अधिक नाश थवा लाग्यो. ते वखते सीदाता श्री संघे आवीने **श्री वज्रस्वामी**ने निवेदन कर्युं के—'हे स्वामिन्! अमारुं रक्षण करो.' एटले **श्री वज्रस्वामी**ए तेमनी ए वात ध्यानमां लीधी. पछी तरत ज हर्षपूर्वक एक पट विस्तारी तेना पर श्री संघने बेसाडीने ते गगनगामिनी विद्याना बळे देवनी जेम आकाश मार्गे चाल्या. ते वखते शय्यातर त्यां घासनी शोध करवा गयो हतो. एटले पाछळथी तेणे आवीने कह्युं के—'हे प्रभो! मारो पण उद्धार करो.' त्यारे **वज्रसूरि**ए तेने पण साथे लई लीधो. पछी तरत ज एक सुखी देशमां आवेल महापुरी के ज्यां बौद्ध धर्मानुयायी राजा अने लोको वसता हता, त्यां बधा आवी पहोंच्या, एटले सुकाळ अने राज्यना सुखथी श्री संघ त्यां सुख पूर्वक रहेवा लाग्यो.

एवामां सर्व पर्वोमां उत्तम एवा **श्री पर्युषणा**पर्वना दिवसो आव्या. त्यारे राजाए प्रतिकूळ थईने पुष्पोनो निषेध कर्यो एटले जिनपूजानी चिंतामां आकुळ व्याकुळ थईने श्री संघे **वज्रस्वामी**ने विज्ञप्ति करी. तेथी सुज्ञशिरोमणि अने उज्ज्वळ कीर्तिधारी एवा **श्री वज्रस्वामी** आकाशमार्गे उडीने **माहेश्वरी** नगरीपर आव्या. त्यां तेमना पितानो मित्र एक गुणज्ञ माळी बगीचामां हतो. ते **कुलसिंह** नामना आरामिक **श्री वज्रस्वामी**ने जोई, वंदन करीने कहेवा लाग्यो-'हे नाथ! मने कंईक कार्य फरमावो.'

त्यारे गुरु बोल्या—'हे आर्य! सुंदर पुष्पोनुं मारे काम छे, ते करी आपो.'

एटले मालिके कह्युं—'तमे पाछा फरो, त्यारे लेता जजो.' एम सांभळी **वज्रस्वामी** त्यांथी क्षुद्र हिमवंत पर्वत पर **लक्ष्मीदेवी** पासे गया. त्यां धर्मलाभरूप आशिषथी तेने आनंद पमाडीने तेमणे पोतानुं कार्य जणाव्युं. एटले लक्ष्मीदेवीए पोताना हाथमां रहेल सहस्रपत्र कमळ जिनपूजाने माटे तेमने अर्पण कर्युं. ते लईने **वज्रस्वामी** पिताना मित्र पासे आव्या. तेणे वीस लाख पुष्पो तेमने अर्पण कर्यां. ते बधां वैक्रिय विमानमां लईने सूरि पोताना नगरमां आव्या. त्यां जृंभक देवताओए आकाशमां रहीने संगीत-महोत्सव कर्यो, एटले दिव्य वाजिंत्रो वागतां आकाश एक शब्दमय थई गयुं. एवामां ओच्छव करतां देवोने पोतानी उपर आवता जोईने बौद्ध लोको भारे चमत्कार पाम्या अने कहेवा लाग्या के—'अहो! आपणा धर्मनो महिमा तो जुओ, के देवताओ आवे छे.' त्यां तो देवो तेमना देखतां जिनमंदिरमां चाल्या गया.

पछी जिनेश्वर भगवंतनी पूजा करीने श्रावको बधा परम प्रमोद पाम्या अने पर्युषणा पर्वना दिवसे श्री गुरु महाराज पासे तेमणे धर्मोपदेश सांभळ्यो. आ चमत्कार जोई **राजा संतुष्ट थईने गुरु महाराज पासे आव्यो.**

एटले **वज्रस्वामी**ए तेने प्रतिबोध पमाड्यो, जेथी बौद्ध लोको बधा अधोमुख थई गया.

हवे एकदा स्वामी विचरता विचरता दक्षिण दिशामां गया. त्यां कोई स्थळे शुद्ध भूमिभागयुक्त उद्यानमां तेमणे निवास कर्यो. ते वखते श्लेष्मरोगने दूर करवा माटे तेओ सुंठनो कटको लाव्या अने वापरतां बाकी रहेल ते सुंठनो कटको तेमणे पोताना कानपर मूकी दीधो. पछी संध्याकाळे पडिलेहण करतां मुहपत्तीथी कानना पहिलेहणमां ते नीचे पड्यो. ते जोतां तेमणे विचार कर्यो के—'अहो! मने विस्मृतिनो उदय थयो, तेथी हवे आयुष्य क्षीण थई गयेल छे. तो पूर्वना दुष्काळ करतां पण अधिक दुष्काळ प्राप्त थशे.' पछी **वज्रस्वामी**ए गच्छनी संभाळ माटे **वज्रसेन** मुनिने आदेश करीने मोकल्या. एटले पोताना मन समान मनोहर एवा **कुंकण** (कोंकण) देश तरफ ते हळवे हळवे चाल्या. त्यां दुष्काळने लीधे भिक्षा न पामतां साधुओने तेमणे विद्यापिंडथी भोजन करावीने कह्युं के—'बार वरस सुधी निरंतर ए विद्यापिंडनुं भोजन करवुं पडशे. माटे अनशन करवा लायक छे.' एम सांभळतां मुनिओ तेमनो मनोभाव जाणीने त्यां रहेवा लाग्या.

[1]हवे **श्री वज्रस्वामी** साधुओ सहित कोई पर्वत पर चाल्या. त्यां मार्गे जतां एक गाममां एक नाना शिष्यने भोळवीने बीजा मुनिओ पर्वत पर आगळ चाल्या. ते वृत्तान्त जाणवामां आवतां ते शिष्य परम वैराग्य पाम्यो. अने चिंतववा लाग्यो के—'आ शिष्य चिरंजीवी रहो,' एम धारी गुरु मने मूकीने चाल्या लागे छे. तेमणे मने निःसत्त्व जोयो, तो हुं प्रभुनी पाछळ शा माटे नहि जाउं?' एम धारीने तेणे तप्त पाषाणपर **पादपोपगमन** अनशन कर्युं. एटले मधना बिंदुनी जेम तरत तेनो देह ओगळी गयो. तेनो स्वर्गवास थतां देवोए महोत्सव कर्यो. त्यारे **वज्रस्वामी**ए यतिओनी आगळ ते शिष्यनुं ए महासत्त्व कही संभळाव्युं. जे सांभळतां बधा मुनिओ परम वैराग्य पाम्या अने त्यां शरीरने शांत-स्थिर करीने निर्जीव भूमि पर अलग-अलग बेसी रह्या.

एवामां कोई प्रत्यनीक देवी त्यां उपसर्ग करवाने आवी. अने मध्यरात्रे दिवस बतावीने ते तेमने दहीं आपवा लागी. एटले त्यां अप्रीति थाय तेवुं समजीने ते मुनिओ बीजा कोई शिखर पर गया. **जेमने जीवन अने मरणमां आकांक्षा न होय, तेमने देवताओ शुं करवाना हता?** पछी तेओ यथायोग प्राणनो त्याग करीने देवलोकमां गया. तेमज अचिंतनीय वैभववाळा एवा **श्री वज्रस्वामी** पण स्वर्गे गया. तेमनुं मरण जाणवामां आवतां पूर्वभवना स्नेहने लीधे इंद्र त्यां आव्यो अने तेणे पोतानो रथ चोतरफ फेरव्यो. त्यां गहन वृक्षोने उखेडी, पृथ्वीने समान करीने ते देवताओ सहित क्षणवार उभो रह्यो. त्यारथी ते पर्वत **रथावर्त** एवा नामथी प्रसिद्ध थयो. कारण के **महापुरुषोथी जे ख्याति पामे, ते अचलताने पामे छे.**

हवे **वज्रसेन** मुनि **सोपारक** नामना नगरमां गया. त्यां **जिनदत्त** शेठनी **ईश्वरी** नामे प्रिया पोताना चार पुत्रो सहित रहेती हती. समर्थ गुरु महाराजनी शिक्षाने माथे चढावनार ते मुनि ए श्राविकाना घरे गया. एटले चिंतामणि समान तेमने आवता जोईने ते परम हर्ष पामी अने कहेवा लागी के—'हे प्रभु! आजे अमे एवो विचार कर्यो छे के—'कष्टनी कल्पनाथी लक्षमूल्यनुं पायस तैयार करेल छे. द्रव्यनी संपत्ति छतां अन्नना अभावे अवश्य मरण नीपजे छे, माटे ए तैयार करेल पायसमां विषम विष नाखवानुं छे. एवामां पुण्ययोगे अत्यारे आप पूज्यनुं पवित्र दर्शन थयुं, तेथी अमे कृतार्थ थया. हवे पारलौकिक कार्य करवानी अमारी धारणा छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां गुरुशिक्षाथी चमत्कार पामेल मुनि बोल्या—'हे धर्मशील श्राविका! **वज्रस्वामी** गुरुए

1. वात बराबर समजाती नथी. कंईक पाठ छूटी गयो पण लागे छे. आवश्यक सूत्र मलयगिरि वृत्ति पत्र ३६६मां आ प्रमाणे जणाव्युं छे. "श्री वज्रस्वामी अणसण करवा एक पर्वत तरफ परिवार साथे चाल्या. तेओनी साथे एक बाल मुनि हता. मुनिओए तेने ना पाडी पण बाल साधुने ए न गम्युं. एक गाममां एने भूलावामां नांखी मुनिओ पर्वत तरफ निकळ्या. बाल मुनिए विचार्युं—हुं पाछल पाछल जईश तो तेओन असमाधी थशे. एटले ते बालमुनिए पर्वत नीचे तलेटीमां अनशन कर्युं।"

निवेदन करेल वचन सांभळ'—'लक्षमूल्य पायस एक स्थळे जोवामां आवतां सुकाळ थशे माटे वृथा ए भोजनने विषमिश्रित न कर.'

त्यारे ते कहेवा लागी—'हे प्रभु! अमारा पर प्रसाद करीने आ भोजन स्वीकारो.' एम कहीने तेणे मुनिने ते उत्तम भोजन वहोराव्युं. एवामां संध्या थतां दरियामार्गे प्रशस्त धान्यथी भरेला वहाण त्यां आवी चड्यां. जेथी तरत सुकाळ थयो. आथी परिवार सहित ते श्राविका चिंतववा लागी के—'अहो! खोटी रीते आपणुं मरण थई जात. तो हवे जिनधर्मना बीजरूप सद्गुरु श्री वज्रसेन मुनि पासे दीक्षा लईने आपणे आपणा जीवितव्यनुं फळ केम न लईए?' एम धारीने **नागेंद्र निर्वृति, चंद्र** अने **विद्याधर** ए पोताना चार पुत्रो साथे तेणे दीक्षा लीधी. ते चारे कंईक न्यून दश पूर्वधारी थया. तेमना नामना गच्छो हजी पण अवनीपर जयवंत वर्ते छे, ते चारे जिनाधीश-मतनो उद्धार करवामां धुरंधर हता. **ते तीर्थमां अद्यापि तेमनी पूजनीय मूर्तिओ विद्यमान छे.**

ए प्रमाणे देवताओने पण स्तुति करवा लायक अने जिन-उपनिषद्ना कंईपण तत्त्वरूप, संपत्तिना हेतुरूप अने भवसागरथी निस्तार पामवाने सेतुरूप एवुं **श्री वज्रस्वामी**नुं चरित्र भव्यात्माओने आनंद आनंद आपो अने यावच्चंद्र दिवाकरौ जयवंत वर्तो.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरमां हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र **श्री प्रभाचंद्रसूरि**ए मनपर लेतां **श्री पद्युम्नसूरि**ए तपासीने शुद्ध करेल (निर्मळ करेल), श्री पूर्व महर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलमां आ **श्रीवज्रसूरि**ना चरित्ररूप प्रथम शिखर संपूर्ण थयुं.

जेमनी मूर्ति अष्टापदनी शोभायुक्त छे, जेमनी दिव्य शोभा विमलाचलनी जेम तारनार छे, जेमनी निर्दोष मति दुःखी प्राणीओने सुख आपनार छे, जेमनो प्रभाव, दुर्जनोनुं स्तंभन करनार छे, जेमनुं चित्त **उज्जयंत**मां स्थिति करनार अने जेमनो यश सुंदर अने अनुपम छे, तथा जे अगणित गुणथी जयवंत वर्ते छे एवा हे श्री प्रद्युम्नसूरि! तमे ज तीर्थरूप छो.

इति श्री वज्रस्वामी-प्रबंध

सदाचार का आचरण आत्मा को अभिनंदनीय, वंदनीय, पूजनीय के साथ परम श्रेष्ठ मोक्ष पद तक पहुँचा देता है।

जिन-जिन आत्माओं ने मोक्ष पद प्राप्त किया वे सभी सदाचारवान ही थें।

सत् पुरुषों का आचरण वही सदाचार। आयुष्य कर्म बंध के समय अनाचरण हो जाता है तो आत्मा की नियमा दुर्गति होती है। अतः प्रतिपल सदाचार की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

-जयानंद

२. श्री आर्यरक्षितसूरि-प्रबंध

जेमनो कहेल धर्म आंतरिक शत्रुओनुं जडमूलथी निकंदन करे छे, एवा **श्रीमान् आर्यरक्षितसूरि** भव्यात्माओनुं निराबाधपणे रक्षण करो. अमृत समान जेमनुं चरित्र कहेवाने बुधजनो पण असमर्थ छे, तो कौशल्य रहित मारी मति तेमां शुं गति करी शके? तथापि तेमना गुणोथी आकर्षाईने हुं, तिमिर (अज्ञान) समूहनो नाश करवामां सूर्य समान एवा **श्रीआर्यरक्षितसूरि**नुं चरित्र रचुं छुं.

सदा आनंदनी बहुलताथी अमरावतीने पराभव पमाडनार तथा **अवंति** रूप कांतानी कटिमेखला समान **दशपुर** नामे नगर छे. त्यां नवीन चंद्रमा समान **उदायन** नामे राजा के जे कलंकसहित अंधकार-दोषने अगम्य तथा अक्षीणकळावाळो हतो. त्यां पुरोहितना पदथी प्रतिष्ठा पामेल, विशिष्ट बुद्धिवाळो, वर्णमां उत्तम, कुळमां श्रेष्ठ, क्रियामां श्रद्धा धरावनार अने कलानिधि एवो **सोमदेव** नामे पुरोहित हतो के जे मंत्रियोथी पण विशिष्ट बुद्धिवान् हतो. जेथी तेणे पोताना बुद्धिबळथी बधा शत्रुओने शांत पाडी दीधा हता, तेथी ते राजानो सेना समूह तो मात्र राज्यनी शोभा माटे ज हतो. तेनी **रुद्रसोमा** नामे प्रिया हती के जेणे प्रिय वचनपूर्वक अर्थी जनोने मनोवांछित दान आपवाथी तेमना दारिद्र्यने दूर करी दीधुं हतुं. तेमने बे पुत्रो उत्पन्न थया. तेमां प्रथम **आर्यरक्षित** अने बीजो **फल्गुरक्षित** हतो. पुरोहिते ते बंनेने अंगसहित वेद भणाव्या. पोताना विनीत पुत्रो पासे पोतानी समृद्धिने कोण छूपावे? छतां शास्त्रामृतने विषे अतृप्त रहेल **आर्यरक्षित** पोते विद्वान थया छतां ते करतां अधिक भणवानी इच्छाथी ते **पाटलीपुत्र** नगरमां गयो. त्यां दिव्य बळनी स्फूर्त्तिथी अल्प काळमां भारे बुद्धिशाळी एवा तेणे गुप्त वेदोपनिषदनो पण अभ्यास करी लीधो. पछी उपाध्यायनी अनुज्ञा मेळवीने ते स्वभूमि तरफ पाछो फर्यो अने अश्वारूढनी जेम ते पोताना नगरना पादरे पहोंच्यो. त्यारे पुरोहिते राजाने निवेदन करतां ते वृत्तान्त जाणीने राजा पोते हस्तीपर आरूढ थईने तेनी सामे आव्यो अने महोत्सवपूर्वक तेणे **आर्यरक्षित**ने नगरमां प्रवेश कराव्यो. त्यां वृद्ध कुलीन कांताओए प्रतिगृहे आपेल शुभ आशिषो सांभळतां पाछला पहोरे ते पोताना आवासना आंगणे आव्यो.

हवे **रुद्रसोमा** तेनी माता जीवाजीवादिकना नवतत्त्वना विस्तारने जाणनार श्राविका हती. ते वखते ए सामायिकमां होवाथी, उत्कंठायुक्त अने जमीन सुधी मस्तक नमावीने प्रणाम करतां पुत्रने जोईने पण तेणे **सामायिक भंगना भयने लीधे** आशिषथी वधाव्यो नहि. आथी अत्यंत खेद पामेल धीमान् **आर्यरक्षित** विचार करवा लाग्यो के—**'अभ्यास करेल बहु शास्त्र पण मारे तुच्छ जेवुं छे के जेथी मारी माता तो संतोष न ज पामी.'** एम धारीने ते कहेवा लाग्यो के—'हे माता! तने केम संतोष न थयो?'

त्यारे ते बोली—'दुर्गतिने आपनार तारा ए अभ्यासथी हुं शी रीते संतुष्ट थाउं?'

त्यारे आर्यरक्षिते कह्युं—**'तो हवे विलंब कर्या विना मने आज्ञा करो के जे अभ्यासथी तने संतोष थाय ते करुं. बीजा कार्यनुं मारे शुं प्रयोजन छे?'**

एम सांभळता हर्षना रोमांचने धारण करती अने पुत्रवती प्रमदाओमां पोताने प्रधान मानती एवी **रुद्रसोमा** कहेवा लागी के—'हे वत्स! चोतरफथी प्रगट थता उपद्रवने नष्ट करनार तथा अन्य मतावलंबीओना जाणवामां न आवेल एवा जिनभाषित **दृष्टिवाद**नो तुं अभ्यास कर.'

दृष्टिवादनुं नाम सांभळी **आर्यरक्षित** विचारवा लाग्यो के—'अहो! **दृष्टिवाद** ए नाम पण केवुं सुंदर छे,

माटे हवे मारे ए ज अवश्य भणवानुं कार्य करवानुं छे.' एम निश्चय करीने तेणे कह्युं के—**'सर्व तीर्थोमां शिरोमणि एवी हे माता!** मने तेनो अध्यापक बतावो के जेथी तेनी पासे हुं सत्वर अभ्यास शरू करुं.'

त्यारे **रुद्रसोमा** कहेवा लागी के—'विनयना स्थान हे वत्स! तारा हुं ओवारणा लउं, हवे सावधान थईने तुं सांभळ—अब्रह्म अने परिग्रहना त्यागी, महासत्त्ववंत, पोताना अंतरमां परमार्थबुद्धि धरावनार, सद्ज्ञानना निधान एवा **जैनमुनि तोसलिपुत्र** ए ग्रंथना ज्ञाता छे, ते अत्यारे तारा ईक्षुवाटक (शेलडीना वाडा)मां छे. तो हे निर्मळमति! तेमनी पासे तुं ए ग्रंथनो अभ्यास कर, के जेथी तारा चरित्रथी मारी **कुक्षि** शीतल थाय.'

एम सांभळतां 'प्रभाते जईश' एम कहीने ते अभ्यासनी उत्कंठामां तेणे रात गाळी. पछी प्रभात थतां ते बहार नीकळ्यो. एवामां अर्धमार्गे तेना पितानो एक ब्राह्मण मित्र तेने सन्मुख मळ्यो. ते **आर्यरक्षित** माटे शेलडीना साडानव सांठा स्कंधपर लई आवतो हतो. तेणे नमस्कार करतां **आर्यरक्षित**ने प्रीतिपूर्वक आलिंगन आप्युं. अने कह्युं—'तुं पाछो घरे चाल.'

त्यारे ते बोल्यो—'माताना आदेशथी हुं जईने पाछो सत्वर आवीश. तमे हमणां मारा बंधुने संतुष्ट करवा घेर जाओ.' एम कहीने ते आदरपूर्वक ईक्षुवाडा तरफ चाल्यो. जतां जतां **आर्यरक्षित** विचारवा लाग्यो के—'अहो! आ श्रेष्ठ दृढ निमित्तथी ए ग्रंथोना हुं साडानव अध्याय अथवा परिच्छेद अवश्य पामी शकीश. पण ते करतां अधिक तो निश्चय न ज पामुं.' पछी प्रभातना संध्या समये त्यां मुनिओना स्वाध्याय-ध्वनिथी अद्वैत शब्द सांभळतां ते उपाश्रयना द्वार पासे बेसी गयो. त्यां जैनमतना विधिथी ते तद्दन अज्ञात होवाथी 'हवे शुं करवुं?' तेनो ख्याल न आववाथी ते जड जेवो बनी गयो. एवामां आचार्य महाराजने वंदन करवा आवनार एक **ढड्ढर** नामे श्रावक तेना जोवामां आव्यो. तेनी पाछळ पाछळ रहीने तेनी माफक ते महामतिए पण वंदनादिक कर्युं. कारण के तेवा सुज्ञोने शुं दुष्कर होय? सर्व साधुओने वंदन कर्या पछी अशिक्षितपणाने लीधे ते श्रावकने वंदन न कर्युं. कारण के **न जणावेल केटलुं जाणी शकाय?** ते वखते ए लक्षणथी आचार्य महाराजे तेने नवीन जाणीने आदरथी पूछ्युं के—'हे भद्र! तने धर्मनी प्राप्ति क्यांथी थई?'

त्यारे ते **ढड्ढर** श्रावकने बतावतां बोल्यो के—'आ उत्तम श्रावकथी ज.' एम ते कहे छे, तेवामां एक मुनिए तेने ओळखी लीधो अने जणाव्युं के—'गई काले राजाए महोत्सवपूर्वक जेने नगरमां प्रवेश कराव्यो ते आ **सोमदेव** पुरोहितनो अने **रुद्रसोमा** श्राविकानो पुत्र छे. ए चतुर्वेदी (चार वेदने जाणनार) अने **समस्त मिथ्यात्वीओमां मुख्य छे.** एनुं अहीं आगमन संभवतुं नथी, छतां शा कारणे ए अहीं आवेल छे ते समजातुं नथी.

एवामां आकुळता लाव्या विना **आर्यरक्षिते** मातानुं कथन संभळाव्युं. जे सांभळतां तेना चरित्रथी चमत्कार पामेल गुरुमहाराज चिंतववा लाग्या के—'आ विप्र कुलीन अने आस्तिक छे, पण एनो मार्दवगुण कुळने अनुचित छे, वळी एमां सुकृताचार संभवित होवाथी ए जैन धर्मने उचित छे.' पछी श्रुतमां उपयोग देतां, पूर्वना पाठने उचित तथा **श्रीवज्रसूरि** पछी तेने भावी प्रभावक समजीने आचार्य महाराज बोल्या के—'हे भद्र! जैन दीक्षा विना **दृष्टिवाद** अपाय नहि, कारण के **विधि सर्वत्र सुंदर होय छे.**'

त्यारे **आर्यरक्षित** कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! पूर्वे मारा नव संस्कार थई गया छे, संन्यासनो नथी थयो. हवे जैनेंद्र संस्कारथी आप मारा शरीरने अलंकृत करो; परंतु ए संबंधमां मारे कंईक कहेवानुं छे, ते आप लक्ष्य पूर्वक सांभळो, मिथ्या मोहथी लोको बधा मारा अनुरागी छे, तेमज ए वृत्तान्त राजाना जाणवामां आवतां ते पण कदाच दीक्षाने मूकावे; कारण के अज्ञ स्वजनोनी ममता दुस्त्यज छे. माटे पोताना बाळकरूप मने प्रसन्न थईने दीक्षा आपतां आपने अन्य देशमां विचरवुं पडशे; कारण के तेथी शासननी लघुता न थाय.'

ए वाक्यनो स्वीकार करतां गुरु महाराजे **सार्वज्ञमंत्रथी मंत्री**ने तेना मस्तक पर वासक्षेप नाख्यो अने पूर्वना

अभिलाषी **आर्यरक्षित**ना क्लेशनी जेम केशनो सामायिकव्रतना उच्चारपूर्वक लोच कर्यो. तेणे गृहस्थवेष ईशान खूणे तजी दीधो एटले गुरुए तेने श्वेतवस्त्र पहेरावीने यतिवेषथी संयोजित कर्यो. पछी नवदीक्षित **आर्यरक्षित**ने आगळ करीने तेमणे तरत ज अन्यत्र विहार कर्यो. त्यां गुरुमहाराजे तेने मूल सहित अंगोपांगादिक ग्रंथो भणाव्या अने तेवा तेवा तपो विधानथी तेमने केटलाक पूर्वो पण भणाव्या. तेणे पूर्वो सहित शास्त्रोनो अभ्यास कर्यो अने हिताहित जाणवामां कुशळ थयो. विनय पूर्वक पोताना आचारने पाळवा लाग्यो अने व्रतना स्वरूपने पण ते बराबर समंजी शक्यो.

पछी शेष पूर्वोनो अभ्यास करवा माटे गुरु महाराजे तेने **उज्जयिनी** नगरीमां **श्री वज्रस्वामी** पासे मोकल्यो एटले गीतार्थ मुनिओनी साथे **आर्यरक्षितमुनि** त्यां गयो अने ते वखते तेमणे **श्री भद्रगुप्तसूरि**ना उपाश्रयमां प्रवेश कर्यो एटले तेने बराबर ओळखी तेमणे आलिंगन पूर्वक भेटीने कह्युं के—'हे पूर्वाभिलाषी **आर्यरक्षित**! तने कुशळ छे? आ मारी अंतिम अवस्थामां तुं मारो सहायक थईने मने मदद कर; कारण के कुलीन पुरुषोनी एवी स्थिति होय छे.

एटले **आर्यरक्षित** मुनिए ते कबुल कर्युं अने ते **भद्रगुप्तसूरि**नी एवी उपासना सेवा करवा लाग्यो के जेथी ते सूर्यना उदयास्तने पण जाणता नहि.

एकदा परम समाधिमां लीन थयेला **भद्रगुप्तसूरि**ए हर्षपूर्वक **आर्यरक्षित मुनि**ने कह्युं के—'हे वत्स! तारा वैयावच्चथी हुं क्षुधा तृषानो खेद पण जाणतो नथी, तेथी जाणे आ लोकमां ज मने देवलोक प्राप्त थयेल होय तेम समजुं छुं. हवे तने मारे कंईक गुप्त कहेवानुं छे. ते सावधान थईने सांभळ—'**श्री वज्रस्वामी**नी पासे तारे अभ्यास तो करवो; परंतु हंमेशां तुं अलग उपाश्रयमां आहार, पाणी अने शयन करजे; कारण के तेमनी मंडळीमां एकवार पण जे आहार करे अने रात्रे तेमनी पासे शयन करे, तेनुं तेमनी साथे आयुष्य पूर्ण थाय. तुं प्रभावक अने आर्हत शासनरूप महासागरनो कौस्तुभमणि समान छे. वळी संघनो तुं आधार थवानो छे, माटे मारुं आ वचन मान्य करजे. एम हुं ईच्छुं छुं.'

त्यारे सूरिमहाराजना चरणे शिर नमावी, निश्चय करीने तेमणे कह्युं के—'हे प्रभो! ए आपनुं वचन मारे कबुल छे.' कारण के **विनीत शिष्योनी एवी ज स्थिति होय छे.**

पछी श्री भद्रगुप्तसूरि कालधर्मने पाम्या. एटले **आर्यरक्षित श्री वज्रस्वामी** पासे अभ्यास करवा चाल्या; एवामां अहीं **श्री वज्रस्वामी**ए स्वप्न जोयुं अने पोताना शिष्योने तेमणे जणाव्युं के—'आजे पायसथी संपूर्ण भरेल पात्रथी में आवेल अतिथिने पारणुं कराव्युं, एटले तेमां अल्पमात्र शेष रह्युं, तो ए स्वप्ननो विचार करतां मने लागे छे के—आजे कोई प्राज्ञ अतिथि मारी पासे आवीने समग्र श्रुत ग्रहण करशे अने तेमांथी अल्पमात्र बाकी रहेशे.'

ए प्रमाणे **श्री वज्रस्वामी** बोलता हता, तेवामां **आर्यरक्षितमुनि** त्यां आव्या; कारण के **महापुरुषे जोयेल स्वप्न अवश्य सत्वर फळदायक थाय छे.** त्यां अपूर्व अतिथिने जोई **स्वागत करवानी इच्छाथी उभा थईने श्री वज्रस्वामीए** नमस्कार करतां **आर्यरक्षितमुनि**ने कह्युं के—'हे भद्र! तमे क्यांथी आवो छो?'

त्यारे **आर्यरक्षितमुनि** बोल्या—'हे प्रभो! हुं श्रीमान् **तोसलिपुत्र आचार्य** पासेथी आवुं छुं.'

एम सांभळतां **श्री वज्रसूरि** बोल्या—'शुं तमे **आर्यरक्षित** छो? शेष पूर्वनो अभ्यास करवा अहीं अमारी पासे आव्या छो? पण पात्र संथारो वगेरे तमारा उपकरणो क्यां? ते लई आवो, आजे तमे अमारा अतिथि थया छो, तेथी गोचरी वहोरवा न जशो, अहीं ज आहारपाणी करीने तमे अध्ययन शरू करो.'

एटले **आर्यरक्षितमुनि** कहेवा लाग्या—'में अलग उपाश्रय मागी लीधेल छे. तो आहारपाणी अने शयन

त्यांज करीश अने आपनी पासे अभ्यास चलावीश.'

त्यारे **वज्रस्वामी** बोल्या—'अलग रहेनारथी अभ्यास केम थई शके?'

एटले **आर्यरक्षितमुनिए श्री भद्रगुप्त गुरुए** कहेल वचन कही संभळाव्युं, त्यारे अहो! एम छे?' एम बोलतां **वज्रस्वामीए** श्रुतमां उपयोग आप्यो. पछी तेमणे जणाव्युं के—'मारी साथे आहार अने शयन करवाथी गुरुना कह्या प्रमाणे साथे अंत थाय, ए वचन सूरिमहाराज उचित बोल्या छे. माटे हवे एम ज थाओ.'

पछी **वज्रस्वामी** तेमने पूर्वनो अभ्यास करावबा लाग्या. एम करतां दशमा पूर्वनो अर्धभाग तेमणे शरू कर्यो, ए ग्रंथमां मुश्केलीथी अभ्यास करी शकाय तेवा भांगा, दुर्गम गमक, दुष्कर पर्याय अने समान शब्दोना जविक हता. तेमां चोवीस जविकनो तेमणे अभ्यास करी लीधो, परंतु अभ्यास करतां तेमने भारे श्रम पडवा लाग्यो.

हवे अहीं **आर्यरक्षितमुनि**नी माता **रुद्रसोमा** विचारवा लागी के—'अहो! विचार कर्या विना काम करवा जतां मने पोताने ज तेना परिणामे परितापरूप फळ मळ्युं. हृदयने आनंद आपनार, धीमान् तथा शीलवडे शीतल एवा **आर्यरक्षित** समान पुत्रने मंदबुद्धिवाळी में हाथे करीने मोकली दीधो. आ तो उद्योतनी इच्छा करतां मने अंधकारनी प्राप्ति थई ए आश्चर्य जेवुं थयुं, माटे तेने बोलाववा माटे हवे **फल्गुरक्षित**ने मोकलुं.'[1] एम धारीने तेणे सरल एवा **सोमदेव** पुरोहितने पूछ्युं त्यारे ते बोल्यो के—'हे भद्रे! तारुं करेल मारे प्रमाण छे. माटे तने योग्य लागे तेम कर.'

पछी तेणे पोताना बीजा पुत्रने मोकलतां भलामण करी के—'हे वत्स! तुं तारा भाई पासे जा अने मारुं कथन तेने निवेदन कर के, माताए तने बंधु समागमथी रहित करीने मोह तजाव्यो, परंतु वात्सल्य-भावने तो जिनेश्वरोए पण मान्य करेल छे, कारण के गर्भमां रहेतां पण **श्री वीर प्रभुए** मातानी भक्ति साचवी. माटे हवे सत्वर आवीने माताने तारुं मुख बताव; नहि तो मारे पण तारा मार्गनो आश्रय लेवो पडशे अने ते पछी तारा पिता तेमज पुत्र, पुत्री वगरेने माटे पण ए ज रस्तो छे. वळी कदाच तारे स्नेह-भावना न होय, तो उपकार-बुद्धिथी एकवार हर्षपूर्वक आवीने मने कृतार्थ कर. हे वत्स! मार्ग अने देहमां यत्नयुक्त थईने तुं जा अने ए प्रमाणे कहेजे. तारा शरीरना भाग्यपर अमे जीवनारा छीए.'

एम मातानुं वचन सांभळतां नम्र **फल्गुरक्षिते** पोताना बंधु पासे जईने जननीनुं कथन तेने कही संभळाव्युं के-'माताने विषे वत्सल आवो तारा जेवो बंधु कोण हशे? कारण के कुळ लज्जाने लीधे तारा पिताए तो मने कंई पण आक्रोश-वचन संभळाव्युं ज नथी. तो हे वत्स! त्यां सत्वर चाल अने तारुं स्वच्छमुख मने बताव, के तारा दर्शनामृतथी तृप्त थयेल हुं तृष्णा रहित थाउं. हे बंधो! आपणी माता **रुद्रसोमाए** मारा मुखथी तने ए प्रमाणे कहेवडाव्युं छे. माटे प्रसाद लावीने हे मातृवत्सल! तुं सत्वर चाल.'

बंधुनुं ए वचन सांभळतां **आर्यरक्षितमुनि** वैराग्यथी कहेवा लाग्या के—'हे **फल्गुरक्षित**! आ क्षणभंगुर संसारमां मोह केवो? अथवा तो कयो सुज्ञ पोताना अध्ययनमां अंतराय करे? असार वस्तुने बदले सार वस्तुनो त्याग करवानी कोई इच्छा न करे. **तुं जो मारा पर स्नेह धरावतो होय, तो मारी पासे रहे अने ते दीक्षा विना न रहेवाय तेम होवाथी तुं दीक्षा धारण करी ले.'**

त्यारे तेणे ते प्रमाणे कबुल करतां **आर्यरक्षितमुनिए** पोताना बंधुने तरत दीक्षा आपी, कारण के **सारा काममां कोण विलंब करे?**

हवे **आर्यरक्षितमुनि** पोते भारे बुद्धिशाळी छतां जविक-अध्ययन पाठथी ते अत्यंत कंटाळी गया एटले तेमणे **श्रीवज्रस्वामीने** कह्युं के—'हे भगवान्! हजी केटलुं अध्ययन बाकी छे?'

1. बीजे स्थळे माताए बीजा पुत्रने पण दीक्षा आपवाना भावथी भाईने बोलाववाना बहाने मोकल्यो एम वर्णन आवे छे. (सं.)

त्यारे गुरु बोल्या—'तमारे पूछवानी शी जरूर छे? अभ्यास कर्या करो.' आथी ते पुनः अभ्यास करवा लाग्या.

पछी केटलोक वखत व्यतीत थया बाद तेमणे गुरुने फरी पूछ्युं. एटले **श्री वज्रस्वामी**ए कह्युं के—'तमे तो हजी सरसव जेटलुं भण्या छो अने मेरू जेटलुं बाकी छे, माटे मारुं एक वचन सांभळो. संबंधीओना अल्प मोहने लीधे तमे जे पूर्वना अध्ययनने तजवा धारो छो, ते कांजीथी दूध, लवणथी कपूर, कसुंबाथी कुंकुम, चणोठीथी सुवर्ण, क्षारभूमिथी रत्नखाण अने धतूराने बदले चंदननो त्याग करवा जेवुं करो छो. माटे अभ्यास करो. **श्रुतसागरना मध्य भागने पामतां सद्ज्ञान-शक्तिरूप रत्नो अनायासे फळरूपे पामी शकशो.**'

एम सांभळतां केटलाक दिवस सुधी तेमणे भारे परिश्रमथी अभ्यास करवा मांड्यो. एवामां तेमना लघु-बंधुए माता पासे आववानी प्रेरणा करी, एटले प्रयासथी अत्यंत कंटाळी गयेला **आर्यरक्षितमुनि**ए **वज्रस्वामी** पासे अनुज्ञा लेतां जणाव्युं के—'हे स्वामिन्! संबंधीना समागम माटे उत्कंठित बनेला आ सेवकने मोकलवानी कृपा करो. तेमने भेट्या पछी हुं अभ्यास करवाने सत्वर आवीश.'

ए प्रमाणे **मुनिआर्यरक्षित**नुं वचन सांभळतां तेमणे श्रुतमां उपयोग आप्यो, तेथी जाणवामां आव्युं के-'ए फरी आवतां मने मळी शकशे नहि, कारण के मारुं आयुष्य बहु ज अल्प छे. एटलो अभ्यास करवानी ज एनी योग्यता छे. तेथी दशमुं पूर्व तो अवश्य मारी पासे ज रही जशे, एम धारीने तेमणे कह्युं के—'हे वत्स! तुं जा. तारुं दुष्कृत मिथ्या थाओ. अत्यारे तारा जेवा धीमान् बीजो कोई नथी. तेथी तने अभ्यास करावववानी अमारी इच्छा थई, नहि तो आटली प्राप्ति क्यां थाय? हवे मार्गमां तने कंई बाधा न थाओ,' एम सांभळी गुरुना चरणे नमीने **आर्यरक्षितमुनि** पोतानी जन्मभूमि तरफ चाल्या अने शुद्ध संयमयात्रा पूवर्क अखंडित प्रयाणो करी विचरतां-विचरतां ते पोताना बंधु सहित पाटली पुत्र नगरे आव्या. त्यां साडा नव पूर्व भणी आवेला अने गुणना निधान एवा ते परम हर्षथी पोताना गुरु **तोसलिपुत्र** आचार्यने मळ्या. पछी तेमने **आचार्यपदे** स्थापीने गुरु स्वर्गे गया.

त्यांथी **आर्यरक्षितसूरि** दशपुर नगरमां गया. एटले **फल्गुरक्षितमुनि** आगळथी पोताना आवासमां आवीने कहेवा लाग्या के—'हे माता! हुं तने वधावुं छुं! तमारो पुत्र गुरु थईने आव्यो.'

त्यारे माता कहेवा लागी—'हे भद्र! हुं तारा ओवारणा लउं अने ए वचनने माटे बलिदानरूप थई जाउं.(आ शुभ समाचार माटे तारा मोढामां साकर) क्यां छे ते मारो **आर्यरक्षित पुत्र**? आ समये हुं एवी पुण्यवती के ते पुत्रनुं मुख जोवा पामीश.' एम ते बोलती हती, तेवामां **आर्यरक्षितसूरि** तेनी आगळ आवीने उभा रह्या. एटले मुनि वेशधारी तेमने आदरपूर्वक जोईने **रुद्रसोमा**नुं शरीर हर्षथी अत्यंत रोमांचित थई गयुं. एवामां पुत्रना स्नेहथी मोहित थयेल अने तेने मळवाने आतुर एवो **सोमदेव** पुरोहित पण त्यां आव्यो अने तेणे **आर्यरक्षित**ने दृढ आलिंगन दईने जणाव्युं के—हे वत्स! प्रवेश महोत्सव विना शीघ्र तुं केम चाल्यो आव्यो? हं ठीक जाण्युं. विरहार्त्त एवी पोतानी माताने मळवानी तने भारे उत्कंठा थई हशे. हे पुत्र! हजी पण तुं बहारना उद्यानमां जा, के जेथी हुं राजाने निवेदन करीने नगरमां उत्साह अने उत्सवपूर्वक तारो प्रवेश करावुं. पछी घरे आवतां साधुवेशने तजी अव्यग्र बनी घर मांडीने गृहस्थाश्रमनुं सुख भोगवजे. एक याज्ञिकना कुळमां उत्पन्न थयेल रूप-यौवन संपन्न अने तारामां अनुराग धरनारी एवी तने उचित कन्यानी में अगाउथी ज शोध करी राखी छे. शास्त्रीय विधि प्रमाणे महोत्सवपूर्वक तुं तेने परणजे, के जेथी तारी माता सांसारिक कौतुकनो स्वाद चाखे. वळी द्रव्योपार्जन करवानी तो तारे कोई जातनी चिंता ज न करवी, कारण के सात कुळ (पेढी) चाले, तेटलुं धन मने राजाए आपेल छे. तुं घरनो कारभार माथे लई ले, एटले संसारना स्वरूपने जाणनारा एवा अमे वानप्रस्थ आश्रमनो आश्रय लईए.

ए प्रमाणे सांभळतां **आर्यरक्षितसूरि** बोल्या—'हे तात! तमने मोहनो वात (वायु) चड्यो छे. शास्त्रोना दुर्धर

भारने तमे एक मजुरनी जेम वहन करो छो. पिता, माता, भ्राता, भगिनी, स्त्री अने पुत्र, पुत्रीओ तो संसारमां भवोभव तिर्यंचोने पण उत्पन्न थाय (मळे) छे, तो तेवा स्वरूपने जाणनार पुरुषने तेमां हर्ष केवो? वळी राजाना प्रसादथी पण गर्व शो करवानो हतो? कारण के ते तो नोकरी बजावतां वखतसर प्राप्त थाय छे, तेमज बहु उपद्रवोथी ओतप्रोत एवा द्रव्यमां पण आस्था लाववी शा कामनी? परंतु रत्ननी जेम आ मनुष्यजन्म ज दुर्लभ छे. तो विनश्वर अने अवकर-निर्माल्य तुल्य एवा गृहस्थाश्रमना मोहमां तेने कयो सुज्ञ निष्फळ बनावे? एटले तेनी परीक्षा करीने तेनो त्याग करतां मैं आर्हती दीक्षा धारण करी छे. तो सर्पना शरीरनी कांचळीनी जेम तजी दीधेला भोगोनो हुं पुनः आदर करवानो नथी. वळी हे तात! मातानी पासे करेल प्रतिज्ञा प्रमाणे दृष्टिवाद पण हुं हजी पूर्ण भणी शक्यो नथी. तो हुं शी रीते गृहवासमां पडुं? खरेखर! पुरुषोने पोतानी प्रतिज्ञानो त्याग करवो दुष्कर छे. तेम छतां जो तमारे मारापर मोह होय, तो तमे बधा दीक्षाने धारण करो, कारण के **भ्रमथी पण साकर खावामां आवे, तो ते पित्तना उपद्रवने शांत करे छे.**

त्यारे **सोमदेव** कहेवा लाग्यो के—'हे वत्स! कुलीनपणे ते आचरेल दुष्कर तप, मारे अत्यारे उचित छे; परंतु पुत्री, जमाई अने तेना बाळकोना लालन-पालनथी मोह-प्रवाहमां तणाती एवी मूढमति तारी माता आ भवसागरनो पार शी रीते पामी शके?'

ए प्रमाणे पितानुं वचन सांभळी **आर्यरक्षितसूरि** चिंतववा लाग्या के—मिथ्यात्वना स्थानरूप एवो पिता जो कोई रीते प्रतिबोध पामे अने तपश्चरणथी शुद्ध थाय तो दृढ संपत्तिने लीधे कठिन वज्रखाणनी भूमि समान (सम्यक्त्व रूप हीरानी खाण जेवी) एवी मारी माता (तो बोध पामेली ज छे. जेना प्रभावथी मने मोक्ष मार्ग मल्यो.) तेना प्रभावथी बोध पामे अने तेथी एमना माटे मोक्षमार्ग सीधो थई जाय; एम धारीने **आ. आर्यरक्षितसुरि रुद्रसोमाने** कहेवा लाग्या के—'माता! मारा पिता शुं कहे छे, तेनो तो तमे विचार करो. ते तमने दुर्बोध्य माने छे अने पोताने ज्ञानना महानिधानरूप समजे छे. वळी तमारा आदेशथी दृष्टिवादनो अभ्यास करतां मारा चित्तमां संसार-सागर तरवानी उत्कंठा उत्पन्न थई अने **आ. श्री वज्रस्वामी** मने प्राप्त थया. आ कळिकाळमां ते **सुनंदा** ज धन्य छे के जेणे **श्री वज्र** जेवा पुत्रने जन्म आप्यो. हे माता! एक गुणथी तमने ते करतां पण हुं अधिक मानुं छुं. प्रथम पुत्रना रुदनथी खेद पामतां तेणे आर्जव भावथी ते बाळकना पिता मुनिने ते सोंप्यो अने पाछळथी ते बाळकना निमित्ते विवाद कर्यो, पण तमे तो मने अभ्यास करवा माटे **श्रीमान् तोसलिपुत्र** गुरुने सोंप्यो, तेमां मने संसार सागरथी पार उतारवानो ज तमारो हेतु हतो. पुण्यहीन जनोने अतिदुर्लभ एवा **आ. वज्रस्वामीना** हुं चरण-शरणे गयो. त्यां पूर्वोनो अभ्यास करीने हुं पुनः तमारी पासे आव्यो. माटे परिवार सहित तमारे पोताना प्रयत्नपूर्वक महाव्रत आदरीने भव-मरुभूमिनो अवश्य पार पामवानो छे.'

एटले **रुद्रसोमा** कहेवा लागी के—'पुरोहितजी तो सरळ स्वभावना होवाथी एम कहे छे के—**रुद्रसोमा** कुटुंबनी उपाधिथी व्यग्र छे, तेथी ए व्रत लेवाने असमर्थ छे. तो हवे प्रथम मने ज शीघ्र दीक्षा आपो. एटले परिवार पण जे मारापर दृढ अनुरागी हशे, ते पोते मारी पाछळ व्रत ग्रहण करशे.'

त्यारे **आ. आर्यरक्षितसूरि** पिताने कहेवा लाग्या—'हे तात! मारी माता तो दीक्षा लेवाने तैयार ज छे, आ लोकमां तमे तीर्थरूप छो, तेथी तमारुं वचन हुं मान्य करुं छुं.'

पछी पुरोहितनो परिवार परस्परना स्नेहने लीधे 'हुं प्रथम हुं प्रथम' एम उतावळथी दीक्षा लेवाने माटे तैयार थयो. एटले **आर्यरक्षितसूरिए** तेमना केशनो लोच करीने सामायिक व्रतना उच्चारपूर्वक तेमने दीक्षा आपी. ते बधाए मोहनो कोईपण जातनो विचार कर्या विना स्थविरकल्पनो वेश धारण करी लीधो, परंतु **सोमदेवे** मंद भावथी ते वखते जणाव्युं के—'हे वत्स! कच्छसहित मारे वस्त्र-परिधान रहो. कारण के **पोताना पुत्र पुत्री**

समक्ष नग्न केम रही शकाय?'

एम सांभळतां गुरु विचारवा लाग्या के—'आ एमनो विचार पोतानी मंदताने स्पष्ट कही बतावे छे. अथवा तो भले एम थाय. हळवे-हळवे हुं एने सामाचारीमां लावीश.' एम धारी ते बोल्या—'तमारी ए इच्छा पूर्ण थाओ.'

त्यारे पुरोहिते कह्युं—'हुं तमारो वडिल छुं, तेथी मारो अभिप्राय तमने निवेदन करुं छुं के—मारे उपानह, कमंडळ, छत्र अने उपवीत (जनोई) ए बधां साधनो राखीने हुं तमारुं व्रत लेवा मागुं छुं. तेम करतां पगे अने माथे ताप न लागे अने पवित्र रही शकुं. वळी ए स्वीकारतां जन्म पर्यंत तेनो त्याग करी शकाशे नहि.'

त्यारे **अनिषिद्ध अनुमतिथी** आचार्ये तेनो ए आग्रह कबूल राख्यो. कारण के पोताना पिताने स्वाध्याय-पाठथी पोतानी मेळे ज शिखामण मळती रहेशे.

हवे एकदा श्रावकोना बाळको, गुरुनी शिक्षाथी जिनमंदिरे जतां साधुओने प्रणाम करवा पासे आव्या अने तेमणे छत्रधारी एक मुनिने मूकीने बधा साधुओने वंदन कर्युं. पछी उपाश्रयमां आवतां तेमणे गुरुने पूछ्युं के--'हुं अवंद्य शा माटे?'

एटले आचार्य बोल्या—'हे तात! एम कांई वंदनीय थवाय? तमे छत्रनो त्याग करो. ज्यारे उष्ण ताप लागे, त्यारे शिरपर वस्त्रने धारण करजो.' त्यारे पुत्रना स्नेहथी तेणे तेम करवा कबूल कर्युं अने छत्रनो त्याग कर्यो. ए रीते समजावतां आचार्य महाराजे तेनी पादुका पण तजावी.

पछी एक वखते गुरुए शिखामण आपतां पुरोहित मुनिने कह्युं के—'हे तात! तमे ताप न होय तेवा समये बाह्य भूमिकाए जाओ छो अने परिग्रह रहित छो, तो अज्ञ लोकोने देखाडवानी खातर तमारे आ उपवीत शा माटे जोईए? कारण के 'आपणे उत्तम ब्राह्मण छीए.' एम कोण नथी जाणतुं?' एम हळवे-हळवे **आर्यरक्षितसूरिए** तेनो गृहस्थ संबंधी वेष तजावी दीधो.

एवामां एक वखते पूर्वनी रीत प्रमाणे बाळकोए पुरोहित मुनिने वस्त्र माटे कह्युं एटले ब्रह्मतेजथी दीप्त एवा तेणे बाळकोने जणाव्युं के—'हुं नग्न थवानो नथी, पूर्वजो सहित तमे मने भले वंदन नहि करो. तेवो स्वर्गपण मने जोईतो नथी, के जे तमारी पासे पूजावाथी प्राप्त थाय.'

एवामां एक साधु स्वर्गवासी थया एटले गुरु महाराजे तेनो देह उपाडवा माटे साधुओने संज्ञा करी, त्यारे गीतार्थ मुनिओ ते मृत देह उपाडवा माटे गुरुना वचने अहंपूर्विकाथी उतावळ करवा लाग्या. आ वखते बाह्य कोप बतावा गुरु बोल्या—'आ असाधारण पुण्य तमारे ज उपार्जन करवानुं छे पण अमारा स्वजनो कांई तेमां भळवाना नथी!'

एम सांभळतां पुरोहित मुनिए कह्युं—'जो मोटुं पुण्य प्राप्त थतुं होय, तो हुं वहन करुं.'

त्यारे गुरु बोल्या—'भले, एम करो, पण मारुं एक वचन सांभळो—एने वहन करतां उपसर्गो थाय तेम छे. तो हुं एवा दुष्कर काममां मारा पिताने केम अनुज्ञा आपुं? वळी उपसर्गोमां जो क्षोभ थाय, तो अमने अमंगळ थाय; एम समजी जो हवे तमने उचित लागे तो ते समाधिपूर्वक आचरो.'

एम सांभळतां **सोमदेवमुनि** कहेवा लाग्या—'हुं ते अवश्य वहन करीश. शुं हुं निःसत्त्व के दुर्बळ छुं? माटे ए मुनिओथी मने कोई रीते अलग न करवो. पूर्वे में वेदमंत्रोथी समस्त राज्य, देश अने राजाना विघ्नोनो विनाश कर्यो छे. पछी पालखीमां रहेल शबने खभे उपाडतां पूर्वे शीखवी राखेल बाळकोए पुरोहितनुं वस्त्र खेंची लीधुं. आथी ते मनमां दुभाया छतां पुत्रने विघ्न थवाना भयथी तेणे अधवच न मूक्युं, पण नियत करेल निर्जीव स्थाने मूकीने ते एकदम पाछा वळ्यां. त्यां गुरुए पूछ्युं—'हे तात! तमे नग्न केम?'

त्यारे तेमणे जवाब आप्यो—'उपसर्ग थयो. तमारुं वचन अन्यथा न थाय पण ते में दृढताथी सहन करेल छे.' एम बोलता पुरोहित मुनिने आचार्य कहेवा लाग्या के—'तो एक लांबुं अने विशाळ वस्त्र लई ल्यो.'

एटले ते बोल्या—'जे जोवानुं हतुं, ते जोई लीधुं, आपणे परिग्रह केवो? **माटे हवे नग्नावस्था ज भले रही.**' ए प्रमाणे प्रपंच रचीने गुरुए तेनो गर्व छोडाव्यो, तथापि ते पुरोहितना मनने भिक्षामां जोडी न शक्या. तेमणे अनेकवार विविध उपायोथी समजाव्या छतां तेमणे पोतानो आग्रह तज्यो नहि.

आथी आचार्य महाराजे विचार कर्यो के—'कदाच अमारुं आयुष्य क्षीण थई जाय, तो आ वृद्ध मुनिनो निस्तार शी रीते थशे? माटे ए भिक्षा लेता थाय, तेम करुं.' एम धारी तेमणे एकांतमां मोटा मुनिओने आज्ञा करी के—'तमारे ए वृद्ध मुनिने आहार न आपवो पण एकला बेसीने आहार करी लेवो.' आ तेमनो आदेश जो के मुनिओना मनने गम्यो नहि, तथापि तेमणे गुरुवचन मान्य राख्युं. माटे **गुरुवचनमां अचल श्रद्धा राखनार महापुरुषोने वारंवार नमस्कार थाओ.**

पछी एक वखते आचार्य महाराजे अन्यत्र विहार कर्यो, एटले मंडळीना मुनिओए ते वृद्ध मुनिने निमंत्रण न कर्युं. बे दिवस पछी गुरु आव्या अने तेमणे पुरोहित मुनिने कुशळता पूछी त्यारे ते कोप बतावता बोल्या—'हे वत्स! मारुं वचन सांभळो—जो तमे घणा दिवस बहार रह्या होत, तो अकाळे पण में अवश्य प्राणोने तजी दीधा होत. तमे आज्ञा करेल होवा छतां आ मुनिओ मारी वात सांभळता नथी; हे प्रभो! तेओ आम शा माटे करे छे, ते हुं समजी शकतो नथी.'

ए प्रमाणे सांभळतां गुरु कृत्रिम क्रोध बतावीने शिष्योने कहेवा लाग्या के—'तमे आटलो वखत पिताने भोजननुं निमंत्रण केम न कर्युं?'

त्यारे शिष्यो बोल्या—'हे स्वामिन्! आपना विना अमारुं मन शून्य बनी गयुं हतुं, तेथी ए वृद्ध मुनिने अमे भूली गया. ए अमारी बाळचेष्टाने आप क्षमा करो.'

आ तेमनुं वचन सांभळतां आचार्य महाराज **सोमदेवमुनिने** कहेवा लाग्या—'हे तात! मारुं वचन सांभळो—परनी आशा न करवी. कारण के ते पराभवना मूल कारणरूप छे. तमारा माटे आहार लेवा अमे पोते जईशुं. एमनी आगळ एवी बाबत शुं कहेवी? तेम कहेवाथी तो प्रगट रीते लज्जा उत्पन्न थाय छे; (तेमनो पाड चडाववो ते प्रगटरीते लज्जा जनक छे.) एम कहेतां पोते उठी, पोताना पात्र लईने गुरु महाराज भिक्षा लेवा चाल्या.' एवामां **वृद्ध मुनि** साहसथी बोली उठ्या के—हुं पोते ज भिक्षा लेवा जईश. हे वत्स! हुं हाजर होवा छतां गच्छपति तमे शुं भिक्षा माटे भ्रमण करशो?'

त्यारे गुरुए तेमने अटकाव्या छतां पुरोहित मुनि तरत उत्साहपूर्वक पात्र लईने भिक्षा लेवा चाल्या अने एक श्रेष्ठीना घरे गया. त्यां भिक्षानी शिक्षा पामेल न होवाथी ते घरना पाछला द्वारथी पेठा एटले गृहपतिए कह्युं के—'तमे घरना मूळ द्वारथी केम न आव्या?'

एटले तेमणे जणाव्युं के—'हे धार्मिक! लक्ष्मी तो अहीं पाछळना द्वारथी पण आवे?'

एम सांभळतां ते गृहस्थे विचार कर्यो के—'आ वृद्ध मुनि तात्कालिक बुद्धिवाळा छे; एम धारी संतुष्ट थयेल तेणे मुनिने बत्रीस मोदक वहोराव्या. पछी उपाश्रयमां आवीने मुनिए सूरि पासे आलोचना करी. त्यां गुरुए आ प्रथम लाभमां शकुननो विचार कर्यो के—'मारा बत्रीस शिष्यो थशे; पछी तेमणे **सोमदेवने** पूछ्युं के-'हे तात! राजभवनमां जो तमने धन प्राप्त थाय, तो तेनो उपयोग लेतां बाकी रहेल भावथी तमे कोने आपो?'

त्यारे पुरोहित मुनि बोल्या—'हे वत्स! ते उत्कृष्ट गुणधारी वेदज्ञ ब्राह्मणोने आपुं. कारण के सत्पात्रने आपवामां आवेल लक्ष्मी सुकृतना स्थानरूप थाय छे.'

एटले ते वृद्ध मुनिने समजावतां आचार्य बोल्या—'हे तात! वैयावृत्यादिक सद्गुणोथी आ साधुओ अमारा करतां पण श्रेष्ठ छे, तो एमने ते आपो अने पोताना जन्मने सफळ करो एम सांभळतां पुरोहित मुनिए कह्युं के-'में लावेल अशनादिक जो आ बाल-ग्लानादि साधुओने उपकारी थाय, तो पछी ए उपरांत बीजुं सुकृत कयुं?' एम बोलतां ते वृद्ध मुनि भिक्षामां (मळेल मोदक बधा साधुओने वहेंची दीधा अने पाछा गोचरी गया. ए रीते एना पछी भीक्षा लेवा जवामां) आदर लावी, दानमां एक शुद्ध बुद्धिने धारण करवाथी गच्छमां ते परम आराध्यपणाने पाम्या.

हवे ते गच्छमां इंद्र समान तेजस्वी, पोतानी प्रतिभाशक्तिथी शास्त्रार्थने जाणनार तथा संतोषना स्थानरूप **घृत-पुष्पमित्र, वस्त्र-पुष्पमित्र** अने **दुर्बळ-पुष्पमित्र** ए नामना त्रण मुनि हता. तेमां घृत-पुष्पमित्रने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी एम चार प्रकारनी [1]लब्धि हती. एटले द्रव्यथी ज घृत ज होय, क्षेत्रथी **अवंतिदेश** होय, कालथी ज्येष्ठ के अषाढ होय अने भावथी आ प्रमाणे समजवुं-दरिद्र ब्राह्मणी छ महिना पछी प्रसव करनारी होय, तेथी तेना पतिए भिक्षा मांगीने घृत एकठुं करेल होय. एवामां आजकाल प्रसव थवानो होय, तेवा समये क्षुधाथी बाधा (पामतो पोतानो पति ब्राह्मण जो ते घृत मांगे, छतां अन्यत्र घी मळवानी आशा न होवाथी घी देता अन्यने निराश करवाना भयथी पत्नी) तेने अटकावे. पण ते मुनि जो घृत मागे, तो तेने हर्षपूर्वक ते स्त्री आपे, एटले गच्छने जेटलानी जरूर होय तेटलुं ते भावथी पामी शके.

हवे वस्त्र पुष्पमित्रनुं लक्षण आ प्रमाणे छे. द्रव्यथी ते वस्त्र पामी शके, क्षेत्रथी **मथुरा** नगरी होय. कालथी वर्षाऋतु, शियाळो के हेमंतऋतु होय अने भावथी आ रीते समजवुं— कोई अनाथ महिला कपास वीणवानी मजुरीना द्रव्यथी रूने एकत्र करे, ते पोते कांते अने वणकरोने घरे पोते काम करी, ते पगारमांथी तेमनी पासे ते वस्त्र वणावे, वळी पोते वस्त्ररहित छतां ते मुनि जो वस्त्र मांगे, तो ते अनाथ अबळा ते वस्त्र पण मुनिने आपी दे. ए लब्धिविशेष तेमने क्षयोपशमथी प्राप्त थयेल,

हवे **दुर्बळ-पुष्पमित्र** पण पोतानी लब्धिथी पुष्कळ घृत पामे छे अने स्वेच्छाए ते तेनुं भक्षण करे छे, छतां निरंतरना पाठना अभ्यासथी ते दुर्बळ रहे छे. पोतानी बुद्धिनी विशेषताथी तेणे नव पूर्वनो अभ्यास करेल छे, छतां **'मारुं श्रुत विस्मृत न थाय, एवा हेतुथी ते अहोरात्र अभ्यास कर्या करे छे.** तेना बंधुओ दशपुरमां रहेता हता. ते बौद्ध धर्मना प्रख्यात उपासक हता. कोईवार तेमणे आचार्य महाराज पासे आवीने कह्युं के—'तमारा आ धर्ममां ध्यान नथी.'

त्यारे आचार्य बोल्या—'अमारा धर्ममां जेवुं ध्यान छे, तेवुं अन्य धर्मोमां नथी. आ तमारो **पुष्पमित्रमुनि** ध्यानथी ज दुर्बळ देखाय छे. एटले तेमणे जणाव्युं—'मधुर आहारना अभावे एनामां कृशता आवी हशे.'

गुरु बोल्या—'वृद्ध पुरुषोना प्रसादथी ए मुनि पुष्कळ घृतनुं इच्छानुसार भोजन करे छे, पण शास्त्र-गुणनाने लीधे ए कृश रहे छे.'

त्यारे बौद्धो कहेवा लाग्या—'तमने एटलुं बधुं घृत क्यांथी मळे?'

गुरुए कह्युं—'पुष्पमित्र पुष्कळ घृत लावे छे. जो ए बाबतमां तमने विश्वास न आवतो होय, तो एने तमारा घरे लई जाओ अने केटलाक दिवस एने स्निग्ध आहारनुं भोजन करावो एटले सत्य हकीकत तमे पोते समजी शकशो. वळी एनी दुर्बळतानुं कारण पण तमारा जाणवामां आवी जशे.'

एटले बौद्ध संबंधीओए **पुष्पमित्रमुनिने** आमंत्रण करतां अने गुरुनी आज्ञाथी ते तेमना घरे गया. त्यां तेमणे स्निग्ध आहारथी तेनुं पोषण कर्युं, छतां तेनी कृशता कायम ज रही. निरंतर अभ्यासमां तन्मय होवाथी रसना आस्वादने पण ते जाणता न हता. आथी स्वजनो विचारवा लाग्या के—'आमने स्निग्ध आहारथी पोषवां,

1. आहार मेळववानी शक्ति.

ते तो भस्ममां होम करवा बरोबर छे.' एटले ते वधारे आहार आपवा लाग्या, छतां मुनि तो तेवा कृश ज रह्या. त्यारे उत्कृष्ट आहार आपतां तेमणे मुनिने अध्ययन करता अटकाव्या, लुख्खो सुक्को आहार आपवा लाग्या छतां ते पूर्वे हता तेवा शरीरे पुष्ट देखावा लाग्या. आथी तेमने प्रतीति थई, पछी मुनिए पोताना स्वजनोने प्रतिबोध पमाड्या अने पोते गुरु पासे आव्या. त्यां शांत चित्तथी ते रहेवा लाग्या.

वळी ते गच्छमां चार प्राज्ञ मुनिवरो हता. ते **दुर्बळ पुष्पमित्र, विंध्यमुनि, फल्गुरक्षित** अने शुक्राचार्यना धर्मशास्त्रने जीतनार **गोष्ठामाहिल** एवा नामथी विख्यात हता. तेमनामां बुद्धिशाळी **विंध्यमुनि**ए गुरुने विज्ञप्ति करी के-'हे भगवन्! अनुयोगनी मोटी मंडळीमां पाठना घोषथी मारो श्रुतपाठ स्खलित थाय छे, माटे मने अलग पाठ आपो.

त्यारे गुरु बोल्या—'हुं पोते तमारी आगळ व्याख्यान आपतां मोटी व्याख्यान-मंडळीनुं शी रीते उल्लंघन करुं? माटे महामति उपाध्याय **दुर्बळ पुष्पमित्र** तमारा वाचनाचार्य थशे, तेमनी पासे शीघ्र अभ्यास करो.

ए प्रमाणे केटलाक दिवस चलाव्या पछी ते **विंध्य मुनिना अध्यापक** (दुर्बल-पुष्पमित्रे) अंजलि जोडीने गुरुने एकांतमां कहेवा लाग्या के—'हे प्रभो! मारुं एक वचन सांभळो. हुं वांचनामां व्यग्र थवाथी मारो पोतानो अभ्यास भूली जाउं छुं तेनुं गुणन करतां विघ्न आवे छे, तेथी मने भारे खेद थाय छे, तो हवे हुं शुं करुं? वळी तमे ज्यारे मने पोताना घरे मोकल्यो, त्यारे मारा स्वजनोए गुणन करतां मने अटकाव्यो, तेथी ते वखते पण कंईक अध्ययन स्खलित थवा पाम्युं छे. हवे जो आप एमने मारी पासे वाचना अपावशो, तो मारुं नवमुं पूर्व अवश्य विस्मृत थई जशे.

एम सांभळतां आचार्य चिंतववा लाग्या के—'आवा बुद्धिशाळी मुनि पण जो आगमने भूली जशे, तो बीजाथी ते केम धारण करी शकाशे? माटे हवे मारे अनुयोगना चार विभाग करी लेवा; एम धारी अंग, उपांगरूप मूळ ग्रंथोनो छेद करीने तेमणे चरणकरणानुयोग कर्यो. उत्तराध्ययनादि धर्मकथानुयोग, सूर्यप्रज्ञप्ति प्रमुख गणितानुयोग अने दृष्टिवाद ते द्रव्यानुयोग-एम चार अनुयोग बनावीने आचार्य महाराजे **विंध्यसूरि**ने माटे सूत्रनी व्यवस्था करी. ए चारे अनुयोग पूर्वे एक सूत्रमां हता.

एक वखत श्री **आचार्यरक्षितसूरि** मथुरा नगरीमां ते भूमिना अधिष्ठायक व्यंतरना मंदिरमां उतर्या. एवामां **महाविदेह** क्षेत्रमां **सीमंधर** स्वामीने वंदन करवा **शक्रेंद्र** गयो अने तेणे एक मनथी भगवंतनी देशना सांभळी. ते वखते प्रसंगोपात प्रभुए त्यां तत्त्वथी निगोदनी वात कही संभळावी. एटले **इंद्रे** प्रश्न कर्यो के—'हे भगवन्! भरतक्षेत्रमां निगोदनुं स्वरूप जाणनार कोण छे?'

त्यारे प्रभु बोल्या—'मथुरा नगरीमां **आ. आर्यरक्षितसूरि** मारी जेम निगोदनुं स्वरूप समजावी शके छे, एम सांभळतां इंद्र विस्मय पाम्यो. भगवंतना वचनपर जो के इंद्रने श्रद्धा हती, तथापि आश्चर्यने माटे वृद्ध ब्राह्मणनुं रूप करीने ते तुरंत गुरु पासे आव्यो. ते वखते तेना बंने हाथ धूजता हता. काशपुष्प समान तेना श्वेत केश हता, लाकडीना आधारे तेणे शरीर टेकवी राख्युं हतुं, श्वासनो प्रसार तेनो स्पष्ट जणातो हतो अने तेनी आंखमांथी चोतरफ पाणी गळी रह्युं हतुं. एवा रूपधारी **इंद्रे** तेमने निगोदना जीवोनो विचार पूछ्यो एटले सूरि महाराजे तेने यथास्थित स्वरूप कही बताव्युं, जे सांभळतां इंद्र भारे आश्चर्य पाम्यो. पछी तेमना ज्ञाननुं माहात्म्य जाणवानी इच्छाथी तेणे पोतानुं आयुष्य पूछ्युं. त्यारे श्रुतना उपयोगथी गुरु चिंतववा लाग्या के—'आनुं आयुष्य पक्ष, मास, वरस, सेंकडो वरसो, हजारो वरसो, लाखो वरसो, कोडो वरसो, पूर्व, पल्योपम, सेंकडो पल्योपम के सागरोपमथी पण समाप्त थतुं नथी. छेवटे बे सागरोपमथी तेनुं आयुष्य जाणवामां आवतां **गुरु** बोल्या के—'तमे सौधर्मेंद्र मारी परीक्षा करवा इच्छो छो?' एटले मनुष्य जोई शके तेवुं पोतानुं रूप प्रकाशतां **इंद्रे** यथास्थित वृत्तान्त कही संभळाव्यो अने पछी ते पोताना स्थाने जवा लाग्यो त्यारे साधुओ आवे त्यां सुधी रोकाई जवा आचार्य भगवंते

कह्युं, एटले रूप, ऋद्धिना दर्शनथी निदान करवाना भयने लीधे इन्द्रे तेनो निषेध कर्यो, तथापि तमारा आगमनना कंईक चिह्नरूपे कंईक चमत्कार करी बतावो; एम **आचार्य**ना कहेवाथी तेणे वसतिनुं द्वार विपरीत करी दीधुं पछी स्वर्गे गयो.

एवामां मुनिओ आव्यां अने तेमने द्वार न जड्युं, त्यारे गुरुए तेमने द्वार बताव्युं, एटले विपरीत मार्गथी आवतां साधुओ बधा आश्चर्य पाम्या. त्यां संभ्रमथी कंई कंई बोलवा लाग्या. त्यारे गुरुए तेमने **इंद्र**नुं यथास्थित स्वरूप निवेदन करीने निःशंक कर्या. एटले **देवेंद्र**नुं दर्शन न थवाथी कंईक खेद पामता होय तेम ते कहेवा लाग्या- 'मंद भाग्यवंत पुरुषो इंद्रना दर्शन शी रीते करी शके?'

पछी **आचार्य महाराजे** अन्यत्र विहार कर्यो एवामां एक नास्तिकवादी मथुरामां आव्यो, तेने **गोष्ठामाहिलमुनि**ए जीती लीधो. एटले श्री संघे तेमने त्यां ज चोमासुं कराव्युं. तेवा वादलब्धिवाळा मुनिने कोण न रोके?

हवे आर्यरक्षित महाराजे पोताना पदे कोण योग्य छे? तेनो विचार कर्यो, त्यारे **दुर्बल पुष्पमित्र** पर तेमनुं मन गयुं. ते वखते **आचार्य महाराजना संबंधी हता तेमणे फल्गुरक्षितने सूरिपदे लाववानो विचार कर्यो अने गच्छना आधिपत्यमां गोष्ठामाहिलने मोहथी स्थापवानो संकल्प कर्यो.**

पछी त्यां त्रण कुंभ लाववामां आव्या. गुरु महाराजे ते अलग-अलग वाल, तेल अने घीथी भर्या अने पछी खाली कर्या. एटले वाल बधा बहार नीकळी आव्या. तेल कंईक रही जवा पाम्युं अने घृत तो बहु संलग्न रह्युं. पछी गुरुमहाराजे कह्युं के—'आ उदाहरण जुओ, **दुर्बळ मुनि**मां हुं वालना कुंभनी जेम निर्लेप छुं, बंधु फल्गुरक्षितमां तेलना कुंभनी जेम कंईक सलेप छुं अने मातुलपर घृतकुंभनी जेम वधारे लिप्त छुं. माटे मारा पदपर **दुर्बळ पुष्पमित्र** ज योग्य छे;[1] एटले तेमनुं वचन अन्य मुनिओए मान्य कर्युं. पछी गुरुए सूरि मंत्रपूर्वक पोताना पदपर **दुर्बळ पुष्पमित्रमुनि**ने स्थापन कर्या अने नवीन **दुर्बळ पुष्पमित्रसूरि**ने तेमणे आदेश कर्यो के—'मारा मातुल, भ्राता अने पिता प्रत्ये तमारे मारी जेम वर्तवुं; ते वखते गच्छना अन्य मुनिओ पिता, भ्राता अने साध्वीओने तेमणे मधुर वचनथी शिखामण आपी अने जणाव्युं के—'आ यति प्रत्ये तमारे मारी जेम वर्तवुं, मारा करतां पण एनो अधिक विनय साचववो. **कोईवार व्रताचार विस्मृत थतां क्रियाचार न थाय, ते बधुं में सहन कर्युं छे.** वळी ए नवीन होवाथी कंई न थतां खेद पामशे, माटे तमारे सदा तत्पर रहीने एना मुखमांथी
वचन बहार पडतां स्वीकारी लेवुं, तथा **मरण पर्यंत एना चरणनी सेवा तमारे मूकवी नहि.**

ए प्रमाणे गच्छनी व्यवस्था करीने आचार्य **आर्यरक्षितसूरि**ए प्रांतकाळे अनशन आदर्युं अने गीतार्थ मुनिओ नियार्मणा करावनी सहायता मळतां ते स्वर्गे गया. सर्व अनुयोगने पृथक् करवाथी तेमणे आगम बोधनी विशेष सरलता करी आपी.

पछी **श्री दुर्बळ पुष्पमित्रसूरि** गच्छने प्रवर्त्तावा लाग्या अने गुरु करतां पण तेमणे गच्छने अधिक समाधि उपजावी. त्यां **गोष्ठामाहिल** विरोधी थईने सातमो निह्नव थयो तेनो वृत्तान्त ग्रंथांतरथी जाणी लेवो.

ए प्रमाणे त्रण जगतने पावन करवामां गंगाजळ समान निर्मल अने विचित्र तथा वंदनीय एवुं **आ. श्रीआर्यरक्षितसूरि**नुं चरित्र ते निरंतर विबुध जनोना सांभळवामां आवतां यावच्चंद्र दिवाकरौ जयवंत वर्त्तो.

आ. श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरमां हंस समान तथा **श्रीराम-लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **आ. श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए मनपर लेतां आ. श्री प्रद्युम्नाचार्ये शोधीने शुद्ध करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **आ. श्रीआर्यरक्षितसूरि**ना चारित्ररूप आ द्वितीय शिखर थयुं.

॥ इति श्री आर्यरक्षितसूरि प्रबंध ॥

1. स्वजन मुनिने पद आपवानो मोह न करीने योग्य व्यक्तिने पद आपवुं जोईये आ सिद्धान्त सिद्ध थाय छे.

३. श्री आर्यानन्दिलसूरि-प्रबंध

श्री आर्यरक्षितसूरिना वंशना अने संसार-अरण्यथी पार उतारवामां सार्थवाह समान एवा **श्रीआर्यानन्दिलसूरि** तमने पावन करो. आठ नागकुळे जेमनी आज्ञाने शिरसावंद्य करी एवा **श्री आर्यानन्दिल** स्वामीना गुणोनुं वर्णन करवाने कोण समर्थ छे? क्षमाना उपदेशथी जेमना प्रसादे **वैरोट्या नागेंद्र**-देवी थई के जे नाम मंत्रथी विषने दूर करे छे. भारे आदरपूर्वक हुं तेमनुं कंईक चारित्र कहुं छुं. चंद्रमाना प्रसादथी मृग शुं आकाशने पामी शकतो नथी?

कल्याणना निधानरूप एवुं **श्री पद्मिनीखंड** नामे नगर के जे पद्मिनीसमूहथी शोभता एवा सरोवरोथी विराजित हतुं. त्यां समस्त शत्रु पक्षने त्रास पमाडनार अने पद्म समान मुखवाळो एवो **पद्मप्रभ** नामे राजा हतो. सेंकडो कांताओमां शिरोमणि अने पोतानी देहशोभाथी इंद्राणीने पण जीतनार एवी **पद्मावती** नामे तेनी राणी हती. अगणित लक्ष्मीना पात्ररूप, श्रेष्ठ कळाओना निधानरूप अने याचकोरूप चातकोने संतुष्ट करवामां मेघ समान एवो **पद्मदत्त** नामे त्यां एक प्रख्यात श्रेष्ठी हतो. तेने रति समान रूपवती **पद्मयशा** नामे पत्नी हती. तेमने इंद्रकुमार समान **पद्म** नामे पुत्र हतो. **पद्म**ने समस्त कळामां निपुण मानीने **वरदत्त** सार्थवाहे तेने पोतानी **वैरोट्या** नामे पुत्री परणावी.

एकदा वनना दावानळथी दुस्सह तथा जगतना पामर प्राणीओने अकल्याणरूप मारीनो उपद्रव आवी पडतां पोतानी पुण्यनी प्रबळतानो क्षय थवाथी निष्पाप एवो **वरदत्त** पोताना परिवार साथे यमनापुरमां गयो. त्यारथी पोतानी तुच्छ प्रकृतिने लीधे **वैरोट्या**नी सासु, अत्यंत शुश्रूषा पामतां पण वैरोट्याने पितृगृह रहित समजीने ते वारंवार तेनी अवज्ञा करवा लागी. कारण के **रूप, शोभा, धन, तेज, सौभाग्य अने मोटाई-ए बधुं स्त्रीओने पिताना प्रभावथी ज प्राप्त थाय छे.**

हवे पोतानी सासुना दुर्वचनथी दूभायेल अने विनीत जनोमां शिरोमणि एवी **वैरोट्या** पोताना कर्मने दोष देती. ते दिवसे-दिवसे कृश थवा लागी. एवामां **नागेंद्र**ना स्वप्नथी सूचित एवा पुण्यशाली गर्भरत्नने रत्नगर्भानी जेम ते धारण करवा लागी. त्रण महिना पूर्ण थतां रसमां प्रीतिवाळी एवी वैरोट्याने, विरोधीओने परास्त करनार एवो पायस-भोजननो दृढ दोहद उत्पन्न थयो.

एवामां श्री **आर्यानन्दिलसूरि** के जे साडानव पूर्वोना ज्ञाता हता ते पोताना साधु परिवार सहित त्यां उद्यानमां पधार्या. अहीं **वैरोट्या** सगर्भा छतां तेनी मूर्ख सासु कटु वचनथी तेने वारंवार सतावा लागी, वळी ते एवुं प्रतिकूळ बोलती के—'आ निर्भाग्य शिरोमणिने पुत्र क्यांथी थाय? पीयर रहित अने दारिद्र्यनी एक वावडी तुल्य एवी एने तो पुत्री ज प्राप्त थवानी.' आवा दुर्वचनथी खेद पामती वैरोट्या आचार्य महाराजने वंदन करवा गई, कारण के **प्रतिगृहे कांई चैत्यगृह होता नथी.** पछी गुरु महाराजने वंदन करी अश्रु पाडतां ते कहेवा लागी के—'हे भगवन्! पूर्वभवे में अंबा (सासु) नी शुं विराधना करी छे के जेथी ते अत्यारे मारा पर भारे विरोध धरावे छे?

त्यारे गुरु बोल्या—'हे भद्रे! लोकोने पूर्वकृत कर्मथी ज सुख-दुःख प्राप्त थाय छे. तो विवेकी जनो तेमां

अन्यने दोष केम आपे? मनुष्य जन्म दुर्लभ छे, ते प्राप्त थतां क्षमा लाववी एज उत्तम छे. ए क्षमानो आदर करतां हळवे-हळवे बधुं शुभ थवानुं. वळी हे वत्से! पायस संबंधी तारो दोहद ज्ञानथी मारा जाणवामां आव्यो छे, ते पण पुण्यथी पूर्ण थशे.' ए प्रमाणे वचनामृतथी आचार्य महाराजे तेनो शोकाग्नि शांत कर्यो एटले शीतल थयेल **वैरोट्या** गुरु वचनने हृदयमां संभारती ते पोताना घेर आवी.

पछी चैत्री पूर्णिमाना दिवसे **वैरोट्याए** उपवास करीने पुंडरीक तप कर्यो, एटले **पद्मयशा** तेनी सासुए ते तपनुं उद्यापन करवा मांड्युं. ते दिवसे गुरु अने साधर्मीओने पायसथी पूर्ण पात्र आपीने तेमनुं वात्सल्य करवामां आवे छे. ए बधुं कर्या पछी तेणे अवज्ञापूर्वक वधूने अजीठुं पायसान्न आप्युं. अहो! गुणने दूषित करनार दर्पने धिक्कार छे. पछी दोहदना माहात्म्यथी ते अवशिष्ट कांईक पायसान्नने वस्त्रमां बांधी, घडामां नाखीने ते पाणी भरवाना बहाने बहार नीकळी गई, त्यां घटने वृक्ष नीचे मूकी सदाचारवती अने पायसनुं भक्षण करवामां मनोरथ करती ते जेटलामां पादशौच करवाने जलाशय तरफ गई, तेवामां अलिंजर नागेंद्रनी कांता रसातळ थकी त्यां आवी अने पायसमां लुब्ध बनेल तेणे भमतां-भमतां घटमां ते पायसान्न दीठुं. एटले वस्त्र खंडमांथी बहार काढीने तेणे पायसनुं भक्षण कर्युं अने पछी ते पन्नगप्रमदा जेम आवी हती, तेम पाताळमां पाछी चाली गई.

एवामां पादशौच करीने पाछी आवेल वैरोट्याए घटमां जोयुं तो पायस न मळे. तेम छतां तेणे शोक के कोप न कर्यो, पण ते सती आ प्रमाणे कहेवा लागी-'जेणे आ पायसनुं भक्षण कर्युं, मारी जेम तेनो मनोरथ पूर्ण थाओ'. एम शांत अंतःकरणथी तेणे आशिष आपी.

हवे अहीं नागेन्द्रनी कांताए पोताना पति आगळ पायस-भक्षणनी वात निवेदन करतां तेणे अवधिज्ञानथी बधुं जाणीने पोतानी प्रियानी अवगणना करी, जेथी पोते पश्चात्ताप पामती अने वैरोट्यानी क्षमाथी रंजित थयेल ते नागकांताए गृहनी सत्ता धरावनार पाडोशणने एवुं स्वप्न आप्युं के—'हुं कलिंजर नागेन्द्रनी प्रिया छुं अने वैरोट्या मारी पुत्री तुल्य छे. तो ऐनो दोहलो पूर्ण करवाने तुं एने पायस आपजे अने वळी मारुं वचन तेने संभळावजे के हुं तारा पीयर तुल्य छुं. तेथी तारी सासुनो पराभव अवश्य निवारण करीश.'

पछी पाडोशणे ते पवित्र प्रमदाने पायसनुं भोजन कराव्युं. एटले पोतानो दोहद पूर्ण थवाथी वैरोट्या मनमां भारे संतुष्ट थई. हवे समय आवतां तेणे एक अद्‌भूत पुत्रने जन्म आप्यो, ते वखते नागकांताए पण एकसो नागपुत्रोने जन्म आप्यो, एटले तेजमां सूर्य समान ते बधा वृद्धि पामवा लाग्या.

एवामां पुत्रनुं नाम राखवानो दिवस आवतां वैरोट्याए नागकांताने याद करी, एटले माताना आदेशथी ते बधा नागकुमारो बोल्या—'आपणे तेणीना पितृपक्षना छीए' एम बोलतां ते नागकुमारो हर्षथी मनुष्य लोकमां तेणीना घरे आव्या. तेमां केटलाक गजारूढ हता, केटलाक अश्वारूढ हता, केटलाक सुखासन-पालखीमां बेठा हता. वैक्रियना अतिशयथी विविध रूप करीने आवेला ते नागकुमारोए तेना घरने, पोळने अने नगरने पण संकीर्ण करी मूक्युं. आ वखते केटलाक बाळनागोने एक घटमां नाखी, तेनुं मुख ढांकीने नागरमणीए वैरोट्यानी रक्षा माटे मोकल्या हता.

हवे शोभाथी अद्‌भूत वहुनु पितृकुळ त्यां आवतां तेनी सासु स्नानादिकथी तेनो सत्कार करवा लागी. अहो! लोकमां लक्ष्मीवंतनो पक्ष ज विजयी अने श्रेष्ठ गणाय छे. आथी जे पूर्वे **वैरोट्या** तेणीना अपमाननुं पात्र थई हती, ते हवे गौरवनुं स्थान थई पडी.

एवामां महोत्सवना कामथी व्यग्र बनेल कोई दासीए चूला पर रहेल थाळी पर पेलो नागघट मूकी दीधो. ते जोई व्याकुळ थयेल **वैरोट्या**ए ते उतारी नाख्यो त्यारे स्नान कर्युं होवाथी तेना वाळ भीना हता. नागमाताना कहेवाथी केशना जळथी छंटकाव कर्यो एटले तेना प्रभावथी ते स्वस्थ थई गया, पण तेमांनो एक बाळनाग, जळ बिंदुओनो स्पर्श न थवाथी तत्काळ ते पुच्छ रहित थई गयो, त्यारे तेना स्नेहथी मोहित थयेल ते ज्यां त्यां छींक वगेरेमां स्खलना पामतो त्यारे कहेवा लागी के—'बंड जीवतो रहे.'

पछी नागरूप तेना बांधवोए बधाने रेशमी वस्त्रो, सुवर्ण, रत्न अने मौक्तिकना अद्‌भुत अलंकारो आप्या, एम ते पर्व समाप्त थतां ते बधा नागकुमारो पोताना स्थाने चाल्या गया. ए प्रभावथी **वैरोट्या** पोताना घरमां भारे माननीय थई पडी.

एकदा अलिंजर नागराजे पोताना पुत्रोने जोतां तेमां खंडित अवयववाळा ते बंडने जोयो, तेथी तेने गुस्सो आव्यो, तेनुं कारण अवधिज्ञानथी जाणीने ते वैरोट्याना घरे आव्यो अने पोताना नंदननो द्रोह करनार एवी वैराट्याने तेणे दंश देवानो विचार कर्यो. पतिनो ए विचार जाणवामां आवतां, तेणीनुं रक्षण करवामां तत्पर एवी नागकांताए त्यां आवीने कह्युं के—'वैरोट्या तो भक्तात्मा छे.' पोतानी पत्नीनी ए वाणी सांभळतां नागराज कंईक शांत थयो, पण तेनी परीक्षा करवाने ते घरनी अंदर बारणाना कमाडनी पाछळ छूपाई रह्यो. एवामां सांजे अंधकार होवाथी आगळ रहेल दरवाजाने न जोवाथी उतावळे जती **वैरोट्याने** पगे वागवाथी भारे पीडा थई. एटले—'बंड चिरंकाळ जीवतो रहे' एम बोलवाथी तेणे नागराजने तरत संतुष्ट कर्यो. एम संतुष्ट थवाथी तेणे वैरोट्याने बे नूपुर आप्या अने पातालगृहमां जवा आववानी अनुज्ञा आपी अने नागकुमारोने पण गमे त्यारे तेणीना घरे जवा आववानी अनुज्ञा आपी, ते पछी नागकुमारो पण गमे त्यारे तेणीना घरे आववा लाग्या अने तेथी घरना बाळको अने स्त्रीओने भय पामवानुं एक कारण थई पड्युं. आथी तेनुं घर दुर्गम अने **नागमंदिर** एवा नामथी प्रख्यात थयुं. एटले **पद्मदत्ते** ए बधी हकीकत गुरु महाराजने निवेदन करी, त्यारे गुरु बोल्या के—'तारी पुत्रवधुना मुखथी नागकुमारोने एम कहेवडाव के—लोकोना अनुग्रहनी खातर तमारे अमारा घरे वास न करवो अने कदाच वास करो, तो कोईने डशवुं नहि. एम मारी आज्ञा प्रमाणे तारे करवुं.'

पछी **पद्मदत्त** सार्थवाहे **वैरोट्या**ने कह्युं के—'तुं नागमंदिरमां जा अने नागकुमारोने अहीं आववानो निषेध कर. कारण के मारी आज्ञा तारे मान्य राखवी जोईए.'

एटले **वैरोट्या** पातालमां जईने **नागकुमारो**ने कहेवा लागी के—'गुरु महाराजनी आज्ञाथी तमारे मारा घरे न आववुं.' एम तेणे बधा नागपुत्रो तथा **अलिंजर नागेंद्र**ने कही संभळाव्युं, आ तेनुं वचन तेमणे मान्य राख्युं. वळी विशेषमां तेणीए जणाव्युं के—नागिनी एना सो पुत्रो अने विष जवालाथी आकाशने बालनार पितातुल्य अलिंजर नागेन्द्र दीर्घ जीवी बनो. जेणे अनाथ एवी मने सनाथ करी अने मारा चरणने नुपुर सहित कर्या छे.

त्यारे **नागपति**ए तेने सुधा समान आशिष आपतां जणाव्युं के—'देवाधिदेवना ध्यानथी अने तेमने छत्र, ध्वज अने चंद्रवादिक धरवाथी पन्नग, प्रेत, भूत, अग्नि, चोर के व्यालादिकनो भय थवानो नथी. वळी **जेना शिरपर जिनाज्ञा रूप मुगट हशे**, तेने डाकिनी, शाकिनी के योगिनी उपद्रव कदि पमाडी शकशे नहि; वळी ते गुरुनी आज्ञाने जे मान्य करशे अने **वैरोट्या**नुं जे सदा स्मरण करशे, तेने क्षुद्रजंतुथी कदि भय थवानो नथी. वळी गोळ, घृत अने पायसथी स्वाद्य भोजन अने बलि जे जिनेश्वरनी आगळ धरशे अने जिनसाधुने जे तेवुं भोजन

आपशे, तेनुं **वैरोट्या** रक्षण करशे.

ए प्रमाणे नागेंद्रनो उपदेश सांभळतां बीजा पण बधा **नागदेवो** शांत थई गया तेमज **वैरोट्या** सती पूजनीय थई. भाग्य अने सौभाग्यना निधानरूप तथा धर्म-कर्ममां आदरयुक्त एवा **नागदत्त** तथा नागकुमारोए तेना कुळनी उन्नति करी.

पछी एक दिवसे सद्गुरुना वचनथी संसारनी अनित्यता समजीने **पद्मदत्ते** पोताना पदे गुणवान **नागदत्त**ने स्थापन कर्यो अने पोते प्रिया अने पुत्र सहित दीक्षा अंगीकार करी अने तीव्र तप तपीने पुत्र सहित ते सौधर्म देवलोकमां गयो, तेमज पद्मयशा, गुरु महाराजना उपदेशथी वैरोट्या वधु साथे मिथ्यादुष्कृत करीने ते पण त्यां देवीपणे उत्पन्न थई; वळी **नागेंद्र**ना ध्यानथी वैरोट्या पण धर्मनुं आराधन करतां प्रांते मरण पामीने **श्री पार्श्वनाथ**नी सेवा करनार **धरणेंद्र**नी देवी थई, ते पण प्रभुना भक्तोने अद्भुत सहाय आपवा लागी अने विष, अग्नि वगेरेथी भय पामता तेमने शांति आपवा लागी. ते वखते **श्री आर्यानन्दिल** आचार्ये 'नमिऊण जिणं पासं' एवा मंत्रयुक्त **वैरोट्या**नुं स्तवन बनाव्युं. ए स्तवननुं जे मनुष्य एक चित्ते निरंतर त्रिकाळ ध्यान करे, तेने विषादि सर्व उपद्रवो कदि बाधा पमाडी न शके.

क्षांति अने कल्याणना मूल स्थानरूप **वैरोट्या**नुं आ पावन चरित्र सांभळी जे मनुष्यो क्षमानो आदर करे छे, तेमने स्वर्ग के मोक्ष दुर्लभ नथी.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टधर सरोवरने विषे हंस समान **श्रीराम-लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्री प्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना मनपर लेतां **श्री प्रद्युम्नसूरि**ए शोधेल, पूर्व ऋषीओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री आर्यानन्दिलसूरि**ना चरित्ररूप आ तृतीय शिखर थयुं.

अभिनव रस (जळ) ना मेघरूप एवा हे **श्री प्रद्युम्न गुरु**! आप विना विषय-तृष्णामां तरलित थयेल छतां सद्गुरुना वचनथी भुवननी अन्य सुलभ लक्ष्मीमां निरपेक्ष एवा पोताना बाळक चातकरूप शिष्यने निर्मळ वचन-वृष्टिथी संतुष्ट करो.

इति श्री आर्यानन्दिलसूरि प्रबंध

अयोग्य राजा की सेवा दुःखदायक होती है, वैसे ही कुगुरु की सेवा भी दुःखदायक होती है। अयोग्य राजा तो इस भव में ही दुःखी कर सकेगा परंतु कुगुरु की सेवा तो अनेक भवों तक दुर्गति के दुःख प्राप्त करवायेगी। अतः कुगुरु को अति शीघ्र छोड़ देना चाहिए।

-जयानंद

४. श्री कालकसूरि प्रबंध

कोई मोटा गुणने लीधे **सीमंधर स्वामी**ना मुखथी विदित-विख्यात थयेला एवा **श्री कालकसूरि** तमारुं रक्षण करो. पूर्वना बहुश्रुत आचार्योए पर्युषण पर्व संबंधी हकीकत युक्त जेमनुं चरित्र वर्णवेल छे, तेने अनुसरीने हुं पण आदरपूर्वक वर्णवुं छुं. शुं गाडीशकट (गाडा) नी पाछळ जती नथी?

पोतानी शोभाथी समस्त नगरने जीतनार एवुं **श्री धारावास** नामे नगर छे के ज्यां साधुजनोना वचनामृतथी दुर्जनोना मुखनुं झेर निरस्तर थतुं हतुं. वळी संपत्तिना महाबळ अने भारथी उन्नत थयेल अने गुणयुक्त एवी जे नगरनी कीर्तिरूप पताका आकाशमां व्याप्त थईने चंद्रमाना बिंबसुधी पहोंची हती. त्यां पराक्रमथी सुशोभित एवो **वीरसिंह** नामे राजा राज्य करतो हतो के जेना प्रतापे रिपुरमणीओनी पत्रवल्लीने[1] शोसवी दीधी हती. तेने नागेंद्रकांता समान **सुरसुंदरी** नामे कांता हती के जे कल्याणनी भूमिरूप अने महाभोगथी विराजित हती. जेम इंद्रने जयंत अने समुद्रने शशांक, तेम ए राजदंपतीने **कालक** नामे पुत्र हतो के जेणे प्रचंड धनुष्यथी शत्रुओने खंडित कर्या हता. ब्रह्मानी **सरस्वती** नामे पुत्री विश्वपावनी कहेवाय छे के जेना आगमनथी समुद्र पण गुरु अने सर्वना आश्रयरूप थयो तेम **सरस्वती** राजकुमारीना आगमनथी पण एमनुं कुल समुद्र जेवुं थयुं.

एक वखते अश्वकळानी क्रीडा जाणवाने **कालककुमार** नगरनी बहार गयो. ते पोते अश्वपरिश्रममां थाके तेवो न हतो. त्यां धौरितक, प्लुत, वल्गित, उत्तेजीत अलस अने उत्तेरित-वगेरे गतिथी अश्वोने चलावतां तेणे श्रमित अने निश्चळ करी दीधा. एवामां रूपमां गंधर्व समान एवा कुमारे बगीचामांथी आवतो अत्यंत कोमळ अने उदार ध्वनि सांभळ्यो. एटले राजपुत्रे मंत्रीने कह्युं के—'मेघनी गर्जना समान गंभीर आ ध्वनि केवो? अथवा ए कोनो छे?'

त्यारे मंत्रीए बातमी मेळवीने जणाव्युं के 'हे नाथ! प्रशांत अने पवित्र मूर्तिने धारण करता ए **गुणाकरसूरि** धर्मोपदेश आपी रह्या छे. तो आपणे ए बगीचामां विसामो पण लईए अने एमना वचनामृतनुं पण पान करीए. एटले-'भले एम थाओ' ए प्रमाणे बोलतां राजकुमारे मंत्रीनुं वचन मान्य कर्युं अने सर्व परिवारने आज्ञा करीने पोते उद्यानमां आव्यो, त्यां गुरुने वंदन करीने ते योग्य स्थाने बेठो. एटले ज्ञानना उपयोगथी तेनी योग्यता जाणीने गुरु महाराजे विशेषथी धर्मव्याख्यान शरू कर्युं—

''धर्म, देव अने गुरु ए त्रण तत्त्वो बराबर समजीने तेनो आश्रय करवो, तेमां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए रत्नत्रयना विचारयुक्त तथा जीवदया जेमां प्रधान छे, ते धर्म. सर्वज्ञ जिनेश्वर ते देव. तथा सर्व प्रकारना संगरहित; राग, द्वेषने भेदनार तथा ब्रह्मचारी ते गुरु. धर्मना बे प्रकारमां प्रथम यतिधर्म ते पंच महाव्रत युक्त, साधुओना संयमरूप, दश प्रकारना संस्कारथी विभूषित अने सर्व कर्मने भेदनार छे, एकचित्ते एक दिवस पण ए धर्मनुं आराधन करवाथी मनुष्य मोक्ष अथवा वैमानिक देवपणाने अवश्य पामे छे. वळी बीजो गृहस्थ धर्म ते श्रावकना बार व्रतयुक्त होय छे. ए धर्म, दान, शील, तप अने भाव ए चार प्रकारथी समस्त रीते कल्याणकारी छे. सम्यक् प्रकारे एनुं आराधन करवाथी मनुष्यने कालांतरे ए मोक्षदायक थाय छे. एक जिन वचन पण प्राणीने संसारसागरथी पार पमाडवा माटे नाव समान थाय छे.''

गुरु महाराजना मुखथी ए सांभळतां राजकुमार बोल्यो—'हे भगवन्! तमे दीक्षाने साक्षात् नौका तुल्य बतावी ते योग्य छे. एनो आश्रय लईने हुं अज्ञानसमुद्रना किनारा रूप मोक्षने सत्वर मेळवीश.'

त्यारे गुरु बोल्या—'तारा मातापितानी अनुमति मेळव्या पछी आवीने तुं तारा ए मनोरथने सिद्ध कर.'

1. मुख पर कस्तुरी वगेरेथी करेल रचना.

पछी अत्यादर पूर्वक **कालक** राजकुमार पोताना माबापनी अनुज्ञा मेळवीने पोतानी बहेन सहित ते गुरु महाराज पासे आव्यो. एटले गुरु महाराजे पोताना हाथे बहेन सहित तेने दीक्षा आपी. पछी पोताना प्रज्ञातिशयथी **कालकमुनि** अल्प काळमां सर्व शास्त्र शीखी गया. एटले गुरु महाराजे तेने योग्य जाणीने पोताने पदे स्थापन कर्या अने पोते श्रीमान् **गुणाकरसूरि**ए परभवनी साधना करी.

हवे **श्रीमान् आ. कालकसूरि** विहार करता एकदा **उज्जयिनी** नगरीमां आव्या अने त्यां बाह्य आराममां रह्या. मोहांधकारमां मग्न थयेला भव्यात्माओने सम्यग् अर्थ बतावबामां तेओ मणिदीपकनी जेम समर्थ हता.

ते नगरीमां महाबलिष्ठ एवो **गर्दभिल्ल** नामे राजा हतो. ते कोईवार नगरनी बहार रयवाडीए नीकळ्यो. एवामां कर्मसंयोगे दधिपात्रने काकनी जेम त्यां **आ. कालकसूरि**नी बहेनने जती तेणे पोते जोई. एटले मोहित थईने तेणे प्रचंड पुरुषोना हाथे तेनुं अपहरण कराव्युं. आ वखते ते साध्वी करुण स्वरे—'हा! भ्रात! मारुं रक्षण करो' एम आक्रंद करवा लागी. ए कहीकत साध्वीओ पासेथी जाणवामां आवतां **आ. कालकसूरि** पोते राजसभामां जईने राजाने कहेवा लाग्या के—'फल संपत्तिनी रक्षा माटे क्षेत्रने वाड करवामां आवे छे, ते वाड पोते ज जो धान्यनुं भक्षण करे तो ए फरियाद कोने करवी? हे राजन्! सर्व वर्णो अने दर्शनोनो तुं ज एक रक्षक छे, तो साध्वीना व्रतनुं खंडन करवुं तने युक्त नथी.'

ए प्रमाणे आचार्ये समजाव्या छतां भूतावेशना भ्रमथी उन्मत्त थयेलानी जेम उन्मादयुक्त ते म्लेच्छ जेवा नृपाधमे सूरिनुं वचन न मान्युं. त्यारे श्री संघे, मंत्रीओए अने नागरिकोए पण तेने बहु समजाव्यो, छतां मिथ्या मोहथी घेरायेल अने मतिहीन एवा ते नीच नराधिपे बधानी अवगणना करी. एटले पूर्वना क्षात्रतेजने प्रगट बतावबा एवा **कालकाचार्ये** कायर जनोने कंपावनारी एवी घोर प्रतिज्ञा करी के—'अन्याय रूप कादवना भुंड समान ए दुष्ट नृपनो तेना पुत्र, पशु अने बांधव सहित जो हुं उच्छेद न करुं तो जिनधर्मनी हेलना करनारा, ब्राह्मण, बाळप्रमुखनो घात करनारा अने जिनबिंबने उत्थापनारा एवा पुरुषोना पापथी हुं लेपाउं.'

ए प्रमाणे सामान्य जनने दुष्कर तथा असंभाव्य ए वचन त्यां बोलतां **कालकसूरि** बहार नीकळ्या अने तेमणे दंभथी उन्मत्तनो वेष धारण करी लीधो. पछी चोरा, चहुटा अने त्रिमार्गे ते एकाकी भमवा लाग्या. ते वखते चेतनाशून्य मदोन्मत्तनी जेम वारंवार आ प्रमाणे असंबद्ध वाक्य बोलवा लाग्या—'गर्दभिल्ल राजा छे, तो तेथी शुं थयुं? एने कदाच देश समृद्ध छे, तो तेथी पण शुं थयुं?' एम तेना बोल सांभळतां लोको दया बतावीने कहेवा लाग्या के—'पोतानी बहेनथी विरह पामेल आ आचार्य गांडा थई गया छे.'

केटलाक दिवस पछी ते एकला त्यांथी चाली नीकळ्या अने पश्चिम दिशा तरफ चालतां अनुक्रमे ते **सिंधु** नदीना तीरे आव्या. त्यां **शाखि** नामे देश अने **शाखि** नामना राजाओ हता, ते बीजा **शक** एवा नामथी ओळखाता छत्रु राजाओ हता. तेमां एक राजाधिराज के जेने सात लाख अश्वो हता. वळी बीजा राजाओने पण दश-दश हजार अश्वो हता. तेमां एक मांडलिक आ. कालकसूरिना जोवामां आव्यो के जेने अनेक कौतुक बतावीने तेमणे तेनुं मन वश करी लीधुं. पछी सूरिपरना विश्वासथी ते राजाए तेमनी साथे मित्रता बांधी, तेथी तेमना विना तेने चेन पडतुं नहि, एटले विनोदनी वातोथी ते समय गाळवा लाग्यो.

एकदा आचार्य साथे सभामां बेसीने मंडलेश सुखे वार्ताविनोद करतो हतो, तेवामां प्रतिहारे विनंती करीने राजदुतने सभामां मोकल्यो तेणे आवीने कह्युं के—'प्राचीन रूढि प्रमाणे राजशासन स्वीकारो; एटले तेणे छरी लीधी अने वारंवार मस्तकपर चडावी, पोते उभा थई तेमांना वर्ण मेळवीने तेणे वांची जोया. आथी तेना मुखपर श्यामता छवाई रही, तेनुं चित्त उदास थई गयुं अने शब्दरहित आषाढ मासना मेघनी जेम तेनुं शरीर श्याम बन्युं, जेथी ते बोलवाने पण असमर्थ थई गयो. एटले आश्चर्यथी आचार्ये पूछ्युं के—'आ भेट आवतां तो स्वामीनो प्रसाद जणाय छे, छतां हर्षने स्थाने शोक शा माटे?'

त्यारे ते बोल्यो—'हे मित्र! स्वामीनो ए प्रसाद नथी, पण कोप छे. आ छरीथी शिर छेदीने मारे पोते

मोकलवानुं छे. एम करवाथी मारा वंशमां प्रभुत्व रहे तेम छे, नहि तो राज्य अने देशनो विनाश पासे आव्यो समजवो. वळी आ छरीपर छन्नुनो अंक देखाववाथी छन्नु सामंतोपर राजा कोपायमान थयो होय, एम हुं समजुं छुं.

पछी ते बधा सामंतोने **सूरि**ए गुप्त रीते त्यां बोलाव्या. ते बधा मळी नौकाथी सिंधु नदी उतरीने सौराष्ट्र देशनी सरहदपर आव्या. एवामां तेमनी गतिने अटकावनार वर्षाऋतु आवी, तेथी छन्नु भागमां ते देश वहेंचीने ते त्यां रह्या. बलिष्ठ शत्रु जेवा मेघथी सूर्यनी जेम ते राजाओ घेराई गया. मेघनदीना प्रवाहनी वृद्धि करे छे. शत्रु सैन्यना व्यूहरचनानी वृद्धि करे छे. मेघ राजहंसोना द्रोही छे. शत्रु श्रेष्ठ राजाओनो, मेघ घणा वारितरंगवाळो छे. शत्रु तरवार रूप तरंगवाळो छे. मेघ नळ भेद ईन्द्र धनुषना उल्लासवाळो छे. अने झडपी चालवाळो छे. शत्रु सैन्यने भेदवावाळा धनुष्यने बाणथी त्रास आपवा वाळो छे. आ रीते ते राजाओ मेघथी रोकाया त्यां आवास करी वर्षा ऋतुनो उपसर्ग पसार क्यों. अने कमळ-मुखने विकास पमाडनार मित्र-सूर्यनी जेम शरदऋतु आवी.

परिपक्व वचनरूप शालि (धान्य विशेष) युक्त, सर्व रीते प्रसन्नता दर्शावनार एवी शरदऋतु एक धीमाननी जेम ते राजा राजाओने आनंदकारी थई पडी. त्यारे आचार्ये मित्र राजाने प्रयाण करवा माटे स्पष्टपणे सूचव्युं एटले राजाए जणाव्युं—'हाल आपणी पासे संबल (मार्गमां उपयोगी भातुं वगेरे) नथी तेथी आपणे पार पहोंचीए शी रीते?'

एम सांभळतां आचार्य एक कुंभारना घरे गया. त्यां तेमणे अग्निथी पाकतो इंटोनो निंभाडो जोयो, त्यां अतुल शक्ति धरावनार सूरिए आक्षेपपूर्वक कोई चूर्णयुक्त पोतानी कनिष्ठ अंगुलिनो नख नाख्यो. एटले अग्नि बुझाई जतां ते सर्व सुवर्ण थई गयुं. तेमणे राजाने कह्युं के—'हे सखे! प्रयाण तथा वाहनने माटे सुवर्ण वहेंचीने लई ल्यो' ए वचन मान्य करी, तेओए ते प्रमाणे करीने सर्वत्र गज, अश्वादिक सैन्यना घूजन पूर्वक पर्वरूप प्रयाण कर्युं. आगळ चालतां **पांचाल** अने **लाट** देशना राजाओने सर्व रीते जीतीने शत्रुओने दबावता ते शक राजाओ **मालव**देशनी सरहद पर आवी पहोंच्या. ते वखते 'परबळ आवे छे' एम सांभळ्या छतां, विद्याना सामर्थ्यथी गर्विष्ट बनेल **गर्दभिल्ल** राजाए पोतानी नगरीनो किल्लो सज्ज न कर्यो. तेणे गढना कांगरापर मोरचा न मांड्या, तेना खूणाओ पर तोपो न गोठवी, तथा भाथामां शत्रुओने परास्त करनार एवा बाणो तैयार न कर्या, तेमज नगरीना मुख्य द्वारना कपाट अने सुभटोने सज्ज न कर्या. एवामां पतंगसैन्यनी माफक प्राणीवर्गने भयंकर एवुं शाखि राजाओनुं समस्त सैन्य नगरीनी नजीकमां आवी पहोंच्युं, छतां **गर्दभी**विद्याना बळथी गर्विष्ठ थयेल अने अंदर रहेल एवा **गर्दभिल्ल** राजाए पोतानुं सैन्य सज्ज न कर्युं.

ए बधी हकीकत चरपुरुषोना जाणवामां आवतां आचार्ये मित्र राजाने जणाव्युं के—'आ बधुं असज्जित जोईने तमे उद्यम मूकी न देशो. कारण के अष्टमी अने चतुर्दशीना दिवसे ए गर्दभीविद्यानी पूजा करे छे अने एकाग्रमनथी एक हजारने आठ जाप करे छे. ए जाप पूर्ण थतां ते विद्या गर्दभीरूपे शब्द करे छे, घोर फूत्कार शब्दने जे द्विपद के चतुष्पद सांभळे छे, ते मुखे फीण मूकतां मरण पामे छे. माटे अढी गाउनी अंदर कोईए रहेवुं नहि अने पोतपोताना सैन्यसहित राजाओए पृथक्-पृथक् आवास दईने रहेवुं.' एम सांभळतां बधा राजाओए ते प्रमाणे कर्युं. त्यां **कालकसूरि**ए दोढसो शब्दवेधी सुभटोने पोतानी पासे राख्या, जे लब्धलक्ष अने सुरक्षित हता. एवामां शब्दकाळे तेमणे बाणोथी **गर्दभी**नुं मुख पूरी दीधुं जेथी ते एक भाथा जेवुं भासवा लाग्युं. आथी कोपायमान थयेल गर्दभी ईर्ष्याथी **गर्दभिल्ल**ना मस्तकपर विष्टा अने मूत्र करी, पादघातथी तेने मारीने ते अदृश्य थई गई. एटले 'आ हवे निर्बळ छे' एम शक राजाओने जणावी समस्त सैन्य लावीने गुरुए किल्लामां प्रवेश कर्यो. पछी सुभटोए **गर्दभिल्ल**ने जमीन पर पाडी बांधी लईने तेमणे गुरुनी आगळ लावी मूक्यो त्यारे गुरुए तेने कह्युं के—'परबळने भेदनार धनुष्य अने बाणथी गर्विष्ठ बनेल अरे! दुष्ट नृपाधम! चकलीने सींचाणो उपाडी जाय तेम ते अति विनीत एवी साध्वीनुं अपहरण कर्युं. ते कर्मरूप वृक्षनुं आतो हजी पुष्प छे, परंतु तेनुं फळ तो परभवे तने नरक ज मळवानुं छे. माटे हजी पण समजीने शांत थई तुं कल्याणकारी प्रायश्चित्त लईले. तथा परलोकनी आराधना कर के

जेथी तने मनोवांछित सुख मळे, एम सूरिए समजावतां 'तुं आम कर' एवुं वचन सांभळवाथी गर्दभिल्ल मनमां भारे दूभायो. एटले तेने मूकी देवामां आवतां ते त्यांथी अरण्यमां चाल्यो गयो. त्यां भ्रमण करतां तेने वाघे मारी नाख्यो, जेथी मरण पामीने ते दुष्टात्मा दुर्गतिमां गयो. **तेवा साधु जननो द्रोह करनारने एवी गति मळे, एतो ते कर्मनुं अल्प फळ ज छे.**

पछी आचार्यना आदेशथी मित्र राजा स्वामी थयो अने बीजा शाखि राजाओ पण देश वहेंचीने रह्या. गुरु महाराजे सरस्वती साध्वीने व्रतमां स्थापी एटले ते आलोचना अने प्रतिक्रमण करवाथी मूळ गुणने पामी. कारण के **बलात्कारथी स्त्रीना व्रतने भांगनार पुरुषपर विद्यादेवीओ कोपायमान थाय छे.** तेथी रावण राजा पण सीतापर बलात्कार करी न शक्यो.

एवी रीते शासननी उन्नतिथी जिनतीर्थनी प्रभावना करता अने शाखि राजाओने प्रतिबोध पमाडता **आ.कालकसूरि** शोभवा लाग्या.

केटलाक काळ पछी शक राजाओना वंशने उच्छेदीने **श्री विक्रमादित्य** राजा सार्वभौम समान थयो. सुवर्ण पुरुषना उदयथी उत्कट महासिद्धिने मेळवनार ते राजाए पृथ्वीने ऋणरहित करी अने पोतानुं संवत्सर चलाव्युं, त्यार पछी एकसो पांत्रीस वरस जतां विक्रम राजाना वंशने छेदीने शक राजाओए पोतानुं संवत्सर स्थापन कर्युं. एम प्रसंगने अनुसरीने कही बताव्युं, हवे प्रस्तुत वात कहेवामां आवे छे. राजाओथी पूजा सत्कार पामेल **आ.श्रीकालकसूरि** ते देशमां विचरवा लाग्या.

हवे **लाट** देशना ललाटना तिलक समान एवुं भृगुकच्छ (भरूच) नामे नगर छे. त्यां **बलमित्र** नामे राजा हतो. **भानुमित्र** नामे तेनो मोटो भाई के जे **आ.कालकसूरि**नो भाणेज हतो. तेमनी **भानुश्री** नामे बहेन हती अने तेनो **बलभानु** नामे पुत्र हतो. एक वखते लोकोना मुखथी तेमणे **कालकाचार्य**नो वृत्तान्त सांभळ्यो एटले संतोष पामीने तेमणे आचार्य महाराजने बोलाववा माटे पोताना मंत्रीने मोकल्यो. त्यारे अप्रतिबंधपणे विहार करता करता **सूरि** भव्यात्माओने प्रतिबोध पमाडवाने ते नगरना बाह्य उद्यानमां पधार्या एटले गुरुनुं आगमन जाणवामां आवतां राजा **बलमित्र** तेमनी पासे आव्यो अने भारे उत्सवथी आनंदपूर्वक तेणे गुरुने नगरमां प्रवेश कराव्यो त्यां पुष्करावर्त्त मेघनी जेम **सूरि** पोताना उपदेशामृतथी भव्यात्माओने सिंचन करता तेमना समस्त तापने दूर करवा लाग्या. वळी त्यां **शकुनिका** तीर्थमां बिराजमान **श्री मुनिसुव्रत स्वामी**ने वंदन करीने तेना चरित्र-कथनथी तेमणे राजाने प्रतिबोध पमाड्यो.

एवामां एकदा ते राजानो पुरोहित के जे मिथ्या कदाग्रहमां मस्त हतो अने कुविकल्प तथा वितंडावाद करतो, तेने **आचार्यश्री**ए वादमां जीती लीधो. एटले अनुकूळ वृत्तिथी आचार्य पासे आवतां तेणे दांभिक भक्तिथी सरल स्वभावी राजाने कह्युं के—'हे नाथ! आ गुरु महाराज तो जगतमां देवोनी जेम पूजनीय छे, एमनी पवित्र पादुका लोकोए पोताना मस्तक पर धारण करवी जोईए तो लोको अने राजाओने हितकारी वचन हुं कंईक निवेदन करवा मांगु छुं. तेथी जो तमारे मनुष्य-गुरु उपर भक्ति होय, तो एक चित्ते सांभळो—नगरमां प्रवेश करतां गुरुना चरणो जे मार्गमां प्रतिबिंबित थया, तेने अन्य सामान्य लोको ओळंगे छे, ए मोटुं पाप छे अने तेमां धर्म तो अत्यल्प छे, माटे हे महामति! एनो कांई विचार करो.'

आथी सरल स्वभावने लीधे राजाने प्रतीति थतां ते कहेवा लाग्यो—'अहो! आ तो मोटुं संकट आवी पड्युं. ए गुरु महाराज तो विद्वान, तीर्थ रूप, सर्वने पूजनीय अने मारा मातुल (मामा) रह्या, एटले तेमने चातुर्मास राखीने हवे अन्य स्थाने मोकली केम शकाय?'

त्यारे पुरोहित बोल्यो—'हे महीनाथ! हुं तमने एवो मार्ग बतावीश के जेमां तमारुं हित अने सुख समायेलुं होय. वळी तेम करवाथी तमने धर्म अने यश प्राप्त थशे तथा ए गुरु पोते सुखे चाल्या जशे. नगरमां सर्वत्र एवी घोषणा करावो के-'राजानी आज्ञाथी राजपूजित गुरु महाराजने श्रेष्ठ आहार वहोरावबो. एटले अनेषणायुक्त

आधाकर्मी आहार जोईने ते पोते चाल्या जशे. अने तेथी तमने कोई प्रकारनो अपवाद लागवानो नथी.'

पुरोहितनुं ए दंभयुक्त वचन सांभळतां राजाए कह्युं—'भले एम थाओ' एटले पुरोहिते संकेत प्रमाणे समस्त नगरमां घोषणा करावीने राजानी आज्ञा फरमावी. आथी आधाकर्मी आहार मळतां मुनिओए गुरु महाराजने कह्युं के—'हे भगवन् सर्वत्र मिष्टान्न आहारनी ज प्राप्ति थाय छे.'

त्यारे गुरु बोल्या—'आ उपसर्ग विरोधी तरफथी उपस्थित थयेल लागे छे. माटे संयमनिर्वाहनी खातर आपणे **प्रतिष्ठान** नगरमां जईए. त्यां दृढ व्रतधारी **सातवाहन** राजा जैन छे.' पछी आचार्य महाराजे त्यांना श्रीसंघ पासे बे मुनिओ मोकल्या; अने कहेवडाव्युं के—'**अमे त्यां आवतां श्री पर्युषणा पर्व करवुं.**'

हवे मुनिओ त्यां गया अने श्री संघे तेमने मान आप्युं. एटले तेमणे श्री गुरुनो संदेशो संघने कही संभळाव्यो, त्यां श्री संघे परम हर्षपूर्वक गुरुनुं वचन मान्य कर्युं. पछी **आ.श्री कालकाचार्य** हळवे-हळवे ते नगरमां आव्या, त्यारे **सातवाहन** राजाए तेमनो प्रवेश-महोत्सव कर्यो.

पछी श्री पर्युषणा पर्व नजीक आवतां राजाए आचार्यने विनंती करी के—'हे भगवन्! भादरवा मासनी शुक्ल पंचमीना दिवसे आ देशमां इंद्र ध्वजनो महोत्सव थवानो छे. माटे श्री पर्व छट्ठना दिवसे करो, कारण के **लौकिक पर्व आवतां लोकोनुं चित्त धर्मकार्यमां उत्साहयुक्त थतुं नथी.**'

त्यारे आचार्य बोल्या—'हे राजेंद्र! पूर्वे जिनेश्वरोए अने गणधरोए पंचमीनुं अतिक्रमण कर्युं नथी. वळी 'ए पर्व ते ज दिवसे थाय;' एम अमारा गुरुए कहेल छे. मेरु शिखर कदाच कंपायमान थाय अथवा सूर्य पश्चिम दिशामां उदय पामे, तथापि पंचमीनी रात्रिए ओळंगीने ए पर्व न थाय.'

एटले राजाए कह्युं—'हे प्रभो! तो पर्युषणा पर्व चतुर्थीना दिवसे करो.'

गुरु बोल्या—'एम थई शके, कारण के ए वचन पूर्वाचार्योए पण मान्य करेल छे. वळी एवुं शास्त्रवचन पण छे के—'**पंचमी पहेलां पण पर्युषणा पर्व करी शकाय.**'

एम सांभळतां राजाए हर्षपूर्वक जणाव्युं के—'ए बहु ज ईष्ट छे. कारण के अमावस्याना दिवसे मारी राणीओ पौषधमां रहीने पर्वोपवास करशे अने एकमना दिवसे पारणुं करशे. वळी अट्ठमतप करनारा निर्ग्रंथ महात्माओ ते दिवसे प्रासुक आहारथी श्रेष्ठ उत्तर पारणुं करी शकशे.'

त्यारे आचार्य महाराज कहेवा लाग्या के—'हे राजन्! पांचस्थाने महादान आपतां जीव दुष्कर्मसागरथी निस्तार पामे छे. तेमां मार्गेश्रांत थयेलने, ग्लानने, लोच करनारने, बहुश्रुतने अने उत्तर पारणे आपवामां आवेल दान महाफळ आपनार थाय छे.'

त्यारथी कषायने शांत करवामां कारणभूत ए महान सांवत्सरिक पर्व पंचमीथी चतुर्थीमां आवेल छे. ए प्रमाणे शासननी प्रभावना करतां **आ. श्री कालकाचार्ये** केटलाक दिवस परम संतोषथी व्यतीत कर्या.

[1]एकदा तेवा समर्थ सूरिमहाराजना पण शिष्यो कर्मना दोषथी अविनयी अने दुर्गतिना एक दोहदरूप थया. त्यारे आचार्ये शय्यातरने विपरीत वचन कहेतां जणाव्युं के—'कर्मबंधनो निषेध करवा अमे अन्य स्थाने जईशुं अने तारे ए शिष्योने प्रिय अने कर्कश वचनथी समजावीने कही देवुं के—गुरु विशाला नगरीमां प्रशिष्य पासे गया.' एम कहीने गुरु त्यांथी चाल्या गया.

हवे प्रभात थतां गुरुने न जोवाथी शिष्यो नीचा मुख करीने परस्पर कहेवा लाग्या के—'आ शय्यातरने आपणा गुरुनी अवश्य खबर हशे. **ए आपणो दुर्विनय हवे शाखारूपे विस्तार पाम्यो.**' पछी तेमणे शय्यातरने पूछ्युं, एटले तेणे यथोचित कहीने गुरुनी स्थिति तेमने निवेदन करी. जेथी ते बधा वेगथी उज्जयीनी तरफ चाली नीकळ्या. एटले मार्गे जतां लोकोए तेमने पूछ्युं, त्यारे ते मृषावचन बोल्या के—'अहो! गुरु आपणी आगळ हता,

1. बृहत्कल्प टीका भा. १ पृ. ७३ विशेष माटे जोवुं.

ते पाछळ रही गया अने आपणे पाछळ हता. ते आगळ थई गयां.' ए प्रमाणे गुरुना नामनी शोभाना कारणे मार्गमां ते शिष्योनो लोकोए आदर सत्कार कर्यो कारण के **स्वामी विना स्त्री, सेवक अने शिष्योनी अवज्ञा थाय छे.**

हवे अहीं वस्त्रथी वींटायेला रत्ननी जेम गुप्त स्वरूपे **आ. कालकसूरि** यतिओना उपाश्रयमां आव्या. त्यां **सागरमुनि** नामे तेमना प्रशिष्य आगमनो उपदेश आपता हता. तेणे अभ्युत्थानादिकथी आचार्यनो विनय न साचव्यो, एटले ईरियावही प्रतिक्रमीने उपाश्रयना कोई शून्य खूणामां परमेष्ठिमंत्रनो जाप करता ते निःसंगपणे बेसी रह्या. एवामां देशना पछी ते **आ. सागरसूरि** फरता-फरता गुरु पासे आवीने कहेवा लाग्या-'हे तपोनिधि! आदरपूर्वक कंईक जीर्ण संदेह पूछो.' त्यारे गुरु बोल्या—'वृद्धपणाने लीधे हुं अज्ञप्राय थई गयो छुं. तेथी तारुं वचन समजी शकतो नथी; तथापि कंईक पूछुं छुं. पण संशय करवाने हुं असमर्थ छुं.' एम बोलतां जाणे सुगम होय, तेम दुर्गम अष्टपुष्पी पूछी एटले तेणे अनादर पूर्वक गर्वथकी यत्किंचित् व्याख्या करी.

पछी केटलाक दिवस जतां ते मुनिओ उपाश्रयमां आव्या. एटले **आ. सागरसूरि**ए अभ्युत्थानादिकथी तेमनो विनय कर्यो. त्यारे तेमणे कह्युं के—'अहीं गुरु महाराज अमारी अगाउ आवेला छे.'

तेमणे कह्युं—'एक वृद्ध विना अहीं कोई आवेल नथी.'

एवामां गुरुना आवता मुनिओए अभ्युत्थानादिकथी तेमनो विनय कर्यो. ते जोतां **आ. सागरसूरि** लज्जित थई गया अने गुरुने चरणे लागीने तेमणे खमाव्या तथा मुनिओए पण गुरुने खमाव्या. एटले मुनिओने शिक्षा आपीने गुरु **सागरसूरि**ने आ प्रमाणे बोध आपवा लाग्या के—'हे वत्स! रेतीथी भरेल कोठार स्थाने स्थाने खाली करतां जेम ते न्यून थतुं आवे, ए दृष्टांत अहीं समजी ले, **श्री सुधर्मास्वामी, जंबूस्वामी** तेमज अन्य श्रुतकेवलीओ छ स्थाने पतित थतां ते श्रुतमां हीनपणाने पाम्या तेमनी पाछळ थनार आचार्योमां पण श्रुत अनुक्रमे अधिक अधिक हीन थतुं गयुं. जेवुं अमारा गुरुमां प्रभा सहित श्रुत हतुं मारामां तेवुं नथी, जेवुं मारामां छे, तेवुं तारा गुरुमां नहिं अने तारा गुरु जेटलुं श्रुत तारामां नथी. माटे हे वत्स! **सर्व रीते अनर्थकारी एवा गर्वनो तुं सर्वथा त्याग कर.**'

एवामां **सागरसूरि**ए अष्टपुष्पीनो विचार पूछ्यो. एटले गुरु कहेवा लाग्या—'अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, रागद्वेषनो त्याग, धर्मध्यान अने शुक्लध्यान-ए अष्ट पुष्पोथी आत्मानुं अर्चन करतां मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.'[1]

ए प्रमाणे **आ. सागरसूरि**ने शिक्षा आपी तेने मार्दवगुण युक्त बनाव्या, पछी संगहीन अने पवित्रमति एवा गुरुए अन्यत्र विहार कर्यो. **श्री आ. आर्यरक्षित**नी कथा प्रमाणे इंद्रना प्रश्नादिक ते श्री सीमंधर **प्रभुना निगोदाख्यान** पूर्व थकी जाणी लेवा. श्री जिनशासनरूप पृथ्वीनो उद्धार करवामां कच्छपरूप अने शमादिक गुणना निधान एवा **श्री कालकसूरि** प्रांते समाधिपूर्वक काळ करीने स्वर्गे गया.

श्रुतसागरथी प्रवर्तेल, सत्य प्रभावने बतावनार एवुं, श्रीमान् संयमनिधान **आ. कालकसूरि**नुं चरित्र, पोताना गुरुमुखथी सांभळीने में यथामति रच्युं, ए श्री संघना अज्ञानरूप अंधकारनो नाश करनार अने कल्याण-लक्ष्मीने आपनार थाओ. विबुध जनो तेने वांचो अने कोटी वर्षो पर्यंत ते जयवंत वर्तो.

आ. श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरमां हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **आ. श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना विचारपर लेतां, **आ. श्री प्रद्युम्नसूरि**ए शोधीने शुद्ध करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **आ. श्री कालकसूरि**ना चरित्ररूप चतुर्थ शिखर थयुं.

इति श्री कालकसूरि-प्रबंध

1. अष्ट पुष्पीमां क्यांक उपरना पांच तो एज अने तप, ज्ञानभक्ति अने गुरुभक्ति. एम अष्ट पुष्पी पण वांचेली छे.

५. श्री पादलिप्तसूरि-प्रबंध

भक्तिथी नमस्कार करता प्राणिओने वांछित लक्ष्मी आपवामां कार्मणचूर्ण समान **आ. श्री पादलिप्त** गुरुनी चरण-रज जयवंत वर्ते छे. हुं मंदमति, तेमना अल्प गुणनुं वर्णन करवाने पण समर्थ नथी, तथापि 'तेमना गुणनी स्तुति उभयलोकमां हितकारिणी छे.' एम धारीने पूज्य गुरुना प्रसादथी हुं किंचित् वर्णन करीश. हे भव्यात्माओ! दरेक भागमां रहेल आश्चर्य युक्त तेमनुं चरित्र तमे कौतुकथी सावधान थईने सांभळो—

सरयू अने गंगाना जळनुं सेवन करनारा मनुष्यो युक्त अने विस्तृत सुख पूर्ण एवी **कोशला** नामे नगरी छे. त्यां हस्ती अने अश्वोनी सेनाथी शत्रुओने परास्त करनार एवो **विजयब्रह्म** नामे विख्यात राजा हतो. ते नगरीमां श्रेष्ठ गुणोना स्थानरूप तथा महाधनिक एवो **फुल्ल** नामे श्रेष्ठी हतो के जेनो यश समूह विकसित मल्लिकालताना पुष्प समान विकास पामतो हतो. रूपमां उपमा रहित एवी **प्रतिमा** नामे तेनी वल्लभा हती के जेनी वाणीथी परास्त थयेल सुधा रसातलमां चाली गई. तेणे अपत्य पामवानी इच्छाथी हस्तरेखाओ जोवडावी, लग्न राशीना महामंत्रो कराव्या, वंध्याने संतान थाय तेवां अनेक औषधोनो उपयोग कर्यो अने लाखो मानताओ करीने क्षेत्रदेवता अने पादरदेवताने आराध्या, पण ए बधी तेनी क्रियाओ निष्फळ गई. वळी तेणे कोईना कथन प्रमाणे तीर्थस्नानना प्रयोगो पण कर्या; छतां तेनो मनोरथ सिद्ध न थयो. अहो! **लोकोमां स्त्रीओने अपत्यनो मोह छे, ते तेमना मानसिक सुखनो विनाश करे छे.**

हवे **श्री पार्श्वनाथ** प्रभुना चैत्यमां **वैरोट्या** नामे शासनदेवी छे. अनेक उपायोमां निराश थतां **प्रतिमा** शेठाणीए ते देवीनो आश्रय लीधो. एटले कर्पूर, कस्तुरि वगेरे भोगथी तेनी पूजा करी, तेणे उपवासो साथे एकाग्र मन राखीने अट्ठाई महोत्सव शरू कर्यो. त्यारे आठमे दिवसे ते देवी संतुष्ट थतां प्रत्यक्ष थईने प्रतिमाने कहेवा लागी के—'हे भद्रे! वर मागी ले.'

एटले तेणे कुळदीपक पुत्रनी याचना करी. आथी ते देवीए तेने आदेश कर्यो के—'हे वत्से! सांभळ-पूर्वे **नमिविनमि** नामना विद्याधरोना वंशमां श्रुतसागरना पारंगामी **आ. कालकसूरि** थया. ए विद्याधर-गच्छमां खेलादिक लब्धि संपन्न अने त्रिभुवनने पूजनीय एवा **आ. आर्य नागहस्तिसूरि** विद्यमान छे, जो तारे पुत्रनी इच्छा होय तो तेमना पादशोचनुं जळपान कर.'

एम सांभळतां प्रभाते चैत्य थकी नीकळीने प्रतिमा तेमना उपाश्रये गई. त्यां प्रवेश करतां तेणे आचार्यना चरण-कमळना प्रक्षालननुं जळपात्र हाथमां धारण करीने एक बाजु उभा रहेला एक साधुने जोया. एटले प्रार्थनापूर्वक तेमनी पासेथी ते जळ लईने तेणे हर्षपूर्वक पान करी लीधुं. पछी त्यां आगळ जईने तेणे सूरि महाराजने वंदन कर्युं. एटले धर्मलाभरूप आशिष आपतां ते निमित्त जोईने गुरु हस्या अने बोल्या के—'ते अमाराथी दश हाथ दूर जळपान कर्युं, तेथी तारो पुत्र दश योजननी आंतरे वृद्धि पामशे, प्रभावना स्थानरूप ते पुत्र **यमुना** नदीना तीरे **मथुरा** नगरीमां रहेशे, तेमज बीजा महा तेजस्वी तारे नव पुत्रो थशे.'

त्यारे प्रतिमा कहेवा लागी—'हे भगवन्! प्रथम पुत्र में तमने अर्पण कर्यो. ते भले आपनी सेवामां रहीने जिंदगी गाळे. कारण के ते दूर रहे तेथी मने शो लाभ?'

गुरु बोल्या—'हे भद्रे! तारो ते पुत्र श्री संघ तथा पृथ्वीनो उद्धार करवामां वराहरूप अने बुद्धिमां बृहस्पति समान थशे.'

एम गुरुनुं वचन सांभळतां तेणे शकुननी गांठ बांधी लीधी अने संतुष्ट थईने घरे आवतां तेणे ते वृत्तान्त पोताना पतिने निवेदन कर्यो, पछी ते दिवसे **नागेंद्र**ना स्वप्नथी सूचित तेणीने गर्भ रह्यो अने ते गर्भने उचित वर्तन करतां तेना मनोरथोनी साथे ते वृद्धि पामवा लाग्यो अने दिवसो पूर्ण थतां तेणे एक सुलक्षणयुक्त पुत्रने जन्म आप्यो के जे रूपमां कामदेव करतां अधिक अने तेजमां सूर्य समान हतो. पछी **वैरोट्या**नी पूजा करीने तेणे पोतानो पुत्र देवीना चरणे धर्यो अने पछी गुरुना चरणे मूकीने प्रतिमाए ते पुत्र गुरु महाराजने अर्पण कर्यो. त्यारे गुरु बोल्या- 'आ बाळक अमारो थईने वृद्धि पामो' एम कही तेमणे तेने ते पाछो सोंप्यो. एटले अतिवात्सल्यथी तेमज गुरुना गौरवथी प्रतिमा शेठाणी तेने उछेरवा लागी. भारे हर्षपूर्वक फुल्लश्रेष्ठीए **नागेंद्र** एवुं नाम राख्युं. ते बाळक आठ वरसनो थयो, त्यारे गुरु महाराजे आवीने तेने पोतानी पासे लीधो.

हवे **आ. संगमसिंहसूरि** नामे तेमना गुरु भाई हता, तेमने आचार्य महाराजे भविष्यने माटे शुभकारी एवो ते बाळकने दीक्षा आपवानो आदेश आप्यो. एटले तेमणे शुभ लग्ने अने मंगल-मूहुर्ते ते बाळकने दीक्षा आपी. शिष्यना पुण्य-प्रभावथी गुरुनो हाथ तो उपादानरूप होय छे. पछी ते गच्छना मंडनरूप एवा **मंडन** गणिने, ते बाळ साधुनी शुश्रूषा तथा अध्यापनने माटे आदेश कर्यो. एटले पोतानी प्रतिभा शक्तिना प्रभावथी ते बाळसाधु, अन्य अभ्यासीओनी आगळ जे पाठ कहेवामां आवतो होय, तेने पण पोताना हृदयमां धारी लेता, तो स्वअध्यायनी तो वात ज शी करवी? एम एक वर्षमां व्याकरण, साहित्य अने न्यायशास्त्रादिकमां ते असाधारण पंडित थई पड्या. तेमज गुणोने लीधे उत्तमता पामी पुरुषोमां अद्वितीय अने बधाने आश्चर्य पमाडतां एवा ते बाळमुनि नवा नवा समस्त लक्षणोथी अधिक शोभवा लाग्या.

एक दिवसे गुरु महाराजे ते बाळसाधुने कांजी लावववा माटे मोकल्या. एटले विधिपूर्वक ते ग्रहण करीने पाछा उपाश्रयमां आव्या अने अनाकुलपणे ईर्यावहि पूर्वक आलोचना करतां तेओ, पंडितोना हृदयने कंपावनार आ गाथा गुरु समक्ष बोल्या—

अंबं तंबच्छीए अपुप्फियं पुप्फदंतपंतीए ।
नवसालिकंजियं नववहुइ कुडएण मे दिन्नं ।।१।।

अर्थात् - लाल वस्त्रवाळी, ऋतुमां न आवेल अने पुष्प समान दांतवाळी एवी नववधूए भारे प्रमोद पूर्वक मने नवा डांगरनी कांजी आपी.

ए प्रमाणे सांभळतां गुरुए शृंगाराग्निथी प्रदिप्त एवा प्राकृत शब्दमां तेने जणाव्युं के—'तुं पलित्त एटले प्रलिप्त अर्थात् शृंगारसथी लेपाई गयेल छे.'

त्यारे तेणे गुरुने विनंती करी के—'हे भगवन् आप मारा पर अनुग्रह लावीने आमां 'पलित्त'मां एक कानो वधारी आपो जेथी हुं 'पालित्त (पादलिप्त)' पगे लेप करनारो थई जाउं. अने गुरुए ए प्रमाणे 'पादलिप्तो भव' आशीर्वाद आप्यो.'

तेना प्रज्ञातिशयथी गुरु महाराज भारे संतुष्ट थया. पछी हृदयना अत्युल्लासथी ओतप्रोत थयेला गुरु विचार करीने तेनी आगळ बोल्या के—'पादलिप्त तमे आकाशगामिनी विद्याथी विभूषित थाओ.' एम कहीने दशमे वर्षे (दश वर्षनी वयमां) भारे गौरव पूर्वक गुरु महाराजे तेमने तेजस्वी पुरुषोना कषपट्ट समान एवा पोताना पट्ट (पद) पर स्थापन कर्या.

पछी एकदा गुरु महाराजे असाधारण अतिशयना निधानरूप एवा **आ. पादलिप्तसूरि**ने प्रभावनाना विस्तार माटे अने श्री संघना उपकार निमित्ते **मथुरा** नगरीमां मोकल्या. एटले त्यां केटलाक दिवस रहीने ते **पाटलीपुर**मां गया, के ज्यां **मुरंड** नामे राजा राज्य करतो हतो. एक वखते कोई पुरुषे गोळाकारे गुंथेल,

आश्चर्यकारक अने तंतुओ मेळवीने तेना प्रांत भाग गुप्त करी दीधेल एवो दडो राजाने भेट कर्यो. एटले राजाए प्रज्ञानी परीक्षा करवाना हेतुथी ते दडो **पादलिप्त गुरु** पासे मोकल्यो. त्यारे तात्कालिक बुद्धिना प्रभावे आचार्ये तेने बराबर मीणथी मेळवेल जोईने उष्ण जळमां पलाळतां तेना तंतुनो प्रांत भाग मेळव्यो, पछी तेने छूटो करीने ते राजा पासे पाछो मोकल्यो. ए वात जाणीने राजा चमत्कार पाम्यो. **पोतानी प्रज्ञाथी तत्त्वने जणावनार एवी कळाओथी कोण वश न थाय?** पछी राजाए गंगातीरना वृक्षनी एक यष्टिका (लाकडी) बंने बाजु बराबर पालीस करावी, तेनुं मूळ अने अग्र भाग जाणवाने माटे गुरुने मोकली, एटले तेने जळमां नाखतां मूळ वजनदार होवाथी पाणीमां डूबी गयुं. एम मूल अने अग्र भाग ओळखीने तेमणे ते राजाने पाछी मोकलावी. वळी ज्यां सांधा जाणवामां न आवे तेवी एक डाबली राजाए गुरुने मोकली. त्यारे गरम पाणीमां नाखतां ते उघाडीने तेमणे राजाने आश्चर्य पमाड्युं.

पछी **आ. पादलिप्ताचार्ये** तंतुओथी गुंथेल अने मांसनी पेशी समान गोळ तुंबडुं राजसभामां मोकल्युं. त्यां कोई तेने छूटुं करी न शक्युं, तेथी मूकी देवामां आव्युं. त्यारे अन्य लोको कहेवा लाग्या के—'एमानुं गुंथण तो ते गुरु विना अन्य कोई छूटुं करी शकशे नहि.' एटले राजाए गुरुने बोलावतां तेमणे आवीने ते तरत छूटुं करी आप्युं. आथी आश्चर्यचकित थयेल राजा चिंतववा लाग्यो के—'शुं आवा कुहेतुथी आ बालसूरि रमाडवा लायक छे? परंतु हुं धारुं छुं के केसरीनी जेम ए बाळक कोईथी पराभव पामे तेवो नथी. कारण के **'तेजमां वयनुं कांई कारण नथी'** ए पूर्वनुं वचन सत्य ठरे छे. कारण के **सिंहना नाना बच्चांने पण यज्ञमां लाववानी कोण उमेद करे?**

एकदा राजाने शिरोवेदना जागी. एटेले तेणे प्रधान पुरुषो मोकलीने गुरुने विनंती करी. कारण के छींक के खांसी नष्ट थतां सूर्यनुं स्मरण थाय छे. पछी गुरुए त्रण वार पोताना ढींचण पर तर्जनी आंगळी फेरवी, जेथी राजानी वेदना शांत थई. **ते प्रभुने शुं दुष्कर होय?** कारण के—

जह जह पएसिणिं जाणुयंमि पालित्तओ भमाडेइ ।
तह तह से सिरवियणा पणस्सइ मुरंडरायस्स ।।१।। - निशीथ भाष्य गा.

जेम-जेम आ. पादलिप्ताचार्य तर्जनी अंगुली ढींचण उपर फेरवे छे. तेम तेम ते मुंरंडराजानो माथानो दुःखावो नाश पामे छे.

अर्थात् - मंत्र रूप आ गाथा बोलतां जेना शिरनो स्पर्श करवामां आवे तो अद्यापि अति दुर्धर तेनी शिरोवेदना शांत थाय छे.

ए प्रमाणे तात्कालिक उपकारथी राजानुं अंतःकरण आचार्य प्रत्ये आकर्षायुं, एटले सूर्यनी जेम **बालसूरि**ना चरणे नमस्कार करवानी तेनी इच्छा थई. पछी ते तरत गुरु महाराजना उपाश्रये आव्यो. कारण के बाळकना पण सत्य गुणोथी कयो सुज्ञ न आकर्षाय? त्यां एकांतमां आचार्य पासे बेठेल राजाए प्रश्न कर्यो के-'हे भगवन्! अमारा सेवको तो पगारना प्रमाणमां पोतानुं कर्तव्य बजावे छे, ते वेतन विना आपना शिष्यो, मात्र भिक्षावृत्तिना आधारे रहेला एवा आपनुं कर्तव्य बजाववाने शी रीते तत्पर रहे छे?'

त्यारे गुरु महाराज कहेवा लाग्या के—'हे राजन्! कंईपण आप्या विना मात्र उभयलोकना हितनी इच्छाने लीधे ए शिष्यो अमारां कार्यो बजाववाने सदा तत्पर रहे छे.'

एटले राजा बोल्यो—'ए वचन मारा मानवामां आवी शकतुं नथी. कारण के दग्ध अरण्यने जेम मृगलांओ तजी दे छे, तेम निर्धन माणस लोकमां त्याज्य गणाय छे; आथी एम समजाय छे, के लोकोनी स्थिति द्रव्यना आधारे टकेली छे.'

एम सांभळतां आचार्य बोल्या—'हे नरेंद्र! मोटा पगारदार तारा नोकरो जेवुं काम नथी करता, तेवुं काम दान विना मारा शिष्यो बजावे छे. हे भूप! आ बाबतमां तारे खात्री करवी होय, तो कौतुकथी जो. दक्ष, पवित्र,

गुणी, सदा प्रतिष्ठा पमाडेल, तांबूल आभरण अने वस्त्रादिकना दानथी संतुष्ट करेल सदा पोतानी समान जोयेल, पूर्ण विश्वासना स्थानरूप अने जाणे पोतानी अपर मूर्ति होय तेवा एक कोई श्रेष्ठ प्रधान सेवक पुरुषने बोलावो के जेथी मारा वचननी तने प्रतीति थाय.'

एटले राजाए पूर्वोक्त गुणयुक्त एक प्रधानने त्यां बोलावतां ते आव्यो अने शिरपर अंजलि जोडीने कहेवा लाग्यो के—'हे स्वामिन्! आदेश फरमावीने मारा पर प्रसाद करो. भारे दुष्कर काम पण हिम्मतथी बजावनार एवा आ क्षुद्र किंकरने शी आज्ञा छे?'

त्यारे राजाए कह्युं—'हे सखे! गंगा कई दिशाए मुख करीने वहे छे?' ते तपास करीने कहो.

एम राजानुं वचन सांभळतां मनमां हसीने ते सोपहास चिंतववा लाग्यो—'अहो! बालऋषिना संसर्गथी राजाने बालपणुं आव्युं लागे छे.' के जेथी गंगा कई तरफ मुख राखीने वहे छे एम बोले छे. ए वचन तो बाळको अने स्त्रीओना पण जाणवामां हशे.' एम धारी 'आपनो आदेश प्रमाण छे.' एम कहीने ते बहार नीकळी गयो. जतां जतां तेणे विचार कर्यो के—'राजा तो पोताना ऐश्वर्यथी घेलो थयो छे, पण हुं कंई तेवो नथी. तो आवा नकामा वचनथी मारा पोताना सुखनो त्याग शा माटे करुं? ' एम धारीने ते व्यसनी जुगार रमवा चाल्यो गयो. त्यां रमतां चार पांच घडी व्यतीत करीने राजा पासे आवीने बोल्यो के—'गंगा पूर्वाभिमुखी वहे छे.' एवामां छूपा बातमीदारोए तेनो बधो वृत्तान्त राजानी आगळ निवेदन कर्यो.

पछी आचार्य महाराजे जरा हसीने जणाव्युं के—'हे राजन्! धन, मान अने प्रसादथी ताबे करेल ए प्रधाननुं चेष्टित जोयुं? त्यारे बीजानी शी वात करवी?' एम कही बालसूरिए पुनः कह्युं के—'हवे आजकालना नव दीक्षित अने अशिक्षित तथा मदरहित एवा मारा शिष्यनुं चित्तने चमत्कार पमाडनार चरित्र जुओ.' एम राजाने जणावतां गुरुए पोताना शिष्यने बोलाव्यो—'हे नूतन बाळमुनि! अहीं आव.' एम गुरुना बोलतां 'हे भगवन् इच्छामि' एम कहेतां खेद लाव्या विना ते शिष्य तरत उभो थयो अने विनयथी मस्तक नमावतां भूमिने प्रमार्जन करी गुरुनी समक्ष आव्यो, त्यां ढींचण जमीन पर स्थापतां मुख आगळ मुहपत्ति राखीने शिष्य कहेवा लाग्या के--'हे भगवन्! आपना आदेशने ईच्छुं छुं.'

एटले गुरु बोल्या—'हे वत्स! गंगा कई तरफ वहे छे, तेनो निर्णय करीने कहे.'

ए प्रमाणे गुरुना मुखथी सांभळतां, आवश्यक पूर्वक उपाश्रयथी बहार नीकळतां स्कंधपर कंबळ राखी अने हाथमां दंड लईने ते बालमुनि आगळ चाल्या. गुरुनो प्रश्न अनुचित छे, 'एम जाणतां छतां पण ते बाळ, वृद्ध अने स्त्रीओने' ए बाबतनो खुलासो पूछ्यो अने छेवटे मध्यम वयना एक प्रवीण पुरुषने तेणे प्रश्न कर्यो के—'हे भद्र! गंगा कई दिशा भणी वहे छे?'

त्यारे ते पुरुषे जवाब आप्यो के—'पूर्वाभिमुख वहे छे.'

ए प्रमाणे बे त्रण वार तेणे पूछी जोयुं, तो पण ए ज जवाब मळ्यो. तथापि बराबर निश्चय करवाने ते गंगाना प्रवाह आगळ गयो. त्यां अव्यग्रपणे **हाथमां रहेल दंड तेणे जळमां मूक्यो** एटले प्रवाहना वेगथी दंड सहित हाथ पूर्वाभिमुख तणायो. आथी तेने खात्री थई. पछी उपाश्रयमां आवतां ईर्यावहिपूर्वक पोताना सदोष वर्तननी आलोचना लईने गुरुभगवंतने निवेदन कर्युं के 'गंगा पूर्वाभिमुख वहे छे. तेनो निर्णय में आ प्रमाणे कर्यो.' पछी गुरुना आदेशथी पोतानी क्रियामां ते प्रवृत्त थयो.

अहीं **श्री जिनभद्रगणि** क्षमाश्रमण भाष्यकार कहे छे के—

निवपुच्छिएण गुरुणा भणिओ गंगा कुओमुही वहइ? ।
संपाइयवं सीसो जह तह सव्वत्थ कायव्वं ।।१।। विशेषावश्यक भाष्य

पछी पूर्वनी जेम चर पुरुषोए यथास्थित सत्य निवेदन करतां राजा विश्वास पामीने कहेवा लाग्यो—'तमारो वृत्तान्त अवर्णनीय छे.' ए प्रमाणे सर्व लोकोने उपकारी सूरिमहाराजे बतावेल आश्चर्योथी चमत्कार पामतो राजा जता समयने पण जाणतो न हतो.

एकदा महायशस्वी **आ. श्री पादलिप्ताचार्य** मथुरा नगरीमां गया. त्यां **श्री सुपार्श्वजिन**ना स्तूपने विषे सत्वर तेमणे **श्रीपार्श्वप्रभु**ने वंदन कर्युं. त्यांथी लाटदेशमां आवेल ओंकारपुरमां ते आव्या त्यां **भीम** राजाए तेमनुं स्वागत कर्युं.

एक वखते शरीरमांना बाळपणना माहात्म्यने जाणे विस्तारता होय तेम विश्ववत्सल **बालसूरि** एकांतमां बाळको साथे रमवा लाग्या; तेवामां तेमने वंदन करवानी भारे उत्कंठा धरावनार केटलाक श्रावको देशांतरथी त्यां आव्या अने शिष्य समान भासता ते बाळगुरुने ज तेमणे पूछ्युं के—'युगप्रधान **श्री पादलिप्तसूरि**नो उपाश्रय क्यां आव्यो छे?'

त्यारे तात्कालिक बुद्धियुक्त एवा गुरु महाराजे दूरथी आववाना प्रगट चिह्नो जोतां तेमने जणाव्युं के तमे दैनिक कार्योथी निवृत्त थईने आवो एटलामां आचार्य महाराज तमने मळी जशे अने पोते वस्त्र विस्तारी, पोतानो आकार गोपवीने ते एक उन्नत आसनपर बेसी गया. एवामां श्रावको आव्या अने तेमणे अतिभक्तिथी गुरुने वंदन कर्युं. त्यारे दक्षपणाथी तेमणे **आ. बालसूरि**ने ओळखीने विचार कर्यो के—'आ तो आपणे जेमने रमत करता जोया, ते ज छे.' पछी तेमणे विद्या, श्रुत अने वयोवृद्धनी तुल्य धर्मदेशना आपीने ते श्रावकोना विकल्पने दूर करवा माटे जणाव्युं के-'चिरकाळथी साथे वसता जनोए बालकने बाळक्रिडाने माटे अवकाश आपवो जोईए.' एटले शिशुस्वामीना ए सत्य वचनथी ते श्रावको संतुष्ट थया.

एक दिवस प्रौढ साधुओ बधा विहार करी चाल्या गया त्यारे **बालसूरि** एक निर्जन शेरीमां गया अने जता गाडाओ पर ते कूदका मारवानी रमत करवा लाग्या, तेवामां दूर देशथी आवेला परवादीओए तेमने जोया. एटले तेमने पण प्रथमनी जेम गुरुए उपाश्रय बताव्यो. पछी श्रमित थयेला ते जेटलामां विलंब करीने त्यां आव्या तेटलामां बाळसूरि वस्त्र ओढीने सिंहासनपर सुई गया. त्यारे उपाश्रयमां आवतां तेमणे प्रभात समयने सूचवनार कूकडाना जेवो अवाज कर्यो. एटले आचार्ये मार्जारना जेवो अवाज कर्यो पछी ते परवादीओने आववा माटे द्वार उघाडीने गुरु सिंहासनपर बेठा. तेमनी अद्‌भुत आकृति जोतां ते बधा आश्चर्य चकित थई गया. पछी तर्कशक्तिथी जीतायेला तेमणे एक गाथाथी गुरुने जीतवानी इच्छाथी एक दुर्घट प्रश्न करतां जणाव्युं के—

पालित्तय कहसु फुडं । सयलं महिमंडलं भमंतेण ।।
दिट्ठो सुओ व कत्थ वि । चंदणरससीयलो अग्गी ।।१।।

हे पादलिप्तसूरि! स्पष्ट जणावो के पृथ्वी मंडल उपर भमतां आपे क्यांय चंदन रस जेवो ठंडो अग्नि जोयो के सांभळ्यो छे?

एटले पादलिप्तसूरिए पण तरत ज गाथाथी तेमने उत्तर आप्यो, कारण के प्रज्ञाथी बलवंत बनेला पुरुषो विलंब शा माटे करे?

अयसाभिओग अभिदूमियस्स । पुरिसस्स सुद्धहिययस्स ।।
होइ वहंतस्स फुडं । चंदणरससीयलो अग्गी ।।१।।

अपकीर्तिना अभियोगथी दुःखी बनेला, अपकीर्तिजन्य दुःख वहन करतां शुद्ध हृदयवाळा पुरुषने अग्नि पण चंदन रस जेवो शीतल जणाय छे.

आचार्य महाराजना ए उत्तरथी पोते जीताया छतां ते वादीओ प्रमोद पाम्या, कारण के सज्जनोना हाथे

थयेल पराभव-पराजय पण महिमाना स्थानरूप होय छे.

पछी सद्‌गुणोथी प्रमुदित थयेल श्री संघे विनंति करतां आ. श्री पादलिप्तगुरुए शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करी; त्यांथी **मानखेटपुर**मां आवता कृष्ण राजाए गुरु महाराजनी भक्तिथी अर्चा करी. त्यां **प्रांशुपुर**थी **श्रीरुद्रदेवसूरि** आव्या के जे **योनिप्राभृत**[1] श्रुततत्त्वना ज्ञाता हता. एक दिवसे तेमणे पोताना शिष्योनी आगळ ते शास्त्रमांथी पाप-संतापने साधनार मत्स्योत्पत्तिनी व्याख्या कही बतावी, जे व्याख्या एक धीवरे (मच्छीमारे) भींतने आंतरे रहीने बराबर सांभळी लीधी. एवामां समस्त लोकोने भयंकर एवो दुष्काळ पड्यो जेथी मत्स्योनी उत्पत्ति बंध थई एटले ते धीवरे पूर्वे सांभळेल श्रुतप्रयोगथी घणा मत्स्यो बनावीने तेणे पोताना बंधुओने जीवाड्या.

एक दिवस आचार्यना उपकारथी रंजित थयेल पेलो धीवर प्रमोदथी त्यां आव्यो अने भक्तिथी गुरुने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के—'हे प्रभु! तमे कहेल योगथी में मत्स्यो बनाव्या अने दुष्काळमां ते खाईने कुटुंबनो निर्वाह चलाव्यो.'

एम सांभळतां आचार्य पश्चात्ताप करवा लाग्या के—'अहा! आ में शुं कर्युं के हिंसाना उपदेशथी में पाप उपार्जन कर्युं? आ धीवर हवे जीवतां सुधी जीववधथी भारे पाप उपार्जन करशे, माटे हवे एवो कंई उपाय करुं के जेथी ए पोते पापने तजी दे.' एम धारीने आचार्य बोल्या के—'हे भद्र! रत्नो बनाववानो प्रयोग सांभळ के जेथी कदापि दारिद्र्य ज न आवे, पण ए प्रयोग मांसभक्षण अने जीववध करतां सिद्ध न थाय. माटे जो तुं ए बे काम तजी दे, तो तने ते प्रयोग कही बतावुं.'

त्यारे धीवर बोल्यो—'जीववधथी पाप थाय छे, ए पण हुं सारी रीते जाणुं छुं, पण ते विना कुटुंबनो निर्वाह न थाय, एटले शुं करुं? हे नाथ! आपना प्रसादथी जो पाप कर्या विना थतुं होय, तो परभवे मने सद्‌गति मळे तेथी आपनुं वचन मने प्रमाण छे. हवे पछी मारा घरे के वंशमां मांसभक्षण न थाय.' एम तेणे कहेतां आचार्ये तेने [2]रत्ननो प्रयोग बताव्यो अने तेथी धार्मिक बनी गयो.

हवे **विलास** नगरमां **प्रजापति** नामे राजा हतो. त्यां **श्री श्रमणसिंह** नामे आचार्य पधार्या. एटले राजाए तेमने बोलावीने कह्युं के—'कंईक आश्चर्य बतावो.'

त्यारे गुरु बोल्या—'अहीं अर्कसंक्रांतिने कोई जाणे छे?'

एटले राजाए सिद्ध दैवज्ञ पुरुषोने बोलावीने कह्युं के—'तमे रविसंक्रांतिनो समय अमारी आगळ कहो.' आथी तेमणे घडी अने पळनी संख्याथी बराबर जोईने कह्युं.

पछी आचार्य बोल्या—'हे राजन्! सोय सहित एक पत्थर अमने तथा ज्योतिषीने आपो.'

एटले राजाए ते प्रमाणे कर्युं. पछी सूरिए ते सूक्ष्म समयने जाणीने पत्थरमां सोय नाखी दीधी अने जणाव्युं के-'हे मौहूर्त्तिक! संक्रांति वखते आ सोयने खेंची लेजे, के जेथी बधुं जळमय थई जाय.'

एम सांभळतां ज्योतिषीए कह्युं—मारा ज्ञानमां आवी अद्‌भुत शक्ति नथी पछी आचार्यनुं विज्ञान साक्षात् जोईने राजा आश्चर्यचकित थई गयो.

त्यार पछी एक वखते राजाए वृष्टिना संबंधमां आचार्यने प्रश्न कर्यो त्यारे गुरु बोल्या—'विचारीने कहीशुं, एम जणावीने ते पोताना उपाश्रयमां आव्या अने तेमणे पोताना एक देवेंद्र नामना शिष्यने राजा पासे मोकलता

1. योनिप्राभृत विषे वधु जाणवा जुओ प्राकृत साहित्य का इतिहास पृ.६७३ थी ले. डो. जगदीशचंद्र जैन.
2. आ संबंधमां केटलाक आचार्यो एम कहे छे के--'तेमणे धीवरने सिंहयोग शीखव्यो एटले तेणे ते अजमाव्यो, जेथी सिंहे तेनुं भक्षण कर्युं. कारण के अल्प दोषथी बहु पुण्य शा माटे उपार्जन न करवुं? आ. श्री राजेशखरसूरि कृत विनोद कथा संग्रह कथा ४६मां सिंह योगनी वात छे!

सूचना करी के-'तारे राजा आगळ कंईक विपरीत बोलवुं, के जेथी तेना मनमां अनादर उत्पन्न थाय एम ते प्राज्ञ शिष्यने शिक्षा आपीने राजा पासे मोकल्यो एटले तेणे आवीने राजाने जणाव्युं के—'आजथी पांचमे दिवसे उत्तर दिशामां वृष्टि थशे.' ते दिवसे वृष्टि पण पूर्व दिशामां थई एम दिशाना विपरीत पणाने लीधे राजानो कंईक मंद आदर थई गयो. कर्मबंधना निषेधने माटे ए प्रमाणे तेमने ईरादा पूर्वक करवुं पड्युं कारण के **वारंवार राजकार्योनुं कथन ए पापना कारण रूप छे.** पछी निमित्त ग्रंथमां निष्णात एवा आचार्य केटलाक काळ पछी **मानखेट** नगरमां आव्या अने कळाना वशथी ते राजाना जाणवामां आव्या.[1]

[2]हवे **विद्या प्राभृतथी** संपूर्ण एवा **श्री आर्य खपुटाचार्य**नुं चरित्र अहीं कहेवामां आवे छे के जैनेंद्र मतने उल्लास पमाडनार छे.

विंध्याचलनी भूमिथी प्रगट थयेल अने लाटदेशना ललाट समान एवी रेवानदीथी पवित्र थयेल भृगुकच्छ (भरूच) नामे नगर छे, के ज्यां भवसागरमां यानपात्र समान **श्री मुनिसुव्रत स्वामी,** त्रिभुवनना जननुं पातकना भयथी रक्षण करी रह्या छे. त्यां इंद्र समान तेजस्वी एवो **बलमित्र** नामे राजा के जे **कालिकाचार्य**नो भाणेज अने स्थिर लक्ष्मीना एक धामरूप हतो, त्यां भव्वनमां भमतां भव्य जनोने विश्रामनी एक भूमिरूप अने विद्याथी विख्यात थयेला एवा **श्रीआर्यखपुटाचार्य** बिराजमान हता तेमनो भुवन नामे भाणेज शिष्य हतो के जे प्राज्ञ हतो, सांभळवा मात्रथी सर्व प्रकारनी विद्या ग्रहण करी शकतो हतो त्यां आचार्य महाराजे संघ समक्ष वादमां **बौद्धो**ने पराजित करीने सूर्य तुल्य जेमणे तेमना मतरूप अंधकारथी जिनशासनने विमुक्त कर्युं.

एवामां **बहुकर** नामे बौद्धाचार्य, जिन शासनने जीतवानी इच्छाथी **गुडशस्त्र**[3] नगरथकी त्यां आव्यो. पूर्वे गोळना पिंडोथी शत्रुनुं सैन्य भग्न थयुं हतुं, तेथी **गुडशस्त्र** एवा नामथी ते सर्वत्र प्रसिद्ध थयुं पछी सर्व पदार्थोने अनित्य जणावनार एवा ते **बौद्धाचार्य**ने चतुरंग सभा समक्ष स्याद्वादना तत्त्वने निरूपण करनार जैनाचार्यना शिष्ये जीती लीधो एटले क्यांय पण जवाने माटे असमर्थ अने हृदयमां क्रोधथी धमधमायमान एवा ते बौद्धाचार्ये कोपावेशथी अनशन कर्युं अने मरण पामीने ते यक्ष थयो, आथी जैनश्वेतांबर साधुओ पर कोपायमान थयेल ते पोताना स्थानमां आवीने मुनिओनी अवज्ञा करतो तथा तेमने उपसर्ग करवा लाग्यो एटले ते नगरना श्री संघे **श्री आर्य खपुटाचार्य**ने बे मुनिओ मोकलीने यक्षना पराभवनी वात निवेदन करी, त्यारे पोताना भाणेज **भवन मुनि**ने तेमणे शिक्षा आपतां जणाव्युं के—'हे वत्स! कौतुक थकी पण आ कवळी (पोथी)ने तुं कदि उघाडीने जोईश नहि.' एम कहीने ते चाल्या गया.

पछी त्यां नगरमां आवतां ते यक्षमंदिरमां आचार्य महाराज तेना कान पर पग मूकीने पोते सुई गया. एवामां यक्षनो पूजारी आव्यो, तेणे ते बनाव जोईने[4] राजाने निवेदन कर्युं, त्यारे राजा तेमना पर कोपायमान थयो. अहीं चोतरफ वस्त्र बराबर लपेटीने आचार्य सुता हता. त्यां राजाए पोताना माणसो मोकलीने तेमने उठाडवानो प्रयत्न कराव्यो, पण ते तो पटथी आच्छादित होवाथी जाग्या ज नहि एटले तेमणे ए वृत्तान्त आवीने राजाने जणाव्यो, जे सांभळतां ते अधिक कोपायमान थईने कहेवा लाग्यो—'एने पत्थर अने लाकडीवती खूब मार मारो.' त्यारे राजसेवकोए ते प्रमाणे कर्युं, पण आचार्यने तो मारनी कंई खबर ज न पडी. एवामां तरत नगर अने

1. त्रिपुटी म. लखे छे के—"तेमणे ज्योतिषनो एक ग्रंथ बनाव्यो हतो. जे आजे उपलब्ध नथी. किंतु विक्रम संवत् ५४मां थयेल प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर बीजाए पोताना ग्रंथो लाटाचार्य, सिंहाचार्य.....ना ग्रंथोना आधारे बनाव्या होवानुं जणावे छे." (भारतीय ज्योतिष पृ. २१०-२१६) जैनसत्य प्रकाश क्रमांक १००, जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. २३६
2. विशेष माटे जुओ आवश्यक मलयगिरि वृत्ति. पत्र ५४१
3. गुडशास्त्रपुर का समीकरण आधुनिक (गोडूरपुर खरगांव जि. निमाड म. प्र.) से किया जाता है जो नर्मदा के दक्षिण तट पर है। - प्रबंधकोश का ऐतिहासिक विवेचन पृ. ८३
4. मोहनलाल देसाई जणावे छे ते मुजब ए राजानुं नाम वेणी वच्छराज हतुं जैन साहित्यनो संक्षिप्त ईतिहास पृ. १०० टि. ८७

अंतःपुरमां कोलाहल जाग्यो अने कंचुकीओ पोकार करता, राजा पासे आवीने कहेवा लाग्या के-'हे स्वामिन्! अमारुं रक्षण करो. पत्थर अने लाकडीवती करेला अदृष्ट प्रहारोथी कोईए समस्त अंतःपुरने जर्जरित करी नाखेल छे.' एम सांभळतां राजा चिंतववा लाग्यो के—'आ अवश्य कोई विद्यासिद्ध पुरुष छे. तेथी प्रहारो अंतःपुरमां चलावे छे अने पोतानो बचाव करे छे, माटे ए मारे माननीय छे.' एम धारी अधिष्ठायक देवनी जेम राजाए मधुर वचनथी आचार्यने शांत कर्या, त्यारे कपटनाटक बतावता **आचार्य आर्य खपुटाचार्य** जाग्रत थईने उठ्या त्यां जमीन सुधी मस्तक नमावीने राजाए तेमने नमस्कार कर्या.

पछी आचार्ये यक्षने कह्युं के—'हे यक्ष! तुं मारी साथे चाल.' त्यारे ते साथे चाल्यो अने तेनी पाछळ-पाछळ बीजी पण देवमूर्तिओ आववा लागी. वळी एक हजार पुरुषो चलावी शके एवी पत्थरनी त्यां बे कुंडी पडी हती, तेने पण गुरुए पोतानी पाछळ चलावी, एवी रीते कौतुकथी तेमनो प्रवेशोत्सव थयो. एम आचार्यना अद्‌भुत प्रभावने जोई राजा अने लोको पण जिनशासनना भक्त थया, जेथी शासननो महिमा वृद्धि पाम्यो. छेवटे राजानी विनंतीथी शांत थयेला सूरिए यक्षने तेना स्थाने मोकल्यो अने बे कुंडी त्यां ज रहेवा दीधी.

एवामां **भरूच** नगरथी बे मुनि आव्या. तेमणे आचार्यने वंदन करीने निवेदन कर्युं छे के—'हे भगवान्! श्री संघे अमने तमारी पासे मोकल्या छे. आपना भाणेज शिष्ये बलात्कारथी ते कवळी (पोथी) उघाडी अने तेमांथी एक पत्र काढीने अटकाव्या छतां तेणे ते वांच्युं. एटले तेमां पाठसिद्ध आकृष्टि-महाविद्या तेने प्राप्त थई. ते विद्याना प्रभावथी श्रेष्ठ आहार लावीने तेनो गृद्धिपूर्वक स्वाद ले छे. त्यां स्थविरोए तेने शिखामण आपी, त्यारे क्रोधथी ते पोते बौद्ध साधुओ पासे चाल्यो गयो छे. ते भोजनमां अत्यंत आसक्त अने पोतानी विद्याथी भारे गर्विष्ठ बन्यो छे. विद्याना प्रभावथी आकाशमार्गे गयेला पात्रो श्रावकोना घरेथी आहारथी संपूर्ण रूपथी भराईने आवे छे. ते पात्रोनी आगळ एक मोटुं पात्र श्रावकोना घरे जाय छे तेने श्रेष्ठ आसनपर स्थापन करीने अन्य पात्रोथी भरवामां आवे छे. आ प्रभाव जोईने श्रावको पण तेना प्रत्ये आदर बतावववा लाग्या छे. तो हे प्रभो! आप त्यां सत्वर आवीने ए शासननी थती हीलनाने अटकावो.'

ए वृत्तान्त सांभळतां **आर्य खपुटाचार्य** गुडशस्त्र नगरथी भृगुकच्छमां आव्या, पछी **भुवन** शिष्ये ज्यारे पात्रो श्रावकोना घरे मोकल्या, त्यारे आचार्ये आकाशमां अधवच एक अदृश्य शिला विकुर्वी एटले ते आवता पात्रो बधां भांगीने भूको थई गयां ए चिह्नथी गुरुने त्यां आवेल जाणीने भयभीत थयेल ते शिष्य भागी गयो पछी गुरु बौद्धना मंदिरमां गया. त्यां बौद्धोए तेमने बुद्धने नमस्कार करवानुं कह्युं एटले आचार्य बोल्या के—'हे वत्स! **शुद्धोदनिसुत**, मने अभ्यागतने वंदन कर, त्यारे प्रतिमा रूपे रहेल बुद्ध आवीने तेमना पगे पड्यो. ए बुद्ध मंदिरना द्वारपर बुद्धना पुत्रनी एक मूर्ति हती, तेने आचार्ये नमस्कार करवानुं कह्युं, एटले ते पण आवीने सूरिना चरण-कमळमां नम्यो, पछी गुरुए तेने उठवानुं कह्युं, त्यारे ते उठतां कंईक अवनत रह्यो अद्यापि ते **निर्ग्रंथनमित** एवा नामथी तेवी ज स्थितिमां छे. गुरुना आदेशथी बुद्धस्थाने ते एक बाजुए रहेल छे.

हवे तेमनो **महेंद्र** नामे शिष्य महा प्रभावी अने सिद्ध प्राभृत विद्यामां निष्णात हतो, तेनुं चरित्र कहेवामां आवे छे—

अमरावती समान **पाटलीपुत्र** नामे नगर छे त्यां मिथ्यादृष्टि अने तुच्छबुद्धि एवो **दाहड** नामे राजा हतो, के जे दर्शनोना व्यवहारनो लोप करतां प्रमोद पामतो. ते **बौद्धो**ने नग्न अने **शैवो**ने जटा रहित करतो, **वैष्णवो** पासे विष्णुपूजानो त्याग करावतो, कौलमतने चोटली राखवानी आज्ञा करतो, नास्तिकोना शिरे आस्तिकता स्थापतो, ब्राह्मणोथकी प्रमाणने ईच्छतो अने ते पापात्मा **जैन** मुनिओने मदिरापाननी आज्ञा करतो. एम धर्मने लोपनार ते राजाए सर्व दर्शनीओने आज्ञा आपी, 'ए आज्ञानो भंग करनार प्राणांत दंड पामशे' एवो आदेश पण तेणे फरमावी

दीधो. अहीं कोईनो उपाय शुं चाली शके? वळी ए राजाए नगरमां वसता श्री संघने हुकम कर्यो के 'तमारे पवित्र ब्राह्मणोने हंमेशां नमस्कार करवो, नहि तो तमारो वध करवामां आवशे.' धन अने प्राणादिकना लोभे केटलाक लोकोए आ तेनुं वचन मानी लीधुं, परंतु त्यागी जैन मुनिओ विचार करवा लाग्या के—'देहनो त्याग थाय, तेथी आपणने कंई दुःख थवानुं नथी, पण शासननी हीलनाथी आपणुं हृदय बहु दूभाय छे. कारण के विनश्वर देहपर मोह केवो?' एम धारीने गुरु कहेवा लाग्या—**'श्री आर्य खपुटाचार्य**ना **महेंद्र** नामे मुख्य शिष्य सिद्धप्राभृत विद्याथी अलंकृत छे, माटे श्री संघ भृगुक्षेत्रमां बे गीतार्थ मुनिने मोकले. एटले आ बाबतमां तेओ प्रतीकार लेवाने समर्थ थशे.' पछी श्री संघे ते प्रमाणे कर्युं त्यारे गुरुए तेमने **पाटलीपुत्र** नगरे जवानी आज्ञा आपतां ते बे कणेरनी सोटी मंत्रीने साथे लेता गया, तेमणे आवीने राजाने कह्युं के—'तमारी आज्ञा अमने प्रमाण छे, परंतु ज्योतिषीओए ते मुहूर्त जोवुं जोईए के जे भविष्यमां शुभकारी निवडे.''

एम **महेंद्रमुनि**नुं वचन सांभळतां राजाना मनमां गर्व आवी गयो के—'अहो! आवा अपूर्व कार्यमां पण मारी सत्ता केवी चाले छे?'

पछी ज्योतिषीओए पोतपोतानी बुद्धिना अनुसारे मुहूर्त काढ्युं, एटले श्रावको तथा महेंद्र सहित आचार्य सभामां आव्या. ते वखते गादी तकिया जेमां बिछावेला छे अने आश्चर्यकारी एवा सिंहासनो उपर याज्ञिको, दीक्षित, वेदोपाध्यायो, होम करनारा, संध्या अने प्रभातनुं व्रत करनारा, यजमानो स्मार्त्त गोर, के जेओ गंगानी माटीना तिलक तथा चंदनना लेपथी पवित्र बनेला उपवीत (जनोई) थी अलंकृत तथा रंगेला अने धोयेल धोती पहेरीने बेठेला ते **महेंद्र महर्षि**ना जोवामां आव्या. एटले मुनि बोल्या—'हे राजन्! आ काम अमने अपूर्व लागे छे. प्रथम पूर्वाभिमुख बेठेलाने नमस्कार करीए के पश्चिमाभिमुख बेठेलाने नमीए?' एम बोलतां तेमणे सामे बेठेलानी पाछळ फरी पोताना हाथवती कणेरनी सोटी तेमनी पीठपर फेरवी. एवामां ते बधा निश्चेष्ट अने मृततुल्य बनीने जमीन आळोटवा लाग्या. ते जोतां प्रभातना चंद्रमानी जेम राजानुं मुख श्याम थई गयुं अने तेमना दयापात्र संबंधीओ बधा आवी नाम लईने तेमने बोलाववा लाग्या, पण अचेतन (बेभान) होय ते केम बोले? त्यां स्वजनो बधा आक्रंद करवा लाग्या के—'अरे! आपणुं दुष्कर्म आजे फळ्युं.' वळी केटलाक एम कहेवा लाग्या के—'अहो! जैनऋषिओनो नमस्कार तो आवो पूर्वे क्यां जोयेल के सांभळेल पण नथी. आ तो राजारूपे दर्शनोनो काळ नीवड्यो, पुस्तको के पुराणोमां आवी कथा पण क्यांय सांभळवामां आवी नथी.'

आथी पश्चात्ताप पामेल राजा सिंहासन परथी उठी, धीर पुरुषोमां धुरंधर एवा **महेंद्र ऋषि**ना पगे ढळी पड्यो अने कहेवा लाग्यो के—'हे महा विद्याशाळी! अमारुं रक्षण करो अने मारा पर प्रसाद लावीने मारो आ एक अपराध क्षमा करो कारण के संत पुरुषो विनीत ऊपर वात्सल्यवाळा होय छे. जेमना संबंधी अने स्त्रीओ रुदन करी रही छे एवा आ ब्राह्मणोने जीवाडो. सुज्ञ छतां तमारा माहात्म्यनो पार कोण पामी शके?'

ए प्रमाणे सांभळतां यतींद्र महेंद्रमुनि बोल्या—'पोतानी शक्तिने न जाणनार हे धराधीश! आ तने मिथ्या कदाग्रह केवो लाग्यो? जो के आनंद अने ज्ञान स्वरूप जिनेश्वरो मोक्षपदने पाम्या छे, तथापि अहो! तेमना अधिष्ठायको सदा जाग्रत होय छे. एक सामान्य पण कयो पुरुष आवी विडंबनाने सहन करे? के महाव्रतधारी मुनिओ गृहस्थ ब्राह्मणोने प्रणाम करे? तारा अन्यायथी कोपायमान थयेला देवताओए आ ब्राह्मणोने शिक्षा करी छे तेमां में कंई पण प्रकोप करेल नथी, कारण के **मारा जेवानुं तो शम-क्षमा एज भूषण छे.**'

त्यारे राजाए पुनः वधारे आग्रहथी कह्युं के—'हे भगवन्! तमे ज मारा देव, गुरु, पिता, तात अने शरणरूप छो विशेष कहेवाथी शुं? हे जीवोना जीवन रूप! अमने जीवाडवानी करुणा करो.

एटले महेंद्र महात्मा बोल्या—'हे भूपाल! कुपित थयेला देवोने हुं शांत करीश.' एम कही ते देव

देवीओने उद्देशीने कहेवा लाग्या के—'हे सोळ विद्यादेवीओ! चोवीस जैन यक्षो अने यक्षिणीओ! हुं तमने कहुं छुं के—'आ राजाना अज्ञानथी ए ब्राह्मणोए जिनशासननो अपराध कर्यो, तेनी तमे क्षमा करो. मनुष्योनी दृष्टि शुं मात्र छे?'

एम मुनिए कहेतां दुर्लभ एवी दिव्य वाणी प्रगट थई के—'ए ब्राह्मणो दीक्षा ग्रहण करे तो ज मुक्त थई शके, नहि तो एमने जीवता रहेवुं पण मुश्केल छे.' पछी जळसिंचनथी तेमनी वाणी मोकळी करवामां आवी अने व्रतनी वात पूछतां तेमणे ए वचन अंगीकार कर्युं. कारण के पोताना जीवितने कोण नथी ईच्छतुं? त्यारे कणेरनी बीजी सोटी फेरवतां **महेंद्रमुनि** बोल्या के—'उठो,' एटले तरत ज प्रथमनी जेम ते बधा सज्ज थई गया. कारण के **जैनो असाधारण शक्ति धरावे छे.**

पछी रोमांचित थयेल श्री संघ साथे राजाए करेल महोत्सवपूर्वक मुनि पोताना उपाश्रयमां आव्या.

हवे ते ब्राह्मणोनो दीक्षा-महोत्सव करता श्री संघने अटकावतां **महेंद्रमुनि**ए जणाव्युं के—'ए बधुं **श्रीआर्यखपुटाचार्य** करशे.'

त्यारे श्री संघे कह्युं—'तमे पोते आवा प्रभावना निधान छो, तो तमारा गुरु केवा हशे?'

एटले महेंद्र महात्मा बोल्या—'हुं तेमनी आगळ शुं मात्र छुं? के जेमणे भृगुकच्छपुरमां मार्जारोथी क्षीरनी जेम बौद्ध लोको थकी **अश्वावबोध** तीर्थनुं रक्षण कर्युं; वळी वादीरूप हस्तीओमां सिंह समान एवा **श्रीआर्य खपुटाचार्य**ना अद्‌भुत महिमानुं वर्णन करवाने कोण समर्थ छे? चारित्ररूप पत्थरपर आत्मारूप श्रेष्ठ पात्रमां मदनने पीसी (नष्ट करी) ने वृद्ध स्नेह (तेल) युक्त तपरूप अग्निनी ज्वाळाथी व्यास, शुक्ल ध्यानरूप ज्योतिथी परिपूर्ण एवा इंद्रियनिग्रहरूप कुंडमां प्रगट रीते परिपक्व करवामां आवेल अने सर्वत्र व्याप्त एवो जेमनो यश समूहरूप वडुं सज्जनोने स्वाद लेवा लायक छे ते गुरु तमारुं रक्षण करो.'

पछी श्री संघे अनुमति आपतां **महेंद्रमुनि** ब्राह्मणोने लईने पूज्यसूरि पासे आव्या, एटले आचार्य महाराजे तेमने दीक्षा आपी. ए प्रमाणे **श्री आर्य खपुटाचार्ये** जिनशासननी प्रभावना करी अने **महेंद्र उपाध्याय** अद्‌भुत प्रसिद्धिने पाम्या अद्यापि अश्वावबोध तीर्थमां जेमना संतानीय प्रभावक आचार्यो विद्यमान छे. एम अनेक रीते शासननी प्रभावना करतां प्रांते अनशन आदरीने **श्री आर्य खपुटाचार्य** स्वर्गे गया.पछी तेमना पट्टधर **महेंद्र मुनि आचार्य** थया. ते संयमयात्रापूर्वक हळवे-हळवे तीर्थयात्रा करवा नीकळी लाग्या.

हवे पूर्वे वर्णवेल गुरु पासे **पादलिप्ताचार्ये** ते चमत्कारी शास्त्रनो अभ्यास करी लीधो. तेमणे विद्वानोना संकेतना संस्कारयुक्त एवी **पादलिप्ता** नामनी भाषा बनावी के जेमां बीजा कोई न समजी शके एवो अर्थ राख्यो. त्यां सभा सहित कृष्ण राजा भारे संतुष्ट थयो, तेथी तेमना गुणने लीधे आचार्यने अन्य स्थाने जवा देतो नहोतो.

हवे पूर्वे पाटलीपुत्रमां ब्राह्मणोने तेमणे आ. महेन्द्र मुनिए बलात्कारथी दीक्षा अपावी हती, ते जातिवैरने लईने ब्राह्मणो तेमना पर मत्सर धरवा लाग्या. अटेले श्री संघे सुज्ञ पुरुषो मोकलीने **पादलिप्तसूरि**ने विनंती करी त्यारे आचार्ये विचार करीने तेमने जवाब आप्यो के—'हुं कार्तिकी पूर्णिमाए आवीश.' एम कहीने तेमने विसर्जन कर्या. पछी राजाने जणावीने दिवसना पूर्व भागमां आकाशमार्गे थईने रत्न समान देदीप्यमान आकृतिने धारण करता ते भृगकच्छ नगरमां आव्या अने पापनो ध्वंस करनार ते **श्री मुनिसुव्रत स्वामी**ना मंदिरमां उतर्या. एटले जाणे पृथ्वी पर सूर्य आवेल होय तेवा तेमने आवेल जाणीने लोको कमळनी जेम आनंद पाम्या. कारण के तेमना दर्शन ज दुर्लभ हता. त्यारे राजा आश्चर्य पामीने संघ सहित भक्तिपूर्वक त्यां आव्यो अने तेणे गुरुने नमस्कार कर्या. आ वखते सौने अत्यंत आनंद थयो, त्यां गुरुए श्री संघना हाथे अर्थी जनोने घणुं धन अपाव्युं. एवामां तेमने आकाशगामी जोईने पेला ब्राह्मणो बधा भागी गया.

पछी राजा विनयथी गुरुने कहेवा लाग्यो के—'एक कृष्ण भाग्यशाळी छे के जेने आप पूज्य मूकता नथी अने अमे तो आपना दर्शनने पण योग्य शा माटे नहि? माटे अमारा सुखनां खातर आप केटलाक दिवस अहीं रहो.

त्यारे गुरु बोल्या—'हे राजन्! तमारी पासे रहेवुं, ते पण युक्त ज छे, परंतु संघनो आदेश अने राजानो स्नेह अलंघनीय छे. दिवसना पाछला पहोरे त्यां जवानी तेनी पासे प्रतिज्ञा करेल छे. ते पछी मारे हवे शत्रुंजय, गिरनार अने सम्मेतशिखर तथा अष्टापदनी तीर्थयात्रा करवानी छे. तो हे भूपाल! अमारी प्रेरणाथी पण तुं जैनधर्मपर भक्ति धरावजे.' एम कहीने आकाश मार्गे ते यथास्थाने चाल्या गया. पछी पादचारी थईने तीर्थयात्रा करतां अपार श्रुतना पारगामी एवा ते आचार्य सौराष्ट्र देशमां आव्या त्यां व्रतना नियम प्रमाणे विहार करतां **आ. पादलिप्तसूरि** निर्भय एवी **ढंका**[1] नामनी महापुरीमां गया. त्यां रससिद्धि जाणनारामां मुख्य एवो **नागार्जुन** नामे ते गुरुनो भावि शिष्य हतो. तेनुं चरित्र आ प्रमाणे छे—

क्षत्रियोमां मुगट समान अने युद्ध कर्ममां कुशळ एवो **संग्राम** नामे प्रख्यात क्षत्रिय हतो. तेनी **सुव्रता** नामे पत्नी हती. सहस्रफणा शेषनागना स्वप्नथी सूचित अने पुण्यना स्थानरूप एवो **नागार्जुन** नामे तेमनो पुत्र हतो. ते त्रण वरसनो थयो, त्यारे एक वखते बाळको साथे रमत करतां एक बाळसिंहने विंदारी तेमांथी कंईपण भक्षण करतो ते पोताना घरे आव्यो त्यारे पिताए तेनो निषेध करतां जणाव्युं के—'हे वत्स! आपणा क्षत्रियकुळमां नखी-नखवाळा प्राणीनुं भक्षण करवानी मनाई छे. एवामां त्यां आवेल एक सिद्ध पुरुषे वर्णन कर्युं के—'हे नरोत्तम! पुत्रना ए कर्मथी तुं विषाद न कर. जेनुं रहस्य पामवुं अशक्य छे एवा सूत्रना रहस्यनो पण ए ज्ञाता थशे.'

पछी बाल्यावस्थामां ज तेज वडे सूर्य समान, उद्यमी अने सावधान एवो **नागार्जुन** अद्‌भुत कळावाळा वृद्ध पुरुषोनो संग करवा लाग्यो. घणी कळाओ ग्रहण करवाथी पर्वतो अने नदीओ जेने घरना आंगणा जेवी अने दूर देशांतर जेने पाडोश जेवुं थई पड्युं. पर्वतोमां पेदा थती वनस्पतिनो अभ्यास करतां ते भारे रहस्यज्ञाता थयो अने सीसुं, कांसु, अने सुवर्णनो अभ्यासी थयो. रससिद्धि करनार औषधिओनो ते संग्रह करवा लाग्यो. हडताल (ताड)नुं सत्त्व, गंधकनुं चूर्ण, अभ्रक (अबरख) नो द्रव तथा पारानुं जारण मारण जाणवामां ते असाधारण नीवड्यो अने दुःस्थितिने छेदनार थयो. रससाधनमां निष्णात एवो **नागर्जुन** सहस्र लक्ष अने कोटिपुट रसायन बनाववामां ते निपुण बन्यो.

एवामां महीतल पर भ्रमण करतां एकदा **नागार्जुन** पोताना नगरमां आव्यो. त्यारे समस्त सिद्धिने जाणनार अने त्यां बिराजमान एवा **पादलिप्तसूरि** तेना जाणवामां आव्या. एटले पर्वतभूमिमां निवास करी पादलेपने ईच्छनार **नागार्जुने** पोताना शिष्य द्वारा ए आचार्यने ज्ञापन कर्युं त्यां तेना शिष्ये तृण केरलाना-'रत्नमय पात्रमां सिद्ध रस लावीने **श्रीपादलिप्तसूरि** गुरु आगळ धर्यो.'

एटले गुरु बोल्या—'ए सिद्धरसे मने आपवा माटे रस बनाव्यो! अहो! तेनो केटलोबधो स्नेह?' एम कहेतां ते जरा हस्या. पछी ते पात्र हाथमां लई भींते पछाडी तेमणे भांगीने भूको करी नाख्यो. ते जोतां आवेल पुरुष मुख वांकुं करीने खेद पाम्यो. त्यारे गुरुए तेने कह्युं के—'हे भद्र! तुं खेद न पाम. तने श्रावक पासेथी सारुं भोजन अपावीश; एम कही सन्मान पूर्वक तेने भोजन अपाव्युं. पछी ते जवा लाग्यो, त्यारे गुरुए ते रसवादीने एक काचपात्र मूत्रथी भरीने आप्युं. तेथी ते शिष्य विचारवा लाग्यो के—'मारो गुरु खरेखर मूर्ख लागे छे के आनी साथे स्नेह करवा ईच्छे छे.' एम चिंतवतो ते पोताना गुरु पासे आव्यो त्यां आवी अत्यंत विस्मयपूर्वक सत्य वृतांत निवेदन करतां तेणे जणाव्युं के—'आपनी साथे तेनी अद्‌भुत मैत्री छे.' एम कहेतां ते मूत्रनुं पात्र तेणे नागार्जुनने अर्पण कर्युं. एटले तेनुं मोढुं उघाडीने ते जेटलामां पोतानी दृष्टि आगळ तेणे धर्युं, तेवामां तेने क्षार मूत्रनी दुर्गंध

1. ढांकाना पुरावशेषो विषे जैन सत्य प्रकाश (क्र. ३७-३८)मां श्री हसमुखलाल सांकळियानो लेख प्रसिद्ध थयो छे.

आवी. तेथी ते समज्यो के—'अहो! एनी निर्लोभता के मूढता ठीक लागे छे.' एम धारी विषाद पामता **नागार्जुने** पण ते पात्र पत्थर पर भांगी नाख्युं. एवामां भोजन पकाववा माटे दैवयोगे शिष्ये त्यां अग्नि सळगाव्यो कारण **के सिद्ध पुरुषने पण क्षुधा सहन करवी दुर्लभ छे.** एवामां अग्निनो योग थतां मूत्रथी ते पत्थर सुवर्ण बनी गयुं, एटले ए **सुवर्णसिद्धि** जोतां ते शिष्य अंतरमां भारे आश्चर्य पाम्यो. पछी तेणे पोताना सिद्धगुरुने जणाव्युं के 'ते आचार्य पासे अद्‌भुत सिद्धि छे, के जेना मलमूत्रादिनो संग थतां पत्थर पण सुवर्णरूप थाय छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां सिद्ध नागार्जुन मनमां अतिशय आश्चर्य पामतां चिंतववा लाग्यो के—'सदा दरिद्रतामां रहेतां मारी सिद्धि शुं मात्र छे? चित्रावेली क्यां अने कृष्णमुंडी (एक जातनी वनस्पति) क्यां? शाकंभरी (दुर्गा)नुं लवण क्यां अने वज्रकंद क्यां? दूर देशमां रहेतां अने औषधो एकत्र करतां सर्वदा भिक्षाना भोजनथी मारो देह पण म्लान थई गयो छे अने ए आचार्य तो बाल्यावस्थाथी मांडीने लोकोमां पूजाया छे अने आकाशगामिनी विद्याथी साध्य साधतां ते सदा सुखी छे; वळी जेना देहमां रहेला मलमूत्रादिक, माटी अने पत्थर वगेरे द्रव्योना योगे सुवर्ण साधे छे, तेनी शी वात करवी?' एम धारी पोताना रस-उप रकण मूकीने **नागार्जुन पादलिप्त गुरु** पासे गयो अने मदरहित बनी, विनयथी मस्तक नमावी प्रणाम करीने ते कहेवा लाग्यो के—'हे नाथ! देहसिद्ध अने स्पृहाने जीतनार एवा आपने जोवाथी मारो सिद्धिनो ते गर्व सर्वथा गळी गयो छे. माटे सदाए हुं आपना चरण कमळमां संलग्न थवा ईच्छुं छुं. **मिष्टान्न प्राप्त थतां तुच्छ भोजन कोने भावे?'**

पछी प्रशांत बुद्धिथी **नागार्जुन आ. श्री पादलिप्तसूरिनी**, चरणक्षालनादिकथी निरंतर देहशुश्रूषा करवा लाग्यो. एवामां मुनिओ ज्यारे अन्यत्र जाय छे. त्यारे सूरि पूर्वे कहेल पांच तीर्थोपर आकाशमार्गे जई, त्यां भगवंतने वंदन करी एक मुहूर्तमां नियमपूर्वक ते पाछा आवे छे. कारण के कळियुगमां ते विद्याचारण समान लब्धिवाळा हता. ते तीर्थवंदन करीने आव्या, त्यारे औषधोने जाणवानी इच्छाथी निर्विकार नागार्जुने तेमना चरणनुं प्रक्षालन कर्युं. तेमां सुंघतां, विचारतां, जोतां, चाखतां अने स्पर्श करतां तेणे पोताना बुद्धिबळथी एकसो सात औषधिओ जाणी लीधी. पछी औषधोने मेळवी, घुंटी एक रस करीने तेना वती तेणे पोताने पगे लेप कर्यो अने आकाश तरफ उडवा मांड्युं. परंतु कूकडानी जेम उंचे उछळीने ते नीचे पडवा लाग्यो. एम ऊँचा भागथी नीचे पडतां तेना ढींचणने वाग्युं, एवामां रक्त व्याप्त व्रणथी वहेती तेनी जंघा आचार्य महाराजना जोवामां आवी. एटले गुरुए तेने कह्युं के—'अहो! गुरु विना पादलेप शुं सिद्ध थयो?'

त्यारे ते हसीने कहेवा लाग्यो—'गुरु विना सिद्धि न थाय, परंतु आ तो में मारा बुद्धिबळनी परीक्षा करी.'

आ तेना सत्यथी प्रसन्न थयेला **पादलिप्तसूरि** बोल्या के—'हे भद्रे! सांभळ, हुं तारी ए रससिद्धि के शुश्रूषाथी संतुष्ट थयो नथी, पण **तारा प्रज्ञाबळथी मने संतोष थयो छे,** कारण के पादप्रक्षालनथी वस्तुओना नाम कोण जाणी शके? माटे हुं तने विद्या आपीश, पण तुं मने गुरुदक्षिणामां शुं आपीश?'

त्यारे नागार्जुने कह्युं के—'हे भगवन्! आप जे फरमावो, ते आपवाने हुं तैयार छुं'.

एटले आचार्य बोल्या—'तुं विद्या सिद्ध थाय, तेथी मारा मनने संतोष छे. तने सत्य अने पथ्य हुं कहीश. माटे आ गाथा सांभळ—

दीहरफणिंदनाले, महिहरकेसर दिसाबहु दलिल्ले ।
ओपियइ कालभमरो, जणमयरंदं पुहइपउमे ।।१।।

अर्थात् - फणींद्ररूप लांबा नखवाळा, पर्वतरूप केसरा अने दिशारूप अनेक पत्रवाळा एवा जगतरूप पद्मपर मोह पामेल कालरूप भ्रमर मनुष्यरूप मकरंदनुं पान कर्या करे छे.'

माटे 'विश्वने हितकारी एवा जिनधर्मनो तुं आश्रय ले.'

गुरुना ए वचननो तेणे स्वीकार कर्यो. एटले आचार्य बोल्या—'कांजी अने चोखाना निर्मळ धोवण जळथी औषधो घुंटीने पगे लेप कर, के जेथी तुं आकाशगामी थाय.'

एम सांभळतां नागार्जुने ते प्रमाणे कर्युं अने तेथी गरुडनी जेम आकाशमार्गे उडीने ते यथेच्छ स्थाने जवा लाग्यो; पछी कृतज्ञ विद्यासिद्ध एवा तेणे शत्रुंजय पर्वतनी तळेटीमां जईने [1]**पादलिप्त** नामे नगर वसावीने पोताना गुरुना नाम उपरथी स्थापन कर्युं अने पर्वतनी उपर ते सिद्ध साहसिके वीर प्रभुनी प्रतिमाथी अधिष्ठित चैत्य कराव्युं, त्यां गुरुमूर्तिने स्थापन करी अने गुरुमहाराजने बोलावीने तेणे बीजां पण जिनबिंबोनी त्यां प्रतिष्ठा करावी. **आ. श्री पादलिप्तसूरि**ए वीरप्रभुनी समक्ष बे गाथाथी श्रेष्ठ स्तुति करी अने कह्युं के—'ए गाथाथी सुवर्णसिद्धि अने आकाशगामीनी विद्या अत्यंत गुप्त रहेशे, ते आजकालना निर्भागी मनुष्यो जाणी शकवाना नथी.'

पछी श्री रैवताचलनी नीचे दुर्ग पासे गुरुमहाराजना मुखथी श्री नेमिनाथनुं चरित्र सांभळीने **नागार्जुने** कौतुकथी सर्व तेवा प्रकारना आवासादिक कराव्या. तेमां श्री दशार्हमंडप, उग्रसेननुं राजभवन तथा वेदिकापर विवाहादिकनी व्यवस्था करावी के जे अत्यारे पण त्यां गयेल धार्मिक जनोना जोवामां आवे छे.

हवे **पृथ्वी प्रतिष्ठान** नगरमां **सातवाहन** नामे राजा के जे सार्वभौम समान अने गुणोना स्थानरूप हतो, तथा श्री **कालिकाचार्य**नो भाणेज अने यशस्वी एवो **बलमित्र** नामे राजा **भृगुकच्छ** नगरमां राज्य करतो हतो. एक वखते **सातवाहन** राजाए ए नगरने घेरो घाल्यो, तेमां बहार रहेतां बार वरस नीकळी गया; छतां तेनाथी ते नगर लेवायुं नहि एटले चिरकाळे पण ते दुर्ग (किल्लो) दुर्गाह्य समजीने ते कंटाळी गयो, एवामां **पादलिप्तसुरि**ना शिष्य एवा मंत्रीए जणाव्युं के—'अहो! भेदना प्रयोगथी हुं दुर्ग लेवडावीश, माटे मने नगरमां मोकलो.' त्यारे राजाए ए वात कबुल करतां मंत्री सैन्यमांथी चाली नीकळ्या अने भागवतनो वेष लईने नगरमां दाखल थयो. त्यां राजभवनमां जईने तेणे राजाने कह्युं के-'हे राजन्! जीर्ण देवमंदिरोनो उद्धार करावतां अने सत्कारपूर्वक महादान आपतां महापुण्य उपार्जन थाय छे तेथी आ दुर्गनिरोध निवृत्त थई जशे.'

एटले दुर्गरोधथी उद्विग्न बनेल राजाए तेनुं वचन सत्य समजीने ते प्रमाणे करवा मांड्युं, कारण के **आपत्तिकाळे धर्मोपदेश कार्य साधनार थाय छे;** पछी तेना धर्मोपदेशथी राजाए बहार गोळासहित यंत्रो रचाव्या अने धर्मस्थानो भांगवा मांड्यां. एम वारंवार भांगतां अने तैयार करतां बलमित्रनुं सर्व द्रव्य खलास थवा आव्युं, पछी मंत्रीनी सलाह प्रमाणे **सातवाहन** राजाए किल्लो लई लीधो अने राजानो निग्रह करीने ते प्रमोदपूर्वक पोताना नगरमां आव्यो.

ए प्रमाणे **सातवाहन** राजा पोतानुं राज्य चलावतो हतो, तेवामां एकदा तेना द्वारे शास्त्र संक्षेपथी बोलनारा चार कवि आव्या, एटले प्रतिहारे निवेदन करतां राजानी आज्ञाथी ते राजभवनमां आव्या अने श्लोकोनुं एक एक चरण लईने राजानी आगळ बोल्या के—

जीर्णे भोजनमात्रेयः कपिलः प्राणिनां दया ।
बृहस्पतिरविश्वासः पाञ्चालः स्त्रीषु मार्दवम् ।।१।।

अर्थात् – आत्रेय ऋषिए जीर्ण थया पछी भोजन करवानुं कहेल छे, कपिलऋषिए प्राणीओनी दया बतावेल छे,

बृहस्पतिए स्त्रीओनो विश्वास न करवानुं कहेल छे अने पांचाल कवीए स्त्रीओनी साथे मृदुता राखवानुं कहेल छे.

ए प्रमाणे सांभळतां प्रथम प्रशंसा करीने राजाए तेमने महादान आप्युं त्यारे तेमणे कह्युं के—'तमारो परिवार केम अमारी प्रशंसा करतो नथी?'

1. जे हाल पालीताणा नामथी प्रख्यात छे.

एटले राजाए **भोगवती** नामनी वारांगनाने कह्युं के—'हे भद्रे! तुं एमना वखाण कर.'

ते बोली—'**आ. पादलिप्तसूरि विना हुं बीजा कोईनी स्तुति करती नथी**, आकाशमार्गे गमन करवामां समर्थ, विद्यासिद्ध अने महाक्रियायुक्त एवा **आ. पादलिप्तसूरि** विना अन्य कोण एवा गुणोने धरावनार छे!'

एवामां संधि विग्रह करावनार **शंकर** नामे कोई मत्सरी (ईर्षालु) अने आ. पादलिप्तसूरिना वखाणने सहन न करनार राजपुरुष कहेवा लाग्यो के 'मरण पामेल जे जीवतो थाय, तेना प्रगट पांडित्यने अमे मानीए छीए. अन्य तो गगनमां चालनारा शुकपक्षीओ जेवा विद्वानो घणा पड्या छे.'

त्यारे भोगवती बोली—'ए कळा पण तेमनामां अवश्य संभवे छे, कारण के जैन महर्षिओ देवोनी जेम अतुल्य प्रभाववाळा होय छे.

ए कौतुक जोवानी खातर ज राजाए **कृष्ण** राजाने पूछावीने **आ. पादलिप्तसूरिने मानखेट** नगरथी त्यां बोलाव्या. एटले ते जैनाचार्य आव्या अने बहारना उद्यानमां उतर्या तेमना आगमनना समाचार विद्वान **बृहस्पति**ना जाणवामां आवतां तेणे तेमनी परीक्षा करवानो विचार कर्यो, पछी तेणे एक चालाक पुरुषने ओगळेल घृतथी रूपानी कटोरी भरीने मोकली. एटले तेणे आवीने ते आचार्यनी आगळ मूकी त्यारे सूरिए धारिणी विद्याना बळथी तेमां सोय भरावीने उभी राखी दीधी अने ते कटोरी आवेल पुरुष मारफते पाछी मोकलावी ते जोतां बृहस्पति भारे खेद पाम्यो.

पछी राजाए सन्मुख आवीने तेमनो प्रवेश महोत्सव कर्यो अने त्यां गुरु महाराजने उतरवा माटे तेणे एक सारुं मकान काढी आप्युं त्यां राजानी समक्ष **तरंगलोला** नामनी अभिनव कथा कहेवा लाग्या त्यां एक **पांचाल** नामे कवि हतो. गुरुनुं सन्मान जोईने तेने भारे अदेखाई आवी गई. तेणे आचार्यनी कथा वखाणी नहि, पण तेमां उलटुं दूषण बताव्युं, कारण के **गर्दभना मुखमांथी शांतिजळ कदि नीकळे शुं?** वळी प्रसंगोपात तेणे जणाव्युं के--'मारा ग्रंथोमांथी अर्थबिंदु चोरीने एणे कथा नहि, पण कंथा (गोदडी) रची छे कारण के एनुं वचन सदा बाळ, गोपाळ अने अंगनाओने आनंद आपे तेवुं छे. ते प्राकृत (सामान्य) वचन विद्वानोना चित्तने रमाडे तेवुं नथी तेवाने उचित एवी तेनी कथाने भोगवती बराबर वर्णवी बतावे छे.

हवे एकदा **आ. पादलिप्तसूरि**ए कपटथी पोतानुं मरण बताव्युं, एटले हा हा ना पोकार पूर्वक घणा लोको त्यां भेगा थया अने शिबिकामां गुरुना शरीरने पधरावी वाजिंत्रोना नाद साथे वहन करता, ते जेटलामां **पांचाल** कविना भवन पासे आव्या, तेवामां घर थकी बहार नीकळीने ते भारे शोक बतावतो कहेवा लाग्यो के—'हा! हा! महासिद्धिना पात्र एवा आचार्य स्वर्गे चाल्या गया. सत्पात्रमां अदेखाई लावनार अने दृष्टिने रक्त करनार मारा जेवाने ए पापथी मुक्ति मळे तेम नथी कारण के रत्नाकरनी जेम सर्व शास्त्रोना निधान ए आचार्यना गुणोथी, मत्सर लावनार अमे संतोष पामता नथी वळी पोतानो पश्चात्ताप प्रगट करतां तेणे जणाव्युं के—

सीसं कहवि न फुट्टं, जमस्स पालित्तयं हरंतस्स ।
जस्स मुहनिज्झराओ, तरंगलोला नई वूढा ।।१।।

अर्थात् - पादलिप्तसूरिनुं हरण करनार एवा यमनुं मस्तक केम फुटी न पडयुं के जेना मुखरूप झिरणाथी तरंगलोला (कथा) रूप नदी प्रगट थई.

एवामां 'पांचालना सत्य वचनथी हुं जीवतो थयो' एम बोलता आचार्य लोकोना हर्षनाद साथे उभा थया. पछी गुणवंतपर मत्सर लावनार एवा पांचालने, राजाना हुकमथी आक्रोश अने तिरस्कार पूर्वक लोकोए नगर बहार काढ्यो, त्यारे बंधु समान सुंदर स्नेह धरावनार अने महाविद्या छतां मदरहित एवा **आ. श्री पादलिप्त गुरु**ए सन्मानपूर्वक तेने पाछो बोलाव्यो.

हवे श्रावको अने मुनिओनी दीक्षानी साथे देवताओनी अने जिनबिंबोनी प्रतिष्ठा तथा उत्थापना छे, माटे शास्त्रोक्त विधि जाणीने आचार्ये ए काम करवुं जोईए. त्यां आ. पादलिप्ताचार्ये कृपाने वश थई **निर्वाण कलिका** शास्त्र बनाव्युं, तथा **प्रश्नप्रकाश** नामे ज्योतिःशास्त्र रच्युं कारण के लाभालाभादिक प्रश्नोमां सिद्धनो आदेश प्रवर्ते छे.

एक वखत पोतानुं आयुष्य पूर्ण थवानुं जाणीने **नागार्जुन**नी साथे **आ. श्री पादलिप्त गुरु** विमलाचल पर आव्या अने त्यां तेमणे श्री युगादीशने वंदन कर्युं, पछी सम संवेगना निधान एवा ते सिद्धक्षेत्रना शिखरपर सिद्धशिला समान एक श्रेष्ठ शिला आगळ गया. त्यां आदर पूर्वक अनशन आदरी, आसन लगावी चंद्रमा समान निर्मळ धर्मध्यानरूप जळथी रागादिक अग्निने शमावतां; तेजस्वी अने राजाओने माननीय एवा श्री पादलिप्तसूरि मन, वचन अने कायानी चेष्टाओने सर्व प्रकारे अटकावी, ध्यानथी पोताना अंतःकरणनी स्थितिने स्थिर अने समान करी, बत्रीस दिवस सुधी मनने ध्यानलीन राखी, जीर्ण झुंपडी समान देहनो त्याग करीने, तेजस्वी अने राजाओने माननीय एवा **श्री पादलिप्तसूरि** बीजा देवलोकमां इंद्र-सामानिक देवता थया.

आ चरित्रनी अंदर **योनिप्राभृत**शास्त्रमां प्रवीण एवा **श्री रुद्रदेवसूरि**, निमित्त विद्यानमां प्रवीण **श्रीश्रमणसिंहसूरि**, विद्यासिद्ध **श्री आर्य खपुटाचार्य** तथा अतिशय प्रसिद्ध अने सिद्धोपाध्याय **श्री महेंद्रऋषि** आ चार असाधारण विद्यासिद्धि ऋषिओना चरित्र ते **श्री पादलिप्तसूरि**ना चरित्र साथे में वर्णव्या. अहीं अज्ञानथी जे कंई शेष चरित्र रही गयुं होय, ते चरित्रज्ञाता पुरुषो क्षमा करो.

आ. श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरमां हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना विचार पर लेतां अने श्री **प्रद्युम्नमुनींद्रे** सुधारीने शुद्ध करेल, पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे आ. श्री **पादलिप्तसूरि**ना चरित्ररूप आ पांचमुं शिखर थयुं.

पूर्व महर्षिओना चरित्ररूप क्षेत्रमां चरवा (संचरवा) थी अत्यंत तृप्त थतां मस्त थयेल अने तेथी कुपंथे गमन करती मारी वाणीरूप गायने **आ. श्री प्रद्युम्नसूरि** रूप गोवाळे अटकावीने वश राखी.

इति श्री पादलिप्तसूरि-प्रबंध[1]

जीवन मानव का मिलना अतीव कठीन, उस से भी मानवता के भाव अतीव कठीन, मानवता से भी संसार की असारता समझनी अतीव कठीन, संसार की असारता समझ में आ जाने पर भी उसे छोड़ना अत्यंत कठीन, संसार छोड़ भी दे, दीक्षा ले भी ले, तो भी उसकी प्रतिपालना सब से कठीन है ।

जयानंद

1. आ. श्री पादलिप्तसूरि रचित 'सुवर्ण सिद्धिगर्भ महावीर जिनस्तवन' जगत्यसुंदरी प्रयोग माला महावीर ग्रंथमाला नं. १०मां प्रसिद्ध थई छे. (गवर्नमेंट क्लेक्शन ओफ मेन्युस्क्रीप्ट भांडारकर रीसर्च वोल्युम XIX भा. २ पृ. १८२

६. श्री विजयसिंहसूरि-प्रबंध

दर्शनमात्रथी संतुष्ट थयेल अंबादेवीए जेमने गुटिका आपी हती. एवा गुटिकासिद्ध **श्री विजयसिंहसूरि**नुं चरित्र वचनमां पण शी रीते आवी शके? वृद्ध अने पंडितोना वचन सांभळतां तेने बराबर स्मृतिमां राखवा सावधान एवो हुं अष्ट महासिद्धिना निधान एवा ते सूरिनुं किंचित् चरित्र कहीश.

रेवानदीना किनारापर **अश्वावबोध** नामे तीर्थ जयवंत वर्ते छे. त्यां ए गुरु विराजमान हता एटले प्रथम ए तीर्थनो वृत्तान्त कहेवामां आवे छे.

पूर्वे मेरुपर्वतना शिखर समान उन्नत किल्लाथी सुशोभीत अने समस्त नगरोना मुगट तुल्य एवुं **श्रीपुर** नामे नगर हतुं. तेना बाह्य उद्यानमां बीजा तीर्थंकर श्रीमान् **अजितस्वामी** समोसर्या. त्यारथी प्रथम ते **तीर्थ** तरीके प्रसिद्ध थयुं. पछी पुष्कळ काळ व्यतित थतां **श्री चंद्रप्रभ** स्वामी त्यां पधार्या. एटले ते **उद्यान** एवा नामथी विख्यात थयुं. फरी ते क्षीण थई गयुं. एवामां **भृगु** नामना महर्षिए तेनो उद्धार कर्यो, तेथी **भृगुपुर** एवा नामथी ते प्रख्यात थयुं. त्यां शत्रुरूप पतंगगणने दीपक समान अने कलिकाळथी कलुषित तामस भावने दूर करवामां प्रवीण एवो **जितशत्रु** नामे एक समर्थ राजा थयो के जेनी कीर्तिरूप वंशनटी, त्रण जगतरूप सभ्यो आगळ, चंद्रकांतमणिना किरणरूप रज्जुना विस्तारयुक्त एवा मेरू गिरींद्ररूपी वांसपर नृत्य करती हती.

एकदा ब्राह्मणोना आदेशथी ते **जितशत्रु** राजाए त्रण ओछा पांचसो सताणुं (५९७) बकरा यज्ञमां होम्या. अंतिम दिवसे ते ब्राह्मणो एक सारा (पट्ट) अश्वने होमवा माटे लई आव्या. त्यां रेवा नदीना दर्शनथी ते अश्वने पूर्व भवनुं स्मरण थयुं.

एवामां ते अश्वने पोतानो पूर्वभवनो मित्र जाणी श्री **मुनिसुव्रत** स्वामी एक रात्रिमां एकसोवीस गव्युति[1] ओळंगी, मार्गे **सिद्धपुर**मां क्षणभर विश्रांति लई, **प्रतिष्ठान** नामना नगरथी **भृगुपुर**मां पधार्या अने त्रीस हजार मुनिओथी परवरेला प्रभु **कोरिंटक** नामना बाह्य उद्यानमां एक आम्रवृक्ष नीचे समोसर्या. तेमने सर्वज्ञ समजीने पेला अश्व सहित राजा त्यां आव्यो अने तेणे यज्ञनुं फळ पूछ्युं. एटले भगवंत बोल्या—'हे राजन्! प्राणिवधथी नरकनुं फळ प्राप्त थाय छे.' एवामां भगवंतना दर्शनथी अश्वना लोचनमां आंसु आवी गयां त्यारे जिनेश्वरे राजा समक्ष तेने बोध आपतां जणाव्युं के—''हे अश्व! तारो पूर्वभव सांभळ अने हे सुज्ञ! सावधान थईने प्रतिबोध पाम.

पूर्वे आ नगरमां **समुद्रदत्त** नामे जैन वणिक हतो. तेने **सागरपोत** नामे मित्र के जे मिथ्यादृष्टि हतो. **समुद्रदत्ते** तेने जीवदया प्रधान जिनधर्मनो प्रतिबोध आप्यो. जेथी ते बार व्रतधारी बनी हळवे हळवे सुकृतनुं भाजन थयो. एक वखते पूर्वकर्मना योगे तेने क्षय रोग थयो, त्यारे तेना संबंधीओ कहेवा लाग्या के—'पोताना धर्मनो त्याग करवाथी एने क्षयरोग थयो छे.' एम सांभळतां व्याधिग्रस्त थयेल **सागर** पोताना धर्मभावमां हानि थवा लागी. अथवा **तो पोताना स्वजनोना मीठां वचनोथी कोण न लोभाय?**

एकदा **उत्तरायण** पर्वमां लिंगमहोत्सव थतां अतिथि ब्राह्मणो माटे पुष्कळ घृत लई जवामां आवतुं हतुं अने ते वखते घणा घृतबिंदुओ मार्गमां नाखी देवामां आव्या हता. तेने लागेली धीमेलो नोकरोना पग नीचे

1. अन्य स्थळे ६० योजनना विहारनुं कथन छे. ते आ प्रमाणे गव्युति=२ गाउ, ४ गाउ=१ योजन. विविध तीर्थ कल्प (पृ. २०) वगेरेमां पण ६० योजन एक रात्रिमां आव्यानो उल्लेख छे.

कमडाती जोई पाछा वळेल दयाळु सागरपोते ते धर्मनी निंदा करी, जेथी निर्दय ब्राह्मणोए लाकडी अने मुष्टिवती तेने मार्यो अने सेवकोए प्रहारोथी तेने छुंदी नाख्यो. पछी दया लावीने तेने जवा दीधो. त्यां आर्त्तध्यानथी मरण पामी, सेंकडो तिर्यंचना भवमां भमीने तुं अश्व थयो. अहो! हवे मारो पूर्वभव सांभळ-

''पूर्वे **चंद्रपुर**मां बोधिबीज (सम्यक्त्व)नी प्राप्ति पछी सातमे भवे हुं **श्री वर्मा** नामे विख्यात राजा थयो. ते भव आ प्रमाणे समजवा-प्रथम **शिवकेतु**, बीजो **सौधर्म** देवलोकमां, त्रीजो **कुबेरदत्त**, चोथो **सनत्कुमार**मां, पांचमो **श्री वज्रकुंडल**, छट्ठो **ब्रह्म** देवलोकमां, सातमो **श्री वर्मा**, आठमो **प्राणत देवालोके** अने नवमो आ तीर्थंकरनो भव-एम संक्षेपथी भव बताव्या.

हवे **समुद्रदत्त**, व्यवहारी भृगुपुरथी घणा करीयाणाथी वहाण भरीने समस्त लक्ष्मीना स्थानरूप एवा **चंद्रपुर**मां आव्यो. त्यां घणां कींमती भेटणाथी तेणे राजाने संतुष्ट कर्यो अने राजाए पण दान तथा सन्मानथी तेने प्रसन्न कर्यो. पछी राजानो प्रसाद वधवाथी अने साधु जनोने आदर अपवाथी जिन धर्म पर तेनो अनुराग वधवा लाग्यो अने तेथी राजाने पण जिनधर्मनो बोध थयो. वळी त्यां आवेल तेना मित्र **सागरपोत**नी साथे पण समान बोधने लीधे राजानी मित्रता थई. पछी प्रांते समाधिपूवर्क मरण पामतां **श्री वर्मा** राजा प्राणत देवलोकमां देव थयो. त्यांथी चवीने ते हुं भरतक्षेत्रमां तीर्थंकर थयो छुं.''

ए प्रमाणे भगवंतना मुखथी कर्मकथा सांभळतां राजाए अश्वने अनुमति आपतां तेणे सात दिवसनुं अनशन कर्युं अने समाधिथी मरण पामीने ते सहस्रार देवलोकमां सत्तर सागरोपमना आयुष्यवाळो इंद्रनो सामानिक देव थयो. त्यां दिव्य सुखो भोगवतां अवधिज्ञानथी तेणे पूर्वभवनुं स्मरण कर्युं अने भृगुपुरमां साडी बार कोटी सुवर्णनी वृष्टि करी. वळी राजा अने नगरजनोने जिनधर्मनो प्रतिबोध पमाड्यो, तथा ते वखते सुकृतशाळी एवा तेणे माह महिनानी पूर्णिमाए सुवर्ण-रत्नमय श्री मुनिसुव्रत स्वामीना चैत्यनी स्थापना करी.

माघनी शुक्ल प्रतिपदाना दिवसे भगवंत अश्वरत्नने बोध करवा आव्या अने ते ज महिनानी शुक्ल अष्टमीए अश्व देवलोके गयो.

ए प्रमाणे **नर्मदा**ना तटपर भृगुकच्छ नगरमां समस्त तीर्थोमां श्रेष्ठ एवुं ए **अश्वावबोध** नामे पवित्र तीर्थ प्रवर्त्तमान थयुं. पछी **श्री मुनिसुव्रत स्वामी**थी बार हजार ने बार वरस व्यतीत थतां **पद्म** चक्रवर्तीए एनो उद्धार कर्यो अने **हरिषेण** चक्रवर्तीए फरी ए तीर्थनो दशमो उद्धार कराव्यो. ए रीते पांच लाख ने अगियार वर्ष व्यतीत थया. छन्नु हजार वरसमां एना एक सो उद्धार थया. ते पछी सुदर्शनाए उद्धार कराव्यो. तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे छे—

वैताढ्य पर्वत पर **रथनुपुर चक्रवाल** नामना नगरमां **विजयरथ** नामे राजा हतो तेनी **विजयमाला** नामे राणी हती. तेमनी **विजया** नामे पुत्री हती. ते तीर्थोने वंदन करवा चाली, तेवामां आगळ थईने उतरतो एक सर्प तेणीना जोवामां आव्यो एटले साथे आवनारा पायदळ सैनिको **अपशुकन** समजीने ते सर्पने मारवा लाग्या, ए जीव वधने न अटकावतां विजयाए तेनी उपेक्षा करी. पछी श्री शांतिनाथ-तीर्थमां जईने तेणे भावथी भगवंतने वंदन कर्युं. त्यां यतनामां एक निष्ठ चारित्रवाळी **विद्याचारण** साध्वी हती. तेने वंदन करीने विजया, जीववधनी पोते उपेक्षा करी, तेथी पश्चात्ताप करवा लागी, जेथी तेणे कंईक ते कर्मने क्षीण कर्युं. पछी प्रांते पोताना जीवित गृह, धनना मोहथी आर्त्तध्यानमां ते मरण पामीने शकुनि (समळी) थई अने ते सर्प मरण पामीने शिकारी थयो.

एकदा भादरवा महिनामां घणा दिवसे वरसाद उपशांत थतां वटवृक्ष पर रहेल ते शमळी क्षुधित थई, एटले पोताना सात बच्चां अने पोताने माटे खोराकने शोधतां ते शिकारीना घरे गई अने त्यांथी तेणे एक मांसनो कटको चांचमां उपाड्यो, पछी उडीने आकाशमां जतां तेने शिकारीए बाण छोडीने घायल करी, त्यारे ते श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना चैत्य आगळ पडी अने लगभग मरवानी अणीपर आवी. एवामां तेणीना पुण्ययोगे त्यां **भानु**

अने **भूषण** नामना बे साधु आवी चड्या. **तेमणे दया लावी जळसिंचनथी तेने आश्वासन आप्युं** अने पंचपरमेष्ठीरूप मंत्र संभळाव्यो, एटले ते तीर्थना ध्यानमां लीन थयेल शमळी बे पहोरमां मरण पामी.

हवे सागरना किनारा पर दक्षिण खंडमां **सिंहल** नामे द्वीप छे. त्यां कामदेव समान रूपवान **चंद्रशेखर** नामे राजा राज्य करतो हतो. रूपमां रति अने प्रीतिने जीतनार एवी **चंद्रकांता** नामे तेनी राणी हती. शकुनि तेमनी **सुदर्शना** नामे पुत्री थई.

एवामां एकदा भृगुपुरथी वहाण लईने **जिनदास** नामे सार्थवाह त्यां आव्यो तेणे भेट धरीने राजाने संतुष्ट कर्यो. ते वखते कोई वैद्यराजे सुंठ, मरी अने पीपरनुं तीव्र चूर्ण राजाने आप्युं, तेमांथी सहेज चूर्ण उड्युं. एटले ते नाकमां जतां वणिकने बलात्कारथी छींक आवी, त्यारे तेणे प्रभाव पूर्ण एवा **पंचपरमेष्ठी मंत्र**नो उच्चार कर्यो. जे सांभळतां राजपुत्रीने मूर्च्छा आवी अने तेने पूर्वजन्मनुं स्मरण थयुं. आथी राजाए पूछतां तेणे पोताना पूर्वजन्मनो वृत्तान्त पिताने कही संभळाव्यो. पछी ते तीर्थने वंदन करवाने उत्कंठित थयेल राजपुत्रीए अत्याग्रहथी पितानी अनुज्ञा मांगी, छतां राजाए तेने जवानी अनुमति न आपी. तेथी तेणे अनशन करवानी प्रतिज्ञा लीधी. एटले अतिवल्लभ छतां तेणे पोतानी पुत्रीने **जिनदास** सार्थवाहनी साथे जवानी अनुज्ञा आपी त्यारे अढार सखीओ, सोळ हजार पदातिओ, मणि, कंचन, रजत अने मोतीओथी भरेला अढार वाहन, आठ कंचुकी तथा अंग रक्षको-ए बधो परिवार साथे लईने ते सत्वर चाली नीकळी अने उपवास करतां एक महिने राजसुता ते तीर्थमां आवी त्यां **श्री मुनिसुव्रत** स्वामीने वंदन करीने तेणे ओच्छव कर्यो अने भाग्यवंतमां मुगटमणि समान एवी तेणे **भानु** तथा **भूषण** मुनिने वंदन करी पछी कृतज्ञपणाथी साथे लावेल बधुं धन तेणे ते मुनिओ आगळ धरी दीधुं एटले निःसंगपणाथी अने भवविरक्तपणाथी तेमणे तेनो निषेध कर्यो, त्यारे कनक अने रत्नना दळथी तेणे ते जीर्ण तीर्थनो उद्धार कर्यो, त्यारथी ते तीर्थ **शकुनिकाविहार** एवा नामथी प्रसिद्ध थयुं. पछी बार वरस दुस्तप तप तपी प्रांते अनशन लई मरण पामीने ते **सुदर्शना** नामे देवी थई. एक लाख देवीओना परिवार सहित रहेतां विद्यादेवीओ साथे तेनी मित्राई थई. वळी पूर्व भवने यांद करीने ते दिव्य पुष्पोथी जिनेश्वरनी पूजा करवा लागी. ए नगरमां तेणीनी अढार सखीओ देवीपणाने पामी अने जंबूद्वीप समान विशाळ भुवनमां ते रहेवा लागी. वळी श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना चरण-कमळमां एकतान थयेल सुदर्शना देवी, **महाविदेह**, नंदीश्वरादिक तीर्थोमां जिनप्रतिमाने सदा वंदन करवा लागी.

एक दिवस श्री वीरप्रभुनी समक्ष ते देवीए उत्तम नाटक कर्युं. ते जोईने **श्री सुधर्मास्वामी**ए भगवंतने पूछ्युं के-'हे भगवन्! आ शुं?' त्यारे सर्वज्ञ प्रभुए तेनी आगळ ते देवीना पूर्व भवनो बधो वृत्तान्त कही संभळाव्यो. अने पुनः जणाव्युं के—'आ भवथी त्रीजे भवे ए निर्वाणपदने पामशे. वळी अत्यंत सुगंधि पुष्पो अने फळोथी सुरम्य अने ईतर नगरोने जीतनार एवुं आ **भृगुपर** नगर एना सामार्थ्यथी अभंग रहेल छे.'

हवे प्रतिदिन जिनपूजा माटे समस्त पुष्पोने वीणी लेतां ते देवी लोकोमां ईतर देवना पूजनमां संतापकारी विघ्न करवा लागी एटले श्री संघनी प्रार्थनाथी **श्री आर्यसुहस्तिसूरि**ना शिष्य श्रीमान् **कलहंससूरि**ए तेने स्तंभीने तेम करतां अटकावी.

पछी **संप्रति** राजाए ए तीर्थना चैत्यनो पुनः जीर्णोद्धार कराव्यो त्यां मिथ्यादृष्टि व्यंतरो उपसर्ग करवा लाग्या. एटले **श्री गुणसुंदरसूरि**ना शिष्य **कालिकाचार्ये** पोताना विद्या बळथी ते व्यंतरोने पचीस योजन दूर कर्या; त्यारबाद श्री **सिद्धसेनदिवाकर** सूरिथी प्रतिबोध पामीने **विक्रमादित्य** राजाए ए तीर्थनो उद्धार कराव्यो.

पूर्वे श्री कालिकाचार्यए सुदर्शना पासे जे प्रतिमा करावी हती, आकाशमां जती ते प्रतिमाने **सिद्धसेनसूरि**ए अटकावी.

श्रीवीर भगवंत निर्वाण पाम्या पछी चारसो चोराशी वर्षे **श्रीमान् आर्य खपुटाचार्य** थया. ते वखते तेमणे

मिथ्यादृष्टि देवताओ थकी तथा बौद्ध मतना वादीओ थकी अहीं श्री मुनिसुव्रत स्वामीना तीर्थनुं रक्षण कर्युं. श्री वर्धमान स्वामीना निर्वाण पछी आठसो पीस्ताळीश वर्ष जतां तुर्की राजाओए **वल्लभीपुर**नो भंग कर्यो अने त्यांथी भृगुपुरनो विनाश करवा आवता तेमने **सुदर्शना** देवीए अटकाव्या. श्री वीरनिर्वाणथी आठसो चोराशीवर्ष जतां ते **मल्लवादीसूरि**ए बौद्धो अने व्यंतरोने परास्त कर्या. **श्री सातवाहन** राजाए ए तीर्थनो पुनरुद्धार कराव्यो अने **श्री पादलिप्तसूरि** पासे तेणे त्यां ध्वज-प्रतिष्ठा करावी. तेमनी आगळ प्रत्यक्ष थई, श्री मुनिसुव्रत स्वामी प्रत्ये असाधारण भक्तिने लई दिव्य शृंगारने धारण करती **सुदर्शना** देवीए नाटक कर्युं.

श्री आर्य खपुटाचार्यना वंशमां **श्री विजयसिंहसूरि** थया के जे शम, दम, नियम, तपस्यारूप लक्ष्मीने निवास करवाना कमळ समान हता.

एकदा संयमनो उद्धार करनार एवा ते आचार्य महाराजे, **शत्रुंजय, रैवताचल** प्रमुख मुख्य तीर्थोना जिनेश्वरोने वंदन करवानी इच्छाथी विहार कर्यो. तेओ **सौराष्ट्र**मां आव्या अने तीर्थस्वामीना ध्यानमां मनने लीन बनावीने हळवे-हळवे **रैवताचल** तीर्थपर चडवा लाग्या. श्री नेमिनाथना ए तीर्थनी रक्षा करवामां सदा सावधान एवी **अंबा** नामे देवी हती. एटले प्रसंगोपात तेनुं चरित्र कहेवामां आवे छे—

काश्यप मुनिए स्थापन करेल एवा **कासह्रद** नामना नगरमां समस्त वसुधामां देव समान तथा चार वेदनो पारंगामी एवो **सर्वदेव** नामे एक ब्राह्मण हतो. सतीओमां रत्न समान एवी **सत्यदेवी** नामे तेनी पत्नी हती. तेमनी **अंबादेवी** नामे पुत्री के जे सुकृतशाळी जनोमां मुगट समान हती. ते यौवनावस्था पामतां **सोमभट्ट** नामे **कोटीनगरी**ना रहेवासी विप्रने वरी के जे कुळ, शील (सदाचार) अने रूपथी रमणीय हतो. पछी रमणीओमां अभिराम एवी **अंबादेवी**ने परणीने ते पोताना नगरमां आव्यो अने अंतरमां संतुष्ट थयेल तेणे महोत्सवपूर्वक पोताना घरमां प्रवेश कर्यो, त्यां सांसारिक सुख भोगवतां निर्दोष एवी अंबादेवीने केटलाक काल पछी **विभाकर** अने **शुभंकर** नामे बे पुत्रो थया.

एकदा श्री नेमिनाथ प्रभुना शिष्य **श्री सुधर्मसूरि**नी आज्ञा लईने निर्मळ चारित्रधारी एवा बे मुनि भिक्षाने माटे **अंबादेवी**ना आंगणे आव्या एटले भावनायुक्त निर्मल मनथी हर्षपूर्वक तेणे मुनिने विधिसहित समस्त शुद्ध आहार वहोराव्यो, पछी प्रणाम करीने बंने साधुने तेणे विसर्जन कर्या. एवामां **सोमभट्ट** तेनो पति आव्यो अने आक्रोशपूवर्क कहेवा लाग्यो के--'विश्वदेवमहादेव संबंधी क्रिया कर्या विना तें रसवतीनो केम स्पर्श कर्यो?' ए अपराधने लईने तेणे दुर्वचन कहेवामां बाकी न राखी, एटलुं ज नहि पण लेश पण मुखविकार न बतावती अंबादेवीने तेणे लपडाकवती खुब मारी, एवामां घरना माणसोए अनुकंपाथी तेने छोडावी; ए अपमानथी मनमां खेद पामतां ते पोताना बंने पुत्रोने लईने घरथकी बहार चाली नीकळी; एक नाना बाळकने तेणे केडपर उपाड्यो अने मोटाने आंगळीए चलावतां ते विचार करवा लागी के—'जैन मुनिने दान आपवाथी हुं आवा पराभवने पामी माटे जैन विधिथी निर्मल एवो ते ज मार्ग मने शरणरूप थाओ.' एम धारी मानमां आवी गयेल अंबादेवी त्वरित पगले रैवताचल तीर्थ भणी चाली. पछी गिरिराज पासे आवतां ते चिंतववा लागी के—'अहो! हुं तृषातुर क्षुधातुर अने श्रमित छुं अने पर्वत तो बहु उन्नत छे.' एम धारी सुकृतनी भावनाथी तेणे तीर्थपर आरोहण कर्युं अने त्यां जईने **श्री अरिष्टनेमि**ने भक्तिपूर्वक वंदना करी, पछी चैत्यथकी बहार आवी ते आम्रवृक्ष नीचे विसामो लेवा बेठी एवामां क्षुधातुर थयेल बाळके पाकेल आम्रफळनी लुंब मागी एटले तेणे ते बाळकने आपी, श्री नेमिनाथनुं स्मरण करीने पुत्रो सहित ते शिखर परथी झंपापात कर्यो, त्यारे श्री नेमिनाथना स्मरणयोगे ते दिव्य ऋद्धिने पामी अर्थात् देवी थई.

अहीं अंबादेवी गया पछी विप्रनो कोप उतरी गयो अने ते पश्चात्ताप करवा लाग्यो. त्यां घरमां कोईने पण

जणाव्या विना ते तेनी पाछळ-पाछळ चाली नीकळ्यो. जतां जतां ते रैवताचलपर आम्रवृक्ष पासे आव्यो त्यां त्रणेने मरण पामेल जोईने पोतानी नासिका मरडतां अने पोताना प्रत्ये आंगळी करतां ते चिंतववा लाग्यो के—'हत्याना दोषथी लिप्त थयेल हुं हवे केम जीवतो रहुं? माटे भगवंतना चरणथी पवित्र थयेल आ पर्वत पर ज मरण पामवुं उचित छे. जे एमनी गति ते ज मारी गति थाओ. अहीं वधारे प्रलाप करवाथी शुं?' एम धारीने ते एक भयानक कुंडमां पड्यो. एटले व्यंतर थईने ते देवीना वाहनरूप सिंहपणाने पाम्यो. ते अंबादेवी अद्यापि ए गिरिपर श्रीनेमिनाथना तीर्थमां भक्त जनोने सहाय करे छे.[1]

हवे **श्री विजयसिंहसूरि** त्यां तीर्थनाथने अष्टांगे प्रणाम करी तीर्थोपवासपूर्वक भगवंतनी स्तुति करवा लाग्या. एटले अनुपम चारित्रना निधानरूप ते गुरु महाराजने जोतां अंबिकादेवीए रात्रे प्रगट थईने तेमना चरणमां नमस्कार कर्या त्यारे गुरु कहेवा लाग्या के—'हे अंबा! तुं पूर्व भवमां द्विज पत्नी हती. त्यां पतिथी पराभव पामतां, जिनेश्वरना चरण-कमळनुं स्मरण करीने देवी थई. एटले तारी पाछळ तारा पतिनी पण ते ज दशा थई.'

ए प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळतां ते हर्षित थईने कहेवा लागी के—'हे भगवन्! मने कंईक आज्ञा करो.'

त्यारे गुरु बोल्या—'हे भद्रे! अमारे निःस्पृहने शुं काम होय?'

एटले तेमना निःस्पृहपणाथी अधिक संतुष्ट थयेल ते बहुमानथी कहेवा लागी के—'हे विभो! चिंतित कार्यने करनार एवी आ गुटिकाने तमे ग्रहण करो एने मुखमां धारण करतां मनुष्य, दृष्टिने अगोचर, आकाशगामी, रूपांतर करनार, कवितानी लब्धि पामनार, विषग्रस्तने विषरहित करनार बंधायेलाने मुक्त करनार तथा पोतानी इच्छानुसार अवश्य गुरु-लघुताने पामनार बनी शके छे अने तेने मुख थकी बहार काढतां ते सहज रूपमां आवी जाय छे.' एम सांभळी ते गुटिका लेवानी इच्छा न होवा छतां देवी ते गुटिका गुरुना हाथमां मूकीने अदृश्य थई गई. एटले गुटिका मुखमां राखतां गुरु महाराजे प्रथम—

''नेमिः समाहितधियां'' ईत्यादि अमरवाक्य समान काव्योथी श्री नेमिनाथनुं स्तवन रच्युं. ए श्री नेमिस्तुति अद्यापि विद्यमान छे. पछी श्री आचार्य महाराज तीर्थयात्रा करीने भृगुपुर नगरमां आव्या. एटले श्री संघे प्रवेश-महोत्सवथी तेमनुं बहुमान कर्युं.

हवे एकदा **अंकुलेश्वर** नगरथी प्रबळ पवनना योगे बळतो एक उंचो वांस ते नगरमां उडी आव्यो, तेथी मर्यादा रहित सागरनी जेम ज्वाळाओथी व्याप्त एवो अग्नि; गृह, बजार, हवेली अने चैत्योमां प्रसरवा लाग्यो. प्रथम कोळीयामां तेणे काष्ठ अने घासना बनावेला घरोनुं भक्षण कर्युं अने पछी मध्य आहारमां तेणे मजबूत अने विशाळ मकानोने भक्ष्य बनाव्यां. ते वखते बळतां मनुष्य, पशु अने पक्षीओना आक्रंद वडे भयंकर अने शरदऋतुना गर्जारव समान, तथा आकाशने बधिर बनावनार एवो पवन प्रगट थयो. ते अग्निए समस्त नगरने बाळीने भस्मीभूत कर्युं, तेमज दुर्गना द्वारयंत्र सहित नगरना गोपुर (मुख्य द्वार) नो पण नाश कर्यो. ते वखते प्रतीकारथी असाध्य एवो ते उपसर्ग दैवयोगे शांत थतां **श्रीमुनिसुव्रत स्वामी**नुं काष्ठमय चैत्य भस्म थई गयुं. तेमां पाषाण अने पीतळनी जे देव प्रतिमाओ हती, ते बधी सर्वांगे जीर्ण जेवी थई गई, पण मुनिसुव्रत प्रभुनुं एक बिंब बराबर तेवुं ने तेवुं ज रमणीय रह्युं. रणभूमिमां सुभटोनुं मर्दन करनार वीर पुरुष जेम धैर्यथी स्थिर थई उभो रहे तेम विश्वना प्रकाशरूप **ए प्रतिमाना पृथ्वी तत्त्वो कांई निराळा ज हता के जेथी तेने अग्निदाहनी असर न थई.**

पछी **श्री विजयसिंहसूरि** गुटिकाने पोताना मुखमां धारण करी, हस्तमां सत्पात्र लईने तीर्थोद्धारने माटे भिक्षा मागवा नीकळ्या. प्रथम ब्राह्मणोना घरे धर्मलाभ आपतां तेमणे श्री मुनिसुव्रत स्वामीना चैत्यनो उद्धार करवा

1. अन्य स्थळे आ कथा बीजा स्वरूपे वर्णवायेल छे.

भिक्षा मागी. एटले कोई पचास सोनामहोर, कोई सो अने कोई बसो सोनामहोर ते महर्षिने आपवा लाग्या. तेथी ते वखते पांच हजार सोनामहोर एकठी थई. अष्ट महासिद्धिने धारण करनार एवा तेमने धननी प्राप्ति कंई असाध्य न हती, परंतु चारित्र-धननी रक्षा करतां तेमने अदत्त लेवानुं न हतुं. पछी वर्द्धकि रत्न वडे चक्रवर्तीनी जेम सूत्रधार (सुतार) पासे तेमणे प्रधान काष्ठथी जिनमंदिरनो तरत उद्धार कराव्यो एटले तेमना हाथे पडेल वासक्षेपना प्रभावथी अग्नि ते मंदिरने बाळी शक्यो नहि. कारण के अमृतना निधानरूप तेमनो मंत्र प्रगट होवाथी ते समर्थ न थाय, पण बुझाई जाय. पछी वीसमा तीर्थनाथना मोक्ष थकी अगियार लाख, पंच्याशी हजार, छसें ने छ्याशी वर्षो जतां काष्ठ जंतुओने लीधे ते चैत्यना काष्ठ जीर्ण अने जर्जरित थया. एटले **अंबड**नी जेम **श्रीमान् राणा**ए पत्थरनुं चणावीने तेनो पुनरुद्धार कर्यो.

एकदा पोताना आयुष्यनी प्रांतस्थिति जाणीने जिन सिद्धांतरूप नावना कर्णधार (सुकानी) समान एवा **श्रीविजयसिंहसूरि** अनशन लईने स्वर्गे गया. तेमना वंशमां अद्यापि प्रभावक आचार्यो उदय पामे (उत्पन्न थाय) छे, के जेमना प्रसरता असाधारण तेजथी जिनशासन जयवंत वर्ते छे.

ए प्रमाणे अल्प सत्त्व प्राणीओने अतिदुष्कर, अश्चावबोध उत्तम तीर्थना वृत्तान्तथी रमणीय उत्तम सुदर्शनाना चरित्रथी वधारे सुंदर, अंबादेवीना चरित्रथी पवित्र, श्री संघने पुष्टि आपनार अने प्रगट प्रभावयुक्त एवुं **विजयसिंहसूरि**नुं आ अति पवित्र अने अतुल चरित्र, ते अभ्यासमां आवतां समस्त जिनशासननी उन्नति निमित्ते थाओ.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्री प्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना मनपर लेतां **श्री प्रद्युम्न मुनीश्वरे** सुधारेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे गुटिकासिद्ध **श्रीविजयसिंहसूरि**ना चरित्ररूप आ छट्ठुं शिखर थयुं.

इति श्री विजयसिंह सूरि-प्रबंध

आभूषणों से शरीर की शोभा होती है वह भी शरीर की स्वाभाविक कांति आदि हो तो नहीं तो आभुषण भी अशोभनीय हो जाते है।

व्रत, नियम ये आत्मा के अलंकार है। इससे आत्मा शोभायमान होता ही है। शरीर चाहे कितना ही बेड़ोल बदरुप हो फिर भी व्रत नियम आत्मा को भूषित करेंगे ही।

-जयानंद

७. श्री जीवदेवसूरि-प्रबंध

जेमणे आर्हत वाणीरूप धेनुने प्राणोल्लास पमाडी चरण (चारित्र) नो उदय कर्यो एवा **श्री जीवदेवसूरि** तमने कल्याण दायक थाओ. पोताना अंगनुं दान करतां पूर्वमां महापुरुषोए पण पोताना प्राण आपतां परना प्राण बचाव्या छे, परंतु पर जीवोना जीवनरूप छतां अक्षत एवा **श्री जीवदेवसूरि** समान अन्य कोण छे? आजे तेनुं वर्णन करवामां मारा जेवा जीर्ण पुरुषनुं शुं गजुं? तथापि तेमनी भक्ति मने वाचाळ बनाववा समर्थ थई छे, तेथी अज्ञानरूप घासने कापवामां दातरडा समान, पाप सागरथी पार पामवाने वहाण समान तथा दुख-दौर्भाग्यने दूर करनार एवुं तेमनुं चरित्र हुं वर्णवुं छुं.

पोते सदा अनवस्थित छतां जगतमां स्थानने ईच्छनार तथा जगतने प्राणदायक एवा वायुदेवे पूर्वे साक्षात् ब्रह्म (ब्रह्मा) समान एवा ब्राह्मणोने **गुर्जरभूमि**ना भूषणरूप एवुं **बायड** (ट) नामनुं महास्थान आप्युं हतुं.[1] ते वखते तेणे द्वारादिकना साधन रचवापूर्वक ब्रह्मशाला अने चैत्यमां परमेष्ठीने स्थापन कर्या. जेम मलयाचलमां बधा वृक्षो चंदनरूप छे, तेम त्यां ब्राह्मणो अने वणिको बधा **बायड** एवा नामथी प्रसिद्ध थया. स्फुरायमान जाईपुष्पना परिमल समान रसिक जनरूप मधुकरोने सेवनीय एवी जाति ते नामथी सर्व करतां श्रेष्ठ गणावा लागी, त्यां धर्मथी श्रेष्ठ, **न्यायोपार्जित द्रव्यनुं दान करवाथी साक्षात् धर्मरूप तथा लक्ष्मीना स्थानरूप एवो धर्मदेव नामे प्रख्यात शेठ हतो,** तेनी **शीलवती** नामे कांता के जे शीलगुणथी विराजित हती अने आनंदयुक्त शीतल वचनथी जे चंद्रमा अने चंदनने पण हंमेशां जीती लेती हती. तेमना **महीधर** अने **महीपाल** नामना बे पुत्रो के जे पुण्यकर्ममां सदा सावधान हता. कर्मना दोषथी **महीपाल** सदा देशांतरमां भमतो हतो अने तेथी ए सुबंधुना स्नेहने लीधे **महीधर** वैराग्य पाम्यो. त्यां जंगम तीर्थरूप एवा **जिनदत्त** गुरु पूर्वे रहेता हता के जे संसार सागरथी तारनार अने कामादि शत्रुओनो नाश करनार हता.

सत् काष्ठ (निष्ठा) थी आकर्षण करनार जे गुरु रूप सूत्रधारने पामीने भव्यात्माओ संपूर्ण सिद्धिरूप प्रासादमां निवास करनार थया.

एक वखते संसारथी कंटाळी गयेल **महीधरे** आवीने ते गुरुने नमस्कार कर्या अने बंधुना विरहथी वैराग्य पामेल तेणे गुरु पासे जैनी दीक्षानी प्रार्थना करी, भाग्यहीन प्राणीओने अलभ्य एवा आचार्य महाराजे तेने योग्य जाणी, तेना माता पिताने पूछीने **महीधर**ने प्रव्रज्या आपी. पछी बे प्रकारनी गुरुशिक्षा मेळवीने **महीधरमुनि** अनेक विद्यारूप सागरना पारंगामी अने अतिप्रज्ञाना बळथी ते परवादीओने अजय्य थया, एटले भवसागरथी भव्य जनोने तारवामां नाव समान एवा ते कुशळ शिष्यने पोताना पाटे स्थापन करीने गुरु महाराज स्वर्गवासी थया. शाखाना अनुसारे **महीधरसूरि श्री राशिल** गुरु एवा नामथी प्रसिद्ध थया, विद्याविनोदथी ते जता काळने पण जाणता न हता.

हवे तेमनो बंधु **महीपाल राजगृह** नगरमां **श्रुतकीर्ति** नामना दिगंबराचार्य पासे गयो तेने प्रतिबोध पमाडीने दिगंबरसूरिए तेने दीक्षा आपी. तेनुं **सुवर्णकीर्ति** एवुं नाम राख्युं अने ते नवीन मुनिने तेणे पोतानी क्रिया शीखवी. पछी वखत जतां एकदा **श्रुतकीर्ति**ए तेने पोताना सूरिपदपर स्थाप्यो अने धरणेंद्र-अधिष्ठित श्रीमती अप्रतिचक्रादेवीनी विद्या आपी; तथा कलिकाळमां दुर्लभ अने भाग्यथी सिद्ध थई शके तेवी परकायप्रवेशीनी विद्या गुरुए तेने आपी कारण के तेवी विद्या तेवा पुरुषने ज योग्य होय छे.

1. जुओ 'पुराणोमां गुजरात' ग्रंथांक ७ उमाशंकर जोषी.

एवामां ते नगरथी आवनार वेपारीओ पासेथी पोताना पुत्रनो वृत्तान्त सांभळवामां आवतां पोतानो पति मरण पाम्या पछी **शीलवती** तेने मळवा माटे गई. त्यां आवतां ते पोताना पुत्र-मुनिने मळी अने तेना अनुयायीओए तेनो सत्कार कर्यो, कारण के **गुरुनी तेवी माननीय माता रत्नखाणनी जेम कोने अधिक आदर पात्र न थाय?**

हवे त्यां जिनेश्वर भाषित तत्त्वोनी समानता छतां पोताना बंने पुत्रमां सामाचारीनो कंईक भेद जोवामां आवतां **शीलवती** शंका पामीने कहेवा लागी—'हे वत्स! तमे बंने बंधुओ जिनमतना अनुयायी छतां तमारामां अंतर देखाय छे. श्वेतांबर अत्यंत निष्ठायुक्त अने निष्परिग्रह देखाय छे अने तुं सुखी; पूजाकांक्षी तथा अधिक परिग्रही लागे छे, तो मने समजावो के व्याकुळ जनो शी रीते सिद्धि पामी शके? माटे मारी साथे तुं तारा पूर्वजोना स्थाने चाल के जेथी तमे बंने भ्राता, शास्त्र अने प्रमाण-सिद्धांतोथी आर्यसंमत धर्मनो परस्पर पूरतो विचार करीने सत्य निर्णय पर आवी शको अने पछी बंने एकमत थईने मने धर्ममां स्थापन करो.

पोतानी माताना ए उपरोध वडे महीपाल मुनि (सुवर्णकीर्ति)ए **बायड** नगर तरफ विहार कर्यो. पछी अश्विनीकुमारोनी जेम अभिन्न रूपवाळा श्वेतांबर अने दिगंबराचार्य बंने भ्राता त्यां साथे मळ्या अने पोतपोताना आचार तथा तत्त्वविचार स्फुट रीते कहेवा लाग्या. त्यां पापनुं शोधन करनार श्वेतांबरसूरिए सद्व्रतवाळा, निर्ममाभास अने प्रौढ वचन-शक्तिवाळा होवाथी दिगंबर मुनिने बोध पमाड्यो.

एवामां एकदा तेमना आचारने कंईक जोवा माटे तेमनी माताए महा भक्तिपूर्वक तेमने भिक्षाने माटे निमंत्रण कर्युं. त्यां सारां भाजनोमां एक सामान्य आहार मूकी राख्यो अने बीजुं प्रवर भोजन साधारण पात्रोमां भरी राख्युं, त्यारे प्रथम दिगंबर मुनि आव्या, तेमने शीलवतीए बंने प्रकारना आहारना भाजनो बताव्यां. एटले सारा आहारनो तेमणे आदर कर्यो, तेथी ते लुब्ध, आळसु अने संस्कार रहित देखाई आव्यो अने सविकार मुखने धारण **करतां तेणे माता तरफ जोयुं.** एवामां बीजा पुत्रना बे साधुओ त्यां आव्या. तेमने बंने प्रकारनो आहार बतावंती ते हर्षपूर्वक कहेवा लागी के—'आ बंने आहारमां तमने रुचे ते ग्रहण करो.'

त्यारे साधुओ विचार करीने बोल्या के—'अमारे शुद्ध आहार ज लेवानो छे. जेमां आधाकर्मिआदि दोषनो संशय आवे, ते भोजन पण अमने न कल्पे.' एम कहेतां ते बंने आहार लीधा विना ते बंने मुनि चाल्या गया.

एटले धर्म-कर्म साधनार एवी **शीलवती** दिगंबराचार्य पुत्रने कहेवा लागी के—'तारा भ्रातानुं व्रत जोयुं? शुभ देखाव बहारथी रम्य लागतो होय, छतां रक्तजनोने ते अल्प फळदायक थाय छे. आहारनी जेम धर्मने विषे पण एवी ज रीते समजी लेवुं, माटे ए धर्ममां तुं रुचि कर.'

ए प्रमाणे माताए प्रतिबोध पमाडतां अने बंधुना वचनथी सन्मति आवतां तेजस्वी **महीपालमुनि**ए अधिक आत्मबळ मेळववा श्वेत वस्त्रने धारण करी लीधां अने **श्री राशिल** गुरुनी पासे दीक्षा अने शिक्षा स्वीकारतां ते जैनागमनां रहस्यने जाणीने गीतार्थ थया. एटले सद्गुरुए तेमने योग्य समजीने बंधु-सूरिना पाटे स्थापन कर्या अने **जीवदेवसूरि** एवा नामथी विख्यात थयेला ते सद्गुरु शोभवा लाग्या. पांचसे मुनिओना परिवारथी विराजित अने पोते दयावान छतां अंतरना शत्रुओनो संहार करवामां निर्दय तथा उत्कट तेजयुक्त एवा **महीपाल गुरु**ने (श्री जीवदेवसूरि) एकदा श्री वीरभवनमां व्याख्यान करतां दृष्टिविष सर्प समान एक योगीए जोया. एटले विस्मय पामतो ते चिंतववा लाग्यो के—'महातेजस्वी अने कळावान आ श्वेतांबर गुरु आ लोकोमां सार्वभौम (चक्रवर्ती) समान शोभे छे. सामान्य जनोने उपद्रव करवामां जे मारी शक्ति चाले छे ते शुं मात्र छे? जो आ मुनिने कंई अनिवार्य विघ्न उपजावुं तो हुं समर्थ पुरुष खरो!' एम चिंतवीने लीलापूर्वक ते सभामां बेठो अने पृथ्वीतलपर तेमणे अस्खलित आसन लगाव्युं, पछी मौन धारण करीने व्याख्यान करनारनी रसना (जीभ) स्तंभित करी. त्यां इंगित चेष्टाथी गुरुए ते योगीनुं कृत्य बधुं जाणी लीधुं. एटले पोतानी शक्तिथी व्याख्यानमां पोताना शिष्यने शक्तिमान बनावीने

समय पर गुरु पोते मनमां लेश पण व्याकुळता लाव्या विना पोते व्याख्यान पूर्ण कर्युं अने तेने व्याख्यान करवा बेसाड्यो. एवामां बेसवानी भूमि पर ते योगीनुं आसन जाणे पत्थरथी बनावीने लगाडेल होय तेम वज्र लेप तुल्य सचोट थई गयुं. त्यारे अंजलि जोडी मिथ्या प्रणाम करतां ते योगी कहेवा लाग्यो के-'हे महाशक्तिना निधान! मने मुक्त करो.'

एवामां केटलाक श्रद्धाळु लोकोए पण गुरुने विनंती करी; जेथी दया लावीने गुरुए मुक्त करतां ते चाल्यो गयो, कारण के **ईक्षुभक्षण करता कुंजर (हस्ती)नी साथे कोण समानता करी शके?** पछी ते कुयोगीए स्वीकारेल उत्तर दिशामां, गुरुए साधु साध्वीओने गमन करवानो निषेध कर्यो, तथापि कोईवार कर्मसंयोगे बे साध्वीओ वडीनीति निमित्ते ते दिशा तरफ गई. एवामां तळावनी पाळपर बेठेल ते योगीना जोवामां आवी. एटले नीच आशयवाळा अने निर्दय एवा तेणे सन्मुख आवीने हस्तलाघवथी एक साध्वीना मस्तकपर कंईक चूर्ण नाख्युं, त्यारे ते पाछळ जईने तेनी पासे बेसी गई, त्यां वृद्ध साध्वीए तेने समजाव्या छतां ते आवी नहि. अहा! **पूज्यना वचननुं उल्लंघन करवुं, ए पण कष्टरूप ज छे.** एटले वृद्ध साध्वीए आवीने अश्रुपूर्वक गुरुमहाराजने ते वृत्तान्त निवेदन कर्यो अने जणाव्युं के—'आ काममां अमने विषाद न थाय, तेम करो.'

त्यारे गुरु बोल्या—'हे भद्रे! तमे खेद न करो.' पछी घासनुं एक पूतळुं बनावी, चार श्रावकोने शिखामण आपीने तेमणे ते पूतळुं श्रावकोने आप्युं. एटले बहार जतां तेमणे ते पूतळानी कनिष्ठ अंगुलि छेदी नाखी. पछी योगी पासे आवतां जोयुं, तो योगीनो हाथ अंगुलि रहित तेमना जोवामां आव्यो. आथी तेमणे योगीने पूछ्युं के-'आ अंगुली केम कपाई?'

ते बोल्यो—'ए तो अकस्मात् थयुं छे.'

त्यारे श्रावकोए कह्युं—'घणा कष्ट उपजावनार ए साध्वीने तुं मूकी दे.'

आ तेमनुं वचन ज्यारे तेणे न मान्युं, त्यारे ते योगीना देखतां तेमणे पूतळानी बीजी आंगळी कापी नाखी, एटले तरत ते योगीनी आंगळी कपाई गई.

पछी तेमणे आक्षेपपूर्वक जणाव्युं के—'नीच पुरुषो दंड आपवाथी साध्य थाय छे. आ तो दया लावीने मात्र तारी आंगळी छेदी छे, अमे जो आ पूतळानुं शिर छेदी नाखीए, तो तारुं शिर पण क्यां रहे तेम छे? माटे हे पापात्मा! ए साध्वीने मूकी दे, नहि तो तारुं मस्तक अमे छेदी नाखीशुं. हे मूर्ख! पोतानी अने परनी शक्तिनुं अंतर तुं जाणतो नथी, आथी भय पामतां ते योगी बोल्यो के—'एना शिरे पाणी छांटो, एटले सावधान अने स्वस्थ थईने ते पोताना स्थाने जशे.'

पछी योगीना कह्या प्रमाणे श्रावकोए कर्युं. त्यां साध्वी सावधान थई अने पोताना स्थान पर आवीने तेणे आलोचना लीधी. एवामां पेलो योगी भयभीत थई देशांतरमां पलायन करी गयो, कारण के **तेवा तुच्छ जनो शुं एवा प्रभावी गुरु पासे आवी शके?**

हवे अहीं **अवंती** नगरीमां **विक्रमादित्य** नामे राजा राज्य करतो हतो. तेणे पृथ्वीने ऋणरहित करतां पोतानुं संवत्सर चलाव्युं. एक वखते ते राजाए लोकोने ऋणरहित करवा पोताना **लिंब** नामना अमात्यने **वायड** नगरमां मोकल्यो. त्यां **श्री वीरप्रभुनुं** जीर्ण मंदिर तेना जोवामां आव्युं. एटले पोताना वंशनी साथे तेणे ते जिन मंदिरनो जीर्णोद्धार कराव्यो अने विक्रमसंवत्सरना छ वर्ष व्यतीत थया बाद सातमे वर्षे तेणे सुवर्णकुंभ, दंड अने ध्वजानी श्रेणीयुक्त त्यां **श्री जीवदेवसूरि** पासे ध्वज-कुंभनी प्रतिष्ठा करावी. तेवा समर्थ आचार्ये प्रतिष्ठा करेल होवाथी अद्यापि ते तीर्थ अभंग छे.[1]

हवे **महास्थान** नगरमां वणिकोने विषे प्रधान; दारिद्र्यरूप शत्रुनो जय करवामां मल्ल समान अने

1. पुरातन प्रबंध पृ. ३२ मुजब वायडमां श्री जीवंतस्वामिनुं श्री मुनिसुव्रत स्वामिनुं अने श्री महावीर भगवाननुं एम त्रण जिनालयो हता.

कळाओना निधानरूप **लल्ल** नामे श्रेष्ठी हतो, के जे महाश्रीमंत अने कोटिगमे द्रव्यथी तेजस्वी गणातो हतो. ते सूर्यग्रहणना दिवसे आनंदपूर्वक महादान आपतो हतो. वळी होमनो समारंभ करतां तेणे यज्ञदीक्षित उत्तम ब्राह्मणोने, मंत्र बोलनारा ऋत्विजोने तथा होम करनारा याजकोने बोलाव्या. पछी वेद विद्यामां विशारद एवा तेमनो महाभक्तिथी सत्कार-पूजन करीने प्रौढ मंत्रना गर्जारव साथे होम शरू कराव्यो. त्यां यज्ञकुंड पासे रहेल आंबलीनां वृक्ष पर रहेल एक सर्प धुमाडाथी आंखे व्याकुळ थतां फटफट करतो ते त्यांथी नीचे पड्यो. एवामां वाचाल विप्रोमां एक ब्राह्मण कहेवा लाग्यो के—'अहो! आहुती आपवाने आ **भोगींद्र** पोते अहीं आव्यो' एम बोलतां तेणे ते सर्पने होमाग्निमां नांखी दीधो. एटले तेने बळतो जोईने सुज्ञ यजमान, (लल्ल श्रेष्ठि) दयाथी शरीरे कंपता तेमने कहेवा लाग्यो के—'अरे! आ तमे शुं दुष्कृत कर्युं? साक्षात् सचेतन देखातो, जीवतो पंचेन्द्रिय जीव एकदम तमे बळता अग्निमां नाखी दीधो, ए केवो धर्म?'

त्यारे विप्र बोल्यो—'हे शेठ! सुमंत्रोथी संस्कार पामेला अग्निमां ए पुण्यवान सर्प पड्यो, तेथी कोई प्रकारनो दोष नथी कारण के आ अग्निमां महापापी हिंसक जीवो पण मरण पामीने मनुष्यपणाने के देवपणाने अवश्यपामे छे. तेथी आ बटुक ब्राह्मणे तो उलटो उपकार कर्यो. माटे हे शेठ! तमारे लेश पण संताप करवो उचित नथी. जो तुं दयाळु अने आस्तिक होय, तो प्रायश्चित्त कर अने तेथी बमणा सुवर्णनो सर्प करावीने ब्राह्मणोने दानमां आप.'

आ तेना आदेशथी श्रेष्ठीए सत्वर सुवर्णनो सर्प तैयार कराव्यो. पछी मंत्रो वडे तेने संस्कारयुक्त करवामां आवतां छेदन वखते शेठ ते विप्रने कहेवा लाग्यो—'पूर्वना सर्पनी हिंसाना पापमांथी मुक्त थवा में आ सर्प कराव्यो अने एना वधथी लागेल पापना प्रायश्चित्त माटे मारे पाछो बीजो सुवर्णसर्प करावको पडशे, तेथी अनवस्थादोष उपस्थित थशे, तो हुं आ धर्मने समजी शकतो नथी. तमे खोटी रीते मने शा माटे छेतरो छो? माटे हुं बधाने विसर्जन करुं छुं.'

ए प्रमाणे कहीने तेणे अग्नि बुझावी नाख्यो, कुंड पूरावी दीधो अने ब्राह्मणोने विसर्जन कर्या. कारण के मद्यनुं माहात्म्य शांत थतां कोई पण विपरीत चेष्टा न करे. पछी त्यारथी ते श्रेष्ठी सर्व दर्शनोनी तपास करवा लाग्यो.

एवामां एकदा बे श्वेतांबर मुनिओ ते शेठना घरे भिक्षा लेवा आव्या त्यारे श्रेष्ठीए पोताना घरना माणसोने आदेश कर्यो के 'आ चारित्रपात्र मुनिओने भोजन तैयार करीने अवश्य भिक्षा आपो.'

एटले मुनि बोल्या—'तेवुं भोजन अमने न कल्पे. वळी ज्यां पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु, सर्व प्रकारनी वनस्पति अने त्रस जीवनो वध थतो होय, तेवी भिक्षा अमाराथी न लेवाय.'

ए प्रमाणे सांभळतां शेठ चिंतववा लाग्यो के—'अहो! आ मुनिओ तृष्णारहित होवाथी निर्मल, निरहंकार अने सदा शांत चित्तवाळा लागे छे.' एम धारीने ते श्रेष्ठी कहेवा लाग्यो—

'हे भगवन्! मने सत्य धर्म कही बतावो.'

त्यारे मुनि बोल्या—'**चैत्यमां अमारा गुरु बिराजे छे** ते धर्म कही संभळावशे.' एम कहीने ते पोताना स्थाने चाल्या गया. ते पछी बीजे दिवसे **लल्लश्रेष्ठी**ए गुरुपासे जईने धर्म संबंधी प्रश्न कर्यो त्यारे गुरु कहेवा लाग्या के—'दया ते धर्म, सर्वज्ञ जिनेश्वर ते देव तथा आंतर शत्रुओनो नाश करनार अने महाव्रतधारी धीर ते गुरु समजवा. रागादि चिह्नयुक्त देव, परिग्रहधारी गुरु अने पशुहिंसारूप धर्म ए महामिथ्याभ्रम छे. माटे हे धार्मिक! परीक्षा करीने धर्मनो स्वीकार कर कारण के तमे तो टका वगेरे पण परीक्षापूर्वक ज स्वीकारो छो.'

ए प्रमाणे सांभळतां **लल्लश्रेष्ठी**ए सम्यक्त्व सहित बार व्रतोनो स्वीकार कर्यो अने चतुर्विध धर्म जाणीने ते अहर्निश आचरवा लाग्यो—

एक वखते श्रेष्ठीए गुरु पासे आवीने कह्युं के—'हे भगवन्! मारी वात लक्ष्यपूर्वक सांभळो—में सूर्यग्रहणना दिवसे एक लाख द्रव्य वापरवानो संकल्प कर्यो छे, तेमांथी वेद अने स्मृति (पुराण)मां बतावेल धर्माभासमां अर्धुं द्रव्य वपरायुं, हवे बाकीनुं जे अर्ध लक्ष्य रहेल छे, तेनो व्यय मारे शी रीते करवो ते आप फरमावो. मारो विचार एवो छे के ते आपने आपवाथी बहु फळदायक थशे. माटे ते द्रव्य आप ग्रहण करो अने इच्छानुसार आदरपूर्वक तेनो उपयोग करो.'

त्यारे गुरु कहेवा लाग्या—'हे भद्र! अमे अकिंचन (निष्परिग्रह) छीए. तेथी धनादिकनो स्पर्श पण अमने उचित नथी, तो पछी तेनो संग्रह करवानी तो वात ज शी करवी? छतां तमे ए बाबतनी चिंता न करो. आवती काले संध्या समये एक पग धोतां तने जे भेट मळे त्यारे अमने त्यां लई जजे, एटले तेनो उपाय तने कही संभळावीशुं.'

एम सांभळतां ते शेठ पोताना घरे गयो पछी बीजे दिवसे गुरुनुं वचन याद करतां संध्या समये कोई सुथार एवो पलंग तेनी पासे लई आव्यो के तेना जेवो राजानी पासे पण नहि होय, एटले गुरुना कह्या प्रमाणे श्रेष्ठी तेनी साथे उपाश्रयमां आव्यो अने आश्चर्य पामतां तेणे गुरुनी आगळ निवेदन कर्युं. त्यारे गुरु महाराज पोते पुनः त्यां आवी, बे वृषभपर वासक्षेप नाखी, तेनाथी अधिवासित करीने ते श्रेष्ठीने प्रगट रीते कहेवा लाग्या के—'हे शेठ! आ बे वृषभ जतां जतां ज्यां उभा रही जाय, ते स्थाने ए द्रव्यथी तारे रमणीय जिनमंदिर करावबुं.' (पछी ते सुथार शेठने पलंग आपी ईनाम लई पोताना घरे गयो).

ए प्रमाणे गुरु महाराजना मुखथी सांभळतां श्रेष्ठीए ते वचन मान्य करीने बे वृषभने छूटा मूक्या, एटले छूटा थयेल ते **पिप्पलानक** नामना गाममां गया अने त्यां एक उकरडाना स्थानमां उभा रह्या. त्यांथी ते आगळ न चाल्या. त्यारे गामना अधिपतिए गौरवथी ते भूमि शेठने अर्पण करी. पछी त्यां एक कुशळ सुत्रधारने नियुक्त करतां प्रासाद (चैत्य)ना शिखर अने मंडप संपूर्ण तैयार थया.

एवामां एक दिवसे त्यां कोई संन्यासी पुरुष आवी चड्यो. तेणे प्रासादने जोतां नाक मरडीने प्रशंसा करी. त्यारे लोकोए त्यांनुं दूषण पूछतां, ते प्रगट रीते कहेवा लाग्यो के—'अहीं स्त्रीना अस्थिरूप शल्य छे के जे समस्त दूषणोमां मुख्य दूषण गणाय छे.'

त्यारे लोकोए ए वात गुरुमहाराजने निवेदन करी. एटले तेमणे लोकोने आश्वासन आपतां जणाव्युं के- 'शल्य काढी नाखी पाया भरीने फरी चैत्यनो प्रारंभ करो. वळी हे **लल्ल शेठ**! तारे द्रव्यनी न्यूनता संबंधी चिंता न करवी. कारण के तेनी अधिष्ठायक देवीओ तने पुष्कळ द्रव्य पूरशे.' पछी शल्य काढी नाखवानो प्रयत्न शरू करतां रात्रे अवाज सांभळवामां आव्यो के-

'शल्यने उखेडो नहि'. ए अवाजनी उपेक्षा करतां त्यां पत्थर पडवा लाग्या. त्यारे तेमणे पुनः गुरु महाराजने ते हकीकत निवेदन करी, एटले गुरुए ध्यान लगाव्युं अने देवताने आह्वान करवामां आवतां त्यां साक्षात् देवी आवीने कहेवा लागी के—'**कान्यकुब्ज**ना राजानी हुं मानिती पुत्री हती, मारा पिताना **गुर्जर** देशमां हुं सुखे रहेती हती. एवामां म्लेच्छ राजा थकी भंगनो भय उपस्थित थतां हुं अहीं कूवामां पडी, एटले मरण पामीने हुं आ भूमिनी अधिष्ठात्री देवी थई. मारी पासे धन पुष्कळ छे, तो मारा पोताना शरीरना अस्थिशल्यने उखेडवानी हुं अनुमति आपीश नहि. कारण के मारी अनुमति विना धर्म स्थानोमां कोई कंई करवाने समर्थ नथी. तेथी हे पूज्य! धर्मस्थानोमां हुं तमने अटकावुं छुं.'

त्यारे गुरुए तेने मनावी, तेथी तेमना वचनामृतथी देवी शांत थईने कहेवा लागी के—'जो हवे तमे मने अहीं अधिष्ठायिका बनावो, तो धर्मस्थानने माटे ते द्रव्यसहित भूमि लई ल्यो.' एटले आचार्ये ए वात कबूल करी. पछी श्रेष्ठीए भूमि शुद्धि करीने चैत्य तैयार थतां त्यां तेमणे ते देवीनी एक जुदी देरी तैयार करावी अने **भवनदेवी**ना नामथी तेने त्यां स्थापन करी. अचिंत्य शक्तिवाळी ते देवीने अद्यापि धार्मिक पुरुषो पूजे छे.

हवे **लल्लशेठ**ने जिनधर्ममां आदरयुक्त जोईने पोताना स्वभावने न जाणता ब्राह्मणो जैनधर्मीओ पर मत्सर करवा लाग्या. एटले पर्वतोने हाथीओ परेशान करे तेम गोचरी वगेरेने माटे मार्गे जता मुनिओने ते उद्वेग पमाडवा लाग्या. ए हकीकत तेमणे गुरुने निवेदन करी. त्यारे गुरु बोल्या—'क्षमा धारण करवाथी उपसर्गो नष्ट थशे. एज आपणुं रहस्य (तत्त्व) छे.'

एवामां एकदा कटुवचन बोलनारा अने पापरक्त ब्राह्मणो लगभग मरणावस्थाए पहोंचेली कोई कृश गायने रात्रे पगे घसडी घसडीने बलात्कारे महावीर प्रभुना मंदिरमां लई गया. पछी तेने मरण पामेल समजी; पोते बहार बेसीने अतिहर्षथी कहेवा लाग्या के—'हवे जैनोनुं मोटुं माहात्म्य जाणवामां आवी जशे, प्रभाते श्वेतांबरोने विडंबना पमाडनार आ विनोद आपणे जोई शकीशुं.' एम मनमां कौतुक लावता ते विप्रो देवकुलादिकमां बेसी रह्या.

हवे प्रभात थतां यतिओ जेटलामां आंगणे आव्या, तेवामां अकस्मात् चित्तने विषे विस्मय पमाडनार ते मृत गाय तेमना जोवामां आवी, एटले आ खेद पमाडनार आश्चर्य तेमणे गुरु महाराजने निवेदन कर्युं जे सांभळतां सिंह समान अने अचिंत्य शक्तिवाळा गुरु जरा पण क्षोभ न पाम्या. पछी उपाश्रयमां पाट पासे मुनिओने अंगरक्षा माटे मूकीने गुरु पोते त्यां एकांतमां शुभ ध्यान करवा लाग्या. एवामां अंतमुहूर्तमां ते गाय पोते उभी थई अने चेतना पामीने आश्चर्य पमाडती ते चैत्यनी बहार नीकळी गई. त्यारे तेने जती जोईने प्रवीण ब्राह्मणो चिंतववा लाग्या के--'रात्रे मरण पामीने पडी रहेल गाय चैत्यथकी बहार शी रीते नीकळी? एमां कांई सहज कारण नथी, पण मोटी आपत्ति देखाय छे. कारण के विप्रजाति निरंकुश छे अने ब्रह्मचारी मंडळ दुर्ग्राह्य छे.' ए प्रमाणे तेओ विचार करे छे, तेवामां पगे चालती ते गाय, जाणे पिताना स्नेहने लीधे आकर्षाई होय, तेम ब्रह्म भवननी सन्मुख चाली. पछी प्रभाते ब्रह्मपूजक जेटलामां द्वार उघाडे छे, तेटलामां उत्सुक थयेल ते गाय ब्रह्मभवनमां दाखल थई अने बहार रहेला ते पूजारीने शींगडावती पाडी, पोते गंभारामां जईने ते ब्रह्ममूर्तिनी आगळ पडी. पछी **जीवदेवगुरु** महाराजे ते ध्यान पार्युं, एवामां पूजारीए झालर वगाडीने ब्राह्मणोने भेगा कर्या. एटले ते मूढमति बधा आश्चर्य पामीने कहेवा लाग्या के—'आ समकाळे स्वप्न के बधानो मतिभ्रम छे? के मरण पामेल गाय चालती पण थई, ते शुं? तेम पण कदाच बने, परंतु ते पोते ब्रह्मशाळामां शा माटे आवी? आ दैवनी दुर्घटना विचारी शकाय तेवी नथी आ काम ज्योतिषीओना ज्ञानथी पण अतीत छे.'

एवामां त्यां केटलाक विप्रो कहेवा लाग्या के—'अहीं विचार शो करवानो हतो? बटुकोना दुर्न्यायरूप सागर मर्यादा ओळंगी स्थानोने तद्दन पाडी (उखेडी) नाखशे. तेथी वायुदेवनी कीर्ति आ स्थानथी तो वायुना वेगे अवश्य चाली गई समजजो.

त्यारे बीजा केटलाक विप्रो बोल्या के—'आ मोटी आपत्तिमां आपणा माटे एक ज उपाय छे, के सिंह समान पराक्रमशाळी अने चैत्यमां बिराजमान एवा श्वेतांबर गुरुना पगे पडीने सत्वर ते सत्पुरुषना शरणने स्वीकारो. कारण के आ अपार चिंता-सागर ते नावथी ज तरी शकाय तेम छे.'

एटले अन्य ब्राह्मणो कहेवा लाग्या के—'तमारा दंभी बाळकोए निरंतर तेमने रोष पमाड्यो छे. ते तो तमारा पर शी रीते प्रसन्न थाय? कारण के एक सामान्य पुरुष पण आवा उपद्रवोने सहन करतो नथी. तो दिव्य सामर्थ्य युक्त अने साक्षात् विधाता समान ए जैनर्षि ते शुं सहन करशे?'

एवामां बीजा केटलाक बोली उठ्या के—'भले एम छे, तो पण अत्यारे तेमनी पासे आजीजी करवानी

जरूर छे, कारण के **उत्तम पुरुष प्रणाम करवाथी वैरने तजी दे छे.'**

ए प्रमाणे बधा एकमत थईने ब्राह्मणो श्री वीरमंदिरमां धार्मिक जनोथी मंडित एवी गुरुनी पर्षदामां गया. त्यां अंजलि जोडीने ते कहेवा लाग्या के—'हे पूज्य! संकटमां आवी पडेला एवा अमारुं वचन तमे ध्यान दई सांभळो—पूर्वे वायु नामना देवे आ स्थान स्थापन करेल छे अने आ स्थापना वायुदेवे पोताना समान एवा **जीवदेव सूरिना** नामने वश थईने तमारा बळथी ते करेल छे. माटे बाळकोना खोटा अपराधथी ए संकटमां आवी पडेल छे, तो तेनो प्रतीकार करवाने तमारा सिवाय अन्य कोई भूतल पर समर्थ नथी. माटे ते देवना अवताररूप तथा निःस्पृह एवा हे स्वामिन्! पोताना यशना स्थानरूप एवा आ स्थाननुं रक्षण करो अने अमने जीवितदान आपो पोताना नामांतररूपे रहेल एवा ते देवना तमे जो जामीन थवा मागता हो, तो स्थाननुं रक्षण करो, नहि तो तमारो अस्थैर्यनो दुर्यश स्थिर थई जशे.'

ए प्रमाणे सांभळतां आचार्य मौन धारी रह्या, एवामां यशस्वी **लल्ल शेठ** कहेवा लाग्या के—'हे ब्राह्मणो! तमे मारी एक सत्य विनंती सांभळो—हुं जीववध थतो जोईने तमारा धर्मथी विरक्त थयो अने पोताना ज दृष्टांत परथी आ दयाप्रधान धर्ममां हुं अनुरागी थयो. जेथी तमे अदेखाई अने ईर्ष्याने लीधे जैनो पर उपद्रवो करवा लाग्या. एटले तमारा विरोधी अल्प छे, तेथी अहीं तमारी सामे कोण थाय? हवे जो आ संबंधमां कोई स्थिर मर्यादा बतावता हो, तो गुरु महाराजने विनंती करीने हुं कंईक प्रतीकार करावुं.'

त्यारे मुख्य विप्रो बोल्या—'तमे युक्त कहो छो. अमारा दुर्वार्य उपद्रवमां एमनी क्षमानी बरोबरी करी शके, एवो कोण छे? हवे पोतानी इच्छानुसार जैन धर्ममां सतत महोत्सवो करता धर्मी जनोने कोई पण विघ्न नहीं करे.' त्यां **लल्ल शेठे** कह्युं—'आमां पहेलोवंट श्री महावीर भगवानना साधुनो रहेशे एमां ब्राह्मणोए फेरफार न करवो. (श्री वीरना साधुओनी जे प्रथमनी व्यवस्था छे, ते भले सदाने माटे कायम रहे. हवे पछी ब्राह्मणोए तेमां अंतराय कदि न करवो,) वळी जीवदेवनी गादी उपर जे नवीन आचार्य बेसे तेने सुवर्णनी जनोई पहेरावीने प्रतिष्ठित आचार्यने ब्राह्मणोए ब्रह्ममंदिरमां पट्टाभिषेक करवो.'

ए प्रमाणे ज्यारे विप्रोए बधुं कबूल कर्युं, एटले **लल्ल शेठ** सद्गुरुना चरणे मस्तक नमावीने कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! महास्थाननो उद्धार करो.'

त्यारे उपशमयुक्त **श्री जीवदेवसूरि** बोल्या के—'लोकना शत्रु रूप एवा रोष के तोष तो त्रणे काळे पण अमने थवाना नथी, पण विघ्न के उपद्रवनो नाश करनार तो शासन देवता छे. तेथी अत्यारे पण मारा स्मरणथी ते ज तमारा उपद्रवने टाळशे.'

ए प्रमाणे कही उपाश्रयमां आचार्य ध्यानासन पर बेसी, नासिकाना अग्र भागे दृष्टि स्थापन करी तथा प्राणायामथी रेचकने अटकावीने ते एक मुहूर्त मात्र स्थिर रह्या. तेवामां ते गाय ब्रह्मभवनमांथी उठी अने पोते चालीने बहार नीकळी त्यारे हर्षथी ताळीओ देता ब्राह्मणो तेने जोई रह्या, एवामां नगरनी बहार पादरे जतां त्यां निरालंब थईने ते जमीन पर तरत पडी गई. पछी गुणगरिष्ठ गुरु पुनः पोतानी सभामां आव्या. आ बनावथी संतुष्ट थयेला ब्राह्मणो ते वखते वेदोक्त आशिषथी जयध्वनि करवा लाग्या. त्यारथी वायड नगरमां जाणे भ्रातृ भावथी तेमणे स्नेह स्थापन करेल होय, तेम अद्यापि जैनो साथे स्नेह संबंध त्यां चाल्यो आवे छे.

पछी श्री आचार्य महाराज अन्यत्र विहार करी गया. एवामां पोतानो मृत्यु समय नजीक आवेल जाणीने ते पुनः पोताना स्थाने आव्या अने त्यां पोताना पद पर एक योग्य शिष्यने स्थापन कर्यो. वळी पोते सर्व संगनो परित्याग करतां ध्यानमां मन लगावावानी इच्छाथी तेमणे पोताना गच्छ अने नवा आचार्यने शिक्षा आपी ते वखते गच्छ-प्रवर्तकने तेमणे गुप्त आदेश कर्यो के—'जे सिद्ध योगीने अमे पूर्वे प्रतिहत कर्यो छे, के जे अनेक सिद्धि युक्त छे, तेनी पासे एक खंड कपाल (खोपरी) छे. अमारुं मरण तेना जाणवामां आवतां ते अवश्य अहीं आवशे एटले जो ते पापमति अमारी पण खोपरी पामी जशे, तो शासनने ते अनेक प्रकारना उपद्रव करशे, माटे हे भद्र! **अमारा**

निर्जीव कलेवर पर स्नेहनी दरकार न करतां खोपरीना भूकेभूका करी नाखजे, के जेथी तेना उपद्रवनो संभव न रहे, आ संबंधमां मारी आज्ञानुं पालन करवुं ए ज तारी कुलीनता छे. तो जिनशासननी रक्षा माटे ए काम तारे अवश्य करवानुं छे.

ए प्रमाणे ते शिष्यने शिक्षा आपीने गुरुमहाराजे पोते प्रत्याख्यान कर्युं, तथा आराधना पूर्वक ते परमेष्ठीना ध्यानमां लीन थया; पछी पवननो निरोध करी मस्तक मार्गे प्राणनो त्याग करतां गुणना निधानरूप ते आचार्य वैमानिक देवनी समृद्धि पाम्या. एटले अवसरना जाणकार ते शिष्ये एक प्रचंड दंड लईने कपाळनुं एवी रीते चूर्ण करी नाख्युं के जेथी तेनो आकार पण जोवामां न आवी शके. एवामां लोकोनो शोकपूर्वक हाहारव थतां **गीतार्थ मुनिओए शिबिकामां रहेल गुरुना शरीरने उपाड्युं.** एवामां डमरूना ध्वनिथी भयंकर भासतो ते योगी त्यां आव्यो अने ते लोकोने पूछवा लाग्यो के—'आ कयो पुरुष मरण पाम्यो?'

त्यारे अश्रुथी पोतानी मूछने भींजावतां एक मुख्य ब्राह्मण गद्‌गद अवाजथी तेनी आगळ बोल्यो के-'जाणे वायुदेवनी बीजी मूर्ति होय अने महास्थानरूप धरा-पृथ्वीनो उद्धार करवामां वराहरूप एवा **जीवदेव** मुनीश्वर स्वर्गवासी थया.'

ए प्रमाणे सांभळतां कपटथी शोक बतावी वक्षस्थलने कूटतां मोटो पोकार करी अत्यंत रुदनपूर्वक ते योगी कहेवा लाग्यो के—'अरे! हवे मारा स्वामीनुं एक वार तमे मने मूख बतावो नहि तो पोतानुं शिर कूटीने हुं अवश्य प्राणत्याग करीश.'

त्यारे प्रवर्त्तक बोल्या—'शिबिकाने पृथ्वीपर मूको. आ योगी स्वामीनो मित्र छे, तेथी तेमनुं मुख जोईने भले ए चिरकाळ जीवतो रहे.' एटले शिबिका नीचे मूकवामां आवी अने गुरुनुं मुख तेने बतावामां आव्युं, त्यां ते चूर्णित थयेल जोई हाथ घसीने ते कहेवा लाग्यो—'**विक्रमादित्य** राजानी एक खंड खोपरी तो मने मळी, पण आ मारा आचार्यनुं कपाळ पुण्यवंत पुरुषना लक्षण युक्त छे, ते जो मारा हाथमां आवी होत तो ए अर्ध कपाळ साथे संयुक्त थात, तो मारा बधा मनोरथ सिद्ध थई जात; पण शुं करीए, निर्भागीने आवुं क्यांथी प्राप्त थाय? तेथी जीवतां अने मरतां पण ए मित्रे मने हाथ घसतो कर्यो. मनुष्योमां ते ज एक पुरुष हतो, के जेणे पोतानी मतिथी मने जीती लीधो; तेम छतां आ लोको एना देहसंस्कारने माटे मने अनुज्ञा आपे तो सारुं; कारण के असाधारण मित्राईथी आजे मने पण पुण्यनो विभाग प्राप्त थाओ.'

पछी लोकोए तेम करवानी तेने अनुज्ञा आपी, एटले आकाश मार्गे जईने ते योगी मलयाचल थकी चंदनकाष्ठ त्यां लई आव्यो अने गुरुना शरीरने तेणे अग्निसंस्कार कर्यो, तेना प्रभावथी अद्यापि तेमना वंशमां पोताना तेजथी अमर समान अने कळाना निधान एवा प्रभावक आचार्य थाय छे.

ए प्रमाणे महाप्रभाव युक्त अने दूरितने दूर करनार एवुं **श्री जीवदेव** गुरुनुं चरित्र जाणीने विबुध जनो सावधान थईने निरंतर तेनुं स्मरण करो. तथा आचार्य महाराजनो महिमा बतावामां एक कारणरूप ए चरित्र चिरकाळ जयवंत रहो.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मीदेवी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए विचारपर लावतां, **श्री प्रद्युम्नसूरि**ए शोधेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्रोरूप रोहणाचलने विषे **श्री जीवदेवसूरि**ना सुचरित्ररूप आ सातमुं शिखर थयुं. **श्रीमान् प्रद्युम्नसूरि**रूप कल्पवृक्ष, ते वचननी दरिद्रतानुं मंथन करनार छे, मननी प्रसन्नतारूप लताना दृढ आधार अने सुज्ञ जनोरूप पुष्पसमूहने उल्लास पमाडनार छे.[1]

इति श्री जीवसूरि-प्रबंध

1. तुला अमरचंद्रसूरि कृत पद्मानंद काव्यनी प्रशस्ति, आ. श्री जीवदेवसूरि रचित 'जिन स्नात्र विधि' जैन साहित्य विकास मंडल तरफथी प्रसिद्ध थयेल छे.

८. श्री वृद्धवादी और सिद्धसेनसूरि-प्रबंध

सरस्वतीना श्रेष्ठ प्रवाहने माटे सागर समान तथा शम, दमरूप उर्मि-तरंगयुक्त एवा श्री **वृद्धवादी मुनींद्र**ने नमस्कार हो.

जगतनो उद्धार करनारा एवा **श्री सिद्धसेनसूरि** तमारुं रक्षण करो के जे शंकरना हृदयने भेदनार आर्हत ब्रह्ममय तेजने धारण करनार हता.

कलिकाळरूप पर्वतने भेदवामां वज्र समान एवा ते बंने आचार्यना अनेक आश्चर्य युक्त चरित्रने हुं वर्णवुं छुं.

जैन शासनरूप नंदनवनमां कल्पवृक्ष समान, सर्व श्रुतना अनुयोगरूप कंदने विकसित करवामां मेघ समान, तथा विद्याधरोना उत्तम आम्नाय (वंश)मां वांछित आपनार चिंतामणी समान **श्री पादलिप्तसूरि**ना वंशमां **श्री स्कंदिलाचार्य** थया. असंख्य शिष्योरूप माणिक्यना रोहणाचल समान ते मुनीश्वरे एकदा **गौड** देशमां विहार कर्यो. त्यां **कोशला** गाममां निवास करनार एक **मुकुंद** नामे श्रेष्ठ ब्राह्मण के जे सत्त्वमां साक्षात् **मुकुंद** (कृष्ण) जेवो हतो. बाह्य भूमिमां विचरता सूरिमहाराजनी साथे कोई प्रसंगे ते विप्रनो समागम थयो. कारण के **सर्व कार्योमां सर्वनी भवितव्यता तो जाग्रत ज होय छे.** तेणे गुरु पासे अतिवैराग्यथी रंगायेला संयमधारी मुनिओने सुसाध्य अने प्राणीओनी दयारूप एवो सुखकारी धर्म सांभळ्यो. एटले ते कहेवा लाग्यो के—'अनार्य दुर्जनोनी जेम अकार्य करावनार तथा भ्रम उपजावनार चित्रोनी जेम विषयोथी हुं छेतरायो छुं'. माटे हे गुरुराज! हे आंतर शत्रुनो ध्वंश करनार! अने हे दयाना निधान! पलायन करवामां पण कायर एवा मने ते विषयोथी सत्वर बचावो.' एम बोलतां ते विप्रने जैनदीक्षा आपीने गुरु महाराजे तेना उपर प्रसाद कर्यो. कारण के **सुकार्यमां उतावळ करवी ज सारी कहेल छे. विलंब करवाथी तेमां अवश्य विघ्न आवे छे.**

पछी एकदा गुरु महाराज विहार करता **लाट** देशना मंडनरूप अने रेवानदीनी सेवाथी पवित्र थयेल एवा **भृगुकच्छ** (भरूच) नगरमां आव्या त्यां श्रुतपाठना महाघोषथी आकाशने प्रतिशब्दित करता, सागर तरंगना घोर अवाजनी जेम दुःख उपजावता, स्वाध्यायनो अभ्यास करता तथा **वृद्धपणाने लीधे अत्यंत आग्रही बनेला** एवा **मुकुंदमुनि** निद्राथी प्रमादी थयेला अन्य मुनिओने अहर्निश जगाडवा लाग्या. त्यारे बुद्धिशाळी एक युवान मुनिए तेमने शिखामण आपतां जणाव्युं के 'हे मुनि! आ तमारा ध्वनिथी जाग्रत थयेला हिंसक प्राणीओ जीववध करे, माटे साधुए ध्यानरूप उत्तम अभ्यंतर तप आचरवुं. हे साधो! **शांत समये वचनयोगनो संकोच राखवो ते उचित छे.**'

ए प्रमाणे सांभळ्या छतां वृद्धपणाथी उत्पन्न थयेल जडताने लीधे शिक्षानो आदर न करतां ते ज प्रमाणे ते मुनि प्रगट रीते घोष करवा लाग्या. त्यारे तेना नादथी भारे कंटाळी गयेल ते अणगार प्रथम पोताना तारुण्यने उचित मृदु वाणीथी अने पछी तेना कृत्यथी ईर्ष्या आवतां कर्कश वचनथी **मुकुंद मुनि**ने कहेवा लाग्या- 'हे मुनि! पोतानी वृद्धावस्थाना अंतने न जाणतां उग्र पाठना आदरथी आकुळ थयेल तुं मोगरानी लतानी जेम मुशळ उपर शी रीते फूल उगाडी शकीश?

ए प्रमाणे सांभळतां ते वृद्ध मुनि विषाद पाम्या अने चिंतववा लाग्या के 'ज्ञानावरणथी दूषित थयेल मारा जन्मने धिक्कार छे. माटे हवे उग्रतपथी **सरस्वती** देवीनुं हुं आराधन करीश, के जेथी ए ईर्ष्या वचन पण सत्य थाय.' एम धारी **नालिकेरवसीत** नामना जिनालयमां समर्थ एवी **भारती देवी**नुं आराधन तेमणे शरू कर्युं. त्यां दृढ व्रतधारी स्फुरायमान ध्यानाग्निथी जडतानी भीतिने टाळनार, समताने धरनार, विकल्परूप कालुष्य (मलिनता) निरस्त थवाथी शुद्ध बुद्धिने प्रगटावनार तथा शरीरे निष्कंप रही मूर्तिना चरण-कमळमां पोतानी दृष्टिने स्थापन करनार एवा ते वृद्ध मुनि शरीरना आधाररूप चार प्रकारना आहारनो त्याग करीने एक मुहूर्तनी जेम एकवीस दिवस त्यां स्थिर बेसी रह्या एटले आ तेमना सत्त्वथी संतुष्ट थयेल **भारती देवी** साक्षात् पोते प्रगट थईने मुनिने कहेवा लागी के—'हे भद्र! उठ, हुं प्रसन्न थई छुं. तारा मनोरथ बधा पूर्ण थाओ, हवे तने स्खलना नहि थाय माटे तने जे ईष्ट होय ते कर.'

ए प्रमाणे सरस्वती देवीनुं वचन सांभळतां ते मुनि उठ्या अने पारणा माटे कोई गृहस्थना घरे जतां त्यां मुशळ तेमना जोवामां आव्युं. एटले पूर्वे यतिना मुखथी हास्य-वचन सांभळवाना अपमानथी पोते करेल प्रतिज्ञाने पूर्ण करवा माटे ते ऋषि बोल्या के—'हे भारती! तमारा प्रसादथी जो अमारा जेवा पण प्राज्ञ थई वादी थता होय, तो आ मुशळ पुष्पित थाओ.' एम कहीने मुनिए प्रासुक जळथी मुशळने सिंचन कर्युं. जेथी ताराओ वडे आकाशनी जेम ते तरत पल्लवित अने पुष्पोथी युक्त थयुं. पछी मुनि घोष करीने कहेवा लाग्या के—'ससलानुं शृंग (शींगडुं), इंद्रधनुष्यनुं प्रमाण, शीतल अग्नि अने निष्प्रकंप वायु-आ वाक्यमां जे कोईने कंई गमतुं न होय, तो वृद्ध वादी कहे छे के ते मारी सामे आवीने बोले.' आ तेनी प्रतिज्ञाथी ज ते वखतना वादीओ बुद्धिमां प्रतिहत थई बधा शून्यमति जेवा बनी गया. आथी गुरुए भारे वात्सल्यथी तेमने आचार्यपदे स्थाप्यां. कारण के **पात्रे नियुक्त थयेल अर्थनी जेम गुणो वृद्धि पामे छे.** पोते वृद्ध छतां जगतमां ते वादमुद्राथी विभूषित थईने विख्यात थया. तेथी ते वृद्ध आचार्य **वृद्धवादी** एवी अन्वययुक्त प्रसिद्धिने पाम्या. एवामां श्रीजिनशासनरूप कमळवनने विकसित करवामां भास्कर समान एवा **श्री स्कंदिलाचार्य** अनशन लईने स्वर्गस्थ थया. एटले गच्छरूप पृथ्वीनो उद्धार (गच्छरूप पर्वतने धारण) करवामां कच्छप (काचबा) समान एवा **वृद्धवादी** गुरुए गुण संततिना स्थानरूप एवी **विशाला** नगरी भणी विहार कर्यो.

ए अरसामां दारिद्र्यरूप अंधकारनो नाश करवामां सूर्य समान एवो **विक्रमादित्य** नामे राजा राज्य करतो हतो. त्यां **कात्यायन** गोत्रमां उत्पन्न थयेल **देवर्षि** ब्राह्मण अने **देवश्री**नो पुत्र **सिद्धसेन** नामे एक विद्वान विप्र प्रख्यात हतो. सर्व शास्त्रोमां पारंगत एवो ते कोईवार त्यां आव्यो अने श्रीमान् **वृद्धवादीसूरि**ने मळ्यो. एटले तेणे प्रश्न कर्यो के—'हे मुनिनाथ! आजकाल **वृद्धवादी** अहीं विद्यमान छे?

त्यारे गुरु बोल्या—'हुं पोते ज ते **वृद्धवादी** छुं, एम समजी ले.'

त्यां सिद्धसेने कह्युं—'मारे विद्वद् गोष्ठी करवानी इच्छा छे, माटे अहीं ज आपणे ते करवा बेसीए, के जेथी लांबा वखतनो मारो संकल्प सिद्ध थाय.' एटले आचार्य बोल्या—'जो एम होय, तो पोताना हृदयने संतोष पमाडवा माटे आपणे विद्वानोनी सभामां शा माटे न जईए? कारण के सुवर्णनी प्राप्ति थती होय, तो पीतळने कोण ग्रहण करे? एम कह्या छतां ज्यारे तेणे 'मारे तो अहीं ज वाद करवो छे, एवो पोतानो कदाग्रह न मूक्यो, त्यारे आचार्ये ए वात कबूल करी अने गोवाळोने ते वखते सभासदो बनाव्या. एटले प्रथम **सिद्धसेने** पोतानो पक्ष स्थापन करतां जणाव्युं के—'सर्वज्ञ कोई छे ज नहि, कारण के आकाशपुष्पना दृष्टांतनी माफक प्रत्यक्ष, अनुमानादिक प्रमाणोथी ते उपलब्ध नथी.' एम कहीने ते मौन रह्यो.

त्यारे गोवाळोने संतोष पमाडतां वृद्धवादी कहेवा लाग्या के—'आ सिद्धसेननुं कथन तमे कांई समजी

शक्या के नहि?'

तेओ बोल्या—'ईरानी भाषा जेवुं अव्यक्त वचन शी रीते समजी शकाय?'

एटले वृद्धवादीए जणाव्युं—'हे गोवाळो! एनुं वचन हुं बराबर समजी शक्यो छुं. ए कहे छे के—'जिन-वीतराग नथी,' माटे तमे सत्य कही बतावो के तमारा गाममां वीतराग सर्वज्ञ छे के नहि?

त्यारे ते बधा बोली उठ्या के—'जैन चैत्यमां जिन सर्वज्ञ विद्यमान छे, माटे एनुं वचन मिथ्या छे. आ प्रमाण विनाना विप्र वचनने अमे मान्य करता नथी.'

पछी आचार्य पुनः कहेवा लाग्या के—'हे विप्र! हुं सत्य वचन कहुं छुं, ते सांभळ—प्रज्ञातिशय क्यांक तरतमतामां विराम पामे छे. परिणाममां जेम उत्कृष्ट परिमाण होय छे. तेम प्रज्ञामां उत्कृष्टता स्पष्ट छे ज. अने ते लघु के गुरुतर, परमाणुं अने आकाशमां पण उपलब्ध छे. प्रज्ञानो अवधि ते केवळज्ञान सिद्ध ज छे. ए ज्ञान तो गुण छे, माटे विचार करो, तेना आधाररूप कंई द्रव्य पण होवुं ज जोईए. ते आधाररूप द्रव्य ते ज सर्वज्ञ छे. एम सर्वज्ञनी ए सिद्धि थई ज जाय छे.'

ए प्रमाणे वचन विस्तारथी **वृद्धवादीसूरि**ए पोताने पंडित माननार एवा **सिद्धसेन** ब्राह्मणने जीती लीधो कारण के आवा समर्थ विद्वान् आगळ ते शुं मात्र छे?

एवामां हर्षाश्रुथी लोचनने आर्द्र बनावतां **सिद्धसेन** पण कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन् प्रथम तो तमे पोते ज खरेखरा सर्वज्ञ छो के मने जीती लीधो, तो हवे में पूर्वे करेल प्रतिज्ञा प्रमाणे तमे मने शिष्य थवानी अनुमति आपो अर्थात् शिष्य बनावो कारण के पूर्वे में एवी प्रतिज्ञा लीधी छे के—'जेने हुं उत्तर आपवा असमर्थ थाउं, तेनो शिष्य बनुं. एटले गुरु महाराजे पोते तत्पर थयेल एवा **सिद्धसेन** विप्रने जैन विधि प्रमाणे दीक्षा आपी अने तेनुं **कुमुदचंद्र** एवुं नाम राख्युं. पछी बाणनी जेम पोतानी तीक्ष्ण अने प्रकृष्ट प्रतिभाने बळे **सिद्धसेन मुनि** ते काळना सर्व सिद्धांतना सत्वर पारंगामी थई गया. एटले गुरुए प्रमोदपूर्वक तेमने आचार्य पदे स्थापन कर्या. पूर्वे तेमनुं नाम तो प्रसिद्ध हतुं अने आ वखते वधारे विख्यात थयुं. पछी गुरु महाराजे **श्रीसिद्धसेनसूरि**ने गच्छ भळावीने पोते अन्यत्र विहार कर्यो, कारण के **गुरु दूर रहीने ज शिष्यनो प्रभाव जुए छे.**

हवे एकदा **श्री सिद्धसेनसूरि** बाह्य भूमिकाए जता हता, तेवामां राजमार्गे थईने जतां **विक्रमादित्य** राजाना ते जोवामां आव्या त्यारे अलक्ष्य रीते राजाए तेमने प्रणाम कर्या. एटले उंचा अवाजे गुरुए तेने धर्मलाभ आप्यो. आ तेमनी दक्षताथी संतुष्ट थयेल राजाए प्रीतिदानमां तेमने एक कोटि सोनामहोर आपी अने पत्रमां लेख लख्यो के-

धर्मलाभ इति प्रोक्ते, दूरादुद्धृतपाणये ।
सूरये सिद्धसेनाय, ददौ कोटिं नराधिपः ।।१।।

अर्थात् - दूरथी हाथ उंचो करीने धर्मलाभ आपतां श्री सिद्धसेनसूरिने राजाए एक कोटि सोना महोर आपी.'

पछी राजाए आचार्यने बोलावीने निवेदन कर्युं के—'हुं तमने द्रव्य आपवा मागुं छुं.'

त्यारे गुरु बोल्या—द्रव्य लेवुं अमने कल्पे नहि. माटे तमने रुचे तेम करो.' आथी राजाए **गरीब साधर्मी बंधुओ अने चैत्योना उद्धार माटे ते द्रव्यनो एक साधारण भंडार कर्यो.**

एक वखते सिद्धसेन मुनीश्वर **चित्रकूट** पर्वत पर आव्या, त्यां पर्वतना एक भागमां एक स्तंभ तेमना जोवामां आव्यो के जे काष्ठ, पत्थर के माटीथी बनावेल न हतो. त्यारे विचार करतां ते औषधना चूर्णनो बनावेल तेमना जाणवामां आव्यो एटले तेना रस, स्पर्श अने गंधादिकनी परीक्षाथी तथा मतिना बळथी औषधो ओळखीने तेमणे तेना विरोधी औषधोने मेळव्यां अने तेना वती वारंवार घर्षण करतां ते स्तंभमां एक छिद्र कर्युं. एटले त्यां हजारो पुस्तको तेमना जोवामां आव्यां तेमांथी एक पुस्तक लई उघाडतां तेमांना एक पत्रमांनी एक पंक्ति तेमणे

वांची जोई, तो तेमां सुवर्णसिद्धिनो योग जोवामां आव्यो; तेथी विस्मय पामतां बीजो एक श्लोक वांच्यो, तेमां सरसवथी सुभटो बनाववानुं लख्युं हतुं. आथी विशेष हर्ष पामी सावधान थईने जेटलामां आगळ वांचवा लाग्या, तेवामां **शासनदेवीए ते पत्र अने पुस्तक हरी लीधुं. कारण के काळना दोषथी तेवा समर्थ पुरुषोनी पण तेवा पूर्वगत ग्रंथो वांचवानी योग्यता तेना जोवामां न आवी,** पण **सत्त्वहानिनो संभव तेणे जोयो.**

पछी एकदा ते बंने विद्यायुक्त **सिद्धसेनसूरि** विहार करतां पूर्वे देशना प्रांतमां रहेल **कर्मार** नगरमां गया. त्यां पराक्रमथी प्रख्यात थयेल एवो **देवपाल** नामे राजा राज्य करतो हतो ते सत्वर **श्री सिद्धसेन** गुरुने नमस्कार करवा आव्यो. एटले **आक्षेपणी**[1]वगेरे चार प्रकारनी धर्मव्याख्याथी गुरुए तेने प्रतिबोध पमाड्यो अने मित्रतामां स्थापन कर्यो.

एवामां एकदा रूपमां कामदेव समान अने अधर्ममां मति राखनार एवा **विजयवर्म** राजाए तेने घेरी लीधो अने असंख्य अग्रगामी सुभटोए तेने भारे पराभव पमाड्यो त्यारे **देवपाल** राजाए गुरुने विनंती करी के—'हे देव! आ राजाना तीडनी श्रेणि समान अद्‌भुत सैनिको, अल्प भंडारवाळा एवा मारा सैन्यने विखेरी नाखशे. माटे हे स्वामिन्! हवे आपज मारा शरणरूप छे.'

त्यारे आचार्य बोल्यो—'हे राजन्! तुं ए संकटथी भय न पाम. हुं प्रायः तेनो प्रतिकार करीश.' पछी तेमणे सुवर्णसिद्धिना योगथी अगणित द्रव्य अने सरसवना योगथी घणा सुभटो उत्पन्न कर्या. अथवा तो गुरुना प्रसादथी देवपाल राजाए शत्रुने पराजित कर्यो. कारण के तेवा गुरुनी उपासनाथी शुं न थाय? पछी राजाए जणाव्युं के—'हे भवतारक नाथ! हुं शत्रुना भयरूप अंधकारमां पड्यो हतो; पण सूर्य समान तमे तेमांथी मारो उद्धार कर्यो. माटे हे प्रभो! **दिवाकर** एवुं आपनुं नाम प्रसिद्ध थाओ. त्यारथी **सिद्धसेन दिवाकर** एवा नामथी प्रसिद्ध थया. पछी राजाने ते अत्यंत माननीय थई पड्या. तेथी राजा तेमने भक्तिथी बलात्कारे **सुखासन तथा हस्ती वगेरे उपर बेसाडतो अने तेओ राजभवनमां जता.** ए हकीकत लोकोना मुखथी वृद्धवादीसूरिना जाणवामां आवी एटले राजसन्माननना गर्वथी भ्रमित थयेल मतियुक्त शिष्यने शिक्षा आपी क्षणवारमां तेनो दुष्ट आग्रह दूर करवाने पोतानुं रूप छूपावीने गुरु कर्मारपुरमां आव्या. त्यां राजानी माफक सुखासनमां बेठेल अने बहु लोकोथी परिवरेला एवा **सिद्धसेन** शिष्यने तेमणे राजमार्गमां जोयो. त्यारे गुरु तेने कहेवा लाग्या के—'तुं बहु विद्वान छे. माटे मारा संदेहने दूर कर. तारी ख्याति सांभळीने हुं बहु दूर देशांतरथी आव्यो छुं.'

एटले सिद्धसेनसूरिए कह्युं—'तारे जे पूछवुं होय, ते पूछ.'

त्यारे समीपे रहेला विद्वानोने विस्मय पमाडतां गुरु उच्च स्वरे कहेवा लाग्या के—

अणहुल्लीफुल्ल म तोडहु मन आरामा म मोडहु ।
मणकुसुमेहिं अच्चि निरंजणु हिंडह काइं वणेण वणु ।।१।।

आ गाथानो विचार करतां पण अर्थ जाणवामां न आव्यो, तेथी तेणे खोटो उत्तर कहीने जणाव्युं के-'बीजुं कंई पूछो.'

एटले गुरु बोल्या—'ए ज गाथानो विचार करो.' आथी तेणे अनादर पूर्वक असंबद्ध कंईक कही बताव्युं, के जे गुरुए मान्य न कर्युं, त्यारे सिद्धसेनसूरिए कह्युं—'तो पछी तमे एनो अर्थ कही बतावो.'

जेथी वृद्धवादी गुरु कहेवा लाग्या—'हे भद्र! तुं सावधान थईने सांभळ के जेथी तुं मार्गभ्रष्ट छतां एनुं तत्त्व सांभळवाथी पुनः मार्गने पामी शके. ते आ प्रमाणे—

जेनुं अल्प आयुष्य रूप पुष्प छे एवुं मनुष्यनुं शरीर, तेना आयुखंड रूप पुष्पोने राजसन्माननना गर्व रूप

1. १. आक्षेपणी, २. विक्षेपणी, ३. निर्वेदनी, ४. संवेगनी.

लाकडी वती तोड नहि. आत्मा संबंधी अने संतापने हरनारा एवा यम, नियमादि रूप बगीचाने भांग नहि. क्षमा, मार्दव, आर्जव अने संतोषादि मन पुष्पोथी निरंजननुं पूजन कर. अर्थात् जेना अहंकारना स्थान जाति, लाभादि रूप अंजन दूर थयेल छे तथा सिद्धिपदने प्राप्त थयेल एवा निरंजननुं ध्यान धर. मोहादि वृक्षघटाथी गहन एवा आ संसार रूप अरण्यमां एक स्थानथी बीजे स्थाने शा माटे भमे छे. आ एक अर्थ थयो.

हवे बीजो अर्थ बतावे छे—

अथवा अणु एटले अल्प धान्य, ते अल्प विषयपणाथी मानवदेहना पुष्पो समजवां. ते अल्प पुष्पी नरदेहना शीलांग महाव्रत रूप पुष्पोनो विनाश कर नहि. मन रूप आरामने मरडी नाख, एटले चित्तना विकल्पजाळनो संहार कर. तथा मुक्तिपदने प्राप्त थयेल निरंजन वीतराग देवनी पुष्पोथी अर्चा न कर. अर्थात् **गृहस्थने उचित छकाय जीवनी विराधना रूप देवपूजामां प्रयत्न न कर.** कारण के ते सावद्य छे. कीर्तिनी कामनाथी संसार रूप अरण्यमां शा माटे भ्रमण करे छे, अर्थात् मिथ्यावादने तजी जिनेश्वरे कहेल सत्यमां आदर कर. ए बीजो अर्थ बताव्यो.

हवे त्रीजो अर्थ कहे छे—

अथवा तो कीर्तिना स्याद्वाद वचन रूप पुष्पोने तोड नहि. तथा मनना अध्यात्मोपदेश रूप आराने तोडी न नाख, अर्थात् खोटी व्याख्याथी तेनो विनाश न कर. वळी रागादि लेपरहित निरंजन मननी, सुगंधी अने शीतळ सदुपदेश रूप पुष्पोथी पूजा कर. अर्थात् मनने श्लाघ्य बनाव. तथा संसाररूप अरण्यना स्वामी परम सुखी होवाथी ते तीर्थंकर छे' तेमना शब्द-सिद्धांत सूत्रमां भ्रांति शा माटे लावे छे? कारण के ते ज सत्य छे. माटे तेमांज प्रेम-भावना राखवी जोईए. ए त्रीजो अर्थ बताव्यो.

ईत्यादि श्री वृद्धवादी महाराजे ते गाथाना बुद्धिवर्धक अनेक अर्थ बताव्या पण अमे जड जेवा ते केटलुं समजी शकीए? ए रीते गुरुना उपदेशरूप मेघना गर्जारव अने वर्षणना आडंबरथी **सिद्धसेनसूरि**नी मनोभूमि बोधने लीधे अंकुरित थई, एटले तेमने विचार थयो के—'मारा धर्माचार्य विना आवी शक्ति बीजा कोईमां नथी.' एम धारी शिबिकाथी नीचे उतरीने ते गुरुना चरणे ढळी पड्या अने कहेवा लाग्या के—'भाव-शत्रुओथी जीतायेला एवा में आप गुरुनी मोटी आशातना करी, आप दयाळु ते क्षमा करो.'

ए प्रमाणे सांभळतां गुरु बोल्या के—'हे वत्स! एमां तारो दोष नथी, आ समय ज एवो छे. **आ दुःषमाकाळ शत्रुनी जेम प्राणीओनी सद्गतिनो नाश करे छे.** जैन सिद्धांतनुं पान करावीने में तने संपूर्ण तृप्त कर्यो, छतां मंद अग्निवाळाने स्निग्ध भोजननी जेम जे तुं पण जीर्ण न करी शक्यो तो जडतारूप वायु, पीनस (नासिकारोग) तथा श्लेष्मवाळा अने अल्प सत्त्वरूप अग्निवाळा अन्य जीवो विद्यारूप अन्न शी रीते जीर्ण करी शके? माटे हे भद्र! क्षुधातुर थयेल तुं पोते, में आपेल श्रुत, संतोषरूप औषधथी वृद्धि पामेल ध्यानरूप अंतर-अग्निवडे जीर्ण करी स्तंभथकी प्राप्त थयेल पुस्तक तारी पासेथी शासनदेवीए छीनवी लीधुं. ते योग्य कर्युं. कारण के आजकालना जीवो तेवा प्रकारनी शक्तिने शुं उचित छे?'

गुरुना मुखथी ए वचन सांभळतां साधुशिरोमणि **सिद्धसेन** कहेवा लाग्या के—'अज्ञानना दोषथी जो शिष्यो दुष्कृत न ज करे, तो हे नाथ! प्रायश्चित्तना शास्त्रो चरितार्थ केम थाय? माटे हे भगवन्! अविनित एवा मने प्रायश्चित्तथी शुद्ध करो.'

त्यारे वृद्धवादी गुरुए विचार करीने तेने आलोचना तपनुं प्रायश्चित्त आप्युं, पछी **सिद्धसेनसूरि**ने पोताना पदे स्थापी, पोते अनशनपूर्वक आराधना करीने स्वर्गे गया एटले **सिद्धसेन मुनींद्रे** पण शासननी प्रभावना करता राजानी अनुमतिथी वसुधा पर विहार कर्यो.

एकदा बाल्यावस्थाथी संस्कृतना अभ्यासी, केवळज्ञानीए प्ररूपेल प्राकृतने विषे आदररहित तथा पोताना कर्मदोषथी दूषित थयेल एवा **सिद्धसेनसूरि**ए लोकवाक्य (लोकोना कहेवा)थी तथा पोताना सामर्थ्यथी सिद्धांतने

संस्कृत बनाववा माटे श्री संघने विनंती करी एटले सिद्धांतना प्रभावनी मोटाईने न जाणतां संस्कृत मोहित थयेल एवा तेमने संघना प्रधान पुरुषोए चित्तनी कलुषताने लीधे कर्कश बनेला वचनथी निवेदन कर्युं के—'युगप्रधान आचार्योना अलंकारने धारण करनारा तथा आजकालना साधुसमुदायना मुगट समान एवा आप जेवा पूज्यनी चित्तवृत्तिमां पण जो अज्ञानरूप शत्रु आवीने उत्पात करशे, तो आजे अमारा जेवानी तो वात ज शी करवी? अमे पूर्वना संप्रदाय थकी सांभळेल छे के पूर्वे चौदेपूर्वो संस्कृत भाषामां हता, ते प्रज्ञातिशयथी साध्य हता. आजे काळना दोषथी तेनो उच्छेद थयो अने हवे सुधर्मा स्वामिए कहेल अगियार अंग रह्या. बाळ, स्त्री, मूढ, मूर्खादि जनोना अनुग्रह माटे ते प्राकृत भाषामां कर्या. तो आपनी एमां अनास्था केम छे? आतो वचन दोषथी तमे मोटुं पाप उपार्जन कर्युं. तेथी हवे एनुं प्रायश्चित्त तो श्रुतना आधारे स्थविरो ज आपी शके.'

त्यारे स्थविर बोल्या के—'जे बार वरस गच्छत्याग करी, गुप्त जैनलिंगे रही दुष्कर तप तपे, महादोषथी दूषित थयेल आ मुनींद्रनी पाराचिंत नामना प्रायश्चित्तथी शुद्ध थाय तेम छे, नहि तो जिनाज्ञानी विराधना ज छे. वळी ते दरम्यान जो शासननती अद्‌भुत कांई प्रभावना करे तो तेटला वरसनी अंदर पण पोतानुं पद पामी शके.'

पछी श्री संघनी अनुज्ञा लईने सात्त्विक शिरोमणि **सिद्धसेनसूरि**ए पोताना व्रतने अव्यक्तपणे धारण करतां गच्छनो त्याग कर्यो. एम भ्रमण करतां तेमणे सात वरस व्यतीत कर्या.'

पछी एक वखते विहार करतां करतां उज्जयिनी नगरीमां आव्या. त्यां राजमंदिरना द्वार पर आवीने तेमणे द्वारपालने जणाव्युं के—'हे भद्र! तुं विश्वविख्यात राजाने मारा शब्दोमां मारी ओळखाण आपतां निवेदन कर के- हाथमां चार श्लोक लईने आवेल एक भिक्षु-साधु आपने मळवा ईच्छे छे, तेने द्वार पर अटकावी राखेल छे, माटे ते आवे के पाछो चाल्यो जाय?'

एटले गुणवंत पर पक्षपात धरावनार राजाए तेमने बोलाव्या. त्यां तेणे दर्शावेल आसन पर बेसीने सिद्धसेन तेनी स्तुति करतां बोल्या के—

अपूर्वेयं धनुर्विद्या भवता शिक्षिता कुतः। मार्गणौघः समभ्येति गुणो याति दिगन्तरम् ।।१।।

अमी पानकरङ्काभाः सप्तापि जलराशयः । यद्यशोराजहंसस्य पञ्जरं भुवनत्रयम् ।।२।।

सर्वदा सर्वदोऽसीति मिथ्या संस्तूयसे बुधैः । नारयो लेभिरे पृष्ठं न वक्षः परयोषितः ।।३।।

''भयमेकमनेकेभ्यः शत्रुभ्यो विधिवत्सदा । ददासि तच्चते नास्ति राजंश्चित्रमिदं महत् ।।४।।

अर्थात् - हे राजन्! आ अपूर्व धनुर्विद्या तुं क्यांथी शीख्यो के जेमां मार्गण (बाण के याचक) समूह पासे आवे छे अने गुण (धनुष्यनी दोरी अथवा यश) दूर दिगंत सुधी जाय छे. १

आ साते समुद्रो जळपान करवामां कुंडा जेवा छे, तेथी जेना यशरूप राजहंसने त्रणे भुवन पांजरातुल्य छे, अर्थात् त्रणे भुवनमां जेनो यश गवाई रह्यो छे. २

हे राजन्! तुं सर्वदा सर्व ईच्छितने आपनार छे, एम पंडित जनो जे तारी स्तुति करे छे, ते मिथ्या छे; कारण के शत्रुओने ते पीठ नथी आपी अने पररमणीओने वक्षस्थल नथी आप्युं. ३

हे राजन्! अनेक शत्रुओने सदा कायदा प्रमाणे तुं एक भय ज आपे छे, छतां ते तारी पासे उपस्थित नथी, आ एक मोटा आश्चर्यनी वात छे. अर्थात् तुं सदा निर्भय छे. ४

ए प्रमाणे ते भारे यशस्वी राजानी स्तुति करतां राजा प्रसन्न थईने गुरुने कहेवा लाग्यो के—'अहो! ज्यां तमे बिराजमान छो, ते सभा धन्य छे, माटे तमारे सदा मारी पासे रहेवुं.' एम राजाना सन्मानथी अने आग्रहथी **सिद्धसेनसूरि** त्यां रह्या. एवामां एक वखते ते दक्ष सूरि राजानी साथे शिवमंदिरमां गया त्यां तेना द्वारथकी ज ते पाछा वळ्या, एटले राजाए प्रश्न कर्यो के—'तमे देवनी अवज्ञा केम करो छो? नमस्कार केम करता नथी?'

त्यारे आचार्य बोल्या के—'हे राजन्! सांभळ—तुं महा पुण्यशाळी पुरुष छे, तेथी हुं तारी आगळ कहुं

छुं, कारण के अज्ञ पुरुषो साथे वाद करतां कोण कंठशोष करे? ए शंकर मारा प्रणामने सहन करी शके तेम नथी, तो हुं केम प्रणाम करुं? जे मारा प्रणामने सहन करे, ते देवो ज बीजा छे.'

एम सांभळतां कोतुकी राजाए तरत जणाव्युं के—'तमे प्रणाम करो, तेथी शुं थवानुं छे? वळी तमारा प्रणामने योग्य एवा अन्य देवो पण मने बतावो.'

ए प्रमाणे आग्रह करता राजाने गुरुए कह्युं के—'हे भूप! कंई उत्पात थाय, तो मारो दोष नहि.'

त्यारे राजा बोल्यो के—'खरेखर! परदेशी लोको कांई आश्चर्य थाय तेवुं ज बोले छे. हे ऋषि! देवो शुं धातुयुक्त शरीरने धारण करता एवा मनुष्यना प्रणामने सहन करवामां असमर्थ हशे?'

ए प्रमाणे सांभळतां सिद्धसेन गुरु शिवलिंगनी समक्ष बेसीने उंचा अवाजे स्तुतिना श्लोक कहेवा लाग्या-

''हे नाथ! एक तमे जेम त्रणे जगतने सम्यक् रीते प्रकाशित कर्या, तेम अन्य समस्त तीर्थाधिपतिओए प्रकाशित कर्या नथी. अथवा तो एक चंद्रमा पण जेम लोकने प्रकाशित करे छे, तेम उदय पामेल समग्र ताराओ पण शुं प्रकाश करी शके? तमारा वाक्यथी पण जो कोईने बोध न थाय, तो ए मोटा आश्चर्यनी वात छे. कारण के सूर्यना किरणो कोने प्रकाश नथी आपता? अथवा तो तेमां आश्चर्य जेवुं कांई नथी. कारण के भास्करना किरणो स्वच्छ छतां स्वभावे मलिन मनवाळा घुवडने ते अंधकाररूप भासे छे.''

ईत्यादि **न्यायावतार**सूत्र, **श्री वीरस्तुति** तथा **बत्रीस बत्रीस श्लोकना प्रमाणवाळी बीजी पण त्रीस स्तुतिओ** तेमणे बनावी. पछी चुमाळीश श्लोकनी एक स्तुति रची के जे अत्यारे जिनशासनमां **कल्याणमंदिर**ना नामथी विख्यात छे. एनो अगियारमो श्लोक बोलतां धरणेंद्र पोते त्यां आव्यो. कारण के तेवा द्रढ भक्तिधारी समर्थ पुरुषोने शुं असाध्य होय? एटले तेना प्रभावथी शिवलिंगमांथी धुमाडो नीकळवा लाग्यो के जेथी निबिड धूमसमूहने लीधे मध्याह्नकाळे रात्रि जेवो देखाव थई रह्यो. अने तेथी आकुळव्याकुळ थईने भागवाने ईच्छता लोकोने दिशाओनुं भान न रह्युं. एटले पत्थरना स्तंभ अने भींतो साथे तेओ सख्त अथडाई पड्या. पछी जाणे लोकोनी दयाने लीधे ज ते लिंगमांथी, समुद्रमांना आवर्त्तनी अथडामणथी प्रगट थयेल वडवानल समान ज्वाळाओ नीकळवा लागी. त्यार पछी पुरुषोत्तम (कृष्ण) ना हृदयमां रहेल कौस्तुभमणिनी जेम तेमांथी **श्रीपार्श्वनाथ भगवंत**नी प्रतिमा प्रगट थई. एटले परमभक्तिथी प्रभुने स्तुतिपूर्वक प्रणाम करीने **सिद्धसेन ऋषि** बोल्या के—'हे राजन्! आ मुक्तात्मा देवो मारा प्रणामने सहन करी शके.'

ए प्रमाणे **विक्रमादित्य** राजाने प्रतिबोध पमाडतां प्रवेशादि महोत्सवथी तेमणे **विशाला** नगरीमां जिनशासननी प्रभावना करी. तेथी संघे तेमना बाकी रहेल पांच वर्ष मूकी दीधां अने **श्रीमान् सिद्धसेन दिवाकर**ने प्रगट कर्या. त्यां केटलोक काळ फणावलि शिवलिंगनी उंचे रही अने लोको तेनी पूजा करता, पण पाछळथी ते स्थान मिथ्यात्वीओना हाथमां गयुं.

हवे एकदा बलात्कारथी राजानी अनुमति लईने अप्रतिबद्ध बुद्धिवाळा तथा श्री संघरूप सरोवरमां कमळ समान एवा श्री आचार्य महाराजे त्यांथी विहार कर्यो. गीतार्थ मुनिओनी साथे दक्षिण दिशामां विहार करतां ते भृगुकच्छ नगरनी पासेना भूमिप्रदेशे पहोंच्या. त्यां नगर अने गामडाओनी गायोनुं रक्षण करनारा गोवाळो हता, तेओ धर्म सांभळवानी इच्छाथी गुरुमहाराज पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के—'हे पूज्य! क्यांय पण विस्मय न पामेला एवा अमने शांति पमाडो.'

त्यारे गुरु बोल्या—'अमे लांबा वखतथी विहार करतां मार्गमां श्रम पाम्या छीए, तो शुं बोलीने तमारो खेद दूर करीए? छतां तमारो आग्रह छे, तेथी अहीं वृक्षछायामां विसामो लई धर्मनुं व्याख्यान करो. अमे तमने गोरस आपीशुं.' पछी ते अज्ञजनो समजी शके तेम तालमानथी ताळी देता अने भमता भमता आचार्य तेमने प्रतिबोध पमाडवा माटे तरत प्राकृतभाषामां रास बनावीने हुंबड गीत वडे वाणीथी कहेवा लाग्या. कारण के तेवा सामान्य लोकोने तेवी भाषा ज उचित छे ते आ प्रमाणे—

नवि मारियइ नवि चोरियइ, परदारह अत्थु निवारियइ ।
थोवाह वि थोवं दइअइ, तउ सग्गि टगु मगु जाइयइ ।।१।।

कोईने मारो नहीं, चोरी पण करो नहीं, पर स्त्री संग कदी करो नहीं, थोडामांथी थोडुपण आपो. तो झटपट स्वर्गने पामे.

आ तेमनी वाणीथी ते गोवाळो प्रतिबोध पाम्या, जेथी तेमणे त्यां धन धान्यादिकथी पूर्ण एवुं **तालारासक** नामनुं गाम वसाव्युं. एटले **आचार्ये त्यां एक उन्नत जिन मंदिर करावीने तेमां श्री ऋषभदेव प्रभुनी प्रतिमा स्थापन करी.** अचल प्रतिष्ठावाळा ते भव्य मंदिरना अद्यापि भव्यजनो दर्शन करी पावन थाय छे, कारण के तेवी प्रतिष्ठा इंद्रथी पण चलायमान न थाय.

ए प्रमाणे त्यां प्रभावना करी गुरु महाराज भृगुपुरमां गया. त्यां बलमित्रनो पुत्र **धनंजय** नामे राजा हतो. तेणे भक्ति पूर्वक आचार्य महाराजनो आदर सत्कार कर्यो.

एवामां एकदा मर्यादा रहित समुद्र समान शत्रुओए आवीने ते राजाना नगरने घेरी लीधुं. एटले पोतानुं अल्प सैन्य होवाथी ते भयभीत थईने गुरुना शरणे आव्यो. त्यारे आचार्ये एक शेर सरसव मंत्रीने तेलना कूवामां नाख्या. एवामां ते सरसव असंख्य पुरुषो बनीने कूवामांथी बहार आव्या. तेमणे शत्रुसैन्यने भग्न कर्युं अने शत्रुओने परास्त कर्या. आथी तेमनुं **सिद्धसेन** एवुं अन्वययुक्त श्रेष्ठ नाम सार्थक थयुं. पछी त्यां राजाए वैराग्यथी तेमनी पासे दीक्षा लई लीधी. एम दक्षिण देशमां शासननी प्रभावना करतां **सिद्धसेनसूरि** कविओमां अग्रपदने पामता ते **प्रतिष्ठान** नगरमां आव्या. त्यां पोतानुं आयुष्य क्षीण थयेल जाणी, योग्य शिष्यने पोताना पदे स्थापी, अनशन लईने **श्री सिद्धसेन दिवाकर** संघने अनाथपणानुं दुःख पमाडतां ते स्वर्गे गया. कारण के तेवा पुरुषनो विरह थतां कयो सचेतन दुःख न पामे? एवामां एक वैतालिक-चारण ते नगरथी **विशाला** नगरीमां गयो. त्यां सिद्धसेनगुरुनी **सिद्धश्री** नामनी बहेनने ते मळ्यो. एटले गुरु याद आववाथी निरानंद पणे ते श्लोकनो पूर्वार्ध बोल्यो--

स्फुरन्ति वादिखद्योताः साम्प्रतं दक्षिणापथे ।

अर्थात् - अत्यारे दक्षिण देशमां वादीरूप खद्योत (खजुआ) स्फुरायमान थई रह्या छे.

एम सांभळतां ते पोतानी मतिना अनुमानथी उत्तरार्ध बनावीने बोली के,

नूनमस्तंगतो वादी, सिद्धसेनो दिवाकरः ।।१।।

अर्थात् - खरेखर! वादी सिद्धसेन दिवाकर (सूर्य) अस्त (मृत्यु) पाम्या होय एम लागे छे.

पछी **सिद्धश्री**ए पण पोताना शरीरनी नश्वरतानो विचार करीने अनशन कर्युं अने गीतार्थ मुनि पासे आराधना करतां ते सद्गतिने पामी.

श्री पादलिप्तसूरि तथा **श्री वृद्धवादी** गुरु विद्याधरवंशना मुख्य शासन कर्ता कहेवाय छे. श्री विक्रम संवतना दोढसो वर्ष जतां श्रावके, समळी विहारनो तथा गिरनार पर्वतना मुगट समान श्री नेमिनाथना मंदिरनो उद्धार करावतां त्यां वर्षाकाळने लीधे पडी गयेल मठमांनी प्रशस्ति थकी आ उद्धृत करेल छे.

ए प्रमाणे प्राचीन कविओए रचेला शास्त्रमांथी कंईक सांभळी **श्री वृद्धवादी** आचार्य तथा **श्री सिद्धसेन दिवाकर** वादींद्र ए बंनेनुं चरित्र किंचित् वर्णवी बताव्युं. ते भव्यात्माओने बुद्धिदायक अने प्रमोददायक थाओ.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए मनपर लेतां **श्री प्रद्युम्नसूरि**ए शोधेल सुचरित्ररूप आ निर्मळ आठमुं शिखर थयुं.

इति श्री वृद्धवादीसूरि-प्रबंध

९. श्री हरिभद्रसूरि-प्रबंध

उदय पामती मतिना मद रूप तारकासुरने भेदवामां बद्धलक्ष, पोतानी शक्तिथी अष्टापद (एक जंगली पशु विशेष) नी जेम शत्रुओने हठावनार तथा गुरुनी जेम उदय पामता अंग (आगम) नी संपत्तियुक्त एवा **श्रीहरिभद्रसूरि** जयवंत वर्ते छे.

ए **श्री हरिभद्रसूरि**ना सत्त्वने लईने काम, मोह-शत्रु रूप महासागरनो अत्यंत ध्वंस करवाथी विख्यात थयेल, चिर परिचयथी प्रगट थयेल गाढ मिथ्यात्वरूप विंध्याचलनी वृद्धिने अटकावनार तथा जैन मुनिराजोमां शोभता एवा अगस्त्य रूप हुं बाळपणाथी पोतानी अल्पमतिनी दरकार न करतां ते सूरिनुं श्रेष्ठ चरित्र कहुं छुं.

समस्त अमावस्यानी रात्रे उपकार करवाथी चंद्रमाए जाणे सूर्यने निमंत्रण करेल होय एवो रत्नसमूह ज्यां रात्रे पोतानी चळकती कांतिथी दिशाओने प्रकाशित करतो हतो. जगतपर उपकार करनारा सूर्य चंद्रने बहिष्कृत करवाथी ज्यां मेरुपर्वत शिथिल देखातो हतो अने पोताना शिर (शिखर) पर निवास आपवाथी विद्याधरीओए जेनो आश्रय कर्यो एवो **चित्रकूट** नामे पर्वत छे. असंख्य उत्तम पुरुषो अने श्रीमंतोनी लीलाना स्थान रूप तथा मोटा सात्त्विक पुरुषोना आश्रय रूप अने तेथी त्रणे जगतने तृण समान माननार एवुं त्यां **चित्रकूट** नामे प्रवर नगर छे. त्यां **जितारि** नामे राजा हतो, ते जाणे पोतानुं बीजुं शरीर धारण करीने हरि पोते आवेल होय तेवो देखातो हतो तथा क्षितितलनुं रक्षण करवामां जे दक्ष हतो अने असुरोना स्वामीने भेदवाथी जेणे पोतानुं नाम अक्षत कर्युं हतुं. त्यां अत्यंत कुशळ मतिवाळो अने राजाने माननीय एवो **हरिभद्र** नामे प्रख्यात पुरोहित हतो. जे चौद विद्यामां प्रवीण अने अग्निहोत्री हतो. ते पोतानी मतिना महागर्वथी पृथ्वी, जल अने आकाशमां रहेता बुधजनोनो पराभव करवाने ईच्छतो अने तेथी जयाभिलाषी एवो ते **कोदाळी, जाळ अने निसरणी** ए त्रण वस्तुने धारण करतो हतो. वळी शास्त्रना पूरथी वखतसर जठर फुटी जशे' एम समजीने उदर उपर ते **सुवर्णनो पट्टो** बांधतो अने 'आ जंबूद्वीपमां मारी समान कोई बुद्धिशाळी नथी.' एम जणाववाने ते जंबूलताने धारण करतो हतो. वळी तेणे सुज्ञ जनोने दुस्तर एवी प्रतिज्ञा करी के—**'आ पृथ्वी पर जेनुं वचन हुं न समजी शकुं, तेनो हुं शिष्य थाउं.'** आवा गर्वथी कळिकालमां ते पोताने सर्वज्ञ मानतो हतो.

एकदा घणा पाठको अने ब्रह्मचारीओथी परिवरेल **हरिभद्र पुरोहित** सुखासनमां बेसीने मार्गे जतो हतो, तेवामां गंडस्थळ पर भमराओथी व्याप्त, मदजळ कर्दमथी पृथ्वीने दुर्गम्य करनार, दुकानो अने मकानोने भांगवाथी लोकोने भारे शोकमां आकुळव्याकुळ बनावनार, कुमरणना भयथी गभराई गयेला अने उतावळे भागता द्विपद तथा चतुष्पदथी मार्गने शून्य करनार, व्याकुळ थयेल पशु पक्षीओना भयानक कोलाहलथी गृहस्थ जनोने भारे खेद पमाडनार तथा पोताना शिरने त्वरित धुजाववाथी सुभटो अने घोडेस्वारोने कंपावनार एवो एक गजराज तेना जोवामां आव्यो. एटले उंचा वृक्षना शिखरथी जेम वानर कूदे, तेम सत्वर त्यांथी नीचे उतरी पुष्पो एकठा करीने तेणे सूर्यनुं पूजन कर्युं अने पछी चंचळ स्वभावने लीधे ते विप्र एवी रीते जिनमंदिरमां पेठो, के दरवाजानी कमान जोवा उंचे दृष्टि करतां भगवंत तेना जोवामां आव्या. एटले उत्तम तत्त्वार्थने न जाणनार एवा ते विप्रे भुवनगुरु पर आक्षेप करतां उपहास वचन जणाव्युं के—

वपुरेव तवाचष्टे स्पष्टं मिष्टान्नभोजनम् ।
नहि कोटरसंस्थेऽग्नौ तरुर्भवति शाद्वलः ।।१।।

अर्थात् - तारुं शरीर ज मिष्टान्न भोजनने स्पष्ट कही बातवे छे. कारण के कोटर (पोलाण) मां अग्नि होवा छतां वृक्ष लीलुं कदि न रहे.

पछी मार्गमां भमता छोकराओने जोतां हाथीने बीजे मार्गे निकळी गयेल समजीने जगतमां बधाने तृण समान मानतो ते पुरोहित पोताना घरे आव्यो. त्यारबाद एक बे दिवस रहीने राजभवनमां मंत्र विधि समाप्त करी अर्धरात्रे ते पोताना घर भणी आवतो हतो, तेवामां वृद्ध स्त्रीनो मधुर स्वर तेना सांभळवामां आव्यो. एटले तीव्र बुद्धिशाळी अने स्थिर प्रतिज्ञावाळो ते ध्वनिरहित शांत समये ते गाथाने अवधारतां विचार करवा लाग्यो. पण श्रुतना विषम अर्थथी कदर्थित थयेल ते गाथानो अर्थ किंचित् पण समजी न शक्यो. ते गाथा आ प्रमाणे छे—

चक्किदुगं हरिपणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की ।
केसवचक्की केसवदु, चक्की केसीय चक्कीय ।।१।।

अर्थात् - प्रथम बे चक्रवर्ती थया, पछी पांच वासुदेव, पछी पांच चक्री, ते पछी एक वासुदेव अने चक्री, ते पछी केशव अने चक्रवर्ती, त्यार बाद केशव अने बे चक्रवर्ती, पछी केशव अने छेल्ला चक्रवर्ती थया.

ए प्रमाणे गाथा सांभळतां **हरिभद्र** पुरोहित कहेवा लाग्यो के—'हे अंबा! आ चक् चक् जेवुं तमे बहुवार बोल्या.'

त्यारे साध्वीए योग्य उत्तर आप्यो के—'हे पुत्र! भीना छाणथी लींपेल होय तेम स्पष्ट सांभळ.'

एम तेमना मुखथी सदुत्तर सांभळतां ते चमत्कार पामीने कहेवा लाग्यो के 'हे माता! तमे जे बोल्या. तेनो अर्थ मने कही समजावो. हुं तमारा कथननो अर्थ समजी शकतो नथी.'

एटले साध्वीए जणाव्युं—'**जिनागमोनो अभ्यास करवानी अमने गुरुनी अनुमति छे**, पण तेनुं विवेचन करवानी आज्ञा नथी. माटे जो अर्थ जाणवानी तारी इच्छा होय तो अमारा गुरु पासे जा.'

ए प्रमाणे सांभळीने पोताना दर्पने दूर करतां पुरोहित चिंतववा लाग्यो के—'महापुरुषोने पण दुष्प्राप्य एवा आ शास्त्रमां मतिने गति मळी शके तेम नथी. माटे आ साध्वी जैन गृहस्थना मकानना उपला मजलापर जाय छे, त्यां जैन मुनिओ एना गुरु लागे छे, तो ते पण मारे वंदनीय छे. वळी हवे तो मारे सर्व त्याग करवानो वखत आव्यो. कारण के **वचननी प्रतिष्ठा (प्रतिज्ञा) दुर्लंघनीय छे**,' एम विचार करतो ते पोताना स्थाने आव्यो अने त्यां जागरण करतां तेणे रात पूरी करी.

हवे प्रभाते तेमां ज एकतान रहेल पुरोहित प्रथम त्यां जिनमंदिरमां गयो अने वीतरागना प्रतिबंबने हृदयमां वसाववा माटे बाह्य जिनबिंबने जोईने पण हर्षपूर्वक ते स्तुति करवा लाग्यो—

वपुरेव तवाचष्टे, भगवन्! वीतरागताम् ।
न हि कोटसंस्थेऽग्नौ, तरुर्भवति शाद्वलः ।।१।।

अर्थात् - हे भगवान्! तमारी मूर्ति ज वीतरागपणाने कही बतावे छे. कारण के कोटरमां अग्नि होवा छतां वृक्ष लीलुं कदापि न होई शके.'

पछी अभिमानथी कदर्थना पामेल ते पोतानी पूर्व जिंदगीने निरर्थक मानवा लाग्यो. त्यां मंडपमां बिराजमान जैनाचार्य जिनभट्टसूरि तेना जोवामां आव्या. एटले हरि (इंद्र) नी जेम विबुधो (पंडितो) ने वंदनीय तथा समताना निधान एवा साधुओथी सेवाता ते गुरुने जोतां भारे संतुष्ट थयेल ते पुरोहितनी कुवासनानो अंत आव्यो. त्यां क्षणवार ते स्तब्ध बनी गयो. एवामां गुरु विचारवा लाग्या के—'अहो! आ तो ते ज विप्र लागे छे के जे पोताना शास्त्र अने मंत्रोमां भारे बुद्धिमान्, राजमान्य अने यशस्वी तरीके प्रख्यात छे. वळी मदोन्मत्त गजराजे

राजमार्ग रोकतां भ्रमना वशथी जे जिनमंदिरमां आव्यो हतो अने अभिमानथी ओतप्रोत बनेल ए जिनेश्वरने जोईने सोपहास वचन बोल्यो हतो, परंतु अत्यारे अकस्मात् जिनमंदिरमां ए जिनभवनमां आव्यो अने आदरथी जिनबिंबने जोई पूर्वे करेला सोपहास वचनमां फेरफार करीने चित्तमां चमत्कृति करे तेवी स्तुति बोल्यो. अंतरमां अत्यंत आनंद पामीने ए प्रथमनुं स्तवन बीजी रीते बोल्यो ठीक छे, हवे आगळ शुं थाय छे ते जोवानुं छे.' एम चिंतवीने आचार्य महाराजे ते पुरोहितने बोलाव्यो के—'हे अनुपम बुद्धिना निधान! तने कुशळ छे? कहो, अहीं आववानुं शुं प्रयोजन छे?'

त्यारे पुरोहित विनीत भावथी बोल्यो—'हे पूज्य शुं हुं अनुपम बुद्धिनिधान छुं? जैन वृद्ध साध्वीनुं एक वचन सांभळ्या छतां तेनो अर्थ हुं न ज समजी शक्यो, ईतर शास्त्रोपर में विचार तो कर्यो छे, परंतु ते वृद्धाए कहेल चक्री-केशवोनो क्रम हुं समजी शकतो नथी, तो आप कृपा करीने तेनो अर्थ मने समजावो.'

एटले गुरु कहेवा लाग्या—'हे भद्र! हे सुकृतमति! दीक्षा अंगीकार करी अने आगमने अनुसरती केटलीक तपस्या आदरीने तुं जिनसिद्धांतना विचारनी व्यवस्था सांभळ. भारे विनयपूर्वक वंदनादि करतां ज जैन शास्त्रनो बोध थाय तेम छे, अन्यथा तेनुं रहस्य समजवामां न आवी शके, माटे उतावळ न करतां उचित क्रियानुं आचरण कर.'

ए प्रमाणे गुरुना कहेवाथी **हरिभद्र** पुरोहिते गृहस्थ-वेष तजी, लोच करी पोताना परिजनोनी समक्ष समस्त परिग्रहनो त्याग करीने गुरुनी पासे तेणे चारित्र लई लीधुं.

पछी गुरु महाराजे **हरिभद्रमुनि**ने कह्युं के—'हे भद्र! आगममां प्रवीण, बधी जैन साध्वीओमां अग्रेसर एवी ए याकिनी नामे महत्तरा साध्वी मारा गुरुनी भगिनी छे.'

त्यारे पुरोहित मुनि बोल्या—'नवा-नवा शास्त्रोमां प्रवीण छतां मूर्ख एवा मने अत्यंत सुकृतना योगे कुळदेवतानी जेम ए धर्म माताए प्रतिबोध पमाड्यो.'

पछी साधुधर्मना सारने जाणी महाव्रतनी धुराने धारण करवामां समर्थ एवा ते मुनिए प्रवर्तमान आगमोना सारने जाणवानी इच्छाथी गुरु महाराजने निवेदन करतां जणाव्युं के—'हे भगवन्! आटला दिवस तो अधिकरणशास्त्रने अनुसरतां अत्यंत चपळ थईने हुं सोम रसने खेंचवानी प्रवृतिने प्रगट न करतो होउं, तेम तमारा अपरिचयने लीधे बेहोश जेवो रह्यो, हवे धैर्यवान एवो हुं शुभना योगे लक्ष्मी अने प्रियजनना विरहनी व्यथाने न जाण तो श्रुतसागरमां अत्यंत मग्न चित्तवाळो बन्यो छुं.

एम समजीने गुरु महाराजे, धर्मशास्त्रना अध्ययनथी सर्वोपरी बनेल तथा धर्मोपदेश आपवामां कुशळ एवा **हरिभद्रमुनि**ने शुभ लग्ने पोताना पदे स्थापन कर्या. एटले पूर्वे थयेला **पादलिप्तसूरि** प्रमुखनी जेम कलिकाळमां युग प्रधानरूप एवा **श्री हरिभद्रसूरि** पोताना विहारथी पृथ्वीने पावन करवा लाग्या.

एवामां एक दिवसे संबंधी जनोना कर्कश वाक्योथी विरक्त थयेला, सेंकडो हथीयारोथी युद्ध करनारा छतां अत्यारे चिंताग्रस्त एवा पोतानी बहेनना बे कुमार पुत्रो बाह्यभूमिए तेमना जोवामां आव्या. एटले गुरुना चरण-युगलने वंदन करतां ते कहेवा लाग्या के—'घरथकी अमे विराग पाम्या छीए.'

त्यारे गुरु बोल्या—'जो मारापर तमे राग धरावता हो, तो विधिपूर्वक व्रत लई ल्यो.' पछी तेमनी भावना जोईने गुरुए **हंस** अने **परमहंस**ने दीक्षा आपी अने प्रमाणशास्त्री अने उपनिषद् संबंधी शास्त्र पाठमां कुशळ बनाव्या. (कुश्रूतना पाठमां पण शुद्ध बुद्धि धरनारा एवा ते बंने मुनिने तेमणे मुख्य न्यायशास्त्रना अभ्यासी बनाव्या.)

पछी एकदा बौद्धना तर्कशास्त्र संबंधी तत्त्वने जाणवानी इच्छाथी तेमणे गुरुना चरणे विनयपूर्वक मस्तक नमावीने नम्रताथी विनंती करी के—'हे भगवन्! दुर्गम्य बौद्धना आगमो जाणवा माटे अमारे सतत उद्यम करवानी

इच्छा छे, तो पोतानी बुद्धिनी परीक्षा करवा माटे अमने तेमना नगरमां जवानी अनुज्ञा आपो.'

एटले निमित्त शास्त्रना बळे हृदयमां उत्तर काळ जाणवामां आवतां आचार्य महाराज कहेवा लाग्या के-'हुं जोई शकुं छुं के आ तमारुं त्यां गमन हितकारक नहि थाय, माटे तमे ए विचार मांडी वाळो. वळी हे वत्सो! तमे आ ज देशमां कोई गुणी आचार्य पासे ते अभ्यास करो. अहीं पण केटलाक आचार्यो पर-आगमने जाणवामां भारे कुशळ छे, वळी **गुरुने विरहमां नाखीने कयो कुलीन शिष्य निरुपद्रव मार्गे पण गमन करे?** तो पाछु **दुर्निमित्त जाणवामां आवतां तो ते केम गमन करे?** माटे आ सोपद्रव कार्यमां अमे अनुमति आपता नथी.'

त्यारे **हंस** नामे शिष्य हसीने कहेवा लाग्यो—'आ आपनुं वात्सल्य युक्त छे, पण आपनी कृपाथी अमारामां तेवुं सामर्थ्य छे. बाल्यावस्थामां परिपालन करतां शुं तमे अमारुं बळ जाणी शक्या नथी? वळी समर्थजनोने मार्गमां के परनगरमां जतां अपशुकनो शुं करी शकवाना हता? चिरकाळथी जपेल आपना नामरूप मंत्र ते उपद्रवथी सदा अमारुं रक्षण करनार छे. मुश्केलीथी प्राप्त थाय तेवा दूर देशना शास्त्रो मेळववा माटे जवा अने आववाथी कयो गुणहीन कृतज्ञतानी क्षति करनार बने? माटे आ काम तो करवा लायक ज छे.'

एटले गुरुए ते बंने शिष्यने कह्युं के—**'हवे तमने हित कहेवुं ते उचित नथी, जे थवानुं हशे ते थशे ज. माटे उत्तम के निंदित जे तमने ईष्ट होय ते करो.'**

पछी **गुरुना गौरव अने उपदेशनी अवगणना करी** जैन लिंगने अतिशय गुप्त राखीने ते बंने बौद्धोना नगर भणी चाल्या, कारण के **भवितव्यतानो नियोग फरतो नथी.** केटलाक दिवस प्रयाण करतां ते बंने योगीना वेशे बौद्धमतनी राजधानीमां पहोंच्या अने अभ्यासनी भारे उत्कंठाथी ते बौद्ध मठमां गया. त्यां भणवा आवनारने भोजनादिकनी सगवड माटे एक मोटी दानशाळा हती अने बौद्धाचार्य त्यां शिष्योने इच्छानुसार निरंतर अभ्यास करावतो हतो. एटले अति सुख पूर्वक भोजन मळवाथी अत्यंत विषम बौद्ध शास्त्रोनो अभ्यास करतां, परमतना विद्वानोने दुर्गम्य एवा अर्थतत्त्वने पण तेओ पोतानी कुशळताथी सुखे जाणी शक्या. जिनमतना शास्त्र प्रत्ये बौद्धाचार्यनी हीनमतिथी जे दूषणो बतावावामां आव्यां, तेथी पोताना आगम प्रमाणोने लईने बारीकाईथी तुलना करतां तेनो त्याग करी अने जैन तर्कनी कुशळताथी बौद्धागमनुं खंडन करनारा शुद्ध हेतुओ तेमणे बीजा पत्रो पर लखी लीधा, एम जेटलामां तेओ एकांतमां लखता हता, तेवामां सख्त पवन लागवाथी ते पत्र तेमना हाथमांथी उडी गयुं अने ते बीजाओने हाथे चड्युं, एटले तेमणे ते बंने पत्रो गुरुनी आगळ जईने मूक्या. त्यां पोताना तर्कमां उदग्र दूषणो अने जैन संबंधी दूषणोना पक्षमां अजेय एवी हेतु दृढताने जोतां तेने पोताना मनमां मोटो भ्रम थई पड्यो. पछी भारे विस्मय पामतां बौद्धाचार्य कहेवा लाग्यो के—**'अहीं कोई जिनमतनो उपासक भणवा आवेल छे, नहि तो में दूषण आपेल शास्त्रनो फरी अन्य कोण निर्दोष करवाने समर्थ थई शके?** हवे एने शोधी काढवानो शो उपाय लेवो?' एम ते विचारमां पड्यो. कारण के **कोई वार आवा कार्यमां विद्वानोनी मति पण स्खलना पामे छे.** एवामां मिथ्या-आग्रह रूप समुद्रने उछाळवामां पूर्ण चंद्र समान तेने बुद्धि प्रगट थई. एटले तेणे पोताना शिष्योने बोलावीने कह्युं के—'द्वार आगळ रस्ता पर एक जिनबिंबने स्थापन करो. तेना शिर पर पोताना पादयुगल राखीने दरेक जने त्यांथी गमन करवुं; आ मारुं वचन जे प्रमाण न करे, तेणे मारी पासे अभ्यास करवो नहि. गुरुना ए वचन प्रमाणे ते बधा उच्छृंखल बौद्धोए वर्तन कर्युं.

एवामां ते **हंस** अने **परमहंस** खेदपूर्वक विचार करवा लाग्या के—अहो! आपणा पर मोटुं विकट संकट आवी पड्युं. जो ए बिंबना मस्तक पर भक्तिने लीधे आपणे पग न मूकीए, तो जाणवामां आवी जईशुं अने तेथी ए निर्दय मनना पाठक थकी फरी जीववानी आशा राखवी नकामी छे. सद्गुरु **श्री हरिभद्रसूरि**ना चरणमां आपणे बलिदान रूप थई जईए के जेमणे **पूर्वे भविष्यना अनिष्टनो विचार करीने आपणा गमननो प्रतिषेध करता हता. ते**

अविनयनुं आ उग्र फळ अत्यारे अवश्य आपणने उपस्थित थयुं; कारण के **भवितव्यता कदि टळी न शके.** एटले हवे तो जन्मने कलंकित करवानो अथवा तो मरण पामवानो अवसर आव्यो छे; परंतु हवे गमे तेम थाय, पण जिनबिंबना शिरे पग स्थापीने नरकफळने तो आपणे उपार्जन न ज करीए. आपणा पग सडी जाय के भेदाई जाय तो भले, पण जिनबिंबने तो ए लागवाना नथी ज. एटले हवे कोई रीते पण अहीं मरण उपस्थित थयुं छे, तथापि साहस धारण करी रहेवुं, वळी आपणी एवी दृढ प्रतिज्ञा छे के कार्य उपस्थित थतां प्रतिकार करवो ज.'

एम विचारी हाथमां खडी लईने सत्त्वशाळी एवा तेमणे जिनबिंबना हृदयपर उपवीत (जनोई)नुं चिह्न कर्युं अने पछी तेना शिरपर पग मूकीने ते चाल्या गया. पण ए काममां लक्ष्य राखता केटलाक बौद्धोए तेमने ओळखी (जाणी) लीधा. एटले भारे कुशळ एवा ते क्रोधना वशे रक्त लोचनथी तेमने जोवा लाग्या.

त्यारे बौद्धाचार्ये पुनः कह्युं के—'अहो! बौद्धमतना द्वेषीओनी हवे हुं बीजी परीक्षा करीश. माटे तमे बधा शांत थईने बेसी रहो. कारण के अत्यारे एकदम तेमनी सामे विरोध करवो उचित नथी. वळी बुद्धिनिधान पुरुषो देवना शिरे पग न ज मूके, तेथी एमणे उपवीतनुं चिह्न कर्युं अने ए कार्य पार पाड्युं. ए तेमनी दृढतानुं लक्षण छे. अन्य कोई दृढमति मनुष्य पण कर्मथी भय पामतां आवुं काम कदापि न ज करे. वळी परनगरथी अहीं आवेला विद्यार्थीओनी मारे कदर्थना करवी ज न जोईए, तेम करवाथी मने भारे अपयश प्राप्त थाय. कुपरीक्षाने लईने प्रतीकार न करवो.'

ए प्रमाणे आचार्यनुं वचन सांभळतां तथा गुरुए अटकाव्याथी ते बेसी रह्या. पछी ते बंने शिष्योना सुवाना घर उपर रहेला बौद्धोमांना एकने गुरुए दरेक दिशामां तपास राखवानुं काम सोंप्युं.

पछी देवगुरुनुं शरण लई परमेष्ठीनुं स्मरण करतां रात्रे ते बंने सुता, एटले माथे आपत्ति होवाथी निद्रा लेवाने न ईच्छतां पण असुलभ एवी निद्रा तेमने आवी गई. एवामां तेमनी उपरनी भूमिपरथी गुरुए नाना घडानी श्रेणि नीचे छोडावी. तेना खडखड अवाजथी विरस बोलता तेमणे तरत शय्यानो त्याग कर्यो. त्यां बीजा पण केटलाक शिष्यो सुता हता, ते बधा ओचिंता संभ्रमथी जागी उठ्या अने पोतपोताना कुळदेवतानुं नाम बोलवा लाग्या. तेमां ते बंनेए जिन नामनो उच्चार कर्यो, एटले त्यां एवो शब्द थयो के—'ठीक, आ बे जैन मतना लागे छे.' त्यारे मरणना भयने लीधे साहसथी एक उपाय तेमने हाथ लाग्यो. त्यां निरंतर केटलाक आतपत्र (छत्र) पडेला हता, तेमांथी बे छत्र लईने तेमणे पोताना शरीरे बांध्या अने उंचा मजलापरथी जमीन पर पडतुं मूक्युं, एटले जाणे कोमळ शय्यामांथी उठ्या होय, तेम कुशाग्रबुद्धिना प्रभावथी ते बंने कुशळपूर्वक अक्षत शरीरे उभा थया अने उतावळे पगले तरत ते नगरमांथी बहार नीकळी गया. बुद्धिबळना वशथी ते वखते त्वरित गमनना श्रमनी पण तेमणे दरकार न करी, कारण के **सारी रीते चलावेल मति कोने सहाय करती नथी?**

एवामां 'मारो मारो' एम बोलता बौद्धोना सुभटो तेमनी पाछळ लाग्या. ज्यारे ते तेमनी नजीकमां आवी पहोंच्या, एटले हंस पोताना कनिष्ठ बंधुने कहेवा लाग्यो—'हे भद्र! तुं सत्वर गुरु पासे जा अने प्रणाम पूर्वक मारुं मिथ्या दुष्कृत कहे, वळी तमे निषेध कर्या छतां अविनयथी जे में अपराध कर्यो, ते क्षमा करो, एम बोलजे. तेमज अहीं पासेना नगरमां **सूरपाल** नामे राजा के जे शरणे आवेलानुं रक्षण करे छे, अहीं नजीकमां ज तेनुं नगर नजरे देखाय छे, माटे तेनी पासे सत्वर पहोंची जा.' एम कही तेने सत्वर विसर्जन कर्यां छतां ते क्षणवार त्यां उभो रह्यो. एवामां सहस्रयोधी (हजारोनी साथे युद्ध करनार) **हंस** तो पोताना शरीरनी पण ममता मूकी दईने ते धनुर्धारीओ साथे युद्ध करवा लाग्यो पण तेमनी पासे बाणोनो जथ्थो सारो होवाथी **हंसनुं** शरीर चालणी जेवुं थई गयुं, एटले बाणोना प्रहारोथी शत्रुओए तेने जमीन पर पाडी नाख्यो अने तरत ते वंद्य रक्त प्राणरहित थई गयो. ते जोतां **परमहंस** मोह पाम्यो, छतां कोई दयाळु पुरुषना समजाववाथी तेने मूकीने उतावळे पगले चालीने ते **सूरपाल राजा**

पासे पहोंची गयो. **परमहंस** तेना शरणे आव्यो के तरत पाछळ लागेला हजारो शत्रु सुभटो त्यां आवी पहोंच्या अने राजाने कहेवा लाग्या के—'हे राजन्! अहीं आवेल शत्रु अमने सोंपी दे.'

एटले राजाए जणाव्युं के—'मारा भुजपंजरमांथी एने बलात्कारे कोण लई जाय तेम छे? आतो न्यायी अने कळावान् छे, परंतु अन्यायी होय, तो पण ए तमने न सोपुं.'

त्यारे बौद्ध सुभटो कहेवा लाग्या के—'अरे! राजन्! एक परदेशी पुरुषनी खातर कोपायमान थयेल अमारा स्वामीना हाथे पोताना धन, सुवर्ण, राज्यादिक शा माटे गुमावे छे?'

राजाए कह्युं—**'मारा पूर्वजो जे महान् व्रत आचरी गया छे, ते व्रत आचरतां मने मरण मळे के हुं जीवतो रहुं, तेनी मने दरकार नथी,** परंतु शरणागतना रक्षणरूप व्रतने तो हुं कदि मूकनार नथी. वळी अहीं एक बीजो उपाय बतावुं, के आ प्रमाणशास्त्रमां कुशळ अने बुद्धिमान् छे, तो वादनी रीते एनो पराभव करी जय के पराजयमां उचित लागे, ते करो.'

एम सांभळतां वचनमां विचक्षण एवो तेमनो अधिपति कहेवा लाग्यो—'भले, ए अमने ईष्ट छे, परंतु एणे अमारा बुद्धदेवना शिरे पग मूकेल छे, तेथी एनुं मुख अमारे जोवुं नथी. पछी जो एनामां शक्ति होय तो ए सत्वर अमारा शास्त्र प्रमाण हेतुओने हठावे, एम करतां जो एनो जय थाय, तो भले सुखे ए पोताना स्थाने चाल्यो जाय अने पराजित थाय, तो वंध्य छे.'

हवे त्यां एकांतमां रहीने घटना मुखे वाद करनार बौद्धोनी शासनदेवी बोलती हती अने अहीं **श्री हरिभद्रसूरि**नो पोते शिष्य हतो, ते बंनेनो दृष्टिमेळाप तो थतो ज न हतो, हवे परमहंस विचारे छे के- सुगतमतना आचार्यो पण छळ कपटमां ज निष्ठावाळा होय छे. आ साचुं छे. नहितर मारी आगळ एमनी वाग्धारा न तूटे ए न बने.

पछी घणा दिवस वाद चालतां सुज्ञ परमहंस कंटाळी गयो. एटले तेणे विचार कर्यो के—'मोटुं संकट आवी पडतां पोताना गच्छनी शासन देवता **अंबादेवी**नुं स्मरण करवुं जोईए. एम धारी तेनुं स्मरण करतां **जिनमतनुं रक्षण करवामां सदा लब्धलक्ष एवी ते देवी सभामां आवीने तेने कहेवा लागी के**—'हे वत्स! महा सत्त्वशाळी ए दुष्ट पुरुषथी मुक्त थवानो उपाय सांभळ. बौद्धनी शासनदेवी **तारा** अहीं निरंतर बोले छे, तेथी तेनुं वचन स्खलित थतुं नथी. तारा विना कयो सत्त्वशाळी पुरुष देवताओनी साथे वाद करवामां टकी शके? माटे असाधारण प्रतिज्ञा करनार ते दंभवादीने आजे कही दे के जे कंई बोलवुं होय, ते समक्ष आवीने बोलवुं, ते विना वाद केम थई शके?' एटले हमणां ज तेना बळनो नाश करी प्रगट रीते बोलतां तारो ज विजय थशे.'

एम सांभळतां **परमहंस** बोल्या के—'हे जननी! तारा विना अहीं मारी अन्य कोण संभाळ करे तेम छे?' एम योग्य उत्तर आपी बीजे दिवसे तेणे देवीना आदेश प्रमाणे कर्युं. त्यारे प्रतिवादीए मौन धारण करतां तेणे पडदानुं वस्त्र खेंचीने दूर कर्युं अने पगवती विपरीत करनार ते घटना भूकेभूका करी नाख्या. पछी तेणे दंभवादीने कह्युं के- -'तमे अधम पंडितो छो.' एवामां राजाए तेमने जणाव्युं के—'एना वधने ईच्छनारा तमे शत्रुओ ज छो. न्यायथी विजय पामनार अने असाधारण चारित्रवान् एवो आ साधु पुरुष शुं वध करवा लायक छे? कदाच तमे एने कुनयवादी बोलशो, तो पण हुं तमारुं ते वचन सहन करनार नथी. माटे सांभळो—'समरांगणमां मारो पराभव करीने जे एने ले, ते अचल समृद्धिवान ते भले लई जाय.' एम बोलतां राजाए नेत्रसंज्ञाथी ते विद्वानने भागी जवानो संकेत कर्यो. एटले तेणे पलायन कर्युं, कारण के मरणना भयथी आकुळ व्याकुळ थयेल कोण भागी न छूटे? पछी उतावळे पगले बहार जतां एक धोबी तेना जोवामां आव्यो. एवामां घोडस्वारो पोतानी पाछळ नजीकमां आवी पहोंच्या. तेथी तेणे धोबीने कह्युं के—'आपत्ति आवे छे, माटे भागी छूट.' एम पोतानी चालाकीथी धोबीने

भगाडतां ते पोते वस्त्र धोवा बेसी गयो. तेवामां एक घोडेस्वारे आवीने तेने पूछ्युं के—'आ रस्ते कोई पुरुष नीकळ्यो छे?' त्यारे तेणे सुभटने ते धोबी बताव्यो. एटले तरत तेणे अश्व दोडावी पेला धोबीने पकडीने ते पोताना सुभटोने सोंप्यो, पछी तेना कहेवाथी लश्कर बधुं पाछुं वळ्युं.

अहीं प्रगट रीते पोताना बुद्धिबळथी निर्भय थईने **परमहंस चित्रकूट** नगर भणी चाल्यो अने केटलेक दिवसे त्यां पहोंच्यो? कारण के **गुरुना चरणकमळनो समागम क्यांथी?**

एवामां पोताना स्वामीने कार्यसिद्धि समजीने केटलाक बौद्ध सुभटोए ते राजाने शांत कर्यो कारण के पोते बलिष्ठ छतां अल्प कार्यमां दृढ सहायने कोण तजी दे?

पछी **परमहंस** पोताना गुरुना संगमरूप अमृतनुं पान करतां ते शिर नमावीने गुरुना पगे पड्यो. एटले तेमणे तेने दृढ आलिंगन आपतां संतुष्ट कर्यो. त्यारे आंखमां आंसु लावतां ते तरत कहेवा लाग्यो के—

'हे भगवन्! आपना ते वचन मने याद छे के परदेश जतां अमने जे वचनथी निषेध कर्यो हतो. हवे कुविनीत शिष्यना मुखथी वीतक वृत्तान्त सांभळो; एम कहीने पोताना ज्येष्ठ बंधुना अवसान सुधीनुं चरित्र तेणे कही संभळाव्युं. एवामां बोलतां-बोलतां तेनुं हृदय भेदाई गयुं, अहो! **बलिष्ठ मोह प्राणने हरे छे**; ते जोतां **हरिभद्रसूरि** चिंतववा लाग्या के—'अहा! आ मने केवुं संकट उपस्थित थयुं अने अनुपम चारित्रवाळा एवा वीतरागनी भक्ति साधतां पण मने आवी निरपत्य दशा प्राप्त थई? निर्मळ कुळमां जन्म पामेला, विनीत, यम, नियमादिकमां तत्पर, प्रवीण, परमतनो विजय करवाना प्रगट चातुर्यरूप परिमलथी शोभित, विद्वानोने माननीय तथा परदेशमां रहेला बौद्धमतना शास्त्र जाणवानी भावनाथी दूर गयेला एवा ए बंने शिष्यो मारा दुर्भाग्ये मरण पाम्या. हा! दुरंत कर्मने धिक्कार छे! हुं तेमना विनय के समगुणने याद करुं के गुरुचरणनी तेमनी अद्‌भुत सेवा संभारुं? अहो! हुं मारा तेवा प्रकारना मंद भाग्यने लीधे तेमनी परिचर्या जोई शक्यो नहि. मुखमां कवल आपीने में तेमने उछेरी मोटा कर्या अने पक्षीना बच्चांनी जेम हजी ते प्रबळ पक्ष (पांख) रहित हता, वळी सपक्षतानो अवसर आवतां तो ते बीचारा दृष्टिपथथी अदृश्य थई गया. अहो! आ देह सुचरित्ररूप काष्ठने बाळवामां उग्र अग्निनी ज्वाळा समान तथा कलुषताना निवासरूप छे. ए सुशिष्योनो भारे विरह आवी पडतां हवे मारे शुं करवुं? मारा चित्तथी शांतिना प्रकार बधा नष्ट थवाथी हवे कई अधिकता माटे मारे धीरज धरवी? ललित वचनवाळा ए बंने शिष्यो विना मारा प्राण कंजुस जेवा बनी गया छे.''

ए प्रमाणे विचार करतां पोताना वंशने लईने **हरिभद्रसूरि**ने बौद्ध लोकोपर क्रोध उत्पन्न थयो. पोते महान् छतां ते स्वजन संबंधी कार्य सुविहित शिष्य वडे सहज सधाय तेवुं न हतुं. पछी ते आचार्य कहेवा लाग्या के—'विनयमां सिंह समान शिष्योनी सेनाथी, अद्‌भुत चित्तनी निवृत्तिनो नाश थवाथी अपराधी एवा ते बौद्धोने में गृहस्थपणामां पूर्ण पराभव पमाड्या छे; वळी पोतानुं समस्त बळ वापरीने शत्रुओनुं निवारण करवानुं जे शास्त्रविहित न्यायमां बतावेल छे ते पण युक्त ज छे; कारण के **शल्यसहित मरण पामे, तेनी परभवमां सद्‌गति न थाय,** एम जिनशासनमां पण बतावेल छे. वळी शल्यनो उद्धार न करवो, ते मोटामां मोटो दोष छे; माटे बहेनना पुत्रनो घात करवाथी उत्पन्न थयेल रोषने लीधे बौद्धोनो मारे नाश करवो.' एम अंतरमां दृढ निश्चय करी, गुरुने पूछीने सहाय विना **हरिभद्रसूरि** चाली नीकळ्या. अने हृदयमां संयम अने अनुकंपाने क्षीण बनावता ते **सूरपाल** राजाना नगरमां जई पहोंच्या, त्यां सत्वर ते राजा पासे आवी, पोते जैनलिंगने प्रगट राखी ते धर्मलाभरूप आशिषथी राजाने अभिनंदन आपतां कहेवा लाग्या के—'हे शरणागत वत्सल! अने सत्त्वभंगथी रहित एवा हे राजन्! तुं मारुं एक वचन सांभळ—

ते मारा **परमहंस** शिष्यने बचाव्यो. हे राजेंद्र! तारा ए साहसनी हुं केटली प्रशंसा करुं? वळी ए

शरणागतनुं रक्षण करवा माटे लाखो सुभटोनी तें अवगणना करी, आवुं उन्नतिकारक बळ बीजुं कोण बतावी शके? हुं सुज्ञजननी रीतिथी उन्नत प्रमाण युक्त युद्ध करवानी वृत्तिथी नीकळ्यो छुं अने बौद्धमतना अतिशय प्रवीण पंडितोने जीतवानी मारी इच्छा छे.'

त्यारे **सूरपाल** राजाए कह्युं के—'हे महात्मन्! विजयने माटे तमे कहो छो, ते युक्त छे, परंतु तीडना समूहनी जेम ते घणा होवाथी तथा बळ वडे वाद करवामां चालाक एवा ते जीतवा दुष्कर छे; परंतु अहीं कंईक प्रपंच रचुं के जेथी तमारो शत्रुवर्ग पोते नाश पामे पण मारुं वचन तमारे प्रतिकूल न गणवुं. वळी सावधान थईने तमे मारुं एक वचन सांभळो—तमारामां कोई अजेय शक्ति छे?'

एटले **हरिभद्र मुनीश्वर** बोल्या—'मने कोण जीती शके तेम छे के जेने अंबिकादेवी सहाय छे?' ए प्रमाणे वचन सांभळता राजाए बौद्ध-नगरमां पोतानो दूत मोकल्यो. एटले वचनमां विचक्षण अने प्रपंच रचवामां प्रवीण एवो ते दूत सत्वर ते नगरमां पहोंच्यो. त्यां बौद्धगुरुने प्रणाम करतां तेणे निवेदन कर्युं के—'हे भगवन्! **सूरपाल** राजा भारे भक्तिने लीधे साक्षात् सरस्वती समान एवा आपने विज्ञप्ति करे छे के बौद्धमत साथे विरोध धरावनार एक पंडित मारा नगरमां आव्यो छे. आप त्रणे भुवनमां प्रकाशमान छतां आ वळी वादी शब्द केवो? ए बाबत अमने भारे लज्जा उपजावे छे, माटे तमे एवो उपाय ल्यो के जेथी ते पराजय पामीने पोते मरणाधीन थाय. अने तेथी अन्य कोई आवीने ए प्रमाणे अभिमान न धरावे.'

त्यारे अभिमान अने क्रोधने वश थयेल बौद्धगुरु प्रमोदथी कहेवा लाग्यो आ जगतमां समस्त देशना तमाम पंडितोने में परास्त कर्या छे, छतां जिनसिद्धांतमां विशारद छतां मूर्ख कोई जैन वाचाळ पंडित त्यां आवेल हशे, माटे गहन विकल्पसमूहनी कल्पनाओथी हुं तेनो वचनमद उतारीश आ बाबतमां शुं ते पोते मरणनी प्रतिज्ञा करशे? हे चालाक! दूत! ते तो तुं ज कही दे!

एम सांभळतां दूत बोल्यो—'आपनी आगळ हुं शुं बोली शकुं? छतां आपना चरण-कमळना प्रसादथी शुं मारुं अद्‌भुत शुभ नहि थाय? मारी अल्प मति तो एम चाले छे, छतां तमारे अहीं विचार करवानो छे. त्यां एवा प्रकारनी शरत करवी के जे पराजित थाय, ते तपेल तेलना कुंडमां प्रवेश करे. एटले—'भले, एम थाओ' ए रीते पोतानो अभिप्राय बतावतां प्रसन्न थयेल गुरुए ते दूतनी प्रशंसा करी, तेम छतां बुद्धिशाळी अने बोलवामां प्रवीण एवा दूते ते बाबतने वधारे दृढ करवा माटे फरीने पण कह्युं के—'जो के ए पण तमारे कबूल छे, छतां धृष्टताथी फरी हुं आपने कंईक विनंती करवा धारुं छुं, ते सांभळो—आ वसुमती रत्नगर्भा कहेवाय छे, तेथी तेमां अतिशय प्रगल्भ कोई विद्वान नीकळी आवे अने तमे पराजित थाओ, तो ए पणमां तमारी अवज्ञा न थाय, ए विचारवानुं छे, जो के ए मारी कल्पना तो मात्र आकाशना पुष्प समान ज छे. तमारो जय थाय, तेथी ज अमे सनाथ रहीए, तो पण लांबो विचार करवानी जरूर छे.'

त्यारे बौद्धगुरु बोल्यो—'तमने आवो भय केम लागे छे? एवो मिथ्या भ्रम कोने थाय? कारण के चिरसेवित हुं समर्थ छतां तमने परना विजयनी शंका केम थाय छे? प्रमाणशास्त्रमां प्रवीण एवो कयो विद्वान मारी सामे टकी शके तेम छे? हुं तेना मदरूप रोगने दूर करीश, नहि तो हुं मारुं नाम तजी दईश. वादीओना पौरुषने परास्त करनार एवा मारुं आ वचन हे दूत! तुं तारा स्वामीने जईने संभळावजे अने परवादीना लाभथी संतुष्ट थयेला अमे आ तारी पाछळ आव्या समजजे.'

ए प्रमाणे बौद्धगुरुनुं वचन सांभळी मनमां हर्ष पामतो दूत पोताना नगरमां आव्यो अने बौद्धगुरुने छेतरी आववाना संदेशाथी तेणे **सूरपाल** राजाने वधाव्यो, पछी त्रण चार दिवसमां बौद्धगुरु पण त्यां आव्यो अने समर्थ शिष्योथी सेवातो ते पूर्वनी शरत प्रमाणे वाद करवा तत्पर थयो. बौद्ध गुरुए आ वखते विचार कर्यो के—'आ

एकने जीतवानी खातर हुं **तारादेवी**नुं शुं स्मरण करुं? ए शुं करवानी हती? स्मरण करतां पण जे देवी पराजित थयेल मारा शत्रुनो सत्वर घात करनार नथी' एम चिंतवी, वाद सभामां **हरिभद्रसूरि** पासे आवीने तेणे प्रतिपादन कर्युं के—'आ बधुं अनित्य छे. **सत्** ए शब्द मात्र व्याकरणथी सिद्ध छे. आ पक्षमां हेतु एवो छे के जगतना सर्व पदार्थो जलधर (मेघ)ना जेम अनित्य (क्षणिक) छे.'

एम मूल पक्ष तेणे प्रतिपादन करतां प्रतिवादी जैनाचार्य सम्यग् विचार करीने कहेवा लाग्या के—'जो आ बधुं विनश्वर छे, तो स्मरण अने विचारनी संतति केम चाली शके? वळी पूर्वे आ जोयेल छे, एवी विचारपरंपरा केम घटी शके?'

त्यारे बौद्धगुरुए जणाव्युं के—'अमारा मतमां विचारसंतति सदा तुल्य अने सनातन होय छे. ते संततिमां एवा प्रकारनुं बळ रहेल छे के जेथी अमारो व्यवहार ते ज प्रमाणे चाली शके छे.' एटले जैनसूरि प्रमोदपूर्वक कहेवा लाग्या के-'जो ए मतिसंतति अविनश्वर छे, तो ते सत् एटले क्षणिक नथी, एम सुविदित थयुं. अने ते संतति ध्रुव सिद्ध थवाथी तारुं ए वचन तारा ज सिद्धांतथी विरुद्ध पड्युं, तेथी पोताना सिद्धांतमां पण अत्यंत मूढता धरावनार एवो तुं ज प्रतिपादन करवा ईच्छे छे, ते विद्वानोने कोई रीते मान्य थई शके तेम नथी, माटे चिरकाळथी लागेल समस्त विनश्वरपणानी तारी प्रतिज्ञाने मूकी दे.' एम वचनथी सूरिए निरुत्तर करेल बौद्धाचार्य मौन रह्यो एटले लोकोए 'आ पराजित थयो' एम बोलतां तरत ज तपेला तेलना कुंडमां पड्यो. त्यां बौद्धगुरुना अकाळ मरणथी तेमनामां कोलाहल थई पड्यो अने ए अपमानथी लज्जा पामी भयातुर अने निर्नाथ बनेला तेना शिष्यो भागवा लाग्या. एवामां ते गुरुनी जेम भारे चालाक एक वदनमति नामनो बौद्धशिष्य वाद करवा आव्यो, एम पांच-छ प्रवीण शिष्यो एक पछी एक वाद करवा आव्या. ते बधाने **हरिभद्र महाराजे** जीती लीधा, एटले पोताना गुरुनी जेम ते पण तेलकुंडमां पडीने मरण पाम्या, त्यारे बौद्धशिष्यो क्रोधना वशे प्रसरता दर्पनो नाश थतां पोतानी शासनदेवीने कर्कश वचनथी उपालंभ आपतां बोल्या. कारण के **अधम दिवसोमां देव देवी याद आवे छे**—'हे राक्षसी! अमारा गुरुए (राजाए) जे तारी सतत पूजा करी, ते वृथा गई. **हे तारे!** ते कुमरणथी अत्यारे मृत्यु पामतां तुं क्यां गई हती? चंदन, केसर, कुंकुम, विलेपन, धूप अने श्रेष्ठ भोग तथा सुगंधि पुष्पमाळाथी तारी जे पूजा करी, ते तो एक पत्थरनी पूजा जेवी थई. एम सारी रीते पूजवामां आवेल तारा जेवी देवी आवा संकट समये जो सहायता न करे, तो देहधारी मनुष्यने सारी वस्तुनो भोग धरावावामां आवे ते शुं खोटुं छे?'

आ तेमना उपालंभ वखते **तारादेवी** नजीकमां रहीने बधुं सांभळती हती. शिष्योना अनुचित वचनो सांभळतां पण तेमना पर क्रोध न लावतां दया बतावती ते कोमळ वचनथी कहेवा लागी के—'हे शिष्यो! तमे अतिशय शोक लावी दीन जेवा बनीने जे अनुचित वचन बोलो छो, ए कुवचननो पण अत्यारे हुं दरकार करती नथी, पण तमे मारुं एक वचन सांभळो—ते बे जैनशिष्यो बहु दूर देशथी अहीं परसिद्धांतनो अभ्यास करवा आव्या, तेमने जिनशिरपर पग मूकाववाना पापमां तमे पाडता हता. छतां तेमणे पोतानुं सत्त्व छोड्युं नहि. ते कार्यमां सावचेती वापरी प्रतिकार चलावतां ते सत्वर भागी छूट्या. ते न्यायमार्गना पथिक महामुनि हता. तेमना प्रत्ये आचरेल ते दुष्कृतनो आ तमारा गुरुने बदलो मळ्यो, तेथी में तेनी उपेक्षा करी. एटले ते पोताना पापथी ज विनाश पाम्यो छे. हवे जेओ एनो पक्ष करशे, तेमनी पण हुं सदा उपेक्षा करीश, माटे तमे ए बाबतनो शोक तजी, धीरज धरीने पोतपोताना स्थाने चाल्या जाओ. हुं तमारा संकटने दूर करती रहीश. तमे मारा संतान समान छो, तेथी तमारापर मारे कोप शो करवो?' एम कहीने ते देवी अदृश्य थई गई अने शिष्यो पोतपोताना देशमां चाल्या गया. त्यां ए वृत्तान्त सांभळतां बौद्धमतना वृद्ध साधुओए अन्य अन्य शिष्योमां संतोष मानी लीधो.

अहीं केटलाक एम कहे छे—'महामंत्रना प्रभावथी **श्री हरिभद्रसूरि**ए बौद्धमतना साधुओने खेंचीने तप्त

तेलमां होम्या.'

एवामां **श्री जिनभट्टसूरि**ए पोताना शिष्यनो आवो प्रचंड कोप सांभळी ते कोपने उपशांत करवा माटे तेमणे विचार कर्यो. पछी बे मुनिने कोमळ वचनथी शिक्षा आपी, तेना क्रोधनी शांति माटे तेमना हाथमां समरादित्यना वृतान्तना बीजरूप त्रण गाथा आपीने तेमने मोकल्या एटले ते बंने **सूरपाल** राजाना नगरमां आव्या अने **श्रीहरिभद्रसूरि**ने मळ्या. पछी गुरुए जे ईष्ट निर्देश कर्यो हतो, ते तेमणे **आ. हरिभद्र महाराज**ने संभळावतां जणाव्युं के—'तमारा क्रोधरूपी वृक्षना फळना उदाहरण समान आ त्रण गाथा तमे धारी ल्यो.'

ए प्रमाणे बोलतां तेमनी पासेथी गुरुए लखेल गाथा लईने **आ. हरिभद्रसूरि** पोते भक्तिपूर्वक वांचवा लाग्या, ते गाथाओ आ प्रमाणे हती—

गुणसेण अग्गिसम्मा सींहाणंदा य तह पियापुत्ता ।
सिहि-जालिणि माइ-सुआ धण-धणसिरि तह य पइभज्जा ।।१।।
जय-विजया य सहोअर धरणो लच्छी य तह पइ-भज्जा ।
सेण-विसेणाय पित्तिय-उत्ता जम्मम्मि सत्तमए ।।२।।
गुणचंदवाणमंतर समराइच्च गिरिसेण पाणोय ।
एगस्स तओ मुक्खोऽणंतो अन्नस्स संसारो ।।३।।

*अर्थात् - प्रथम भवमां गुणसेन अने अग्निशर्मा, बीजा भवमां सिंह अने आनंद पिता पुत्र थया, त्रीजा भवमां शिखी अने जालिनी माता पुत्र थया, चोथा भवमां धन अने धनश्री पति पत्नी थया, पांचमां भवमां जय अने विजय बे सहोदर थया, छट्ठा भवमां धरण अने लक्ष्मी पति पत्नी थया, सातमा भवमां सेन विषेण नामे बंने पित्राई बंधु थया, आठमे भवे गुणचंद्र अने व्यंतर थया अने नवमे भवे गुणसेन ते समरादित्य थयो अने अग्निशर्मा ते **गिरिसेन** नामे मातंग पुत्र थयो. समरादित्य संसारथी मुक्त थयो अने गिरिसेन अनंतसंसारी थयो.*

ए प्रमाणे गाथाओ वांचता अने तेनो अर्थ विचारतां कुशलमति **आ. हरिभद्रसूरि** चिंतववा लाग्यां के- 'एक वनवासी मुनिना पारणाना भंग निमित्ते पण भवचक्रमां केटलुं बधुं वैर चाल्युं; त्यारे अहीं तो कोपरूप दावानळनी प्रचंड ज्वाळाथी अंध बनीने में बौद्धमतना लोको साथे प्रपंच रच्यो अने तेमने मारी नाख्या, तेथी विरतिनुं अतिक्रमण करी चिरकाळथी उद्भवेल मिथ्या-आग्रहना शास्त्रोथी जाणे सम्यग् ज्ञान खोई बेठो होउं, तेम सुकृतना योगे जिनमतनुं ज्ञान धारण करीने पण में मिथ्यात्वने अवकाश आप्यो ए मारा जीवने भविष्यमां नरकगमनना एक दुष्ट दोहदरूप थई पडशे.'

ए रीते पोताना आत्माने प्रतिबोध आपी तेमणे मुनिओने प्रगट रीते जणाव्युं के—'अहो! आ जगतमां वात्सल्यने धरावनार गुरुना शुं कोई रीते अनृणी (ऋणरहित) थवाय? के जेणे नरकगतिनी समीपे जतां मने बचाववानी इच्छाथी आवो उपाय बताव्यो' एम कही विरोधनो मन, वचन अने कायाथी तद्दन त्याग करी, ते राजानी अनुमति लईने गुरुमहाराजने मळवानी मोटी इच्छा धरावता **आ. श्री हरिभद्रसूरि** त्यांथी चाली नीकळ्या अने विलंब विना शीघ्र प्रयाण करतां ते अल्पकाळमां श्री गुरु पासे आवी पहोंच्या. त्यां गुरुना चरणे शिर नमावीने ते गद्गद् गिराथी कहेवा लाग्या के-,'हे भगवन्! गुणीयल शिष्योना मोहने लीधे हुं आपना चरण-कमळनी सेवाथी विमुक्त थयो. हवे शास्त्रविहित प्रचंड प्रायश्चित्त आपीने सत्त्वर मारा ए पापनी शुद्धि करो अने अविनयना स्थानरूप **आ कुशिष्यपर** आप पूर्ण प्रसाद करो.'

त्यारे गुरुए तेमने गाढ आलिंग्न आपी, करेल पापने योग्य प्रायश्चित्त तप बतावतां जणाव्युं के—'अहो! पाप अने सुकृत साधवामां समर्थ एवा **हरिभद्र** समान शिष्यो क्यां छे?

पछी ते उग्र तपथी पोताना शरीरने शुष्क बनाववा लाग्या, छतां ते बंने शिष्योनो वियोग, सागरने ज्वाळा युक्त वडवानलनी जेम तेमना मनने अत्यंत दग्ध करी रह्यो हतो, त्यारे अतिशय संताप पामता **हरिभद्रसूरि**ने धीरज आपवा **अंबादेवी** आवीने मधुर वचनथी समजाववा लागी—'हे ऋषि! गृह, धन, पुत्र, परिवारना त्यागी एवा तमने आ विरहनो संताप केवो? जिनसिद्धांतना विचित्र शास्त्रोना सेवनथी निपुण अने शुद्धमति धरावनार हे मुनि! पोताना कर्मनो विपाक अवश्य फळ आपनार नीवडे छे, तो पोतानुं अने परनुं गणवानुं शुं छे? ए तो विद्वानोने एक प्रकारनी विडंबना छे, माटे गुरुपदनी सेवाथी अभिराम बनी शुद्ध तपस्याथी तमारा जन्मने सफळ करो; के जेथी शरद्ऋतुना मेघनी जेम तमारुं ए कर्म सत्वर क्षीण थई जाय.'

त्यारे **आ. हरिभद्रसूरि** बोल्या—'मारा जेवा जडमति शिष्यना अवलंबनरूप हे देवी! ए निर्मळ क्रियापात्र बे शिष्यना मरणथी मारा मनने कंई दुःख लागतुं नथी, परंतु मारी निरपत्यता जोतां मने भारे दुःख लागे छे. शुं निर्मळ गुरुकुळनी पण माराथी समाप्ति थई जशे?

एम सांभळतां **अंबादेवी** कहेवा लागी—'हे भद्र! मारुं एक सत्य वचन सांभळ. कुळवृद्धिनुं पुण्य तारे माटे निर्माण थयेल नथी. शास्त्रसमूह एज तारा संततिरूप छे.' ए प्रमाणे बोलतां देवी अंतर्धान थई अने तेना वचनथी **आ. हरिभद्रसूरि**ए शोकनो त्याग कर्यो.

पछी पोताना मनमां मोटा विरोधनो विनाश करनार अने मोटा प्रसादथी गुरुए मोकलेल पेली त्रण गाथानो विचार करीने तेमणे प्रथम **समरादित्य**नुं चरित्र बनाव्युं अने त्यार पछी कुशाग्रबुद्धि एवा तेमणे जिनसिद्धांतना श्रेष्ठ उपदेशथी रमणीय एवा **चौदसें बीजा ग्रंथो रच्या**, एटले सूरिए एने ज पोतानी संतति मानी लीधी. वळी संतशिरोमणि तथा हृदयने अतिशय अभिराम एवा बे शिष्योना विरह-तरंगथी शरीरे संताप पामेला एवा तेमणे पोतानी बधी कृतिओने विरहपदथी अंक्ति करी. पोतानुं समस्त चरित्र रच्युं. (अर्थात् प्रत्येक ग्रंथनी नीचे भव विरह शब्दनो प्रयोग कर्यो.) पछी ए ग्रंथसमूहना विस्तार माटे हृदयमां थती चिंताथी ग्रस्त थयेला तेमणे सामान्य जनमां वसनार एक **कार्पासिक** नामना भव्य जनने जोयो. एटले शुभ शकुनना योगे तेमणे पोताना शास्त्रोने विस्तारवा माटे ते भव्यने योग्य विचारी लीधो. पछी प्राचीन भरतादिनुं चरित्र संभळावतां संतुष्ट थयेला तेने ज्ञानी आचार्य कहेवा लाग्या-'आ लोक संबंधी जे काव्यादि शास्त्र छे, ते रासभना लींडा जेवा मात्र उपरथी सारा लागे छे, पण तेने फोडतां तो सर्व तुसबुसभुसथी व्याप्त होय छे.'

त्यारे वणिक बोल्यो—'एनुं प्रगट रीते विवेचन करो.'

एटले आचार्य कहेवा लाग्या—'अहो! असत्यथी भरेला एवा ईतिहासमां गमे ते रीते लोकोनी प्रतीति अधिक लागे छे.' एम कही तेनी मूढता दूर करवा माटे विषधर (सर्प)ने मंत्रनी जेम तेना मिथ्याग्रहरूप विषप्रसारने दूर करवामां समर्थ एवी पांच धूर्तकथा तेने गुरुए कही संभळावी. जे सांभळतां जैनधर्म पर तेने श्रद्धा प्रगट थई. पछी तेणे जणाव्युं के-'हे भगवन्! दान प्रधान जैनधर्म द्रव्य विना शी रीते आराधी शकाय?'

त्यारे आचार्य बोल्या के—'हे भद्र! धर्म आराधवाथी तने पुष्कळ द्रव्यनी प्राप्ति थशे.'

एम सांभळतां वणिक कहेवा लाग्यो—'जो एम होय, तो हुं मारा परिवारसहित आपना कह्या प्रमाणे करुं.'

एटले गुरुए कह्युं—'तुं सावधान थईने सांभळ, आजथी त्रीजे दिवसे कोई परदेशी वेपारी गामनी बहार घणा करियाणा लईने आवशे, तेनी पासे जईने ते बधी कींमती वस्तुओ तारे हिंमतथी वेचाती लई लेवी, पछी वेपार करतां भारे सुकृतना उदयथी तने अगणित धन प्राप्त थशे. वळी **जे में शास्त्रो रच्यां छे, ते लखावीने तारे पुस्तकारूढ करवा अने योग्य साधुओने ते आपवा के जेथी सर्व लोकोमां प्रचार पामे.'**

आथी सुकृतिशिरोमणि एवा ते वणिके गुरुनुं अलंघ्य वचन समजीने ते प्रमाणे कर्युं. एटले भवसागरथी तारवामां नाव समान ते शास्त्रो प्रसिद्ध थईने प्रवृत्त थयां. वळी आचार्य महाराजे त्यां अन्य जनोने प्रतिबोध आपीने ते एक ज स्थाने उंचा तोरणयुक्त चोराशी विशाळ जिनमंदिर कराव्या, तेमज चिरकाळथी लखेल, विशीर्ण थई गयेल, वर्णविच्छेद पामेल एवा **महानिशीथ शास्त्र के जे जैनधर्मना उपनिषदरूप, तेनो ते कुशळमतिसूरिए पुस्तकारूढ करीने उद्धार कर्यो.**

पछी श्रुत परिचयथी पोताना आयुष्यनो अंत आवेल जाणीने गुरुनी पाटे आवेला आ. श्री हरिभद्रसूरि म. गच्छविषयनी निराशानो उच्छेद करी, विशेष वैराग्यथी विभूषित थयेल **श्री हरिभद्र महाराज** पोताना गुरु पासे आव्या. निर्मळ अनशन आदरी, अंतिम निर्यामणा करावनारना वचनथी हृदयनी सर्व पीडाने विस्मृत करी नंदनवननी जेम समाधिमां स्थिर रहेतां प्रांते ते स्वर्गसुखना अधिकारी थया.

ए प्रमाणे आश्चर्यजनक, मोटा बुद्धिमानोने पण पूजनीय तथा मारा जेवा अल्पमति जीवोने जीवन आपनार पाथेय (भाता) समान एवुं **आ. श्री हरिभद्रसूरि महाराजनुं** अद्‌भुत चरित्र हे विबुध जनो! तमे सांभळो अने साक्षात् तेनो अभ्यास करो. ए चरित्र यावच्चंद्रदिवाकरौ जयवंत रहो.

आ. श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम-लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना विचारपर लेतां, **आ. श्री प्रद्युम्न मुनीश्वर**ना हाथे शोधायेल श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **आ. श्री हरिभद्रसूरि**ना चरित्ररूप आ नवमुं शिखर थयुं.

हे **प्रद्युम्न** ब्रह्मचारी! तमे पुरुषोने विषे उत्तम होवाथी पुरुषोत्तम (कृष्ण) छो, तमे आचार्य होवाथी परमेष्ठी छो, तमे पंडित होवाथी गिरीश (शंकर) छो, तमे गच्छना नायक होवाथी गणनाथ (गणपति) छो, तमे विबुधोना स्वामि होवाथी विबुधपति (इंद्र) छो अने तमे निर्मळ मनना होवाथी सुमनस (देव) छो, शुं तमे तपन-सूर्य नथी, अर्थात् कर्मपंकने सोसवामां शुं तमे सूर्यसमान नथी? ते उपमाथी पण आप अलंकृत ज छो.

इति आ. श्री हरिभद्रसूरि-प्रबंध

सद्‌गुरु के वचन का प्रतिपालन आत्मोद्धार का प्रथम सोपान है। सद्‌गुरु के वचन का उल्लंघन दुर्गति का प्रथम सोपान है। अतः सद्‌गुरु के वचनों को जीवन में 'अस्थि मज्जा' सम स्वीकार करना ही श्रेयस्कर है।

प्राण जाय पर सद्‌गुरु के वचन का उल्लंघन न हो इसका ध्यान रखना चाहिए।

-जयानंद

१०. श्री मल्लवादीसूरि प्रबंध

यानपात्र समान **श्री मल्लवादी आचार्य** दुस्तर संसार-सागरथकी तमारो निस्तार करो, के जेमनी वाणी अतिशय सत्त्वयुक्त, अक्षीण पक्षथी विलसित, अवक्र, लक्ष्यनो भेद बतावनार जीवोने मिथ्यात्वथी मुक्त करनार तथा मांगलिक हती.

जडमति मिथ्यात्वीओनुं जडमूळ काढवा माटे आ अद्‌भुत चरित्रनी प्रवृत्ति थयेल छे, तो प्रमाणना अभ्यासथी प्रख्यात तेमांनुं किंचित् चरित्र कहीए छीए.

रथवडे आवता सूर्यनुं उन्नत किल्लाने लीधे जाणे संलग्न चक्र होय. शकुनितीर्थरूप जाणे तेनी नाभि (धरी) होय, मोटा हर्म्यरूप जाणे तेना आरा भासता होय, तथा किल्लारूप नेमि (चक्रधार) थी विराजित अने स्वस्ति (कल्याण) ना स्थानरूप एवुं **भृगुकच्छ** नामे नगर छे. सुंदर चारित्ररूप समुद्रना शम, दमादिरूप कल्लोलमां क्रीडा करवाथी सदा आनंदी तथा ज्ञानादि लक्ष्मी वडे अच्युत (कृष्ण) समान एवा **जिनानंद** नामे आचार्य त्यां बिराजमान हता.

एवामां एकदा धनदाननी प्राप्तिथी मस्त बनेल, मनमां छळ तथा चतुरंग सभानी अवज्ञाने वहन करनार, तथा मदना विभ्रमथी अज्ञात एवा **नंद** नामना कोई **बौद्ध** मुनिए, चैत्ययात्रा करवा आवेला **जिनानंद** मुनीश्वरने वितंडावादथी जीती लीधा एटले पोतानो पराभव थवाथी ते नगरनो त्याग करीने ते आचार्य **वल्लभिपुर**मां चाल्या गया, कारण के **अन्यथी पराभव पामेल सामान्य माणस पण ते नगरमां कोण रहे?**

हवे त्यां वल्लभीपुरमां पोतानी (गुरुनी) **दुर्लभदेवी** नामे बहेन हती, तेणीना त्रण पुत्रो हता. तेमां **अजितयश** बधाथी मोटो, बीजो **यक्ष** अने त्रीजो **मल्ल** एवा नामथी प्रख्यात हतो. गुरुमहाराजे तेमने संसारनी असारतानुं स्वरूप समजाव्युं, तेथी पोतानी माता सहित ते बधा पुत्रोए गुरु पासे दीक्षा अंगीकार करी; कारण के **वहाण प्राप्त थतां समुद्रथी कोण पार न उतरे?** पछी लक्षणादि महाशास्त्रना अभ्यासथी ते बधा मोटा पंडित थईने पृथ्वीपर प्रख्यात थया. कारण के **बुद्धिने शुं दुष्कर छे?** तेमज **ज्ञानप्रवाद** नामना पांचमा पूर्वथकी पूर्वर्षिओए अज्ञाननाशक **नयचक्र** नामे महाग्रंथ उद्धर्यो. तेमां पण विश्रामरूप बार आरा छे. तेमना आरंभे अने प्रांते चैत्यपूजन करवामां आवे छे. ए नयचक्र विना गुरुए ते शिष्योने कंईक पूर्वमांनुं पण बधुं भणाव्युं, जेथी ते शुभ मतिना भाजन थया.

एक वखते गुरुमहाराजने विचार आव्यो के—'तेजमां हीरा समान तथा महाबुद्धिशाळी आ **मल्लमुनि** पोतानी बाळ चपळताने लीधे पोते पुस्तक खोलीने वांचशे, जेथी तेने उपद्रव थतां अमने भारे दुस्तर संताप थई पडशे.' एम धारी जननीनी समक्ष गुरुए तेने भलामण करी के—'हे वत्स! **आ पुस्तक पूर्व संबंधी छे.** माटे तेने उघाडीश नहि.' एम निषेध करीने पोते तीर्थयात्रा करवानी इच्छाथी विहार कर्यो. पछी मातानी परोक्षमां गुरुए निवारण करेल होवा छतां ते पुस्तक खोलीने तेना प्रथम पत्रमां मल्लमुनिए आ श्लोक वांच्यो—

विधि नियमभंगवृत्तिव्यतिरिक्तत्वादनर्थकमवोचत् ।
जैनादन्यच्छासन-मनृतं भवतीति वैधर्म्यम् ।।१।।

अर्थात् - विधि, नियम, भांगा अने वृत्ति रहित होवाथी जैनशासन करतां अन्यशासन निरर्थक छे, अने अन्य दर्शन सत्य नथी. ए प्रमाणे जैन दर्शनना अभावमां सत्यतानो अभाव बतावी वैधर्म्य दृष्टान्त बतावामां आव्युं छे.

ए श्लोकनो अर्थ विचारतां **श्रुतदेवी**ए तेना हाथमांथी ते पुस्तक अने पत्र छीनवी लीधां. अहो! गुरुवचननुं अपमान करवाथी विपरीत ज थाय छे. पछी कर्त्तव्य मूढ बनेल **मल्लमुनि** भारे आकुळ व्याकुळ थई गया अने बाळपणाने लीधे ते रोवा लाग्या. कारण के **देवता साथे शुं बळ चाले?** त्यारे माताए रुदननुं कारण पूछतां तेणे जणाव्युं के—'मारा हाथमांथी पुस्तक गयुं', आथी तेना निमित्ते संघने भारे खेद थई पड्यो.

पछी **मल्लमुनि**ए विचार कर्यो के—'साधु पुरुष पोतानी स्खलना पोते सुधारे छे.' एम धारी सुज्ञ **मल्लमुनि श्रुतदेवता**नी आराधना करवा लाग्या. त्यां **गिरिखंडल** नामना पर्वतनी गुफामां रहेतां छट्ठ तपना पारणे रूक्ष वालनुं भोजन करता; आथी पण तेमनी माता सहित संघने भारे विषाद थयो. कारण के **अज्ञ जनोने श्रुतनुं तेवुं पात्र मळवुं बहु दुर्लभ छे.** पछी संघे चातुर्मासिक पारणामां तेमने विगई लेवडावी, साधुओए त्यां जईने ते मुनिने भोजन आप्युं.

त्यार बाद श्री संघे आराधेल श्रुतदेवताए तेनी परीक्षा करवा जणाव्युं के—'मिष्ट शुं?'

एटले तपोनिधान मल्लमुनिए उत्तर आप्यो—'वाल (धान्य विशेष)'

वळी छ महिनाने आंतरे देवीए पुनः प्रश्न कर्यो—'शा वडे?'

त्यारे मुनिए पूर्वनो संबंध याद करीने जणाव्युं के—'गोळ अने घी साथे.' अर्थात् गोळ अने घी साथे वाल मधुर लागे छे. आ तेमनी धारणा शक्तिथी संतुष्ट थईने देवी कहेवा लागी के—'हे भद्र! वर माग.' एटले ते मुनि बोल्या—'हे श्रुतदेवी! मने ते पुस्तक आपो.'

त्यारे देवी बोली—'हे भद्र! तुं सावधान थईने मारुं वचन सांभळ—**ए ग्रंथ प्रगट करतां द्वेषी देवो उपद्रव करे तेम छे. तुं एक श्लोकमां सर्व अर्थने ग्रहण करी शकीश.**' एम कहीने देवी अंतर्धान थई अने **मल्लमुनि** पाछा गच्छमां आव्या. पछी तेमणे दश हजार श्लोकना प्रमाणवाळुं नवुं **नयचक्र** शास्त्र बनाव्युं. ते पूर्व ग्रंथार्थना प्रकाश वडे सर्वने मान्य थई पड्युं, त्यां राजानी संमतिथी श्री संघे महोत्सवपूर्वक ते ग्रंथने गजराजपर आरूढ करीने नगरमां प्रवेश कराव्यो.

हवे एकदा **श्री आ. जिनानंदसूरि** चिरकाळे त्यां पधार्या एटले संघे गुरुने प्रार्थना करीने **मल्लमुनि**ने आचार्यपदे स्थाप्या. वळी **श्री अजितयशे** एक प्रमाणग्रंथ बनाव्यो अने ते नंदकगुरुना कहेवाथी तेमणे **अल्ल** राजानी सभामां कही संभळाव्यो. तेमज **विश्रांतिविद्याधर** नामना शब्द शास्त्रपर अल्पमति जनोने बोध थवा माटे तेमणे स्फुटार्थ न्यास रच्यो तथा **श्री यक्षमुनि**ए अष्टांग निमित्तनो बोध करावनार **संहिता** रची, के जे दीपकलिकानी जेम सर्व अर्थने प्रकाशे छे.

एवामां एकदा विकास पामता मालतीना पुष्प समान सुवासित यशना निधान एवा **आ. श्री मल्लसूरि**ए स्थविर मुनिना मुखथी बौद्धोए करेल पोताना गुरुनो पराभव सांभळ्यो. एटले विनाविलंबे प्रयाणो करीने ते **भृगुकच्छ** नगरमां आव्या. त्यां श्री संघे प्रवेश महोत्सवादिकथी जिनशासननी प्रभावना करी.

अहीं **बुद्धानंद** बौद्धोने अद्‌भुत आनंद पमाडतो कहेवा लाग्यो के—'मैं श्वेतांबर मुनिने वादमां जीती लीधो.' एवा गर्वने वहन करतां अभिमानना भारथी तेनी भ्रगुटी उंचे पण थती न हती. वळी ते धरातलने जगद्‌भ्रष्ट अने कृपापात्र मानतो हतो. जैन मुनिओने आवेल सांभळीने ते संघने विशेष उपसर्ग करवा लाग्यो, तथा महा-आक्रोश लावीने लोकोने ते वाद विवादमां उतारवा लाग्यो. वळी ते अभिमान लावीने एम बोलतो के—'श्वेतांबरोमां वादमुद्रा वडे अधृष्य अने स्याद्वाद मुद्राने लीधे परवादीओने अजेय एवा तेमना पूर्वजने पण सागरने अगस्त्यऋषिनी जेम में प्रगट करेला पोताना सिद्धांतोथी जीती लीधो. तो जेणे विद्वानोने जोया नथी एवो ए बाळक शुं करवानो हतो. ए तो घरमां गर्जना करनार कूतरा समान पराक्रम रहित छे. जो तेनामां एवी कोई शक्ति होय,

तो ते राजसभामां मारी समक्ष आवीने उभो रहे, एटले हरिणने वरूनी जेम हुं तेनो ग्रास करी जाउं.'

ए प्रमाणे सांभळतां **आ. श्री मल्लसूरि** तो लीलाथी सिंहनी जेम स्थिर रह्या अने गर्वरहित तथा आंतर शत्रुना द्वेषी एवा ते लोको आगळ गंभीर वाणीथी कहेवा लाग्या—'विवाद विना निर्मळ बुद्धिवाळा तथा शांत एवा कोई जैन मुनिने में जीती लीधो-एम स्वेच्छाए बोलवुं, ते तो मात्र आडंबर छे. अथवा तो ते भले गमे तेवो छे, पण दृढ शल्य समान ते पोताना मनमां जे मिथ्या गर्व धरावे छे, तेनो उद्धार करवा जयशील एवो हुं तैयार ज छुं. ते सज्जन होय के मित्र होय, पण मारी आगळ उभो रहेशे, त्यारे हुं जाणी लईश. पोताना घरमां बेसीने तो लोको राजानी पण निंदा करे, तेथी शुं? पण राजसभामां प्राश्निकोनी समक्ष जे जवाब आपवा, तेमांज पोतानी बुद्धिनी कुशळता जणाय छे.'

एम **मल्लसूरि**नुं वचन सांभळवामां आवतां **बुद्धानंद** जरा हसीने कहेवा लाग्यो—'ए बाळक तो वाचाळ लागे छे, माटे तेनी साथे वाद शो? अथवा तो ते भले गमे तेवो छे, पण मारे तो शत्रुपक्षनो पराजय करवो ज जोईए; नहि तो वखत जतां अल्प व्रणनी जेम ते असाध्य अने दुर्जय थई पडे छे.'

पछी **क्रूर मुहूर्ते** ते वादी अने प्रतिवादी बंने राजसभामां आव्या. एटले सभासदोए पूर्ववाद **आ. श्रीमल्लसूरि**ने आप्यो, जेथी ते छ महिना पर्यंत **नयचक्र** महा ग्रंथना अभिप्राय प्रमाणे विद्वत्ताने योग्य अस्खलित वचनथी बोल्या, पण ते बौद्धवादी धारी न शक्यो, तेथी ते पोताना स्थाने चाल्यो गयो, एटले **'अद्वितीय मल्ल एवा मल्लसूरि जीत्या'** एम सौ कोई कहेवा लाग्या. शासनदेवीए तेमना पर पुष्पवृष्टि करी. पछी राजाए महोत्सवपूर्वक तेमने स्वस्थाने बिराजमान कर्या. त्यां **बुद्धानंद**ना परिवारने अपमानपूर्वक बहार काढी मूकता राजाने गुरुए खास आग्रह करीने अटकाव्यो. त्यारबाद राजाए आचार्यने **वादी** एवुं **बिरुद** आप्युं, एटले ज्ञाननिधान ते गुरु **मल्लवादी** एवा नामथी प्रसिद्ध थया.

हवे ए प्रमाणे पोतानुं अपमान थतां **बुद्धानंद** निरानंद थई गयो अने शोकने लीधे ते अत्यंत प्रतिभा रहित बनी गयो. तेथी रात्रे दीवो लईने ते लखवा लाग्यो. तेमां पण पक्ष, हेतुओ वगेरे विस्मृत थवाथी भारे भय अने लज्जाना भारथी दबाई जतां तेनुं हृदय फुटी पड्युं अने ते मरण पाम्यो. त्यां प्रभाते राजाए तेने हाथमां खडी सहित जोयो, एवामां तेनुं मरण सांभळतां **आ. श्री मल्लवादी गुरु**ने शोक थयो के—'अहा! ए वादी मरण पाम्यो. कया प्रमाणथी ए पोतानी बुद्धिने प्रगल्भ समजतो हतो? बाल्यावस्थाना कारणथी तेणे अमारी अवज्ञा करी अने पोते आवो कायर हतो.

पछी श्री मल्लवादीसूरिए संघने अभ्यर्थना करीने पोताना पूज्य गुरु **आ. श्री जिनानंदसूरि**ने वल्लभीपुरथी बोलाव्या. त्यां चारित्रधारी **दुर्लभदेवी** माता भारे संतुष्ट थई. त्यारे बंधु एवा गुरु महाराजे कह्युं के—'हे भद्रे! पुत्रवती स्त्रीओमां तुं अग्रेसर छे.

हवे गुरु महाराजे गच्छनो भार एक योग्य **आ. श्री मल्लवादी** शिष्यने सोंप्यो, कारण के आ. श्रीमल्लवादी प्रभु विद्यमान छतां कोण पोतानी मर्यादाने ओळंगी शके? ते वखते तेमणे परवादीरूप हस्तीओना कुंभस्थळने भेदवामां केशरी समान नयचक्र महाग्रंथ पोताना शिष्योने कही संभळाव्यो, वळी **पद्मचरित्र** नामे रामायण संभळाव्युं के जेना चोवीस हजार श्लोक छे. एम तीर्थनी प्रभावना करी तथा पोताना शिष्योने वादींद्र अने निर्मळ बनावी, गुरु शिष्य बंने भारे प्रेम संबंधथी स्वर्गे गया.

एवामां पेलो **बुद्धानंद** मरण पामीने मिथ्यात्वी व्यंतर थयो. ते प्रांतकाळनी विपरीत मतिथी ते जिनशासननो द्वेषी थयो. पूर्वना वैरभावथी तेणे तेमना बे ग्रंथ पोताना ताबे कर्या, ते पुस्तको पेलो व्यंतर कोईने वांचवा देतो न हतो.

ए प्रमाणे मारी चेतनारूप लताने नवा मेघ समान आ **आ. श्री मल्लवादी प्रभुनुं चरित्र**, प्रधान कविजनो वांचो, सांभळो अने प्रसन्न दृष्टिथी अवलोकन करो.

नागेन्द्र कुळना मस्तक पर एक मात्र मणिरूप प्रमाण शास्त्रमां अग्रणी श्री मल्लवादी गुरु विश्वमां अप्रतिमल्ल हता, जेथी प्रतिभाना वैभवथी प्रसन्न थयेली शारदाए पुत्रवत् एमने जितनार पोताना हस्तनुं पुस्तक आप्युं हतुं.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मीदेवी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना मनपर लेतां, **श्री प्रद्युम्नसूरि**ए संशोधन करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री मल्लवादीसूरि**ना अद्‌भुत चरित्ररूप आ दशमुं शिखर थयुं.

इति श्री मल्लवादीसूरि-प्रबंध

आराधना की योग्यता उसी में है, जिसमें सत्संगति का प्रेम है, मन, वचन, काया की शुद्धि का लक्ष्य है, सरल प्रकृति है, निर्लोभता के भाव है, पूज्यों के प्रति पूज्यभाव है, स्वाध्याय में निमग्नता है, संसार से उद्‌विग्न है, सज्जन लोग आचरित आचरण का इच्छुक है, भौतिक सुख को दुःख रुप, दुःखदायक मानने वाला है, आत्मा की अवहेलना हो ऐसे कार्यों से दूर रहने वाला है, स्वयं के दोषों को शरीर में रहे कंटक सम निकालने वाला है, दुसरों के दोषों प्रति दुर्लक्ष्य वाला है, विनय और विवेक का प्रति पालक है, इत्यादि गुणयुक्त आत्मा ही आराधना के योग्य है।

-जयानंद

११. श्री बप्पभट्टिसूरि-प्रबंध

श्रीमान् बप्पभट्टिसूरि तमारुं कल्याण करो के जेमना चरित्ररूप गगनांगणे राजा (चंद्रमा) सूर (शूरवीर के सूर्य), कवि (शुक्राचार्य) अने बुध (पंडित के बुध) गमनागमनथी रम्या करे छे. वळी जेमना गोरस (वचन रस)नुं पान करीने अंतरमां तृप्त थयां छतां कविरूप वाछरडाओ शृंगिपणा (सर्वोत्कृष्टता)ने धारण करता ते सुज्ञ गोपालो (पंडितो)ने पण दुर्दम थई पड्या हता. तेमनुं यथाश्रुत चरित्र हुं कंईक कहीश के जे मारी प्रज्ञारूप आरसीने प्रकाशित करनार अने सत्पुरुषोना श्रृंगारमां भूषण समान छे.

कल्याणना निधानरूप **श्रीगुर्जर** नामे देश छे के ज्यां निरभिमानी अने विवेकी जनो वसे छे तथा अशोक वृक्षो अने पर्वतोथी जे शोभायमान छे. अंगनाओ, श्रीमंतो अने मुनिओनी बहुलताथी जेनुं एकांश प्रतिबिंब स्वर्गरूप आदर्शमां रहेल छे एवुं **पाटल** नामे नगर छे. त्यां **जितशत्रु** नामे राजा के जे गंभीरतामां समुद्र समान हतो अने बाह्य तथा अंदरना समस्त शत्रुवर्गनो जेणे नाश कर्यो हतो. वळी ते स्थळे **सिद्धसेन** नामे आचार्य प्रख्यात हता के जे विचित्र प्रकारना शास्त्रोना रहस्यरूप कंदने उत्पन्न करवामां नवा मेघ समान, परम ब्रह्मानंदरूप अमृतना सागरमां निमग्न **मोढ** नामना प्रौढ गच्छना नायक तथा ज्ञानना निधान हता.

एकदा राजाओने पण माननीय तथा समस्त विद्याओथी शोभता एवा ते आचार्य **मोढेर** गाम (तीर्थ) मां श्री महावीर प्रभुने वंदन करवा माटे गया, त्यां विधिपूर्वक तीर्थने वंदन करी तेओ एक अलग उपाश्रयमां रह्या. एवामां रात्रे योगनिद्रामां तेमणे आवा प्रकारनुं स्वप्न जोयु—'लीलापूर्वक लोचनने विकसित करतो अने सत्त्वथी शोभतो एवो बाळ केशरी फाळ मारीने चैत्य शिखरना अग्र भागपर आरूढ थयो.'

ए प्रमाणे अद्‌भुत स्वप्न जोतां ते मुनींद्र जाग्या अने प्रभाते तेमणे ते स्वप्न बीजा महामुनिओने प्रसन्नताथी संभळाव्युं. एटले कल्याणना मूळ कारण रूप अने विनयना हेतुपणाने जणावतां एवा ते विनीत मुनिओए अर्थ पूछतां आचार्य तेमनी आगळ ते स्वप्ननो अर्थ कहेवा लाग्या के—'आजे श्री संघना महाभाग्यथी अन्य वादीरूप हस्तीओना कुंभस्थळ भेदवामां सिंह समान कोई महामति शिष्य आवशे.' एटले भावि प्रभावने सूचवनार स्वप्नना आनंदथी ओतप्रोत थयेला ते मुनिओ साथे आचार्य जिनमंदिरमां गया. त्यां त्रण प्रदक्षिणा दईने जेटलामां ते भगवंतने वंदन करे छे, तेवामां एक छ वरसनो बाळक तेमनी आगळ आवीने उभो रह्यो. त्यारे गुरुमहाराजे तेने पूछ्युं के—'हे वत्स! तुं कोण अने क्यांथी आवे छे?

एटले तेणे कह्युं के—'**पंचाल** देशना **बप्प** नामना गृहस्थनो पुत्र छुं. मारी मातानुं नाम **भट्टि** छे. पराक्रममां अवस्था कांई कारणरूप नथी ए वाक्यने न जाणता **सूरपाल** पिताए मने शत्रुओने मारतां अटकाव्यो, तेथी भारे खेद पामतां माताने पण पूछ्या विना हुं चाली नीकळ्यो अने स्नेहपूर्वक आपनी पासे आव्यो.' एम कही प्रेमथी ते गुरु आगळ बेठो. त्यारे 'अहो! आ बाळकनुं असाधारण तेज!' एम चिंतववा गुरुए तेने हर्षथी कह्युं के—'शुं तुं अमारी पासे रहीश?'

ते बोल्यो—'हे पूज्य! तो तो मारुं भाग्य उघड्युं.' एम कहीने ते त्यां रह्यो. **विकसित कमळपर शुं भ्रमर न बेसे?** हवे ते एकवार मात्र सांभळवाथी एक हजार अनुष्टुप श्लोक बराबर धारी शकतो हतो, तो तेनी बुद्धिनी शी वात करवी? जडवादीओना दुस्तर्कोथी क्लेश पामेली सरस्वती देवी पोते दुर्बोध शास्त्रना भेदने बतावनार तेनी मित्रताने ईच्छती हती. आ तेनी अगाध शक्तिथी संतुष्ट थयेला गुरुए **डुंबाउधी** गाममां जईने तेना माबाप पासे ते

बाळकनी मांगणी करी. त्यारे तेना पिताए कह्युं के—'हे प्रभु! ए तमारी याचना शा कामनी? कारण के तेनी मातानो ए एक ज पुत्र छे. वळी ए अमारी आशानो आधार छे. तो अमे तेने केम मूकी शकीए? तेम छतां आपनो जो-वधारे आग्रह होय अने जो अमारुं प्रख्यात **बप्पभट्टि** ए नाम ते बाळकनुं राखो, तो ते पुत्र तमने अपर्ण छे.'

त्यारे गुरु महाराजे ए वात कबूल राखी. त्यां श्रावकोए आ जन्म सुधीनुं तेने गुजरान करी आप्युं, कारण के **महापुरुषो परनी आस्था निष्फळ जती नथी.**

पछी विक्रम संवत्ना आठसो सात वरस जतां वैशाख महिनानी शुक्ल तृतीयाना मोटा दिवसे मोढेर तीर्थमां विहार करीने गुरुए ते बाळकने दीक्षा आपी अने पोतानी शाखाने अनुसरीने तेमणे **भद्रकीर्ति** एवुं नाम राख्युं. तेमज तेना मातापिता पासे कबूल करेल पूर्वनुं **बप्पभट्टि** नाम ज प्रसिद्ध थयुं. सर्व शिष्योमां शिरोमणि अने कळाओना संकेत स्थानरूप एवा ते मुनिना गुणो अने सौंदर्यथी रंजित थयेल श्री संघे तेमने पोताना गाममां राखवा माटे गुरु महाराजने विनंती करी. पछी तेनी योग्यतानो अतिशय जाणीने त्यां रहेतां गुरुए तेने सारस्वत महामंत्र आप्यो. एटले अर्धरात्रे ते मंत्रनुं परावर्त्तन करतां, **सरस्वती एकांते आकाशगंगाना प्रवाहमां स्नान करती ते वस्त्ररहित हती,** एवामां ते मंत्रजापना माहात्म्यथी ते देवी तेवी ज स्थितिमां त्यां चाली आवी, एटले तेने जोतां मुनिए जरा पोतानुं मुख फेरवी नांख्युं. त्यारे पोतानी नग्नावस्थानो ख्याल न करतां ते कहेवा लागी के—'हे वत्स! तुं मुख केम फेरवे छे? तारा मंत्रजापथी संतुष्ट थईने हुं अहीं आवी छुं. माटे वर मांग!

एटले मुनि बोल्या 'माता! तारुं आ अनुचित स्वरूप हुं शी रीते जोउं? तुं वस्त्ररहित तारुं शरीर तो जो.' आथी देवीए पोताना शरीर तरफ दृष्टि करतां विचार कर्यो के—'अहो! एनुं ब्रह्मचर्यव्रत केटलुं बधुं दृढ छे? अने मंत्रनुं माहात्म्य पण केटलुं बधुं अद्‌भुत छे के जेथी हुं पण भान विनानी बनी गई?' एम चिंतवती देवी तेनी सन्मुख आवी. एटले वर मांगवामां अत्यंत निःस्पृह एवा ते मुनिने जोतां तेने भारे आश्चर्य थयुं. पछी छेवटे देवी बोली के—'हे भद्र! मारा गमन के आगमननमां तारी कोई प्रकारनी अभिलाषा नथी, माटे तुं सुखे निवृत्तिमां रहे.'

हवे त्यां रहेतां एकदा **श्री भद्रकीर्तिमुनि** बहार भूमिकाए गया. त्यां वृष्टि थतां ते स्थिरता पूर्वक एक देवकुळमां रह्या. एवामां देवकुमारने विडंबना पमाडनार शोभायुक्त अने वृष्टिथी व्याकुळ थयेल एक पुरुष त्यां आव्यो. ए देवकुळमां श्याम पत्थर पर कोतरेल अने हारसहित प्रमदाना वक्षस्थळ समान स्वस्ति सूचक एक प्रशस्ति हती, एटले पांडित्ययुक्त विचक्षण एवा ते आवनार पुरुषे प्रशस्तिना महार्थवाचक काव्यो वांच्या अने मित्रता पूर्वक **श्री बप्पभट्टि** पासे तेनी व्याख्या करावी. त्यारे तेमनी अद्‌भुत व्याख्याथी ते पोताना अंतरमां रंजित थयो. पछी वृष्टि शांत थतां ते मुनि साथे ज तेमना उपाश्रयमां गयो, त्यां आचार्ये तेने आशिषथी आनंद पमाडीने वृत्तान्त पूछ्यो. एटले लज्जाथी मुख नमावीने ते पोतानो वृत्तान्त कहेवा लाग्यो—'श्रेष्ठ **मौर्य** महागोत्रमां उत्पन्न थयेल, महातेजस्वी तथा **चंद्रगुप्त** राजाना वंशमां मुक्तामणि समान अने **कान्यकुब्ज** (कनोज) ना राजा **यशोवर्मनो** हुं पुत्र छुं. पिताए मने कोपथी कंईक शिक्षा आपतां कह्युं, जे सहन न करी शकवाथी हुं अहीं चाल्यो आव्यो.' पछी तेणे खडीथी पोतानुं **आम** एवुं नाम जमीनपर (दिवारपर) लखी बताव्युं. एटले पोतानुं नाम पोताना मुखथी न बोलवाना विवेकने लीधे चमत्कार पामेल आचार्य **महाराज चपटी वगाडतां** विचारवा लाग्या के—'पूर्वे **श्रीराम** सैन्यमां एने छ महिनानो में जोयो हतो ते वखते पीलुवृक्षनी जाळमां बांधेल वस्त्रना हिंडोळे ए झुलतो हतो अने एना पर छाया अचल रहेवाथी अमे एने भाग्यशाळी पुरुष समजी लीधो हतो. त्यारे वनफळने वीणती तेनी माताने अमे कह्युं हतुं के 'हे वत्से! तुं कोण छे अने तारुं कुळ कयुं? वळी तारी आवी अवस्था केम! ते बधुं अमारी

आगळ विश्वासपूर्वक कही संभळाव. कारण के अमे संसारसंगना त्यागी अने परिग्रहथी मुक्त छीए.'

एम सांभळतां ते बोली के—'हे प्रभो! आपने शुं अकथ्य होय? कान्यकुब्जना राजा **यशोवर्मन**ी हुं पत्नी छुं. आ बाळक गर्भमां आवतां सपत्नी शोक्यने मत्सर आववाथी पूर्वे मेळववानुं वरदान राजा पासे मांगीने तेणे मने घरथकी बहार कढावी, तेथी पश्चात्ताप थतां पिता अने श्वसुर गृहनो त्याग करीने हुं आ आपना स्थाने आवी अने हे प्रभो! वन्य फळथी अत्यारे गुजरान चलावुं छुं.'

त्यारे अमे तेने शांत करतां आश्वासन आप्युं के—'हे वत्से! चैत्यनी शुश्रूषा करतां तुं अहीं स्थिरता लावीने रहे अने जनक (पिता) ना घरनी जेम आ बाळकनुं लालन पालन कर.'

एवामां तेनी ते सपत्नी कोईवार पोतानी मेळे नाश पामी एटले राजाए पोताना सेवको मारफते ते तजी दीधेल राणीनी शोध करावीने तेने पाछी बोलावी अने प्रथम करतां तेणे तेनुं वधारे बहुमान कर्युं. पछी अमे ते प्रदेशथकी आ भूमिमां विहार करी आव्या, पण ते देशना पुरुषो पासेथी ए वृत्तान्त अमारा सांभळवामां आव्यो, तेथी आ धीमान तेनो ज पुत्र होवो जोईए. कारण के एना शरीरनी आकृति अने लक्षणो एवां छे के ए राजपुत्र विना अन्य न होय.'

ए प्रमाणे विचारीने गुरु महाराज तेने कहेवा लाग्या के—'हे वत्स! तुं अहीं तारा मित्रनी साथे निश्चिंत थईने रहे. वळी शास्त्रोनो सत्वर अभ्यास कर अने पुरुषनी निर्मळ ७२ कळाओनो संग्रह कर.' ते कळाओ आ प्रमाणे छे—

१. वांचवानी कळा, २. लखवानी कळा, ३. गणित कळा, ४. गीत कळा, ५. नृत्य कळा, ६. वाद्य कळा, ७. व्याकरण, ८. छंदशास्त्र, ९. ज्योतिषशास्त्र, १०. शिक्षण कळा, ११. निरुत्तर करवानी कळा, १२. तंत्रकळा, १३. निघंटुक, १४. पत्रछेद्य, १५. नखछेद्य, १६. रत्नपरीक्षा, १७. शस्त्राभ्यास, १८. गजारोहण, १९. अश्वारोहण, २०. ए बंने (गजारोहण अने अश्वारोहण), २१. तेमांनी दरेक अद्‌भुत कळा, २२. मंत्रवाद, २३. रसवाद, २४. खन्यवाद, २५. रसायन, २६. विज्ञानवाद, २७. तर्कवाद, २८. सिद्धांत, २९. विषनिग्रह, ३०. गारुडविद्या, ३१. शकुनशास्त्र, ३२. आचार्यविद्या, ३३. आगम, ३४. प्रासादलक्षण, ३५. सामुद्रिक, ३६. स्मृति, ३७. पुराण, ३८. ईतिहास, ३९. वेदविधि, ४०. विद्यानुवाद, ४१. दर्शनसंस्कार, ४२. खेचरीविद्या, ४३. अमरीकरण, ४४. इंद्रजाल, ४५. पातालसिद्धि, ४६. धूर्त कळा, ४७. गंधयुक्ति, ४८. वृक्षचिकित्सा, ४९. कृत्रिम मणि बनाववानी कळा, ५०. सर्व वस्तु बनाववानी कळा, ५१. वंशकर्म, ५२. पुष्पकर्म, ५३. चित्रकर्म, ५४. आश्चर्य पमाडवानी कळा, ५५. काष्ठकर्म, ५६. पाषाणकर्म, ५७. लेपकर्म, ५८. चर्मकर्म, ५९. यंत्रकर्म, ६०. रसवतीविधि, ६१. काव्यकृति, ६२. अलंकारज्ञान, ६३. हसवानी कळा, ६४. संस्कृत भाषा, ६५. प्राकृतभाषा, ६६. पैशाचिकी भाषा, ६७. अपभ्रंश भाषा, ६८. कपट कळा, ६९. देश भाषा, ७०. धातुकर्म, ७१. प्रयोग-उपाय अने ७२. केवली विधि.

आ ७२ कळाओनो तेणे अभ्यास करी लीधो अने पंडितोनी सभामां ते एक असाधारण विद्वान थई पड्यो. तेमज अभ्यास करतां तेनी प्रज्ञारूप दर्पणमां लक्षण, तर्कादि बधां शास्त्रो स्वयमेव प्रतिबिंबित थई गयां.

पछी ब्रह्मचारीपणानी मित्रताने लीधे ते राजपुत्रे एवी प्रतिज्ञा करी के—'हे बप्पभट्टि! मने राज्य प्राप्त थतां ते हुं अवश्य तने ज आपीश.'

केटलाक काळ पछी तेना मातापिताए तेनो राज्याभिषेक करवा माटे प्रधान पुरुषो मोकल्या. एटले महाकष्टे त्यांथी अनुज्ञा मेळवीने आमकुमार पोताना नगरमां आव्यो, त्यां पिताए तेने राज्यनो मालिक बनाव्यो. एवामां ते मरण पामतां आमराजाए पितानी उत्तर क्रिया करी. **तेना सैन्यमां बे लाख अश्वो चौदसो रथो अने हाथीओ तथा करोडो सैनिको-पदातिओ हता.**

पछी असाधारण पराक्रमवाळा आम राजाए पोताना मित्र **मुनि बप्पभट्टि**ने बोलावववा माटे माणसो मोकल्या. तेमना अत्याग्रहथी संघनी अनुमति लईने गुरु महाराजे गीतार्थ मुनिओना परिवार साथे **बप्पभट्टिमुनि**ने आम राजा पासे मोकल्या. एटले तीर्थनी प्रभावना अने उन्नति करवा **संयमयात्रा साधतां श्री बप्पभट्टिमुनि** हळवे-हळवे **आम** राजाना नगरमां पहोंच्या. तेमना आगमनना समाचार सांभळतां चंद्रोदयथी महासागरनी जेम राजा हर्षना कल्लोलथी ओतप्रोत थई गयो. पछी बधी सामग्री लईने ते **बप्पभट्टिमुनिनी** सन्मुख आव्यो अने **हाथीपर आरोहण करवा माटे** तेणे ते सुज्ञशिरोमणिने प्रार्थना करी.

एटले मुनि प्रधान ते बप्पभट्टिए राजाने जणाव्युं के—'हे राजन्! अमे सर्व संगना त्यागी छीए, **माटे गजारोहण करता अमारी प्रतिज्ञानो भंग थाय.**'

त्यारे राजा बोल्यो के—'हे महात्मन्! पूर्वे में प्रतिज्ञा करी छे के मने राज्य प्राप्त थतां ते हुं तमने आपीश. ते राज्यनुं मुख्य लक्षण हस्ती छे, माटे अवश्य तमे एनो स्वीकार करो. त्याग दशा बतावीने तमारे मने खेद पमाडवो युक्त नथी.' एम बोलतां राजाए बलात्कारे तेमने पट्ट हस्तीपर बेसाडी दीधा. पछी जाणे क्रोधादि चार कषायोने जीतवानी निशानी होय, तेवा चार छत्रो तेमना पर धरवामां आव्यां अने तेमना पर चामरो ढाळवामां आव्यां. एम साधुओना शिरदार **मुनि बप्पभट्टि** महात्मानुं बहुमान विश्वने बतावतां राजाए महोत्सवपूर्वक तेमने नगरमां प्रवेश कराव्यो, तेणे मुनिने कह्युं के—'आ सिंहासन पण राज्यनुं मुख्य चिह्न छे, माटे एना पर बिराजमान थाओ.'

एटले निर्मळ अंतरवाळा राजाने मुनि कहेवा लाग्या के—'**आचार्यपद प्राप्त थया पछी अमने सिंहासन पर बेसवुं कल्पे.**' आथी राजाए खेद पूर्वक तेमने अन्य आसन पर बेसाड्या. एम केटलाक दिवस त्यां राखीने राजाए पोताना प्रधान पुरुषो साथे मुनिपतिने तेमना गुरु पासे मोकल्या एटले मोढेर तीर्थमां बिराजमान **श्रीसिद्धसेन आचार्य**ने वंदन करीने नम्र वाणीथी तेओ आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के—'हे भगवन्! चंद्र विनाना आकाशमां चकोर, खाबोचीयामां राजहंस, वनमां एकाकी मृग, अल्प जळमां मत्स्य, ग्रीष्मकाळमां आर्त्त थयेल मयूर, वर्षाकाळमां समुद्र, रणभूमिमां कायरपुरुष, मूर्खमंडळमां विद्वान् अने कृष्णपक्षमां चंद्रमानी जेम आ तेना मित्र विना अमारो स्वामी प्रतिदिन क्षीण थतो जाय छे. माटे श्रद्धाना अधिष्ठायक देव समान एवा आ **बप्पभट्टि मुनिने आचार्य पदे** स्थापीने अमारा स्वामीने प्रमोद पमाडवा माटे एने अमारी साथे मोकलो, के एमना उपदेशथी जैनमंदिर, प्रतिमादिक करावववा वडे उपार्जन थतां सुकृतथी राजा भवसागरनो पार पामे.'

ए प्रमाणे सांभळतां चारित्राचारमां धुरंधर एवा गुरुमहाराज अमृतसमान मधुरवाणीथी कहेवा लाग्या के--'भवनमां रत्नदीपकनी जेम ए तेजस्वी अने अचळ स्थिरतावाळा अमारा **बालर्षि** बाह्य अने आभ्यंतर तिमिरनो नाश करनार छे, तेथी जेम सूर्य विना कमळ, चंद्र विना रात्रि, मेघ विना मयूर, मुद्रा विना मंत्री, स्तंभ विना घर अने आत्मा विना देहनी जेम एना विना अमारी मनोवृत्ति म्लान ज थाय तेम छे.'

ए प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळतां ते प्रधान पुरुषो कहेवा लाग्या के—'हे प्रभो! संतपुरुषो परोपकारनी खातर पोतानी पीडाने गणता नथी. कारण के वृक्षो सूर्यना तापने सहन करे छे, सूर्य आकाशने ओळंगवानी आपत्ति वेठे छे, समुद्र नौकानो श्रम सहे छे, काचबो पृथ्वीना भारने वहन करे छे, मेघ वरसवानी तकलीफ उठावे छे अने पृथ्वी जगतना भारनो क्लेश उठावे छे. उपकार विना एमनुं कंई फळ जोवामां आवतुं नथी. माटे प्रसाद लावी अमारा स्वामीनी बाधा रूप पर्वतने भेदवामां वज्र समान एवा सुज्ञ शिरोमणि **बप्पभट्टिमुनि**ने सूरिपदथी विभूषित करीने अमारी साथे मोकलो.'

ए प्रमाणे तेमना अत्याग्रहथी गुरुए तेम करवानुं कबूल कर्युं. पछी श्री संघने बोलावीने सूरिपदने माटे

आदेश कर्यो. एटले ओच्छवने ईच्छनारा, स्वस्थ अने गच्छनुं वात्सल्य धरावनारा श्रावकोए सत्वर जिनालयने विषे बधी सामग्री तैयार करी. पछी सौम्य अने षट्वर्गथी अधिष्ठित तथा सप्तग्रहना बळयुक्त लग्ननें विषे गुरु महाराजे विश्वने शिष्य बनावनार एवा पोताना शिष्यने समस्त वाजिंत्रो वागतां श्रुतोक्त विधिपूर्वक तेना चंदनचर्चित कानमां अर्हत्तत्त्वरूप मंत्र सूरिमंत्र संभळाव्यो. एटले पंडितोमां सूर्य समान अने दुष्ट वादीरूप सिंहनो नाश करवामां अष्टापद सदृश एवा **श्रीबप्पभट्टि** जगतमां आचार्य तरीके प्रसिद्ध थया.

पछी गुरु महाराजे विधिपूर्वक ब्रह्मनी रक्षा करवानो उपदेश आपतां ते नूतन सूरिने जणाव्युं के—'हे भद्र! एक तारुण्य अने राजसन्मान-ए बंने अनर्थना उत्पादक छे. माटे **तारे आत्मरक्षा एवी रीते करवी के दुष्ट काम-पिशाच तने कदापि छेतरी न शके अने ब्रह्मचर्यनी तारे वारंवार संभाळ राखवानी छे.**'

त्यारे **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ए त्यां एवो नियम लीधो के—'जन्म पर्यंत मारे भक्तजननी बधी विगई न लेवी.' पछी वाजिंत्रोना नाद अने श्राविकाओए मंगळगीत गातां तथा श्री संघे गौरवपूर्वक प्रार्थना करतां गुरु महाराज पोताना परिवारसहित उपाश्रयमां आव्या. विक्रम संवतना आठसो अगियार वर्ष जतां चैत्र महिनानी कृष्ण अष्टमीना दिवसे **श्रीबप्पभट्टि** आचार्य थया.

हवे श्रीमान् **आम** राजाना अमात्यना विशेष आग्रहथी श्री संघनी इच्छा न होवा छतां गुरु महाराजे **श्रीबप्पभट्टिसूरि**ने तेमनी साथे मोकल्या. एटले त्वरित प्रयाणो करीने **कान्यकुब्ज** नगरमां आव्या अने त्यां बाह्य उद्यानना एक निर्जीव प्रदेशमां रह्या. त्यारे उद्यानपालके राजाने आचार्यना आगमनना समाचार आप्या, जे सांभळतां हर्षथी तेनुं शरीर रोमांचित थयुं. पछी राजाए दरेक बजारे हाटनी शोभाथी रस्ता सुशोभित कराव्या. मकाने मकाने दरेक द्वारे तोरणो बंधाव्यां, धूपधानीओमां नीकळता धूमने लीधे त्यां श्याम वादळानो भ्रम थवा लाग्यो, उपर बांधेल चंद्रवाओथी पृथ्वीतल एक छायारूप बनी गयुं, कुंकुमना छांटणांथी ते भूमि काश्मीरनी भूमि जेवी देखावा लागी. एवी रीते इंद्रना नगर समान ते नगरने शणगारतां, प्रौढ मित्राईने लीधे राजाथी स्तुति करायेल तथा छत्र अने चामरथी विराजमान एक राजानी जेम, उन्नत **हस्तीपर आरूढ** थयेल अने उपशम-लक्ष्मीथी सुशोभित एवा **श्री बप्पभट्टिसूरि**ए ज्यां नगरनारीओ अटारीओने संकीर्ण करी रही छे एवा ते नगरमां प्रवेश कर्यो. पछी राजाए आनंदपूर्वक भव्य भवनमां गालीचा पाथरेल सिंहासनपर पोताना ते मित्र मुनीश्वरने बेसाड्या. त्यां भारे प्रभावनाथी आनंद पामतो श्री संघ सदा सद्भावथी गुरुराजनी परम भक्ति करवा लाग्यो.

पछी निरंतर राजसभामां आवतां पण कलुषित भावथी रहित एवा **श्रीमान् बप्पभट्टिसूरि** राजानी आगळ पुण्य-पथ प्रकाशवा लाग्या—

''हे राजन्! कल्याणरूप वृक्षना आरामने वृद्धि पमाडवामां मेघना प्रवाह समान अने परम पदने आपनार एवो एक धर्म ज निराधारने शरणरूप छे. तेमां प्रथम दान अने ते सात क्षेत्रोने विषे आपवा बतावेल छे. वळी तेमां पण प्रथम जिनमंदिर सिद्धिदायक छे, बीजुं जिनबिंबनुं निर्माण, त्रीजुं सिद्धांत लेखन तथा चतुर्विध श्री संघनी भक्ति-एम अनुक्रमे सात क्षेत्रो कहेल छे. **तेमां जिनमंदिर सर्वना आधाररूप छे के ज्यां जिनो अने श्रुतधरो संघने प्रतिबोध आपता रही शके.** जो तमारुं सामर्थ्य होय, तो विधिपूर्वक ते जिनमंदिर करावो के जेना प्रभावथी घणा भव्य जनो सद्गतिने प्राप्त करी शके.''

ए प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळतां चतुरशिरोमणि अने चंद्र समान उज्ज्वळ यशवाळो आम राजा कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! ज्यां आपनी देशनाना किरणो प्रकाशी रह्यां छे, तेज पृथ्वी, देश, नगर, भवन, तिथि, मास, ऋतु अने वरस धन्य छे.' एम कहीने राजाए जिनमंदिर माटे भूमिलक्षणने जाणता तथा भंडारना अध्यक्ष पुरुषोने आदेश कर्यो. एटले विश्वकर्मा समान बाहोश कारीगरोए त्यां सुकृतना ओच्छव अने महाविभूतिपूर्वक

जिनमंदिरनो प्रारंभ कर्यो. एम केटलेक दिवसे सर्व लोकोना प्रमोदनी साथे **एकसो हाथ उंचुं जिनमंदिर** तैयार थयुं, त्यारे राजाए नव रतल (लगभग पांच किलो) प्रमाण शुद्ध सुवर्णनी, उपमा विनानी, भारे पुण्यवंत जनोने प्राप्य तथा धार्मिक पुरुषोना मनमां रमती एवी **श्री वर्धमान** स्वामीनी प्रतिमा करावी. पछी पोताना परम पदने स्थापवाने ईच्छता एवा **श्री बप्पभट्टि मुनीश्वरे** तेनी प्रतिष्ठा करी, तथा राजाए **गोपगिरिपर** लेप्यमय बिंबयुक्त एने त्रेवीस हाथ प्रमाणवाळुं श्री वीरमंदिर कराव्यु अने त्यां सवा लाख सोनामहोर खरचीने एक मंडप कराव्यो, ते जाणे पोतानुं राज्य होय तेम मत्तवारण (मदोन्मत्त हाथी अथवा गढ) युक्त कराव्युं.

ए प्रमाणे राजा थकी सन्मान पामेला, छत्र-चामरोथी शोभता, राजहस्तीपर आरूढ थईने जता, मुख्य सिंहासनपर बिराजतां अने सरळ लोकोना मुखथी स्तुति कराता एवा **श्री बप्पभट्टिसूरि** ते मिथ्यात्वी लोकोने ईर्ष्या उपजाववा लाग्या. एवामां द्वेषी ब्राह्मणोना संसर्गथी तेमना कह्या प्रमाणे वर्तनार राजाए एकदा आचार्यने माटे अन्य कोई राजानुं सिंहासन मंडाव्युं, एटले तेना आशयने जाणता तथा अगाध सत्त्वशाळी मुनीश्वरे पोतानी आकृतिमां विक्रिया बताव्या विना राजाने प्रतिबोध आप्यो के—

कृतप्राकृतसत्त्वानां, मदादीनां जनद्विषाम् ।
दम्भस्तम्भादियुक्तानां, कथं लक्ष्या भवादृशाः ।।१।।

अर्थात् - जन साधारणने करवा लायक दंभ अने स्तंभथी युक्त लोकना शत्रु एवा मद वगेरे माटे आपना जेवा कई रीते लक्ष्य बन्या?

माटे कह्युं छे के—

मर्दय मानमतङ्गजदर्प, विनयशरीर-विनाशनसर्पम् ।
क्षीणो दर्पाद् दशवदनोऽपि, यस्य न तुल्यो भुवने कोऽपि ।।१।।

अर्थात् - हे सुज्ञ! विनयरूप शरीरनो विनाश करवामां सर्प समान एवा मानरूप मतंगज (हाथी)ना दर्पने तुं दळी नाख. कारण के दर्पना वशथी रावण नष्ट थयो के जगतमां जेनी तुल्य कोई नथी.

ए प्रमाणे गंभीर वाणी सांभळतां राजाए आचार्यने विनंती करी के—'हे स्वामिन्! आपना वाक्यथी मारामां रहेल गर्वरूप विष नाश पाम्युं, माटे समर्थ एवा आप मारा क्षेत्र (देश) मां सुखे रहो अने भक्तजनोए तैयार करेल अचित्त आहार पाणीनो उपभोग करो.'

एवामां एकदा राजाए अंतःपुरमां पोतानी वल्लभाने म्लान मुखवाळी जोईने पोतानी इच्छा प्रमाणे तेणे आचार्यनी पासे आ प्रमाणे अर्ध गाथा कही बतावी—

अज्जवि सा परितप्पइ, कमलमुहि अत्तणो पमाएणा ।

अर्थात् - पोताना प्रमादने लीधे अद्यापि ते कमलमुखी परिताप पामे छे.

त्यारे श्रेष्ठ सारस्वत मंत्रथी सिद्ध थयेल एवी वाणीथी सूरिराज पोताना मित्र राजापर सत्य स्नेह धरावता गाथानो उत्तरार्ध बोल्यो के—

सुत्तविउद्धेण तए जीसे पच्छाइयं अङ्गं ।।

अर्थात् - जेणीना अंगने वहेला जागेला ते ढांक्या हता.

हृदयना भावने बतावनार ए वचनथी संतुष्ट थयेल राजाए तेमना कवित्वनी प्रशंसा करी, पण अभ्रांत लोचनवाळो ते कंईक भ्रांति पाम्यो.

एक दिवस आचार्य साथे अनुपम प्रेम धरावनार राजाथी जाणे व्यथा पामी होय तेम मुखभंगथी पगले

पगले कंईक विकार दर्शावती राणीने आवती जोई. एटले मनमां जाणे दया उत्पन्न थई होय तेम राजा अर्ध गाथामां बोल्यो—

बाला चंकमती पए पए कीस कुणइं मुहभङ्गं ।

अर्थात् - गमन करती तरुणी पगले पगले मुखभंग शा माटे करती हशे?

एम सांभळतां सूरि सत्यवचनना तरंगथी मनोहर एवुं वचन बोल्या. कारण के वचनसिद्ध पुरुष कल्पांते पण असत्य वचन न बोले.

नूनं रमणपएसे मेहलया छिवइ नहपन्ति ।

अर्थात् - कारण के रमण प्रदेशमां थयेली नक्ष पंक्तिने मेखला अडे छे.

ए प्रमाणे सांभळी राजा कंईक संभ्रात थयो अने हिमपातथी म्लान थयेला कमळनी जेम तेणे पोतानुं मुख निस्तेज अने विकृत करी दीधुं, एटले राजानी विपरीत दशा जोतां आचार्य उपाश्रयमां आव्या अने स्नेह तथा मोहथी अपराजित एवा तेमणे मुनिओने विहार करवानी सूचना आपी दीधी, पछी त्यां बहार द्वारना कमाडपर एक श्लोक लखी, संघनी पण अनुमति लीधा विना ते नगरनी बहार चाली नीकळ्या. ते श्लोक आ प्रमाणे हतो—

यामः स्वस्ति तवास्तु रोहणगिरेर्मत्तः स्थितिः प्रच्युता,
वर्त्तिष्यन्त इमे कथं कथमिति स्वप्नेऽपि मैवं कृथाः ।
श्रीमंस्ते मणयोवयं यदि भवल्लब्धप्रतिष्ठास्तदा,
ते शृङ्गारपरायणाः क्षितिभुजो मौलौ करिष्यन्ति नः ।।१।।

अर्थात् - अमे जईए छीए, रोहणाचल समान तारुं कल्याण थाओ. 'आ माराथी भ्रष्ट थया, एटले हवे केम वर्ती शकशे?' एम स्वप्ने पण विचार करीश नहि. हे राजन्! जो मणिरूप एवा अमे जो तारा सहवासथी प्रतिष्ठा मेळवी छे, तो शृंगारपरायण राजाओ अमने पोताना मस्तकपर धारशे.

पछी केटलेक दिवसे **गौड** देशमां विचरतां गुरुमहाराज **लक्षणावती** नगरीना उद्यानमां पधार्या. त्यां धर्मराजानी राज सभामां एक वाक्यपतिराज नामनो पंडितराज के जे विद्वानोमां मुगट समान अने काव्य रचवामां असाधारण कवि हतो. एटले मेघना आगमनथी मोरनी जेम प्रभुनुं आगमन जाणी ते पंडितने तेमना आगमनना संदेशाथी राजाने संतुष्ट कर्यो. वळी तेमनी स्तुति करवा तेणे जणाव्युं के—

'जेने सरस्वती देवी वश छे अने मारा पूर्वजोथी जे प्रशंसा पामेल छे, एवा **आ.श्री बप्पभट्टि मुनीश्वर** आपना पुण्ययोगे अहीं पधार्या छे. ए ज्यां पधारे ते दिवस पण पवित्र समजवो.'

त्यारे चंद्रोदयथी चकोरनी जेम आनंद पामता राजाए पण विद्वानोना मुगट समान एवा ते पंडितने जणाव्युं के-'ए जैनाचार्य ज्यां पधारे ते दिवस पण खरेखर! पवित्र समजवो; परंतु **आम**राजानी साथे मारे विग्रहनो दुर्ग्रह कदाग्रह छे, तेथी एमने बोलाव्या पछी ए पाछा जाय, तो मारुं अपमान थाय. माटे ते मुनीश्वरने पूछवानुं छे के ते राजा पोते मारी पासे आवी तमारी समक्ष अनुमति मांगीने तमने तेडी जाय, तो तमारे जवुं, नहीं तो नहि.

ए प्रमाणे राजानी आज्ञाथी सुज्ञ पुरुषोए ए बाबत आचार्यने निवेदन करी एटले तेमणे ए वात कबूल राखी अने तेथी **धर्म**राजा परम आनंदने पाम्यो. पछी आमराजाए करेल प्रवेशमहोत्सव करता पण अधिक तेणे आचार्यनो नगरीमां प्रवेशमहोत्सव कर्यो.

पछी साक्षात् धर्ममूर्ति एवा **धर्म**भूप गुरु सन्मुख आवीने बेठो एटले विद्वानोमां चक्रवर्त्ती समान एवा गुरुराजे जणाव्युं के सुंदर लाल चरणवाळा जेमनी चाल मनोहर छे, जे पक्षीमां श्रेष्ठ छे, जे सौम्य छे, जेनी श्वेत पांख छे, तेवा राजहंस जेम हिमालयना मानसरोवरनो आश्रय करे छे तेम 'सुंदर चरणमां रक्त, सदा सद्गतिने

ईच्छनारा, धवल पक्षवाळा, गुणपरिचयथी हर्ष पामनारा सद्‌गुणना अतिशयने धारण करता सौम्य अने कमनीय एवा अमे परम कविओ हे राजन्! आपनी पासे आवतां सत्वर सन्मानपात्र थया छीए.'

अहीं पण पोतानी काव्य कथननी लीलाथी सभाने आनंद पमाडनार **आ.श्री बप्पभट्टसूरि दोगुंदक** देवनी जेम सुखपूर्वक रहेवा लाग्या.

हवे अहीं प्रभाते आचार्य न आववाथी **आम**राजाए नगरमां अने बहार गामडांओ वगेरेमां तेमनी शोध करावी, छतां बाळमित्र सूरिनो पत्तो न लागवाथी शोकने वश थयेल राजा, च्यवन पामनार देवनी जेम बहु ज विलक्ष बनी गयो.

पछी एक दिवसे बहार बगीचामां जतां राजाए सर्पे मारी नाखेल पीळो नोळीयो जोयो, जेथी ते आश्चर्य पाम्यो. त्यां बराबर निरीक्षण करतां तेना मस्तकमां मणि जोवामां आव्यो एटले पोते निर्भय थई राजाए ते सर्पने बराबर पकडीने तेनुं मुख दबावी, मणि लईने ते पोताने स्थाने आव्यो. त्यां विद्वानोनी समक्ष ते एक श्लोकनो पूर्वार्ध बोल्यो—

शस्त्रं शास्त्रं कृषिर्विद्या अन्यो यो येन जीवति ।

अर्थात् - शस्त्र, शास्त्र, कृषि अने विद्या तथा अन्य जेना वडे जे जीवी शके.

राजानी आ समस्या तेमणे पोतपोताना अभिप्राय प्रमाणे पूरी, पण तेमांनो कोई विद्वान, राजाना हृदयना भावने भेदी न शक्यो, त्यारे तेणे भारतीपुत्र **बप्पभट्टिसूरि**ने आदरपूर्वक याद कर्या. एटले भ्रमर जेम मालतीपुष्पना परिमलने संभारे, तेम आचार्यने संभारतां ते कहेवा लाग्यो के—

'चंद्रनी आगळ जेम खद्योत (खजुआ) अने हाथीनी आगळ गर्दभनी जेम विद्वानो मारा मित्रनी सोळमी कळाने पण लायक नथी.'

पछी राजाए एवी पटह घोषणा करावी के-'जे मारा अभिप्राय प्रमाणे आ समस्या पूरे तेने हुं एक लाख सोनामहोरो आपुं.'

एवामां पोतानुं सर्वस्व नाश थतां एक जुगारीए आ धननो उपाय सांभळीने ए अर्ध श्लोक पोते लई लीधो अने क्यांकथी **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ना समाचार मेळवीने ते **गौड**देशनी लक्षणावती नगरीमां आव्यो, त्यां **आ.श्रीबप्पभट्टि** प्रभुने नमन करीने तेणे श्लोकार्ध कही संभळाव्यो, जेथी विना प्रयासे तेमणे तेने उत्तरार्ध कही बताव्यो कारण के सरस्वतीनो प्रसाद, जगतना क्लेशरूप सागरनो नाश करवामां अगस्त्यऋषि समान छे. ते समस्यानो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे—

सुगृहितं हि कर्त्तव्यं, कृष्णसर्पमुखं यथा ।।

अर्थात् - कृष्णसर्पना मुखनी जेम ते बधुं सारी रीते ग्रहण करवुं.

त्यारथी सूरिए ते राजाने **नागावलोक** एवुं नाम आप्युं, एटले आम राजा ए नामथी पण ख्याति पाम्यो.

पछी ते जुगारी समस्यानो उत्तरार्ध लईने राजा पासे आव्यो अने ते प्रमोदपूर्वक निवेदन करीने तेणे राजाने आश्चर्यमग्न बनावी दीधो. त्यारे राजाए तेने पूछ्युं के—'आ समस्या कोणे पूरी?'

ते बोल्यो—'हे स्वामिन्! **आ.श्री बप्पभट्टि** गुरुए मने कही.' आथी राजाए तेने उचित दान आप्युं. एकदा विरहने विसारवा माटे राजा बहार उद्यानमां गयो, त्यां वटवृक्षनी नीचे एक मृत मुसाफर तेना जोवामां आव्यो, वळी त्यां शाखापर जळबिंदुओने झरतुं एक जळपात्र लटकतुं हतुं. एटले तेणे आ प्रमाणे गाथानो पूर्वार्ध लखी काढ्यो-

तइया मह निग्गमणे पियाइ थोरंसुएहि जं रुन्नं ।

अर्थात् - ते वखते हुं बहार नीकळतां प्रियजने (पात्रे) आंसु लावीने रोवा मांड्युं.

एटले पूर्वनी जेम आ समस्या पण राजाना मनने गमे तेवी रीते कोई विद्वाने पूरी न करी. सूर्य विना विश्व प्रकाशक कोण होई शके? एम ज्यारे आ समस्या कोईना लक्ष्यमां न आवी, त्यारे ते जुगारी पुनः **श्रीबप्पभट्टि** महाराज पासे गयो अने तेणे ते तेमने कही संभळावी. एटले सुज्ञ शिरोमणि आचार्ये अनायासे ते पूरी करी. ए उत्तरार्ध लईने राजा पासे आवी तेणे निवेदन करतां जणाव्युं के—

करवत्तिबिंदुनिवडण मिहेण तं अज्ज सम्भरिअं ।।

अर्थात् - बतकमांथी पडता जळ बिंदुओना मिषथी आज ते सांभरे छे.

एवामां अन्य कोई विद्वान पथिके त्यां ते बधुं जोईने यथामति जणाव्युं के—'बतकमांथी झरता जळबिंद जोई पथिकनुं हृदय रुंघाई गयुं.

त्यारे **आ.श्री बप्पभट्टी** पुनः बोल्या कारण के जे भोळीने नगरमां रोती मुकीने नीकळ्यो हतो तेनी याद आवी. ए प्रमाणे सांभळता राजा चिंतववा लाग्यो के—

'आवी रसपुष्टि मारा मित्र मुनीश्वर विना अन्य कोई गुंथी न शके.' पछी तेणे मुनीश्वरने बोलाववा माटे पोताना प्रधान पुरुषोने उपालंभगर्भित संदेशो संभळावीने मोकल्या, एटले अज्ञ जनोने अप्राप्य एवा आचार्य महाराज पासे आवी कुशल प्रश्नपूर्वक ते राजानो संदेशो कहेवा लाग्या के—'वृक्ष छायाना कारणे पोताना शिर पर पत्रो (पांदडां) ने धारण करे छे, छतां प्रचंड पवनना योगे ते भूमि पर पडी जाय छे, तेमां वृक्ष बिचारूं शुं करे? तरुण युवतिना कपोल भागपर रहेल सुवर्ण गंगा के सरस्वतीने याद करतां नथी, कामिनीना वक्षः स्थळ पर खेलतुं मुक्तामणि शुक्ति (छींप)नुं स्मरण करता नथी अने मुगटमां जडायेल रत्न पोतानी रोहणाचलनी जन्मभूमिने याद करतुं नथी, तेथी एम लागे छे के पोतपोताना सुखमां मग्न रहेल जगत स्नेह विनानुं छे. वळी जेनी जंघा अने चरण धुळथी मलीन छे. तथा जेना मस्तक अने मुखनी शोभा म्लान छे, एवो कार्पटिक कदाच गुणनिधान होय, तथापि ते पंथे पडेल होय त्यारे गरीब पथिक कहेवाय.'

ए प्रमाणे सांभळतां **बप्पभट्टि** गुरु तेमनी आगळ स्थिर वचनथी कहेवा लाग्या के—'मित्राई के दुश्मनावटमां पण मननी साथे मन जोडी राखवुं. हवे तमे आर्य आमराजाने अमारो आ संदेशो बराबर निवेदन करजो के—

गज, मानस, चंदन, भ्रमर, रत्नकर, शशिखंड, जड, अने ईक्षु आ सातनी अन्योक्ति आ. बप्पभट्टीसूरि करे छे.

'हाथीओनुं आश्रयस्थान विंध्य छे छतां विंध्य विना पण नरेन्द्रना भुवनमां हाथी गौरव पामे छे. तो विंध्य पण गमे तेटला हाथी जाय तोय हाथी विनानो थतो नथी. १ मानसरोवरथी विखूटा पडेला राजहंस जो सुख पामता नथी तो मानसरोवरना किनारा पण हंस विना शोभता नथी. अने बधा हंस जता रहे छतां मानस मानस ज रहे छे अने अन्यत्र गयेला हंस पण बगला नथी कहेवाता. हंस ज्यां जाय त्यां मंडनरूप बने छे परंतु हंस जेने छोडी दे छे ते महासरोवरने खोट पडे छे. २ नदीना प्रवाहो गमे तेटला चंदनना वृक्ष ताणी जाय छतां मलयाचल चंदन विहुणो बनतो नथी अने मलयाचलथी विखूटा पडेला चंदन पण मोंघा ज बने छे. ३ भ्रमरो कमळना वन विना पण मकरंदनी मजा माणे ज छे. अने कमळना वनने कदी भ्रमर विहोणुं जोयुं के सांभळ्युं छे? ४ एक कौस्तुभ विना पण समुद्र तो रत्नकर ज रहे छे. अने कौस्तुभ रत्न जेना हैये झूले छे ते पण मोंघेरो बनी जाय छे. ५ पूर्णिमानो चन्द्र खंड विना पण अखंड मंडल छे तो निर्मळ चंद्रनो खंड पण हरना शिर पर शोभतो नथी? ६. वृक्ष पत्रोनो त्याग करे तेथी तेमनुं पत्र पणुं जतुं नथी अने वृक्षनी जेवी तेवी छाया पण पत्रने ज आभारी छे. सर्व वृक्षोनो आ नियम छे- जड सदा अधोभागमां ज होय, सुमन उपर ज होय, गुणी तो जाय हेठे अने स्वामीनो प्रीतिपात्र उपर चडे! पृथ्वीमंडळमां जे कोई प्रभुताने पाम्या छे ते शेरडीना सांठा जेवा छे. जे जडमां सरस छे ने पत्र (पत्र-पात्र) मां विरस छे. खरेखर आ विश्वमां ऋज शीलथी अलंकृत वचननी शोभाने प्रगट करता गुणीजनोने स्वामी दुर्लभ

छे अने स्वामिने गुणीजन दुर्लभ छे.'

माटे हे प्रधानो! जो तमारे (तमारा स्वामीने) अमारी साथे प्रयोजन होय, तो ते पोते सत्वर धर्मराजानी सभामां गुप्त वेषे आवीने अनुमति मांगे, एम प्रतिज्ञानो निर्वाह थतां अमे तमारी पासे आवी शकीए.''

ए प्रमाणे शिक्षा आपीने आचार्यमहाराजे ते प्रधानोने पाछा मोकल्या, एटले ते पोताना स्वामी पासे आव्या अने माहात्म्ययुक्त सूरिनुं वचन तेमणे सम्यक् प्रकारे राजाने निवेदन कर्युं. त्यारे शत्रुनो भय न लावतां भारे उत्कंठापूर्वक **आमराजा** उंटपर आरूढ थईने चाल्यो. मार्गे जतां ते गोदावरीना किनारे एक गाममां पहोंच्यो, त्यां पादरे कोई देवकुळमां तेणे निवास कर्यो. एवामां ते मंदिरमांनी देवी आमराजा पर आसक्त थई जेथी अर्धरात्रे आवीने प्रार्थनापूर्वक तेणे राजा साथे भोगविलास कर्यो. कारण के **भाग्य सर्वत्र जाग्रत होय छे.** पछी प्रभाते मित्रने मळवाने उत्कंठा धरावतो आम राजा ते देवीने पूछ्या विना उंटपर आरूढ थईने आगळ चाल्यो अने **आ.श्रीबप्पभट्टि** प्रभु पासे आवी पहोंच्यो त्यां विरहना शोकथी व्याकुळ थयेल राजा निर्वेदरूप अग्निनी ज्वाळा समान वचन कहेवा लाग्यो के—'निद्रा जागरणादि कृत्यने विषे निरंतर याद करनारा, तेम स्वप्नमां पण अने सूक्ष्म चेष्टाओने विषे पण योगीओना लोचननी जेम स्थिर छतां श्रेष्ठ हृदयवाळा मित्रोनी पण जो आवी निष्ठा होय, तो हे मन! मित्रनी आशा तजी दे. हे प्रभो! हवे प्रसन्न थाओ.' पछी गुरुना सत्य वचन माटे पोताने प्रतीति होवा छतां राजा कौतुकथी गाथार्ध बोल्यो—

अज्जवि तं सुमरिज्जइ को नेहो रागराईए ।

अर्थात् - अहो! ते रागी रमणीनो एक रातनो पण केवो स्नेह के जे अद्यापि याद आवे छे?

त्यारे गाथानो उत्तरार्ध बोलतां गुरु महाराजे जणाव्युं के—

गोलानइए खण्डे देउलमज्झे पहिअ जं न वसिओसि ।।

अर्थात् - हे पथिक! गोदावरी नदीना कांठे देवकुळमां तुं रह्यो न हतो?

ए प्रमाणे कहेतां गुरुए राजाने दृढ आलिंगन आप्युं, एटले जाणे राजानुं अविश्वासपात्र मन, अंदर पेसीने जोवाने ते ईच्छतो होय. आथी अत्यंत संतुष्ट थयेल अने कविगणमां प्रख्यात एवा राजाए जणाव्युं के-'रोमांचित शरीर अने प्रसाद अश्रुथी भींजायेला लोचनो वडे प्रसन्न थयेला एवा आप सुज्ञ शिरोमणिनी अद्भुत कथा सांभळी सौजन्य-सुधाना झरणामां स्नान करवा अने विपत्ति-सागरथी पार उतरवा माटे हे असाधारण सत्त्वशाळी! तमारां दर्शन करवा अमे आव्या छीए.'

पछी मनहर मित्राईथी रंगायेल आमराजाए खडीनो कटको लईने कौतुकथी एक चित्रबंध श्लोक लख्यो-

[1]अति[8]	[9]अति[16]	[17]अन्म[24]	[25]अलं[32]
[7]प्रीद्य[2]	[15]रद्य[10]	[23]जद्य[18]	[31]पद्य[26] ।
[3]मे ला[6]	[11]मे ला[14]	[19]मे ल[22]	[27]मे ल[30]
[5]फस[4]	[13]फस[12]	[21]फस[20]	[29]फस[28] ।।१।।

एटले आ गोमूत्रिका-बंध जाणीने गुरु पोते वांचीने समजी गया, परंतु दोषने जाणनार छतां बीजा कोई जाणी न शक्या. ते श्लोकमां राजाए आ प्रमाणे जणाव्युं—

अद्य मे सफला प्रीति, अद्य मे सफला रतिः ।
अद्य मे सफलं जन्म, अद्य मे सफलं पलं ।।२।।

अर्थात् - आजे मारी प्रीति सफळ थई आजे मारी उत्कंठा पूर्ण थई, आजे मारो जन्म सफळ थयो अने आजे मारी पल सफळ थई.

ए प्रमाणे रात्रे ज्ञानगोष्ठीथी जागता ते राजाने संतोष (विश्रांति) पमाडीने प्रभाते सूरिमहाराज निःशंक थईने समय प्रमाणे राजसभामां गया ते वखते मेघथी आच्छादित थयेल सूर्यनी जेम स्वार्थनिष्ठ श्रीमान् आमराजा पण स्थगीधर (पानद्रानी उपाडनार) ना वेषे विशिष्ठ पुरुषो साथे त्यां गयो, एटले गुरु महाराजे धर्मराजाने भविष्यना वियोगाग्निनी ज्वाळा समान दुःसह एवी आम राजानी विज्ञप्ति पत्रिका बतावी. ते वांचीने राजाए दूतने पूछ्युं के—'तारो राजा केवो छे?'

त्यारे ते बोल्यो—'हे देव! ते आ स्थगीधर जेवो छे, एम समजी ल्यो.'

पछी हाथमां बीजोरूं धारण करता एवा तेने आचार्ये पूछ्युं—'आ तारा हाथमां शुं छे?'

तेणे कह्युं—'बीजराज (बीजोरूं) छे.'

एवामां तेणे तूवेरनुं पत्र बतावतां, गुरु स्थगीधरने आगळ करीने बोल्या—'शुं आ तूअरिपत्र (अरिपात्र) छे?' त्यारे बीजा जाणी शके तेम प्राकृतमां जवाब आप्यो. पछी गुरु बोल्या—'सरल स्वभावी धर्मराजानी जेवी इच्छा.'

एवामां प्रधान कहेवा लाग्यो के—'आ आचार्य अमारा पर शिथिल आदरवाळा थया छे, तेथी एमणे दुष्कर प्रतिज्ञा करी छे. हे पूज्य! ए प्रतिज्ञा पूर्ण थतां पण जो आप मारी साथे आवो, तो अहोभाग्य! अने देवो अमारा पर प्रसन्न थया समजीशुं.

त्यारे गुरु आ प्रमाणे एक गाथा बोल्या के—

तत्ती सीअली मेलावा केहा? धण उत्तावली पियमंदसिणहा ।
विरहिहिं माणसुं जं मरइ तसु कवणनिहोरा? कण्णिपवित्तडी जणु जाणइ दोरा ।।

एम सांभळतां राजाए पूछ्युं के—'ए गाथानो अर्थ शो?'

त्यारे ज्ञानना निधान एवा **बप्पभट्टि मुनीश्वर** तेनुं विवेचन करतां राजानी आगळ कहेवा लाग्या के—''एक लोहनो पिंड अग्निथी तपेल होय अने एक शीतल होय, ए बंने साथे केम मळी शके? कारण के ते बंने तप्त होय, तो तेनो मेळाप थई शके. अर्थात् ए आमराजा सांसारिक वासनाओथी तप्त छे अने अमे औदासीन्य, जितेंद्रियत्व तथा निर्लोभताथी शीतल छीए, तो अमारो एनी साथे मेळ केम थाय? **धनादेशी** शब्दथी पत्नी लेवी, ते उत्सुक होय अने प्रियतम मंद स्नेहवाळो होय, तो तेमनो मेळाप शी रीते थाय? विरहथी जे मरतो होय के मृत तुल्य थई गयो होय, तेनो निरोधक कोण थई शके? ते मळे त्यारे ज प्रणयिनीप्रिया जीवी शके; आ कर्णवेध जेवी वात तेमां परोवायेल दोरा ज जाणी शके.

तेमज तपने ईच्छनार तथा काम-मदन ए बंनेना मेलनमां चेष्टा केवी? अर्थात् ते बंने विपरीत होवाथी तेमनी मित्राई न थई शके. तथा धनदान आपनार दाताने सत्पात्रनी इच्छा होय अने याचक ते लेवामां इच्छा रहित होय, निर्मोही होय तेना विरहमां दाता तेनी खातर संताप पामतो होय, तेने दान आपवानुं मुहूर्त्त केवुं? अर्थात् ते गमे त्यारे पण दान आपी संतुष्ट थई शके, वळी कान्यकुब्जमां मारा समान तेजस्वी विद्वान् **दोरा** एटले बंने राजाओने जाणे छे. अथवा धर्मराजा अने आमराजा बंनेने पंडितो प्रिय छे, तेथी ते बंने मारा मनमां रमी रह्या छे. अहीं गूढार्थ एवो छे के हे राजन्! गुरुप्रतिज्ञाना निर्वाह माटे आम राजा अहीं आवेल छे. ए बीजो अर्थ कह्यो.

तथा एक तप्त स्वभावनो होय अने बीजो शीतल स्वभावनो होय, त्यां मेळाप केवो? वळी चमत्कारी काव्यो जेने प्रिय छे एवा आचार्य, ते अमारापर स्नेहरहित छे, ते उपरोधथी ग्रहण करी शकाय तेम नथी. वळी विषय, वियोगादि सर्व संगनो परित्याग करतां जे पुरुष मरे, देव समान सुखी थाय, तेने स्नेह केवो? संबंधादिकमां तेनो उपरोध केवो? अर्थात् उपरोधथी ते ग्रहण न थई शके. वळी कर्ण जेवा दानेश्वर तथा महाबाहु **आम**राजाने

पण आ सूरि सामान्य पुरुष समान समजे छे. आ त्रीजो अर्थ थयो.

तेमज तत्त्वने ईच्छनार तथा संगना त्यागीनो मेळाप थई शके, वळी परब्रह्मने ईच्छनार पर धनवंत जनो अत्यंत प्रीति करे. कारण के वीतरागमां सर्व प्रीति करे छे अने धनवंतो पण तेमां प्रीति धरावे छे. वळी विरथ एटले विष्णु, तेमां मन लगावीने जे मरण पामे तेना जेवो अन्य कोण होई शके? ते राजा समान थाय छे, अर्थात् गुरुना ध्यानमां मरण पण श्लाघ्य छे. वळी गंगा करतां अन्य कोण पवित्र छे? अर्थात् ए ज पूज्य छे. वळी बे राजा एकत्र मळ्या, तेमां तुं ज सर्व सामर्थ्य युक्त छे माटे जे उचित लागे ते कर.'' ए चोथो अर्थ थयो.

ए प्रमाणे श्री बप्पभट्टि महाराजे एक सो आठ अर्थ कही बताव्या, परंतु मतिनी मंदताथी अमे ते जाणता नथी.

पछी **आमराजा** त्यांथी उठीने रात्रे वारांगनाना घरे रह्यो अने प्रभाते तेने एक अमूल्य कंकण भेट आपीने तेना घर थकी चाली नीकळ्यो अने बीजुं कंकण के जे सूर्यना किरण समान तेजस्वी हतुं, ते राजभवनना द्वारपर मूकी दईने त्यांथी बहार जईने ते एकांत उद्यानमां रह्यो.

हवे अहीं प्रभाते आचार्ये राजसभामां आवीने कान्यकुब्जमां जवा माटे राजानी अनुमति मांगी. एटले पूर्ण थयेल प्रतिज्ञाने न जाणवाथी राजाए पूछ्युं के 'केम?' त्यारे तेमणे जणाव्युं के—'आम राजा अहीं आवी गयो, तेणे विद्वता भरेला कथनथी जे जे कही संभळाव्युं, ए ते पोते हतो. वळी **दोरा** शब्दथी बे राजानी सूचना करी, तेमज बीजोरूं बतावतां ' आ शुं?' एम पूछवामां आवतां तेणे **बीजराज** (बीजो राजा) एम उत्तर आप्यो. तथा **अरिपत्तं** ए शब्दथी तेणे अरिपात्र (शत्रु) एवो संस्कृतथी अर्थ थाय छे, ते तारी आगळ स्फुट कही बताव्युं.' ए प्रमाणे सांभळतां राजाने भारे पस्तावो थयो. तेणे खेद साथे चिंतव्युं के—'अहा! मारी मूर्खताने धिक्कार छे के तेणे स्पष्ट कह्या छतां हुं समजी न शक्यो.'

एवामां वारांगनाए आवीने रत्नना तेजथी अंधकारने दूर करनार एवुं कंकण राजानी आगळ मूक्युं, तेमज बीजुं कंकण द्वारपाले आपीने राजाने निवेदन कर्युं के—'हे नाथ! द्वारना खीलापर आ कंकण कोण मूकी गयेल छे, ते हुं जाणतो नथी.' एटले राजाए बारीकाईथी तपासतां तेना पर **आमराजा**नुं नाम जोवामां आव्युं. आथी **बप्पभट्टि** गुरुना वचनपर तेने संपूर्ण खात्री थई.

आ बधी हकीकतथी खेद पामतां राजा कहेवा लाग्यो के—'अहा! घरे आवेल शत्रु राजाने में साध्यो पण नहि अने तेनो सत्कार पण न कर्यो. तेथी चिरकाळथी चाल्या आवता वैरनी निवृत्ति न थई अने वळी पूज्य गुरुनो विरह भारे दुःखदायक थई पडशे. शुं कहीए? हवे स्वामीनुं अलभ्य दर्शन कांई मळवानुं छे?'

त्यारे आचार्य बोल्या के—'हे राजन्! तुं खेद न कर. कारण के अमे हंसनी जेम अप्रतिबद्ध विहारी छीए. हे महाबाहु! अमे तारी अनुमति लईने जईए छीए, हवे हे मित्रवर्य! तुं तारा नामने सार्थक करजे के जेथी बीजा लोको तारुं अनुकरण करीने निर्मळ थाय.' एम कही त्यांथी नीकळीने गुरु महाराज आमराजाने जईने मळ्या. त्यांथी ऊंटपर आरूढ थयेल राजा, यशथी शोभता गुरु साथे मार्गे चाल्यो, एवामां बकरानी जेम जळमां मुख नाखीने पाणी पीतो एक भील राजाना जोवामां आव्यो, त्यारे कंईक अपूर्व सांभळवानी इच्छाथी तेणे आचार्यने पूछ्युं के- 'आ पथिक भील पशुनी जेम शा माटे पाणी पीए छे?'

एम सांभळतां गुरुराजे तरत गाथाना उत्तरार्धथी जणाव्युं. कारण के सारस्वत मंत्रथी सिद्ध थयेला पुरुषो काव्यमां विलंब करता नथी—'हे राजन्! मुग्धाना आंसु लुंछतां एना बंने हाथ काजळथी श्याम थई गया छे.' एटले तेनी खात्री करवा राजाए ते भीलने बोलावीने हकीकत पूछी. त्यारे शरमने लीधे पोतानुं मुख नीचुं करी यथास्थित वृत्तान्त जणावतां तेणे कह्युं के—'हे नाथ! प्रवासे नीकळती वखते वधूने शांत करतां अने तेना काजळसहित आंसु

लुंछतां मारा हाथ काजळवाळा थया छे. आ वृत्तान्त सांभळतां हर्ष पामतो राजा, सौधर्म देवलोके पहोंचनार इंद्रनी जेम पोताना कान्यकुब्ज नगरमां पहोंच्यो. एटले प्रथम करतां पण अधिक महोत्सवथी तेणे गुरुने नगर प्रवेश कराव्यो अने अत्यंत बहुमानथी तेमनी पूजा करी.

हवे अहीं **श्री सिद्धसेनसूरि** अत्यंत जराग्रस्त थया अने पोते कृतकृत्य थवाथी अनशन विधि करवानी तेमनी इच्छा थई. एटले मुख्य शिष्य **आ. बप्पभट्टि**नुं मुख जोवानी इच्छाथी तेमणे एक मुनिने पोतानो अभिप्राय जणावीने शिष्यने बोलाववा माटे मोकल्या. ते मुनिए आवीने **आ.श्री बप्पभट्टसूरि**ने गुरुनो अभिप्राय संभळावतां जणाव्युं के—'मारुं शारीरिक बधुं बळ नष्ट थई गयुं, दृष्टि पदार्थ जोवामां महा कष्टे प्रवर्ते छे, अवयवो बधा शिथिल थई गया छे अने प्राण हवे प्राहुणा थईने जवानी तैयारीमां छे पण हे वत्स! मात्र एक तने जोवाने माटे अटकी रह्या छे, माटे जो मने जोवानी तारी इच्छा होय, तो सत्वर मारी पासे आवी जा.'

आथी पोताना गुरुपरनी बहु भक्तिथी **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि** राजपुरुषो सहित सत्वर **मोढेरक तीर्थ**मां गुरु पासे हाजर थया. त्यां गुरुनुं प्रथम दर्शन थतां तेमनुं वचन रुंधाई गयुं एटले पोतामां अत्यंत वात्सल्य धरावनार एवा **बप्पभट्टि**ने गुरु कहेवा लाग्या के—'हे वत्स! मारुं शरीर तो वांकुं वळी गयुं छे, शरीरने लाकडीना टेकानी जरूर पडे छे, दांत बधा पडी गया. कान सांभळवाथी रहित थयां, चक्षुनुं तेज बधुं उडी गयुं अने श्यामता आवी गई, आटलुं थया छतां **मारुं निर्लज्ज मन हजी विषयने माटे तलसे छे**, माटे स्वच्छमति अने पवित्र गच्छपर वात्सल्य धरावनार हे वत्स! अंतिम विधि साधतां मारो सहायक थईने तुं अनृणी (ऋणमुक्त) था.' पछी आराधना करीने गुरु परलोके गया, एटले राजमान्य **आ.श्री बप्पभट्टसूरि**ए गुरुनुं शासन चलाव्युं. त्यां **श्रीमान् गोविंदसूरि** अने **श्री नन्नसूरि**ने गच्छनो भार सोंपी अने श्री संघनी अनुमति लईने ते निर्ग्रंथनायक राजाना प्रधानो साथे आदरपूर्वक पाछा **आमराजा**नी राजधानीमां आव्या (त्यारे राजाए तेमनुं बहुमान कर्युं, पण तेमना रागने माटे राजाने विकल्प थयो.)

एक वखते राजसभामां नृत्यांगना नृत्य करती हती. ते अवसरे पुरुषधारी जाणे साक्षात् सरस्वती होय एवा आचार्य हाथमां पोथी लईने बेठा हता, तेमनी निर्दोष दृष्टि बन्ने प्रकारे अक्षर पदमां हती, अने थाकेली नजरने विश्रांति आपवा नृत्यांगनाना **लीला कंचवा** उपर दृष्टि स्थापी त्यारे गुरुदेवने राग थयो छे तेवा विकल्पथी पोताना चित्तना आग्रहथी संबंध आम राजाए नीचेनी गाथा विचारी'सिद्धांतना पारंगामी अने योगथी युक्त छतां आवा योगीने रमणी जीती ले छे. तो पछी ते ज प्रमाण छे.' पछी आवा प्रकारना कार्यनो निर्वाह करवामां ज्ञानना हेतुरूप एवी रमणीने रात्रे तेणे स्नेहने लीधे गुरुना उपाश्रयमां मोकली एटले प्रथम तो उपाश्रयमां आवीने छूपाई गई, पछी श्रावको ज्यारे पोतपोताना स्थाने चाल्या गया त्यारे आचार्यनुं धैर्य भेदवा माटे ते एकांतमां शुश्रूषा करवा लागी. एवामां स्त्रीना करस्पर्शथी उपस्थित थयेल उपसर्ग जाणवामां आवतां गुरुए विचार कर्यो के—'आ अवश्य राजानी अज्ञान-चेष्टा लागे छे;' एम धारी धैर्यपूर्वक अष्टांग योगरूप सद्धर्मरूप बख्तरथी सज्ज थईने ते कामदेवनो विजय करवाने तैयार थई गया. एटले संतोषरूप अक्षत पलाण मांडीने ते शुभ ध्यानरूप अश्वपर आरूढ थया. दृढ संयमरूप धनुष्य अने तपरूप बाणने धारण करता, तथा सद्बोधनी पुष्टिरूप शक्ति (शस्त्र-विशेष) ने हाथमां लेतां अंतरंग शत्रुनो जय करवा ते तत्पर थया. पछी अनादरपूर्वक तेमणे ते रमणीने कह्युं के—'तुं कोण छे अने अहीं शामाटे आवी छे? आ तो ब्रह्मचारीओनुं स्थान छे, तारा जेवी रमणीने माटे आ स्थान उचित नथी कारण के मुसाफरोमां जेम वाघ, विप्रगृहमां जेम मद्य, धर्मशाळामां जेम मांस, राजभवनमां हळ, धर्ममां जीवहिंसा, वेदोच्चारमां जेम अत्यंज, कपूरमां जेम नाळीयेर, कागडाने कोठ, चंदनमां मक्षिका, कुंकुममां हींग तथा लसणमां जेम कपूर अनुचित छे, तेम तुं मनोहारिणी होवाथी आ स्थानने योग्य नथी, वळी बधा द्वारथी नीकळती अशुचि-

दुर्गंधरूप कादवथी कलुषित अने लज्जारूप अबळा देहमां कृमि विना कोण (कोई मूर्ख जनोज तेमां) आसक्त थाय.'

ए प्रमाणे सांभळतां पेली रमणी कहेवा लागी के—'हुं पूजानी अभिलाषी नथी, पण मार्गथी भ्रष्ट थयेला एवा तमने स्पष्ट बोध आपवा आवी छुं. संपत्ति मेळववा माटे लोको दानधर्म आचरे छे अने ऐश्वर्य माटे तप तपे छे, ते ऐश्वर्य राज्य विना नथी. स्वर्गमां पण एक सारंगलोचना-रमणी साररूप मनाय छे के जेना विना मनुष्यो अने देवो शोभा पामता नथी. कह्युं के—

राज्ये सारं वसुधा, वसुधायां पुरं पुरे सौधम् ।
सौधे तल्पं तल्पे, वराङ्गनानङ्गसर्वस्वम् ।।१।।

अर्थात् - राज्यमां साररूप पृथ्वी छे, पृथ्वीमां नगर अने नगरमां सुशोभित मकान साररूप छे, मकानमां शय्या अने शय्यामां विलासी वनिता साररूप छे.

अप्राप्तनी वांछाथी प्राप्तनो त्याग करनारा लोकोमां हांसीपात्र बने छे. आवा असदा ग्रहवाळा लोको जगतना व्यवहार मार्गथी अवळा चाले छे. दुर्बद्धिनी वृद्धिने लीधे ते दैवथी दंडायेला छे, माटे हे प्रभो! तमे पूरतो विचार करो. कोई पाखंडीना भमाववाथी तमे जड जेवा न थाओ. **आम**राजाए महाभक्तिथी मने तमारी प्राणवल्लभा करीने मोकली छे, हुं रूपवती, चतुर अने गुणथी अनुरागी बनुं छुं, वळी तमे जे कहो छो के बीभत्स रस-दुर्गंधने लीधे स्त्रीनुं शरीर खराब होय छे, परंतु ते शुश्रूषा विनानी अन्य कुरमणीओनुं समजवुं, पण अमे तो निरंतर पवित्र रहेती होवाथी जाणे विधाताए कपूरथी बनावी होय तेम दुर्गंधादिकनी कथाथी पण अज्ञात छीए. माटे हे नाथ! हुं प्रार्थना करुं छुं के मारा जेवी नागांगना साथे भोगविलास करतां नागेंद्रनी जेम भोगविलासथी मारा शरीरने सफळ करो.'

एम सांभळतां प्रथम **बप्पभट्टिसूरि** जरा हस्या अने पछी तेना वचनथी ते विस्मय पामी, धैर्यना आधाररूप अने निर्भय एवा गुरु, दृढ वचनथी ते रमणीने कहेवा लाग्या के—'अंदरना भागमां पोकळ एवी एक सुवर्णनी पूतळीने अशुचिथी भरीए अने उपरथी चंदन चर्चीं तेने अलंकारथी शोभावीए, ए केवुं कहेवाय? तेम विष्टागृहसमान मल, मूत्रादिकथी भरेला रमणीओना शरीरपर कयो सुज्ञ अनुराग धरावे? माटे हे भद्रे! कटाक्षपात करती तारी चक्षुने संकेली ले. वक्षस्थळने ढांकी दे, अनेक चेष्टाथी कुटिल अने रम्य हावभावयुक्त तारा वचनने बंध कर. माखणना पिंड समान ते अन्य पुरुषो के जेओ रमणीओने वश थाय, पण हे मुग्धा! अमे पाषाण जेवा छीए, तो तारा शरीरने वृथा खेद शा माटे आपे छे?'

ए प्रमाणे सांभल्या छतां जाणे सांभल्युं ज न होय तेम ते बोध न पामी; परंतु उलटी निर्लज्ज थईने ते आचार्यना स्वभावथी कठिन एवा हाथ पोताना शरीरपर अडाडवा लागी, तथा कामहस्तीना कुंभस्थळ समान पोताना कोमळ स्तननो ते हाथवती स्पर्श करावा लागी, एटले शृंगारपर्वतना खेरना अंगारा समान ते स्पर्श समजीने मुनीश्वरे दंभ अने शोक विना एकदम पोकार कर्यो. आथी ते स्त्री 'शुं शुं?' एम कहेवा लागी त्यारे तेना स्तनपरथी पोतानो हाथ खेंची लईने आंसु लाव्या विना महाकष्टे गद्गद् वाणीथी तेमणे जणाव्युं के—'आजे तें तारा अंगस्पर्शथी, अमूल्य अने अतुल्य वात्सल्यथी वृद्धि पामेला अमारा जेवाने वडीलोनुं स्मरण कराव्युं छे.'

आथी तेणे पूछ्युं के—'ते शी रीते?'

त्यारे गुरु कहेवा लाग्या के—'रात्रे स्वाध्याय कर्या पछी हंमेशां हुं गुरुना सर्व अंगे शुश्रूषा करतो हतो, त्यां केड दबावतां नितंबनो स्पर्श थई जतो. तेथी आजे गोळ अने मृदुतानी समानताथी तेनुं स्मरण थई आव्युं. जेवा तारा स्तन छे, ते पण तेवा ज हता.' एम सांभळतां तेनी रसिकता निवृत्त थई गई अने आशानो भंग थतां कामांधता

दूर थवाथी ते चिंतववा लागी के—'अहो! मने केवुं कर्म उदय आव्युं? **पत्थर, लोह अने वज्र तो नहीं पण श्वेतांबर मुनि दुर्भेद्य छे.** कारण के अग्नि के टांकणा वगेरेथी पत्थर भेदाय छे, अग्निथी लोह भेदाय छे अने कुशली (वृक्ष विशेष) ना कोमळ फळना चूर्णादिकथी वज्र पण भेदाय छे, परंतु आ महात्मानी कठिनता कोई विचित्र प्रकारनी ज छे के जे अभेद्य छे. बीजा बधा पुरुषो घृतना पिंड समान छे के जे अग्निना कुंड समान रमणीओ पासे ओगळी जाय छे, परंतु आ तो कोई जुदा ज प्रकारना छे. विधाता अने यम एनी आगळ शुं मात्र छे? ए तो एना किंकर जेवा छे. तीव्र ब्रह्मव्रतने धरनार एवा एनाथी तो कर्म पण भय पामे; शृंगाररसमां एणे विरसता धारण करी अने मारा कामने पण एणे भग्न कर्यो. कारण के मारा जेवी रमणीनो जे तिरस्कार करे, ते दैवने जीती शके.' एम विचार करती ते मुनिद्रोहनो आग्रह तजी दईने निंद्राधीन थई. कारण के **दुनियाने दुःख आवतां कंईक विश्रांति आपवाथी निद्रा उपकारिणी गणाय छे.**

पछी प्रभाते आचार्य जाग्रत थया अने पर्यंकासने बेठा, त्यारे ते रमणी प्रणाम करीने बोली—'हुं आपने विकृति पमाडवामां समर्थ थई शकी नहि. पूर्वे कामादि शत्रुने जीतनारा वीतराग हता, परंतु आ तमारा वृत्तान्तथी ए शास्त्रोक्त वात बराबर सत्य समजी शकाय तेम छे, माटे हुं आपने विनंती करुं छुं के—आप प्रसन्न थईने मारी पीठपर स्वहस्त स्थापन करो. तमारा श्रापथी तो इंद्र पण नाश पामे, तो अन्यनी शी वात करवी?'

त्यारे गुरु महाराज कहेवा लाग्या के—'आ तो अज्ञानवचन छे. अमे रोष के तोषना आचारथी अलग छीए. **अज्ञजनो श्राप वगेरेमां प्रवृत्त थाय छे.**'

ए प्रमाणे सांभळतां ते वारांगना राजा पासे आवी अने गुरुना गुणथी क्षणवारमां विकृत दशा पामेल एवी ते कहेवा लागी के—'हे नाथ! जे पोताना बाहुदंडथी महासागर तरी शके, जे पोताना मस्तकवती शीघ्र पर्वतने भेदी शके, जे इच्छानुसार अग्नि सामे बाथ भीडे अने जे सुतेलासिंहने जगाडे, ते आ तमारा श्वेतांबर गुरुने विकार पमाडी शके. अर्थात् ते कोई रीते विकार पामे तेम नथी.'

ए प्रमाणे सांभळतां हर्षथी राजानुं शरीर रोमांचित थयुं. पोताना गुरुना भारे सत्त्वथी हृष्ट थतो राजा कहेवा लाग्यो के—'तेमना वाक्यने माटे हुं लुंछणारूप बनी जाउं, अविकारी दृष्टिने माटे अवतारणरूप बनुं अने मित्रताथी मनोहर हृदयने माटे हुं बलिरूप थई जाउं. आ पृथ्वी, पर्वतो, देश अने मारुं आ नगर भाग्यशाळी छे के ज्यां **आ.श्री बप्पभट्टिगुरु** बिराजमान छे. पोते कामातुर थवाथी पोताना क्षेत्र (भूमि) थी भ्रष्ट करावनार कामनो विचार करतां परक्षेत्रमां गयेला पशु हाथीओ लोलुपताने तजी दे छे; तेथी जे गुरु तेमने सर्वथा हसी काढे छे. माटे मारा गुरुनुं **गजवर** एवुं नाम थाओ एटले आगमना बळथी भूत, भावि अने वर्त्तमानने जाणता एवा तेमना **गजवर** अने **ब्रह्मचारी** ए बे बिरुद थया.'

पछी राजाए ते रमणीने पूछ्युं के—'त्यां ते शुं कर्युं?' त्यारे ते कहेवा लागी के—'कटाक्षक्षेप अने स्तनादिकपर तेमने हस्तस्पर्श कराव्यो छतां ते विकार न पाम्या.' ते वखते पोतानी प्रज्ञाना अनुसारे वर्णन न करतां ते पुनः बोली के-

गयवरकेरइ सत्थरइ पायपसारिय सुत्त ।
निच्चोरी गुजरात जिम्व, नाइ! न केणइ भुत्त ।।१।।

'गजवरनी उपमाने धारण करता तथा अनुपम सत्त्वशाळी एवा निर्विकार गुरुराज, हे नाथ! कोई रीते भोगासक्त थाय तेम नथी.' (हे नाथ! आ तो गजवरनी पथारीए पग पहोळा करीने सुतेला छे. चोरी वगरना गुजरातनी जेम अेने कोइ भोगवी शकतुं नथी.)

ए प्रमाणे राजा वगेरेना मुखे सत्य गुणना कीर्तनथी तथा ब्रह्मचर्यना अद्‌भुत प्रभावथी **आ.श्रीबप्पभट्टिगुरु** विजयवंत थईने रहेवा लाग्या.

एकदा राजमार्गे चालतां गढनी बहार पोताना घरना पाछळना भागमां पंचागुल प्रमाण एरंडाना मोटा पांदडावती पोताना विशाळ स्तनने ढांकनार एवी एक खेडूतनी स्त्री राजानां जोवामां आवी. तेणे पोताना धणीना हाथमां वाडना छिद्रमांथी भात आपी, दातरडुं भूली जवाथी ते घरभणी पाछी वळती हती. वाळा मांथी बहार निकळता एरंड पत्रोने तेणीना स्तन बिंबाकार समान जोईने राजाने कौतुक थवाथी एक मोटा एरंडापर पोतानी चपळदृष्टि नाखतां तेणे अर्ध गाथा बनावी अने प्रभाते राजसभामां आवतां तेणे ते समस्या गुरुनी आगळ आ प्रमाणे संभळावी—

वइ विवर निग्गयदलो एरंडा साहइ तरुणाणं ।

अर्थात् - वाडना छिद्रमांथी नीकळतां एरंडांना पत्रो तरुणो ने कही रह्यां छे.

एटले गुरु तरत ज उत्तरार्ध बोल्या—

इत्थ घरे हलियवहु सद्दहमित्तत्थणी वसई ।।

अर्थात् - ए घरमां खेडूतनी स्त्रीना स्तन अमारा जेवडां छे.

ए प्रमाणे पोताना जोया प्रमाणे समस्या पूरनार गुरुनी स्तुति करतां राजाए जणाव्युं के—'आ कळिकाळमां आ गुरु विना कोई **सिद्ध सारस्वत** नथी.'

वळी एकदा सांजे हाथमां दीवो लई डोकने वांकी करती कोई प्रोषितभर्तृका (जेनो पति परदेश गयो होय ते स्त्री) पोताना वासगृह भणी जती राजाना जोवामां आवी. एटले तेणे गाथानो उत्तरार्ध बनावी प्रभाते गुरु पासे कही संभळाव्यो त्यारे गुरुए तेनो पूर्वार्ध तरत पूरो कर्यो.

पियसम्भरणपलुट्टन्तं अंसुधारानिवायभीयाए ।
दिज्जइ वङ्कगीवाइ दीउपहिजायाए ।।१।।

अर्थात् - प्रियतम याद आववाथी खेदने लीधे आंसुनी धारा पडवाथी दीपक बुझाई न जाय, ए भयथी मार्गे चालतां रमणी वांकी डोक करीने चाले छे.

ए प्रमाणे विविध काव्यगोष्ठीथी आनंद पामतां **आ.श्री बप्पभट्टि** गुरु अने राजाए केटलोक काळ सुखे व्यतीत कर्यो.

एवामां एक वखते सुज्ञ धर्मराजाए दुष्कृत्यना विरोधी एवा श्रीमान् **आम**राजाने पोतानो दूत मोकल्यो, एटले **आमराजा**नी सभामां आवी राजाने प्रणाम करीने उचित आसने बेसतां आश्चर्य पूर्वक सभ्यो जेना मुखने जोई रह्या छे एवा दूते राजाने विनंती करी के—'हे प्रभो! तमारा चातुर्यथी मारा स्वामी भारे संतुष्ट थया छे अने तेणे आश्चर्य साथे एम स्पष्ट कहेवडाव्युं छे के तमारा पंडित-वर्गमां मुगट समान **श्री बप्पभट्टसूरि**ए पोतानी सत्यासत्य वाणीना व्याख्यानथी अमने छेतरी लीधा, जेथी असाधारण बुद्धिशाळी **आमराजा** मारे घरे आव्या छतां अने आतिथ्यने योग्य छतां हुं तेनो आदर सत्कार करी शक्यो नहि. ए अमने भारे पश्चात्ताप थाय छे. हृदयने विकास पमाडनार ए पांडित्य अने वचनातीत ए साहस ए चमत्कारथी अमे भारे संतुष्ट थया. माटे हे आम! अमे! कंईक कहीए छीए के—

अमारा राज्यमां **वर्द्धनकुंजर** नामे बौद्ध विद्वान् छे. ते महावादी, दृढ प्रतिज्ञावाळो अने सेंकडो वादीओनो विजेता छे. ते तमारा सीमाडानी सरहद पर आवीने वाद करशे अने अमे कौतुकथी सभ्यो साथे त्यां आवीशुं. तमारामां जे कोई वाद करवामां विचक्षण होय, ते पण मेघनी जेम उन्नत थईने विद्वानोनी साथे त्यां आवे. ए बंनेनुं वाग्युद्ध ज थवा देवुं अने जेनो वादी जीताय, ते पोते पराजित थयो एम समजी लेवुं. ज्यां घणा सुभटोनो नाश थाय; तेवुं युद्ध शा माटे करवुं जोईए? जो ए बौद्धाचार्य महावादी जीताय, तो तेना बीजा वादीओ पण जीताया समजवा

अने ते जीतातां अमने पण तमे अनायासे जीती लीधा एम समजवुं. कारण के **घृतपिंडमां जेम स्नेह (चीकाश) तेम जळमां हिमनो निश्चय थाय छे.**'

ए प्रमाणे दूतना मुखथी सांभळतां आमराजा तेने कहेवा लाग्यो के—'धर्मराजा शुं कदापि अनुचित बोले? परंतु आ अवसरे कंईपण उपालंभ आपवो ते सज्जन पुरुषोने योग्य नथी, कारण के प्रसंग दुर्लभ कहेल छे. ते वखते ए विद्वान् मित्रने बोलाववाना मिषे हुं त्यां मळवा आव्यो हतो अने ते अमे स्पष्ट जणावी दीधुं. तेमां **बीजउरा** अने **दोरा** ए बे संस्कृत वाक्योथी बीजो राजा अने बे राजा, एम बंधुनी रीतथी जणावी दीधुं. वळी कणेरनुं पत्र बतावतां **बप्पभट्टि गुरु**ए **अरिपात्र** एम संस्कृतथी ते कही बताव्युं. ए प्रमाणे त्रण वार कह्या छतां ते स्पष्ट समजी शक्यो नहि. त्रीजा वचनमां पण गूढता न हती कारण के ते पण प्रगट रीते कहेवामां आव्युं पण अज्ञानताथी पुल्लिंग, नपुंसकलिंगनो भेद न रह्यो, आथी तारो स्वामी तथा त्यां बेठेला विशिष्ट पुरुषो बधा जाणवामां आवी गया, तेम छतां हजी तारा राजानी मने जीतवानी इच्छा होय, तो ए तारी श्रद्धाने पण पूर्ण करीश. भले ए तारुं वचन पण कबूल छे. परंतु तेमां पराभव पामनार राजाए गर्ववीना पोतानुं सप्तांग राज्य विजय पामनार राजाने समर्पण करी देवुं जोईए. एम जो तारो राजा कबूल करतो होय, तो कबूल छे, नहि तो नकामो प्रयास करवानी अमारी इच्छा नथी.'

एम सांभळीने दूत बोल्यो—'हे पृथ्वीनाथ! बुद्धिना अपरिपाकथी ते तारुं **आम** (अपरिपक्व) एवुं नाम सत्य करी बताव्युं. वळी वारंवार कहेवाथी तो एक जड पण सारी रीते समजी शके, कारण के घरे आवेल पोताना शत्रु राजानो पण कोण सत्कार न करे? परंतु सत्कारने माटे पण तुं प्रगट न थयो. एम भयथी तें पोतानुं नाम सत्य करी बताव्युं. वळी पलायन करतां पण जो बहारना राजपुरुषोना ते हाथमां आवे, तो नाश पामे, परंतु तेथी अमारा स्वामीनुं दृढ नाम प्रगट रीते असत्य ठरे अने विग्रह करतां पण अमारा राजामां ए दोष नथी, माटे हे राजन्! तेनामां एक विचारीने काम करवानी जे आदत छे ते ज अपराधने पात्र छे. वळी क्षमा वडे तेनी निर्बळता जणाई आवे छे. अमारो वादी जो तने जीती ले, तो स्वस्वनो नाश थतां तुं अपमानने पात्र थईश. सरस्वतीना प्रसादथी तेनो पराजय तो थवानो ज नथी, एम वादीओए त्यां विचार करी राख्यो छे, मात्र तेमां अमर्श (ईर्ष्या) छे. ए ज नाशनुं कारण छे.'

एम दूतनुं कथन सांभळतां राजाए आ.बप्पभट्टिसूरिना हसता मुख तरफ जोयुं. एटले मुनीश्वर आनंदपूर्वक कहेवा लाग्या के—'पूर्वना परिचित **धर्मराजा** प्रत्ये कोने उत्कंठा न होय? जो एनो रागी जनने माटे आग्रह न होय, तो ते पोताना हितथी बहार छे. वस्तुना अनित्यपणामां कदाग्रह धरावनार ते रक्त भिक्षुपरथी ए जयनो आग्रह करे छे; वळी क्षणभर ते रागमां कदाच जय मानीए तो मोक्ष क्यांथी? कारण के वैराग्यमां ज मुक्ति छे अने ते सर्व दर्शनोने मान्य छे. माटे आ बाबतमां तमारे गभरावुं नहि. **धर्मराजा** थकी उन्नत थनार ए भिक्षुने हुं अवश्य जीतीश. वळी **धर्मराजा**ना सम्यग् विचारथी आ आदरवामां आवेल वाद मारा लीधे ए तेने ज उपकारक थई पडशे, माटे गमे ते अवसरें वाग्युद्ध थाय. हवे ए दूतनो सत्कार करीने **धर्मराजा** पासे मोकलो.'

पछी **आमराजा**ए तेनुं सन्मान करतां विदाय कर्यो. एटले स्थाननी व्यवस्था करीने ते विदाय थयो अने पोताना स्वामी पासे आवीने तेणे बधी हकीकत निवेदन करी, तेथी **धर्म राजा**ए इंद्र जेम बृहस्पतिने तैयार करे तेम वादींद्र **वर्द्धनकुंजर**ने तैयार कर्यो. तेमज चारे दिशामां प्रसिद्धि पामेल एवा मित्रोने बोलावी, तेमनो सत्कार करीने आनंदपूर्वक तेमने ए वादमां सभ्य पणे स्थापन कर्या. वळी **धर्मराजा** पासे **परमार** महावंशमां उत्पन्न थयेल तथा अनुपम तेजस्वी एवो **वाक्पतिराज** क्षत्रियविद्वान हतो. ते **आ.श्री बप्पभट्टिगुरु**नो पूर्वनो परिचित हतो, जेथी ते गुरुना मार्मिक वचन जाणवा माटे राजाए प्रमोदपूर्वक तेने पण तैयार कर्यो. पछी व्यवस्थित दिवसे राजा तथा

महासभ्यो साथे **वर्द्धनकुंजर** देशना सरहदना प्रदेशमां आवी पहोंच्यो. एवामां सुज्ञशिरोमणि अने आतपत्रो (छत्रो) थी आकाशने आच्छादित करतो **श्रीमान् आमराजा** पण कान्यकुब्ज थकी **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि** तथा पंडितवर्ग साथे ते स्थाने आव्यो अने पोतानी सरहदमां आवास दईने त्यां रह्यो.

हवे जन्मथी शस्त्रो द्वारा थतां युद्ध जोया न होवाथी तेमां मंद आदरवाळा, तथा पूर्वे न जोयेल वाग्युद्ध जोवाने माटे कुतूहलवाळा एवा सिद्ध, विद्याधरो अने देवताओ पोतानी अप्सराओ साथे उतावळथी ते वखते स्वर्गनी जेम आकाशमां आववा लाग्या. एवामां कौतुकथी मनने आकर्षता एवा बहुश्रुत राजसभ्यो साथे वादी अने प्रतिवादी त्यां आवी मळ्या. एटले बहुश्रुत तथा सभ्यो योग्य स्थाने बेसतां ते सभा जाणे चित्रमां आलेखेल होय, तेम निश्चळ थई गई. पछी सभ्योनी अनुमतिथी पोतपोतना आगमने विरोध न आवे ते प्रमाणे ते बंनेए पोतपोताना राजाने आशिषथी अभिनंदन आप्युं, तेमां प्रथम बौद्धाचार्य **वर्द्धनकुंजर**, द्वेषीओनी सभाने संताप पमाडनार आ प्रमाणे आशीर्वाद बोल्यो—

शर्म्मणे सौगतो धर्मः पश्य वाचंयमेन यः ।
आद्दतः साधयन् विश्वं क्षणक्षणविनश्वरम् ।।१।।

अर्थात् - क्षणे क्षणे विनाश पामता विश्वने साधनार एवा जे धर्मनो आदरपूर्वक में वाचंयमे-आचार्ये स्वीकार कर्यो, ते बौद्ध धर्म तमने सुख आपनार थाओ.

एटले सुज्ञ शिरोमणि श्वेतांबराचार्य श्री बप्पभट्टिए पोताना पक्षना भूपालने आशिष आपतां जणाव्युं के-

अर्हन् शर्म्मोन्नतिं देयात् नित्यानन्दपदस्थितः ।
यद्वाचा विजिता मिथ्या-वादा एकान्तमानिनः ।।१।।

अर्थात् - नित्य आनंदना स्थानमां रहेला एवा श्री अरिहंत तमने उत्तरोत्तर सुख आपो के जेनी वाणीए एकांतमतना मिथ्यावाद जीती लीधा छे.'

ए प्रमाणे बंनेना आशीर्वादना श्लोको सांभळतां सभासदो तेना पर विचार करवा लाग्या—'शर्मणेऽसौगतो धर्मः आ पदच्छेद तथा वाणीने दमवाना अर्थमां वाचंयम नो प्रयोग तेमज क्षणभंगुर आ जगतना स्थापनारा आ सौगतोनो ज भंग थशे एवुं अनुमान थाय छे. खरेखर सरस्वती सत्यवादिनी छे.' वळी नित्यानंद पदनी लक्ष्मी आपनार देवनी वाणी मिथ्यावादने जीतनारी आ प्रमाणे स्थापनाथी श्वेतांबरोनो जय थशे.' आ प्रमाणे निश्चय करीने सभासदो मौन धारण करी रह्या.

एवामां कस्तूरी हाथमां लईने बौद्धाचार्य कहेवा लाग्यो के—'कसुतूरी 'उपगरइ' एटले—कस्तूरी उपकार करे छे.' एम ते प्राकृतमां बोल्यो. त्यारे आचार्ये कह्युं के—श्लेष कहतां कह्युं (कसु तूरी उपगरई एटले तुरी कोने उपकार करे? तूरी एटले खारो 'ए तो धोबीने उपकारी थाय, एम समजी ल्यो.'

ए प्रमाणे प्रश्नना संकेतथी उत्तर आपतां आचार्ये तेने निरुत्तर कर्यो, त्यारे रक्तांबर बुद्धाचार्ये सर्वनी अनुमतिथी पोतानो पक्ष स्थापन कर्यो. एटले जैनाचार्ये सर्व वादमां बराबर तत्पर रहीने तेना पक्षने दूषित करनारा प्रमाणो कही बताव्या एम उत्तरोत्तर उक्ति प्रत्युक्तिनी रीतथी वाद करतां तेमने छ महिना व्यतीत थई गया, छतां कोईनो जय के पराजय थयो नहि.

एवामां एकदा आमराजाए आचार्य महाराजने निवेदन कर्युं के—'हे स्वामिन् राजकार्योमां विघ्न करनार आ वाद क्यारे पूरो थशे?'

त्यारे आचार्य बोल्या के—'हे राजन्! आ तो तमने विनोद पमाडवा माटे वाग्विनोद मात्र करता हता अने तेथी तमने विनोद थाय, एम समजीने अमे आटलुं लंबाण कर्युं. हे राजन्! आथी जो तमने बाधा थई होय, तो

प्रभाते जुओ पोताने विद्वान् माननार ए भिक्षुकनो हुं निग्रह-जय करीश.'

पछी पूर्वे गुरुए आपेल मंत्रनो जाप करतां मध्यरात्रे स्वर्ग गंगामां एकांते स्नान करती सरस्वती देवी तेवीने तेवी स्थितिमां आवीने उभी रही. अहो! मंत्रनो प्रभाव तो जुओ के ज्यां देवी पण पोतानुं भान भूली गई, त्यां वस्त्ररहित देवीने तेमणे एकवार सहेज जोई के तरत ज सूर्यथकी जेम माणस मुख फेरवी ले, तेम आचार्ये पोतानुं मुख फेरवी दीधुं. एटले पोताना स्वरूपने न जाणती देवी कहेवा लागी के—'हे वत्स! तुं मुख केम फेरवे छे, तारा मंत्र जापथी हुं संतुष्ट थईने अहीं आवी छुं, माटे वर माग.'

त्यारे आचार्य बोल्या के—'हे माता! तारा आवा अनुचित स्वरूप तरफ हुं केम दृष्टिपात करुं? तुं तारुं वस्त्ररहित शरीर जोई ले.'

सूरिना ए वचनथी पोताना शरीर भणी दृष्टि करतां ते देवी विचारवा लागी के—'अहो! आनुं ब्रह्मचर्य केटलुं बधुं दृढ छे के मने आवी नग्नावस्थामां जोतां पण जेनुं मन विकृत न थयुं? एम धारी ते भारे संतोषथी आचार्य पासे उपस्थित थई. एटले वर मागवामां पण तेमने अत्यंत निःस्पृह धारीने आश्चर्य पामती सरस्वती कहेवा लागी के—'मारा गमनागमनमां तारी इच्छा पूर्ण थती होय, तो सुखी रहे.'

पछी **श्री बप्पभट्टि मुनीश्वरे** चौद अद्‌भुत श्लोकथी आदर दर्शावीने स्तुति करी. ए स्तुतिने सुवर्ण-कुंडल समान मानती देवी अत्यंत संतुष्ट थईने कहेवा लागी के—'हे वत्स! तारे शुं पूछवानुं छे?'

त्यारे आचार्य बोल्या—'आ वादी पोताना बुद्धिबळथी बोले छे के बीजुं कंई कारण छे?'

एटले देवीए जणाव्युं के—'एणे मने सात भवथी आराधी, तेथी में एने अक्षय वचनी (जेमां वचनक्षीण न थाय) गुटिका आपी छे. हे मुनींद्र! ते गुटिकाना प्रभावथी एनुं वचन स्खलना पामतुं नथी.'

आथी सूरि जाणे उपालंभपूर्वक सरस्वतीने कहेवा लाग्या—'जिनशासनना विरोधीने तुं केम पोषे छे? कारण के पूर्वजो पासेथी तो एम सांभळवामां आव्युं छे के **तुं सम्यग्दृष्टि होय छे.**'

देवीए कह्युं—'**हुं जैननी विरोधी नथी,** हुं तने एक उपाय बतावीश के जेथी ए बुद्धाचार्य पराजय पामे. तमे बधा सभासदोने मुखशौच करावजो अने ते वखते एने पण मुखशौच करावजो एटले मुखमांथी कोगळो बहार काढतां जो गुटिका पडी जाय, तो अवश्य तमारो विजय थवानो; परंतु **चौद श्लोक कदापि प्रगट न करता, कारण के ते सांभळतां तो मारे साक्षात् आववु पडशे. हे मुनीश्वर! केटला पुण्यहीन पर हुं प्रसन्न थाउं?**' एम कहीने सरस्वती देवी अदृश्य थई गई.

पछी आचार्ये **वाक्‌पतिराजने** देवीनो आदेश गुप्त रीते कही संभळाव्यो. एटले जळपात्र पाणीथी भरी लावीने तेणे समस्त सभाने मुखशुद्धि करावी अने तेम करतां **वर्द्धनकुंजर**ना मुखमांथी गुटिका पडी गई, त्यारे भाग्य हीननी लक्ष्मीनी जेम जळथी हडसेलायली गुटिका तेना वदनमांथी नीकळी जतां, निरंतर परस्पर वादमार्गे जवाथी जाणे थाकी गई होय अने विश्रांति लेवा मांगती होय; तेम मुंगानी जेम ते भिक्षुनी वाणी शांत थई गई. एटले सभासदो कहेवा लाग्या के—'गुटिकाथी ज एनामां बोलवानी ताकात हती, नहि तो ए भिक्षु बराबर मुंगो अने बहेरा जेवो यथार्थ नामधारी छे.' ए प्रमाणे वादीरूप कुंजरने जीतवामां केसरी समान **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ए तेने जीती लीधो राजाए तेमनुं **वादी कुंजर केसरी** एवुं बिरुद बोलाव्युं अने सर्वत्र जय जयनाद थई रह्यो.

एवामां आम राजा पोताना बळे वैभवसहित धर्मराजानुं राज्य लेवाने तत्पर थयो; कारण के जय पामनार पोताना पणने केम मूके? त्यारे गुरु तेने कहेवा लाग्या के—'में तो तमने प्रथम कही दीधुं छे के आपणी समक्ष धर्मराजाए जे राज्यनुं पण कर्युं छे, ते तेना शिरे ज आवशे. हे राजन्! तेना ए वचननो अत्यारे अवसर आव्यो. वळी प्रमाण शास्त्रोनी एवी मुद्रा (मर्यादा) छे के संबंध होय त्यां निग्रह न करवो कारण के तेनो पराजय तो थई चूक्यो

होय, माटे एनुं राज्य भले एने ज मुबारक हो. अनित्य संसारना कारणे शास्त्रमर्यादानो कोण लोप करे?' एटले गुरुभक्तिथी अभिराम एवा आमराजाए बलात्कारथी पण तेनुं राज्य लेवानी इच्छा मांडी वाळी अने प्रसादथी धर्मस्थितिने जाणनार एवा तेणे **धर्मराजा** पासे ज तेनुं राज्य रहेवा दीधुं.

पछी **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि** बौद्धाचार्य **वर्द्धनकुंजर**ने प्रेमपूर्वक भेटीने तेने पासेना गोपगिरिपर रहेल वीरभवनमां लई गया त्यां **श्री वीर**ना बिंबने जोईने ते भारे हर्ष पाम्यो अने तेणे प्रमोदपूर्वक प्रभुनुं **शान्तो वेषः** थी शरुं थतुं एक स्तोत्र बनाव्युं. एम भगवंतनी स्तुति करी अने पोतानी निंदा करता बौद्धाचार्यने जैनाचार्ये जिनधर्मना तत्त्वो कही बताव्यां, एम अमृत समान निर्मळ वाणीथी तेनुं मिथ्यात्वरूप विष दूर करीने तेमणे परीक्षा पूर्वक तेना हृदयमां **आर्हत धर्मनुं स्थापन कर्युं.**

एकदा रात्रे **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि** जागता हता त्यारे बौद्धाचार्ये दरेक पहोरे चार अक्षरवाळी चार समस्या तेमने पूछी, एटले अन्य तीर्थीओने लीलामात्रथी पराभव पमाडनार एवा आचार्ये जाणे स्वप्नमां आवेल होय तेम ते **मंदाक्रांता** छंदना चरणथी तरत पूरी करी. ते समस्या आ प्रमाणे हती—

एको गोत्रे, सर्वस्य द्वे, स्त्रीपुंवच्च, वृद्धो यूना

संपूर्ण समस्या आ प्रमाणे—

एको गोत्रे स भवति पुमान् यः कुटुम्बं बिभर्ति,
सर्वस्य द्वे सुगतिकुगति पूर्वजन्मानुबद्धे ।
स्त्रीपुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टं,
वृद्धो यूना सह परिचयात्त्यज्यते कामिनीभिः ।।१।।

अर्थात् - वंशमां ते एक ज पुरुष समजवो के जे कुटुंबनुं पालन पोषण करे. सर्वने सुगति अने कुगति ए बे पूर्वजन्मथी ज अनुबद्ध छे; ज्यां स्त्री पुरुषनी जेम स्वतंत्र आचरण करे, त्यारे ते घर नाश पाम्युं समजवुं अने युवान पुरुषनी साथे परिचयमां आवता एवी स्त्रीओ वृद्ध पुरुषने तजी दे छे.

आथी वधारे संतुष्ट थयेल बौद्धाचार्य सम्यक्त्व पूर्वक श्रावकना बार व्रत अंगीकार कर्या अने पछी आलिंगन पूर्वक आचार्यनी अनुमती लईने ते पोताना स्थाने गयो. तेमज पूर्वना वैरभावनो त्याग करी बंधुनी जेम साथे मळेला तथा अन्योन्य भेट मोकलवाथी संतुष्ट थयेला एवा ते बंने **आमराजा** अने **धर्मराजा** पण पोतपोतानी राजधानीमां गया.

एक दिवसे बुद्धाचार्ये एकांतमां धर्मराजाने कह्युं के—'**बप्पभट्टिसूरि**ए मने जीती लीधो, तेथी मारा मनमां जरा पण खेद थतो नथी. कारण के निद्रामां के जागतां तेना देहमां आवीने सरस्वतीदेवी पोते यथोचित रीते बोले छे; परंतु तारा राज्यमां रही सुख भोगवनार एवा वाक्पतिराजे जे मुखशौच करावतां मने पराजय पमाड्यो, ते मने बहु साले छे.' एम सांभळ्या छतां छळवादथी बौद्धाचार्य पर मंद आदर बतावनार धर्मराजाए **वाक्पतिराज**नी साथेनो स्नेह मूक्यो नहि.

एकदा **यशोवर्म** राजा **धर्मराजा**पर चडी आव्यो अने ते बळवान् राजाए युद्धमां जीती लईने तेनो नाश कर्यो. ते वखते **वाक्पतिराज**ने तेणे बंधनमां नाखी दीधो. एटले **गौडवध** काव्य बनावीने तेना थकी ते मुक्त थयो. पछी त्यांथी कान्यकुब्जमां आवीने ते **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ने मळ्यो. त्यां आचार्य तेने राजसभामां लई गया, एटले तेणे आमराजानी स्तुति करतां जणाव्युं के—'हे राजेंद्र! तारो प्रतापरूप दीपक सदा ज्वलंत रहो. ज्यां कूर्म (काचबा) रूप मूळ (पग) छे, शेषनागनी देहलता ज्यां यष्टिका छे, ज्यां पृथ्वीज भाजनरूप छे, समुद्ररूप तेल छे, कनकाचल ज्यां वाटरूपे छे, सूर्यना किरणो ज्यां बळता ज्वालारूपे छे, आकाशनी श्यामता ज्यां बळता काजळरूप छे तथा

शत्रुओरूप पतंगो ज्यां दग्ध थई रह्या छे. वळी हे राजन्! **दैत्यनाथ**ना वक्षस्थळमां कणकणाट करता हरिना नखरूप करवतीना घसाराथी उत्पन्न थयेल अग्नि तने पावन करो के ज्यां चर्म चटचट थई रह्युं छे, ज्यां छमछम करतुं शोणित उछळी रह्युं छे, ज्यां चरबी धगधग थई रही छे अने भग्न थतां हाड ज्यां स्पष्ट अवाज करी रह्यां छे. वळी हे नरेंद्र! गुणोमां तुं **कृष्ण** समान छे, कीर्तिमां तुं **राम, नळ** अने **भरत** तुल्य छे. महा संग्राममां तुं **शत्रुघ्न** समान (शत्रुने हणनार) छे, वळी सदा तुं युधिष्ठिर तो छे ज, ए प्रमाणे पोताना सुचरित्रथी प्राचीन राजाओनी ख्यातिने धारण करनार एवो तुं त्रणे लोकमां विजयी छतां **मांधाता** केम नथी? अर्थात् तुं मने धारण करनार नथी? मारो आश्रय दाता केम नथी?

आथी आम राजाए धर्मराजा करतां पण तेनो भारे सत्कार कर्यो. कारण घरने आंगणे आवेल **गंगा**ने कयो आळसु पण न पूजे? इंद्र पण बृहस्पतिने पामीने पोताने कृतकृत्य माने छे, तो **वाक्पतिराज**ने पामीने आम राजा आजे इंद्र करतां शुं अधिक न थयो?

पछी **आमराजा**ए **वाक्पतिराज**ने आश्वासन आपतां जणाव्युं के—'हे सखे! धर्मराजाने तजी **आमराजा**ना भवनमां आवतां मारो सत्कार नहि—एवा प्रकारनो खेद करीश नहि. आ राज्य तारुं ज छे; एम समजीने सुखे अहीं रहे. हे महामति! **श्री बप्पभट्टि** गुरु अने हुं तने पोतानो ज समजीए छीए.'

आमराजाना ए वचनामृतनुं पान करतां जाणे गंगामां नहायो होय, तेम **वाक्पतिराज**ना प्रमोदनो पार न रह्यो. पछी राजाना मित्र **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि** साथे ज उठीने ते उपाश्रयमां गयो अने त्यां अत्यंत हर्षपूर्वक रहेवा लाग्यो. पछी काव्य करवामां कुशळ एवा वाक्पतिराजे **गौडबंध** अने **महामहविजय** ए नामना बे ग्रंथ रच्या. ए अरसामां गुरुए तेने कह्युं के-

'बौद्धाचार्ये द्वेष करावतां पण **धर्म राजा**ए तेने पोषण न आप्युं. कारण के गुणीजनो सर्वत्र पूजनीय थाय छे.' पछी **आमराजा**ए तेना गुजरानने माटे **धर्म राजा** करतां बमणी लाख सोना महोर करी आपी. एम भारे आनंदथी ते त्यां काल निर्गमन करवा लाग्यो.

एक वखते राजाए राजसभामां सुखे बेठेला एवा गुरुने कह्युं के—'हे मित्र! तमारा जेवो विद्वान् कोई स्वर्गमां पण नहि होय, तो पृथ्वी पर क्यांथी?'

त्यारे गुरु कहेवा लाग्या के—'पूर्वे **जैन**शासनमां एवा विद्वानो हता के जेमनी बुद्धिश्रुतज्ञानरूप महासागरनो पार पामी हती, ते विद्वानो एक पदथकी सो हजार अने लाख पदो जाणता, तेमज केटलाक तेमना करतां पण अधिक हता वळी आ काळे पण तेवा अद्भुत प्रज्ञावंत छे के जेमनी पासे हुं तेमना पगनी रज समान पण नथी. अत्यारे **गुजरात**मां अमारा गुरुना **श्री नन्नसूरि** अने **गोविंदसूरि** नामे बे शिष्यो छे जेमनी आगळ हुं मूर्ख लागुं, माटे त्यां रहेवानी इच्छा न करतां अहीं रहेवाथी तमारी साथेनी मित्रता ज मने शोभारूप छे.'

गुरुनुं ए वचन सांभळतां आमराजा भारे आश्चर्य पामतां कहेवा लाग्यो के—'हे वयस्य! तमारा वचनमां मने विश्वास छतां ते कौतुक जोवानी मारी इच्छा छे.' एम कही वेष परावर्त्तन करीने ते गुजरातमां आवेल **हस्तिजय** नामना नगरमां आव्यो. त्यां जिनमंदिरनी पासेना उपाश्रयमां बिराजमान, भव्य जनोथी सेवाता, तथा **राजानी जेम श्रेष्ठ छत्र अने चामरथी शोभता अने सिंहासन पर बेठेला एवा श्री नन्नसूरि आम राजा**ना जोवामां आव्या. एटले उंचा अने पहोळा हाथनी संज्ञाथी तेणे कंईक जणाव्युं. ते जोतां आचार्ये पण तेनी सामे वचली अने तर्जनी आंगळी शृंगाकारे विस्तारी. पछी ते चाल्यो गयो, त्यारे लोकोए आचार्यने पूछ्युं के—'हे भगवन्! आ शुं?'

एटले गुरु बोल्या—'ए पुरुष कोई विद्वान छे. तेणे पूछ्युं के—'यतिओने राज्य लीला शा माटे?' त्यारे में तेने जवाब आप्यो के—'तारा राजापर शुं शृंग (शींगडा) छे?'

पछी एकदा चैत्यमां बेसीने तेमणे वात्स्यायन शास्त्र (कामशास्त्र)नुं व्याख्यान कर्युं. ते जोतां **आमराजा** जिनेश्वरने प्रणाम करीने चाल्यो गयो, पण कामशास्त्रना व्याख्यानने लीधे ते गुरुने नम्यो नहि. तेणे एवो विकल्प कर्यो के—'आ विद्वान छे, पण चरित्रधारी गुरु नथी.' आ तेनो विकल्प जाणवामां आवतां **आ.श्रीनन्नसूरि**ने भारे खेद थयो के—'अहा! प्रगटती अपकीर्तिथी कलंकित थयेल अमारा आ विदग्धपणाने धिक्कार छे!'

त्यारे **आ.श्री गोविंदसूरि** तेमने आश्वासन आपतां बोल्या के—'हे भद्र! तुं खेद केम पामे छे? आ तो गुप्त आमराजा ज छे. बीजो एवो कोई न होय माटे रसिक कोई धर्मशास्त्र बनावी कोई नटनी साथे ते **श्रीबप्पभट्टिसूरि** पासे मोकलो, के जेथी **आमराजा** आगळ ते नट अभिनय पूर्वक बतावे अने तेमां अधिक रसनो अनुभव लईने ते राजा प्रमोद पामे.'

आथी तेमणे ते प्रमाणे करी एक उत्तम नटने ते बराबर शीखवीने तेने आमराजाना नगरमां मोकल्यो. एटले नट त्यां जईने **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ने मल्यो. आचार्य तेने राजा आगळ लई गया. एटले **आ.श्री नन्नसूरि**ए रसने माटे संधिबंधथी बनावेल प्राकृतरूप पवित्र श्लोक ते श्री आदिनाथनी कथा विस्तारतां अने नृत्य करतां कहेवा लाग्यो—

कञ्चणड्ढु सुविपड्ढु सुगिरिवेयट्टु विहावई ।

अर्थात् - मेरु समान कंचन वरणा श्री आदिदेवना शरीरे (पीठपर) जटा शोभी रही छे.

त्यारे बप्पभट्टिसूरि बोल्या—'ले आ दोढ रुपियो.'

पछी ते नट पाछो ते नगरमां आव्यो अने **नन्नाचार्य** कवि आगळ बधुं कही संभळाव्युं. एटले तेमणे विचार कर्यो के—'आ काम कंई सामान्य नथी.' एम धारी हर्षपूर्वक सिद्धगुटिकादिकथी पोतानुं रूप परावर्तन करी, **गोविंदसूरि**नी साथे तेमणे कान्यकुब्ज भणी प्रयाण कर्युं. पछी अनुक्रमे त्यां पहोंचतां ते **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ने अने **राजाने मल्या**. त्यारबाद राजसभामां नृत्य करतां तेमणे वीर रसनो विस्तार कर्यो. एटले तेमांज एकतान थयेल तथा 'मार मार' एवा शब्दथी क्रोध वडे सिंहनी माफक गर्जना करता राजाए छुरी खेंची लीधी, तेथी अंगरक्षकोए एवा प्रकारना ते नाटकनुं निवारण कर्युं. त्यारे राजा सावधान थतां गुरुवचनथी ते प्रतिबोध पाम्यो. एवामां **आ.श्रीगोविंदसूरि** कहेवा लाग्या के—'हे राजन्! ते युक्त कर्युं केम कहेवाय? कारण के सर्व शास्त्ररस कोईथी अनुभवी शकातो नथी. तेथी **आ. नन्नसूरि**ए वात्स्यायननुं व्याख्यान करतां ज्यारे तारा जेवा बुद्धिशाळी विद्वानने विकल्प थाय तो अन्य कोने विकल्प न थाय?'

आथी राजाने लक्ष्यमां आवतां तेणे ते बंने सुज्ञशिरोमणि आचार्योने खमाव्या अने कह्युं के—'मारा मित्रे जे वचन कह्युं हतुं, ते खरेखर सत्य ज छे. संयम, शील, वर्तन अने विद्वता वडे तेमना गुरुभ्राता मने पूज्य छे. ए मारी भ्रांतिने माटे आप क्षमा करो.'

त्यारे **आ. गोविंदसूरि** बोल्या के—'हे भूपाल! तुं अमारुं चरित्र जुए तेथी तप कलंकित न थाय. कारण के—ते दोष बतावनारा पुरुषो कल्याण निमित्ते थाओ के जेमना प्रभावथी अपवादथकी भय पामता अने विशेषथी पोतानुं कल्याण साधवामां एक निष्ठावाळा गुणवंत जनो गुण मेळववा तत्पर थाय. वळी जे चारित्रथी निर्मळ छे, ते पंचाननसिंह समान छे, **पण विषय कषायथी जे पराजित छे, तेमनी रेखा जगतमां भुंसावानी छे. वळी जे पोताना मनमां कामशल्यने धारण करे छे तथा विषयरूप पिशाच अने बलवान ईंद्रियोथी पराभव पामेल छे, तेमनी रेखा जगतमां मलिन थवानी (ज) छे.** तेमज ते बाळक छतां सिंह समान छे के जे पोतानी शक्ति उज्ज्वळ कीर्ति अने निर्मळ चारित्रथी पोताना कुळरूप गगनमां चंद्रमा समान शोभे छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा पोताना मित्र गुरुने कहेवा लाग्यो के—'हुं धन्य छुं के जेना गुरुनुं कुळ आवुं छे.'

पछी राजाए तेमने केटलाक दिवस त्यां राख्या. त्यारबाद **श्री बप्पभट्टिसूरि**नी अनुमति लईने ते बंने धुरंधर आचार्यो स्वस्थाने गया. अहीं धर्मव्याख्यान अने प्रश्नोत्तरादिक करतां ते बंने मित्रोनो केटलोक काळ आनंदथी व्यतीत थयो.

एक दिवसे त्यां कर्णप्रिय संगीतथी गंधर्व देवने जीतनार गवैयाओनुं एक टोळुं आव्युं. तेमां साक्षात् किन्नरी समान एक मातंगी (चंडालणी) हती, तेणे संगीतरस अने रूपादिकथी राजाने रंजित कर्यो एटले रागरूप शत्रुए ते प्रतिपक्षी राजानी चित्तवृत्तिरूप नगरीमां धाड पाडी. जाणे भय पामी होय तेम त्यां रहेती ईंद्रियो बहार नीकळी गई. तेथी तेमनी जाणे प्रेरणा थई होय तेम राजाए नगरनी बहार आवास बनाव्यो ते मातंगी पाछळ घेला बनीने तेणे काव्य रच्युं :- हे चन्द्रमुखि! तारुं मुख पूर्ण चंद्र छे. तारा अधर अमृत छे. तारा दांत मणिनी पंक्ति छे. तारी कांति लक्ष्मी छे. तारुं गमन गज छे. तारी कायानो परिमल पारिजातनो वृक्ष छे. तारी वाणी कामधेनु छे. तारा नेत्र कटाक्ष ए काल कूट छे. तो शुं देवताओए तारा माटे ज क्षीर सागरनुं मंथन क्युं हतुं?

एवामां खानगी चर पुरुषोद्वारा राजानी ए स्थिति जाणवामां आवता **श्री बप्पभट्टि** आचार्य चिंतववा लाग्या के—'अश्व जो आडे मार्गे जाय, तो तेमां स्वारनो (अश्व पर बेठेलानो) दोष छे. आम राजा जो कुमार्गे उतरे, तो समस्त प्रधानमंडळमां ए कलंक अवश्य प्रगट रीते मने ज लागे. माटे गमे ते उपायथी एने शिक्षा आपवी.' एम धारी अवलोकनना मिषे काम व्याधिना औषधनुं स्मरण करतां आचार्य बहारना मकानमां गया त्यां पट्टशाळाना नवा पट्ट पर खडीवती तेमणे बोधदायक एवी मतलबना अन्योक्ति काव्यो लख्यां के—'हे जळ! तारामां शीतल गुण छे. स्वाभाविक स्वच्छता छे. तारी पवित्रता माटे तो कहेवुं ज शुं? कारण के तारा संगथी बीजा पवित्र थाय छे, तेमज आ करतां शुं वधारे प्रशंसनीय होई शके? के तुं प्राणीओना जीवनरूप छे. तेम छतां तुं नीच मार्गे गमन करे, तो तने अटकाववाने कोण समर्थ थई शके? वळी हे हार! तुं सद्वृत्त (गोळाकार) सद्गुण (दोरा) युक्त, महाकींमती अने माननीय, तेमज रमणीय रमणीना कठिन स्तनतटपर शोभा पामनार छतां दुष्टाना कठिन कंठमां लग्न थई भंग पामनार तुं अहो! तारुं गुणिपणुं तुं हारी गयो. कुमार्गे उत्पन्न थयेल, असदृश तथा फळ, फूल अने पत्र रहित एवी बोरडीपर बेसता हे भ्रमर! तने लज्जा आवती नथी? पृथ्वीनो उपभोग करनार छतां मातंगीमां आसक्त थनार अने धर्मनो उपहास करावनार हे भद्र! गज स्नानी जेम वसुधाने तुं शा माटे अभडावे (मलिन करे) छे? जेनाथी लोकमां लघुता पमाय अने जेनाथी पोताना कुळक्रमनो लोप थाय, एवुं दुष्ट काम कंठे प्राण आव्या छतां न करवुं. जीवित जळबिंदु समान अस्थिर छे अने संपत्ति जळ तरंग समान चपळ छे तथा प्रेम स्वप्न समान छे, माटे हे भद्र! तने योग्य लागे, तेम कर.' ए प्रमाणे लखीने **आ. बप्पभट्टि गुरु** आनंद पूर्वक पोताना स्थाने चाल्या गया.

एवामां बीजे दिवसे राजा पण ते मकान जोवाने आव्यो अने हृदयने भेदनार ते वाक्यो जेम जेम ते वांचतो गयो, तेम तेम दुग्धपानथी धतुरानी मूर्च्छानी जेम तेनो भ्रम नाश पाम्यो. एटले पोताना मुखकमळने श्याम करतो **आमराजा** भारे पश्चात्तापमां पडीने चिंतववा लाग्यो के—'अहो! मित्र विना आ प्रमाणे मने बोध कोण आपे? तो हवे अत्यारे सर्व प्राणीओने दोषना कारणरूप तथा संतापकारी अने अप्रेक्षणीय एवुं मारुं मुख हुं गुरुने शी रीते बतावुं? माटे अग्निथी ज हवे मारी शुद्धि थवानी. कारण के कलंकथी मलिन थयेल आ मारुं जीवित हवे त्याग करवा लायक छे.' एम धारी त्यां ज तेणे चिता तैयार करवा माटे पोताना सेवकोने आदेश कर्यो. आ बधुं जाणवामां आवतां राजलोकोए आवीने आचार्य पासे करुण स्वरे पोकार कर्यो. जेथी आचार्य त्यां आवीने राजाने कहेवा लाग्या के—'हे भूप! आ ते स्त्रीओना जेवी चेष्टा शुं मांडी छे? विद्वानोने निंदनीय एवुं आ शुं आदरी बेठो?'

त्यारे राजाए जणाव्युं के—'गुप्त रीते मनथी पाप करतां मलिन थनार एवा मने ते दुष्कृतनो नाश करवा स्वदेहनो त्याग एज दंड छे. जेम दुष्ट लोकोने अमे दंड आपीए छीए, तेम कर्मनो उच्छेद करवा अमे पोताने पण दंड शा माटे न आपीए?'

एटले गुरु हसीने कहेवा लाग्या—'हे राजन्! तुं विचार तो कर के ते **चित्तथी कर्म बांधेल छे, तेथी ते चित्त वडे ज दूर थाय तेम छे.** मानसिक पापने भेदवा माटे तुं स्मृतिकारोने ते पापनुं प्रायश्चित्त पूछी जो. कारण के स्मृतिओमां विद्वानोए सर्वने माटे मोक्ष बतावेल छे.'

आथी न्यायपाकना रसोया रूप राजाए वेदांत, उपनिषद्, श्रुति अने स्मृतिमां पारंगत थयेल विद्वानोने त्यां बोलाव्या अने तेमनी आगळ तेणे यथास्थित मननुं शल्य निवेदन कर्युं. एटले स्मृतिमां वाचाल एवा ते शास्त्रानुसारे बोल्या के—'तेना जेवी लोखंडनी पूतळी अग्निथी तपावेल होय, तेनुं आलिंगन करतां पुरुष, मातंगीना संसर्गथी उत्पन्न थयेल पाप थकी मुक्त थाय छे.'

आ तेमना कथन प्रमाणे राजाए लोखंडनी पूतळी करावी अने तेने अग्निथी खूब तपावी. पछी तेने आलिंगन आपवा राजा तत्पर थयो. एवामां एकदम पुरोहित अने आचार्ये आवीने, पोतानी सिद्धिने माटे तेने आलिंगन करता राजाने तरत भुजामां पकडी लीधो. त्यां बप्पभट्टि कहेवा लाग्या—'हे पृथ्वीना आधार! स्थिर था, धीरज धर. हे मित्र! करोडोने पाळनार एवा आ देहनो वृथा विनाश न कर. एकाग्र चित्त अने असाधारण साहस धरनार तें मन वडे कर्म बांध्युं, तेनाथी तुं हवे मुक्त थयो. श्याम वादळ थकी भास्करनी जेम ए पापथी तुं मुक्त छे, तुं तो हजी सज्जनोना हृदयने प्रकाशित करीश, माटे आ दुष्कर कामने मूकी दे.'

ए प्रमाणे गुरुना वचनथी प्रमोद पामेल राजाए पोतानो कदाग्रह तजी दीधो. एटले ए वृत्तान्त जाणवामां आवतां जाणे राजानो पुनर्जन्म थयो होय, तेम सर्वत्र हर्ष वर्ताई रह्यो. पछी अमात्योए मोटा आडंबरथी ते नगरने अलंकृत करतां-शोभावतां, हस्तीओ, अश्वो, रथो अने पदातिओने सज्ज करतां पट्टहस्ती पर अग्रासने मुनीश्वरने बिराजमान करतां तथा तेमना पर छत्र, चामरादिक धरावी, देवताओने पण आश्चर्य पमाडे तेवा मोटा ओच्छवथी तेमणे यशसंपत्तिथी जाणे पोते **कृष्ण** होय एवा ते राजाने नगरमां प्रवेश कराव्यो.

हवे राजाने विकृत थयेल जोईने **वाक्पतिराज** भारे आग्रहथी तेनी अनुमति लईने वैराग्यने लीधे **मथुरा** नगरीमां चाल्यो गयो.

एवामां एकदा धर्मव्याख्यान अवसरे गुरुए, लोकोना मानेल धर्मतत्त्वो समजावीने राजाने कह्युं के—'हे राजन्! समस्त धर्मोमां साररूप अने करुणाप्रधान एवा आर्हत धर्मनो तुं परीक्षा पूर्वक स्वीकार कर अने अन्य धर्मने तजी दे.'

त्यारे राजा कहेवा लाग्यो के—'हे मित्र! आर्हत धर्म ज अमारा जेवानो निर्वाह करे छे, परंतु परीक्षा करवा जतां तो चित्त शैव धर्ममां वधारे दृढ थशे. तमे आज्ञा करशो, तो हुं काचा कुंभमां तमने पाणी लावी आपीश, पण मित्राईथी तमे मने ए धर्मनो त्याग न करावशो. हुं परंपराथी आवतो पूर्वजोनो आचार तजीश नहि. परंतु जो तमे रोष न करो, तो तमने कंईक कहेवा धारुं छुं. कारण के गुरुना रोषनी मने बहु बीक रहे छे.'

त्यारे गुरु बोल्या—'तारे जे कहेवुं होय, ते कहे.'

एटले राजा हसीने कहेवा लाग्यो के—'तमे पण बाळ, गोपाळ अने अंगनादिकने बोध आपवा लाग्या छो, परंतु शास्त्रार्थथी परिपक्व थयेल कोई विद्वान मित्रने बोध आपता नथी. कारण के केळानी जेम निंबफळ थोडुं ज खाई शकाय? जो तमारामां शक्ति होय, तो अत्यारे मथुरा नगरीमां गयेल हृदयमां निरंतर कृष्णनुं अद्भुत ध्यान करी रहेल, यज्ञोपवीतथी शरीरे अलंकृत, नासिकाना अग्र भाग पर दृष्टिने स्थापन करनार, वक्षस्थळे तुलसीनी माळाने धारण करता, जमीन पर आसन लगावी रहेल कृष्णना गुणगान करता वैष्णवो अने ब्राह्मणोथी परिवृत, पुत्रजीव (वृक्ष विशेष) ना पुष्पोनी माळाथी वक्षस्थळे विभूषित, **वराहस्वामी** देवना प्रासादमां रहेल भारे वैराग्यथी अनशन लई बेठेल तथा पर्यंकासने संस्थित एवा **वाक्पतिराज** सामंतने प्रतिबोध पमाडीने सत्वर जैन मतमां स्थापन करो.'

ए प्रमाणे **आम**राजानुं वचन गुरुए कबूल कर्युं, एटले तेणे पोताना चोराशी सामंतो अने एक हजार पंडितो तेमनी साथे मोकल्या. ते बधा त्वरित वाहनोथी प्रयाण करतां मथुरामां **वराहस्वामी**ना मंदिरमां आव्या. एटले त्यां पूर्वे कह्या प्रमाणे परमात्माना ध्यानमां बेठेल एवो **वाक्पतिराज** तेमना जोवामां आव्यो, तेने आदरथी जोतां **आ.श्रीबप्पभट्टि आचार्य** तेना मननी परीक्षा करवा माटे प्रथम त्रण देवनी स्तुतिना काव्यो बोल्या, जेनो मतलब आ प्रमाणे छे—

'**श्रीराम** नामे राजकुमार के जेनी **सीता** नामे स्त्री हती, ते पिताना वचनथी पंचवटी वनमां गयो, त्यां **रावण सीताने** हरी गयो. निंद्रा माटे माताना मुखेथी वार्ता सांभळता हुंकारो भणतां बालकृष्णने पूर्वनी वातनुं स्मरण थई आव्युं. तेथी कोपथी कुटिल थयेल भ्रगुटीवाळी दृष्टि तमारुं रक्षण करे.'

दर्पणमां पोतानुं मायास्त्रीनुं रूप जोतां पोतानामां ज अनुरक्त थयेल **केशव** तमने संपत्ति आपो.

रति सुख पछी पोताना एक हाथनो भार शेषनागपर मूकी अने बीजा हाथे वस्त्र पकडीने उठती तथा छूटी गयेल अंबोडाना भारने खभापर वहन करती एवी **लक्ष्मी**नी देहकांतिथी रति सुखमां बमणी प्रीति लावनार **कृष्ण** तेना शरीरने आलिंगन करी शय्यापर शिथिल भुजाए लई गयो, एवुं ते **लक्ष्मी**नुं शरीर तमने पावन करो.

हे निर्लज्ज! लोकोना देखतां हाथ जोडीने प्रणाम करीने ते संध्याने याचना करी, अने तारा मांथा उपर तुं जे बीजी गंगाने धारण करे छे, ते पण में सहन क्युं! पण हे स्त्रीलंपट! अमृत मंथन वखते लक्ष्मी जो हरिनी थई, पण तो तें झेर केम पीधुं? माटे हवे तुं मने अडकीश नहीं आ रीते जेने गौरीए धमकाव्या ते **शंकर** तमारुं रक्षण करो.

हे अज! ते जळमां अमेध्य बीज वाव्युं तेथी तुं चराचर जगतना कारणरूप कहेवाय छे.

'**हे वाक्पतिराज**! ते कुळने पवित्र कर्युं, माता ताराथी कृतार्थ थई, वसुंधरा ताराथी पुण्यवती थई के जेनुं अंतर ज्ञानना सुखसागरमां मग्न थयेल चित्त **ब्रह्म**मां लागी रह्युं छे.'

ए प्रमाणे कानने कटु लागे तेवुं वचन सांभळतां तेणे शिर धुणाव्युं अने मनमां दूभातां नासिका मरडीने कहेवा लाग्यो के—'हे मित्र आ रसिक काव्योनी प्रशंसा शुं करुं? आ अवसर केवो छे? तारी मित्राई आवी केम? आ शुं **आ.श्री बप्पभट्टि**ने योग्य होय तेवुं कथन छे? अत्यारे तो पारमार्थिक वचनथी मने बोध आपवानो अवसर छे.'

एटले गुरु कहेवा लाग्या के—'हे मित्रवर्य! सारुं! सारुं! आ ज्ञानने हुं वखाणुं छुं. परंतु हवे तने कंईक मारे पूछवानुं छे, ते ए के तारी आगळ में जे देवोनुं स्वरूप कही बताव्युं, ते यथार्थ छे, विपरीत नथी, छतां तारुं मन केम दूभाय छे? जे प्रत्यक्ष संदेहात्मक छे, ते विपरीत केम होई शके? राज्यादिक इच्छाना वशथी आ कार्यमां जो तारी प्रवृत्ति होय, अथवा परमार्थनी प्राप्तिने माटे प्रथम विकल्प होय, तो अमारे संमत छे के देव अने राजाओनी तारे आराधना करवी; परंतु संशय विना स्नेही जनोने शक्त्यानुसार ईष्ट बतावव्युं. हवे जो तारे परमार्थ साधवानी इच्छा होय, तो तुं तत्त्वनो विचार कर. संसारनी उपाधिमां मग्न थयेला देवताओ जो मुक्ति आपता होय, तो ए बाबतमां अमारे कोई जातनो मत्सर नथी, तुं पोते बधुं जाणी शके तेम छे.'

ए प्रमाणे पंकने दूर करवामां जळ समान एवुं गुरुनुं वचन सांभळतां, अकस्मात् भयथी जेम हेडकी चाली जाय, तेम तेनो गर्व बधो दूर थई गयो. ते हर्षमां आवी जईने तरत कहेवा लाग्यो के—'अहो मारा पुण्यनो उदय थयो के आवा अवसरे मारा साचा मित्र मने आवी मळ्या. हवे मारापर तमे उपकार करो.' एम कही सावधानपणे वाक्पतिराज मौन धरी रह्यो, एटले धर्म, देव अने गुरुरूप तत्त्वत्रयी समजावतां **आ.श्रीबप्पभट्टिसूरि** कहेवा लाग्या के—

धर्मतत्त्व —

''त्रणे काळे वर्तनारा नव तत्त्वो सहित छ द्रव्यो, छ काय, छ लेश्या, पंचास्तिकाय, व्रत, समिति, गति, ज्ञान अने चारित्रना भेदो, त्रिभुवनना हितकारी श्री जिनेश्वर देवोए जे बतावेल छे, ते मोक्षना मूळरूप छे, तेनामां जे सुज्ञ श्रद्धा राखे छे, ते समजे छे, समजवानी लागणी धरावे छे, ते शुद्ध दृष्टि समजवो, ते सम्यग्दृष्टि जाणवो.

देवतत्त्व —

सर्वज्ञ जिनेश्वर, यादवकुळमां तिलक समान कृष्ण, उत्संगमां पार्वतीने धारण करनार शंकर, निरंतर जपमाळाने धारण करनार ब्रह्मा, कृपाळु बुद्ध के जगतने प्रकाशित करनार सूर्य अथवा अग्नि-गमे ते होय, पण रागादि दोषोथी जेनुं हृदय कलुषित थयेलं नथी, ते देवने नमस्कार थाओ.

गमे ते समये, गमे ते रीते, अने गमे ते नामथी जो ते देव, दोषनी कलुषताथी रहित होय, तो हे भगवन्! ते तुं एकज छे, माटे तने मारा नमस्कार छे.

मद, मान, काम, क्रोध, लोभ अने हर्ष—ए छ (अंतरंग) रिपुथी पराजित थयेला देवो बीजाने साम्राज्य रूप व्याधि आपे ते वृथा ज छे.

मुनिओ जेने मुगट समान समजीने मस्तके धारण करे छे, ते अक्षय, निरंजन अने परमपदने प्राप्त थयेला देव सदाने माटे अशरीरी छे, ते कदापि अवतार लेता नथी.

गुरुतत्त्व —

पंच महाव्रतने धारण करनार, पंच परमेष्ठीनुं ध्यान धरनार, पंचेंद्रियोनो निग्रह करनार, पांच विषयथी विरक्त, पांच समितिधारी, अनेक गुणगणालंकृत, आगमानुसारे वर्तनार, कुविधि, कदाग्रहनो त्याग करनार, परमार्थ बुद्धिथी भव्यजनोने प्रतिबोध आपनार, अज्ञान दोषथी विमुक्त, छ काय जीवनी रक्षा करनार, मत्सर रहित, केसरी समान, त्रण गुप्तिथी गुप्त एवा मारा गुरु छे. कुक्षिसंबल एटले मात्र भिक्षाथी जीवन निर्वाह चलावनार अने धननी मूर्च्छाने तजनार नित्य ध्यानमां रहेनार एवा गुरुने गोतो जे तारवामां समर्थ छे. **गृहस्थ गुरुनी अने गृहस्थ शिष्य कोण कोने माटे पात्र? जो सारंभी गृहस्थ सारंभी गुरुने माने अने पूजे, तो कादवथी कादव धोवा जेवुं छे. अर्थात् तेथी मलिनता केम जाय?''**

ईत्यादि गुरुना असरकारक वचनोथी नव चेतन पामेल वाक्पतिराज ध्यान पारीने कहेवा लाग्यो के-'हे भगवन्! मारा मनमां एक संदेह छे, ते ए के मनुष्य लोकमांथी अनंत जीवो जो मोक्षे जाय, तो संसार खाली थई जाय अने मोक्षमां स्थान न मळे, कारण के ते स्थान भराई जाय.'

त्यारे गुरु उत्तर आपता बोल्या के—'हे महासत्त्व! आ संबंधमां जैनागमना ज्ञाता विद्वानोए बतावेल एक श्रवण करवा लायक दृष्टांत कहुं छुं, ते सांभळ! अनादि काळथी सेंकडो नदीओथी तणाती वेळुथी पृथ्वी खाली न थई अने समुद्र भरायो नथी. अर्थात् जळ के वेळुथी जो पृथ्वी खाली थाय अने समुद्र भराय, तो जीवोथी संसार खाली थाय अने (एक दीपकनी ज्योतमां हजारो दीपकोनी ज्योतथी संकीर्णता थाय तो) मोक्ष संकीर्ण थाय, परंतु तेम बनवानुं नथी.'

ए प्रमाणे सांभळतां कुवासना दूर थवाथी रोमांचित थई हर्षोल्लास पामतो अने ब्रह्मज्ञानीओमां राजा समान एवो **वाक्पतिराज** कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! आटलो वखत परमार्थना विचार विना धर्मतत्त्वथी बहिष्कृत थयेला अमे मोहलीलाथी मात्र भ्रमित ज रह्या. आप जेवा पूज्य साथे लांबो परिचय थया छतां मने कंई फळ न मळ्युं अने आटला दिवसो धर्मना व्याख्यान विना मारा बधा नकामा गया. कस्तूरिथी मंडित करेला कपाळथी शुं? हवे तो हुं श्री जिनेश्वरने प्रणाम करवा द्वारा पडेली आंटणथी कपाळने मंडित करवा ईच्छुं छुं. तो

हे प्रभो! मुमुक्षु एवा मने हवे औचित्यनुं उल्लंघन न थाय, तेवो आदेश करो के जेथी कर्मनाशक ते आपना आदेश प्रमाणे हुं वर्तन करुं.'

त्यारे **आ.श्री बप्पभट्टि** गुरु बोल्या के—'हे भद्र! कर्ममां जो तने शंका होय, तो मनः शुद्धि करवानी जरूर छे अने व्यवहार पण तेवो ज छे. माटे तुं सन्यस्तपणामां ज जैनमार्गनो स्वीकार कर.' एम सांभळतां ते गुरुनी साथे ज उठ्यो अने त्यांथी तेमना उपाश्रयनी पासे आवेल **श्री पार्श्वमंदिर**ना स्तूपमां ते आव्यो. त्यां पूर्वे स्वीकारेल मिथ्यादर्शन-वेषनो तेणे त्याग कर्यो अने जैनर्षि-वेषनो स्वीकार करतां ते जैनमुनि थयो. वळी ते वखते एक ध्यानमां तान लगावी रहेल तेणे संसार-त्यागनुं चरम प्रत्याख्यान कर्युं तेमज अढार पापस्थानोनो तेणे सर्वथा त्याग कर्यो. वळी अंतरना दोषने दूर करतां तेणे स्तुति-निंदा तथा पुण्य-पापमां समभाव लावी, मानने सोषवी, परमेष्ठी-पदमां मन लगावीने चार शरणनो स्वीकार कर्यो. तथा एकावतारी अने महानंदपदने ईच्छता एवा तेणे दुष्कृत खपाववा अढार दिवसनुं अनशन करी, सम्यक् प्रकारनी आराधनाथी पांडित्यमरणने साधतां देहमुक्त थईने ते स्वर्गमां इंद्रनो सामानिक देव थयो. एटले कंईक मित्रना स्नेहथी गद्गदित थयेल आचार्य महाराज, बधा सामंतो अने विद्वानोना सांभळतां कहेवा लाग्या के—'सामंतराज स्वर्गे जतां शोक राखवानो नथी. ते तो इंद्र सामानिक थया अने स्वर्गनी लक्ष्मी तेने वरी चूकी.'

हवे पूर्वे त्यां नंदराजाए स्थापन करेल **गोकुल** वासमां जगतने शांति पमाडवामां हेतुरूप एवा श्रीशांतिनाथ भगवान अने श्री शांतिदेवी छे, त्यां श्री जिनेश्वरने वंदन करवा जतां **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ए शांतिदेवी सहित जिनेश्वरनी स्तुति करी. अद्यापि ते **'जयति जगद्रक्षाकर'** ईत्यादि शांतिदेवीनुं स्तवन विद्यमान छे, ते शांतिने करनार अने सर्व भयने दूर करे छे.

पछी लोकोथी प्रशंसा पामता एवा **आ.श्री बप्पभट्टि गुरु** त्यांथी पाछा वळतां केटलेक दिवसे ते कान्यकुब्ज नगरमां आवी पहोंच्या. एटले चर पुरुषो मारफते प्रथमथी ज वृत्तान्त जाणवामां आवतां राजा नगरना पादर सुधी तेमनी सन्मुख आव्यो अने आनंदपूर्वक राजाए तेमने नगरमां प्रवेश कराव्यो. त्यां चमत्कार पामेल राजाए सभामां बिराजमान गुरुने कह्युं के—'अहो! तमारा वचननुं सामर्थ्य केटलुं के **वाक्पतिराज**ने पण तमे प्रतिबोध पमाड्यो!'

एटले आचार्य बोल्या—'ज्यां तुं प्रतिबोध पामतो नथी, त्यां मारी शक्ति शुं मात्र छे?'

त्यारे राजाए जणाव्युं के—'हुं बराबर बोध पाम्यो छुं, तमारा धर्ममां मने भारे श्रद्धा छे, परंतु शैव धर्मने मूकतां मने भारे दुःख थाय छे, तेथी जाणे पूर्वभवथी ए संकळाई गयेल होय एम मने लागे छे, तो हुं शुं करुं?'

एवामां श्रुतज्ञानना बळथी ए राजानो पूर्वभव जाणीने गुरु कहेवा लाग्या के—'ते त्यां पूर्वभवे करेल काय कष्टनुं फळ राज्य ए बहुज अल्प फळ छे.'

त्यां आश्चर्य पामता प्रधानो कहेवा लाग्या के—'हे भगवन्! अमारा बोध माटे तमे राजानो पूर्वभव कही संभळावो.'

एटले प्रश्न (श्र) चूडामणि शास्त्र थकी बराबर विचार करी, निर्दोष अने अगाध ज्ञानना भंडार एवा गुरु बोल्या के—'हे राजन्! सांभळ—कालिंजर पर्वतनी नीचे **शाल** वृक्षनी शाखा पर बंने पग बांधी, अधोमुख रही, पृथ्वीतल पर लटकती जटा सहित रहेतां अने क्रोधादि शत्रुओने विजय करवा बब्बे दिवसे मिताहार लेतां कंईक अधिक सो वरस सुधी ते अति दुष्कर तपनुं आराधन कर्युं अने प्रांते मरण पामीने तुं राजा थयो. ए वातमां तने विश्वास न आवतो होय, तो तारा विश्वासु माणसोने मोकल अने अद्यापि त्यां वृक्ष नीचे जटा पडेल छे, ते मंगावी ले.'

ए प्रमाणे आचार्यना कथनथी आश्चर्य पामेल राजाए पोताना सेवक मोकल्या अने ते जईने त्यांथी जटा लई

आव्या. आथी चमत्कार पामी पोताना मस्तकने धूणावता अने तेमना चारित्रथी उल्लास पामता सभासदो प्रशंसा पूर्वक कहेवा लाग्यो के—'अहो! आ मुनींद्र कळिकाळमां पण महाज्ञानी अने कळाना निधान छे. वळी आ राजा पण खरेखर! पुण्यशाळी के जेना आवा अद्‌भुत गुरु छे.' एम स्तुति करी, आचार्यना चरणमां पोतानुं मस्तक नमावीने ते तेमनी उपासना करवा लाग्या.

एकदा पोताना प्रासादनी अगासी परथी राजाए कोई मकानमां, भिक्षाने माटे आंगणे आवेला अने परमब्रह्मना ध्यानमां निमग्न एवा एक जैनभिक्षुने कामभोगने माटे ईच्छती एवी नवयुवति रामाने जोई, पण तेणीनो अनादर करतां ते मुनि घरथी बहार नीकळता हता, तेवामां एकदम कमाड मजबूत रीते बंध करी चरणनो प्रहार करतां जाणे कौतुकथी ज तेना पगमांथी नूपुर नीकळीने यतिना चरणकमळमां आवीने पडतां हास्यसहित निर्लज्जपणे जोती तथा कामना दामणतुल्य ते रमणीने प्रार्थना अने हावभाव बतावतां पण मुनिए न गणकारतां तेनी उपेक्षा करी. आ बधुं जोवामां आवतां राजा गुरु आगळ प्राकृत पद्यनुं एक चरण बोल्यो, एवामां ते पहेलांज गुरु महाराजे त्रण चरण कही बताव्या. ते संपूर्ण गाथा. आ प्रमाणे छे—

कवाडमासज्ज वरङ्गणाए, अब्भत्थिओ जुव्वणमत्तियाए ।
अमन्निए मुक्कपयप्पहारे सनेउरो पव्वइयस्स पाओ ।।१।।

अर्थात् - यौवनथी मदमाती थयेल अंगनाए कमाड बंध करी अभ्यर्थना करी, छतां ते मुनिए न मानतां पादप्रहार करतां तेणीना पगमांथी नूपुर मुनिना पगमां आवी गयुं.

एक वखते एक युवान भिक्षुक कोई रमणीना घरे भिक्षा माटे प्रवेश करतां, पोताना महेलनी अगासी पर रहेल राजाना जोवामां आव्यो. एटले दर्वीसहित भोजन लावी, ते मुनिमां दृष्टि लगावीने पेली रमणी उभी रही तेमज तेणीनी नाभिनी सुंदरतामां दृष्टि लगावीने ते भिक्षुमुनि पण ते ज प्रमाणे उभो रह्यो. त्यारे एकताने लीधे भिक्षा लेवानुं भूली जतां अने दान आपवानुं पण भूली जतां ते बंनेनी दृष्टिमां एक ध्यानवर्ती रह्युं. एवामां कागडाओए ते बधुं भोजन अस्तव्यस्त करी मूक्युं. आ बधुं साक्षात् नजरे जोतां विस्मय पामता राजाए गुरु पासे यथादृष्ट अर्थने सूचवनार अर्धगाथा कही संभळावी. ते आ प्रमाणे—

भिक्खयरो पिच्छइ नाहिमण्डलं, सावि तस्स मुहकमलं ।

अर्थात् - भिक्षाचर (भिक्षुक) नाभिमंडळने जुए छे अने ते रमणी तेना मुखकमळने जोई रही छे.

एम सांभळता **श्री बप्पभट्टि गुरु** राजाने उत्तरार्ध संभळावतां बोल्या कारण के समुद्रना परपोटानी जेम तेमने आवुं शुं मात्र हतुं?—

दुह्वंपि कवालं चट्टुयं, कागा विलुम्पंति ।।

अर्थात् - ते बंनेना भिक्षापात्र अने कडछी कागडाओ आवीने उच्छिष्ट करे छे.

एम सांभळतां संतुष्ट थयेल राजा ते कल्याण अने बुद्धिना निधान एवा गुरुने कहेवा लाग्या के—'मारा मित्र विना आ में साक्षात् जोयेल समस्या कोण पूरे?'

ए प्रमाणे सत्य, मित्रता अने मार्दवना लोपमां भीति धरावनार राजा, गुरुना मुखकमळने विषे निरंतर भ्रमर थईने रहेवा लाग्यो.

एवामां एकदा समस्त कळाओना आधाररूप तथा चित्रकर्ममां भारे कुशळ एवो एक चतुर चित्रकार त्यां आव्यो. 'पूर्वे बराबर ओळखेल होय अने पछी मलिन वस्त्रवती आच्छादित करेल होय, रंगीन वर्णोथी पूर्ण अने स्पष्ट रेखावाळुं होय तेवुं अलक्ष्य चित्र पण हुं सुधारी शकुं, नहिं तो प्राण आपवा तत्पर थाउं' एम पोतानी अद्‌भुत कळाने लीधे प्रतिज्ञा करनार एवा ते चित्रकारे एक विकट पटपर तेर भागमां राजानुं रूप चित्री ते सुंदर

चित्र तेणे राजाने बताव्युं, पण राजा तो मित्रना गुणोनी रमणीयतामां लुब्ध हतो, इच्छा विना अवलोकन करतां तेणे चित्रकारने जवाब पण न आप्यो, एम तेणे त्रणवार चित्र बनाव्युं छतां राजाए तेने बोलाव्यो नहि. आथी खेद पामतां दीन वचनथी ते बीजा प्रेक्षकोने कहेवा लाग्यो के—'हुं मारा हाथ छेदी नाखुं के कपाळ फोडुं? भाग्यहीन एवा मने कळाथी कंई लाभ न मळ्यो; हुं खेदनी वात केटली कहुं?'

त्यारे केटलाक दयाळु प्रेक्षको बोल्या के—'**आ.श्री बप्पभट्टि गुरु**ने तुं तारी चित्रकळा बताव.' एटले तेणे जिनबिंब चित्रीने गुरुने आप्युं. आथी तेमणे तेनी प्रशंसा करतां राजा आगळ कह्युं के—'आ चित्रकार कळामां भारे प्रवीण छे.' एम सांभळतां राजाए प्रमोदपूर्वक तेने एक लाख रूपिया आप्या. पछी तेणे चार चळकता पटमां तेणे श्री वर्धमानस्वामीनुं बिंब चितर्युं, तेमांनुं एक **कान्यकुब्ज** नगरमां स्थापन कर्युं, एक **मथुरा** नगरीमां, एक **अणहिल्लपुर**मां अने एक **सतारक** नगरमां गुरुए प्रतिष्ठापूर्वक स्थापन कर्युं. श्री पाटणमां म्लेच्छभंगथी पूर्वे **मोढ**चैत्यनी अंदर हतुं अने ते वखते त्यां धार्मिक पुरुषोना जोवामां आवेल हतुं. वळी **श्रीबप्पभट्टि** आचार्ये शिष्य कविओने सारस्वत मंत्र समान **तारागणादि** बावन प्रबंधो रच्या.

हवे एकदा आमराजाए शत्रुओने जीततां, **समुद्रसेन** राजाथी अधिष्ठित एवा **राजगिरि** दुर्गने घेरो घाल्यो, के जे गज, अश्वो, रथ अने पदातिओना ऊँचे उछळता कोलाहलथी एक शब्दमय जणातो, समग्र ऊँचा प्रकारनी सामग्रीनो ज्यां संग्रह करवामां आव्यो हतो, विग्रह करता शत्रुओने लाखो प्रपंचोथी जे दुर्ग्राह्य हतो, बाह्य भूमिने तोडी नाखनार भैरवादि महायंत्र, यष्टि अने छोडेला पत्थरना गोळाओथी हाथीनी घटाने कूटी नांखतो हतो, गढनी दिवाल उपरना कांगराओथी जे आकाशनी साथे वातो करतो हतो, वृक्षघटाने लीधे सूर्य अने चंद्रमानो संचार पण ज्यां मुश्केलीथी थतो हतो, तथा पडता अत्युष्ण तेल अने सुरंगादिक प्रपंचोथी पण ज्यां शत्रुओनुं बळ निष्फळ जतुं हतुं, त्यां भारे प्रपंच अने परिश्रम करतां कंटाळी गयेल **आमराजा**ए **आ.श्रीबप्पभट्टि** गुरुने पूछ्युं के—'हे भगवन्! पर्वतसमान आ दुर्ग क्यारे अने शी रीते लेवाय तेम छे?'

एटले प्रश्न शास्त्र थकी बराबर विचारीने आचार्य बोल्या के—'हे राजन्! तारो **भोज** नामे पौत्र ए अवश्य लई शकशे, तेमां संशय नथी.' ए प्रमाणे सांभळ्या छतां अभिमानथी ते सहन न करतो राजा त्यां ज रह्यो. एम बार वरस वितततां तेना **दुंदुक** नामना पुत्रने पुत्र थयो. ते जन्मतांज प्रधानो तेने पालखीमां बेसाडीने त्यां लई आव्या. ते पर्वतोने भेदवामां वज्र समान हतो. एटले तेल नाखेल अग्निनी ज्वाळा समान रक्ततायुक्त तेनी दृष्टि दुर्गना अग्रभाग पर पडे, एवी रीते ते बाळकने त्यां सुखे सुवाड्यो. एवामां तेनी दृष्टि पडतां जाणे नीचे रहेला सुभटोए नाश पमाडेल होय तेम ते किल्लो तुटवा लाग्यो. भांगी पडतां मुख्य द्वारपरथी अटारीओ फुटवा लागी, मर्दन करता मनुष्यो, स्त्रीओ, गज, अश्वो तथा गायो भेंसोना आर्त्त आक्रंदथी सर्वत्र कोलाहल मची रह्यो, तथा एक सामान्य पर्वत जाणे भेदायो होय तेम मोटा पर्वतो पर रहेता देवताओने पण भय पमाडतो ते किल्लो तुटी पड्यो. एटले समुद्रसेन राजा दया मागीने बहार चाल्यो गयो अने आमराजा ते **राजगिरि** दुर्गमां दाखल थयो. एवामां आमराजाना अधिष्ठायको साथे **वैर**भाव होवाथी ते दुर्गनो अधिष्ठायक यक्ष राजमार्गमांना लोकोने खेंचवा लाग्यो. ए वृत्तान्त लोकोना मुखथी सांभळवामां आवतां **आमराजा** पोते त्यां आवीने यक्षने कहेवा लाग्यो के—'आ सामान्य लोकोने मूकी दईने मारो ज घात कर.' आ तेना साहसवचनथी यक्ष संतुष्ट थयो अने हिंसा करवानो आग्रह तेणे छोडी दीधो. ते सत्संगथी शांत अने उपकारक थई **आमराजा**नी साथे मित्रता पाम्यो अने तेनी आज्ञा उठाववा तैयार थयो. त्यारे **आमराजा**ए तेने पूछ्युं के—'हे मित्र! मारुं आयुष्य केटलुं छे, ते ज्ञानथी जाणीने मने निवेदन कर.'

एटले यक्षे कह्युं के—'छ महिना बाकी रहेशे, त्यारे हुं तने जणावीश.' एम कहीने ते अदृश्य थई गयो.

पछी अवसर आवतां ते आवीने कहेवा लाग्यो के—'हे राजन्! गंगानी अंदर **मागध** तीर्थभणी नौका लईने जतां तेनी आदिमां मकार आवेल छे, एवा गामना पादरे तारुं मरण थशे. त्यां जळमांथी नीकळता धूमने जोईने ए निशानी तारे दृढ समजी लेवी. माटे हवे तने उचित लागे तो परभवनुं हित साध.'

ए प्रमाणे सांभळतां मित्र गुरुना उपदेशथी **आमराजा** तीर्थयात्रा करवा चाल्यो कारण के **पोताना हितमां आळसु थईने आत्मानी सद्गति कोण न ईच्छे?** पछी त्वरित प्रयाणो करतां राजा **शत्रुंजय तीर्थपर** आव्यो त्यां श्री युगादीशनी पूजा करीने ते पोताने कृतार्थ मानवा लाग्यो. त्यांथी **श्री नेमिनाथ**ने हृदयमां भावतां, सुज्ञोमां यश पामनार ते **रैवताचल**नी तळेटीमां आव्यो त्यां तीर्थने वंदन करवाने ईच्छता एवा ते निर्भय **आमराजा**ए दश हजार अश्वोना परिवार साथे आवेला एवा अगियार राजाओने जोया. कळिकाळमां अधिकार पामेला राक्षसोथी अधिष्ठित जाणे वृक्षो होय तेवा मिथ्या वचन-आडंबर चलावता अगियार दिगंबरो सहित ते राजाओ रैवताचलने पोताना तीर्थ तरीके स्वीकारी अन्यने उपर चडवानो निषेध करता हता, एटले असंख्य सैन्ययुक्त आमराजाए तेमने युद्ध करवा माटे बोलाव्या. ते जोईने **आ.श्री बप्पभट्टि** आचार्ये मित्र राजाने कह्युं के-'हे राजन्! धर्मकार्यना निमित्ते प्राणीवध करवा कोण ईच्छे छे? ए विद्वत्तानो डोळ करनारा दिगंबरोने हुं वाग्युद्धथी जीतीश. नखथी छेदवा लायक कमळ पर कुठार (कुहाडो) कोण चलावे? वाद करतां तो ते विना प्रयासे जीताया ज छे, कारण के पतंगने बाळे, तेमां दीपकनी स्तुति शी करवी?'

पछी सुज्ञशिरोमणि **आमराजा**ए ते प्रतिपक्षीओने बोलावीने कह्युं के—'व्रतथी नहि पण निर्जयथी ज जो तमे शांत थवा मागता हो, तो असंख्य व्यंतरो जेना चरण-कमळमां नमस्कार करी रह्या छे तथा श्री नेमिनाथना चरणकमळमां राजहंसी समान एवी **अंबा** नामे शासनदेवी छे, एटले आपणा बंने पक्षनी **बे कन्या बदलावीने मूको** तेमनी पासे रहेल ते देवी जेने बोलावशे, तेनुं आ तीर्थ समजवुं. आ क्रमथी आपणे समाधान करीए; पण लघुताना स्थानरूप एवो वाद विवाद करवाथी शुं?' आ क्रम-रीतथी बंने पक्षवाळां एकमत थया. पछी **आ. श्री बप्पभट्टिसूरि**ए एक अक्षय अने उत्कट प्रभाववाळी कुमारिकाने तेमना आवासमां मोकली, तेमणे बार पहोर सुधी मंत्रोथी ते कन्याने अधिवासित करी. एटले ते जाणे मुंगी अने बहेरी होय तेम कोई रीते पण बोलवाने असमर्थ थई गई, पछी दिगंबरो कहेवा लाग्या के—'जो तमारामां शक्ति होय, तो अहीं तमे अमारी आ कन्याने बोलावी आपो.'

त्यारे आ.श्री बप्पभट्टि गुरुए पोतानो कमळ समान कोमळ हाथ ते कन्याना मस्तकपर मूक्यो, के अंबादेवी तरत ज तेना मुखमां रहीने स्पष्ट बोलवा लागी के—

उज्जिन्तसेलसिहरे दिक्खानाणं निसीहिया जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि ।।१।।

आथी **श्वेतांबर** पक्षनो विजय सूचवनार अने आकाशने भरी देनार जयजय ध्वनिसहित दुंदुभिनाद थयो, त्यारथी आ गाथा **चैत्यवंदन**मांथी **सिद्धस्तवनी** त्रण गाथानी उपर लेवामां आवी. तेमज शक्रस्तवनी जेम प्राचीन श्रुतवृद्धोए मान्य करेल **अष्टापद**नी स्तुति पण आबाल वृद्ध मान्य थई. पछी **रैवताचल** तीर्थपर आरोहण करी महाभक्त आमराजाए पोताना जन्मने सफळ मानतां **श्री नेमिनाथ**नी पूजा करी. वळी त्यां **दामोदर-हरि**नी पूजा करी ते **पिंडतारक माधवदेव** अने **शंखोद्धार**मां आवतां त्यां रहेल हरिनी तेणे अर्चा करी. पछी त्यांथी द्वारिकामां **कृष्णमूर्ति**ने प्रणाम करी, त्यां दानादिक आपीने ते **सोमेश्वरपुर** (पाटण) मां आव्यो. त्यां सोमेश्वरनी सुवर्णपूजा करी, जळ वडे मेघनी जेम तेणे दानथी **बधा** लोकोने संतुष्ट कर्या. पछी **आमराजा** पोताना नगरमां आव्यो अने त्यां इच्छानुसार दान करतां तेणे धर्मना स्थानो कराव्यां. एवामां अवसर आवतां तेणे पोताना **दुंदुक** पुत्रने राज्य पर बेसाड्यो अने पूर्वे आनंदित करेल होवा छतां प्रधानोने खमाव्या. पछी गंगानदीना तीरे रहेल **मागध** तीर्थ भणी

तेणे प्रयाण कर्युं. त्यां गंगाथी पार उतरवा माटे **श्री आचार्य साथे ते नावमां बेठो.** एवामां जळमांथी नीकळतो धुमाडो तेना जोवामां आव्यो. त्यां लोकोना मुखथी गंगाकीनारे आवेल **मगटोडा** गामनुं नाम श्रवण करतां व्यंतरनुं कथन तेने बराबर सत्य भास्युं. आ वखते आचार्य महाराज राजाने कहेवा लाग्या के—

'हे मित्र! जो तने श्रद्धा होय, तो प्रांते पण जिनधर्मनो स्वीकार कर.'

एटले राजाए जणाव्युं के—'**श्री सर्वज्ञ देव, ब्रह्मचारी गुरु अने दयाप्रधान धर्मनुं शरण थाओ. वळी व्यवहारथी में आटला दिवस जे देव, गुरु अने धर्मनो स्वीकार कर्यो, तेनो हुं त्रिविधे त्याग करुं छुं.** हे पूज्य! अत्यारे मित्राईने लीधे विधिपूर्वक तमारे पण शरीरनो त्याग करवो जोईए. शुं ए स्थिति तमने उचित नथी? के जेथी परलोकमां पण आपणे साथे रही समस्यापूर्ति वगेरेथी सुखे काळ निर्गमन करी शकीए.'

ए प्रमाणे सांभळतां गुरु बोल्या—'हे राजन्! आ तारुं वचन मुग्धपणाने सूचवे छे. पोतपोताना कर्मने लईने जीव कोण कई गतिमां जशे, ते ज्ञानी विना कोई जाणी न शके? वळी व्रतधारीओने एवी रीते देहत्याग करवो, ते उचित नथी. तेमज हजी मारुं आयुष्य पांच वरस बाकी छे.' ऐम आचार्ये तेना मननुं समाधान कर्युं.

पछी विक्रम संवतना आठसें नेवुं वरस जतां भादरवा मासनी शुक्ल पंचमी अने शुक्रवारना दिवसे चित्रा नक्षत्रनी साथे **चंद्रमानो** योग आवतां तथा चंद्रस्थित सिंह राशिमां अर्क (सूर्य) आवतां, गुरुना मुखथी पंचपरमेष्ठीना नमस्काररूप मंत्र सांभळतां तथा श्री जिनेश्वर अने सन्मित्रगुरुना चरणनुं स्मरण करतां श्रीमान् नागावलोक (आम) राजा स्वर्गस्थ थयो.

एटले कंईक मित्रना मोहने लीधे पासे रहेला **श्री बप्पभट्टि** गुरुए त्यां रहीने तेना समान प्रधान पुरुषोना हाथे तेनुं मृतकार्य कराव्युं. पछी कंईक शोकउर्मिथी संतप्त थयेल तथा राजाना गुणो वारंवार याद करता श्री गुरु उद्वेगपूर्वक करुण स्वरे आ प्रमाणे कहेवा लाग्या—

'आ ८९०मुं पण वर्ष न थाओ, चित्रा नक्षत्र पण न हो, ते भादरवा महिनाने धिक्कार थाओ, ते खल शुक्लपक्षनो पण क्षय थाओ, सिंह राशिमां संक्रांति तथा शुक्रवारनी पंचमी अग्निमां पडो के ज्यां नागावलोक राजा गंगाना जळ-अग्निमां स्वर्गस्थ थयो.' ए प्रमाणे शोक करतां **श्री बप्पभट्टि मुनीश्वर** निरुपाय थईने **दुंदुक** राजाना **कान्यकुब्ज** नगरमां पाछा आव्या.

हवे दुंदुक राजा **कंटी** नामनी वेश्यामां आसक्त थयो, तेथी ते वेश्याना वचनथी मूढ बनेल राजा, भाग्योदय अने कळाना विलासरूप एवा पोताना **भोजपुत्र** उपर पण द्रोह करवा लाग्यो. अहा! **अविवेकना अग्रस्थानरूप वेश्यासमागमने धिक्कार थाओ.** आथी दुःखित थयेल तेनी माताए ते वृत्तान्त पोताना बांधवोने निवेदन कर्यो. कारण के **संकटमां कुलीन कांताओने पोतानुं पीयर ज शरणरूप छे.** एटले तेणीना बांधवोए आवीने पुत्र जन्मना बहाने भोजने बोलाव्यो. त्यारे अनुज्ञा मेळववा माटे ते राजभवनमां चाल्यो. आ वखते आचार्य महाराजना सूचनथी महेलना द्वारपर शस्त्रधारी पुरुषोने जाणीने ते पाछो वळ्यो अने पोताना मामा साथे पाटलीपुरमां चाल्यो गयो.

एवामां एकदा मत्सर धरावनार दुंदुक राजाए आचार्य महाराजने जणाव्युं के—'तमे मारापर प्रसाद लावीने ते उत्तम पुत्रने लई आवो.'

एटले उत्तरोत्तर ध्यान, योगादिना प्रारंभथी तेमणे पांच वरस व्यतीत कर्या, त्यां पोताना आयुष्यनो अंत नजीक आव्यो. एवामां समयपर राजाए भारे आग्रह करीने गुरुने आदरपूर्वक पुत्रने बोलाववा माटे मोकल्या. त्यारे गुरु ते नगरने पादर आवी चिंतववा लाग्या के—'जो भोजने त्यां लई जईश, तो राजा तेने मारी नाखशे अने न लई जतां ते मूर्ख भारे ईर्ष्या लावी मुनिओने उपद्रव तथा शासननी हीलना करशे. माटे हवे अनशनथी मृत्यु साधी लेवुं ए ज उचित छे.' एम धारी अनशन करी, गीतार्थ मुनिओ पासे आदरथी आराधना करावतां पोते **आ.श्रीबप्पभट्टि**

मुनिराजे अध्यात्मयोगथी एकवीश दिवस व्यतीत करी दशमा द्वारथी पोताना प्राण छोड्या अने **ईशान** देवलोकमां ते देवपणे उत्पन्न थया. विक्रम संवत्ना ८०० व्यतीत थतां भादरवा मासनी त्रीज अने रविवारने दिवसे **हस्त** नक्षत्रमां तेमनो जन्म थयो हतो. छ वर्षे तेमणे व्रत लीधुं अने **अगियारमे वर्षे तेओ आचार्य पद पाम्या,** तेमज पंचाणुं वर्षे तेमनुं आयुष्य पूर्ण थयुं एटले विक्रम संवत् ८९५मे वर्षे भादरवा महिनानी शुक्ल अष्टमीना दिवसे स्वाति नक्षत्रमां **आमराजा**ना गुरु **श्री बप्पभट्टिसूरि**ए स्वर्गगमन कर्युं. एवामां गुरुना स्वर्गगननी वात सांभळवामां आवतां आम राजानो पौत्र भोजकुमार अत्यंत शोकथी पोताना वदनकमळने संकुचित करतो ते विलाप करवा लाग्यो के—

'अहा! हवे अविवेकथी विवेक जीतायो, सारस्वत मंत्रनो लोप थयो, निराभिमानता छूपाई गई अने ज्ञानने जलांजलि मळी.'

ए प्रमाणे क्षणभर विलाप कर्या पछी गुरुभक्तिथी पवित्र अने निर्मळ आचारवाळा एवा भोजकुमारे चिता तैयार करवा माटे पोताना सेवकोने आदेश कर्यो. पोताना पितामह (दादा) ना वियोगमां तेना मित्र गुरु थकी वृद्धि पामेल अने ते गुरु पण स्वर्गे जतां अनाथनी जेम लोकमां एकलो थई रहेल ते एक क्षण वार पृथ्वीतलपर रहेवाने समर्थ न हतो. एटले पितामहना मित्र सूरिनी पाछळ जवाने ज हवे तेणे योग्य धार्युं त्यां पोताना मोसाळना प्रधानोए आपेल शिखामणनो अनादर करी जाणे लीलावनमां जतो होय, तेम गुरुनी मरणभूमिए ते पहोंच्यो. एवामां तेनी माताए आवीने तेने भुजदंडमां पकडी लीधो, पछी अन्यायनो निषेध करवा अने राज्यनी कृपानी खातर शिखामण आपतां माता तेने कहेवा लागी के—'हे वत्स! मारा श्वशुर अने गुरु बंने चाल्या गया तेथी द्वेषी अने महापापी एवो तारो पिता निर्भय थईने तारी प्रजाने सतावशे, माटे हृदयने आनंद पमाडनार हे नंदन! तुं प्रेमाळ अने दयाळु छे, तो आ मारी प्रार्थनाने लक्ष्यमां लई आ मृत्युना साहस थकी विराम पाम.'

ए प्रमाणे मातानुं वचन अलंघनीय समजी आंखमां आंसु लावतां भोजकुमारे गुरुनी पाछळ चितामां पोतानुं उत्तरीय वस्त्र नाख्युं. पछी असाधारण शोकथी देहकांतिने म्लान बनावता **भोजकुमारे** आचार्य महाराजनुं पितामहनी जेम उर्ध्वदेहिक कृत्य कर्युं.

पछी एकदा पोताना मामा साथे आकस्मिक दावानळ समान भोज, पिताने शांत करवा माटे ओर्चिंतो कान्यकुब्ज नगरमां गयो त्यां नगरमां दाखल थई सत्वर राजभवनमां आवतां तेणे द्वार पासे त्रण बीजोरां लई बेठेल एक माळीने जोयो. एटले तेणे पोताना स्वामीनो पुत्र समजीने तेने ते फळ भेट कर्यां. ते फळ लेतां, लोकोने अटकावतो ते राजभवननी अंदर दाखल थयो त्यां ईर्ष्यापूर्वक सिंहासनपर कंटी वेश्या साथे बेठेल पोताना पिताने तेणे त्रण बीजोरावती हृदयमां मारीने यमधाममां पहोंचाडी दीधो. एटले पूर्वे चिंतवेल पुत्रनी हत्याना पापथी जाणे भय पाम्या होय तेम मर्मस्थाने सख्त वागवाथी तेना प्राण चाल्या गया. पछी शीयाळनी जेम पाछळना द्वारथी दुंदुकने रमतमां दडानी जेम माणसो मारफत घरथी बहार काढी मूक्यो अने पोते वाजिंत्रोना नादपूर्वक सिंहासनपर बेसी गयो. एटले सर्व सामंतो, नागरिको अने मंत्रीओए तेने प्रणाम कर्यां. त्यारबाद भोज भूपाल **श्री आमविहार** नामना तीर्थने वंदन करवा गयो. त्यां **श्री बप्पभट्टि मुनीश्वर**ना बे शिष्य तेना जोवामां आव्या, पण तेमणे विद्याना विक्षेपने लीधे राजानो सत्कार न कर्यो. एम तेमणे अभ्युत्थानादि सन्मान न करवाथी भोजराजा चिंतववा लाग्यो के—'आ गुरुना पदे रहेला बंने शिष्यो व्यवहारथी अज्ञात छे, तेथी ए गुरुपदने योग्य नथी. कारण के **विश्वनो व्यवहार ए महत्त्वनुं स्थान छे.**' एम धारीने तेणे **श्री नन्नसूरि** तथा **श्री गोविंदसूरि**ने बोलावीने तेमने आदरपूर्वक गुरुपदे स्थाप्या. पछी राजाए **श्री नन्नसूरि**ने परिवार सहित मोढेर तीर्थमां मोकल्या अने **श्री गोविंदसूरि**ने पोतानी पासे राख्या. त्यारबाद अनेक राजाओने ताबे करतां **भोजराजा आमराजा** करतां पण श्री जिनशासननी अधिक उन्नति करवा लाग्यो.

ए प्रमाणे **आ. श्री बप्पभट्टि, भद्रकीर्ति, वादिकुंजरकेसरी, ब्रह्मचारी, गजवर** अने **राजपूजित** एवा बिरुदोथी जैनशासनरूप क्षीरसागरमां प्रख्यात थया अने **कौस्तुभ** रत्ननी जेम पुरुषोत्तम-उत्तम पुरुषोना हृदयमां तेणे स्थान लीधुं. धर्मरूप कल्पवृक्षना अंकुर समान ते **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि** जगती पीठपर जयवंत वर्तो के जेमनुं नामरूप मंत्र अत्यारे पण अज्ञानरूप विषनो नाश करे छे.

ए रीते समस्तलोकमां विख्यात **आ. श्री बप्पभट्टिसूरिनुं चरित्र**, पूर्वे विद्वानोए बनावेल शास्त्रो थकी जाणीने में तेमांनुं कंईक अल्प अहीं कही बताव्युं, तेमां माराथी कंई अनुचित कहेवायुं होय, तो सज्जनो क्षमा करे तथा तेमना प्रसादथी आ चरित्र जिनमतमां स्थिरता पामी सर्व लोकोने आदरपात्र अने अचळ थाओ.

श्री कान्यकुब्जना राजाने प्रतिबोध पमाडनार तथा पूर्वगत श्रुत तेमज नवा पाठबंधथी समस्या रचनार एवा **श्री भद्रकीर्ति** मुनीश्वरनी कीर्ति जगतमां नृत्य करी रही छे.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना ध्यानपर लेतां **श्री प्रद्युम्न मुनीश्वरे** शोधेल, पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **आ.श्री बप्पभट्टिसूरि**ना चरित्ररूप आ अगियारमुं शिखर थयुं.

दुष्कर्मने जीतनार, पुरुषोत्तम (कृष्ण) ना पुत्र, विशुद्ध अक्षयपदना कारणरूप, बृहस्पति (शिव) ना उन्नतमार्गे शोभाने पामेला एवा **श्री प्रद्युम्न (सूरि)**नो देह कल्याणकारी थाओ.

इति श्री बप्पभट्टिसूरि-प्रबंध[1]

शिष्य लोभ अन्य लोभों से विशेष अहितकर है। कारण कि शिष्य के लोभ से अयोग्य शिष्य का भी संग्रह हो जाता है। जिससे सतत गुरु को दुःखी रहना पड़ता है। पुत्र देखकर नहीं होता परंतु शिष्य तो देखकर परीक्षा कर किया जाता है। अतः शिष्य की पूर्ण परिक्षा करनी ही चाहिए। परिक्षा किये बिना दीक्षा देने वाले गुरु सतत आर्त्तध्यान करते रहते है या स्वयं भी कुगुरु बन जाते है।

-जयानंद

1. आम राजाए साडात्रण करोड सोनामहोर गळावी ग्वालियरमां प्रतिमा भरावी हती. आ. श्री बप्पभट्टिसूरजीए एनी प्रतिष्ठा करी हती. - (उपदेश रत्नाकर)

१२. श्री मानतुंगसूरि-प्रबंध

श्री मानतुंगसूरिनी देशना समयनी दंत-कांति जयवंत वर्ते छे के जे ज्ञानरूपी महासागरने उल्लास पमाडवामां शरदऋतुना चंद्र समान शोभे छे. निरंतर लाखो माणसोथी गवाता, कनक समान कांतिवाळा तथा सौमनस (देव के विद्वान्) थी आश्रित एवा मेरु समान **श्री मानतुंग** प्रभु तमारुं रक्षण करो. तीर्थनी उत्कट शोभाना स्थानरूप एवा ते आचार्यनुं चरित्र हुं वर्णवुं छुं के जे जगतमां अप्रसिद्ध छे.

साक्षात् **अमरपुरी** समान **वाराणसी** नामे नगरी के जे सदा गंगाना तरंगोथी पाप-मेलने धोई रही छे. त्यां विद्वानना मुगट समान, अर्थीजनोना दारिद्र्यने दूर करनार एवो **श्री हर्षदेव** नामे राजा के जे कलंकरहित हतो. वळी त्यां ब्रह्मक्षत्रिय जातिनो **धनदेव** नामे सुज्ञ श्रेष्ठी के जे समस्त प्रजा अने राजाना अर्थ (प्रयोजन) ने साधनार हतो. सत्त्व अने सत्यना स्थानरूप एवो **मानतुंग** नामे ए श्रेष्ठीनो पुत्र के जे **परद्रव्य** अने **पररमणी**थी विमुख हतो.

हवे त्यां कामवासनाने दूर करनार दिगंबर जैन मुनिओ हता. एकदा गंभीर **मानतुंग** ते मुनिओना चैत्यमां गयो त्यां वीतराग प्रभुने नमस्कार करी ते गुरु पासे जईने नम्यो. एटले तेमणे धर्मवृद्धिना आशीर्वादथी तेनो सत्कार कर्यो. पछी तेमणे तेने पंच महाव्रत तथा उन, रू अने रेशमना वस्त्रनो निषेध करतां नग्नतानो उपदेश कर्यो. ईत्यादि अनेक प्रकारे धर्ममार्गनुं श्रवण करतां **मानतुंग**नुं मन वैराग्यथी वासित थतां तेणे व्रत लेवानी पोतानी इच्छा जणावी. जेथी तेना मातापितानी अनुमति लईने दिगंबराचार्ये तेने दीक्षा आपी अने ते यशस्वीनुं **महाकीर्ति** एवुं नाम राख्युं. पछी ते चतुर शिरोमणि 'स्त्रीने मोक्ष न होय, केवळी आहार न करे' तथा बत्रीश बोलरूप सिद्धांतनो ज्ञाता थयो. वळी लोच करीने ते जळकमंडळ पोताना हाथमां राखवा लाग्यो, तथा सर्व प्रकारना आभरणोनो त्याग करी ते ईर्यासमिति साचववा लाग्यो, वळी गृहस्थे भोजन कर्या पछी अवशेष रहेल आहारनुं ते भोजन करतो, मयूरपीछानो गुच्छ हाथमां राखतो अने मौनकाळे ते मौन सेववा लाग्यो. तेम ज बंने वखतना प्रतिक्रमणमां आलोयणा लेतां ते शुद्ध रहेतो तथा ते दक्ष महाकीर्ति मुनि नाना मोटा विविध प्रकारना दुष्कर तप तपवा लाग्यो.

हवे ते नगरीमां **लक्ष्मीधर** नामे तेनो बनेवी के जे सारो श्रीमंत हतो, वळी जे आस्तिक जनोमां शिरोमणि अने अत्यंत प्रख्यात हतो. एकदा तेणे आमंत्रण न कर्या छतां तेनी दृढ भक्तिने लीधे **मानतुंग ऋषि** अवसरे आहार लेवा माटे तेने घेर आव्या, तेना कमंडळना शोधन न करवाना प्रमादथी अने तेमां निरंतर जळ भरी राखवाथी अनेक संमूर्च्छिम पोरा उत्पन्न थया हता. त्यां कोगळो करवा माटे तेमांथी तेणे जेटलामां जळ लीधुं, तेवामां श्वेतांबर मुनिओना व्रतमां प्रीतिवाळी एवी तेनी बहेनना जोवामां ते पोरा आव्या, आथी ते पोताना बंधु मुनिने कहेवा लागी के—

'व्रतमां दया एज सार छे, तो तमारा प्रमादथी आ बे ईंद्रिय त्रस जीवो नाश पामे छे, ते जैन धर्मथी विपरीत वर्तन छे. वळी मात्र मर्यादा साचववा माटे वस्त्रखंडमां तमने परिग्रह नडे छे अने तांबाना पात्रमां ते परिग्रह शा माटे नहि? आ तो तमारी मात्र स्वच्छंदता छे, ते शा माटे? श्वेतांबर जैन मुनिओ धन्य छे के जेओ जीवरक्षा करवा सदा तत्पर होय छे, तथा क्रियाने विषे सावधान एवा तेओ **रात्रे पाणी पण पोतानी पासे राखता नथी**; वळी निःसंग अने परमार्थमां आदरवाळा तेओ सचेल अने अचेलक होय छे, छतां तेओ पोताना उपयोगमां खामी आववा देता नथी. पांच आश्रव अने पांच विषयोनो परिहार करवामां तेओ परायण होय छे तथा त्रण गुप्ति अने पांच समितिमां सदा सावधान रहे छे.

ए प्रमाणे सांभळतां **मानतुंगमुनि** कहेवा लाग्या के—'हे बहेन! तुं मारुं नम्र वचन सांभळ—में धर्म साधवा माटे गृहवासनो त्याग कर्यो छे, तो अन्य सामाचारी तो दूर रहो, परंतु ज्यां जीवदया पण न मळे, तेवा सर्वज्ञविरोधी धर्मथी मारे शुं प्रयोजन छे? वळी आ प्रदेशमां श्वेतांबर मुनिओ पण भाग्ये ज कोईवार आवे छे.'

एटले ते श्राविका बोली के—'मध्य प्रदेशमांथी ते अत्यारे आववाना छे, तेमनी साथे हुं तमने जरूर मेळाप करावी आपीश, के जेथी निर्मळ तपना योगे तमे संसारथी निस्तार पामो. हवे अत्यारे आ जळ क्यांक एकांते कूपादिकमां नाखी द्यो, के जेथी शासननी लघुता अने म्लानि न थाय. वळी तेम करतां घणां जीवोनी विराधना अवश्य थाय छे, कारण के अन्य-अन्य जळमां उत्पन्न थयेला जीवो परस्पर विरोधी होय छे.'

पोतानी बहेननुं ए वचन सांभळतां ते मुनिने भारे पस्तावो थयो पछी तेणे परम भक्तिथी तेने भोजन कराव्युं अने मुनि पोताना स्थाने गया.

एवामां एकदा पूर्वे श्री पार्श्वनाथना कल्याणकथी पवित्र थयेल, गंगातीरे आवेल वृक्षोथी सुशोभित एवा ते नगरीना उद्यानमां, नंदनवनमां देवोनी जेम, ज्ञानी **श्री जिनसिंह** नामे आचार्य पधार्या. एटले ते श्राविकाए पोताना बंधु मुनिने गुरुनुं आगमन निवेदन कर्युं. जेथी ते आचार्यने जईने मळ्यो, त्यां तेमणे पूर्वऋषिओए आचरेल सामाचारी तेने कही संभळावतां, अमृत समान ते तेणे आदरपूर्वक श्रवण करी. पछी आचार्ये तेने योग्य जाणीने दीक्षा आपी अने ते केटलाक शास्त्रमां कुशळ होवा छतां गुरुए तेने तपस्याविधिपूर्वक आदरथी आगमनो अभ्यास कराव्यो एटले सम्यक् प्रकारे तप करी आगमनुं रहस्य जाणवामां आवतां तेनी श्रद्धा अचल थई, जेथी गुरु महाराजे तेने योग्य समजीने सूरिपदे स्थापतां गच्छनो आदरपात्र बनाव्यो. एटले क्लिष्ट काव्योना भ्रमथी श्रमित थयेल सरस्वती देवी, तेमना वचनामृतथी संसिक्त थतां अतिशय आनंद पामी तथा ते वखतना ज्ञान-क्रियानी उन्नतिमां लीन बनेला एवा **आ.श्री मानतुंगसूरि** विकास पामीने उपद्रव करता आंतर शत्रुओने अजेय थई पड्या.

हवे ते नगरमां वेद अने वेदांगमां पारंगत, राजमान्य तथा साक्षात् ब्रह्मा समान **मयूर** नामे ब्राह्मण के जे विद्वानोना मुगट समान अने विरोधीरूप सर्पना दर्पने दळी नाखवामां मयूर समान हतो. तेने रूप, शील, विद्यादि गुणोथी सुशोभित एवी एक कन्या हती के जेने जोवाथी पार्वती, गंगा अने लक्ष्मीदेवीनी प्रतीति थती हती. वळी ते विप्र थकी ए कन्याने उत्पन्न करतां विधाताने पोतानी पुरातन सृष्टि उच्छिष्ट जेवी भासवा लागी. कारण के जेना हस्त, लोचन, अधर अने मुख जोईने तेणे कमळने कादवमां, कुवलयने द्रहना अपार जळमां, बिंबीलताने जंगलमां अने चंद्रमाने आकाशमां नाखी दीधा. ते कन्याने माटे कुळ, रूपादिकथी अद्भुत एवा योग्य वरनी तपास करतां ते न मळवाथी मयूरने भारे खेद थई पड्यो.

एवामां तर्कशास्त्र, व्याकरण, साहित्यशास्त्रमां भारे रसिक, वेदमां प्रवीण, पूर्वे कहेला गुणोथी अलंकृत, वाद करवामां भारे चालाक तथा मन्मथ समान मनोहर आकृतिने धारण करनार **बाण** नामे एक महाविप्र तेना जोवामां आव्यो, तेथी आकाशमां मेघने जोतां जेम मयूर हर्ष पामे, तेम मयूरविप्र भारे हर्ष पाम्यो. पछी तेणे वैभव विना पण तेने पोतानी सुता परणावी. योग्य वरनी प्राप्ति थया छतां पुत्री पिताने दुस्त्यज होय छे. त्यां ते पोताना जमाईने **हर्षदेव** राजा पासे लई गयो. एटले तेणे आशिष आपतां **बाण** अने तेनी पत्नी संतोष पाम्या. पछी राजाए धन धान्यादिसहित तेने अलग आवास आप्यो. त्यां राज सन्मान पामतां ते दंपती आनंदपूर्वक साथे रहेवा लाग्या.

एकदा पोतानी पत्नी साथे बाणनो स्नेह-कलह थयो. कारण के **मरीना चूर्ण विना साकर दुर्जर थाय छे.** आथी मदोन्मत्त बाणपत्नी रूष्ट थईने पोताना पिताने घेर चाली गई. एटले सांजे **बाणकवि** तेने मनावतां कहेवा लाग्या—'हे स्वामिनी! जगतना स्वार्थनो विनाश करवामां शत्रुसमान एवा मानने तुं मूकी दे. कारण के सेवक,

कामुक (कामी) अने परभवना सुखनी इच्छा करनारने मान करवुं योग्य नथी.'

पछी पंडितने घर थकी बहार मोकलीने सखी तेणीने मान तजावववा माटे विविध वचन रचनाथी समजाववा लागी के—'हे सखी! तारो प्राणपति बहार अवनत थईने भूमि कोतरी रह्यो छे, तारी सखीओ सतत रुदन करवाथी सुजेला लोचने आहारनो त्याग करी बेठी छे, तथा पांजरामां रहेला शुकपक्षीओए हसवुं अने रोवुं बधुं मूकी दीधुं छे, छतां तुं आ अवस्थामां हठ लई बेठी छे, माटे हे कठिन हृदयवाळी मानिनी! तुं हवे मान मूकी दे.'

ए प्रमाणे समजाव्या छतां ते न समजी, त्यारे विलक्ष थयेल ते सखी बहार आवीने पंडितने कहेवा लागी के—'आपणे उपानह (मोजडी) मूकीने एना भवनमां प्रवेश करीए.' पछी ते अंदर गया, पण ते तो मौन लईने ज बेठी हती. एवामां लगभग प्रभातनो समय थवा आव्यो. एटले छेवटे विद्वानोने माननीय एवा बाणपंडिते तेने फरीथी समजावतां जणाव्युं के—

गतप्राया रात्रिः कृशतनुशशी शीर्यत इव,
प्रदीपोऽयं निद्रावशमुपगतो घूर्णत इव ।
प्रणामान्तो मानस्तदपि न जहासि क्रुधमहो,
कुचप्रत्यासत्त्या हृदयमपि ते सुभ्रु! कठिनम् ।।१।।

अर्थात् - हे कृशोदरी! रात्रि लगभग खलास थवा आवी छे. चंद्रमा जाणे क्षीण थतो होय तेवो भासे छे. आ दीपक जाणे निद्रावश थयेलानी जेम मंद पडतो जाय छे. मान तो प्रणाम करवा सुधी होय, तथापि तुं कोप तजती नथी. तेथी अहो! स्तननी पासे रहेवाथी हे सुभ्रु! तारुं हृदय पण कठिन बनी गयुं लागे छे.'

एवामां भींतने आंतरे तेनो पिता सुतो हतो, ते जाग्रत थतां उपरोक्त श्लोक सांभळवाथी ते संभ्रांत थईने बोली उठ्यो के—'हे भद्र! **सुभ्रु** शब्दने ठेकाणे तुं **चंडी** शब्दनो उपयोग कर, कारण के ए दृढ कोप करनारीने ते ज शब्द उचित छे.' पिताना मुखथी ए शब्दो सांभळतां लज्जाथी तेणे पोतानुं मुख नमावी दीधुं अने ते चिंतववा लागी के—'अहो! रात्रिनो मारो बधो वृत्तान्त पिताए सांभळी लीधो हशे, माटे मूर्ख अने अविचारीपणे वर्तनारी एवी मने धिक्कार छे.' एम धारी तेने पोतानापर ज तिरस्कार छुट्यो, तथा पितापर तेने भारे क्रोध आव्यो एटले मान मूकीने शंकरपर जेम गंगा अने पार्वती प्रेम राखे, तेम ते पोताना पतिपर स्थिर प्रेम राखवा लागी. वळी तेने विचार आव्यो के—'अहो! मारो पिता सुज्ञशिरोमणि छतां बाल्यावस्थाथी ज शुं ए भ्रांत (भ्रमित) छे? ए मश्कराए आवा अनुचित शब्दो केम उच्चार्या? तेवा पुरुषोने कुलीन एवी पोतानी मात, बहेन के पुत्री सामे आवुं अवाच्य वचन बोलवुं शुं उचित छे? ना, तेम कदि बोलवुं नहि जोईए.' एम धारी कोपना आवेशमां स्पष्टाक्षरे तेणे पिताने श्राप दीधो के—'क्रियाभ्रष्ट, अवज्ञा पामेल अने रसलुब्ध तुं कोढीयो था.' एटले तेणीना शीलप्रभावथी श्वेत अंगे चंद्रक (चांदा) नीकळतां ते प्रथम कलापी अने मयूर हतो अने अत्यारे चंद्रकी (चांदायुक्त कुष्टी अथवा मयूर) थई गयो. पछी बाण पर बहु स्नेह दर्शावती ते पोताना घरे चाली गई. ते वाते पितानुं दुर्वचन तेणीने बोधदायक थई पड्युं.

हवे पोताने सद्य कोढयुक्त जोईने मयूर विप्रने भारे पश्चात्ताप थवा लाग्यो. ते राजसभामां न जतां नीचुं मुख करीने पोताना घरमांज बेसी रह्यो. एम पांच छ दिवस ते राजभवनमां न गयो. एवामां अहीं बाण पण तेना पर क्रोध लावीने तेना घणा दोष प्रकाशवा लाग्यो—'ए मयूर, भोगी (सर्प) ना भोग (शरीर)नो विनाश करवामां एक प्रतिज्ञा करनार, मलिन अंगने धारण करनार, मित्रना समागमे लज्जा-स्थानने प्रगट करनार तथा मयूर समान शरीरे चंद्रकी (चांदावाळो) होवाथी अने चित्रीयुक्त थवाथी ते पापी राजसभामां आववाने लायक नथी.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा कहेवा लाग्यो के—'शुं मयूर कोढथी दूषित थयो छे, ए सत्य वात छे?' एम

आश्चर्य थवाथी राजाए तेने पोताना माणसो मोकलीने बोलाव्यो. एटले पोते स्थाने आववाने ईच्छतो न हतो, छतां राजानी आज्ञाने लीधे वस्त्रादिकथी पोताना शरीरने बराबर आच्छादित करीने ते राजसभामां आव्यो, त्यां मयूरने साक्षात् आवेल जोईने बाण कहेवा लाग्यो के—'शीतथी रक्षण पामवा माटे वस्त्रथी शरीर आच्छादित करीने आवरकोटि (पंडितप्रधान) राजसभामां आव्यो छे.' पछी पोताना घरे आवतां मयूर मनमां दृढ विचार करवा लाग्यो के—'कलंकथी मलिन थयेला पुरुषोने मित्रसभा उचित नथी. बाळमित्रोनी ए सभामां जेओ निःशंक थईने बेसे छे, तेओ भ्रकुटी रूप खड्गथी छेदायेल पोताना मस्तकने केम जाणता नहि होय? वळी वैराग्यथी कदाच देहनो त्याग करुं तो ते पण सज्जनोने उचित नथी. कारण के दुःखो सहन न करी शकवाथी ते स्त्रीओनी जेम एक प्रकारनी कायरता छे, माटे कलानिधान अने प्रभावी एवा कोई पवित्र देवनुं आराधन करुं के जेना प्रभावथी आ देह पुनः नवीन (निरोगी) थाय. **कर्मसाक्षी** सूर्यदेवनी आराधना करुं कारण के एनी आराधना अने विराधना बंने साक्षात् फलवती देखाय छे.' एम धारी छ छेडावाळा एक रज्जुयंत्रनुं (मांची) अवलंबन लईने त्यां बेठो अने पोतानी नीचे खेतरना धगधगता अंगाराथी एक खाडो भर्यो. पछी शार्दूल छंदमां एक एक श्लोक बोलतां छुरी लईने ते एक एक छेडाने कापवा लाग्यो. एम पांच काव्यो बोली ते कुष्टी जेटलामां पोतानो छुट्टो छेडो कापवा जाय छे, तेवामां सूर्ये प्रगट तेजथी आवीने तेने नवीन देहधारी बनावी मूक्यो अने अग्निने तरत बुझावी नाख्यो. पछी एकसो काव्यो बनावीने तेणे सूर्यदेवनी स्तुति करी के जेमांनुं एक काव्य याद करतां पण देवो साक्षात् आवीने हाजर थाय छे. एम सूर्यदेवे संतुष्ट थईने तेनुं शरीर निरोगी बनाव्युं के जे कनक समान दीपतुं अने तरुण थई गयुं. पछी प्रभाते देहने प्रगट बतावतो ते राजसभामां आव्यो. एटले हर्ष राजाए तेने पूछ्युं के—'आ तारुं शरीर नवीन केम थयुं ते कहे.'

त्यारे मयूर कहेवा लाग्यो—'हे देव! में सूर्यदेवनी आरधना करी. तेथी संतुष्ट थईने तेणे मने आजे निरोगी बनाव्यो. कारण के भक्तिने शुं दुष्कर छे?' ते वखते बाणना पक्षना पंडितोने जाणे ईर्ष्या आवी होय, तेम तेओ कंईक कटाक्षथी स्पष्ट श्लोक बोल्या के—

यद्यपि हर्षोत्कर्षं विदधति मधुरा गिरो मयूरस्य ।
बाणविजृम्भणसमये तदपि न परमभागभागिन्यः? ।।१।।

अर्थात् - जो के मयूरनी वाणी हर्षोत्कर्ष उपजावे छे, तथापि बाणना विकास समये ते विशेष उत्कर्षवाळी लागती नथी.'

एम सांभळतां राजा बोल्यो के—'खरेखर! **गुणी एकबीजा पर मत्सर धरावे छे, ए वात सत्य छे.** तमे एना पर पण अदेखाई बतावो छो, तो अमे तमने शुं कहीए? जेणे वैद्यना औषध विना सरल मनथी सूर्यनुं आराधन करतां तेणे भक्तिथी संतुष्ट थईने एने नवुं शरीर आप्युं. एम जेनी वचन रचनाथी सविता पोते परम संतोष पाम्यो. आहारादिकनी मलिनताथी भरेला आपणे मनुष्यो शुं मात्र छीए?'

त्यारे बाणकवि कहेवा लाग्यो के—'हे स्वामिन्! आ तमे पक्षपात जेवुं शुं बोलो छो? ज्यां देवोनो प्रभाव ज प्रगट होय, त्यां एनी प्रशंसा करवी शा कामनी?'

आथी श्री हर्षराजाए जणाव्युं के—'जो शक्ति होय तो एवा प्रकारनो आश्चर्यातिशय अन्य कोई बतावे, एटले तेनी प्रशंसा करवामां कोण पक्ष करे तेम छे?'

ए प्रमाणे राजानुं वचन सांभळतां बाण भारे साहस बतावतो कहेवा लाग्यो के—'मारा हाथ पग छेदीने तमे मने चंडिकादेवीना मंदिर पाछळ मूकी आवो, के जेथी हुं त्यांथी उठीने आवतां तमारा थकी भारेमां भारे प्रशंसा अने सन्मान पामुं.'

एवामां मयूर बोल्यो के—'हे देव! गमे तेम छे, तो पण ते मारा जमाई छे. माटे मारा पर अनुकंपा लावीने

तमे एने एवी स्थितिमां लावशो नहि, कारण के मारी पुत्रीने दुःख थशे. एटलुं ज नहि पण ए व्यंग (शरीरे हीन) नी तेने भारे शुश्रूषा करवी पडशे. वळी हे प्रभो! मने पण जन्मभर भारे कष्ट थई पडशे.'

एम सांभळतां राजा, मयूरपर अद्‌भुत भक्ति धरावतां अने **बाण**पर क्रोध लावतां कहेवा लाग्यो के-'हे पंडित! मारे ए मोटुं आश्चर्य जोवानुं छे, माटे वचनशक्ति धरावनार **बाण**ना कहेवा प्रमाणे तो करवानुं ज छे. पछी जो एने नवा हाथ पग आवशे, तो एनो भारे यश फेलाशे अने जो तेम न थाय, तो वायडी वातोनो भंग थशे. कारण के राजसभामां पोतानी इच्छा प्रमाणे यद्वा तद्वा बोलनारने माटे अवकाश नथी. अथवा तो तुं सूर्यने आराधीने ए पंडितने पण नागने निर्विष करवानी जेम स्वस्थ बनावीने मदरहित करजे.' एम कहीने राजाए ते प्रमाणे कर्युं. एटले **बाण**कवि, अत्यंत श्रवणीय तथा उत्कट शब्दाक्षरथी अद्‌भुत एवा काव्यो बनावतां ते चंडीकादेवीनी स्तुति करवा लाग्यो. तेमां प्रथम श्लोकनो सातमो अक्षर बोलतां देवी साक्षात् आवीने कहेवा लागी के—'हे भद्र! वर माग.'

एटले **बाण**कवि बोल्यो—'मने हाथ पग आप.' एम बोलतां ज तेना अंगोपांग संपूर्ण थतां ते साक्षात् देवसमान देदीप्यमान भासवा लाग्यो. पछी ते महोत्सवपूर्वक राजभवनमां आव्यो. त्यां राजाए **बाण** अने **मयूर** बंनेनो आदर सत्कार कर्यो अने बंनेने सन्मानपूर्वक राख्या.

पछी पूर्वना क्रोधने लीधे ते बंने विवाद करतां कोई रीते निवृत्त थता न हता, त्यारे राजा कहेवा लाग्यो के—'आ बंनेनो निर्णय अहीं थवानो नथी. माटे मूल मूर्तिए रहेल ज्यां सरस्वती देवी छे, त्यां बंने **काश्मीर**मां आवेल **प्रवरपुरमां** जाय, ए देवी ज एमनो जय पराजय प्रगट करशे. कारण के कयो सुज्ञ पुरुष पोताना माथे दोष ले. त्यां जे पराभव पामे, तेना ग्रंथो मारा आंगणे बाळी नाखवा, ए तमारा बंने वच्चे शरत छे.'

ए प्रमाणे करवा माटे ते बंने कबूल थया अने पंडितो तथा राजपुरुषो साथे तेओ सन्मानथी काश्मीर भणी चाली नीकळ्या. मार्गमां अखंडित प्रयाण करतां अल्पकाळमांज सरस्वती अने ब्रह्माथी पवित्र थयेल ते नगरमां आवी पहोंच्या. त्यां ते बंने दुष्कर तप करीने देवीनी आराधना करवा लाग्या, त्यारे देवी संतुष्ट थई.पछी तेमनी परीक्षा करवा माटे देवीए तेमने दूर दूर राखीने एक समस्यापद पूछ्युं, एटले **बाणकवि**ए तरत ज ते पूर्ण कर्युं अने **मयूरे** पण ते ज प्रमाणे अक्षरपंक्ति अर्ध काष्ठाना विलंबथी पूरी करी. तेमां शीघ्र अने विलंबना भेदथी अमुक समयनुं मान राखवामां आव्युं हतुं. एटले शीघ्रताथी **बाण** जय पाम्यो; अने **मयूर** विलंब करवाथी पराजित थयो.

देवीए आ प्रमाणे समस्या पूछी हती—

'शतचन्द्रं नभस्तलम् '

पछी ते बंने पंडितोए आ प्रमाणे पूर्ण करी[1]—

दामोदरकराघात-विह्वलीकृतचेतसा ।
दृष्टं चाणूरमल्लेन शतचन्द्रं नभस्तलम् ।।१।।

अर्थात् - कृष्णना कराघातथी आकुळ व्याकुळ थयेल चाणूरमल्ले आकाशतलमां सेंकडो चंद्रो जोया.

ए प्रमाणे पोताना वादनो निर्णय पामतां ते बंने कवि प्रधानो साथे पाछा पोताना नगरमां आव्या अने राजानी समक्ष आवीने बेठा. त्यां मयूरे पोताना ग्रंथ-पुस्तको खेदपूर्वक लावीने बाळी मूक्या अने ते भस्मीभूत थई गयां. एटले भस्म पण ज्यां सुधी उडी, त्यां सुधी ते श्री सूर्यसंबंधी सो पुस्तकोमां साक्षात् सूर्यनी किरणोथी प्रगट अक्षरो देखाता हता, आथी राजाए बहुमानथी मयूरनो प्रभाव प्रकाशित कर्यो अने ते बंनेने राजा समान मानदृष्टिथी जोवा लाग्यो.

1. भक्तामर टीकानी एक ह. लि. प्रतमां बाणे अलग श्लोक पूर्ति कर्यानुं जणावे छे. ते श्लोक आ प्रमाणे छे.
यस्यामुत्तुंग सौधाग्रविलोल वदनाम्बुजैः विरराज विभावर्यां शतचन्द्रं नभस्तलम् ।।

एवामां एकदा राजाए पोताना अमात्यने कह्युं के—'अहो! दुनीयामां ब्राह्मणोनो ज प्रत्यक्ष अतिशय देखाय छे, बीजा कोई दर्शनमां आवो प्रभाव क्यांय छे ?'

एटले प्रधाने जणाव्युं के—'हे स्वामिन्! जो तमे सांभळो, तो हुं निवेदन करुं. जैन श्वेतांबराचार्य **श्रीमानतुंग** नामे एक विद्वान महाप्रभावसंपन्न छे अने ते हाल आपना नगरमां बिराजमान छे, जो तमारे कौतुक जोवुं होय, तो ते गुरुने तमे अहीं बोलावो, एटले तमारा मनमां जेवुं आश्चर्य हशे, तेवुं ते पूर्ण करशे.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा कहेवा लाग्यो के—'ए सत्पात्रने सन्मानपूर्वक बोलावो. **कारण के तेवा निःस्पृह पुरुषो आगळ राजा शुं मात्र छे?**'

एटले मंत्री त्यां जई, गुरुने नमन करीने कहेवा लाग्यो—'राजा आपने वात्सल्यथी बोलावे छे, माटे पधारो.'

त्यारे गुरु बोल्या—'हे महामंत्रिन्! **अमारे राजानी पासे शुं प्रयोजन छे? परभवना साधक एवा अमो निःस्पृह मुनिओ माटे ते भूमि उचित नथी.**'

आथी मंत्री पुनः बोल्यो—'हे भगवन्! भावनाथी श्रेष्ठ प्रभावना थाय छे. आपने शासननी प्रभावना करवानी छे अने ते राजाने प्रसन्न करवाथी थाय तेम छे.'

आवा प्रकारना मंत्रीना आग्रहथी **श्री मानतुंगसूरि** राजभवनमां आव्या एटले राजाए उभा थईने तेमने सन्मान आप्युं, त्यारे धर्मलाभरूप आशिष आपीने तेओ उचित आसने बेठा.

एवामां राजा कहेवा लाग्यो के—'पृथ्वीपर ब्राह्मणो केवा महाप्रभावी छे के एके सूर्यने आराधीने पोताना शरीरमांथी रोग काढ्यो अने बीजाए चंडिकाने सेवा करीने हाथ पग मेळव्या. तो हे यतिनायक! जो तमारामां कोई अद्‌भुत शक्ति होय, तो अत्यारे कंईक चमत्कार बतावो.'

ए प्रमाणे सांभळतां गुरु बोल्या के—'हे राजन्! अमे गृहस्थ नथी के धन, धान्य, गृह, क्षेत्र, कलत्र, पुत्रादिकने माटे राजाने रीझवीए के लौकिक क्रिया अथवा विद्याने प्राप्त करीए, परंतु अमारे तो शासननो उत्कर्ष करवो, ए अमारी फरज छे.' एम गुरु बोलता हता, तेवामां राजाए आदेश कर्यो के—'एमने पगथी मस्तक पर्यंत निगड (सांकळ) वती बांधो अने निबिड अंधकारमां बेसाडी मूको.' एम राजानो हुकम थतां राजपुरुषोए लोहना यंत्रसमान गुरुने लोखंडनी **चुमाळीश** सांकळोवती बांध्या अने पछी उपाडीने एक तमोव्याप्त ओरडामां बेसाडी, तेना द्वार-कपाट बंध करी दीधा, वळी त्यां जबरदस्त एक लोखंडनुं ताळुं लगावी दीधुं. ए ओरडामां पाताल समान सोयथी भेदाय तेवो अंधकार व्यापी रह्यो हतो.

एटले **श्री मानतुंगआचार्य** एकाग्र मनथी **भक्तामर** स्तोत्रनी रचना करवा लाग्या. जेना चुमाळीश काव्यो बनाव्या प्रत्येक काव्ये एक एक सांकळ-तडाक दईने तुटती गई, एम संपूर्ण स्तोत्रनी रचना पूर्ण थतां बधी सांकळो तुटी गई अने **श्री मानतुंगसूरि** तरत मुक्त थया, पछी द्वार पोतानी मेळे उघडी जतां संयमरक्त तथा सदा गंभीर एवा गुरु शृंखला रहित थतां शोभवा लाग्या, त्यांथी राजसभामां आवीने तेमणे राजाने धर्मलाभरूप आशिष आपी त्यारे प्रभाते पूर्वाचलथी निकळता महातेजस्वी सूर्य समान ते दीपवा लाग्या. आ बधुं आश्चर्य जोतां राजा कहेवा लाग्यो के—'शमभाव पण अद्‌भुत छे अने भक्ति पण असाधारण छे. वळी देव-देवीना आधारविना आवुं अद्‌भुत तेज कोनुं होय? हे भगवन्! आ देश, नगर अने हुं पण धन्य छुं, तथा आ दिवस पण पवित्र छे के ज्यां प्रतिभायुक्त आपनुं वदनकमळ मारा जोवामां आव्युं. हे पवित्रताना धाम! आप मने सुकृतरूप आदेश करो के जेथी आपनो अनुग्रह, जन्मपर्यंत मारुं रक्षण करनार थाय.'

ए प्रमाणे राजानुं वचन सांभळतां आचार्य कहेवा लाग्या के—'अकिंचन (निःपरिग्रह) अमे कोई पण कार्यमां लक्ष्मीनो उपयोग करता नथी, पण गुणना निधानरूप हे राजेंद्र! तुं आ वसुधानुं सुखे राज्य कर तथा परीक्षा

पूर्वक उपद्रव दूर निवारीने तुं जैन धर्मनुं परिपालन कर.'

एटले राजाए जणाव्युं के—'आपना दर्शन विना ज आटलो काळ हुं जैनमार्गनुं सेवन न करी शक्यो, तेथी छेतरायो. अहो! वळी मने एवो गर्व हतो के ब्राह्मणो ज प्रभावशाळी छे के जेमणे देवोने संतुष्ट करीने पोतानो प्रभाव मने बताव्यो परंतु अहंकारथी परस्पर विवाद करतां ते विराम न पाम्या. **जे विद्याथी गर्व वधे, ते विद्या नहि पण एक प्रकारनो मतिभ्रम छे.** जेमनो सर्वोत्कृष्ट प्रभाव छे, अद्‌भुत प्रशम छे तथा असाधारण संतोष छे, तेमनो कहेल धर्म परीक्षा वडे शुद्ध ज होय. माटे हवे हुं आपना उपदेशनो ज स्वीकार करुं छुं. हवेथी कटु द्रव्यनो त्याग करीने स्वादिष्ट द्रव्य ग्रहण करुं छुं, तो आप मने आदेशरूप अमृतथी तृप्त करो.

ए प्रमाणे राजानुं वचन सांभळतां आचार्य महाराज कहेवा लाग्या के—'ह नरेंद्र! **सुपात्र, अनुकंपा अने उचित**-ए त्रण प्रकारना दानमां रुचि कर, जिनचैत्योनो जीर्णोद्धार अने जिनबिंबो करावंजे.'

एवामां मंत्री कहेवा लाग्यो—'हे स्वामिन्! ब्राह्मणोना परिचयथी तमने अज्ञान-मिथ्यात्वरूप काजळ लागेल छे, ते जैनाचार्यना आदेशरूप क्षीरथी ज धोवाई जशे.'

ए प्रमाणे सद्‌गतिना प्रदेश समान धर्मोपदेश आपीने आचार्य महाराज पोताना स्थाने चाल्या गया. आ वखते तेमणे सर्व उपद्रवोनो नाश करनार जे **भक्तामर** स्तोत्र बनाव्युं, ते अद्यापि भूतलपर प्रख्यात छे.

हवे कोईवार कर्मनी विचित्रताथी तेमने उन्माद-रोग थई आव्यो. कारण के शलाकापुरुषो पण कर्मथी संडोवाया छे. एटले तेमणे **धरणेंद्र**नुं स्मरण करी, तेने अनशन माटे पूछ्युं. त्यारे **धरणेंद्र** बोल्यो—'हे भगवन्! अद्यापि आपनुं आयुष्य बाकी छे, तो ते क्षीण केम थई शके? कारण के आप जेवानुं आयुष्य अनेक प्राणीओने उपकारकरूप थाय छे.' एम कहीने **इंद्रे तेमने अढार अक्षरनो मंत्र आप्यो**, के जेना स्मृति-जळथी नव प्रकारना रोगो नष्ट थाय. पछी धरणेंद्र पाताळमां चाल्यो गयो.

पछी **श्री मानतुंगसूरि**ए ते मंत्राक्षरो अनुसारे **भयहर**[1] स्तवन बनाव्युं के जे अद्यापि प्रवर्तमान छे. ते मंत्रना प्रभावथी श्री गुरु महाराजनो देह हेमंतऋतुना कमळनी शोभा समान थई गयो, कारण के अद्‌भुत तेजना निधान एवा तेमने एवुं शुं दुर्लभ होय? जे पुरुष सवारे अने सांजे शुभ भावथी ए स्तवन भणे तेना विविध उपसर्गो बधा दूर थाय छे.

ए प्रमाणे **श्री मानतुंग आचार्ये** अनेक प्रकारे जिनशासननो उद्योत करी, सन्मति शिष्यो उपजावी, गुणना निधान एवा **गुणाकर** नामना एक शिष्यने पोताना पदे स्थापी, प्रांते अनशन लईने स्वर्गे गया.

ए रीते स्थिरता उपजावनार जैनधर्मरूप प्रासादना स्तंभरूप तथा सुकृतरूप महापट्ट (तंबु) ना अवष्टंभरूप एवुं **श्री मानतुंग** प्रभुनुं चरित्र, में क्यांकथी सांभळी तेम ज संप्रदायथकी मेळवीने अहीं कंईक कही बताव्युं. तेमां कंई न्यूनता के स्खलना रही गई होय, तो बुद्धिप्रधान पंडितोए हास्य न करतां ते सुधारी लेवा कृपा करवी.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना विचारपर लेतां **श्री प्रद्युम्नसूरि**ए शोधेल श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री मानतुंगसूरि**ना अद्‌भुत चरित्ररूप आ बारमुं शिखर थयुं.

इति श्री मानतुंगसूरि-प्रबंध

1. नमिउणथी प्रारंभ थतुं आ स्तवन नवस्मरणमांनुं एक गणाय छे.

१३. श्री मानदेवसूरि-प्रबंध

श्री मानदेव प्रभुनो प्रभावरूप सागर कंई नवीन ज छे के सदा जेना क्रम (चरण) ने सेवनार **जया** अने **विजया** देवी संपत्ति आपे छे. जेमना चरण-कमळना गुणने अनुसरवाथी हंसो (मुनिओ) निवृत्तिरूप मनोहर गतिने पाम्या एवा **श्री मानदेव** प्रभु तमारुं कल्याण करो. तेमना चरित्ररूप सिंधुथकी कंईक एक भाग धारीने व्याख्यानरूप पुण्यना विस्तारथी हुं मारी मूढताथी मुक्त थईश.

धर्म-कर्मना निवासरूप **सप्तशति** नामे देश छे के ज्यां दानेश्वरोना भयथी हस्तीओ राजाना शरणे गया. त्या उन्नत जनोना आश्रयरूप **कोरंटक** नामे नगर छे के ज्यां विनतानंदन (सज्जनोने आनंद पमाडनार अथवा गरुड) जनो द्विजिह्व (दुर्जन अथवा सर्प)थी सदा विमुख हता. वळी त्यां शासननी दृढ मर्यादा बतावनार एवुं **श्री महावीर चैत्य** हतुं के जे सर्व जनोना आश्रयरूप होवाथी **कैलास** पर्वत समान शोभतुं हतुं, त्यां विद्वानोना मुगट समान अने लोकोना अंधकार (अज्ञान) ने दूर करनार एवा **श्री देवचंद्र** नामे उपाध्याय हता.

एकदा जगतने नमस्कार करवा लायक एवी दुष्कर तपस्या आचरता, अंतरंग शत्रुओनो विजय करवामां समर्थ, संसारथी अलग रहेला तथा सर्वज्ञ प्रभुना सद्ध्याननी सिद्धिने धारण करता एवा **सर्वदेवसूरि**, वाराणसीथी सिद्धक्षेत्रे जवानी इच्छाथी पोताना बहुश्रुत शिष्योना परिवार सहित त्यां पधार्या. पछी केटलाक दिवस त्यां रहेतां **श्री देवचंद्र** उपाध्यायने प्रतिबोध पमाडीने तेमणे **चैत्य**-व्यवहार मूकाव्यो एटले ते पारमार्थिक बार प्रकारनुं तीव्र तप तपवा लाग्या. आथी आचार्य महाराजे तेमने सूरिपदपर स्थापन कर्या अने तेओ **श्रीदेवसूरि** एवा नामथी प्रख्यात थया, के जे अद्यपि वृद्धो पासेथी **वृद्धदेवसूरि** एवुं विख्यात नाम सांभळवामां आवे छे. पछी श्री सर्वदेवसूरिए **शत्रुंजय** तीर्थपर श्री युगादीश प्रभुनुं ध्यान लगावीने आत्मसाधन कर्युं.

हवे **श्रीमान् देवसूरि**ए निरतिचार चारित्र पाळतां **श्री प्रद्योतनमुनि**ने आचार्य पदे स्थापन कर्या अने पोते सदा संयमने आराधतां प्रांते अनशन आदरी सम्यग् आराधनापूर्वक काळ करीने स्वर्गलक्ष्मीना भोक्ता थया.

पछी **श्री प्रद्योतन मुनीश्वर नड्डूल** गाममां विहार कर्यो. कारण के पृथ्वीपर तेमनो अवतार परोपकार करवा माटे ज हतो. ते गाममां **श्री जिनदत्त** नामे एक प्रख्यात धनवान श्रेष्ठी रहेतो हतो के जेनुं मन, मान अने दानमां सर्वने माटे एकसरखुं हतुं. धर्ममां अचल श्रद्धा धरावनार **धारिणी** नामे ते शेठनी पत्नी हती के जे अर्थ अने काम ए पुरुषार्थमां व्यवहारमात्रथी वर्तती हती. तेमनो **मानदेव** नामे पुत्र के जे मानी अने असाधारण कांतिवाळो हतो, वळी जेनुं अंतर वैराग्यथी रंगित हतुं अने जे आंतर शत्रुओथी अजेय हतो.

एकदा **मानदेव श्री प्रद्योतनसूरि**ना उपाश्रये गयो, एटले तेमणे तेने भवसागरमां नाव समान एवो धर्म कही संभळाव्यो. जे सांभळतां संसारनी असारता जाणीने **मानदेवे** गुरुमहाराजने विनंती करे के—'हे भगवन्! मारापर प्रसाद लावीने मने प्रव्रज्या आपो.' पछी तेणे भारे आग्रहथी मातापितानी अनुमति मेळवीने शुभ दिवसे दीक्षा

अंगीकार करी अने ते उग्रतप आचरवा लाग्या. पछी अगियार अंगनो अभ्यास करी ते छेद अने मूल सूत्रमां निष्णात थया, तेमज उपांगमां पण कुशळ थवाथी ते बहुश्रुत थया. एवामां एकदा गुरुमहाराजे **श्रीमानदेवमुनि**ने योग्य जाणीने **चंद्रगच्छरूप** सागरने उल्लसित करवामां चंद्रमा समान एवा तेमने आचार्यपदना अधिकारी बनाव्या.[1] एटले ते वखते **श्री मानदेवसूरि**ना ब्रह्मचर्यना प्रभावथी **जया** अने **विजया** नामे बे देवीओ प्रतिदिन तेमने प्रणाम करवाने आवती हती. ए प्रमाणे भारे प्रभावशाळी अने शासनना प्रभावक एवा **श्रीमानदेवसूरि** संघरूप गगनांगणे उद्योत करवामां सूर्यसमान शोभवा लाग्या.

एवामां धर्मक्षेत्ररूप अने पांचसें चैत्योयुक्त एवी **तक्षशिला** नगरीमां लोकोने भारे मारीनो उपद्रव थवा लाग्यो. एटले रोगोथी उपद्रव पामता लोको अकाळे मरण पामवा लाग्या के ज्यां वैद्य के औषध कंई पण गुण करवाने समर्थ न थया. त्यां जागरण करतां जे शरीरे ग्लानि पामतो, ते घरे आवतां तरत ज रोगग्रस्त थईने पथारीपर पडतो हतो. वळी ते समये कोईकोईनो स्वजन न रह्यो. ए प्रमाणे उपद्रव थतां आक्रंद अने भयंकर कल्पांत-शब्दथी ते समस्त नगरी रौद्ररूप थई पडी. त्यां बाह्यभूमिमां हजारो चिताओ अने अर्धदग्ध शबोनी भयंकर श्रेणिओ जोवामां आवती हती. ते वखते गीध पक्षीओ अने राक्षसोने साक्षात् मांसनुं सुभिक्ष थई पड्युं. वळी लंकानी जेम ते नगरी शून्य थवा लागी तथा पूजारीओ विना बधा देवोनी पूजा अटकी पडी. तेमज घरो बधा शब समूहथी दुर्गंध मारवा लाग्या.

एवामां सुरक्षित रहेल केटलाक श्रावको चैत्यमां एकठा थईने विचार करवा लाग्या के—'अरे! आ शुं आजे ज कल्पांतकाळ आव्यो? आजे संघना अभाग्ये **कपर्दी, अंबादेवी, ब्रह्मशांति, यक्षराज** के **विद्यादेवी** पण क्यां अदृश्य थई गया. कारण के भाग्योदय वखते ज बधा देव-देवीओ साक्षात् हाजर थाय छे, ए वात स्पष्ट लागे छे. अत्यारे तो ए बधा अवश्य क्यांक चाल्या गया छे.' ए प्रमाणे तेओ निराश थईने बेठा, एवामां शासनदेवी आवीने श्री संघने कहेवा लागी के—'तमे आम संताप शा माटे पामो छो? म्लेच्छोना प्रचंड व्यंतरोए बधा देव देवीओने दूर करी दीधा छे, तो कहो, अमाराथी अहीं शुं थई शके? वळी आज पछी त्रीजे वर्षे तुर्कीओना हाथे अहीं भंग थशे. एम सम्यक् समजीने तमने उचित लागे तेम करवुं; परंतु एक उपाय हुं तमने बतावुं, ते सावधान थईने सांभळो के जेथी श्री संघनी रक्षा थाय. पछी उपद्रव शांत थतां आ नगर मूकीने मारा वचनथी तमारे अन्य अन्य नगरमां चाल्या जवुं.'

एम सांभळतां श्रावको कंईक आश्वासन पाम्या अने पुनः कहेवा लाग्या के—'हे महादेवी! अमने एवो उपाय बताव, के जेथी अमारी रक्षा थई शके.'

त्यारे शासनदेवी कहेवा लागी के—'नड्डूल गाममां **श्रीमान् मानदेवसूरि** गुरु छे, तेमने लावीने तेमना पगधोवण जळथी मकानोने सिंचन करो, तो उपद्रव शांत थाय.' एम कहीने ते देवी अदृश्य थई गई.

पछी श्रावकोए एकमत थईने **वीरदत्त** नामना श्रावकने नड्डूल नगरमां मोकल्यो, एटले ते विनंतीपत्र

1. श्री देवविमल गणि विरचित 'श्री मन्महावीर पट्टधर परंपरा' श्लोक ७२-७३ प्रमाणे आचार्य पद प्रदान प्रसंगे मानदेवमुनिना खभा उपर साक्षात् सरस्वती अने लक्ष्मीने बेठेल जोईने गुरु म-ने संशय थयो के आनुं पतन तो नहिं थाय ने? गुरु म. नो संशय टाळवा ते ज वखते तेओए आ जीवन छ विगईनो त्याग कर्यो. (जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. ३५६) मुजब भक्त-जनोना आहारनो पण त्याग कर्यो.

लईने सत्वर त्यां गयो; **निस्सीहि** पूर्वक उपाश्रयमां दाखल थयो. ते वखते आचार्य मध्याह्नकाळे अंदरना ओरडामां हता; पर्यंकासन लगावी, नासिकाना अग्र भागपर दृष्टि स्थापी, सुख दुःख, तृण मणि के माटी मणिमां समानता धरावनार एवा गुरु ब्रह्मज्ञानना साधनरूप शुभ स्थाने बिराजमान हता. आ वखते **जया** अने **विजया** नामे देवीओ तेमने प्रणाम करवाने आवी हती अने ते एक खूणामां बेठी हती. तेमने जोतां सरल स्वभावी, अज्ञानात्मा अने चिंताने लीधे बुद्धिहीन बनेल **वीरदत्त** विचारवा लाग्यो के—'अहो! ते शासनदेवीए अमने बराबर छेतर्या अने मने आटले दूर मोकलीने क्लेश पमाड्यो. आ राजर्षि आचार्य तो दिवसे दिव्यांगना पासे बेठा छे. अहो! एनुं चारित्र एनाथी तो उपद्रव अवश्य शांत थशे! वळी मने आवेल जोईने तेमणे आ कपट ध्यान धारण कर्युं. आवुं कोण समजी न शके? माटे अत्यारे तो बहार बेसी रहुं.' एम धारीने वीरदत्त बहार बेसी रह्यो.

पछी गुरुए ध्यान पारतां ऋजु एवो ते मुठ वाळीने द्वारमां पेठो अने अवज्ञापूर्वक गुरुने नम्यो. त्यां देवीओए ईंगिताकारथी तेनी अयोग्यता जाणी, तेणे जमीन पर पाडीने अदृष्ट बंधनथी बांधी लीधो. आथी ते ऊँचेथी आक्रंद करवा लाग्यो. जेथी अनुकंपा लावी गुरु महाराजे तेनुं अज्ञान प्रकाशीने तेने बंधनथी मुक्त कराव्यो.

एटले देवी कहेवा लागी के—'हे महापापी! क्रियाधम! श्रापयोग्य! चारित्रधारी **श्री मानदेवप्रभु**ने माटे तुं आवो विकल्प करे छे, माटे तुं धूर्त्त श्रावक छे. मनुष्य अने देवताना लक्षण जाणवामां हे अज्ञान शिरोमणि! जो, अमारी दृष्टि निमेषरहित छे, चरण पृथ्वीने अडता नथी तथा पुष्पमाळा म्लान थती नथी, तेथी अमे देवीओ छीए, ते तुं जाणी शकतो नथी? पहेलां ज एक मुष्टिघातमां तने यमधाममां पहोंचाडी दीधो होत, पण श्रद्धाळु श्रावकना दंभथी मने पण तें छेतरी. गुरुना आदेशथी ज तुं अत्यारे जीववा पाम्यो छे. पण हे पातकी! तुं अहीं शा माटे आव्यो छे? आ लोकमां बांधी मुठी लक्ष (लाख)नी ए कहेवत प्रमाणे तुं बद्धमुष्टि जेम आव्यो, तेवो ने तेवो पाछो चाल्यो जा.'

त्यारे **वीरदत्त** बोल्यो—'हे देवीओ! सांभळो, मने श्री संघे शासनदेवीना उपदेशथी **तक्षशिला** नगरी थकी उपद्रवनी शांतिने माटे **आ.श्री मानदेव प्रभु**ने अहीं बोलववा माटे मोकल्यो छे, पण मारी मूर्खताथी मने ज अहीं उपद्रव नड्यो.'

एवामां **विजयादेवी** कहेवा लागी के—'त्यां उपद्रव केम न होय के ज्यां तारा जेवा श्रावको शासनना छिद्र जोता होय. हे पामर! तुं आ गुरुना प्रभावने जाणतो नथी. एमना सत्त्वथी मेघ वरसे छे अने धान्य निष्पन्न थाय छे. **श्रीशांतिनाथ** प्रभुनी सेवा करनारी शांतिदेवी पोतानी बे मूर्ति बनावीने अमारा मिषथी एमने वंदन करे छे, तो हुं शुं एवी मूर्ख छुं के तारा जेवा एक श्रावकनी साथे गुरु महाराजने संतोषथी मोकलुं? त्यां तारा जेवा उत्तम धर्मी श्रावको घणा हशे, तो त्यां मोकलतां ए गुरु पुनः अहीं शी रीते आवी शके?'

पछी गुरु महाराज कहेवा लाग्या के—'अमारे श्री संघनो आदेश तो प्रमाण ज छे. माटे अहीं रहेतां ज ते उपद्रवने शांत करवा अमे प्रयत्न करीशुं. माटे अहींना संघनी अनुज्ञा विना अमाराथी त्यां आवी शकाय तेम नथी. अहींना संघमां आ बे देवीओ मुख्य छे अने तेमनी त्यां आववा माटे अनुमति नथी. माटे पूर्वे कमठे प्रकाशित करेल अने अत्यारे आ देवीओए बतावेल **श्री पार्श्वप्रभु**नो श्रेष्ठ मंत्र छे. सर्व उपद्रवने अटकावनार ते मंत्रथी संयुक्त तथा **श्री शांतिनाथ** तथा **पार्श्वनाथ**ना स्मरणथी पवित्र थयेल एवुं **श्री शांतिस्तव** नामनुं श्रेष्ठ स्तवन लईने तुं स्वस्थ

थई पोताना स्थाने जा. एनाथी अशिवउपद्रव शांत थई जशे.

ए प्रमाणे **गुरु**ना आदेशथी **वीरदत्त** ते स्तवन लईने प्रमोदपूर्वक **तक्षशिला**मां आव्यो अने ते तेणे श्रीसंघने अर्पण कर्युं. एटले आबालगोपाल ते स्तवन हर्षथी भणतां, केटलेक दिवसे उपद्रव शांत थई गयो. त्यारे लोको पोतानी इच्छा प्रमाणे अन्यत्र चाल्या गया. पछी त्रण वर्ष जतां तुर्कोओए ते महानगरीने भांगी नाखी. त्यां अद्यापि पीतळ अने पाषाणना बिंबो भोंयरामां छे, एम वृद्ध जनो कहे छे.

त्यारथी श्री संघना क्षुद्र उपद्रवनो नाशकरनार, अद्‌भुत **शांतिस्तव** अद्यापि प्रवर्त्तमान छे.[1] मुख्य मंत्रोमां तेनो मंत्र प्रसिद्ध छे अने ते आराधवाथी चिंतामणिनी जेम ईष्ट सिद्धिने आपे छे.

हवे **आ.श्री मानदेवसूरि** शासननी अनेक रीते प्रभावना करी, पोताना पट्टपर योग्य शिष्यने स्थापी जिनकल्प सदृश संलेखना करी प्रांते शुभ ध्यानमां मृत्यु पामतां ते स्वर्गे गया.

ए प्रमाणे मारा जेवाने चित्तनी स्थिरता आपनार **आ. श्री मानदेवप्रभु**नुं चरित्र ते विविध पदार्थमां आसक्त बनेला संसारीजनोने विद्याभ्यास तथा एकाग्र ध्यान तेमज वासनाना उच्छेद निमित्ते थाओ.

आ.श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे हंससमान, तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना मनपर लेतां, **आ.श्री प्रद्युम्नाचार्ये** संशोधन करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्रीमानदेवसूरि**ना चरित्ररूप आ तेरमुं शिखर थयुं.

कविओना प्रयोजनरूप काव्य विषयमां विचक्षण, महामति अने सर्वज्ञना ध्यानथी जाणे तन्मयता पाम्या होय एवा **आ.श्री प्रद्युम्न मुनीश्वर** जयवंत वर्ते छे.

इति श्री मानदेवसूरि-प्रबंध

विमलता, निर्मलता, विशुद्धता, निर्दंभता, सरलता
आदि गुण प्रत्येक आत्मा को प्रिय लगते है पर वे दूसरे में हो तो
मैं ऐसे गुणों को अपनाने के लिए कितना प्रयत्नशील हूँ,
ऐसे विचार करने वाले विचारक आत्मा कितने?
ऐसे गुणो को प्रसंग आने पर अमल में रखने वाले कितने?
यह इस युग का विचारणीय प्रश्न है ?

जयानंद

1. आजे ते 'लघुशांति' तरीके जाणीतुं छे. त्रिपुटी महाराज उमेरे छे के—आ सिवाय सूरिजीए व्यंतरना उपद्रव निवारवा माटे 'तिजय पहुत्त स्तोत्र बनाव्युं.' (जैन परंपरानो ईतिहास भा. १ पृ. ३६१)

१४. श्री सिद्धर्षिसूरि-प्रबंध

असाधारण तेजस्वी एवा **श्री सिद्धर्षि** तमने संपत्ति आपो के जेमना बनावेला ग्रंथो अत्यारे पृथ्वीपर मुनिओने मिल्कतरूप थई पड्या छे. **श्री सिद्धर्षिप्रभुनी** परिपक्व वाणी तमारुं रक्षण करो के जेनी उपासना करवाथी अनादि-अज्ञानना संस्कार भेदाय छे. भावनाथी भव्य एवो **सुप्रभ** जेमनो पूर्वज हतो अने सौभाग्यशाळी **श्रीमाघ** कवीश्वर जेमनो बंधु हतो. आ अखिल कलुषताने वारनार तथा राजाओने चमत्कार उपजावनार एवुं ते **श्रीसिद्धर्षिप्रभुनुं** चरित्र हुं कहीश के जे अज्ञानने हठावनार छे.

अखंड **लक्ष्मी**ना धामरूप एवो **गुर्जर** नामे देश छे के ज्यां वरिष्ठ वेषने लीधे वृद्धजनोनी जरा वर्त्ताती नथी अने सज्ज थई आवेला अन्य क्षत्रियोने जे दुर्जय छे. त्यां महीमहिलाना मुख समान **श्रीमाल** नामे नगर छे के ज्यां चैत्योना शिखरोपर रहेल कळशो मुगटनी शोभाने पण धारण करे छे. वळी ज्यां प्रासादो मत्तवारण (चोतरफ फरती दिवाल)थी विराजित देखाता हता अने राजमार्गो मत्तावरण (मदोन्मत्त हस्तीओ) थी शोभता हता. तथा ज्यां जिनालयो नूतन धूपथी व्याप्त हता अने निःसंग महर्षिओ ज्यां स्वजनोना संग-परिचयथी विमुख हता. त्यां **श्रीवर्मलात** नामे राजा हतो के जेणे पोताना हस्ती अने अश्वसैन्यथी शत्रुओने दूर हांकी काढ्या हता तथा विरोधीओना मर्म भेदवामां जे समर्थ हतो. ते राजानो **सुप्रभदेव** नामे मंत्री के जे जगतमां मित्ररूप राज्यनो सर्व कारभार चलावनार अने दुर्जनोने दबावनार हतो. वळी जे मंत्रीनी नीति-रीति जोई **देवार्य** (गुरु) तथा **उशनस** (शुक्र) बंने तप करवाने विष्णुपदनुं अवलंबन करी रह्या हता. तेना सदाचारी **दत्त** अने **शुभंकर** नामे बे पुत्रो के जे स्कंधनी जेम सर्वभार उपाडवाने समर्थ हता. तेमां **दत्त** सेवको प्रत्ये उदारता बतावनार, धर्ममां प्रेम धरावनार, अधर्मथी विराम पामनार तथा शोभामां इंद्र समान हतो. अगणित धनने सूचवनार कोटिध्वजनी जाळमां स्थित रहेल लक्ष्मी, जाणे जळमां जन्म पामवाथी कंटाळो पामी होय तेम तेमना घरथकी बहार जती न हती. ते **दत्त**नो **श्रीमाघ** नामे पुत्र हतो, के जे भोज राजानो बाळमित्र, महापंडित, सरस्वतीनुं प्रसादपात्र अने शीलवडे चंदन समान हतो. वळी आजकालना लोकोने श्रेष्ठ सारस्वत-मंत्र समान **शिशुपालवध** काव्य एज जेनी शाश्वत प्रशस्ति छे. के जेना काव्यरूप गंगातरंगोना बिंदुओ चित्तनी जडताने हरनारा छे. निर्दोष बुद्धिवाळो ते **श्रीमाघ** कोने श्लाघ्य अने प्रशंसनीय न हतो!

तेमज **श्री शुभंकर** श्रेष्ठी समस्त लोकोने प्रियंकर हतो के जेना दाननी अद्‌भुत प्रशंसाथी इंद्र पण आनंद पाम्यो हतो. कृष्णने लक्ष्मीनी जेम तेनी **लक्ष्मी** नामे पत्नी हती के जेणे विश्वविख्यात सीतादिक सतीओने सत्य करी बतावी हती. पुत्रोमां मुगट समान अर्थीं जनोने इच्छित दान आपवाथी **कल्पवृक्ष** समान एवो **सिद्ध** नामे तेमनो पुत्र हतो. पिताए तेने एक **धन्या** नामे कुलीन कन्या परणावी हती. तेनी साथे ते दोगुंदक देवनी जेम विषय सुखमां काळ निर्गमन करतो हतो.

एकदा सिद्धने जुगारनुं व्यसन लागु पड्युं, जेथी ते स्त्रीना संगथी विमुख थतो गयो. कारणके विद्वानोने पण कर्म दुर्जय होय छे. आथी तेने मातपिता, गुरु, स्नेहाळ बंधुओ तथा मित्रोए अटकाव्यो, तो पण ते जुगारथी निवृत्त न थयो. कारण के **व्यसनथी मुक्त थवुं मुश्केल छे**. एम प्रगट रीते जुगारनुं व्यसन वधी जवाथी ते निरंतर

जुगारीओने पराधीन थवा लाग्यो. अने तेथी सदाचारथी भ्रष्ट थयो. क्षुधा लागतां ते भोजन करवा आवतो पण योगीनी जेम तेमां लीन थवाथी ते शीत तापनी दरकार करतो न हतो, वळी गुरुवचनथी (वडीलोना उपदेशथी) तेने भारे कंटाळो आववा लाग्यो. अर्धरात्रि व्यतीत थया पछी ते पोताना घरे आवतो अने त्यां सुधी तेनी स्त्री एकली रोज राह जोईने बेसी रहेती हती.

एकदा रात्रिजागरणने लीधे तेना शरीरे आळस थतां गृहकार्योमां ते वारंवार स्खलना पामवा लागी जेथी ते—'आवा प्रकारना ज्ञातिसंबंधने वश थवाथी कर्कश वचन सांभळवा पडे छे' एम मनमां दुःख लागतां आंसु सारवा लागी एटले सासु तेने गद्‌गद् गिराथी कहेवा लागी के—'हुं विद्यमान छतां तने कोण पराभव पमाडी शके तेम छे? माटे तुं पोते तारा कुविकल्पने लीधे गृहकार्यमां आळसु थई गई लागे छे. वळी तारो ससरो पण राजभवनमांथी व्यग्र थईने जो आवशे अने पूजादिकनी सामग्री तैयार नहि होय, तो ते मारा पर गुस्से थशे. माटे तुं मने साचेसाचुं कही दे के जेथी तारुं दुःख टाळवानो हुं सत्वर प्रतीकार करुं.

त्यारे ते बोली के—'सासुजी! कंई नथी.'

आथी सासु पुनः वधारे आग्रहथी पूछवा लागी. एटले तेणे सत्य वात निवेदन करतां जणाव्युं के—'हुं शुं करुं? तमारा पुत्र अर्धरात्रि वीत्या पछी आवे छे.'

एटले सासु बोली—'ए वात ते प्रथम मने केम न जणावी? हवे कर्कश अने प्रिय वचनथी हुं मारा पुत्रने पोते समजावीश. हे वत्से! तुं आजे निश्चिंत थईने सुई जजे; अने हुं जागरण करीश. एटले हुं बधुं समाधान करी दईश. हवे तारे ए बाबतमां काळजी न करवी. ए प्रमाणे सासुनी भलामणथी वहु रात्रे सुई गई अने लक्ष्मी पोते घरना द्वार पर जागती बेठी. एवामां रात्रिना छेल्ला पहोरे **सिद्ध** आव्यो अने द्वार उघाडो' एम मोटे सादे जेटलामां कहेवा लाग्यो, तेवामां माता स्पष्ट शब्दमां बोली के—'आटली मोडी रात्रे आवनार ए कोण?'

त्यारे ते बोल्यो—'ए तो हुं **सिद्ध** छुं.'

एटले लक्ष्मी कृत्रिम क्रोध बतावती बोली—'आम विना अवसरे बहार फरनार सिद्धने हुं जाणती नथी.'

एम सांभळतां **सिद्ध** बोल्यो—'तो हवे अत्यारे हुं क्यां जाउं?'

त्यारे **लक्ष्मी**ए विचार कर्यो के—'अत्यारे एने कर्कश वचन संभळावीश तो बीजी वार ए शीघ्र आवशे' एम धारीने ते बोली के—'आटली मोडी राते ज्यां द्वार उघाडुं जोवामां आवे त्यां जा; शुं आखी रात द्वार उघाडीने बेसी रहेवाय?' एटले 'भले एम करीश' ए प्रमाणे बोलतां त्यांथी **सिद्ध** चाली नीकळ्यो अने खुल्ला द्वारनी तपास करतां ते साधुओना उपाश्रय आगळ पहोंच्यो. **त्यां धर्मशाळामां सदाय द्वार उघाडुं ज रहेतुं**, एटले ते उपाश्रयमां दाखल थयो. त्यां जतां तेणे केटलाक मुनिओने विविध प्रवृत्तिमां तत्पर थयेला जोया. पुण्यहीन जनोने दुर्लभ एवा केटलाक मुनिओ विविध क्रिया करता हता, केटलाक जागता गुरु पासे उत्साहथी ए रात्रीनो काल निवेदन करता हता, केटलाक स्वाध्यायमां लीन हता, केटलाक उत्कटिक आसने अने केटलाक गोदोहिक आसने तेमज केटलाक वीर-आसने बेठा हता. तेमने जोतां **सिद्ध** चिंतववा लाग्यो के—'समसुधाना झरणामां देवताओनी जेम आ मुनिओ सारी रीते स्नान करवाथी शीतल थई गया छे अने ए मुमुक्षुओ तृष्णाथी भय पाम्या लागे छे. मारा जेवा व्यसनमां आसक्त अने स्वगुरुने विषे पण भक्ति न धरावनार के जेना मनोरथ रूप वृक्षो विपरीत फळ आपनाराज थाय छे. आ लोकमां अपयश अने परलोकमां दुर्गति आपनार एवा आ जन्मने धिक्कार छे, छतां भाग्ययोगे आ शुभ अवसर मळ्यो के आ महात्माओ दृष्टिगोचर थया. एमनुं दर्शन थवाथी क्रोधायमान माताए पण मारा पर एक रीते उपकार कर्यो. कारण के **'गरम क्षीर पण पित्तनो नाश करे छे.'** एम चिंतवतां **सिद्धे** तेमने नमस्कार कर्यो अने आगळ आवीने बेठो, एटले धर्मलाभ रूप आशिष आपतां गुरु महाराज कहेवा लाग्या के—'तमे कोण छो?' त्यारे ते

साहसी प्रगट रीते बोल्यो के—'शुभंकर श्रेष्ठीनो हुं पुत्र छुं. माताए जुगारथी अटकावतां मने कह्युं के—'आटली मोडी राते तुं ज्यां द्वार उघाडेल होय त्यां चाल्यो जा. आटली वाचना (सूचना) आपता हुं अहीं उघडेल द्वार जोवाथी आवी चड्यो. माटे हवेथी आपना चरणनुं मने शरण थाओ. कारण के **नाव मळतां महासागरथी पार पामवानी कोण इच्छा न करे?'**

एटले श्रुतमां उपयोग आपतां तेनी योग्यताथी मनमां संतुष्ट थतां गुरु तेने भावी प्रभावक जाणीने कहेवा लाग्या के—'**अमारो वेष लीधा विना अमारी पासे रही ज न शकाय,** पण ते स्वेच्छाए चालनार तारा जेवा माटे दुर्ग्राह्य छे. वळी **कायर पुरुषोने दुष्कर एवुं घोर ब्रह्मवत धारण करवानुं होय छे, वळी कापोतिका अने समुदाना वृत्ति धारवानी होय छे, तेम सर्वांगे व्यथा करनार केशलोच पण दारुण होय छे. वेळुना कोळीयानी माफक आ संयम स्वादरहित होय छे. गामना कंटक समान नीचजनोना ऊँचा नीचा आक्रोश-वचनो सहन करवां ते दांतथी लोढाना चणा चाववा बराबर छे, तथा छट्ठ, अट्ठम वगेरे उग्र तपश्चरण करवुं ते पण भारे दुष्कर छे. वळी पारणामां स्वादिष्ट के नीरस वस्तु प्राप्त थया छतां रागद्वेष न करवा, ए बधुं आचरवुं तारा जेवाने माटे दुष्कर छे.'**

ए प्रमाणे सांभळतां **सिद्ध** कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! व्यसनमां पडेला मारा जेवा पुरुषो कान, ओष्ठ, नासिका, बाहु अने पगनो छेद पामे छे. वळी क्षुधाथी व्याकुळ थतां ते भिक्षा के चौर्यवृत्तिथी गुजरान चलावे छे, शय्यास्थान तो तेमने मळतुं पण नथी अने पोताना स्वजनोथी ते पराभव पामे छे. हे नाथ! ते अवस्था करतां शुं संयम दुष्कर छे? एतो जगतने वंदनीय छे, माटे मारा शिरे आप हाथ स्थापन करो.'

त्यारे गुरु बोल्या—'हे भद्र! अमे अदत्त लेता नथी. माटे एक दिवस धीरज राख, के जेथी ए वात अमे तारा स्वजनोने जणावीए; एटले—'आपनो आदेश प्रमाण छे' एम कहीने **सिद्ध** त्यां रह्यो. ए योग्य शिष्यना लाभथी आचार्यमहाराजने परम हर्ष थयो.

हवे अहीं प्रभाते **शुभंकर** श्रेष्ठीए पुत्रने बोलाव्यो, पण जवाब न मळ्यो. तेथी संभ्रांत थईने तेणे जोयुं, तो पोतानी पत्नी नीचुं मुख करीने बेठी हती. एटले तेणे तेने पूछ्युं के—'आजरात्रे **सिद्ध** केम आव्यो नथी?'

त्यारे लज्जाथी मुख नमावीने ते बोली के—'ए जुगारी पुत्रने शिखामण आपवा जतां ते चाल्यो गयो. आथी श्रेष्ठीए विचार कर्यो के—'अहो! स्त्रीओनी बुद्धि खरेखर! अल्प होय छे. **व्यसनी पुरुष कर्कश वचनथी नहि, पण हळवे हळवे समजावी शकाय.**' पछी तेणे पत्नीने सहेज ठपको आपतां कह्युं के—'हे प्रिया! ते सारुं कर्युं. अमे आ संबंधमां तने शुं कहीए? कारण के ए वणिकोने उचित नथी.' एम कही घर थकी बहार नीकळीने तेणे भारे प्रयासथी समस्त नगर जोयुं. अहो! पुत्र पर पितानो मोह केटलो?

एवामां साधुओना उपाश्रयमां उपशम-अमृतनी उर्मिओमां ओतप्रोत अने अपूर्व स्थिति करी रहेल पुत्रने जोतां श्रेष्ठीए जणाव्युं के-'हे वत्स! समतावंत साधुओनी पासे तारो वास जोतां पुत्रना आनंदनी स्थिति जाणे अमृतमय बनी होय तेम मने संतोष थाय छे, परंतु सदाचारथी विमुख अने कुवेष धारण करनारा एवा व्यसनी पुरुषोनी साथे तारी सोबत हती, ते केतुग्रहनी जेम मने भारे संताप उपजावती हती. हे वत्स! हवे चाल, तारी माता उत्कंठाथी राह जोई रही छे. ते कंईक मारा वचनथी दूभाणी छे अने तारा जवाथी तेने भारे संताप थाय छे.'

त्यारे **सिद्ध** बोल्यो—'हे तात! हवे घरे आववाथी सर्युं. मारुं हृदय गुरुना चरण-कमळमां लीन थयुं छुं. कोई पण जातनी अभिलाषा न राखता जैन दीक्षा धारण करीने हुं साधुमार्गनुं सेवन करीश, माटे हवे तमे मारा पर मोह राखशो नहि. माताए मने कह्युं के—'ज्यां द्वार उघडेल होय, ते स्थाने जा.' तो साधुओ पासे रहेवानुं में पसंद कर्युं अने तेनुं वचन पण रह्युं. **जो मातानुं वचन हुं यावज्जीव पाळुं तोज मारी अखंड कुलीनता गणाय.** हे तात! ए बाबतनो तमे तमारा मनमां बराबर विचार करी ल्यो.

ए प्रमाणे पुत्रनुं वचन सांभळतां शेठ संभ्रमथी बोली उठ्यो के—'हे वत्स! आ तुं शुं विचारीने बेठो?

असंख्य ध्वजाओथी शोभित थतुं आपणुं अगणित धन तारा विना कोण सार्थक करशे? तुं तारी इच्छानुसार विलास कर अने दान आप, के जेथी मने संतोष थाय. एम करतां अने सदाचारना मार्गे चालतां तुं सज्जनोने श्लाघनीय थईश. तारी मातानो तुं एक ज पुत्र छे अने तारी वहु तो संतानरहित छे, ते बंनेनो एक तुं ज आधार छे, तेम मारी वृद्धनी पण अवगणना न कर.'

एम पिताए कह्या छतां तेनी दरकार न करतां शमस्थितिने साधनार एवो **सिद्ध** कहेवा लाग्यो—'हे तात! हवे एवा लोभना वचनथी मने असर थवानी नथी. सांभल्या छतां मारे न सांभल्या जेवां छे. मारुं मन ब्रह्मचर्यमां लीन थयुं छे, माटे गुरुना पगे पडीने तमे एम कहो के—'मारा पुत्रने दीक्षा आपो.'

पुत्रना आवा अत्याग्रहथी **शुभंकर** शेठने ते प्रमाणे करवुं पड्युं. एटले पवित्र मुहूर्ते गुरु महाराजे तेने दीक्षा आपी. पछी केटलाक दिवस मासप्रमाण तपस्या करतां शुभ लग्ने पांच महाव्रतना आरोपण समये गुरु महाराजे तेने पूर्वनी गच्छ परंपरा संभळावता जणाव्युं के—'हे वत्स! सांभळ—पूर्वे **श्रीमान् वज्रस्वामी** हता. तेमना **श्री वज्रसेन** शिष्य थया अने एमना **नागेंद्र, निर्वृति, चंद्र** अने **विद्याधर** ए चार शिष्यो थया. निर्वृति गच्छमां बुद्धिना निधान एवा **सूराचार्य** हता, तेमनो शिष्य हुं **गर्गर्षि** तारो दीक्षागुरु छुं. तारे निरंतर अढार हजार शीलांग धारण करवाना छे, कारण के चारित्रनी उज्ज्वलतानुं एज फळ छे.'

गुरुनी ए शिक्षा स्वीकारतां **सिद्धर्षि** उग्र तप आचरवा लाग्या अने वर्तमान सिद्धांतोनो तेमणे अभ्यास करी लीधो. पछी वचनविलासमां सर्वज्ञ समान तथा प्रज्ञाना निधान एवा **सिद्धर्षिमुनि**ए **उपदेशमाला**ना बालबोधिनी वृत्ति करी. **दाक्षिण्यचंद्र** नामे आचार्य तेमना गुरुभाई हता, तेमणे शृंगारपूर्ण **कुवलयमाला** कथा रची. एटले **सिद्धर्षि**ना बनावेल ग्रंथथी कंईक हास्य करतां ते कहेवा लाग्या के—'तेज स्थितिमां आगमाक्षरो-सूत्रपंक्तिओ लखी काढवाथी शुं नवीन ग्रंथ गणाय? जगतमां अत्यारे **समरादित्य चरित्र** रूप शास्त्र वखणाय छे के जेना रस-तरंगोमां निमग्न थयेला लोको क्षुधा तृषाने पण जाणता नथी. मारी कथा पण रसाधिक्यथी कंईक सार रूप बनी छे, छतां अहो! तमे लहियानी जेम लखेल ग्रंथ पुस्तकनी पूर्ति करो छो.'

त्यारे **सिद्धर्षिकवि** कहेवा लाग्या के—'तमे मारा मनने दुभावो छो. वयोवृद्ध थतां अमारी कविता तो एवी थाय. सूर्यनी साथे खद्योत (खजुआ)नी जेम समरादित्यनी कवितामां पूर्वसूरिनी साथे मारा जेवो मंदमति स्पर्द्धा शुं करे?'

ए प्रमाणे तेमणे **सिद्धर्षि**ना मनने उद्वेग पमाडतां ते पंडिते, अन्य पुरुषो जेमां मुश्केलीथी बोध पामी शके तेवी रचनावाळी अने आठ प्रस्तावयुक्त, विद्वानोना शिरने कंपावनार, सुबोध करनारी अने रम्य एवी **उपमिति भव प्रपंचा** नामनी महाकथा बनावी. आथी ते ग्रंथ व्याख्यानने योग्य थयो, त्यारथी श्री संघे तेमने **व्याख्यानकार**नुं बिरुद आप्युं. त्यां ते हास्य करनार आचार्य तरफ तेमणे जोयुं, एटले ते बोल्या के—'आवा प्रकारनी कविता बनाववी, एम में तमारा गुणने माटे कह्युं हतुं.'

त्यारे **सिद्धर्षि** चिंतववा लाग्या के—'ज्यारे मारामां रहेल अज्ञानताने ए आचार्य पण जाणी शकता नथी, तो मारे हजी अवश्य अभ्यास करवानी जरूर छे. स्वपरना जे तर्कग्रंथो (न्यायशास्त्रो) छे, तेनो तो में अभ्यास करी लीधो, पण बौद्धना प्रमाणशास्त्रो तो तेमना देशमां गया विना शीखी शकाय तेम नथी.' एम धारी बौद्धना देशमां जवाने आतुर बनेला **श्री सिद्धर्षि**ए विनीत वचनथी गुरुनी अनुमति लेतां निवेदन कर्युं के—'हे भगवन्! मने अनुज्ञा आपो तो बौद्धशास्त्रनो अभ्यास करवा जाउं' एटले श्रुतविधिथी निमित्त जोईने गुरु ते प्राथमिक अभ्यासी शिष्यने वात्सल्य पूर्वक कहेवा लाग्या के-**'हे वत्स! अभ्यास करवामां असंतोष राखवो ए के जो सारुं छे**, तथापि तने कंईक हितवचन कहुं छुं—**बुद्धिनो नाश करनार शास्त्रमां प्राणीओनुं सत्त्व कांई चालतुं नथी**, तेथी तेमना हेत्वाभासथी जो तारुं चित्त कदाच भ्रमित थाय अने तेमना आगमना आदरथी तुं जैन सिद्धांतथी विमुख थई जाय,

तो उपार्जन करेल पुण्यनो तुं अवश्य नाश करी बेसीश, एम निमित्तथी हुं समजी शकुं छुं, माटे ए विचारने तुं मांडी वाळ. तेम छतां त्यां जवाने माटे तारो उत्साह अटकतो न होय अने त्यां जतां कदाच तुं स्खलना पामे, तो पण मारा वचनने मान आपी एक वखत तारे अहीं आवी जवुं अने व्रतना अंग रूप रजोहरण अमने आपी देवुं.' एम कहीने आचार्य मौन रह्या. एवामां मनमां खेद पामी, कान पर हाथ राखीने **सिद्धर्षि** बोल्या के—'पाप शांत थाओ अने अमंगल नाश पामो. एवो अकृतज्ञ कोण होय? जेणे प्रमोद पूर्वक मारी ज्ञानचक्षु उघाडी, तो धूम्र समान पर-वचनथी कोण तेमने प्रतिकूल आचरे? वळी हे नाथ! तमे मने छेवटनुं वचन पाळवा माटे केम कह्युं? कयो कुलीन पोताना गुरुना चरण-कमळनो त्याग करे? कदाच धतूराना भ्रमनी जेम मन व्याक्षिप्त थई जाय, तथापि आपनो आदेश तो हुं अवश्य पाळवानो ज.' एम कही गुरु प्रणाम करीने **सिद्धर्षि** अव्यक्त वेषने स्वीकारी पोतानी इच्छानुसार **महाबोध** नामना बौद्ध नगरमां गया, त्यां पोतानी कुशाग्र बुद्धिथी तेमणे विद्वानोने दुर्बोध शास्त्रोनो पण अल्प प्रयासे अभ्यास करी लीधो. जेथी बौद्धोने भारे आश्चर्य थई पड्युं. परंतु ते **सिद्धर्षि**ने पोताना मतमां लेवा माटे तेमने भारे मुश्केल हतुं. कारण के अंधकारमां उद्योत करनार, रत्नने पामीने मध्यस्थपणानो ज आश्रय करे, तेम ते मध्यस्थ रह्या. परंतु मत्स्यने धीवर (मच्छीमार)नी जेम तेओ तेवा प्रकारना, उत्साह वधारनार अने गृद्धि पमाडनार वचनप्रपंचथी **सिद्धर्षि**ने ललचाववा लाग्या, एटले तेमना आचार विचारमां रस पडवाथी तेमनी मनोवृत्ति हळवे-हळवे भ्रमित थवा लागी. एम बौद्धमतमां आसक्त थतां अने जैन मार्ग पर तेमनो अभाव थई गयो, जेथी तेमणे बौद्धनी दीक्षा लई लीधी. पछी एक वखते बौद्धो तेमने गुरुपदे स्थापतां ते कहेवा लाग्या—'एकवार मारे पूर्वगुरुना अवश्य दर्शन करवा' एम में तेमनी पासे प्रतिज्ञा लीधी छे, तो **सत्यप्रतिज्ञ कोण पोतानी प्रतिज्ञानो भंग करे?** माटे मने त्यां मोकलो.'

एटले—'अहो! आ सत्यप्रतिज्ञापणुं तो बहु ज सुंदर कहेवाय'—एम मानता बौद्धोए **सिद्धर्षि**ने तेमना गुरु पासे मोकल्या. एटले त्यां जतां उपाश्रयमां पोताना गुरुने सिंहासन पर बेठेला जोईने ते बोल्या—'तमे उर्ध्वस्थाने शोभो छो' एम कही ते मौन रह्या.'

त्यारे गर्गस्वामी चिंतववा लाग्या के—

'ते दुर्निमित्तनुं आ परिणाम आव्युं. कारण के जैनवाणी कदापि अन्यथा थती नथी. अमारापर विषम ग्रह बेठो, के आवो महाविद्वान् सुशिष्य परशास्त्रथी वंचित थयो, माटे हवे कोई उपायथी जो ए समजे, तो समजावुं अने बोध पामे, तो अमारो भाग्योदय थयो. आ करतां वधारे शुं' ए प्रमाणे विचारी, त्यांथी उठतां गुरुए तेमने आसनपर बेसाडी **चैत्यवंदन** सूत्रनी **ललितविस्तरा** नामे वृत्ति आपतां जणाव्युं के—'अमे चैत्यवंदन करीने आवीए, त्यां सुधी तमे आ ग्रंथनुं अवलोकन करजो.' एम कहीने गुरु बहार चाल्या गया.

हवे ते ग्रंथने जोतां महामति **सिद्धर्षि** चिंतववा लाग्या के—'अहो! में आ अविचार्युं अकार्य शुं आरंभ्युं? वगर विचार्युं काम करनार मारा जेवो बीजो कोण मूर्ख होय के स्वार्थथी भ्रष्ट करनारा परना वचनथी जे काचने बदले मणि हारी बेसे? मारा उपकारी तो ते एक **श्रीमान् हरिभद्रसूरि** के जेमणे मारा माटे ज आ ग्रंथ बनाव्यो. मने धर्मनो बोध आपनारा **श्री हरिभद्रसूरि** ज मारा साचा गुरु छे. तेथी आ प्रसंगे भावथी हुं तेमने ज मारा हृदयमां स्थापन करुं छुं, मने अनागत (भविष्यमां थनार) जाणीने जेमणे मारा माटे चैत्यवंदननी ललित विस्तरा वृत्ति बनावी. वळी कुवासनारूपी विषने दूर करीने जेमणे मारा पर दया लावी अचिंत्य वीर्यथी मारा हृदयमां सुवासगारूप अमृत रेड्युं ते **श्री हरिभद्रसूरि**ने नमस्कार थाओ वळी हुं शिष्याभास-कुशिष्य शुं करवानो छुं ते जाणीने मारा गुरुए आ निमित्ते उपकार करवा माटे मने अहीं बोलाव्यो, माटे तेमना चरणनी रजथी सदा हुं मारा मस्तकने पवित्र करीश; अने मारो दोष कही संभळावीश. कारण के गुरु तो लोकोत्तर पुरुष छे. आ ग्रंथथी, मने लागेल बौद्धमतनी भ्रांति दूर थई छे. शस्त्रघातथी जेम कोद्रव-कोदरामां थयेल मीणनो भ्रम दूर थाय, तेम मारो भ्रम

टळी गयो छे.'

ए प्रमाणे **सिद्धर्षि** विचार करे छे, तेवामां गुरु बाह्यभूमि थकी (**चैत्यवंदना** करीने) त्यां आव्या अने तेमने ते पुस्तकमां संलग्न जोईने गुरु प्रमोद पाम्या. पछी गुरुनो **नीस्सीहि** शब्दनो महाघोष सांभळतां ते एकदम उभा थया अने तेमना चरण-कमळमां पोतानुं शिर नमावीने चुंबन कर्युं-रज दूर करी. पछी **सिद्धर्षि** कहेवा लाग्या के—'हे भगवन्! मारापर आपनो शा निमित्ते मोह छे? मारा जेवा अधम शिष्यो पाछळथी शुं **चैत्यो** करावववाना हता? जेम चलित दांत स्वादमां विघ्न करनार, लोचन वगेरे शरीरना विकासने दूषित करी चांदा-वगेरेनी वेदना उपजावे छे, तेम **पुण्यहीन कुशिष्यो आत्मविकासने अटकावी**, तेमनी पुंठ थापडवानी वेदनाने अनुभवतां ते केवळ गुरुना द्रोही होय छे. हे प्रभो! मळवाना बहाने मने केवळ बोध आपवा माटे तमे अहीं बोलाव्यो, तथा **श्री हरिभद्रसूरि**नो ग्रंथ मारा हाथमां आप्यो. हवे कुशास्त्र संबंधी मारो भ्रम भांगी गयो छे, माटे आपने विनंती करुं छुं के—आ आपना कुशिष्यनी पीठ पर आपनो पावन हाथ स्थापन करो. तेमज देव, गुरुनी अवज्ञाथी लागेला महापापनुं आजे प्रायश्चित्त आपो के जेथी आपनी कृपाथी मारी दुर्गतिनो उच्छेद थाय.'

त्यारे आनंदाश्रुथी पोताना उत्तरीय वस्त्रने भींजावता तथा करुणाना निधान एवा गुरु महाराज कहेवा लाग्या के-'हे वत्स! खेद न कर. मदिरामस्त जनोनी जेम अभ्यास करेल कुतर्कना मदथी व्याकुळ बनेला लोकोथी कोण पराभव पामता नथी, हुं धारुं छुं के तुं छेतरायो नथी. कारण के मारा वचनने तुं भूली न गयो. मदथी विकळ थयेल तारा विना अन्य कोण पूर्वे सांभळेल याद करे? तुं बीजा वेषथी त्यां गयो, ते तो तेमने विश्वास पमाडवा माटे होई शके पण तेथी तारा मनमां भारे भ्रांति थवा पामी छे, एम हुं मानतो नथी. वळी व्याख्यानकारनी प्रज्ञाथी प्रख्यात तथा शास्त्रार्थना रहस्यने जाणनार अने मारा चित्तने आनंद पमाडनार तारा जेवो शिष्य आ महान् गच्छमां कोण छे?'

ए प्रमाणे **सिद्धर्षि**ने आनंद पमाडी, प्रायश्चित्त आपीने गुरु महाराजे तेमने पोताना पदपर स्थापन कर्या अने पोते निःसंग थई ते नगरनी भूमिनो त्याग करी, पूर्व ऋषिओए आचरेल एवा तपने माटे तेओ अरण्यमां चाल्या गया. त्यां कोई वार उपसर्ग सहन करवानी बुद्धिथी कायोत्सर्ग रहेता, कोई वार निश्चय दृष्टिथी प्रतिमानो अभ्यास करता, कोईवार पारणामां मात्र व्रत निर्वाहनी खातर क्लिष्ट आहार लेता अने कोई वार मासखमण वगेरे तपस्याथी ते कर्म खपाववा लाग्या. ए प्रमाणे दुष्कर चारित्र पाळतां प्रांते अनशन आदरीने ते सुज्ञ **गर्गर्षि** महाराज स्वर्गे गया.

हवे अहीं व्याख्यानकार **सिद्धर्षिसूरि** पांडित्यथी सर्वत्र प्रख्यात थया अने पोताने पंडित माननार परशासननो ते जय करवा लाग्या. सूर्यनी जेम समस्त शासननो उद्योत करता ते विशेष पराक्रम-तेजथी जगतने शांति पमाडवा लाग्या. असंख्य तीर्थयात्रादि महोत्सवोमां महाउत्साह धरावनार एवा धार्मिक जनोना हाथे शासननी प्रभावना करावता **सिद्धर्षि** आचार्य परम वचन सिद्धिने पाम्या.

श्रीमान् सुप्रभदेवना निर्मळ कुळने विषे मुगट समान, **श्री माघ** कवीश्वरना बंधु तथा प्रेक्षापूर्वक परीक्षा करवामां प्रवीण एवा **श्री सिद्धर्षि मुनीश्वर**नुं चरित्र चिंतवीने हे भव्य जनो! कलिकाळना प्रभावथी कोई रीते लागेल मिथ्या दर्शनना कदाग्रहनो उभय लोकने साधवा माटे त्याग करो.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रमुनीश्वरे** मन पर लेतां **श्री प्रद्युम्नाचार्ये** संशोधन करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री सिद्धर्षिसूरि**ना वृत्तान्त रूप आ चौदमुं शिखर थयुं.

इति श्री सिद्धर्षिसूरि-प्रबंध

१५. श्री वीरसूरि प्रबंध

आंतर रिपुनो नाश करनार, दुष्कर्म रूप गज समूहने हठावनार तथा सुवर्ण समान तेजस्वी वर्णवाळा एवा **श्रीवीरसूरि** स्वपर अन्वय-वंशने विभूषित करनार थाओ. **श्री वीर गणि** स्वामी तमारुं रक्षण करो के जेमनी भक्तिथी कषायादि शत्रुओ आवीने पराभव न पमाडी शके. जेमना उपदेशामृतना पानथी विबुधो (पंडितो) विबुधो (देवो) जेवा बनी गया, स्व-परना उपकार माटे ते **श्री वीरसूरि**नुं चरित्र हुं कहुं छुं.

श्रीमाल नामे नगर के ज्यां उद्यान वृक्षोथी दूर करायेल सूर्य, पूर्व-पश्चिम पर्वतोनो आश्रय करे छे. वळी ज्यां लोको प्रीतिरसमां पूर्ण हता अने ज्यां सरोवरो कमळरहित न हता. त्यां **धूमराज**ना वंशमां उत्पन्न थयेल, महीमंडळ रूप कुमुदने आनंद पमाडनार अने न्याय रूप महासागरने उल्लास पमाडनार एवो **देवराज** नामे राजा हतो. वळी त्यां **शिवनाग** नामे वणिक के जे सुज्ञ अने अग्रेसर हतो तथा जेना मंत्रोथी प्रचंड सर्पोनुं विष दूर थतुं हतुं. जैन धर्ममां दृढ अनुराग धरावनार तेणे **श्रीधरण** नामना नागेंद्रने आराध्यो, जेथी तेणे संतुष्ट थईने सर्व सिद्धिने करनार तथा जाप के होमादिक विना सद्य विषने दूर करनार एवो मंत्र तेने आप्यो, के जे मंत्र पुण्यहीन जनोने दुर्लभ तथा फुंक अने हाथना स्पर्शमात्रथी **आठ नागकुलो**ना विषनो नाश करतो हतो. एटले ते श्रेष्ठीए ते मंत्रनी रचना अने प्रभावयुक्त एक स्तवन[1] बनाव्युं के जे **धरणोरगेंद्र** एवा नामथी प्रसिद्ध थयुं अने स्मरण मात्रथी जे उपद्रवने दूर करतुं हतुं. ते शेठनी यथार्थ नामवाळी **पूर्णलता** नामे कांता हती के जे धर्मवृक्षना आश्रययुक्त, कुळरूपकंद, वचनरूप पत्र, यशरूप पुष्प अने लावण्यरूप फळयुक्त हती तेमनो **श्रीवीर** नामे पुत्र के जे **रत्नदीप** समान तेजस्वी, अक्षय प्रकाशथी अंधकार-अज्ञाननो नाश करनार तथा साक्षात् दिवस जेवो हतो. वळी जेना सुमनसपणाथी कोटिध्वजना विषे ध्वजाओ देवताने जीतीने ऊँचे ज उछळती हती. ते **वीर** केम नहि? ते जाणे सात समुद्रोना अमूल्य रत्नोथी विभूषित साक्षात् लक्ष्मीओ होय तेवी सात व्यवहारीओनी कन्याओ परण्यो हतो.

एकदा पोतानो पिता मरण पामतां **वैराग्य**ने लीधे **वीर** पर्वने दिवसे हंमेशां सत्यपुरमां श्री वीर प्रभुने वंदन करवा जवा लाग्यो. एक वखते जतां तेने, लताने शुष्क पत्रो (पांदडां)नी जेम दुष्ट चोरोए घेरी लीधो. एवामां तेनो साळो त्यांथी तरत भागी छूटीने शेठना घरे आव्यो. त्यां लोकोना मुखथी ते हकीकत सांभळवामां आवतां **वीर**नी माता अधीराईथी घरना द्वार आगळ आवीने उभी रही. तेणे पोतानी वधुना भाईने पूछ्युं के—'**वीर** क्यां छे?'

एटले तेणे मश्करीमां जवाब आप्यो के—'सत्त्वहीन ए मिथ्यावीरने चोरोए मारी नाख्यो एम सांभळतां तेनी माता ते ज स्थाने प्राणरहित थई गई. अहो! **पुत्र प्रत्ये मातानुं असाधारण वात्सल्य वचनातीत होय छे.** पिता, भ्राता, कलाचार्य के मित्र अथवा अन्य कोई उपकारीना ऋणथी कदाच छूटी शकाय, पण माताना ऋणथी तो कोई रीते छूटी ज न शकाय.

एवामां तीडथी खेडूत जेम पोताना क्षेत्रने अक्षत राखे तेम प्रभुना प्रतापे **वीर** चोरो थकी छूटीने पोताना अक्षत शरीरे घरे आवी पहोंच्यो. त्यां पोतानी माताने प्राणरहित जोतां पोतानुं संकट भूली जईने तेणे पूछ्युं के- 'आ शुं थयुं?' त्यारे यथास्थित हकीकत तेना सांभळवामां आवी. एटले **वीरे** पश्चात्ताप करता पोताना साळाने कह्युं के—'मारा भाग्यने दूषित करनार आवी प्राणांत मश्करी ते केम करी?'

ते बोल्यो—'शुं मातानी जेम मश्करीथी कोई मरण पामे? आ तो बील्वफळना कांटानी जेम मने पण जन्म पर्यंत न जाय तेवुं शल्य रही गयुं.

1. आ स्तवन 'जैन स्तोत्र संदोह' भा. २ पृ. ७०-८७मां प्रसिद्ध थयुं छे.

त्यारे **वीर** वैराग्यथी कहेवा लाग्यो—'अहो! स्नेहना संबंधमां माता अने मारी वच्चे केटलुं बधुं मोटुं अंतर छे? ते तो जुओ. हास्य मात्रथी मारुं मरण सांभळतां ते खरेखर मरण पामी अने तेनुं मरण साक्षात् जोवा छतां अमे कंई पण तजी शकता नथी! एम कही एक एक कोटि धन पोतानी स्त्रीओने आपीने बाकीनुं धन तेणे श्री संघनी भक्ति अने जिन चैत्योमां वापर्युं. पछी पोते गृहस्थ वेषे ज परिग्रहनो त्याग करी, सत्यपुरमां जईने भक्तिपूर्वक ते **श्री वीरप्रभु**नी आराधना करवा लाग्यो. त्यां तेणे आठ उपवास करीने पारणुं कर्युं तेमज बधी विगईनो त्याग करीने ते रहेवा लाग्यो. अहो! तेनुं महान् तप केवुं? वळी चतुर्विध पौषध करीने ते प्रासुक आहार लेतो तथा रात्रे नगरनी बहार स्मशान वगेरेमां जईने ते कायोत्सर्ग करतो हतो. त्यां देव, मनुष्य अने तिर्यंचना उपसर्गो ते सहन करतो अने तीव्र तप तपतां ते एक तीर्थ समान पवित्रतानुं धाम थई पड्यो. वळी कुशळमति ते पोतानी क्रियामां सावधान रही गुरुनी सदा उत्कंठा राखतां एक चित्ते वीरप्रभुनुं ध्यान करवा लाग्यो.

एवामां एक वखते संध्या समये बाह्य भूमिए कायोत्सर्ग करवा जतां तेणे दूरथी आवता जाणे साक्षात् जंगम कल्याण होय अथवा देहधारी जाणे चारित्र होय एवा सो वर्षना वृद्ध **विमलगणिने मथुरा** नगरीथी आवता जोया. एटले सर्व अभिगम साचवी पृथ्वीपीठ सुधी मस्तक नमावीने तेणे गुरुने वंदन कर्युं, त्यारे धर्मलाभरूप आशिषथी अभिनंदन आपतां गुरुए तेने पूछ्युं के—'हे धर्मशील! अकाळे अत्यारे नगर बहार क्यां जाय छे?'

एटले **वीरे** नम्रताथी जवाब आप्यो के—'अहीं बाह्यभूमिमां कायोत्सर्ग करवा जाउं छुं.'

त्यारे **गणि महाराज** बोल्या—'अमे तारा अतिथि छीए. तने अंगविद्यानो उपदेश आपीने प्रांत समय साधवा अमे शत्रुंजय तीर्थपर जवाना छीए.'

एम सांभळतां **वीर** कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! आजे मारो दिवस सफळ थयो के असाधारण प्रसाद लावीने आप जेवा महात्मा मारा जेवा पामर पर आवी उत्कंठा धरावो छो. माटे आप पूज्यनी उपासनाथी आजनी रात्रि हुं सफळ करुं. कारण के **चिंतामणि हाथमां आवतां कयो मूर्ख तेनी अवगणना करे?**' एम कहेतां तेणे सद्गुरुने पोतानो उपाश्रय बताव्यो अने पोते अंग दाबवा वगेरे तेमनी शुश्रूषा करवा लाग्यो. पछी गुरु महाराजे तेने कह्युं के—'तुं निष्कपट भावथी अंगविद्या शीख के जेथी श्रुतज्ञानना बळे शासनमां तुं प्रभावक थाय.'

त्यारे वीर बोल्यो—'हे भगवन्! गृहस्थोने सिद्धांतनी वाचना केम अपाय? वळी अभ्यास करतां पण मने आवडतुं नथी, तो हुं शुं करुं?'

एटले गुरु बोल्या—'हुं तो हवे परभवनो पथिक थवानो छुं, पण अंगनी महाविद्या तने पोतानी मेळे आवडी जशे, तेनो अर्थ हुं तने सत्वर जणावीश अने तेनुं पुस्तक, **थारापद्र** नगरमां श्री ऋषभदेवना चैत्यमां आवेल **शुकनाश** स्थानमां छे, ते लईने तुं याचजे.' एम कही गुरु महाराजे **वीर**ने आदरपूर्वक दीक्षा आपी अने त्यां त्रण दिवस रहेतां ते ग्रंथनो अर्थ बताव्यो. पछी **श्री विमलगणि विमलाचल** तीर्थ पर गया अने त्यां श्रीऋषभस्वामीने वंदन करी, तेमनुं एक मने ध्यान लगावी, पाप रूप मातंगने मारवामां केसरी समान एवा ते गुरु देहनो त्याग करीने स्वर्गे गया.

पछी श्री गुरुनी आज्ञा प्रमाणे ते थारापद्र नगरमां गयो अने तेमणे गुरुए बतावेल स्थाने श्रावको पासेथी पुस्तक मेळव्युं. एटले गणिविद्यानी साथे तेमणे त्यां अंगविद्यानो अभ्यास कर्यो. तेना प्रसादथी ते महा तपस्वी उग्र शक्तिने धारण करनारा थया. वळी प्राचीन पुण्यना योगे तेमनो परिवार पण थयो. आ वखते **श्रीवीरगणि**ए अज्ञ जनोने बोध आपवानो नियम धारण कर्यो.

हवे **अणहिल्लपुर** तरफ विहार करवाने ईच्छतां **श्री वीरगणि विरूपानाथ** नामना व्यंतरथी अधिष्ठित एवा स्थिरा गाममां आव्या. ते व्यंतराधिपनुं **व (ब) लभीनाथ** एवुं बीजुं नाम हतुं. ते रात्रे देवगृहमां सुतेल माणसने महा रोष लावीने मारी नाखतो हतो. तेने बोध आपवा माटे त्यां जमीन पर गणिविद्याना बळे साडा त्रण हाथ प्रमाण कुंड करी त्यांना लोकोए निवार्या छतां महा तेजस्वी एवा **वीरगणि** आसन लगावीने रह्या. कारण के **अखंड**

व्रतधारी ते एवा भयथी डरता न हता. वळी झंझावातथी मेरु पर्वतनी जेम विघ्नोनी अवगणना करता अने शरीर तेम ज मनने विषे पण निष्कंप एवा ते कायोत्सर्ग-ध्यानमां रह्या. एवामां वलभीनाथ पोते किलकिल घोर गर्जनाथी बाह्य जनोने भय पमाडतो त्यां आवी पहोंच्यो अने तेमने भय पमाडवा माटे सुरेंद्रनी साथेनो जाणे वैरभाव याद आव्यो होय तेवा जंगम पर्वतो समान प्रथम तेणे हाथीओ विकुर्व्या, छतां समुद्र जेम मर्यादाने न ओळंगे तेम ऊँचा नीचा शुंडादंडोथी ते भयंकर छतां तेमनी रेखाने ओळंगी न शक्या. पछी दृष्टि थकी विषज्वाळाने बहार काढता अने अन्य प्राणीओने भस्मीभूत करता अने आमतेम चालता एवा गर्विष्ठ सर्पो विकुर्व्या. एटले ते पण रेखाने ओळंगी शक्या नहि, आथी ते देव विलक्ष बनीने विचारवा लाग्यो के'—आ मुनिनो महिमा असाधारण लागे छे. पछी तेणे भयंकर राक्षसोना रूप बनाव्या, ते प्रतिकूल उपसर्ग करवा छतां तेमने क्षोभ पमाडी न शक्या. एटले ते व्यंतर तेमने अनुकूळ उपसर्ग करवा लाग्यो. तेणे तेमना मातापिता अने स्त्रीओने आक्रंद करता बताव्या, छतां मोह पर्वतने भेदवामां वज्र समान ते तत्त्वज्ञ मुनिए तेमनी दरकार न करी. कारण के ते **वीर** रूप अगस्त्य ऋषिए दक्षिण दिशानो आश्रय कर्यो हतो, तेथी मोहरूप विंध्याचळ शी रीते उन्नत्त थई शके? एटलामां कलीयुगमां देवताओथी पण चलायमान न थाय तेवा सत्त्ववाळा तपोनिधान **वीरगणि**ने जोवाने माटे कौतुकथीज सूर्य उदयाचल पर आव्यो. त्यारे देव निराश थई, अनेक पर्वत समान सत्त्वशाळी अने पराक्रमना निधान एवा ते तपोनिधान मुनिने प्रत्यक्ष आवीने कहेवा लाग्यो के—'पूर्वे में घणा देव मनुष्योनो मानभंग कर्यो छे, परंतु तमारा विना शक्तिमां कोईए मारी स्खलना करी नथी.'

एम कहीने ते पुनः कहेवा लाग्यो के—'पूर्व दिशामां आवेल **डकोर** नगरीमां **भीमेश्वर** नामना शिवालयमां आवतां हुं तेना लिंगने प्रणाम कर्या विना बेठो अने तेना जळाधारपर पग राखीने क्षणवार त्यां सुई गयो. एवामां राजा त्यां आव्यो अने विस्मय पामीने तेणे मने पूछ्युं के—'तुं अज्ञान के शक्तिथी देवने नमस्कार केम करतो नथी?' एटले में राजाने जणाव्युं के—'हे राजन्! न नमवानुं कारण हुं तने स्पष्ट कहुं छुं सांभळ—आ शिव शक्ति (पार्वती) युक्त होवाथी मने जोईने ते लज्जाने लीधे नीचुं मुख करी देशे. कारण के एवा प्रसंगे पुरुषथी पुरुष लज्जा पामे छे. वळी देव एवी स्थितिमां छतां सामान्य लोको तेने नमे छे. ते लोको तो पशु जेवा छे, तो तेने लज्जा शेनी आवे? तेम वळी मारा मनमां आ संबंधी एक मोटुं कौतुक छे के हुं प्रणाम करतां एने कंई उत्पात थाय तो तेनो दोष मारा पर आवे.' ए प्रमाणे कहीने हुं मौन रह्यो. त्यां राजा कहेवा लाग्यो के—'अहो! परदेशी लोको बोलवामां भारे चालाक होय छे, चर्म देहधारी पुरुष पोताने देवसमान माने छे ते ज्ञानीओने हास्य जेवुं अने बाळकोने छेतरवा जेवुं छे. हवे जो तारामां कोई एवा प्रकारनी शक्ति होय, तो ते बताव, आ काममां अमे तारो लेशमात्र दोष नहि गणीए अने तेने माटे समस्त नगर साक्षी छे.'

ए प्रमाणे राजानुं कथन सांभळतां हुं जेटलामां पासे आवीने नमस्कार करुं छुं, तेवामां लोकोना देखतां तडाक दईने लिंग फूट्युं. एटले भयथी संभ्रांत लोचनवाळा तथा बाळकनी जेम कंठनो रोध थवाथी अव्यक्त उच्चार करता राजाने में कह्युं के—'चिरकालथी आ लिंगनुं अर्चन करवाना क्लेशथी दूभायेल एवा तें मने उत्तेजन आपवाना दंभथी वैर उपार्जन कर्युं.' एम सांभळतां मारा पगमां पोतानुं मस्तक मूकी मने मनाववा माटे परिवार सहित ते राजा कहेवा लाग्यो के—'तुं ज अमारो देव छे, तारे लीधे ज आ तीर्थ रहेवानुं छे. नहि तो तेनो उच्छेद ज थई जाय. तुं ज देहधारी शिव छे अने अन्य तो पाषाण रूपज छे.' एम तेणे कहेतां में लिंगने योगपट्टथी बांधी दीधुं. त्यां बे भागे सांधेल ते लिंग अद्यापि पूजाय छे. पछी **महाबोध** नगरमां बौद्धोना पांचसो मठो हता, तेमने मारा सामर्थ्यथी जीतीने भग्न कर्या. वळी एवी मारी प्रतिज्ञा छे के -सामे आवे तेनो अवश्य विजय करवो. शंभूना भयथी महाकाल तो मारा एक खूणामां पड्यो छे. **सोमेश्वर**नो जय करवा हुं चालीने अत्रे आव्यो छुं. एटले ते भय पामी ब्राह्मण रूपे अहीं आवीने मने मळ्यो अने कहेवा लाग्यो के—आ दारुण अने छे अने महा उदयने माटे अहिं आपेलुं थाय छे. माटे जो तुं आपवाने समर्थ होय तों ते मागुं.'

त्यारे में कह्युं—'हुं याचकोने यथेष्ट राज्य, अन्न के सुवर्ण तेमज धनना घडा, मुडा के लाखो टका आपवाने समर्थ छुं.'

एटले ते ब्राह्मण बोल्यो—'तो मने कंईक आप.' आथी में तेने कह्युं—'मागी ले.' ते बोल्यो—'तो हवे सांभळो-हे महाबल! आ क्षेत्रमां स्थिर थईने तुं स्थिति कर! एम सांभळतां हुं जेटलामां ज्ञानथी जोउं छुं, तो ते शंकर, बलिराजाने वामननी जेम वृद्ध ब्राह्मणना वेषे भयने लीधे मने **सोमनाथ**ने छेतरवा आव्यो. पछी में तेने कह्युं के—मने कंई पण दंड आप, के जेथी मारी सत्य प्रतिज्ञा थाय, नहि तो अहीं रहेता पण हुं तने व्यथाकारी थई पडीश. त्यारे ते बोल्यो—हुं कांई तारी पासे गर्व करतो नथी, माटे मारुं वचन सांभळ—मारी यात्रा ते पूर्ण करी शके के जे तने आज जुए नहि, नहि तो ते अर्ध फलवती थाय.' एम कहीने ते पोताने स्थाने चाल्यो गयो. अद्यापि ते ते ज प्रमाणे वर्ते छे. 'मारा वचननुं कोण उल्लंघन करे? त्यारथी आ गाम **स्थिर** एवा नामथी प्रख्यात थयुं. कारण के मारा अने शंभुना वचननी स्थिरता कांई दुर्लभ नथी. ए प्रमाणे मारी शक्ति मनुष्यो के देवोए पण स्खलित करी नथी, परंतु तमे श्वेतांबर तो मारा करतां पण शक्तिमान छो. हुं दूर रहीने जोया करुं छुं, पण तमारो पराभव करवाने समर्थ नथी. अग्निनी जेम आ रेखाकुंड जाज्वल्यमान लागे छे तेथी पुरुष शंकित थई जाय छे. तमारी आ तपशक्तिथी संतुष्ट थयो छुं, माटे सत्वर मनोवांछित मागी ल्यो. कल्पवृक्षनी जेम हुं कालक्षेप विना ते पूर्ण करीश.'

ए प्रमाणे सांभळतां पंचपरमेष्ठीनुं ध्यान पारीने **वीरमुनि** कहेवा लाग्या के—'सर्व संगना त्यागी अमे कंई पण ईच्छता नथी.' एटले व्यंतरे कह्युं—'तथापि मारी भक्तिनी खातर कंईक ल्यो.'

त्यारे मुनि बोल्या—'तारुं पण आयुष्य नश्वर छे, हिंसा करीश नहि. कारण के जीवहिंसा ए दुर्गतिनुं मूळ कारण छे. वळी तें जे गर्वयुक्त तारो पूर्वनो वृत्तान्त संभळाव्यो, तेथी मने हर्ष नथी तेम महादानमां जे तें तारी शक्ति बतावी, तेथी पण मने कांई आश्चर्य नथी, परंतु प्राणीओने अभयदान आपवुं, ते सर्व करतां उत्तम छे.'

एटले ते हर्षथी कहेवा लाग्यो—'आपनुं वचन सत्य छे, तेम हुं पण ए समजुं छुं, तथापि मारो परिवार स्वेच्छाचारी छे, तेमने आवुं ज प्रिय लागे छे. अमृतनी वृष्टि समान तमारा वचनथी मने भारे संतोष थयो छे. माटे प्रासादनी भूमिकामां हुं जीवरक्षा करावीश.' एटले **श्री वीरमुनि**ए जणाव्युं के—'आ वचन राजाना जाणवामां आववुं जोईए, के जेथी आपण बंनेनो वृत्तान्त पुण्यनिमित्ते यावच्चंद्र प्रवर्त्तमान रहे.'

ए अरसामां **अणहिल्लपुर**मां **श्री चामुंड**राज नामे नवीन चक्रवर्त्ती राजा हतो. एटले **विरूपानाथे** पोते ज प्रधान मारफते ते जीवरक्षानी बाबत राजाने जणावी. जेथी ते प्रमोदपूर्वक त्यां आव्यो. कारण के सत्कर्म करवानी कोने महेच्छा न होय? पछी राजाए जीवरक्षाने माटे ते देवना शासननो स्वीकार कर्यो. त्यारबाद **श्रीवीरमुनि**ने राजाए पुनः त्यां बोलावतां ते आव्या अने ते धीर अणहिलपुरमां अज्ञजनोने प्रतिबोध आपवा लाग्या. त्यां **श्री वर्द्धमानसूरि** महर्षिए संघ समक्ष मोटा ओच्छवपूर्वक तेमने आचार्यपदे स्थापन कर्या. वळी त्यां **श्री वीरप्रभु**नी भक्तिथी **वलभीनाथ** पोते प्रत्यक्ष थईने तेमनी आगळ बेसीने धर्मव्याख्यान सांभळतो हतो; परंतु पोतानो क्रीडाप्रिय स्वभाव होवाथी सलक्षण पुरुष जोवामां आवतां तेना देहमां उतरीने ते तेने पीडा उपजाव्या विना क्रीडा करतो हतो. ए प्रमाणे जाणतां **श्री वीरसूरि** तेने कहेवा लाग्या के—'हे व्यंतराधीश! तुं ए क्रीडा करे छे, ते योग्य नथी. कारण के मनुष्यो तारी आ क्रीडाने सहन करी शकता नथी.' एम गुरुए निषेध करवाथी ते तेम करतां निवृत्त थयो अने पुनः गुरुने ते कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! मारा संतोषनुं तमने कांई फळ मळतुं नथी.' त्यारे आचार्य आनंदथी बोल्या—'जैनभवनथी उन्नत एवा **अष्टा**पद पर्वत पर जवानी तारी शक्ति छे?'

एटले ते बोल्यो—'हे प्रभो! त्यां जवानी शक्ति तो छे, परंतु त्यां स्थिति करवानी शक्ति नथी. कारण के त्यां व्यंतरेंद्रो महाबलिष्ठ छे, तेथी तेमनुं तेज सहन करवाने असमर्थ एवो हुं त्यां रही शकतो नथी, तेम छतां तमने महत् कौतुक होय, तो एक प्रहर सुधी हुं त्यां रहीश; हे मित्रगुरु! ते करतां अधिक वखत जो तमे रहेशो, तो अहीं पाछा आवी शकवाना नथी, आ मारुं कथन सर्वांशे सत्य छे.'

गुरुए ए वातनो स्वीकार कर्यो, एटले व्यंतरे एक धवल वृषभ विकुर्व्यो अने मुनिने तेना पर बेसाड्या. ते वखते गुरुए मस्तक पर वस्त्र बांधी लीधुं हतुं. पछी ते वृषभ आकाशमार्गे गमन करतां क्षणवारमां त्यां तीर्थपर पहोंच्यो, एटले चैत्यना द्वार पासे तेणे मुनिने वृषभपरथी नीचे उतार्या, पछी त्यां रहेल देवताओना तेजने सहन न करी शकवाथी आचार्य द्वार पासेनी पूतळीनी पाछळ शिखर आडे अदृश्य रीते छूपाई रह्या. त्यां त्रण गाउ उंचा, एक योजन विस्तृत तथा प्रथम चक्रवर्ती श्री भरतराजाए करावेल चार द्वारयुक्त महाचैत्यने जोई अने शास्त्रमां बतावेल प्रमाण अने वर्णयुक्त प्रतिमाओने जोतां **श्री वीरमुनि**ए एक एक नमस्कार महामंत्र द्वारा प्रमोदपूर्वक प्रणाम कर्या. पछी प्रभावना-महिमा करवानी इच्छाथी त्यांनी निशानीरूपे, देवतोए चडावेल चोखाना पांच छ दाणा तेमणे लई लीधा. रात्रिना प्रथम प्रहरे ते तीर्थयात्रा निमित्ते चाल्या हता अने बीजा प्रहरनी एक घडी जतां प्रथमनी जेम ते पाछा आव्या. त्यां सुगंधि अक्षतना परिमलथी सुमनस-देवोथी व्याप्त सौधर्म विमाननी जेम उपाश्रय सुगंधि बनी गयो. त्यारे मुनिओए पूछतां गुरु कहेवा लाग्या—'अष्टापद पर्वतपर देवोने वंदन करो.' ए वात तेमणे श्री संघने निवेदन करतां ते संघ चैत्यमां एकत्र थयो ए आश्चर्य संघे राजाने जणाव्युं. तेथी ते पण कौतुकथी त्यां आव्यो अने गुरुने बोलावीने तेणे निशानी पूछी त्यारे गुरु पुनः कहेवा लाग्या के--

बे धउला बे सामला बे रत्तुप्पलवन्न ।
मरगयवन्ना दुन्नि जिण सोलस कञ्चनवन्न ।।१।।
नियनियमाणिहिं कारविय भरहि जि नयणाणन्द ।
ते मइं भाविहिं वन्दिया ए चउवीस जिणन्द ।।२।।

अर्थात् - बे श्वेत, बे शामळा, बे रक्तकमळ समान वर्णवाळा अने सोळ कंचन समान वर्णवाळा, पोतपोताना प्रमाणथी भरत राजाए करावेल तथा नयनने आनंद उपजावनार ए चोवीशे जिनेश्वरोने में भावथी वाद्यां छे.'

त्यारे राजा बोल्या—'तमे पोताना ईष्ट देवनुं स्वरूप कहेवामां कुशळ छो, पण तेथी अमने तेनी प्रतीति थती नथी, माटे बीजी कंईक निशानी कहो.' एटले वर्णमां तेमज परिमलना गुणथी असाधारण एवा अपूर्व अक्षतो तेमणे लोको समक्ष बताव्या. ते अक्षत बार अंगुल लांबा अने एक अंगुल जाडा हता; जे जोतां राजाने खात्री थई. **तुर्कोए ए नगरीनो भंग कर्यो ते पहेलां ते अक्षत उपाश्रयमां हता** अने अष्टापदना प्रतिबिंबनी जेम श्री संघ तेनी पूजा करतो हतो. ए प्रमाणे सामान्य जनोने दुस्तर एवा अद्‌भुत अतिशयोथी श्रीमान् **वीरगणि** आचार्य ते वखते जगतने पूजनीय थई पड्या.

एकदा राजाए एकांतमां पोताना **वीर** नामना मंत्रीने कह्युं के—'शास्त्रोक्त न्यायथी राज्य चलावतां अने पंडितोने आश्रय करवा लायक तथा वचनसिद्ध एवा गुरु अने मंत्री बंने **वीर** मारा मननी पीडाने दूर करनार होवा छतां एक चिंतारूप जवर अमने महासंताप उपजावे छे. ते सांभळीने तमे तेनो प्रतीकार करो. ए वात हुं कोई आगळ कही शकतो नथी.'

ए प्रमाणे सांभळतां **वीर** मंत्रीश्वर बोल्यो के—'हे स्वामिन्! मने आदेश करो, हुं आपनो सेवक छुं, तो शुं हुं विपरीत करवानो छुं?'

त्यारे राजाए जणाव्युं के—'मारा अंतःपुरनी रमणीओ विद्यमान छतां तेमनो गर्भस्राव थाय छे, तो तेनो तमे प्रतिकार करो.' एम राजानी आज्ञा थतां महामंत्रीए ए वात **श्री वीरसूरि** आगळ निवेदन करी. एटले आचार्ये ते स्वीकारीने जणाव्युं के—'हुं वासक्षेप मंत्री आपुं, ते राणीओ पर नाखो, जेथी तेमने पुत्र उत्पन्न थशे.' पछी मंत्रीए गुरुना वचन प्रमाणे कर्युं अने तेथी राजाने **वल्लभराज** वगेरे पुत्रो थया.

हवे एकदा गुरु **अष्टादशशती** देशमां विचरतां, सुज्ञ जनोथी अलंकृत एवा **उंबरिणि** गाममां आव्या त्यां एक विशुद्ध उपाश्रयमां तेमणे निवास कर्यो. पछी संध्या समये कायोत्सर्ग करवाने ते प्रमोदपूर्वक प्रेतवन (स्मशान) मां गया. एवामां **परमार** वंशमां हीरा समान (**रूभद्र**) नामना राजकुमारे तेमने जोतां अतिभक्तिथी नमस्कार कर्या

अने अंजलि जोडीने जणाव्युं के—'हे प्रभो! श्वापदोथी व्याप्त आ स्मशानमां तमे न रहो. गाममां कोई प्रासुक स्थानमां आवीने सुखे रहो.'

त्यारे गुरु बोल्या के—'मुनिओ सदा बाह्य भूमिकामां ज कायोत्सर्ग करे छे.' एम सांभळता धीरज लावीने ते राजपुत्र पोताना स्थाने चाल्यो गयो. एवामां तेने जांबुनुं भेटणुं आव्युं. एटले तेनो स्वाद लेवानी इच्छाथी तेणे जांबुफळो तोडयां. तेमां कृमि-जंतु जोई, शंकाथी शिर धूणावतां ते कहेवा लाग्यो के—'फळोमां पण ज्यारे सूक्ष्म कृमि होय छे, तो विवेकी पुरुषे रात्रे जोया विना खावुं, ते केम योग्य गणाय?'

पछी तेणे ब्राह्मणोने बोलावीने प्रायश्चित्त पूछ्युं. एटले तेमणे बताव्युं के—'ए पापनी विशुद्धि माटे सुवर्णना कृमिनुं ब्राह्मणोने दान करवुं.' एम सांभळतां राजकुमारे विचार कर्यो के—'आथी तो संकल्पपूर्वक मारे बीजा कृमिनो पण वध करवानो वखत आवे, माटे ए धर्म मारा हृदयमां स्थापन थाय तेम नथी. हवे कोई शमधारी मुनिने ए विचार पूछुं.'

एवामां प्रभाते जैनमुनि गाममां आव्या त्यारे राजपुत्रे त्यां आवी प्रणामपूर्वक गुरुने पोतानो संदेह पूछ्यो. एटले गुरु विस्तारथी खुलासो करता बोल्या के—'हे भद्र! स्थावर अने त्रस जीवो सर्वत्र रहेला छे. पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु अने वनस्पति ए पांच स्थावर कहेवाय छे अने बेईंद्रिय, तेईंद्रिय अने चौरिंद्रिय जीवो त्रस समजवा, तेमज पंचेंद्रिय देवता, मनुष्य तिर्यंच अने नारक ए पण त्रस गणाय छे. तेमां हाथी, मत्स्य, मयूरादिक ते स्थळचर, जळचर अने खेचर कहेवाय छे. वळी वनस्पति ए जीवोना आधाररूप छे एटले तेमां घणा जीवो रहेला छे. तेना मूळ फळादिकमां घणा जीवो उत्पन्न थाय छे अने मरण पामे छे. तो हे विवेकी! जीवोनी दया ए ज धर्म छे, ते तुं विचारी जो.'

ए प्रमाणे गुरुनी वाणी सांभळतां राजकुमार प्रतिबोध पाम्यो अने सर्व परिग्रहनो त्याग करी अक्षीण कल्याण साधवाने तेणे दीक्षा अंगीकार करी. पछी पूर्व शास्त्रनो अभ्यास करतां जैनागमने वांची, ज्ञान-क्रियामां ते गीतार्थ महाविद्वान् थया. जेम दीपकथी दीपक प्रगटे, तेम ते पोताना गुरु समान तेजस्वी थया.

एकदा श्रुतज्ञानथी पोताना आयुष्यनो अंत जाणवामां आवतां **श्री वीरसूरि**ए पोताना मुख्य शिष्य **श्रीभद्रमुनि**ने पोताना पदे स्थापी तेनुं **श्री चंद्रसूरि** एवुं नाम राख्युं. अने पोते योगनिरोधथी संवरमां रही, जीर्ण गृहनी जेम देहनो त्याग करीने स्वर्गे गया. **श्री वीरगुरु** बोध शक्तिना आधाररूप ते स्वर्गलक्ष्मीना भोक्ता थया. विक्रम संवत् ९३८मां **श्रीवीरसूरि**नो जन्म थयो हतो. ९८०मां तेमणे दीक्षा धारण करी अने ९९१मां तेओ स्वर्गे गया. बेताळीश वर्ष तेओ गृहस्थाश्रममां रह्या अने अगियार वरस व्रत पाळ्युं. एम तेमणे त्रेपन वरस आयुष्य भोगव्युं.

ए प्रमाणे हे सज्जनो! **श्री वीरसूरि**नुं प्रसिद्ध चरित्र तमो श्रवण करो; के जेथी महानंद-सुखने प्रगट करनार श्रीसम्यक्त्व लक्ष्मी तमने वरवाने उत्कंठित थाय.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना विचारपर लेतां **श्री प्रद्युम्न मुनीश्वरे** संशोधन करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री वीरसूरि**ना चरित्ररूप आ पंदरमुं शिखर थयुं.

ते आ नवीन **प्रद्युम्न** (काम) जय पामो के जे शिव (कल्याण) ना सहचारी हता, वळी जेमणे पोताना प्रगट रिपुरूप संतोषने अतुल [1]प्रीति अने रति पण आपी दीधी. वळी शुभ ध्याननना उपायरूप जे कवित्वना चूर्णादिने अमृतरुचि (चंद्र) समान मानता हतां, तथा मदादिकनो जेणे सर्वथा परिहार कर्यो हतो.

इति श्री वीरसूरि-प्रबंध

1. प्रीति अने रति बंने कामदेवनी स्त्रीओ कहेवाय छे.

१६. श्री शांतिसूरि-प्रबंध

वादिवेताल, दुर्मंत्रवादीओना काल रूप तथा सर्व प्रकारनी सिद्धि आपनारा एवा प्रसिद्ध **श्रीमान् शांतिसूरि** तमारुं रक्षण करो. तेमनी भक्तिथी भावित थयेल हुं तेमनुं चरित्र रचवानी अभिलाषा करुं छुं. कारण के सूर्यनी सेवाथी सारथी शुं आकाशमार्गे चालवाने समर्थ नथी? शोभामां कैलास समान **गुर्जर** नामे देश छे के जे धनद (कुबेर अथवा दातारो) थी अधिष्ठित अने चारुमानस (सुंदर मानस सरोवर अथवा सज्जनो)ना समूहथी विभूषित छे. त्यां **अणहिल्लपुर** नामे नगर छे के ज्यां संत जनोना वचनामृतथी, द्विजिह्वो (सर्पो अथवा दुर्जनो)ना वचन रूप विष कोईने असर करतुं नथी. त्यां देशमांना शत्रुओनो निग्रह करनार, कनक समान कांतिवाळो अने असाधारण पराक्रमी एवो **भीम** नामे राजा हतो.

हवे चंद्रगच्छ रूप शुक्ति (छीप)ने विषे मुक्ता समान तथा स्वच्छमति मुनिओना निधान रूप एवो **थारापद्र** नामे प्रख्यात गच्छ छे. त्यां सच्चारित्र रूप लक्ष्मीना पात्र. गुणना निधान तथा जगतमां विख्यात एवा **श्री विजयसिंह** नामे आचार्यहता. तेओ **श्री संपक** चैत्यनी पासेना स्थानमां रहेतां सूर्यनी जेम भव्य जन रूप कमळने प्रतिबोध (विकास) पमाडता हता.

श्री पाटणनी पश्चिमे **उन्नायु** नामे गाम हतुं के ज्यां लोको दीर्घायुषी अने सारी स्थितिना हता तथा जे नानुं छतां सारी पेदाशवाळुं हतुं. त्यां **श्रीमाल वंशनो धनदेव** नामे श्रेष्ठी के जे विद्वान् अने देव, गुरुनी सेवा साधवामां सावधान हतो. साक्षात् **लक्ष्मी** समान **धनश्री** नामे तेनी पत्नी हती. तेमनो **भीम** नामे पुत्र के जे प्रतिभाशाळी पुरुषोमां अग्रेसर हतो. कंबु (शंख) समान कंठ, विशाळ ललाट अने जानु पर्यंत भुजाथी ते अलंकृत हतो, तेमज तेना हाथ पग, छत्र, ध्वज अने पद्मना लांछनथी विभूषित हता. वळी ते सर्व लक्षणोथी संपूर्ण अने पुण्य तथा निपुणतानुं एक स्थान हतो. गुरु महाराजे संघ (गच्छ) नो भार धारण करवामां तेने समर्थ समजीने प्रौढ बुद्धिवाळा ते विहार करतां उन्नायु गाममां पधार्या, एटले निर्मळ ज्ञानथी भविष्यनुं हित जाणता आचार्य त्यां चैत्यमां **श्री आदिनाथ**ने प्रणाम करीने ते शेठना घरे गया; अने **धनदेव** पासे तेमणे **भीम**नी मागणी करी एटले शेठ बोल्या के--'जो मारो पुत्र आपना कार्यमां उपयोगी अर्थात् कार्यसाधक थाय, तो हुं कृतकृत्य छुं.' एम कहीने तेणे आ लोक अने परलोकना कल्याण माटे पोतानो पुत्र आचार्यने अर्पण कर्यो. पछी श्रेष्ठीनी अनुमतिथी गुरु महाराजे मिथ्यादृष्टिओने भीम (भयंकर) तथा उत्कट प्रतिभाबळथी विराजित एवा भीमने शुभ दिवसे दीक्षा आपी अने ते शिष्यनुं **शांति** एवुं नाम राख्युं. पछी जाणे प्रथमथी संकेत करेल होय तेम समस्त कळाओना ते ज्ञाता थया तथा अनुक्रमे समग्र शास्त्ररूप समुद्रना पारगामी थया. एटले **श्री शांति** मुनिने शास्त्रज्ञाता समजीने गुरु महाराजे तेमने आचार्यपदे स्थाप्या तथा गच्छनो भार सोंपी भवदव टाळवा पोते अनशन आदरीने स्वर्गे गया.

हवे **श्री शांतिसूरि** अणहिल्लपुरमां श्रीमान् **भीम**राजानी राजसभामां **कवींद्र** अने **वादिचक्री** तरीके प्रख्यात थया.

एवामां एकदा अवंतिदेशनो रहेवासी, **सिद्धसारस्वत** तरीके प्रसिद्धि पामेल अने जाणे बीजो प्रचेतस होय एवो **धनपाल** नामे कवि हतो. तेने बे दिवस उपरांतना दहीमां जंतु बतावी जे गुरु महाराजे प्रतिबोध पमाड्यो, ते **श्री महेंद्र** गुरुनी वाणीथी दृढ संबंधमां आवतां तेणे **तिलकमंजरी** नामनी कथा बनावीने पूज्य गुरुने विनंती करी

के—'आ कथानुं संशोधन कोण करशे?'

त्यारे आचार्य महाराजे विचारीने आदेश कर्यो के—'तारी कथानुं **श्री शांतिसूरि** संशोधन करशे.' एम सांभळतां ते **धनपाल कवि** पाटणमां आव्यो.

हवे ते अवसरे सूरितत्त्वना स्मरणमां तत्पर एवा आचार्य देवताना समये मठ-उपाश्रयमां ध्यानलीन हता. एटले तेमनी राह जोई बेसी रहेल धनपाल कवीश्वर, नूतन अभ्यासी शिष्य आगळ एक अद्‌भुत श्लोक बोल्यो. ते आ प्रमाणे—

खचरागमने खचरो हृष्टः खचरेणांकितपत्रधरः ।
खचरवरं खचरश्चरति खचरमुखि! खचरं पश्य ।।१।।

ए श्लोक बोलतां कविए जणाव्युं के—'हे मुनि! जो आनो अर्थ जाणता हो, तो कही बतावो.' एटले कविनुं वचन सांभळतां ते पंडित शिष्ये विना कष्टे ते श्लोकनी व्याख्या करी बतावी. जे सांभळी हर्ष पामतां धनपाल कविए कह्युं के—'आ तो शुं मात्र छे? **श्री शांतिसूरि**ना हाथनो प्रभाव भारे देखाय छे.' पछी तेणे मेघ समान प्रखर ध्वनिथी त्यां सर्वज्ञ अने जीवनी स्थापनानो उपन्यास रच्यो. तेवामां गुरुमहाराज आवीने सिंहासनपर बिराजमान थया; अने तेमणे एक प्राथमिक पाठने उचित एवा शिष्यने कह्युं के—'हे वत्स! अत्यारे आ थांभलाना आधारे बेसीने तें शुं कर्युं?'

त्यारे ते बोल्या के—'आ कविए जे कह्युं, ते में बधुं धारी लीधुं छे.' आथी गुरुए कह्युं—'तो ते कही बताव.' एम गुरुना कहेवाथी कदाग्रहनो संहार करवामां समर्थ एवा ते शिष्ये स्पष्ट अने धीर वाणीथी ते बधुं कही संभळाव्युं जे सांभळतां धनपाल कवि अत्यंत आश्चर्य पामीने कहेवा लाग्यो—'आ बालर्षिरूपे शुं साक्षात् भारती-सरस्वती छे? माटे हे भगवन्! बुद्धिना निधान तथा भारे संदेहरूप शैलने भेदवामां वज्र समान एवा आ साधुने ज मारी साथे मोकलो.'

एटले आचार्य बोल्या—'परशास्त्रनो अभ्यास करनार ए शिष्यनो अत्यारे क्लिष्ट प्रमाणशास्त्रो भणवानो समय छे, माटे एना शास्त्रसमुद्ररूप पात्रने वादीओ कल्लोलित करी नाखे, तेथी एने अभ्यासथी रहित न करवो, एवी अमारी इच्छा छे.'

त्यारे सिद्धसारस्वत ते कवीश्वर कहेवा लाग्या के—'हे भगवन्! आप आपना चरण-कमळथी **मालवदेश**ने अलंकृत करो.'

एम सांभळतां गुरु बोल्या—'आ संबंधमां जो तमारो वधारे आग्रह होय, तो प्रधान आचार्यसहित श्रीसंघनी सदा अनुमति लेवानी जरूर छे.' पछी श्री संघनी अनुमतिथी मोटा परिवारयुक्त एवा **भीमराजा**ना प्रधानो सहित तेमणे **अवंतिदेश** भणी विहार कर्यो. त्यां मार्गे विचरतां **रात्रे सरस्वती देवीए भारे प्रसाद लावीने** तेमने स्पष्ट शब्दोमां आदेश कर्यो के—'चतुरंग सभा समक्ष तमे पोतानो हाथ उंचो करशो, एटले दर्शननिष्णात बधा वादीओ पराजित थशे.' पछी आगळ चालतां **श्री भोजराजा धारानगरी**थी हर्षपूर्वक पांच कोश तेमनी सन्मुख आव्यो. ते वखते एक-एक वादीना विजयमां प्रतिज्ञाथी पण करतां ते बोल्यो के—'मारा वादीओने कोण जीती शके तेम छे? दरेक वादीना जयमां हुं एक एक लक्ष द्रव्य आपीश. मारे गुजरातना श्वेतांबर भिक्षुनुं बळ अवश्य जोवुं छे.'

पछी त्यां राजसभामां पोतपोतानो पक्ष करता बधा दर्शनोना चोराशी वादींद्रोने आचार्ये जीती लीधा. स्पष्ट वक्ता अने न्यायमां ज एक बुद्धि धरावनार एवा सूरिए प्रतिदिवसे एक एकने उंचो हाथ करीने अनायासे जीती लीधा. एटले राजाए चोराशी लक्ष द्रव्य आपीने तरत सिद्धसारस्वत कविने बोलाव्यो. तेनी पाछळ बीजा घणा वादीओ आव्या. एटले पांचसें वादीने जीते तो पांच कोटि द्रव्यनो व्यय करवो पडे तेथी राजा भय पाम्यो. हवे राजाए पूछयुं

धनपाल!—'आ **जैनर्षि**नुं नाम शुं?'

त्यारे राजाए विचार्युं के—'आ आचार्यनुं **शांति** एवुं शुद्ध नाम छे, अने शांतिनामथी ए **वादिओना वेताल** तरीके प्रसिद्ध छे. माटे वादनो निषेध करी, अहीं एमनो सत्कार करीने मोकलीए, वळी तेनी (धनपाल) कथा शोधवा माटे आव्या छे तेथी आमने हेरान न कराय नहि तर मारी सभा जीतीने कोण स्वस्थताथी जाय छे? आमणे मारा ८४ वादो जीती ८४ मेळव्या तेना गुजरातना नाणामां मारा लाखना पंदर हजार थाय एटले ८४ लाखना १२ लाख ६० हजार थाय एटला में आप्या छे. माटे हवे बुद्धिना निधान एवा **धनपाल**नी कथा शोधाववी छे.' एम धारीने तेणे **श्री शांतिसूरि**ने त्यां स्थापन कर्या. वळी बार लाखथी आचार्य महाराजे त्यां चैत्यो कराव्यां अने बाकीना रहेल साठ हजार के जे आचार्य महाराजे आप्या हता, ते आचार्ये **धारापद्रपुर**मां (थराद) मोकली आप्या. त्यां **श्री आदिनाथ**ना चैत्यमां मूळनायक प्रभुनी डाबी बाजुए तेमणे एक देवकुलिका (देरी) करावी तथा एक मोटो रथ कराव्यो. पछी तेमणे **धनपाल**नी कथा बराबर शोधी आपी. एटले राजाए आचार्यने **वादिवेताल**नुं बिरुद आप्युं.

एवामां गुजरेशना आग्रहथी तेओ कवीश्वरसहित पाछा फरीने लक्ष्मीना स्थानरूप **पाटणमां** पधार्या. त्यां आगळ **जिनदेव** शेठना **पद्म** नामना पुत्रने पूर्वे सर्प डस्यो हतो, एटले सर्व पक्षना मांत्रिकोए अनेक मंत्र अने औषधोपचार कर्या, छतां ते स्वस्थ न थयो, तेथी स्वजनोए साथे मळी तेने एक खाडामां नाख्यो. कारण के सर्पे डसेलने फरी जीवाडवाना आशयथी तेनी एवी व्यवस्था करवामां आवती, एम शिष्योना जाणवामां आवतां तेने जीवाडवा माटे तेमणे गुरुने विनंती करी. तेथी आचार्य **जिनदेव**ना घरे गया अने तेमणे तेने स्वस्थ करवा माटे जणाव्युं. पछी **जिनदेव**ने तेमणे कह्युं के—'ते सर्पे डंसेल, अमने पृथ्वीमांथी बहार लावीने बतावो'. एम सांभळतां जिनदेव ते गुरु साथे स्मशानमां गयो. त्यां भूमि खोदीने तेने बहार काढ्यो. एटले आचार्ये अमृत तत्त्वनुं स्मरण करतां हाथवती तेना देहनो स्पर्श कर्यो. जेथी ते **पद्म** तरत उठ्यो अने पद्मसमान पोताना मुखने विकसित करतां **पद्मे** गुरुना चरणे नमस्कार कर्या अने जणाव्युं के—'हे तात! हुं, स्वजनो तथा गुरु महाराज अहीं शा माटे आव्या छे?' एटले जिनदेवे बधो वृतान्त कही संभळाव्यो, जेथी ते हर्ष पाम्यो. पछी महोत्सवपूर्वक गुरुनी साथे ते पोताना स्थाने आव्यो. त्यां **जिनदेवे** गुरु महाराजने भक्तिपूर्वक विदाय करतां ते पोताना उपाश्रयमां आव्या. कारण के **उपकारी गुरुना पगलां पोताना घरे थाय, ए तो अहोभाग्यनी वात छे.**

हवे **श्री शांतिसूरि** महाराज चैत्यमां रहीने बत्रीश शिष्योने प्रमाणशास्त्र भणाववा लाग्या. एवामां चैत्य परिपाटी करवानी इच्छाथी **नड्डूलनगर** थकी **श्री मुनिचंद्रसूरि अणहिल्लपुर**मां आव्या.

त्यां भारे संपत्तिथी सुशोभित जिनालयमां **श्री ऋषभस्वामी**ने वंदन करीने तेमणे आचार्य महाराजने प्रणाम कर्यां. तेमणे अन्य जनोनी प्रज्ञामां न आवी शके अने दुर्बाध एवा बौद्धतर्कोना प्रमेय बधा धारी लीधा हता. एटले अभ्यासमां एकाग्र ध्यान राखतां (श्री मुनिचंद्रसूरिए) त्यां आवी पुस्तक विना आगळ बेसीने तेमणे दश दिवस सुधी ते बधुं सांभळ्युं.

एवामां एकदा दुर्घट प्रमेय गुरुए अनेकवार समजाव्या छतां शिष्योना समजवामां न आववाथी गुरु खेद पाम्या अने **'आ तो भस्ममां घृत नाखवा जेवुं थयुं.'** एम कहीने तेमणे निसासो नाख्यो. त्यारे **श्रीमुनिचंद्रसूरि**ए गुरु महाराजने विनंती करी के—'जे प्रकृष्ट प्रज्ञाथी उन्नत छे, तथा जे पुस्तक लईने अभ्यास करे छे, तेओ ज अहीं गुरुनी समक्ष बेसीने बोली शके छे के सर्वथा अलक्षित अने बहारथी आवेल होय, ते पण बोलवा पामे के नहिं? हे भगवन्! ते जणावो.'

ए प्रमाणे हृदयने चमत्कार पमाडनार तेमनुं वचन सांभळतां गुरु बोल्या—'शिष्योनी प्रज्ञानो अमारे पक्षपात छे, अन्य कंई कारण नथी. आजथी पूर्वे सोळमे दिवसे जे अमे दुर्घट व्याख्यान कर्युं हतुं, ते अभिप्रायथी

आजे तेनुं विवेचन करी बतावो,' एम सांभळतां, गत दिवस सुधी जेटला दिवस तेमणे जे अनुक्रमे व्याख्यान कर्युं हतुं, परविद्वानोने दुःश्रव एवुं ते बधुं अनुक्रमथी ते सुज्ञ **श्री मुनिचंद्रसूरि**ए व्याख्यान करी बताव्युं. जे सांभळतां भारे संतोष पामीने **श्री शांतिसूरि**ए तेमने आलिंगन आप्युं अने पोतानी नजीक बेसाडीने जणाव्युं के—'तमे तो रेणुथी आच्छादित थयेल रत्न छो. हे वत्स! हे सरळमति! मारी पासे प्रमाणशास्त्रोनो अभ्यास कर आ नश्वर देहनो अहीं लाभ लई ले.'

त्यारे **श्री मुनिचंद्रसूरि**ए पुनः विनंती करी के—'हे प्रभो! स्थानना अभावे अहीं शी रीते अभ्यास करवो? कारण के अहीं तेवुं स्थान दुर्लभ छे' आथी तेमणे टंकशाळानी पाछळना भागमां श्रावको पासेथी तेमने रहेवा माटे सुंदर स्थान अपाव्युं. पछी षट्दर्शनना प्रमाणशास्त्रोनो तेमणे परिश्रम विना अभ्यास करी लीधो, कारण के अध्यापक-अभ्यासीनो आवो योग थवो दुर्लभ छे. पछी ते नगरमां सर्व संघना चारित्रधारी सुविहित साधुओना उपाश्रयो थया, त्यां **श्री शांतिसूरि**ए वादींद्ररूप नागने दमवामां नागदमननी समान **उत्तराध्ययन** ग्रंथनी टीका बनावी, तेमांथी स्त्रीनिर्वाणनो पाठ उद्धरीने **श्रीमुनिचंद्रसूरि**ना शिष्य **श्री देवचंद्रसूरि**ए **सिद्धराज**नी समक्ष वाद करतां दिगंबरने जीती लीधो. तेमना वचनथी मिश्र ते टीका विद्वानोने पण दुःसाध्य छे.

एकदा **मालव** देशमां **धनपाल** कविए **धर्म** पंडितने जीती लेतां तेणे कह्युं के—'महीपीठ पर तुं एक ज कवि छे' त्यारे **धनपाले** ते पंडितने जणाव्युं के—'अणहिल्लपुरमां श्वेतांबराचार्य **श्री शांतिसूरि** समान अन्य कोई नथी.' आथी तेमने जोवानी इच्छाथी **धर्म**पंडित केटलेक दिवसे स्वर्ग लक्ष्मीना गर्वने तोडनार एवा पाटण नगरमां आव्यो. त्यां **थारापद्र चैत्यनी पासे आवेल मठमां गुरु हता.** एटले दिवसना पाछला पहोरे पंडित दर्शनमां कौतुक धरावनार **धर्मपंडित** ते मठ पासे गयो. ते वखते खसथी व्यथा पामता गुरु द्वार बंध करी, जीर्ण वस्त्र पहेरीने शरीरने औषध चोळता हता. एटले कुंची लगाडवाना छिद्रमांथी यतिओए बतावेल गुरुने जोतां तेणे विचार कर्यो के—'आने तो हुं प्रश्नमात्रथी जीती लईश.' एम धारी तेणे प्रश्न कर्यो के—'तुं कोण छे?'

गुरुए स्पष्ट जवाब आप्यो—'देव'

त्यारे तेणे पुनः प्रश्न कर्यो—'देव, कोण?'

गुरु बोल्या—'हुं'

एटले पंडिते कह्युं—'हुं कोण?'

गुरु बोल्या—'तुं श्वान'

पंडित बोल्यो—'श्वान कोण?'

गुरुए जवाब आप्यो—'तुं?'

त्यारे फरी तेणे पूछ्युं—'तुं कोण?'

एटले गुरुए तेने प्रथमनी जेम उत्तर आप्यो. ए प्रमाणे अनंतानंतनी जेम तेमनुं चक्र चाल्युं, आथी धर्मवादी चमत्कार पाम्यो. पछी द्वार उघाडतां तेणे आवीने तत्त्वोपप्लव ग्रंथना आधारे वितंडावादनी वाक्यरचना शरू करी. छेवटे ज्यारे ते वितंडावादथी विराम पाम्यो, त्यारे तेना कथनानुसारे आचार्ये तेने बधुं कही संभळाव्युं अने पुनः बोल्या के—'तारो योग पट्टादिकवेष मने आप, तो तारी अंग चेष्टा हुं करी बतावुं.' वादीए तेम करतां पोते अत्यंत आश्चर्य पाम्यो अने पगे पडीने कहेवा लाग्यो के—'हुं तमने जीतवाने समर्थ नथी, तमे ज श्रीमान् पंडित छो. **धनपाले** कहेल वचननी हवे मने खात्री थई. तेवो कवि शुं असत्य बोले?' एम कही अभिमान तजीने ते पोताना स्थाने चाल्यो गयो. **अहंकारी प्रत्ये मृदुता वापरवी ए ज तेने शांत करवानुं परम औषध छे.**

एवामां एकदा **द्रविड** देशनो वादी आव्यो. ते कंई पण हाकार वगेरे अव्यक्त भैरव (भयंकर) शब्द बोलवा

लाग्यो, आचार्य जो के तेनी भाषा जाणता हता, छतां कौतुकथी भींतपर रहेल घोडा उपर हाथ दईने ते स्फुट कहेवा लाग्या के—'कहे, तुं अन्य देशना वादी साथे संगत बोल अव्यक्तवादी एवो तुं पशुनी जेम तिर्यंच आकृतिने योग्य छे.' एम आचार्ये कहेतां सारस्वत मंत्रना प्रभावे ते अश्वाकृतिए कष्टथी पण जेनो जवाब न आपी शकाय तेवा गहन विकल्पो अत्यंत वेगथी कही बताव्या, के जेथी ते निरुत्तर थतां पशु जेवो बनी गयो, पछी ते खेद पामीने त्यांथी क्यांक चाली जतां लोको कहेवा लाग्या के—'सरस्वतीना वरदानथी आ वादिवेताल विद्यमान छतां अन्य कोई वादी उभो रही शके तेम नथी.'

एक दिवसे **श्री शांतिसूरि**ए धारापद्र पुरमां विहार कर्यो. त्यां **श्री नागिनी** देवी व्याख्यान अवसरे नृत्य करवा आवी. तेणीना पट्टपर गुरुए बेसी जवा माटे वासक्षेप नाख्यो. एम देवी साथे गुरुनो समय प्रवर्त्तवा लाग्यो. एवामां एकदा विचित्रताथी (विस्मृतिथी) गुरु तेनापर वासक्षेप नाखतां भूली गया. तेथी ते लांबो वखत उंचे ज अधर उभी रही, पछी रात्रे गुरु ध्यानमां बेठा, त्यारे ते देवी स्वरूपे गुरुने उपालंभ आपवा मठमां आवी, एटले त्यां उद्योत थतां रति करतां अधिक रूपवती रमणीने जोईने आचार्ये प्रवर्त्तक मुनिने जणाव्युं के—

'हे मुनि! शुं अहीं स्त्री आवी छे?'

त्यारे मुनि बोल्या—'ए हुं जाणतो नथी.' एवामां देवी पोते कहेवा लागी के—'आपना वासक्षेपना अभावे ऊँचे रहेतां मारा चरणे पीडा थाय छे. आवा श्रुतज्ञानमय आपने पण विस्मृति थई गई, तो ए लक्षणथी हवे आपनुं आयुष्य छ महिना जेटलुं शेष लागे छे. माटे गच्छनी व्यवस्था करीने परलोकनुं साधन करो. एम मारा जाणवामां आववाथी हुं आपने निवेदन करुं छुं' एम कहीने देवी अंतर्धान थई गई.

पछी प्रभाते पोताना गच्छ तथा संघ साथे विचार चलावी, बत्रीश सुपात्रोमांथी त्रण विद्वान मुनिओने तेमणे आचार्यपदे स्थापन कर्या. ते **श्री वीरसूरि, श्री शालिभद्रसूरि** तथा **श्री सर्वदेवसूरि** साक्षात् जाणे रत्नत्रयी (ज्ञान, दर्शन, चारित्र) होय तेम सद्व्रतथी अलंकृत अने असाधारण तेजथी दीपवा लाग्या. तेमां **श्रीवीरसूरि**नी शिष्य परंपरा न थई, **राजपुरी** गाममां तेमनुं यशोजीवन शाश्वत रह्युं. तेमज पंडितोथी परवरेल बे शाखामां अद्यापि श्री संघनो उद्धार करवामां धुरंधर एवा आचार्यो विद्यमान छे.

हवे **श्री शांतिसूरि** महाराज, यश श्रावकना **सोढ** नामना पुत्रनी साथे रैवताचल प्रत्ये चाल्या अने त्वरित प्रयाणोथी थोडा दिवसमां तेओ गिरनार तीर्थपर पहोंच्या. त्यां **श्री नेमिप्रभु**नुं ध्यान लगावीने तेमणे अनशन कर्युं एटले धर्मध्यानरूप अनलथी भवपीडारूप लताने दग्ध करतां तथा क्षुधा, तृषा, निद्रा वगेरेने न जाणतां समाधिमां रही, जगतने नमस्कार करवा योग्य एवा **श्री शांतिसूरि** पचीस दिवस व्यतीत करीने वैमानिक सुरसंपत्ति पाम्या. विक्रम संवतना १०९६ वर्ष जतां जेठ मासनी शुक्ल नवमीने मंगळवारे कृत्तिका नक्षत्रमां **श्रीशांतिसूरि**ए स्वर्गगमन कर्युं.

ए प्रमाणे पूर्वना **श्री सिद्धसेन** प्रमुख अचार्योना चरित्रोनुं अनुकरण करनार वादिवेताल **श्री शांतिसूरि**नुं आ चरित्र, आधुनिक तेमज प्राचीन विद्वानोमां प्रसिद्धि पामतां संपत्ति निमित्ते थाओ अने सेंकडो बुधजनोना सम्यक् प्रकारे अभ्यासमां आवतां यावच्चंद्रदिवाकरौ प्रसिद्धि पामो.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान अने **श्रीराम** तथा **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना विचार पर लेतां, **श्री प्रद्युम्नाचार्ये** संशोधन करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्र रूप रोहणाचलने विषे **श्रीशांतिसूरि**ना चरित्ररूप आ सोळमुं शिखर थयुं.

इति श्री शांतिसूरि प्रबंध

१७. श्री महेंद्रसूरि-प्रबंध

श्रीमान् महेंद्रसूरिने अमे नमस्कार करीए छीए के जे अगण्य पुण्य रूप वस्तुने स्थिर करवामां कोलरूप छे.

श्री धनपाल कविना गुणगान करवामां कोण आळस करे? के जेना अचळ विश्वास पर सरस्वती, पथ्य (हितकर) वचन प्रेरती हती. आंतर शत्रुओना कालरूप ते **श्री धनपाल** कोने श्लाघनीय न होय? के मिथ्यात्वरूप विषने दूर करवामां जेनी बुद्धि ज सिद्धाज्ञारूप हती. गुरुना चरणनो दास बनी हुं ते आचार्यनुं चरित्र कहीश अने तेथी पोताना आत्माने निर्मळ बनावीश तथा जन्मनुं फळ ग्रहण करीश.

अवंति नामे देश के ज्यां नव (नूतन) भोगीजनो निवास करे छे. त्यां पुरुषार्थोना आधाररूप **धारा** नामे नगरी छे के ज्यां दान आपवामां कल्पवृक्ष समान घणा दातारो होवाथी **अमरावती** जेनी आगळ असार जेवी लागे छे. त्यां अद्‌भुत वैभवशाळी **श्री भोज** नामे राजा हतो के जेना मुख-कमळमां भारती अने **लक्ष्मी** क्लेश विना निवास करती हती. आकाशमां व्यापी रहेल जे राजाना यशरूप गंगाना तीरे विधाताए पूजाविधिने माटे चंद्रमाने नाळीयेररूपे बनाव्यो.

हवे मध्यदेशमां आवेल **संकाश्य** गाममां रहेनार तथा बृहस्पति समान एवो **देवर्षि** नामे ब्राह्मण हतो. असाधारण पराक्रमी **सर्वदेव** नामे तेनो पुत्र हतो के जेना ब्राह्मण संबंधी विशिष्ट आचार विचारथी शिष्ट जनो संतुष्ट थया हता. तेना **धनपाल** अने **शोभन** नामे बे पुत्रो हता के जे मोटा विद्वानोने पण भारे माननीय हता.

एकदा त्यां **श्री चंद्रगच्छ**रूप कमळने विकास पमाडवामां भास्कर समान तथा श्रुतसागरना पारगामी एवा **श्रीमहेंद्रसूरि** पधार्या. व्याख्यानथी लोकोना संशयने छेदता ते प्रसिद्ध आचार्य **सर्वदेव** ब्राह्मणना सांभळवामां आव्या. एटले ते विप्र तेमना उपाश्रयमां गयो, त्यां **गुरुए तेनुं सन्मान कर्युं** पछी ते त्रण अहोरात्र त्यां ज समाधिपूर्वक बेसी रह्यो. त्यारे गुरुए तेने पूछ्युं के—'हे सुज्ञ शिरोमणि! तमे अमारी परीक्षा करवा अहीं आव्या छो के बीजुं कांई प्रयोजन छे?'

त्यारे ब्रह्मानी जाणे बीजी मूर्ति होय एवो द्विजोत्तम कहेवा लाग्यो के—'महात्माओनुं माहात्म्य जोवामां सुकृत उपार्जन थाय छे. तमारुं कंईक काम छे अने तेटला माटे अमे आव्या छीए, पण हे गुणनिधान! ते रहस्य वातनी जेम बीजाओने कहेवा योग्य नथी.'

एटले गुरुमहाराज एकांतमां बेसीने तेने कहेवा लाग्या के—'हे भद्र! जे कहेवा योग्य होय, ते कहो.'

एम सांभळतां ते ब्राह्मण बोल्यो के—'मारो पिता पुण्यवान् हतो, ते राजमान्य होवाथी सदा लाखोनुं दान पामतो हतो. तेथी मारा घरे निधाननी शंका छे. ए बधो **तृष्णानो विलास** छे. माटे ए बधो वृत्तान्त जाणी परोपकार करवामां सदा तत्पर एवा तमे मारापर अनुग्रह लावीने निधान बतावो के जेथी कुटुंबसहित आ ब्राह्मण पोताना स्वजनो साथे दान-भोगथी विलास करी शके. माटे हे भगवन्! आप प्रसन्न थईने मने तेनुं स्थान बतावो.'

त्यारे गुरुमहाराज **तेनी पासेथी थनार उत्तम शिष्यनो लाभ विचारीने कहेवा** लाग्या के—'हे बुद्धिनिधान! अमे तमारुं काम बराबर करी आपीशुं. परंतु आवी गुप्त वात अमे तमने कहीए, ते बदले तमे कंई नहि आपो?'

विप्रे जणाव्युं—'हे स्वामिन्! तेमांनुं हुं अर्ध तमने अवश्य आपीश.'

गुरु बोल्या—'**अमे तमारी वस्तुमांथी** इच्छानुसार अर्ध लईशुं, माटे आ बाबतमां साक्षीओ राखो. कारण के आ द्रव्यनी बाबत छे.'

त्यारे ब्राह्मणे कह्युं—'वेदवेदांग शास्त्रोनी व्याख्या करनार हुं असत्य केम बोलुं? तथापि आपना विश्वासनी खातर भले साक्षीओ रहे.' पछी त्यां रहेला लोकोने साक्षी बनावीने गुरुए ते मान्य राख्युं.

एवामां अहीं हर्षित थयेल ब्राह्मणे घरे आवीने ते वात पोताना बंने पुत्रोने कही संभळावी. पछी शुभ दिवसे तेणे आचार्यने पोताना घरे बोलाव्या, एटले ज्ञानथी ते भूमि जाणी निश्चय करीने गुरुए जणाव्युं, त्यां (गुरुए जणावेल स्थाने) भूमि खोदावीने ब्राह्मणे ते धन मेळव्युं. तेमांथी चाळीश लाख सोना महोरो नीकळी जे साक्षात् नजरे जोवा छतां निःस्पृहशिरोमणि गुरु पोताना उपाश्रयमां चाल्या गया. एटले **श्रीमान् सर्वदेव** अने **महेंद्रप्रभु** वच्चे विप्र द्रव्य आपतो अने गुरु लेता नथी-ए वाद लगभग एक वरस चाल्यो.

एकदा पोते सत्यप्रतिज्ञ होवाथी ब्राह्मण आचार्यने कहेवा लाग्यो के—'जे द्रव्य तमने आपवानुं छे, ते आप्या पछी ज हुं घरमां प्रवेश करीश.'

एटले गुरु बोल्या—'में तमने कह्युं छे के हुं मारी इच्छानुसार लईश.'

त्यारे ब्राह्मणे जणाव्युं—'भले, तमे मरजी प्रमाणे ग्रहण करो.'

आचार्य बोल्या—'तारा बे पुत्रमांथी एक मने आप. जो तारी सत्य प्रतिज्ञा होय, तो आप नहि तो पोताने घरे चाल्यो जा.'

एम सांभळतां विचारमूढ बनेल **विप्रे** कष्टथी कह्युं—'आपीश.' पछी चिंतातुर थईने ते पोताना घरे चाल्यो गयो. त्यां बिछाना विनाना खाटलापर ते निद्राविना सुई गयो. एवामां राजभवनमांथी आवतां **धनपाल**ना ते जोवामां आव्या. एटले तेणे कह्युं के—'हे तात! वचन प्रमाणे आदेश उठावनार हुं पुत्र विद्यमान छतां तमने आ विषाद केवो? माटे खेदनुं कारण मने जणावो.'

त्यारे **सर्वदेव** बोल्यो—'हे वत्स! सत्पुत्रो तारा जेवा ज होय छे के जेओ पितानो आदेश बजाववामां आवी दृढ प्रतिज्ञावाळा होय छे. जे पिताने ऋणथी मुक्त करे, जे नरकथी तेनो उद्धार करी, तेने सद्गति आपे, वेदमां तेने ज पुत्र कहेवामां आवेल छे. श्रुति, स्मृति अने पुराणोना अभ्यासनुं तथा कुळनुं तमारे ए ज फळ छे के संकटमांथी अमारो उद्धार करवो. माटे हे वत्स! तुं सावधान थईने सांभळ—अहीं जैनर्षि **श्री महेंद्राचार्य** छे के जेमणे मने आटलुं द्रव्य बताव्युं. एटले तेमनी इच्छा प्रमाणे मारा घरमांनुं अर्ध तेमने आपवुं-एवी में प्रतिज्ञा करी छे. तेथी ते बे पुत्रमांथी एक पुत्रनी मागणी करे छे, तो हवे मारे शुं करवुं? ए संकट थकी हे वत्स! हवे तुं मने छोडाव. एटले मारा निमित्ते तुं तेमनो शिष्य था.'

त्यारे बुद्धिनिधान **धनपाल** कोपायमान थईने कहेवा लाग्यो—'हे तात! तमे जेवुं कहो छो, तेवुं उचित वचन अन्य कोई न बोले. आपणे **संकाश्य** स्थानमां रहेनारा बधा वर्णोमां उत्तम, चार वेदना ज्ञाता अने सदा वेदांत साथे पारायणने धारण करनारा छीए, वळी **श्री मुंजराजा**ए पुत्र तरीके स्वीकारेल एवा **श्री भोजराजा**नो हुं बाळमित्र तथा भूमिदेव कहेवाउं. तो पतित शूद्रोनी साथे निंदित प्रतिज्ञानी खातर, पुत्र थईने हुं पोताना पूर्वजोने नरकमां केम नाखुं? एक तो तमने ऋणथी छोडावतां सर्व पूर्वजोने अधोगतिमां नाखवा पडे. सज्जन पुरुषोने निंदनीय ए कुव्यवहारनो हुं कदापि स्वीकार करनार नथी. ए कार्यनी साथे मारे कांई प्रयोजन नथी, माटे तमने रुचे तेम करो.' ए प्रमाणे पितानी अवगणना करीने **धनपाल** त्यांथी अन्यत्र चाल्यो गयो.

अहीं आंखमां आंसु लावी, मोटा संकटमां **सर्वदेव** विप्र जेटलामां निराश थई बेठो छे, तेवामां बीजो पुत्र **शोभन** त्यां आवी चड्यो, तेणे पण पिताने विषादनुं कारण पूछ्युं. एटले तेणे कारण जणावतां कह्युं के—'कोई

कार्यमां **धनपाले** अमने निराश कर्या छे तो तुं बाळक ते काम शुं बजावी शकीश? माटे तुं चाल्यो जा. पोताना लक्षणे अमे पोताना कर्म भोगवीशुं.'

ए प्रमाणे पितानुं निराशा भरेलुं वाक्य सांभळतां **शोभन** कहेवा लाग्यो के—'हे तात! आम आकुळ व्याकुळ न थाओ. हुं तमारो पुत्र, कार्य करनार बेठो छुं. **धनपाल** तो राजमान्य, निश्चिंत अने कुटुंबनुं भरण पोषण करवाने समर्थ छे, पण तेनां प्रसादथी हुं तमारो आदेश बजाववा तैयार छुं. मारो वडील बंधु तो वेद, श्रुति अने स्मृतिमां पंडित तेम ज कृत्याकृत्यमां निष्णात छे, एटले ते गमे तेम बोले, परंतु हुं तो बाल्यावस्थाथी ज सरळ छुं, तेथी एम ज समजुं छुं के—**पितानो आदेश बजाववा उपरांत पुत्रोनो अन्य धर्म नथी.** माटे तेमां कृत्य के अकृत्यने हुं गणतो ज नथी. तमो मने कूवामां नाखो अथवा तो चांडालोने अर्पण करो. तमने रुचे तेम करो.'

ए प्रमाणे सांभळतां **सर्वदेवे** तेने गाढ आलिंगन कर्युं अने पछी जणाव्युं के—'हे महामति वत्स! ऋण थकी छोडावीने मारो उद्धार कर.' एम कही तेणे ते उत्तम पुत्रने पूर्वोक्त हकीकत बधी संभळावी. जे सांभळतां **शोभन** भारे हर्षित थईने कहेवा लाग्यो—'आ कार्य तो मने अति ईष्ट छे. **जैन मुनिओ तो सत्यना निधान अने तपथी उज्ज्वळ होय छे, तेमनी संगति तो सद्भाग्यथी ज पामी शकाय. जीवदया एज धर्म छे अने वळी ते तेमनामां ज छे. वळी सत्यधर्मनुं लक्षण जे ज्ञान, ते ज आवी श्रद्धा उपजावे छे.** 'आ करवानुं छे, आ करवानुं छे, एवी चिंताथी जर्जरित तथा विषयना वेगथी व्याप्त एवा गृहवासमां कोण रहे? तेमज बंधुओने वल्लभ एवी धनलक्ष्मीथी पुरुष बंने प्रकारे भय पामे छे. अने भाग्ययोगे वस्तुओ प्राप्त थया छतां तेमां ते सदा असंतुष्ट रहे छे. हे तात! कन्यानो संबंध थतां मारी पण एवी ज गति थवानी. तो मने प्रिय एवा कार्यमां निषेध करतां तमे शा माटे शंका लावो छो? माटे उठो, स्नान करो, देवार्चा वगेरे नित्यक्रिया करीने शांत थई भोजन करो; पछी मने त्यां लई जईने ते आचार्यना उत्संगमां बेसाडो, के जेथी तेमना चरणनी सेवा करतां हुं मारा जन्मने पवित्र करुं'.

पुत्रना मुखथी अनुकूळ वचन सांभळतां विप्रनी आंखमां हर्षना आंसु आवी गयां. पछी तेणे उठतां उठतां पुत्रने आलिंगन आपीने तेना मस्तके चुंबन कर्युं. त्यार बाद सर्वक्रिया अने भोजन करी शोभनदेवनी साथे ते विप्र आचार्य महाराजना उपाश्रये गयो. त्यां पोताना प्रिय पुत्रने तेमना उत्संगे आरोपण करतां तेणे जणाव्युं के—'जेवो तमने गमे, तेवो आ पुत्र छे.' पछी **आचार्ये विप्रनी अनुमतिथी प्रमोद पूर्वक ते ज दिवसे शुभ ग्रहयुक्त शुभ लग्ने ते शोभनने दीक्षा आपी** अने शासननी हीलणा थवाना भयथी प्रभाते विहार कर्यो. एम हळवे हळवे विचरतां अने भूपीठने पावन करतां तेओ **अणहिल्लपुर**मां आवी पहोंच्यां.

हवे अहीं **धनपाले** 'एणे निधानना द्रव्यने बदले पुत्रनो विक्रय कर्यो, ए अनुचित कर्म कर्युं' एम लोकोमां जाहेर करीने पोताना पिता **सर्वदेवने** अलग कर्या. वळी तेणे विचार कर्यो के—'ते साधुओ दीक्षाधारी शूद्रो छे, तेथी मुख जोवा लायक नथी. क्यांकथी आवी चडेला ए शमना मिषथी स्त्री बाळको वगेरेने छेतरे छे, माटे तेमने देशमांथी दूर करवा जोईए. एमनुं पाखंड पण अद्भुत छे.' एम धारी राजानी आज्ञा लईने रोषथी तेणे साधुओना आवागमननो निषेध कर्यो. एम भोजराजानी आज्ञाथी ते वखते **मालव**देशमां श्वेतांबर साधुओ बार वर्ष सुधी विचरी शक्या नहि. एटले **धारानगरी**ना श्री संघे **गुर्जर** देशमां रहेल **श्री महेंद्रसूरि**ने ए बधी यथास्थिति हकीकत निवेदन करी.

एवामां गुजरातमां रहेतां गुरुमहाराजे **शोभनमुनि**ने अभ्यास करावीने वाचनाचार्य बनाव्या, के जे गुणोमां इंद्रने पण श्लाघनीय थई पड्या. तेमणे श्री अवंतिना संघनी विज्ञप्ति सांभळतां गुरु महाराजने जणाव्युं के- 'हुं मारा बंधुने प्रतिबोध पमाडवा सत्वर जईश. कारण के संघमां मारा निमित्ते आ क्लेश आवी पड्यो छे, माटे त्यां तेनो प्रतीकार साधवाने हुं ज समर्थ छुं.' एटले आचार्य महाराजे **गीतार्थ मुनिओ साथे शोभनमुनि**ने त्यां

मोकल्या. अद्‌भुत प्रौढताने पामेल ते **धारानगरी**मां आवी पहोंच्या. त्यां अवसर थतां तेमणे गोचरी माटे साधुओने चिरकाळना परिचित **श्री धनपाल**ना घेर मोकल्या, एटले बे मुनि त्यां गया. ते समये सुज्ञशिरोमणि **धनपाल** शरीरे सारी रीते तेल चोळीने स्नान करवा बेठो हतो, त्यां धर्मलाभ कहीने बंने मुनि शांत चित्ते उभा रह्या. एवामां **धनपाल**नी स्त्रीए जवाब आप्यो के 'अहीं कंई नथी! त्यारे **धनपाल** बोल्यो **'एमने कंईक तो आप. कारण के याचको घर थकी खाली हाथे जाय, ए महा अधर्म छे.'** एटले स्त्रीए दग्ध अन्न आपतां तेमणे ग्रहण कर्युं. पछी ते दहीं आपवा लागी त्यारे तेमणे पूछ्युं के—'ए केटला दिवसनुं छे?'

त्यां स्त्री बोली—'शुं दहींमां पोरा होय छे के तमे नवा दयाळु जाग्या छो? आ त्रण दिवसनुं छे. तमे लेता हो तो ल्यो, नहिं तो जलदी अहींथी चाल्या जाओ.'

त्यारे मुनिओ बोल्या—'ए अमारो आचार छे, तो तुं अदेखाई शा माटे लावे छे, कारण के अदेखाईथी महादोष लागे. माटे प्रिय वाक्य बोलवुं ते ज सुंदर छे. हवे जो तुं भ्रांति विना जीवनी स्थिति पूछती होय, तो ते त्रण दिवस उपरांतना दहींमां अवश्य जीव होय छे. ज्ञानीओनुं वचन मिथ्या कदापि न होय.'

एटले **धनपाल** पंडित निर्दोष वचन बोल्यो के—'जो एम होय, तो तेनी प्रतीति माटे तमे आ दहींमां जीवो बतावो.'

त्यारे तेमणे दहींमां अळतो नंखाव्यो, तेथी जीव बधा उपर तरत तरी आव्या. तेमां केटलाक नजरे देखाया अने केटलाक अदृश्य हता. एटले ते वर्णना अने ते रसना जीवो तेणे साक्षात् नजरे जोई लीधा. आथी ते मुनिना वचनथकी धनपालनो गर्व उतरी गयो. जेम नागेंद्रमंत्रथी विष दूर थाय, तेम ते कवीश्वरनुं मिथ्यात्व-विष दूर थयुं, पछी ते चिंतववा लाग्यो के—**'एमनो धर्म जीवदयाथी उज्ज्वळ छे. अने आ पशुहिंसादि धर्म केवळ मिथ्या लागे छे.'** एम धारी ते कहेवा लाग्यो—'जिनशासनने जाणनार एवा तमे निर्दोष धर्म आचरो छो कारण के धतूरानुं पान करनार श्वेत वस्तुने श्वेतपणे जोई न शके.' वळी पुनः ते कवीश्वरे जणाव्युं के—'तमारो गुरु कोण? क्यांथी आवो छो अने क्या शुद्ध स्थाने तमे निवास कर्यो छे?

ए प्रमाणे सांभळतां ते मुनि बोल्या के—'हे भद्र! सावधान थईने सांभळो. अमे गुर्जर देशथी अहीं आव्या छीए. **श्री महेंद्रसूरिना शिष्य शोभनमुनि** अमारा गुरु छे अने ते श्री आदिनाथना चैत्यपासे प्रासुक उपाश्रयमां रहेला छे.' एम कहीने ते महामुनि पोताने स्थाने चाल्या गया.

पछी स्नान पूर्वक भोजन करीने **धनपाल** पंडित गुरुना उपाश्रये गयो, त्यां **वडील बंधु समजीने सुज्ञ शोभनमुनि** तेनी सामे आव्या. एटले बंधुस्नेहना मोहथी तेणे तेमने आलिंगन कर्युं. पछी **गुरुए अर्ध आसन आपतां** ते बंने साथे बेठा. त्यां **धनपाल** विनयथी कहेवा लाग्यो के—'तमे ज पूज्य छो के आवा धर्मनो आश्रय कर्यो. **भोजराजा**नी आज्ञाथी धर्ममूल जिनदर्शन-जैनसाधुओने देशपार करावतां जे में मोटुं पाप उपार्जन कर्युं छे, तेनो अंत आवे तेम नथी. **सर्वदेव** पिता अने लघुबंधु तमे बंने महामति छो के जेमणे भव छेदवा माटे आवा सुगुरु अने धर्मनो आदर कर्यो अने अमे अहीं धर्माभास (मिथ्याधर्म) ने धर्मरूपे स्वीकारतां अधर्ममां पड्या रह्या, तेथी परभवे अमारी शी गती थशे, ते अमे जाणी शकता नथी. माटे मारा वंशरूप समुद्रमां रत्न समान एवा हे अनुज बंधु! कर्मना मर्मने छेदनार अने सुखकारी एवो धर्म मने बतावो.'

एटले बंधुस्नेहने धारण करता विद्वान **शोभनमुनि** कहेवा लाग्या के—'हे कुलाधार! सांभळ—दया एज मुख्य धर्म छे; तथा देव, गुरु अने धर्मरूप त्रण तत्त्व तुं सावधान थईने सांभळ—

महामोह अने कामादिक शत्रुओने जीतनार, पोते मुक्त थई अन्य जीवोने मुक्त करवाने समर्थ तथा परमानंद पदने आपनार एवा जिनभगवान ते ज देव छे. श्राप के अनुग्रह करनारा, विषयरूप कादवमां निमग्न तथा

स्त्री, शस्त्र अने जपमाळाने धारण करनारा देवो ते राजा जेवा समजवा.

तथा शम, दम, श्रद्धा अने संयमने धारण करनार, कल्याणना निधान, कर्म निर्जरा करवामां तत्पर तथा सदा संवरने सेवनारा एवा मुनि ते गुरु समजवा. परिग्रह अने महा आरंभ सेवनारा, जीवहिंसा करवामां तत्पर, सर्व प्रकारनी अभिलाषा करनारा तथा **ब्रह्मचर्यहीन होय ते गुरु शी रीते होई शके?**

तेम ज सत्य, अस्तेय, दया, शौच, क्षमा, ब्रह्मचर्य, तप, क्रिया, मार्दव, आर्जव अने संतोष ए ज जिनभाषित धर्म छे. सदोष वस्तुना दानथी अने पशुहिंसाथी अधर्म ज थाय छे, तेने धर्म मानवामां आवेल छे; परंतु ते बनावटी वस्त्रनी जेम आदरवा योग्य नथी.'

ए प्रमाणे सांभळतां **श्रीमान् धनपाल** कवि कहेवा लाग्यो के—'हे भगवन्! सद्गतिने माटे ए जैन धर्मनो में स्वीकार कर्यो.' पछी **श्री महावीर** चैत्यमां जईने तेणे भगवंतने वंदन कर्युं तथा नमस्कार करतां तेणे स्तुति करी के—

'हे नाथ! तमारुं बळ जगतनो संहार के रक्षण करवामां समर्थ छे, छतां अपराधी **संगम** देव पर तमे क्षमा केम करी?' एम चिंतवीने ज जाणे रोष पाम्यो होय तेम विमुख मन करीने तमारो रोष चाल्यो गयो. केटलाक नगरनो स्वामी राजा के जे शरीरना भोगे पण साधी न शकाय अने परिमित द्रव्य आपनार होय छे, तेवा स्वामीनी अत्यार सुधी में मोहथी सेवा बजावी. हवे मोक्षपदने आपनार अने त्रिभुवनना स्वामी एवा हे भगवन्! भक्तिपूर्वक आपनी आराधना करवी छे. पूर्वे वृथा काळव्यय थयो, तेथी मारुं मन दूभाय छे.'

एकदा पूर्णिमाना संध्या समये **धनपाल** कवीश्वरे देशमां जैनमुनिओ सुखे विहार करी शके, तेवा हेतुथी राजाने जणाव्युं के—'हे राजन्! तमारा यशरूप चांदनीथी आकाश सुधी धवलता (श्वेतता) छवाई रही छे, तो तिमिर-अज्ञानने दूर करनार अने प्रगट अर्थ (पदार्थ) ने प्रकाशित करनार एवा श्वेतांबर मुनिओ शा माटे दूर रहे?'

त्यारे राजाए कह्युं के—'हे सुज्ञ! हुं तारो अभिप्राय समजी शक्यो छुं. श्वेतांबर साधुओ भले आ देशमां विचरे. दर्शनपर कोण द्वेष करे?' एटले धारानगरीना श्री संघे मळीने **श्री महेंद्रसूरि**ने विनंती मोकलावी, जेथी तेओ सत्वर त्यां आवी पहोंच्या. एवामां दृढ निष्ठाथी मिथ्यामतिने ध्वस्त करनार एवो **श्रीमान् धनपाल** पंडित अनुक्रमे धर्मतत्त्वमां भारे विचक्षण थई गयो.

एकदा राजानी साथे **धनपाल महाकाल**ना मंदिरमां गयो अने त्यां शंकर सामे न बेसतां मंडपना एक गवाक्षमां ते बेसी गयो. एटले भोजराजाए तेने बोलाव्यो. त्यारे त्रणवार झट पाछो फरीने ते द्वार आगळ बेसी गयो. आथी राजाए विस्मय पामीने तेने पूछ्युं के—'हे सखे! आ शुं?'

त्यारे तेणे पासे आवीने कह्युं के—'हे राजन्! शंकर शक्ति (पार्वती) सहित बेठेल होवाथी लज्जाने लीधे हुं जोई शकतो नथी.'

एटले राजा बोल्यो—'आटला दिवस तमे ए देवनी केम पूजा करी?'

धनपाले जणाव्युं—आटला दिवस बाळपणाने लीधे हुं लज्जा न पाम्यो, वळी आ लोको अने तमे पण एवा ज छो, कारण के तमे ज्यारे अंतःपुरमां रमणीओ साथे विलास करता हो, त्यारे अमे जोवाने असमर्थ छीए. कामसेवामां तत्पर आपना जेवा पूर्वना राजाओए बलात्कारे आ शंकरनी पूजा प्रवर्त्तावी छे. अन्य देवनुं शिर पूजाय अने महादेवनुं लिंग पूजाय ए शुं? **बलवंत पुरुषो जे प्रवर्त्तावे ते पाछळथी अन्य लोकोना आचाररूप थई पडे छे.**'

एम सांभळतां **भोजराजा** जरा हसीने विचारवा लाग्यो के—'आ हास्य पण सत्य जेवुं लागे छे. ए संबंधमां बीजुं पण कंई एने पूछुं, ए पक्षपात विना ज उत्तर आपे तेम छे.' पछी बहार भृंगि (शंकरना एक सेवक) नी मूर्ति जोईने राजाए कौतुकथी पूछ्युं के—'आ दुर्बळ केम छे? हे कवि! तुं सिद्धसारस्वत छे, माटे एनुं कारण कहे.'

त्यारे **धनपाल** कविए विचार कर्यो के—'आ सत्य कहेवानो समय छे. अथवा तो गमे तेम पण सत्य कहेवामां मारे शो दोष छे?' एम धारीने ते बोल्यो के—'हे नरेंद्र! सांभळ—

दिग्वासा यदि तत्किमस्य धनुषा साऽस्त्रस्य किं भस्मना?
भस्माप्यस्य किमङ्गना? यदि वशा कामं परिद्वेष्टि किम्?
इत्यन्योन्यविरुद्धचेष्टितमहो पश्यन्निजस्वामिनं ।
भृङ्गी शुष्कशिरावनद्धमधिकं धत्तेऽस्थिशेषं वपुः ।।१।।

अर्थात् - जो दिशारूप वस्त्र छे, तो एने धनुष्यनी शी जरूर छे. अने सशस्त्र छे, तो भस्मनी शी जरूर छे? वळी शरीरे भस्म लगावे छे, तो एने स्त्रीनी शी जरूर छे अने रमणी छे, तो ए कामपर द्वेष शा माटे लावे छे? एम अन्योन्य विरुद्ध पोताना स्वामीनी चेष्टा जोतां भृंगीनुं शरीर मात्र हाडरूप शुष्क बनी गयुं छे.'

पछी बहार नीकळतां पर्षदामां व्यास **याज्ञवल्कय** स्मृति उंच ध्वनिथी वांचतो हतो, ते सांभळवानी इच्छाथी राजा त्यां बेठो. एवामां **धनपाल**ने विमुख थईने बेठेल जोतां राजाए कह्युं के—'श्रुत, स्मृतिओमां तारी अवज्ञा लागे छे, तेथी तुं सावधान थईने सांभळतो नथी.'

त्यारे **धनपाल** बोल्यो—'हुं लक्षण रहित तेना अर्थने समजी शकतो नथी. साक्षात् विरुद्ध कयो मूढमति सांभळे? कारण के तेमां एवुं जणाववामां आवेल छे के-विष्टानुं भक्षण करनारी गायोनो स्पर्श करवाथी पाप दूर थाय, संज्ञाहीन वृक्षो वंदनीय छे. बकराना वधथी स्वर्ग प्राप्त थाय छे, ब्राह्मणोने आपेल भोजन पितृओ (पूर्वजो)ने मळे छे, कपटी देवोने आप्त पुरुष मानेल छे, अग्निमां होमेल बलिदान देवोने प्रसन्न करे छे. श्रुतिमां बतावेल आ असार लीलाने सत्य कोण माने?'

पछी एकदा त्यां यज्ञमां हणवा माटे बांधेल महापशुनो दीन अवाज राजाना सांभळवामां आव्यो त्यारे राजाए धनपालने पूछ्युं के—'आ शुं बोले छे?'

एटले **कवीश्वर** कहेवा लाग्यो के—'हे भूपाल! हुं पशुओनी भाषा समजी शकुं छुं, माटे ए शुं कहे छे, ते जाणवा मारुं सत्य वचन सांभळो. अर्कना (देव-आकडो) अहितकारी दलनो (सैन्य-वत्तां) उच्छेद करनार सात्त्विक देहवाळो जे नाम अने गुणथी विष्णु छे, ते अजनो वध केम कराय?

वळी स्वर्गना सुख भोगववानी मारी इच्छा नथी, तेम तने में तेवी प्रार्थना करी नथी. 'हे सज्जन! तृणभक्षणथी हुं सदा संतुष्ट छुं, माटे मारो वध करवो तने उचित नथी. **तारा हाथे यज्ञमां हणायेला प्राणीओ जो स्वर्गे जता होय, तो माता पिता, पुत्र अने बांधवोनो यज्ञ केम करतो नथी?'**

आ प्रमाणे तेना विपरीत वचनथी राजा कोपायमान थईने चिंतववा लाग्यो के—'विपरीत बोलनार आ दुष्ट विप्रनो नाश करवो पडशे, परंतु लोकोना देखतां जो एनो वध करुं तो मारा माथे मोटो अपवाद आवी पडे, माटे कोईवार एकांतमां ए वध करवा लायक छे.' एम संकल्प करी पोताना भवन भणी आवतां राजमार्गमां एक बालिका सहित वृद्ध स्त्री एक बाजु उभेली राजाना जोवामां आवी एटले नववार शिर धुणावती ते वृद्ध स्त्रीने जोतां राजाए धनपालने पूछ्युं के—'आ शुं कहेवा मागे छे?'

त्यारे कवीश्वरे जणाव्युं के—'हे नरेंद्र! ए बालिका वृद्धाने पूछे छे के—शुं आ **नंदी** के **मुरारि** छे? **कामदेव शंकर,** के **कुबेर** छे? अथवा **विद्याधर** के **सुरपति** छे? **चंद्रमा** के **विधाता** छे?' त्यां नव वखत शिर धुणावीने वृद्धा कहे छे के—'एमांनो ए कोई नथी, परंतु हे पुत्री! क्रीडा करवाने माटे प्रवर्त्तमान थयेल आ पोते **भोज** भूपति छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा विचारवा लाग्यो के—'नव वारने लगता एणे नव विकल्पो बतावी मारी शंका दूर करी. तो ए दुभाषिक विना ज्ञानीनी जेम अन्य कोण बोलनार छे? तो श्रीमान् मुंजना मानथी वृद्धि पामेल ए

शुं निग्रह करवा लायक छे? नहि ज.'

एकदा राजाए **धनपाल**ने शिकारमां बोलावतां ते गयो. त्यां शिकारीओए एक शूकर (भुंड) जोयो. एटले कर्णांत सुधी धनुष्य खेंची, तेमां बाण सांधीने तेमणे ते डुक्कर तरफ छोड्युं. जेथी ते नीचुं मुख करीने पड्यो अने घोर आक्रंद करवा लाग्यो. त्यारे अन्य पंडितो राजाने कहेवा लाग्या के—'स्वामी पोते सुभट अथवा तो तेनी पासे आवा बीजा सुभटो नहि होय.' एवामां राजानी दृष्टि **धनपाल** पर पडी. अने राजाए कह्युं के—'कंई बोलशो?' एटले कवीश्वरे जणाव्युं के—हे स्वामिन्! सांभळो—

रसातलं यातु यदत्र पौरुषं,
क्व नीतिरेषाऽशरणो ह्यदोषवान् ।
निहन्यते यद् बलिनापि दुर्बलो ।
हहा! महकष्टमराजकं जगत् ।।१।।

अर्थात् - एवुं पौरुष-बळ पाताळमां पेसी जाओ, वळी एवी नीति क्यांनी के ज्यां अशरण, निर्दोष अने दुर्बळने बळवान् मारे. अहा! महाकष्टनी वात छे के आ जगतमां कोई न्यायी राजा नथी.

पछी एकदा नवरात्रिमां गौत्रदेवीनुं पूजन चालतां एकसो बकराओने वधस्थाने बांधीने तरवारना एक-एक घाथी मारवामां आव्या, त्यां पासे रहेला लोको ए वध संबंधमां राजानी प्रशंसा करवा लाग्या. त्यारे करुणानिधान **धनपाल** कवि बोल्यो के—'आ बधा विद्वानो ए कर्म करनारा अने मिथ्याप्रशंसा बोलनारा छे, कारण के जे पशुओना आर्त्तनाद सांभळ्या छतां तेमना पर दया लावतो नथी, ते पोताने माटे नरकना द्वार खुल्ला करे छे.'

एक वखते महाकालना मंदिरमां **पवित्रारोह**नो महोत्सव चालतां राजा त्यां आव्यो. अने साथे आवेल पोताना मित्र **धनपाल**ने कह्युं के—'हे सखे! तारा देवोनो पवित्र-महोत्सव कदि थतो ज नथी. तेथी ते अवश्य अपवित्र लागे छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां **धनपाल** कहेवा लाग्यो के—

पवित्रमपवित्रस्य, पावित्र्यायाधिरोहति ।
जिनः स्वयं पवित्रः कि-मन्यैस्तत्र पवित्रकैः ।।१।।

अर्थात् - पवित्र, अपवित्रने पवित्र बनावे छे, जिन भगवंत तो पोते पवित्र ज छे, तो तेने पवित्र करवा महोत्सवोनी शी जरूर छे?

शिवमां ए अपवित्रता छे, तेथी तेना भक्तोए लिंगपूजन आदर्युं छे. खरेखर ए वातनी शंकरे याचना करवाथी भक्तोए तेनो स्वीकार कर्यो छे.

एवामां हसता मुखवाळी, रतियुक्त अने ताळी देवाने उंचे हाथ करेल एवी कामदेवनी मूर्तिने जोतां राजा कौतुक पामीने ते प्रखर पंडितने कहेवा लाग्यो के—'आ ताळी देतां हसतो कामदेव स्पष्ट शुं कहेवा मागे छे?'

एटले सिद्ध सारस्वत मंत्रना योगे धनपाल कवि तरत ज सत्य बोल्यो. कारण के ज्ञानी शा माटे विलंब करे? तेणे आ प्रमाणे श्लोकमां जणाव्युं—

स एष भुवनत्रयप्रथितसंयमः शङ्करो
बिभर्ति वपुषाधुना विरहकातरः कामिनीम् ।
अनेन किल निर्जिता वयमिति प्रियायाः करं
करेण परिताडयन् जयति जातहासः स्मरः ।।१।।

अर्थात् - आ शंकरनो संयम त्रणे भुवनमां प्रसिद्ध छे. पण अत्यारे विरहथी कायर बनीने ए कामिनीने साथे राखे छे. तेथी एनाथी आपणे जीताया नथी, एम हास्यथी प्रियाना हाथमां ताळी देतां कामदेव जयवंत वर्ते छे.'

एकदा भोजराजाए **धनपाल** कविने पूछ्युं के—'तारा सत्य कथनमां कंई अभिज्ञान-निशानी छे? ते मने सत्य कही दे. अहीं चार द्वारोमांथी कया द्वारथी हुं बहार नीकळीश?हे कवींद्र! ते कहे.'

एटले ते महामतिए एक पत्रपर अक्षरो लख्या अने ते पत्र बंध करीने स्थगीधरने आप्युं. त्यां राजाए विचार कर्यो के—'आ चारमांना गमे ते एक द्वारमांथी नीकळवानुं एणे जाण्युं हशे. तो ज्ञानीनुं वचन पण अत्यारे मारे मिथ्या करी बतावबुं.' पछी मित्र पोताना घरे चाल्यो गयो. त्यां राजाने भोजन करवानुं आह्वान आव्युं. एटले पोताना सेवको मारफते मंडपना उपरना भागमां राजाए एक छिद्र कराव्युं. ते छिद्रमार्गे राजा बहार नीकळी गयो. पछी बपोरे कवीश्वरने बोलावीने राजाए आश्चर्यपूर्वक पूछ्युं. त्यारे पानदानीमांथी पत्र लईने तेणे बताव्युं. तेमां राजा 'उपरना भागमांथी ज नीकळशे.' एम लख्युं हतुं. आ तेना सत्य वचनथी राजा भारे आश्चर्य पाम्यो.

एक वखते राजाए सेतुबंध निमित्ते पोताना माणसो मोकल्या के ज्यां **हनुमाने** करेल प्रशस्ति विद्यमान हती. तेमांनां काव्यो लाववा माटे मत्स्यनी चरबी आंखे आंजीने मीणनी पाटी लई तेओ दरियामां पड्या. त्यां बीजी **तैलयुक्त** लाखनी पाटी बनावी ते प्रशस्तिपर सारी रीते तेमणे दबावी एटले तेमांथी केटलाक अक्षरो उद्धरीने तेमणे लखी लीधा. परंतु ते राक्षसना कुळनी जेम खंडित हता. ते राजाए जोतां हाटमां पडेल शाकपत्रोनी जेम खंडित अर्थयुक्त छतां अरसिक लाग्या. ते काव्यो कविओने बतावबामां आवतां पोतानी बुद्धि प्रमाणे ते चरण पूरण करवा लाग्या पण तेथी राजाना मनमां कंई आश्चर्य न थयुं. पछी तेमांथी द्विपदी अने **त्रिपदी** समस्या राजाए धनपाल कवीश्वरने पूरवा माटे आपी. जेमां द्विपदी समस्या आ प्रमाणे हती—

हरशिरसि शिरांसि यानिरेजु र्हरिहरितानि लुठन्ति गृध्रपादैः ।

धनपाले ते आ प्रमाणे पूर्ण करी—

अयि खलु विषमः पुराकृतानां विलसति जन्तुषु कर्मणां विपाकः ।।१।।

अर्थात् - जे रावणना मस्तको शंकरना शिरपर शोभतां हतां, ते लक्ष्मणथी (हरिथी) घायल थतां गीधपक्षीना पगतळे चगदाय छे. तेथी खरेखर! पूर्वकृत कर्मोनो विषम विपाक प्राणीओने पायमाल करे छे.

त्रिपदी समस्या आ प्रमाणे हती—

स्नाता तिष्ठति कुन्तलेश्वरसुता वारोऽङ्गराजस्वसुद्यूतेनाद्य जिता निशा कमलया देवी प्रसाद्याद्य च ।
इत्यन्तःपुरचारिवारवनिता विज्ञापनानन्तरं

कविए चोथो पाद आ प्रमाणे पूर्यो—

स्मृत्वा पूर्वसुरं विधाय बहुशो रूपाणि भूपोऽभजत् ।।१।।

अर्थात् - हे राजन्! सीताए स्नान करी देवीने प्रसन्न करतां तेणे पोतानी शोभाथी रात्रिने पण जीती लीधी छे, ए प्रमाणे अंतःपुरमां संचार करती वारांगनाओए विज्ञप्ति कर्या पछी राजाए पूर्वदेवने संभारी अनेकरूप करीने तेनुं सेवन कर्युं.

ए प्रमाणे सांभळतां **कीर** विद्वान हसीने कहेवा लाग्या के—'आतो जैनोने उचित वचन छे. कारण के तेमना मतमां कर्मनो विपाक कहेवामां आवे छे. वळी आ समस्यापूर्ति तो सुज्ञोने प्रमोद पमाडे तेवी छे.

एवामां **धनपाल** बोल्यो—'हे देव! कहो, के कीरनो आम कहेवामां राग छे? अथवा तो मलिनांगना सत्यने सूर्य पोते प्रगट करशे. जो मारामां मनुष्यत्व छे, तो बावन पलना लोखंडना कूळामां आवा अक्षरो अवश्य

कोतराई जशे. एवी हुं प्रतिज्ञा करुं छुं.

एम सांभळतां कौतुकथी राजाए ते प्रमाणे कराव्युं. एटले फाल-पाटपर तेवा अक्षरो कोतराई जवाथी धनपाल शुभ अने शुद्ध यशना निधानरूप छे ते राजाने प्रतीत थयो. कारण के सत्य बाबतमां कोण मत्सर धरावे?

एक दिवसे **भोजराजा**ए कवीश्वरने पूछ्युं के—'तमारा जैन-साधुओ जळाशयना द्वारने केम सुकृत मानता नथी?'

त्यारे सत्यव्रती **धनपाल** यथार्थ वचन बोल्यो के—'जळाशयमां शीतळ अने चंद्रमाना किरण समान निर्मळ जळनुं इच्छानुसार पान करी तृष्णा रहित थतां प्राणीओ मनमां प्रमोद पामे छे, ते ज ज्यारे सूर्यना किरणोथी सूकाई जाय छे, त्यारे तेमां अनंत जीवो नाश पामे छे. तेथी कूपादिना जळाशयोपर यतिजनो औदासीन्य धारण करे छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा कहेवा लाग्यो—'ए तो सत्य छे. जिनधर्म खरेखर सत्यपर ज रचायेल छे. परंतु व्यवहारमां रहेला लोकोने ते कोई रीते रुचे नहि.'

एटले राजमित्र **धनपाल** बोल्यो के—'पिताए मने एवुं शीखव्युं छे अने कंईक सांभळवाथी मारा जाणवामां आव्युं छे, पण अज्ञजन न समजे, त्यां शी वात करवी? कारण के—नरकना स्थानरूप हिंसानो त्याग करवो, असत्य न बोलवुं, चोरीनो परिहार करवो, विषयथी विरक्त रहेवुं अने परिग्रहनी मूर्छा तजी देवी—ए जैन धर्म जो पाप पंकमां पडेला लोकोने न रुचे, एटले प्रमेहना रोगवाळाने घृत न गमे, तेथी शुं घृतमां न्युनता आवी जाय छे?'

पछी **धनपाल** पंडित साते क्षेत्रोमां पोतानुं धन वापरवा लाग्यो. तेमां पण संसारथकी पार उतारवाना कारणरूप चैत्य प्रथम गणवामां आवेल छे. एम धारी तेणे **श्री आदिनाथ** प्रभुनुं चैत्य कराव्युं. त्यां **श्रीमहेंद्रसूरि**ना हाथे जिनबिंबनी तेणे प्रतिष्ठा करावी. पछी तेणे भगवंतनी समक्ष बेसीने **'जय जंतुकप्प'** ईत्यादि पांचसो गाथानी स्तुति बनावी.

एवामां एक वखते स्मृति-कथाना विस्तारमां मुग्ध बनेल राजाए पोताना मित्र **धनपाल**ने कह्युं के—'तुं पण कोई जैनकथा मने संभळाव.' एटले तेणे विद्वानोने विचारवा लायक, दोषथकी उद्धार करनारी, रसथी काव्यरूप चक्षुने निर्मळता आपनारी, विद्वानोना मुखमां कपूरना पूर समान, वर्णपूरित अने नव रसथी विस्तृत एवी बार हजार श्लोकना प्रमाणवाळी **तिलकमंजरी** नामे यथार्थ कथा बनावी. कवीश्वरे ए कथाने नव रसोथी ओतप्रोत करी दीधी. वळी ते कथानी परिसमाप्ति सुधी ते तेमां ज एक ध्याने रह्यो. जाणे पोताना सहचारी होय तेम नव रसो षड्रसोना प्रस्ताव-प्रसंगने धारण करवा लाग्या. एटले लोको तेमां सतत षड्रसोनो स्वाद अनुभववा लाग्या.

पछी कवीश्वरनी पुत्रीए तेने पूछ्युं के—'हे तात! ए ग्रंथ शुं समाप्त थयो?' अहो पिताना ध्यानमां अने पुत्रीना ज्ञानमां स्पर्धा खरेखर! आश्चर्य उपजावे तेवी हती.

हवे ते कथा समाप्त थतां कविशिरोमणि **धनपाले वादिवेताल** एवा **श्री शांतिसूरि**ने बोलाव्या. तेमणे उत्सूत्र-प्ररूपणा दूर करी तेनुं संशोधन कर्युं. कारण के ते सिद्धसारस्वत होवाथी तेनी कृतिमां शब्द के साहित्यदोष तो क्यांथी होय? पछी ते कथा वांचतां रस-संग्रहने माटे राजाए ते पुस्तकनी नीचे सुवर्णनो थाळ मूकाव्यो. एटले आधि व्याधिनो उच्छेद करवामां कारणरूप अने अक्षय तृप्तिने आपनार एवा ते कथाना रसरूप अमृतनुं राजाए त्यां संपूर्ण रीते पान कर्युं पछी ते कथा समाप्त थतां राजाए जणाव्युं के—'हुं तने कंईक पूछुं छुं अने हे कविवर! कंईक तारी पासे मागणी करुं छुं तो तेथी तुं मारापर रोष लावीश नहि. प्रथम ज कथाना आरंभमां 'शिव रक्षण करो' एम मंगलाचरणकर, तेम मारा कहेवाथी तेमां चार स्थाननुं परावर्त्तन कर. **अयोध्याने** स्थाने **धारानगरी, शक्रावतार चैत्यने** स्थाने **महाकाल, ऋषभने** स्थाने **शंकर** अने **मेघवाहनना** स्थाने मारुं नाम राख. एटले आनंद वडे सुंदर

एवी आ कथा **यावच्चंद्र दिवाकरौ** जगतमां जयवंती वर्ते.'

त्यारे **धनपाल** पंडित कहेवा लाग्यो—'हे नरेंद्र! ए प्रमाणे परावर्त्तन करतां तो शुभने बदले अशुभ थाय. हुं एक सत्य वचन कहुं छुं, ते सांभळ—जेम पूर्ण पयपात्र ब्राह्मणना हाथमां होय, तेमां मद्यनो एक बिंदु पडतां ते अपवित्र थई जाय, तेम ए नामोनुं परावर्त्तन करतां पवित्रताने हानि पहोंचवाथी कुळ, राज्य अने देशनो क्षय थई जाय. शेष (नाग) संबंधी सेवा विशेषने जे जाणता नथी, ते द्विजिह्वता (दुर्जनता)ने पामतां हीन कुळमां उत्पन्न थवाथी विद्वानोमां शुं लज्जापात्र थता नथी?

ए प्रमाणे पंडितना वचनथी **भोजराजा**ने कोप चड्यो. तेथी टाढ दूर करवाने पूर्वे सामे राखवामां आवेल सगडीना धगधगता अंगारामां तेणे ते पुस्तक नाखी दीधुं. आथी रोष पामतां धनपाल कठोर वचनथी हवे आनी साथे नहीं बोलुं एवी प्रतिज्ञा करतां राजा प्रत्ये कहेवा लाग्यो के— हे भोज! तुं पाको मालवीय छे. ते तारा कपटपूर्ण व्यवहारथी धनपाळने पण न छोड्यो तो बीजानी शी वात करवी? काव्य अने स्वजनो प्रत्ये आवी वंचना क्यांथी आवी? ('बस, हवे फरीवार तारी साथे बोलवुं नथी. तुं मालवपति थईने विपरीत केम (आचरे छे) माने छे? वळी कृत्यमां तो तुं खरेखर! अधम छे, के **धनपाल**ने पण मूक्यो नहि. हुं एम पूछुं छुं के आ वंचनकळा तुं क्यांथी शीख्यो?')

पछी खेदयुक्त मनथी ते पोताना घरे जई बीछाना विनाना खाटलापर नीचुं मुख करीने सुई गयो. एटले स्नान, देवपूजा, भोजन के बोलवा जतां तेने कंटाळो आववा लाग्यो. कथानी वात पण ते भूली गयो अने निद्रा पण तेनाथी दूर थई गई. पोताना पितानी आवी स्थिति जोई साक्षात् सरस्वती समान एवी **नव वरसनी तेनी बालिकाए** खेदनुं कारण पूछतां तेणे सत्य हकीकत पुत्रीने कही संभळावी. जे सांभळी तातने धीरज आपतां ते बाळा बोली के—'हे तात! राजाए ते पुस्तक अग्निमां नाखी बाळी दीधुं, तो शुं थयुं? पण ते मारा हृदये अक्षय छे. माटे तमे उठो अने स्नान, देवपूजा, भोजन वगेरे करो. ए बधी कथा हुं तमने संभळावीश. आथी धनपाल कविए स्नानादि बधी क्रिया संतोषपूर्वक समाप्त करी अने पछी तेणे पुत्रीना मुखथी समस्त कथा सांभळी तेमां जेटली वात तेना सांभळवामां आवी न हती. तेटली ते बोली शकी नहि. एटले कथामां त्रण हजार श्लोक न्यून रह्या. जे बीजा संबंधथी जोडीने तेणे बधा पुस्तकमां लखी लीधा.

हवे त्यां अपमान थवाथी **धनपाल** कवीश्वर धारानगरीथी चाली नीकळ्यो. कारण के **सज्जनो मानहानि थाय त्यां स्थिति करता नथी.** पश्चिम दिशा तरफ क्षोभ विना चालतां ते नगरजनोथी सुशोभित एवा **सत्यपुर**मां आवी पहोंच्यो. त्यां शाश्वत पद समान **श्री महावीर चैत्य** दृष्टिगोचर थतां ते महापंडित परम आनंदने पाम्यो. पछी भगवंतने नमस्कार करी तेणे विरोधाभास अलंकारोथी अलंकृत एवी **'देव निम्मल'** ईत्यादि प्राकृत स्तुति बनावी के जे अद्यापि विद्यमान छे.

हवे अहीं केटलाक दिवस पछी **भोजराजा**ए **धनपालकवि**ने बोलाव्यो, परंतु तेना चाल्या जवानो वृत्तान्त सांभळवामां आवतां राजा खेदातुर थई कहेवा लाग्यो के—'जो मनमां विचार करीए, तो ते कर्कश वचनने लीधे गयो ते ठीक, परंतु सरस्वती समान सत्यवादी तेना जेवो पंडित बीजो कोई नथी. अमे भाग्यहीन के एवा पुरुषना संसर्गथी रहित थया. तेना निवासनुं पुण्य हवे आ देशने क्यांथी मळे?' ए प्रमाणे अमावस्यामां चकोरनी जेम **भोज** राजा खेद पामतो रहेवा लाग्यो. एवामां कौलमतनो **धर्म** नामे पंडित त्यां आवी चड्यो. तेनो वृत्तान्त आ प्रमाणे छे.

अनंत गोत्रो (पर्वतो)ना आधाररूप, पुरुषोत्तम (कृष्ण अथवा उत्तम पुरुषो) ना आश्रयरूप तथा अनेक रत्नोना निधान रूप समुद्र समान **लाट** नामे देश छे. ज्यां **नर्मदा**ना तरंगो दर्शन करता लोकोने पावन करे छे. एवुं

भृगुकच्छ नामे त्यां नगर छे. त्यां वेद वेदांगनो पारंगामी अने जाणे साक्षात् शरीरधारी ब्रह्मा होय एवो **सूरदेव** नामे मुख्य ब्राह्मण रहेतो हतो. सतीओमां शिरोमणि एवी **सावित्री** नामे तेनी पत्नी हती के जे नीतिपात्र अने दानेश्वरोमां प्रख्यात हती. तेमना **धर्म** अने **शर्म** नामना बे पुत्रो हता के जे पितानी आशा ना स्थान हता, तेम ज **गोमती** नामे तेमनी एक पुत्री हती. तेमां धर्म पोताना नामथी विपरीत अने शठपणाथी ते अनीतिए उतर्यो, जेथी सूर्यने **शनिश्चर**नी जेम पिताने ते संतापजनक थई पड्यो.

एकदा पिताए **धर्म**ने शिखामण आपतां समजाव्युं—'हे वत्स! आजीविका माटे धन उपार्जन कर. कारण के ते विना उदरपूरण माटे तने धान्य मळवानुं नथी.' पछी पोते कळाहीन, विद्यारहित अने नीच जनना संसर्गथी सर्व प्रकारना उपाय थकी भ्रष्ट होवाथी ते ईक्षुक्षेत्रनो रक्षक बन्यो. त्यां वडवृक्षमां एक क्षेत्रपाल हतो. एटले दैवयोगे ते धर्म भक्तिपूर्वक निरंतर तेनी पूजा करवा लाग्यो.

एवामां एक वखते **धर्म** पोताना स्वामीना घरे गयो. ते दिवसे कोई पर्व होवाथी क्षेत्रपतिए तेने कह्युं के-'आजे अहीं भोजन कर.' त्यारे तेणे स्पष्ट शब्दमां जणाव्युं के—'क्षेत्रपालनी पूजा विना हुं प्राणांते पण भोजन करतो नथी.' एम कहीने ते खेतरमां गयो. त्यां क्षेत्रपालनी पूजा करीने जेटलामां ते खेतरना माळापर बेठो, तेवामां वाडनी बहार क्षेत्रपालना प्रसादथी जाणे साक्षात् शक्ति-देवी होय तेवी एक नग्न योगिनी तेना जोवामां आवी. एटले योगिनीए तेनी पासे एक ईक्षुलता (शेलडीनो सांठो) मांगी, त्यारे तेणे अतिभक्तिपूर्वक तेने भारे रसदार शेलडीना बे सांठा आप्या. तेना आस्वादथी अति प्रसन्न थयेल ते योगिनी कहेवा लागी के—'हे वत्स! शुं तुं शरमाय छे के नहि?'

ते बोल्यो—'हे महामाया! हुं शरमातो नथी.'

त्यारे पुनः ते बोली—'तो वचन आप.' एटले तेणे वाड बहार आवी, आदरपूर्वक वचन आप्युं. त्यां योगिनीए **तेना मुखमां अमृत समान ईक्षुरसनो कोगळो नाख्यो अने तेना मस्तकपर पोतानो हाथ राख्यो. पछी ते सरस्वती देवी क्षणवारमां अदृश्य थई गई.** एटले धर्मे ते बधुं मूकी दईने ते त्यांथी तरत चाली नीकळ्यो अने हळवे-हळवे आगळ चालतां ते नर्मदाना तीरे आवी पहोंच्यो. त्यां सारस्वत तेजना उदयथी ते चिंतव्या विना काव्यो बनाववा लाग्यो. नर्मदानुं तेणे आ प्रमाणे वर्णन कर्युं—

'अहो! आ पातालमूलनो स्पर्श करनारा अने विंध्याचलने भेदनारा नर्मदाना जळ प्रवाहो त्रास उपजावे छे. अने तटपर उत्पन्न थयेला वृक्षोने जे लीलामात्रथी उखेडी नाखे छे, नचावे छे. आघात पमाडे छे, क्षणवार पाछा हठावे छे. पछी आगळ प्रेरे छे, क्षणवार तजे छे. पाछा स्वीकारे छे. क्षणवार पाछा हटावे छे अने पाछा प्रगट करे छे.

पछी नावथी नदी उतरीने ते नगरमां आव्यो अने पोताना घरे आवतां माताए वात्सल्यथी तेनो करस्पर्श कर्यो तेम ज पिताए तेने बोलाव्यो के—'हे वत्स! आजे मोडो केम आव्यो? वळी लघु बंधुए प्रेम बतावीने पोताना शिरथी तेना हृदयनो स्पर्श कर्यो. तेमज 'हे भाई! हे भाई!' एम भगिनीए पण तेने वारंवार गद्गद् शब्दथी बोलाव्यो. एटले ते बधानी अवगणना करतां कर्कश शब्दथी धर्म कहेवा लाग्यो के—

'हे माता! तुं पण मारो स्पर्श न कर. हे तात! तुं पण मने तृप्ति न पमाड, हे भ्रात! तुं पण मने वृथा शा माटे भेटे छे? हे बहेन! तुं विना कारणे शा माटे रोवे छे? जे निर्दयो निःशंक थईने मदिरा पीवे छे, मनुष्यनुं मांस खाय छे अने निर्लज्ज थईने चंडालणी प्रत्ये गमन करे छे, आपणे ते कौल मतना छीए.'

एम कही, स्नेहनो त्याग करतां ते तरत ज घर थकी चाली नीकळ्यो. पछी ते **अवंति** देशना साररूप एवी **धारा** नगरीमां गयो. त्यां मानपर्वतना शिखरे चडेल तेणे राजभवनना द्वारपर बेसीने **भोज** राजाने पोतानी मोटाईनो

श्लोक लखी मोकल्यो के—'**गौड** देशमां में **शंभुपंडित**ने जीती लीधो. **धारा** नगरीमां **विष्णु**ने, **मंडल** नगरमां **भट्टि**ने अने **कान्यकुब्ज**मां **पशुपति**ने जीती लीधो. तेम जल्पवादमां बीजा पण केटलाये वादीओने में जड जेवा बनावी दीधा छे. हे राजन्! ते **धर्मपंडित** पोते अहीं आवीने द्वारपर बेठो छे. वळी दर्शनोमां जे कोई पृथ्वीपर पोताने पंडित मानतो होय, ते तर्क, लक्षणा, साहित्य के उपनिषद्मां मारी सामे आवीने वाद करवा उभो रहे.' पछी भोज राजाना कहेवाथी भोज राजा समक्ष आवतां सभाने तृण समान माननार एवो ते अहंकारथी आवी कहेवा लाग्यो के—'चिरकालथी सेवन करेल विद्वानोनो अप्रतिमल्लतानो मद हवे गळी जाओ. कारण के अपूर्व रूपधारी तपोधन (ब्राह्मण) रूपे आ पोते सरस्वती तारी पासे उपस्थित थई छे. वळी हे राजेंद्र! हुं उंचो हाथ करीने जणावुं छुं के- जेनामां शक्ति होय, ते वादी मारी समक्ष आवीने वाद करे. वितंडावादमां प्रवीण एवो हुं वाद करवाने तत्पर छतां जगतमां कोई पंडित नथी के जे मारी सामे बोली शके. हे नरदेव! वधारे शुं कहुं? आ **धर्म** पंडितनो पृथ्वीपर संचार थतां हिमालयमां ज मात्र बलवान् प्रमाण (परिमाण)नी पटु रही छे, गरुडमां ज दृढ पक्ष (पांख) छे, पर्वतोमां ज प्रतिवादिता (प्रतिध्वनि) रही छे अने देवताओमां ज पात्रना आलंबननो आग्रह रह्यो छे, तेम ज कवि अने बुधनी ख्याति तो मात्र ग्रहोमां रही छे. ए बधो आ सारस्वतीनो विलास छे. बृहस्पति मंद बुद्धिवाळो थईने एक बाजु बेसी रहे, तेम बिचारा इंद्रथी पण शुं थाय तेम छे? वादीओमां सिंह समान हुं वादी विद्यमान छतां महेश्वरथी पण एक अक्षर बोली शकाय तेम नथी. हे भूपाल! हुं आचार्य छुं, हुं कवि अने मांत्रिक छुं, हुं आ समस्त पृथ्वीमां तांत्रिक अने आज्ञासिद्ध छुं, हुं दैवज्ञ अने वैद्य छुं, हुं वादिराज अने पंडित छुं, वधारे शुं कहुं, सिद्धसारस्वत पण हुं पोते ज छुं.'

ए प्रमाणे तेना आडंबरयुक्त काव्यवचनो सांभळतां महापंडितो बधा नीची दृष्टि करी रह्या. एटले भोजराजा चिंतववा लाग्यो के—'एक ते **धनपाल** कवि विना आजे मारी सभा शून्य जेवी लागे छे. ए प्रमाणे अपमान पामेल ते हवे अहीं आवे पण शी रीते? जो ते कोई रीते अहीं आवी जाय तो आ अभिमानी पंडितनो प्रतिकार थाय.' एम धारीने तेणे सर्वत्र पोताना विश्वासपात्र पुरुषोने मोकल्या. तेमणे सर्व देशमां शोध करता मरुमंडळमां आवेल **सत्यपुर** नामना नगरमां राजपुरुषोने ते हाथ लाग्यो. एटले तेमणे भारे विनीत वचनोथी तेने शांत पाड्यो. त्यारे उदासीन भावे रहेल ते कहेवा लाग्यो के—'हुं तीर्थनी सेवामां छुं, माटे आवनार नथी.'

आथी तेमणे यथास्थित वृत्तान्त राजाने निवेदन कर्यो, त्यारे राजाए तेने पुनः नम्रतापूर्वक प्रिय अने कोमळ वचनथी कहेवडाव्युं के—'**मुंज** राजा तमने पुत्र समान मानतो, तेथी तमे मोटा अने हुं कनिष्ठ छुं. तो कनिष्ठना वचनथी शुं रोष लाववो जोईए? पूर्वे ज्येष्ठ होवाथी तमने उत्संगे बेसाड्या अने **श्री कुर्चाल सरस्वती** (दाढी मूछयुक्त भारती) एवुं बिरुद आप्युं हतुं. अत्यारे भाग्ययोगे राज्य पामतां वृद्ध एवा अमने तमे तजी दीधा, छतां जय के पराजयमां अवंतिदेश ए ज तमारुं स्थान छे. माटे मारा संतोषनी खातर तुं अहीं आव, जो नहि आवे तो ए कौल परदेशी धारा नगरीने जीतीने चाल्यो जशे, ते तने उचित छे के अनुचित छे? ते तुं पोते ज जाणी शके छे. ए उपरांत तने कहेवडावुं, ते बिलकुल योग्य जणातुं नथी. आवी बाबत तो एक सामान्य माणस पण बराबर समजी शके, तो पछी महा विद्वान एवा तारी शी वात करवी? हवे तने गमे ते कर.'

ए प्रमाणे सांभळतां पोतानी जन्मभूमिना पक्षपातथी **धनपाल** कवि सत्वर धारानगरीमां आव्यो. एटले तेनुं आगमन जाणवामां आवतां भोज भूपाल पगे चालीने तेनी सन्मुख आव्यो त्यां साथे मळतां राजाए तेने दृढ आलिंगन दईने बुद्धिनिधान **धनपाल**ने कह्युं—'हे मित्र! मारो अविनय क्षमा कर.'

त्यारे **धनपाल** अश्रु लावीने बोल्यो के—'हे महाराज! हुं ब्राह्मण छतां जैनलिंगथी निःस्पृह छुं अने सद्व्रतमां अवश्य सस्पृह छुं. वळी मारा पर थतो तारो मोह मने अहीं विलंब करावशे कारण के उदासीन पुरुषना

मनमां मान के अपमान कंई असर करता नथी.'

एटले राजाए जणाव्युं के—'ए संबंधी तारा माटे मने जरा पण खेद नथी; परंतु तुं विद्यमान छतां भोजनी सभा परवादीथी पराभव पामे, ए एक रीते तारो ज पराभव छे. एम सांभळतां कवीश्वर बोल्यो के—'हे नरेंद्र! तुं खेद करीश् नहि, प्रभाते ए भिक्षु अनायासे पराजित थशे' आथी भोज भूपति हृदयमां हर्ष पामतो पोतना घरे गयो अने **धनपाल** पण वेष तजीने पोताना घरे आव्यो, के घर संमार्जन विनानुं हतुं, ससला अने उंदरोना बिलोथी व्याप्त अने घणा राफडाथी ते भारे दुर्गम बनी गयुं हतुं.

पछी प्रभाते राजभवनमां आवतां राजाए तेने मकाननी शुद्धि पूछी त्यारे **धनपाल** कहेवा लाग्यो के-'हे राजन्! सत्य वचन सांभळो-अत्यारे आपणा बंनेनुं सदन समान छे. कारण के तारा मकानमां सुवर्णना विशाल पात्रो छे अने मारा घरमां विस्तृत आर्त्तनाद थई रह्यो छे. तारुं भवन बधा परिजनथी विभूषित छे अने मारुं गृह समस्त परिजनथी रहित छे, वळी तारुं भवन हाथी-हथणीओथी गहन छे अने मारुं घर रज-धूळथी व्याप्त छे.'

हवे राजाए इंद्र समान पोतानी सभामां **धर्मवादीने** बोलावीने जणाव्युं के—'हे वादी! सांभळ, आ वादीओना गर्वने उतारनार **धनपाल** कवीश्वर आव्यो छे.' त्यारे पोताना पूर्व परिचित **छित्तप** नामना विद्वानने जोई धर्म तेने संतोष पमाडवा माटे आ प्रमाणे काव्य बोल्यो—

श्री छित्तपे कर्द्दमराजशिष्ये सभ्ये सभाभर्त्तरि भोजराजे ।
सारस्वते स्रोतसि मे प्लवन्तां पलालकल्पा धनपालवाचः ।।१।।

अर्थात् - कर्दमराज-शिष्य श्री छित्तप सभासद अने भोजराजा सभापति छते पलाल-घासतुल्य धनपालनी वाणी मारा सारस्वत प्रवाहमां तणाती-डूबती थाओ.

त्यारे धनपाल कविए एज श्लोकने विपरीतपणे बतावतां जणाव्युं के—

धनपेति नृपस्याऽऽमं-त्रणे मे मम तद्गिरः ।
आलवाचः प्लवन्तां हि सिद्धसारस्वते झरे ।।१।।

अर्थात् - धनप ए राजानुं आमंत्रण बनावतां हे धनप! एवो अर्थ थाय. मे एटले मम अर्थात् ते धर्म पंडितनी वाणी एटले आलवाचः—एटले बकवास सिद्धसारस्वत प्रवाहमां तणाओ.'

ए प्रमाणे राजमित्रे शब्द खंडनथी तेज अक्षरोमां एनो ज प्रतिपक्ष अर्थ कही बताव्यो.

पछी **धनपाल** कविए तेने समस्या आपी, जे तेणे एकसो आठवार पूरी करी, परंतु तेमांनी एक निर्दोष के विद्वानोने आश्चर्य पमाडे तेवी न हती. ते **धर्म** विद्वाने छेवटे आ प्रमाणे समस्या पूरी—

समस्यानो पूर्वार्ध आ रीते छे—

इयं व्योमाम्भोधेस्तटमिव जवात्प्राप्य तपनं ।
निशानौ र्विश्लिष्टा घनघटितकाष्ठा विघटते ।।

अर्थात् - एकाकार काष्ठ (दिशा) वाळी आ निशा नौका व्योम सागरना किनारा जेवा सूर्यने पामीने विघटित थई रही छे.

समस्यापूर्ति, उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे—

वणिग्वक्त्राक्रन्दत्विषि शकुनिकोलाहलगणे ।
निराधारास्तारास्तदनु च निमज्जन्ति मणयः ।।९।।

अर्थात् - वणिकमुखना आक्रंद समान पक्षीओ कोलाहलमां अने निराधार थयेल तारारूप मणिओ निमग्न थई रह्या छे.

अत्यंत कर्णकटु होवाथी, चंद्रास्तना वर्णनथी अने न्युनोक्ति दूषणथी सभ्य जनोए ए समस्यापूर्ति तेनी मान्य न करी, एटले **धनपाल** बोल्यो—'ए समस्यापर वज्र पडो' आथी मिथ्या आडंबर राखनार ते कवि विलक्ष थई गयो अने जयनी आशा तेनी भग्न थई गई.

एटले धनपाल कवीश्वरे विद्वानोने मनोहर लागे तेम ते समस्या अनायासे पूरी करी. कारण के ए तेने मन नजीवी वात हती.

असावप्यामूलात् त्रुटितकरसन्तानतनिकः ।
प्रयात्यस्तं स्रस्तासितपट इव श्वेतकिरणः ।।

अर्थात् - आ चंद्र पण मूलथी तूटेला किरण रूप ताणावाळो फाटेला सढनी जेम अस्तने पामी रह्यो छे.

त्यारे भग्न थतां पराभवरूप समुद्रमां निमग्न थयेल **धर्मने** कविए प्रतिबोध पमाडतां, नावनी जेम आश्वासन आपीने तेनो उद्धार कर्यो. मद न करवा माटे तेणे सूचव्युं के—

आ संसारं कइ पुंगवेहिं पइदियह गहियसारो वि ।
अज्जवि अभिन्नमुद्दो व्व जयइ वाया परिष्फंदो ।।

आ संसारना आरंभथी कवि पुंगवो ए नित्य सार ग्रहण करवा छतां हजु मुद्दा ज न उखेडी होय एवो वाणीनो परिस्पंद (रचना) जय पामे छे

पछी **धनपाल** पंडिते राजाने संमति आपतां जणाव्युं के—'हे राजन्! धर्म पंडितने एक लक्ष द्रव्य आपो.'

त्यारे **धर्म** बोली उठ्यो के—'आ ब्रह्मांडना उदररूप कोटर केटलुं, तेमां पण माटीना गोळारूप आ पृथ्वीमंडळ केटलुं, तेमां पण आवा करोडो राजाओ छे तेमां केटलाक याचकोनी गद्गद् गिराथी दान आपे छे. हा! अमे तो खरेखर! वज्र जेवा कठिन छीए के तेमनी पासे ज याचना करीए छीए. माटे असार अने नश्वर ए धन हुं लेनार नथी. कारण के पोताना अभिमानरूप जीव हराई जतां पुरुष शब तुल्य छे.' एम बोलीने पुनः ते कहेवा लाग्यो के—'एक **धनपाल** कवि ज बुद्धिनिधान छे, एम मारा मनमां हवे प्रतीति थई छे. निश्चय एनी समान कोई पंडित नथी.'

एटले विस्मय पामतां सिद्ध सारस्वत कवि कहेवा लाग्यो के—'हे! सुज्ञ नथी' एम न कहेवाय कारण के **'रत्नगर्भा वसुंधरा'** पृथ्वीमां अनेक पुरुष-रत्नो होय छे. अणहिल्लपुरमां **श्रीमान् शांतिसूरि** बुध शिरोमणि छे, के जे जगतमां जैन तरीके विख्यात छे. हे मित्र! तुं तेमनी पासे जा.' पछी राजाए अने **धनपाले** स्नेहपूर्वक तेने विसर्जन कर्यो एटले तेना विजयमां भग्नाश थयेल ते पोताना मनमां चिंतववा लाग्यो के—'अत्यार सुधीमां कोईए मारा वचनने स्खलना पमाडी न हती. आवा मारा वचनने प्रतिहत करनार ए ब्राह्मण खरेखर! साक्षात् **सरस्वती** छे. माटे ते आचार्यने अवलोकन करवाना मिषे अहींथी प्रयाण करवुं, ते ज उत्तम छे.' एम धारीने तेणे गुर्जर देश तरफ प्रयाण कर्युं.

हवे अहीं प्रभाते भोजराजाए ते धर्म पंडितने पोतानी सभामां बोलाव्यो. पण 'ते नथी' एम जाणवामां आवता **धनपाल** कवि बोल्यो के—

धर्मो जयति नाधर्म्म इत्यलीकीकृतं वचः ।
इदं तु सत्यतां नीतं धर्म्मस्य त्वरिता गतिः ।।१।।

अर्थात् - धर्म जय पामे छे. पण अधर्म नहि-ए कहेवत मिथ्या थई अने धर्मनी गति उतावळी होय छे, ए वचन तेणे सत्य करी बताव्युं.

एवामां राजाए **धनपाल**नी प्रशंसा करतां जणाव्युं के—'जेम जीव विना शरीर अवयवयुक्त छतां बीजाने उत्तर आपवामां ते समर्थ नथी. तेम सुज्ञशिरोमणि एक **धनपाल** मित्र विना धर्मना वादमां सभा बधी मुंगी बनी गई हती. माटे ते ज एक सदा मारी पासे रहो.' एम सांभळतां राजाना सन्मानथी **धनपाल** कवीश भारे संतुष्ट थई रह्यो.

हवे अहीं **धर्म** अणहिल्लपुरमां पहोंच्यो. **श्री शांतिसूरि**ए वादमां तेने जीती लीधो. एटले तेणे आचार्यने भारे पोतानी लागणी बतावी—ए बधुं तेना चारित्र थकी जाणी लेवुं. पृ. २१९ पर.

अहीं **शोभनमुनि** महाविद्वान् छे अने आगम-ज्ञानना निधान छे. तेमणे एकदा यमलंकारथी अतिभक्तिपूर्वक तीर्थंकर प्रभुनी स्तुति बनावी. ते बनावाना ज एक ध्यानमां होवाथी ते **एक श्रावकना घरे त्रणवार भिक्षा लेवा गया** एटले **श्राविकाए पूछ्युं के—'हे भगवन्! त्रणवार तमे शा कारणथी आव्या?'**

मुनि बोल्या—'चित्तना विक्षेपने लीधे हुं गमनागमन जाणी शकतो नथी.' ए वात श्राविका पासेथी जाणवामां आवतां गुरु महाराजे तेमने पूछ्युं, त्यारे **शोभनमुनि**ए जणाव्युं के—'स्तुतिना ध्यानमां होवाथी हुं कंई जाणी न शक्यो.' पछी गुरुए ते काव्यो जोयां, जेथी चमत्कार पामीने तेमणे भारे हर्षपूर्वक **शोभनमुनि**नी प्रशंसा करी. ते ज वखते द्रष्टिदोषथी **शोभन** मुनि श्री संघना अभाग्ये ज्वरथी पीडित थवाथी तत्काल परलोकवासी थया. एटले सिद्ध सारस्वत कवीश्वरे पोताना बंधुना दृढ स्नेहथी ते चतुर्विंशति जिनस्तुतिनी पोते टीका बनावी.

एकदा पोताना आयुष्यनो अंत नजीक आवेल जाणी **धनपाल** पंडिते गुरु पासे परलोक साधवा माटे राजानी अनुमति लीधी. एटले **श्री महेंद्रसूरि** पासे तेणे गृहस्थपणामां ज संलेखना करी त्यां तीव्र तपथी देहशुद्धि करतां, अंतरशत्रुने जीततां अने निरतिचारपणे सम्यक्त्व पाळतां ते गुरु पासे रह्यो. वळी श्रुतना पारगामी एवा स्थविर मुनिओ पासे काळ निर्गमन करतां प्रांते देहनो त्याग करीने ते **सौधर्म** देवलोकमां गयो. ते वखते उभयलोकमां हितकारी तेनुं अद्‌भुत पांडित्य जोई संतुष्ट थतां पोते गुरु पण अनशनपूर्वक स्वर्गे गया.

ए प्रमाणे **श्रीमान् महेंद्रसूरि**ना हाथे दीक्षित थयेल **श्री शोभन** मुनि तथा बुद्धिनिधान **श्री धनपाल** कविनुं चरित्र सांभळी भव्यजनो जैनधर्मनी दृढ वासना वडे मिथ्यातिमिरने दूर करनार एवुं सम्यक्त्व-रत्न प्राप्त करो.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्री प्रभाचंद्रसूरि**ए मन पर लेतां, **श्री प्रद्युम्नाचार्ये** संशोधन करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री महेंद्रसूरि**ना चरित्ररूप आ सत्तरमुं शिखर थयुं.

ते **श्री देवानंदसूरि** प्रमोद विस्तारो के जेमणे हैम व्याकरणमांथी उद्धरीने सुज्ञोने सुगम बोध थवा माटे नवुं **सिद्ध सारस्वत** नामनुं व्याकरण बनाव्युं. तेमना वंशरूप कनकाचलने विषे कल्पवृक्ष समान अने अमने पदअर्थ आपनारा एवा **श्रीमान् प्रद्युम्नसूरि** आ वाणी प्रगटावे छे.

इति श्री महेंद्रसूरि-प्रबंध

साधु को आहार, वस्त्र, पात्र, औषधी, आदि के दान से भी वसती (रहने के लिए उपाश्रय) का दान सर्व श्रेष्ठ दान है।

-जयानंद

१८. श्री सूराचार्य-प्रबंध

विद्वानो अने श्री संघथी पूजित एवा **श्रीमान् सूराचार्य** तमारुं कल्याण करो के जेमणे पोतानी अधिकतर प्रज्ञाथी बृहस्पतिने पण जीती लीधो. वळी जेणे पोतानी प्रतिभाथी **भोजराजा**नी सभा जीती लीधी, एवा **श्री सूराचार्य** प्रभुना अमे अहीं केटला गुणगान करीए? विद्वानोना हृदयरूप भींतमां चित्रनी जेम स्थिर थयेल अने वर्णयश वडे उज्ज्वळ एवुं तेमनुं आश्चर्यकारी चरित्र जाणीने चित्तनी स्थिरता माटे हुं वर्णवुं छुं.

राजानी न्याय-पद्धतिनी प्रशस्ति समान अने **गुर्जर** देशना मंडनरूप एवुं पूर्वे **अणहिल्लपुर** नामे नगर हतुं. त्यां दुष्ट राजाओने दबावनार, पोताना प्रतापथी क्षत्रियोने वश करनार अने चक्रवर्ती समान एवो **भीम** नामे राजा हतो. शास्त्र-शिक्षा आपवामां गुरुरूप, अक्षत सत्यव्रतथी सुशोभित अने क्षत्रिय कुळमां उत्पन्न थयेल एवा **द्रोणाचार्य** नामे ए राजाना मामा हता. तेमना **संग्रामसिंह** नामे भाईनो **महीपाल** नामे पुत्र राजा हतो के जे प्रज्ञामां बृहस्पतिने पण जीते तेवो हतो. दैवयोगे बाल्यावस्थामां ज तेनो पिता मरण पाम्यो, एटले तेनी माताए पोताना भाईना पुत्र-गुरु पासे जईने कह्युं के—'आ बाळकने तमे संभाळो अने शिक्षा आपो.' त्यारे निमित्तना अतिशयथी गुरुए तेने शासन प्रभावक जाणी संतोष-वचनथी आदरपूर्वक भ्रातृपत्नी पासेथी ते बाळक लई लीधो. पछी गुरुनी साक्षीमात्रथी ते बाळक पोतानी मेळे व्याकरण, न्याय अने साहित्य तेमज आगममां प्रवीण बनी गयो. वळी स्नेहने लीधे ते गुरुथी क्षणभर पण अलग थतो न हतो. आथी तेनी योग्यता जाणीने गुरुए तेने दीक्षा आपी अने तरत पोताना पाटे स्थाप्यो. कारण के तेवा काममां विलंब करवो योग्य न गणाय. पछी वर्त्तमान शास्त्रोरूप कमळोने विकसित करवामां सूर्य समान अने लोकोना अज्ञानरूप अंधकारने परास्त करनार एवा ते गुरु **सूराचार्य** एवा नामथी प्रसिद्ध थया.

हवे सरस्वतीना कुळसद्म समान, विद्वानोनी लीलाना महा प्रासादरूप तथा कळारूप नदीओना महासागर तुल्य एवा **भोजराजा**ना प्रधानो **श्री भीमराजा**नी सभामां आव्या अने तेमणे पोताना स्वामीना गुणो वडे अद्‌भुत एवी एक गाथा आ प्रमाणे कही संभळावी—

हेलानिद्दलियगइन्दकुम्भ-पडियपयावपसरस्स ।
सीहस्स मएणसमं न विग्गहो नेयसंधाणं ।।१।।

अर्थात् - लीला मात्रमां फाडी नांखेला गजेन्द्रना कुंभ स्थळथी जेनो प्रताप फेलायेलो छे. तेवा सींहने मृगनी साथे संधि न होय के विग्रह न होय.

ए गाथानी तेणे लीलामात्रथी आनो प्रत्युत्तर हमणां आपी देवामां आवशे एम अवज्ञा करीने तेमनो आदर-सत्कार कर्यो अने तेमने आवास भोजन वगेरे आप्यां. एटले ते प्रधानो राजभवनमां गया. त्यारे राजाए पोताना प्रधानोने आदेश कर्यो के—'ए गाथानो प्रत्युत्तर आपवा माटे कोई विद्वानने शोधी काढो.' आथी कविओए पोतपोतानी मतिने अनुसारे प्रत्युत्तरनी गाथाओ बनावी, परंतु तेमांनी एके गाथा राजाने चमत्कारी न लागी. एटले सर्व दर्शनीओना स्थानोमां, चतुष्पथे, त्रिपथे, राजमार्गे, हवेलीओ तेमज चैत्योमां ते प्रधानो तेवा विद्वानने शोधवा माटे नीकळी पड्या.

एवामां एकदा ते **गार्विंदाचार्य**ना चैत्यमां गया. ते दिवसे कोई पर्व होवाथी त्यां नाटक चालतुं हतुं तेमां एक नर्तकी पोताना हस्तरूप ध्वज उंचा करी, अंगना अभिनयथी नृत्य करती हती. वाजिंत्र अने ताल साथे नृत्य करतां अने वारंवार अंगने मरडतां ते श्रमित थई गई. एटले स्पर्शमां नवनीत समान कोमळ पत्थरथी बनावेल अने तेनी कठिनताने जाणे द्रवित करवा माटे ज ते नटीए पवनना योगे प्रस्वेद (पसीना) ने दूर करवा माटे एक स्तंभनो आश्रय लीधो. ते वखते केटलाक विशिष्ट पुरुषोए **श्री गोविंदसूरि**ने विनंती करी के—'आवी स्थितिमां रहेल आ नर्तकीनुं तमे स्फुट रीते वर्णन करो.'

त्यारे गुरुए तेनुं वर्णन करवा माटे त्यां बेठेला **सूराचार्य**ने आदेश कर्यो. एटले तेमणे वर्णन करतां तरत जणाव्युं के—

'हे स्तंभ! मृगाक्षी नवयौवनाना कंकण-आभरणयुक्त अने कोमळ बाहुलताना संगथी जे तुं स्वेदयुक्त चलायमान अने कंपित थतो नथी, तेथी खरेखर! तुं पत्थरथी बनावेल छे, ए वात सत्य छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां तरत ज ते प्रधानोए **भीमराजा** पासे आवीने हर्षथी ते हकीकत निवेदन करी के—'हे स्वामिन्! **गोविंदसूरि**नी पासे एक कवि छे, ते पेली गाथानो प्रत्युत्तर आपवाने समर्थ छे.'

त्यारे राजा बोल्यो के—'ए आचार्य तो आपणा पूर्ण मित्र छे. माटे तेमनो सत्कार करीने कविसहित ते गुरुने अहीं तेडी आवो.'

एम राजानो आदेश थतां ते प्रधानो तरत ज **गोविंदाचार्य**ना उपाश्रयमां आव्या अने सन्मानपूर्वक बोलावतां आचार्य राजसभामां आव्या. एवामां आचार्यनी पासे **सूराचार्य**ने जोतां राजाए प्रमोदपूर्वक कह्युं के—'ए तो मारा मामानो पुत्र छे, तेथी एनामां सर्व प्रकारनी शक्ति संभवे छे.' पछी आचार्ये आशीर्वाद आपीने राजाए आपेल योग्य आसनपर बिराजमान थया, एटले विद्वानोए, भोज राजाए मोकलेल पेली गाथा कही संभळावी. जे सांभळतां तरत ज **सूराचार्य** बोल्या. कारण के **तेवा प्रकारनो पुण्योदय विद्यमान छतां विलंबने अवकाश क्यांथी होय?** ते आ प्रमाणे गाथा बोल्या-

अंधयसुयाणकालो भीमो पुहवीइ निम्मिओ विहिणा ।
जेण सयपि न गणियं का गणणा तुज्झ इक्कस ।।१।।

अर्थात् - धृतराष्टना पुत्रो (कौरवो)ना काळ जेवा भीमने विधाताए निर्मित कर्यो छे. जेणे एकसोने न गणकार्या तेना माटे तारा जेवा एकनी शो गणतरी?

ए प्रमाणे अर्थ सांभळतां रोमांचित थयेल **भीमराजा**ए **भोज**ना प्रधानोना हाथमां ए गाथा आपीने तेमने विदाय कर्या. पछी ते गाथा वांचतां भोजने विचार आव्यो के—**'ज्यां आवा कविओ विद्यमान छे, ते देश पराभव केम पामे?'**

अहीं **भीमराजा**ए सन्मानपूर्वक आचार्यने विदाय करतां जणाव्युं के—'तमे पासे होवा छतां विद्वानोथी गाजतो **भोज** भूपाल शुं करवानो हतो?'

एकदा गुरु महाराजे **सूराचार्य** शिष्यने अभ्यास करावावामां नियुक्त कर्या, **कारण के गुणो ए ज पुरुषनी प्रतिष्ठाने वृद्धि पमाडे छे.** पछी कुशाग्रमति अने भारे समर्थ एवा **सूराचार्य** शिष्योने शास्त्रना तत्त्वो एवी रीते समजावता के तेओ मात्र एक ज वार सांभळतां जाणी लेता हता. तेम छतां तरुणावस्था अने बुद्धिनी अधिक पटुताने लीधे अभिमान लावीने शास्त्ररहस्यने न समजता पोताना शिष्योपर ते क्रोध लावता हता. एटले तेमने शिक्षा आपतां ते प्रतिदिन रजोहरणनी एक डांडी भांगता हता. कारण के **'क्रोध-रिपु तेवा समर्थ पुरुषोने पण कोईवार सतावे छे.'** एम करतां एक वखते पोताना जातिबंधु क्रोधने सहायता करवा माटे तेमने भारे गर्व आवी

गयो. कारण के **जे जेनी साथे जोडायेल होय, ते तेनी पाछळ आवे.** एटले काष्ठनी दंडिका दररोज भांगी जवाथी खेद पामतां तेमणे पोतानी शुश्रूषा करनार एक पुरुषने आदेश कर्यो के-'मारा रजोहरणमां लोहनी दंडिका करावनी छे.' ए प्रमाणे सांभळतां शिष्यो बधा त्रास पाम्या अने मनमां भारे खेद लावतां महामुश्केलीए तेमणे उपाध्याय पासे ते दिवस व्यतीत कर्यो. पछी सांजे प्रतिक्रमण करी अने शास्त्रचिंतन कर्या पछी मध्यरात्रे पण निद्रा न लेतां ज्येष्ठ गुरुना चरण-कमळने सेवतां अने तेमना चरण चांपवारूप शुश्रूषा करतां, शिर फूटवाना अने मरणना भयथी गभराई जतां लोचनमां भारे अश्रू लावतां तेमणे शरण करवा लायक गुरुना शरणे आवी वंदन करीने उपाध्यायनुं चेष्टित गुरुने निवेदन कर्युं. जे सांभळतां गुरु बोल्या के—'हे वत्सो! उपाध्यायनो आशय स्वच्छ छे. ए तो मात्र तमारो पाठ सत्वर थाय, तेटला माटे त्वरा करे छे, पण ते वैरभावथी तेम करता नथी. लोहदंडिकानी ते जे अपेक्षा राखे छे, ते आचार विरुद्ध छे. तेथी हुं तेमने शिखामण आपीश के आवुं न करे'.

ए प्रमाणे गुरुए आश्वासन आपतां ते शिष्यो पोतपोताना स्थाने जईने सूई गया. एवामां **सूराचार्य** पण गुरुनी शुश्रूषा निमित्ते त्यां आव्या. एटले तेमणे वंदन करतां गुरुए कृत्रिम कोप बतावीने अनुवंदना न आपी. त्यारे अप्रसादनुं कारण पूछतां गुरुए जणाव्युं के—'लोहदंड ए तो यमनुं आयुध छे, पण चारित्रधारीने उचित नथी, तेमज परिग्रहमां ते हिंस्र वस्तु गणाय छे. पूर्वे पण कोई पाठके पोताना शिष्योने शिक्षा आपवा माटे तेम कर्युं नथी, अहो! तारी बुद्धि पुरुषोना हृदय भेदवा माटे आ क्यांथी स्फुरायमान थई?'

एम सांभळतां **सूराचार्ये** विचार कर्यो के—'आ उपद्रव शिष्योथकी थयेल छे,' एम धारी तेमणे गुरुने विनयपूर्वक कह्युं के—'आप पूज्यनो हाथ मारा मस्तकपर होवा छतां मारामां आ निर्दयतानी शंका तमे केम लावो छो? काष्ठदंडिकाथी शरीरे जेम प्रहार देवाय, तेम लोहदंडथी प्रहार न थाय; पण आ तो मात्र बतावावारूप ज छे. वळी मने विचार आव्यो के मारा गुणो एमनामां आवे, पण **चोळा मांथी घेबर न थाय** ए वचन सत्य छे.'

एटले सर्वमां गुणना निधानरूप एवा गुरु कहेवा लाग्या के—'हे भद्र! कोट्यंशे पण तारामां गुण नथी, तो तने ए गुणोनो मद केम आवे छे?' एम सांभळतां प्रबळ बुद्धिमान् **सूराचार्य** बोल्या के—'हुं कृतकृत्य नथी, तेम अतिशय रहित एवा मने गर्व शो? आ तो मारी एवी प्रतिज्ञा छे के—'में भणावेला आ शिष्यो परदेशमां विचरीने वादीओने जीतनारा थाय अने आपना किरणरूप बनीने लोकोनी जडता (अज्ञानता) ने दूर करनारा थाय. एम जिनशासननी उन्नति थवाथी आपनी तेमां शोभा ज छे.'

त्यारे गुरु बोल्या के—'ए अल्पमति बाळकोमां शी आशा राखवी? जो तारे एवी लगनी लागी होय, तो **भोजराजा**नी सभानो जय करवा माटे जवाने तैयार था.' एम सांभळतां **सूराचार्य** कहेवा लाग्या के—'आपनो ए आदेश मारे प्रमाण छे. वळी ए आपनो आदेश बजाव्या पछी ज सर्व विकृति (विगई) नो हुं स्वीकार करीश.' एम कही फालथी भ्रष्ट थयेल सिंहनी जेम अमर्षसहित ते सूरि-सिंह पोताना संथारापर चाल्या गया. पछी प्रभात थतां आवश्यक क्रिया करीने ते कहेवा लाग्या के 'आजे भणवानो अनध्याय छे.' एम सांभळतां जाणे महोत्सव आव्यो होय तेम बाल्यावस्थाने लीधे शिष्यो हर्षित थया. एवामां मध्याह्न थतां शुद्ध आहार लावीने साधुओ बधा एकत्र थया, त्यारे गुरु महाराजे **सूराचार्यने** बोलाव्या. एटले ते आव्या अने तेमने आहार आपतां तेमणे विगई न लीधी. त्यारे गीतार्थ साधुओए तेमने समजाव्या अने गुरुए पण बहु कह्युं छतां तेमणे पोतानो आग्रह मूक्यो नहि. छेवटे श्री संघे समजाव्युं, त्यारे ते आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के—'मारी प्रतिज्ञानो तमे भंग न करावो. हवे जो तमे वधारे कंई बोलशो, तो हुं अवश्य अनशन करीश.' पछी गुरुए गीतार्थ साधुओ पासे तेमनी शुश्रूषा करावी अने पोताना उत्संगपर बेसाडीने सुज्ञ सूराचार्यने शिक्षा आपतां तेमणे समजाव्युं के—'हे वत्स! परदेशमां विचरतां तुं बराबर सावधान रहेजे. शास्त्र, वंश, जाति, कुळ, प्रज्ञा, संयम, यम अने नियमो जो के पुरुषने जयवंत बनावे छे, छतां

यौवननो विश्वास न करवो.'

ए प्रमाणे गुरुना उपदेशथी विशेष प्रमुदित थतां ते स्व-परदेशना यशस्वी तपस्वीओने सन्मान आपवा लाग्या.

पछी गुरुनी आज्ञा लईने ते **भीम**भूपालने पूछवा माटे राजसभामां गया. कारण के राजा साथे प्रथमथी ज तेमनो परिचय थयेल हतो. त्यां सुवर्णनी साथे सुगंधनी जेम अद्‌भुत अने विद्वान् एवा पोताना बंधुने **राजाए सुवर्ण अने मणि-माणिक्यना सिंहासन पर बेसाड्या.** एवामां मालवपति भोजराजाना प्रधान पुरुषो पुनः त्यां आव्या अने तेमणे पोताना स्वामीनुं स्वरूप **भीमराजा**ने निवेदन करतां जणाव्युं के—'हे देव! तमारा विद्वानोना प्रज्ञातिशयथी अमारो स्वामी **भोजराजा** भारे संतुष्ट थयो छे अने तेमने जोवानी भारे उत्कंठा धरावे छे. माटे हे विचारदक्ष नाथ! आप प्रसन्न थईने तेमने मोकलो, कारण के विद्वानो अने राजाओने अन्यान्य कौतुक होय छे.'

एटले राजाए जणाव्युं के—'मारो नूतन बंधु महा विद्वान् छे, तो पोताना जीवनी जेम एने हुं परदेशमां शी रीते मोकली शकुं? तेम छतां जो तारो स्वामी, मारी जेम एनो आदर करे अने प्रवेशादिक अवसरे पोते एने मान आपे तो मोकलुं.'

एवामां **सूराचार्य** संतुष्ट थईने चिंतववा लाग्या के—'अहो! आ तो भाग्योदयनी वात के गुरु प्रसादथी मने ते राजानुं आह्वान (आमंत्रण) आव्युं.' एम धारीने तेमणे जणाव्युं के—'हे राजन्! भोजराजाना पंडिते मोकलेल गाथा में जोई अने तेनो में प्रत्युतर आप्यो. आ विचित्र जगतमां साधुओने कंई कौतुक लागतुं नथी. छतां तमारी अनुज्ञा होय तो **भोजराजा**ने कंईक आश्चर्य पमाडवा हुं त्यां जाउं.'

त्यारे **भीमराजा**ए जणाव्युं के—'तमे मारा भ्राता थईने शुं **भोजराजा**नी प्रशंसा करशो?'

सूरि बोल्या—'हे राजन्! ते राजानी मारे प्रशंसा करवानुं शुं प्रयोजन छे?'

पछी **भोजराजा**ना प्रधानोए ते बधुं कबूल करतां भीम राजाए सुज्ञ शिरोमणि **सूराचार्य**ने प्रयाण माटे अनुज्ञा आपी अने **बंधुपर भक्ति धरावनार तेणे एक हाथी, पांचसो अश्वो अने एक हजार पदाति साथे आप्या.** पछी नक्षत्र, वार अने ग्रहयुक्त शुभ मुहूर्ते तेमां पण चर लग्न अने क्रूरग्रह बराबर जोईने गुरु अने श्री संघनी अनुज्ञा भळतां **सूराचार्ये** नगर बहार प्रयाण कर्युं अने त्यांथी शुभ आकृतिवाळा एवा तेमणे पांचमे दिवसे प्रयाण कर्युं. पछी गुर्जर भूमिथी नीकळतां अल्प प्रयाणोमां ज तेओ सरदहनी भूमिमां आवी पहोंच्या. एटले अतिशय प्रज्ञावान अने जयशील एवा ते सज्ज थया. त्यां प्रधानोए पोते लीधेल प्रतिज्ञा प्रमाणे **धारानगरी**मां आवीने तेमणे पोताना स्वामीने ते वात निवेदन करी. जेथी भारे उत्साह लावी अवंतिनायक भोजराजा सर्व समृद्धिपूर्वक सैन्य लईने ते मुनीश्वरनी सन्मुख आव्यो. त्यारे ते राजा केवो शोभतो हतो? चारेबाजु मोटा हाथीओथी घेरायेलो राजा नाना पर्वतो वच्चे रहेला विंध्य पर्वत जेवो लागतो हतो. मनोहर गर्जना करतां रथोने कारणे वादळाओथी आकाशनी जेम शोभतो हतो. तरंगोथी सागरनी जेम श्रेष्ठ घोडाथी दीपतो हतो. ताराओथी चंद्रनी जेम राजा पदाति सैन्यथी शोभतो हतो. हवे प्रधानोए सुराचार्यने हाथी उपर बेसवानो आग्रह कर्यो. **हाथी पर बेसवाथी साधुना आचारनो भंग थतो होवाथी पोते एनुं प्रायश्चित्त करी लेशे एवो निर्णय करी आरूढ थया.** पछी नजीकमां आव्यां त्यारे आचार्य अने राजा बन्ने हस्तीपरथी नीचे उतर्या अने भ्रातानी जेम भेटी पड्या. पछी राजानी आज्ञा थतां कोशाध्यक्ष, देशांतरथी आवेल महाविद्वानने उचित अने प्रवालथी जडेल एक पट्ट (पाट) लई आव्यो, जे लंबाई अने विस्तारमां एक हस्तप्रमाण, आठ अंगुल उंचो अने तेजबिंबनी जेम दृष्टिथी जोई न शकाय एवा ते पट्टने स्थूल गालिचाथी आच्छादित करी नियुक्त पुरुषोए राजानी आज्ञाथी शुद्ध भूमिपर स्थापन कर्यो, पछी राजाए आचार्यने कह्युं के—'आ पट्टपर आप बिराजमान थाओ; एटले रजोहरणथी त्रणवार पुंजीने सूरिराज तेना पर बेठा. त्यारे भोजराजा बोल्यो के—'आ उन

अने पींछाथी पूंजवानुं शुं होय? शुं एमां रजनुं प्रमार्जन कर्युं? के जीवोनुं? कारण के जीवोनो एमां संभव नथी.' एवामां त्यां बेठेला आचार्यनुं शरीर कंपवा लाग्युं. त्यारे राजाए पूछ्युं के—'तमारुं शरीर केम कंपे छे?' एटले सूरि बोल्या-'राजपत्नी अने शस्त्रधारीओने जोईने मने भय उपजे छे.'

एम सांभळतां राजाए जणाव्युं—'ए तो राजाओनी एवी ज स्थिति होय छे.'

त्यारे आचार्य बोल्या—'तो अमारा व्रतनी पण एवी ज स्थिति छे.'

एटले राजाए कह्युं—'ठीक.' पछी हर्षित थयेल राजाने कलानिधान आचार्ये धर्मलाभरूप आशिष आपीने जणाव्युं के—'**हे भोजराज!** ज्यां सुधी विधाता तारा-नक्षत्रगणने लवण समुद्रमां नाखीने संध्या-तेजने अग्निमां समावी दे छे, धात्री-पृथ्वीरूप पात्र मूकावीने ज्यां सुधी द्विजवरो महामंत्रनो घोष चलावी रह्यो छे, उषा (प्रभात) रूप शाकिनी ज्यां सुधी वारंवार चंद्ररूप घरघट्टने लईने खेंची रही छे अने ताम्रचूड-कुकडाओ ज्यांसुधी प्रभातनी सूचना करता रहे छे, त्यां सुधी तुं विद्वन्मंडळमां जय पामतो रहे.'

ए प्रमाणे परस्पर प्रशंसा करतां केटलोक समय व्यतीत करीने राजा पोताना राजभवनमां चाल्यो गयो अने आचार्य नगरीमां आव्या.

हवे त्यां पृथ्वीरूप रमणीना हार समान जिनमंदिर लोकोना मुखथी जाणवामां आवतां ज्ञाननिधान आचार्य ते **चैत्य**मां गया. त्यां सुवर्ण, मणि, माणिक्यनी पूजानी प्रसरती प्रभायुक्त जिनप्रतिमाओने तेमणे भक्तिपूर्वक वंदन कर्युं. पछी पाठ करवामां सावधान अने सरल स्वभाववाळा ज्यां पंडितो विद्यमान छे तथा मूर्ख शिष्योनो ज्यां अभाव छे एवा एक मठमां निर्दोष **सूराचार्ये** प्रवेश कर्यो त्यां दुष्ट-अज्ञानरूप अंधकारनो नाश करवामां सूर्य समान एवा **बूटसरस्वती** नामे आचार्य हता के जेनी प्रशंसा समस्त विद्वानो निरंतर करता हता. एटले सर्व अभिगमपूर्वक सूराचार्ये प्रमोदथी ते आचार्यने प्रणाम कर्या. तेमना शिष्योए स्वागत प्रश्न पूर्वक **सूराचार्य**ने प्रणाम कर्या. पछी आचार्ये तेमने अतिथि समजीने गोचरी माटे न मोकल्या अने शुद्ध आहार लावीने तेमने भक्तिपूर्वक भोजन कराव्युं. त्यां साधर्मिक श्रमणो, राजा अने श्रावकोना कुशळ प्रश्नना विनोदमां तेमणे भारे संतोषथी बाकीनो समय व्यतीत कर्यो.

एवामां एक वखते भारे प्रभुताने लीधे राजाने गर्व थयो. कारण के कमळथी पण कीट (जंतु) उत्पन्न थाय छे. एटले छए दर्शनोने भेगा करीने तेणे जणाव्युं के—'तमे जुदा जुदा आचरणमां रहीने लोकोने भमावो छो, माटे दर्शनना तमे बधा पंडितो साथे मळीने एक दर्शन करी द्यो के जेथी अमे लोको संदेहमां न पडीए.'

त्यारे केटलाक मुख्य मंत्रीओए राजाने निवेदन कर्युं के—'हे स्वामिन्! आपणो कोई पूर्वज एवुं काम करवा समर्थ थई शक्यो नथी.'

एटले राजाए पुनः प्रश्न कर्यो के—'परमार वंशमां पूर्वे कोई पण राजा पोतानी शक्तिथी **गौड** देशसहित **दक्षिण** देशनो भोक्ता शुं थयो छे?'

एम सांभळतां बधां लोको मौन रह्या. एटले राजाए पोताना सेवकोद्वारा ते बधा लोकोने पशुओनी जेम एक वाडामां एकत्र कर्या. त्यां हजार पुरुषो अने स्त्रीओने पण लई जवामां आवी. तेमने बधाने एकमत करवानी इच्छाथी राजाए भोजन आपवानुं पण बंध कर्युं. विविध धान्योमां जेम एक रस उपलब्ध न थाय, तेम अनादिसिद्ध पोतपोताना शास्त्रोना प्रमाणोथी तेमनी एकता क्यांथी थाय? छतां चिंतारूप महाज्वर उपस्थित थतां पोताना जीवनुं रक्षण केम थाय-एवा विचारथी क्षुधाना त्रासने लीधे तेमनामां एकता आवी.

एवामां पोताना दर्शननी स्थिति प्रमाणे **सूराचार्य** पण तेमनामां भळ्या. एटले ते बधा लोकोए ऐक्य करीने सांत्वनापूर्वक आचार्यने जणाव्युं के—'आ राजा तो काल (यम) जेवो लागे छे के जे आम बधा दर्शनोनुं ऐक्य

करवाने ईच्छे छे, परंतु तेम कदि थयुं नथी अने थवानुं पण नथी. तमे गुर्जरवासी महाप्रवीण छो, तो कोई वचनयुक्ति वडे राजाने ए दृढ कुविकल्पथी अटकावो अने हजारो लोकोने प्राणदान आपतां आप भारे अगणनीय पुण्य उपार्जन करो.'

एम सांभळतां **सूराचार्य** कहेवा लाग्या के—'जो राजा पण प्रतिबोध न पामे, तो अम अतिथिनुं अहीं आगमन शा कामनुं? परंतु दर्शनोनो क्रिया मार्ग भिन्नभिन्न छे, माटे तेने उचित कंईक प्रयत्न करीने तमने हुं मुक्त करावीश.'

पछी गुरु महाराजे अमात्य मारफते राजाने कहेवडाव्युं के—**'राजानी पासे सामे चालीने आववुं जवुं अमे करता नथी.** परंतु घणा दर्शनी लोकोनी अनुकंपा लावीने मारुं कथन जो राजा ध्यानमां ले, तो कंईक संभळाववुं छे.' त्यारे राजाए जणाव्युं के—'ए गुर्जर कविराज भले सत्वर अहीं आवे.' एटले मंत्रीओनी साथे आचार्य राजमंदिरे गया. त्यां राजाए सूरीश्वरजीनुं अद्‌भुत आतिथ्य कर्युं अने तेमने उचित आसनपर बेसाड्या. पछी आचार्य महाराज कहेवा लाग्या के—'हे भुपति! तमे अतिथिनुं अदभुत आतिथ्य करो छो? तपस्वीओनुं पण सम्यग् औचित्य साचवो छो. पण हवे अहीं अमारुं कोई काम नथी. तमे आ बधा दर्शनीओने वाडामां पूर्या छे ते जोईने अमारुं मन दूभाय छे, माटे अमे अमारी भूमिकामां जईशुं. वळी त्यां पण त्यां जईने अमारे अहींनुं शुं स्वरूप रहेवुं? धारा नगरीमां तमारी आवी ज व्यवस्था छे? एम अमे तमने पूछीए छीए.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा बोल्यो के—'अतिथि अेवा आपनी सामे हुं कंई पण कही शकतो नथी. परंतु ए बधा दर्शनो भिन्नभिन्न छे, तेनुं मात्र कारण आपने पूछुं छुं.'

त्यारे आचार्य कहेवा लाग्या के—'हे भूपाल! तेनुं स्वरूप तुं सावधान थईने मारी पासे सांभळ—अहीं चोराशी प्रसादो अने तेटलाज चौटा छे. तेम ज चोवीस बजारो छे. ए प्रमाणे नगरीनी रचना छे, पण ए बधा अलग अलग छे, तेने एकत्र स्थाने करी दे, भिन्न शा माटे जोईए? वळी तेम करवाथी बधुं एक स्थाने मळी शकशे अने लोकोने भमवानुं टळी जशे.'

आथी राजाए जणाव्युं के—'भिन्न-भिन्न वस्तुओ लेनाराओना एकत्र मळवाथी लोकोने महा बाधा थाय, तेटला माटे में दुकानो अलग अलग करावी छे.' एटले वकृत्वमां कुशळ अने विद्वान् आचार्य कहेवा लाग्या के-'हे नरेंद्र! तुं विद्वान छतां विचार केम करतो नथी. ज्यारे पोते करेल दुकानो तोडवाने पण तुं समर्थ नथी, तो अनादिकाळथी चाल्या आवता दर्शनोनो नाश करवाने केम तैयार थयो छे? जे दयाना अर्थी होय ते जैनधर्मने आराधे, रसना अथी कौलदर्शनने, व्यवहारना आर्थीवेदोने, मुक्तिना अर्थी निरंजनने आराधे एम **चिरकाळथी पोताना मनमां जामेल संस्कार अभिमानयुक्त लोको पोतपोताना मतने** मूकीने **एकत्र केम थाय?** हे राजन्! तेनो तुं विचार तो कर.'

ए प्रमाणे सांभळवाथी कदाग्रह अने गर्वनो नाश थतां राजाए ते दर्शनीओने सन्मान आपीने भोजन कराव्युं अने तेमने मुक्त करतां तेणे जणाव्युं के—**'तमे तमारा धर्ममां स्थिर रहेजो, पण एकत्रतानो आग्रह माटे हुं तमने प्रतिबंध करतो नथी.'** एम बधा दर्शनीओने छोडावतां बहुमान पामेल **सूराचार्य** पोताना उपाश्रयमां आव्या.

हवे त्यां विद्यामठमां विद्यार्थीओ भोजराजाए बनावेल व्याकरण निरंतर भणता हता. त्यां कंईक कारणने लीधे विद्वानो बधा एकत्र थया, एटले **श्रीमान् बूटसरस्वतीसूरि** पण त्यां चाल्या. त्यारे **सूराचार्ये** कह्युं के—'अमे पण त्यां साथे आवीशुं.' आथी गुर्जरदेशनी विद्वत्तानी शंकाथी तेमणे निषेध कर्यो के—'तमे दर्शनो माटे परिश्रम लेतां थाकी गया छो, माटे आजे अहीं ज रहो.' छतां सदा तत्पर एवा **सूराचार्य** कहेवा लाग्या के—'ए देखाव जोवानी अमारी उत्कंठा छे, वळी तमारा देशना विद्वानोने जोवामां तरुण एवा अमने श्रम केवो? एवा कुतूहलने

माटे ज अमे विहार कर्यो छे, माटे तमारी साथे आवीशुं.' आवा **सूराचार्य**ना आग्रहथी तेमणे निषेध न करतां साथे आववानी अनुमति आपी. अने शंकित थईने तेओ सूरिने साथे लई गया. त्यां उपाध्याये पूछ्युं के—'आ अतिथि क्यांथी आव्या छे?' त्यारे बूटसरस्वतीए जणाव्युं के—'अणहिल्लपुर नगरथी एओ आव्या छे.' एटले अध्यापके विशेष आदरथी तेमनुं स्वागतादिक कर्युं अने ते बंनेने तेणे एक प्रधान आसनपर बेसाड्या.

पछी **सूराचार्ये** अध्यापकने प्रश्न कर्यो के—'अहीं कयो ग्रंथ वंचाववामां आवे छे?' तेणे जणाव्युं—'**श्रीभोजराजा**नुं बनावेल व्याकरण अहीं चाले छे.' त्यारे अभ्यासगत विद्वाने कह्युं के—'ते ग्रंथमांनुं मंगलाचरण बोलो.' एटले उपाध्याय विद्यार्थीओ साथे उच्च स्वरे बोल्या के—

चतुर्मुखमुखांभोज-वनहंसवधूर्मम ।
मानसे रमतां नित्यं शुद्धवर्णा सरस्वती ।।१।।

अर्थात् - ब्रह्माना मुख-कमळरूप वनमां हंसवधु समान एवी शुद्ध वर्णवाळी सरस्वती निरंतर मारा मनमां रमण करो.'

एम सांभळतां सूराचार्य कंईक हास्यपूर्वक कहेवा लाग्या—'आवा प्रकारना विद्वानो आ ज देशमां छे. अन्यत्र नहि होय. पूर्वे सरस्वती कुमारी अने ब्रह्मचारिणी अमारा सांभळवामां आवी छे अने अत्यारे तेमां वधु तरीके बतावी छे. ए तो अपूर्व आश्चर्य छे. वळी बीजुं पण कंईक हुं तमने पूछवा मागुं छुं के—दक्षिण देशमां जेम मामानी पुत्री साथे संबंध थाय छे. सौराष्ट्रमां भ्रातानी पत्नी जेम दीयर परणी शके, तेम तमारा देशमां लघु बंधुना पुत्रनी वहु गम्य हशे केम? के जेथी वधु शब्दनी समीप **'मानसे रमतां मम'** ए प्रयोग कर्यो. तेथी देशाचार भिन्न भिन्न होय ज छे.' आ प्रश्ननो उत्तर आपवाने असमर्थ एवा उपाध्याये वचमां बीजी वातो चलावी अने ते वखते शिष्योनो अभ्यास बंध राखीने त्यां समय व्यतीत कर्यो.

पछी संध्या वखते ते अध्यापक **भोजराजा** पासे गयो अने तेणे राजाने आश्चर्यकारी ते वृत्तान्त संभळाव्यो, जे सांभळतां विस्मय पामेल राजा कहेवा लाग्यो के—'गुर्जरभूमिमां ए बधुं संभवित छे. माटे प्रभाते अवश्य ए विद्वानने बोलावीने जोईशुं.' पछी राजाए प्रभाते ते मठना आचार्य पासे ते अतिथिने बोलाववा माटे पोताना सेवको मोकल्या अने भक्तिपूर्वक तेमने बोलाव्या. एटले **बूटसरस्वती** आचार्यनी साथे **सूराचार्य** स्वर्गसभा समान भोजराजानी सभामां गया. ते वखते राजाए राजभवनना आंगणे एक शिला, गुर्जर विद्वान पासे पोतानी कळा बतावा माटे मूकावी हती. तेमां एक छिद्र करावीने ते प्रथमथी ज कादवथी पूरी दीधेल हतुं. कारण के तेवा पुरुषो पण छळ जोनारा होय छे. हवे ते आचार्यने आवता जोईने राजाए लक्ष्यमां दृष्टि स्थापतां कर्ण सुधी धनुष्य खेंचीने बाण छोड्युं. **सूराचार्ये** पण सूक्ष्म दृष्टिथी कादवथी पूरेल शिलामांनुं छिद्र जोई लीधुं. ते बाणना अग्रभागथी भेदायेल जोतां आचार्य तेवा अर्थने सूचवनार एक काव्य बोल्या-

विद्धा विद्धा शिलेयं भवतु परमतः कार्मुकक्रीडितेन,
श्रीमत्पाषाणभेदव्यसनरसिकतां मुञ्च मुञ्च प्रसीद ।
वेधे कौतूहलं चेत्कुलशिखरिकुलं बाणलक्षीकरोषि,
ध्वस्ताधारा धरित्री नृपतिलक तदा याति पातालमूलम् ।।१।।

अर्थात् - अहो! आ शिलाने तो तें वींधी नाखी, हवे धनुष्यक्रीडाथी सर्युं. माटे प्रसन्न थईने पाषाण भेदवाना व्यसननी रसिकताने तुं मूकी दे. जो लक्ष्य भेदवामां तने कुतूहल छे अने कुळपर्वतोने बाणना लक्ष्य बनावे छे, तो हे नृपतिलक! निराधार बनेल आ पृथ्वी पाताळमां पेसी जशे.

ए प्रमाणे अद्‌भुत सामर्थ्ययुक्त वर्णनथी राजा भारे संतुष्ट थयो. ते वखते **धनपाले** पण **सूराचार्ये**ने

असाधारण प्रज्ञायुक्त जाणी लीधा. एटले तेने विचार आव्यो के—'अहो! ए विद्वाननी बुद्धि अने विज्ञान केवुं अद्‌भुत छे? वळी एणे राजाने केवी गर्भितोक्ति संभळावी? माटे **जैनोने कोण पोतानी प्रज्ञाथी जीती शके?'**

पछी **सूराचार्य** राजाथी सन्मान पामीने पोताना स्थाने गया. एटले राजाए सभामां बेसीने पोताना समस्त विद्वानोने जणाव्युं के—'आ गुर्जर महा विद्वान् श्वेतांबरसूरि आवेल छे, तेनी साथे तमारामां कोई वाद करवा तैयार थाओ.' राजानुं आवुं वचन सांभळतां पांचसें पंडितो बधा नीचुं मुख करी रह्या. घनगर्जारवथी बाळकोनी जेम तेओ ते आचार्यना प्रतिघातथी भग्न थई गया. आथी राजा विलक्ष थईने पुनः कहेवा लाग्यो—'तमे बधा मात्र घरमां ज गर्जना करनारा छो; वळी मारी पासेथी गुजरान लईने पोते पोताने वृथा पंडित कही बतावो छो.'

एवामां तेमांनो एक महाप्राज्ञ पंडित बोल्यो—'हे स्वामिन्! मारो विचार तमे सांभळो. विलक्ष न बनो. कारण के वसुंधरा रत्नगर्भा कहेवाय छे. गुर्जर श्वेतांबरो जाणे देहधारी देवो होय तेम दुर्जेय छे. माटे हे राजन्! ए कार्य मंत्रथी सधाय तेवुं छे. तो सोळ वरसना कोई बुद्धिशाळी अने महाचतुर सरळ स्वभावना विद्यार्थीने प्रमाण शास्त्र (न्याय)नो अभ्यास करावो.' पंडितना आ वाक्यथी संतुष्ट थईने भोजराजा कहेवा लाग्या के—'भले एम करो. हवे ए काम तमे ज बजावो.'

पछी एक चालाक प्रज्ञा अने वकतृत्वमां अस्खलित तथा सौम्य एवा एक विद्यार्थीने ते पंडिते तर्कशास्त्रनो सारी रीते अभ्यास करावीने बोलवामां प्रवीण बनाव्यो, एटले तेणे पण मोटा घोषथी गुरु पासे बधो पाठ ग्रहण करी लीधो. पछी ए वात तेणे राजाने निवेदन करतां राजाए शुभ मुहूर्त्त जोवडाव्युं अने वादमां शूरवीर एवा **सूराचार्यने** पण जणावी दीधुं. त्यारबाद वादने माटे तेणे सूरिने राजसभामां बोलावीने एक सारा आसनपर बेसाड्या अने रेशमी वस्त्र तथा सुवर्ण रत्नना अलंकारो पुष्पादिकथी अलंकृत करी ते विद्यार्थीने पोताना उत्संगमां बेसाडीने राजाए जणाव्युं के—'आ प्रतिवादी छे.'

त्यारे वादींद्र आचार्य प्रगट वचनथी बोल्या के—'आ तो हजी दूध पीनार बाळक जेवो छे. एना मुखमांथी दूधनी गंध आवती हशे. माटे युवान पुरुषोने एनी साथे वाद करवो उचित नथी. कारण के विग्रह तो समान साथे ज थई शके.' एटले राजा तरत बोली उठ्यो के—'एने तमे बाळक समजशो नहि. ए तो बाळरूपे साक्षात् सरस्वती छे. एने जीतवाथी तमे मारी सभा जीती लीधी एम मानी लेजो.'

पछी आचार्ये जणाव्युं के—'तो पूर्ववाद भले आ बाळक करे.' आथी ते अस्खलित अक्षरे पदच्छेद अने वाक्य विना विभक्तिनो भंग करीने यथालिखित पाठ बोली गयो. जे सांभळतां आचार्य समजी गया के 'आ अर्थना बोध विना बोले छे.' एवामां तेने शंका थतां स्खलना पाम्यो अने पछी विचार करतां तेने निश्चय थयो के—'पट्टिका (पाटी) पर आ एवो ज पाठ छे, त्यां बीजुं कांई लखेल नथी.' एम धारीने ते जेटलामां वेगथी बोलवा लाग्यो, तेवामां कर्कश शब्दथी पाछळनुं कूट पद बोली गयो. त्यारे आचार्ये जणाव्युं के—'अरे! तुं खोटुं पद बोल्यो. माटे फरीथी बोल.' एटले ते उतावळथी कहेवा लाग्यो के—'मारी पाटी पर एवुं ज लखेलुं छे, एवी मने खात्री छे.' एम सांभळतां सूराचार्य संतोष पामीने कहेवा लाग्या के—'लक्षणशास्त्र (व्याकरण) ना मंगलाचरण जेवो श्लोक छे, तेवो आ वाद छे. माटे **श्रीमान् भोजराजा** पासेथी हुं रजा लउं छुं के—**मालवदेश** जोयो अने मांडा पण खाधा.' ए प्रमाणे कहीने **सूराचार्य** द्वेषीने परास्त करनार एवा मठमां चाल्या गया अने लज्जा तथा क्रोधथी दबायेल राजाए पण पोतानी सभा विसर्जन करी.

हवे **श्रीमान् बूटसरस्वती आचार्य** अतिथि एवा **सूराचार्यने** कहेवा लाग्या के—'तमे शासननो उद्योत करो. तेथी अमने संतोष छे, पण तमारा मरणथी अमने भारे दुःख थाय तेम छे. **श्री भोजराजा** पोतानी सभा जीतनारने अवश्य मारे छे. शुं करीए, अहीं तो जय के पराजयमां श्रेय ज नथी.'

एम सांभळतां वीर अने धीर पुरुषोमां अग्रेसर एवा **सूराचार्य** बोल्या के—'तमे खेद न करो. हुं मारुं पोतानुं रक्षण करीश.'

एवामां कविचक्रवर्ती **धनपाले** पोताना एक सेवकने मोकलीने **सूराचार्यने** कहेवडाव्युं के—'आप पूज्य गमे ते रीते सत्वर मारा घरे आवी जाओ. ए राजानो भयंकर प्रसाद कोईरीते विश्वास करवा लायक नथी. आप जेवा विख्यात विद्वान् सर्व देशना मंडनरूप छो. भाग्यना अतिशयथी ज मारा जेवाने दुर्लभ एवा तमे मळ्या छो. मने मळ्या पछी तमारे कोई प्रकारनी अधृति करवानी नथी. हुं अवश्य तमने सुखे गुर्जर देशमां पहोंचाडीश.'

आ वात चालती हती, तेवामां प्रभाते 'अहो! मितभाषी तमो साधुओनुं भाग्य जाग्रत छे.' एम बोलतां घोडेसवारोए ते चैत्यने घेरी लीधुं. अने त्यांना मठवासी आचार्यने जणाव्युं के—'वादीओनो ध्वंस करनारा एवा तमारा विद्वान् अतिथिने मोकलो. राजा तेमने संतोष-जयपत्र आपवानो छे.'

त्यारे मुखने म्लान करतां शून्य बनीने ते आचार्ये तेमने कह्युं के—'ते अतिथि आवशे.'

पछी सूर्यना तापथी प्रचंड मध्याह्न काळ थतां आचार्य बहार चाल्या गया. ते वखते वेषनुं पनरावर्तन करी एक अणगार मलिन अने जीर्ण वस्त्र धारण करी चैत्यद्वारथी बहार नीकळतां **सूराचार्यने** सुभटोए जणाव्युं के—'हे श्वेतांबर! अंदर जा, बहार शा माटे नीकळे छे? ज्यारे गुर्जर विद्वान् राजाने सुप्रत करशो, त्यारे ज बधा छूटा थई शकशो.'

एम सांभळतां विकराल मुख करीने ते वक्रोक्तिथी कहेवा लाग्या के—'अरे! भूपालनी जेम गर्वथी आपणो वैरी अंदर सिंहासन पर बेठो छे, तेने कानेथी पकडीने स्वामी पासे लई जाओ, के जेथी तेने जयपत्र अने यमपत्र बंने मळे. अमे तो तमारा नगरवासी छीए अने भारे तृषातुर थवाथी तमारी आज्ञा लई जळ लेवा जईए छीए, माटे अमने सत्वर मूकी दो.' आथी एक घोडे स्वारे दयाथी तेने छोडाव्यो, एटले निर्भय थईने सूराचार्य ते पंडितरत्न **धनपाल**ना घरे चाल्या गया. त्यां **धनपाल** कहेवा लाग्यो के—'वचनातीत एक तानथी राह जोतां तमे यतीश्वर यमना दृष्टिपथथी अंतर्धान थईने मारी दृष्टिमां आव्या छो. हुं आजे ज तमारो जन्म थयो समजुं छुं. अने आजे ज तमारो गच्छ पुण्यशाळी थयो, के जैन शासनरूप आकाशमां भास्कर समान तमे अहीं आवी गया.' पछी तेणे पुनः प्रश्न कर्यो के—'तमे अहीं शी रीते?' त्यारे सूराचार्य बधी यथार्थ वीतक वात कही संभळावी, जे सांभळतां धनपाल परम आनंद पाम्यो. हवे तेमने एक विशाल भूमिगृह (भोंयरा) मां आदरपूर्वक राखीने ते भक्तिथी तेमने शुद्ध आहार आपवा लाग्यो.

एवामां तांबुली लोकोने त्यां गुर्जर देशमां जता जोईने भोजन, वस्त्रादिकथी तेमनो भारे सत्कार करतां **धनपाले** तेमने कह्युं के—'तमे मारा एक भ्राताने अणहिल्लपुर सुधी लई जाओ.' तेमणे कह्युं—'ब्राह्मण तो राजाओने पण पूजनीय होय छे. वळी आ तो राजाओमां मान पामेल सुज्ञ शिरोमणि छे. माटे आपनो आदेश प्रमाण छे. अमे ए कार्य अवश्य करीशुं. आ बाबतमां तमारे जरापण चिंता न करवी. अमे तेमने परिवार सहित लई जईशुं. ते भले यानपर अरोहण करी निश्चिंत थईने चाले.'

ए प्रमाणे तेमणे कबूल करवाथी संतुष्ट थयेल **धनपाले** तेमने एक सो सोनामहोर तुष्टिदानमां आपी. पछी **धनपाल**ना कह्या प्रमाणे सूरिने गुप्त रीते एक छालकामां छूपावी पोठीया पलाणीने तेओ सत्वर गुर्जरभूमि तरफ चालता थया. मार्गमां मही नदीना तटपर आवतां **सूराचार्ये** ते पुरुषो मारफते पोतानुं सविघ्न आगमन गुरुने जणाव्युं.

हवे अहीं दिवसना पाछला पहोरे सुभटो पोते ते चैत्यमां दाखल थया. त्यां सिंहासनपर उत्तम वस्त्रधारी

अने मदयुक्त आकृतिवाळा एक स्थूल साधुने जोईने तेओ कहेवा लाग्या के—'राजानी आज्ञाथी तमे आ जिनचैत्यथी बहार नीकळो. अहीं जे विलंब थयो छे, ते खांडणीयामां घा चुकाव्या समान छे.' एटले तरत उठीने ते साधु आगळ चाल्या अने ते स्वारो साथे राजानी समक्ष आवी मौन धरीने उभा रह्या. तेने जोतां विलक्ष बनेल राजाए स्वारोने पूछ्युं के—'आ वृद्ध अने स्थूल देहधारी कोने तमे लई आव्या छो? शुं आ गुर्जर विद्वान् छे? खरेखर! तमारी आंखमां धूळ नाखीने तमने कोईए अंध बनावी दीधां लागे छे. मने लागे छे के तमारा जेवा कोई मूर्ख नहि होय.'

त्यारे स्वारो कहेवा लाग्या के—'हे नाथ! एक जळवाहक दरिद्र मुनिने मूकीने अमे कोईने जवा दीधेल नथी.'

एम सांभळतां राजाए कह्युं के—'रूपनुं परावर्तन करीने तमारा देखतां ते जीतीने चाल्यो गयो. सज्जनोमां तेना जेवो कोई तात्कालिक बुद्धिमान नहि होय.' पछी राजाए ते आवेल साधुने जणाव्युं के—'तुं तारा आवासमां चाल्यो जा. तने मूर्खपणुं पण पुण्यथी ज प्राप्त थयुं छे के जेने लीधे अमाराथी तुं जीवतो रह्यो. तेथी मूर्खता पण एक प्रकारे श्लाघनीय छे.' ए प्रमाणे राजाए विदाय करतां ते साधु पाछा मठमां चाल्या गया. कारण के **मस्तकना मुंडनमां अक्षतथी वधाववानुं न होय.**

हवे **भीमराजा**ने खबर पडतां तेणे पोताना भ्राता (**सूराचार्य**)ने बोलाववा माटे तेमना मामा साथे माणसो मोकल्या. एटले पोताना देशमां प्रगट थईने ते **भीमराजा**नी राजधानीमां आव्या. ते वखते संघ सहित गुरु महाराज तथा **भीमराजा** सर्व सामग्री लईने तेमनी सन्मुख आव्यो. कारण के **शुभमां कोण प्रतिकूल होय**? त्यां नजीक आवतां सर्व अभिगमपूर्वक **सूराचार्य** एक लज्जायुक्तनी जेम पोताना गुरुना पगे पड्या. एटले अष्टांग योगमां सावधान एवा ते योगी गुरु बोल्या के—'आजे गुरुनी आशा सफळ थई अने मातानी आशिषो पण सफळ थई. तने जोतां श्री संघनी प्रसन्नदृष्टि आजे फलवती थई.'

त्यारे **सूराचार्य** कहेवा लाग्या के—'ते वखते एक अविचारीनी जेम हुं **मालव** देशमां गयो अने **भोजसभा**ने जीतीने निराबाध अहीं पाछो आव्यो छुं. वळी आ शिष्योए 'उपाध्याय अमने शिक्षा करे छे' एम जो मारुं आचरण आपनी पासे कह्युं न होत आपे ठपको न आप्यो होत अने आ बाळके गर्वथी जो तेवी प्रतिज्ञा करी न होत तो आपनो हाथ मारा शिरे छे, तेनुं प्रमाण क्यांथी मळत?' एम सांभळतां शोण नदीना द्रहनी जेम स्थिर अने आचार तथा चारित्रथी सुंदर एवा **द्रोण गुरु** कहेवा लाग्या के—'कायर जनोने दुष्कर आवी प्रतिज्ञा कोण करी शके? अने आप्त जनोमां उत्तम एवा तारा विना तेनो निर्वाह पण कोण करी शके? शासनदेवीने उद्देशीने अमे गच्छ अने संघ सहित, तारुं मुख जोवा पर्यंत आंबिलतपनुं आचरण कर्युं छे.' एम गद्गद् वचनथी कहीने गुरुमहाराजे **सूराचार्य**ने गाढ आलिंगन कर्युं. ते वखते **भीमराजा**ए पण आदरपूर्वक जणाव्युं के—'विद्वान्, विनयी, कुशळ, तेजस्वी अने दृढ वीर्यवान तथा तात्कालिक बुद्धिशाळी तमारा विना अन्य कोई जोवामां आवतो नथी. तेवा प्रकारना विद्वानोने संघरी राखनार एवा **भोजराजा**ने छेतरीने तमे जे निराबाध नीकळी आव्या, तेथी तमे मारा यशमां पण वधारो कर्यो छे. वळी हुं तमने एक संदेह पूछुं छुं के—'ते राजानी तमे स्तुति करी हती के नहीं?'

एटले **सूराचार्य** मेघध्वनिथी बोल्या—'हे नरेंद्र! मारी रसना तारा विना बीजा कोईनी प्रशंसा करती नथी. वळी में कौतुकथी कहेल काव्यनो भावार्थ तुं सांभळ—विंधायेली (काणावाळी) शिलाने ते वींधी, तेमां धनुर्धरनुं पराक्रम केवुं? कपटथी करेल धनुष्यक्रीडा जाणवामां आवतां में कह्युं—ए मूकी दे. वळी पत्थरने भेदवाना व्यसनने उद्देशीने में जणाव्युं के—तमारो पूर्व ज आबु पर्वत छे, तेनो भेद थतां पृथ्वी पण धाराथी ध्वस्त थतां पाताळमां जाय, एम बोलतां में शिखामण आपी छे. कारण के संत जनोए शत्रुने पण हितशिक्षा आपवी जोईए.'

ए प्रमाणे सांभळतां हर्षथी रोमांचित थयेल **भीमराजा** कहेवा लाग्यो के—'मारा बंधुए **भोजराजाने** जीती लेतां हवे तेना जय माटे मने शी चिंता छे?' पछी **गजराज उपर पोतानी पासे श्रेष्ठ आसनपर** बेसाडीने राजाए **सूराचार्यनो** प्रवेश-महोत्सव कर्यो.

पछी ते महामति **सूराचार्ये** देशांतरमां जतां लागेल **अतिचार गुरुपासे निवेदन करीने तपरूप प्रायश्चित्त** लई **ते शुद्ध थया.** वळी ए कवीश्वरे **श्री युगादिनाथ** तथा **श्री नेमिनाथ**ना चरित्रथी अद्‌भुत एवुं **द्विसंधान** नामे काव्य बनाव्युं. तेमज पूर्वे जे शिष्यो पोतानी पासे अभ्यास करता हता, तेमने ए आचार्ये बराबर वादींद्र बनाव्या. वळी **श्री द्रोणसूरि** परलोके जतां अक्षत चारित्रथी पवित्र एवा श्रुतनिधान **श्री सूराचार्य,** शासननी प्रभावनाथी श्री संघने उन्नत बनावी, अनेक शिष्यो संपादन करी, जिनशासननी उन्नति करतां योग्य शिष्यने सूरिपद आपी अने तेने गच्छनो भार सोंपी पोते पांत्रीस दिवसनुं अनशन कर्युं. प्रांते त्रण योगने रोधतां आत्मारूप आरामां एकतान थयेल ते **श्री भीम** भूपालना बंधु **श्रीसूराचार्य** उत्तम गतिने पाम्या.

ए प्रमाणे वाद विद्याना विनोदथी वादीओना वादने परास्त करनार **श्री सूराचार्यनुं** परिचित चरित्र कंईक गुरुमुखथकी अने कंईक अन्य जनथी जाणीने में रच्युं छे, ते जिनवचनमां स्थिरता करावनार अमित कल्याणने आपो तथा भव्यात्माओने विद्याना उद्यम माटे अज्ञानरूप समुद्रमां सेतुतुल्य थाओ.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टधर सरोवरने विषे हंस समान, तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरिए** पोताना मनपर लेतां **श्री प्रद्युम्नाचार्ये** शोधेल, श्री पूर्वाचार्योंना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री सूराचार्यना** चरित्ररूप आ अढारमुं शिखर थयुं.

इति श्री सूराचार्य-प्रबंध

जिस आत्माने पूर्व भवों में अशुभ कर्म उपार्जन कर आत्मा को भारे कर्मी कर दिया है उस आत्मा का उत्थान अत्यंत कठीन है।

प्रत्येक आत्मा को कर्म करते समय ही चिंतन-मनन करना चाहिए कि इससे मेरा अहित तो नहीं होगा?

शुभा शुभ कार्य से भी शुभा शुभ परिणाम की ओर विशेष लक्ष्य रखने वाला साधक ही साधना को सफल बना सकता है।

-जयानंद

१९. श्री अभयदेवसूरि-प्रबंध

श्री जिनशासनना अलंकाररूप, विद्वानोने चमत्कार पमाडनार तथा सर्वना मुगट समान एवा **श्रीअभयदेवसूरि** तमारा कल्याण निमित्ते थाओ. अष्टांगयोगने आदरतां पोताना अंगनो उद्धार करी श्रुतना नव अंगने प्रकाशित करनार एवा ते सूरि आत्मलक्ष्मीना हेतुरूप थाओ. मातापितानी आगळ प्रगटपणे बोलतां जेम बाळक प्रमोद पमाडे छे, तेम भारे हर्ष प्रगटाववा माटे हुं ते आचार्यना चरित्रने कहीश.

सारी आकृति अने रसथी मनोहर एवो **श्रीमालव** नामे देश छे के जे **जंबूद्वीप**रूप सहकारना फळ समान अने श्रेष्ठ वर्णोथी विराजित छे. त्यां तरवारना बळथी उन्नतिने पामनार, राजलक्ष्मीना मूलरूप तथा दुष्ट जनोना निग्रहथी शोभती एवी **धारा** नामे नगरी छे. त्यां पृथ्वीनुं पालन करनार **भोज** नामे राजा हतो के जेनी भुजाओ विश्वना उद्धारने माटे जाणे शेषनागनी बीजी बे मूर्ति होय तेवी शोभती हती. ते नगरीमां **लक्ष्मीपति** नामे महाधनिक एक व्यवहारी हतो के जेनी लक्ष्मीथी पराभव पामेल कुबेर कैलास पर्वतनो आश्रय लईने रह्यो.

एकदा मध्यदेशना निवासी, वेदविद्याना विशारदोने पोताना प्रज्ञाबळथी परास्त करनार, चौद विद्याना अभ्यासी, स्मृति, ईतिहास अने पुराणमां प्रवीण तथा यौवनना उद्यमथी देशांतर जोवाने माटे नीकळेला एवा **श्रीधर** अने **श्रीपति** नामे ब्राह्मण त्यां आवी चड्या अने फरतां फरतां ते **लक्ष्मीपति**ना घरे आव्या, तेमनी आकृतिथी आकर्षाईने व्यवहारीए भक्तिथी तेमने भिक्षा आपी.

हवे तेना गृहनी सन्मुख भींतपर वीश लक्ष टकानो लेख लखातो हतो, ते प्रतिदिन पेला ब्राह्मणो जोता हता. एम निरंतर जोवाथी प्रज्ञाना बळने लीधे जाणे अभ्यास करेल होय तेम तेमने कंईक सारी रीते याद रही गयुं.

एवामां 'रसोयानी जेम मारी पासेथी लोको उपकारी बने छे अने निष्ठुरनी जेम मने तो कंई आपता नथी. वळी ब्राह्मणो पण मारी मारफते देवताओने आहुति आपीने तृप्त करे छे, परंतु मने तो तेमनुं दासत्वज एक फळ मळे छे.' एम जाणे कोपायमान थयेल होय तेम तेमना प्रतीकारनो स्वीकार करीने अग्निए एकज दिवसमां ते नगरीने भस्मीभूत करी दीधी. एटले बीजे दिवसे सर्वस्वनो नाश थवाथी खेद पामेल **लक्ष्मीपति** पेला लेखना दाहथी विशेष चिंतातुर थई गाले हाथ दईने बेसी रह्यो. एवामां अवसर थतां ते ब्राह्मणो तेना घरे भिक्षा माटे आव्या अने ते बधुं वळी गयेल जोई, विषाद पामतां ते आ प्रमाणे कहेवा लाग्या—'हे यजमान! तारा पर आवी पडेल कष्टथी अमने भारे खेद थाय छे, परंतु सर्व दुःख करतां अधिक एवी क्षुधाथी अमे व्याकुळ छीए, तेथी शुं करीए? वळी तमे आवा शोकथी सत्त्वहीन जेवा केम बनी गया छो? कारण के **तमारा जेवा धीर पुरुषो संकटमां पण सत्त्वने मूकता नथी.**'

ए प्रमाणे तेमनुं वचन सांभळतां श्रेष्ठी कहेवा लाग्यो के—'हे भूदेवो! सांभळो—लेखना नाशथी जेवुं मने दुःख थाय छे, तेवुं दुःख धन, अन्न के वस्त्रादिकना बळ जवाथी थतुं नथी कारण के अधर्मी जनोमां एथी धर्मने हानि पहोंचाडनार कलह थवानो संभव छे, पण शुं करीए?'

आथी ते विप्रो बोल्या—'अमे भिक्षाचर अन्य कंई उपकार करवाने समर्थ नथी, परंतु ते लेख अमे तने कही बतावीए.'

एटले भारे हर्ष पामतां श्रेष्ठीए तेमने पोतानी सामे एक सारा आसन पर बेसाड्या. कारण के **लोको स्वार्थ**

पूरनारने अवश्य मान आपे छे. पछी तेमणे शरूआतथी मांडीने तिथि, वार, नक्षत्र, वरस, मास अने अंक (रकम) सहित वर्ण जातिना नाम अने मूल द्रव्यनी संख्या तथा व्याज सहित ते लेख बुद्धिबळथी पोताना नामनी जेम खडीथी लखी बताव्यो, जे पत्रो पर लखी लईने श्रेष्ठी चिंतववा लाग्यो के—'अहो! मारी दया लावीने आ मारा कोई गोत्रदेवो आव्या छे के शुं? के जेमणे स्खलना विना बराबर अनुक्रमथी पत्रनी अपेक्षा न राखतां पोताना बुद्धिबळथी समस्त लेख मने कही संभळाव्यो.' पछी हितने जाणनार श्रेष्ठीए भोजन वस्त्रादि अने बहुमानथी तेमनो अत्यंत सत्कार करीने तेमने पोताना घरनी चिंता करनार बनाव्या. पछी त्यां रहेतां तेमने शांत अने जितेंद्रिय समजीने ते व्यवहारी विचारवा लाग्यो के—'जो ए मारा गुरुना शिष्यो थाय, तो श्री संघना भूषणरूप बने.'

हवे **सपादलक्ष** नामे देशमां **कुर्च्चपुर** नामे नगर छे के जे कुशास्त्रने मसीनो कुचडो देवाने समर्थ छे. त्यां **अल्ल** राजानो पुत्र, अन्वययुक्त नामधारी **भुवनपाल** नामे राजा राज्य करतो हतो. त्यां प्रशमलक्ष्मीथी गुणोने वृद्धि पमाडनार तथा संसारथी पार उतारनार एवा **श्री वर्द्धमान** नामे आचार्य हता, के जेमणे सिद्धांतना अभ्यासथी संसारनुं सत्य स्वरूप समजीने **चोराशी चैत्योनो त्याग कर्यो हतो.** एकदा विहार करता वचनरूप धाराथी भव्यजनोने नव जीवन आपता मेघ समान एवा ते आचार्य **धारानगरी**मां पधार्या. तेमने पधारेल सांभळतां श्रद्धारूप लक्ष्मीना स्वामी एवो **लक्ष्मीपति** शेठ **प्रद्युम्न** अने **शांब**नी साथे **लक्ष्मीपति** (कृष्ण)नी जेम ते बंने ब्राह्मणोने लईने गुरुमहाराजने वंदन करवा गयो. त्यां सर्व अभिगमपूर्वक आचार्यने प्रणाम करी श्रेष्ठी उचित स्थाने बेठो अने ते बंने विप्रो पण अंजलि जोडीने त्यां बेठा. एवामां श्रेष्ठ लक्षणयुक्त तेमनी आकृतिने जोईने गुरु महाराज कहेवा लाग्या के—'एमनी असाधारण आकृति स्व-परने जीतनारी छे.' त्यां जाणे पूर्वभवना संबंधी होय तेम अनिमेष लोचनथी ते बंने गुरुना मुखने जोई रह्या. आथी गुरु महाराजे तेमने व्रत योग्य समजी लीधा. पछी गुरुए तेमने दीक्षा आपी अने तपना निधान एवा तेमने योगवहनपूर्वक सिद्धांतनो अभ्यास कराव्यो. सिद्धांतना अभ्यासथी तेमने योग्य जाणीने गुरुए तेमने सूरिपद पर स्थापन कर्या. कारण के **मधुकर सुगंधिकमळने ज अनुसरे छे.** तेओ **आ.श्री जिनेश्वरसूरि** अने **आ.श्री बुद्धिसागरसूरि** एवा नामथी प्रसिद्ध थया. एटले गुरु महाराजे तेमने विहारने माटे अनुज्ञा आपी, अने शिक्षा आपतां जणाव्युं के—

'श्रीपत्तन (पाटण) मां चैत्यवासी आचार्यो सुविहित साधुओने त्यां रहेवा न देतां विघ्न करे छे. शक्ति अने बुद्धिथी तमारे तेनुं निवारण करवुं. कारण के आ काळमां तमारा समान कोई प्राज्ञ नथी.'

एटले—'आपनी आज्ञा अमने प्रमाण छे. एम कहीने तेमणे गुर्जरभूमि तरफ विहार कर्यो अने हळवे हळवे आनंदपूर्वक तेओ पाटणमां पहोंच्या. त्यां सारा गीतार्थना परिवार सहित तेओ घरे घरे भमवा लाग्या पण शुद्ध उपाश्रय न मळ्यो, एवामां पोताना गुरुनुं वचन तेमने याद आव्युं.

हवे त्यां **श्रीमान् दुर्लभराज** नामे राजा हतो के जे नीति अने पराक्रमना शिक्षणथी बृहस्पतिनो पण उपाध्याय थाय तेवो हतो. त्यां **सोमेश्वरदेव**[1] नामे पुरोहित हतो. सूर्य सुतनी जेम ते बंने आचार्यो तेना घरे गया. त्यां तेना घरना द्वारपर पितृ-देवता संबंधी ब्रह्मतीर्थने सत्यपणे जाणे स्थापन करता होय तेम तेमणे संकेतपूर्वक वेदनो उच्चार कर्यो एटले देवताना अवसरे सारणीनी शुद्धिपूर्वक चार वेदना रहस्यने प्रगट करता ते वाक्यो पुरोहितना सांभळवामां आव्या. आथी तेमना ध्वनिना ध्यानमां जाणे स्तंभाई गयेल होय तेम एकाग्र मनथी तेणे समग्र ईंद्रियोना बळने पोताना बंने कर्णमां स्थापन करी दीधुं. पछी ते विचारशील पुरोहिते भक्तिपूर्वक तेमने बोलाववा माटे पोताना बंधुने मोकल्यो; कारण के तेमना वचनामृतथी ते भारे संतुष्ट थयो हतो. एवामां ते बंने आचार्य घरमां आव्या. तेमने जोतां पुरोहित विचारवा लाग्यो के-'आ शुं ब्रह्मा पोते पोताना बे रूप करीने मने दर्शन

1. आ सोमेश्वर बंने आचार्योनो मामो हतो एवुं 'शासन प्रभावक श्रमण भगवंतो' भा. २ पृ. २२७मां जणाव्युं छे.

देवा आवेल छे?' एम धारी तेणे आपेल भद्रासनादिकनो त्याग करीने तेओ पोतानी शुद्ध कंबळपर बेठा अने वेद, उपनिषद् तेमज जैनागमनी वाणीथी समानता प्रकाशीने आशिष आपतां बोल्या के—

'हाथ, पग अने मन विना जे बधुं ग्रहण करे छे, चक्षुविना जे जुए छे, कर्ण विना जे सांभळे छे, विश्वने जे जाणे छे, पण तेने कोई जाणी शकतुं नथी एवा अरूपी शिव ते ज जिनेश्वर तमारुं रक्षण करो.'

पछी तेमणे पुनः जणाव्युं के—'वेद अने जैनागमनो अर्थ सम्यक् प्रकारे जाणीने अमे दयामां अधिक एवा जैनधर्मनो स्वीकार कर्यो छे.' त्यारे पुरोहिते तेमने प्रश्न कर्यो के—'तमे निवास क्यां कर्यो छे?' एटले तेमणे कह्युं के—'अहीं चैत्यवासीओने लीधे क्यांय पण स्थान मळी शकतुं नथी.' आथी चांदनी समान निर्मळ मनवाळा ते पुरोहिते तेमने रहेवा माटे पोताना मकाननो उपलो भाग काढी आप्यो. त्यां तेओ पोताना परिवार सहित रह्या अने भिक्षाना बेंताळीश दोष तथा गृद्धिरहित, तेमज नवकोटिए शुद्ध लावेल आहारनो तेमणे उपयोग कर्यो.

पछी बपोरे पुरोहिते याज्ञिक, स्मार्त अने दीक्षित अग्निहोत्रीओने तेमनी पासे बोलाव्या, त्यां तेमनी परीक्षाथी तेओ संतुष्ट थया. एम बह्मानी सभानी जेम विद्याविनोद चाली रह्यो छे, एवामां चैत्यवासीओना पुरुषो त्यां आवी चड्या. तेमणे आवीने जणाव्युं के—'तमे सत्वर नगरनी बहार चाल्या जाओ; कारण के **चैत्यबाह्य श्वेतांबरोने अहीं स्थान मळतुं नथी.'**

एम सांभळतां पुरोहित कहेवा लाग्यो के—'राजसभामां ए वातनो निर्णय करवानो छे.' एटले तेमणे आवीने पुरोहितनुं कथन पोताना उपरीओने निवेदन कर्युं. आथी प्रभाते तेओ बधा साथे मळीने राजा पासे गया, ते वखते पुरोहित पण त्यां आव्यो अने तेणे राजाने जणाव्युं के—'हे देव! बे जैन मुनि पोताना पक्षमां स्थान न पामतां मारा घरे आव्या, एटले गुणग्राहकपणाथी में तेमने मारा घरे आश्रय आप्यो. एवामां आ चैत्यवासीओए भट्टपुत्रोने मारी पासे मोकल्या. माटे आ बाबतमां मारी कंई गफलत के अनुचितता थई होय, तो आप मने उचित दंड करो.'

ए प्रमाणे सांभळी सर्व दर्शनोमां समान दृष्टि राखनार राजा हसीने कहेवा लाग्यो के—'कोई पण देशथी आवेला गुणी जनो मारा नगरमां रहे, तेनो तमे शा माटे अटकाव करो छो? तेमां दोष शो देखाय छे?' एम राजाए पूछवाथी ते चैत्यवासीओ बोल्या के—हे राजेन्द्र! सांभळो—पूर्वे धनुष्य समान उत्कट अने श्रेष्ठ वंशमां **वनराज** नामे राजा थयो. तेने बाल्यावस्थामां **नागेंद्र** गच्छरूप पृथ्वीने धारण करवामां वराह समान एवा श्री देवचंद्रसूरिए उछेरीने मोटो कर्यो. वळी **पंचाश्रय** नामना स्थानमां रहेल चैत्यमां वसतां तेमणे अहीं नवुं नगर वसावीने तेने राज्य आप्युं तेमज **वनराजविहार** नामे त्यां चैत्य स्थापन कर्युं. **वनराजे** कृतज्ञपणाथी गुरुनो भारे आदर सत्कार कर्यो. ते वखते श्री संघे राजा समक्ष एवी व्यवस्था करी के—संप्रदायनो भेद काढी नाखवाथी लघुता थवा पामी छे. माटे चैत्य-गच्छवासी यतिओने संमत होय, ते मुनि अहीं रही शके. पण तेमने संमत न होय तेवा मुनिओ आ नगरमां आवीने रही न शके. तो हे राजन्! पूर्वज राजाओनी व्यवस्था पाश्चिमात्य राजाओए मान्य राखवी जोईए. आवी स्थिति छे, माटे हवे तमे आदेश करो ते प्रमाणे करीए.'

त्यारे राजाए जणाव्युं के—'पूर्व राजाओना नियमने अमे दृढताथी पाळीए छीए, परंतु गुणी जनोनी पूजानुं उल्लंघन अमे करवाना नथी. तमारा जेवा सदाचारनिष्ठ पुरुषोनी आशिषथी राजाओ पोतना राज्यने आबाद बनावे छे, तेमां कोई जातनो संशय नथी. तो अमारा उपरोधथी एमने नगरमां रहेवानुं तमे कबूल राखो.' एम सांभळतां तेमणे राजानुं वचन मान्य राख्युं.

एवामां पुरोहित कहेवा लाग्यो के—'हे स्वामिन्! एमना आश्रयने माटे आप पोते निवासभूमि आपो.' आ वखते **ज्ञानदेव** नामे शैव दर्शननो पूज्य पुरुष त्यां आव्यो के जे क्रूर मुद्राना बिरुदने धारण करतो हतो. एटले राजाए

अभ्युत्थानपूर्वक सत्कार करीने तेने पोताना आसनपर बेसाड्यो. पछी जणाव्युं के—'हे प्रभो! आजे तमने कंईक निवेदन करवानुं छे, ते ए के जैन मुनिओ अहीं आवेला छे, तेमने उपाश्रय आपो.' त्यारे ते शैवदर्शनी हसता मुखे कहेवा लाग्यो के—'निष्पाप गुणी जनोनी तमे अवश्य पूजा करो. अमारा उपदेशनुं ए ज फळ छे. वालभावनो त्याग करी परम पदमां स्थिर थनार शिव एज जिन छे. **दर्शनोमां भेद राखवो ए मिथ्यामतिनुं लक्षण छे.** निस्तुष डांगरनी दुकानोना मध्य भागमां रहेल अने त्रण पुरुषोने आश्रित एवी भूमि पुरोहित इच्छानुसार उपाश्रयने माटे लई ले. तेमां स्व-पर पक्षथी थतां समस्त विघ्ननुं हुं निवारण करीश.'

एटले पुरोहिते ते वातनो स्वीकार करीने त्यां उपाश्रय कराव्यो. त्यारथी वसति (उपाश्रय)नी परंपरा चालु थई, कारण के **महापुरुषोए जे स्थापन करेल होय, ते वृद्धि पामे छे,** तेमां कांई संशय नथी. त्यां **श्रीबुद्धिसागरसूरि**ए आठ हजार श्लोक प्रमाण **बुद्धिसागर** नामनुं नवुं व्याकरण रच्युं.[1]

हवे एकदा विहार करतां **श्री जिनेश्वरसूरि** पुनः **धारा** नगरीमां पधार्या, कारण के तेवा पुरुषरत्नोनुं दर्शन पुण्यवंत जनो ज पामी शके. त्यां त्रण पुरुषार्थथी आबाद एवो **महीधर** नामे श्रेष्ठी हतो के जे पोताना धननी संख्या सिवाय सर्वत्र विचक्षण हतो. **धनदेवी**थी उत्पन्न थयेल **अभयकुमार** नामे ते शेठनो पुत्र हतो के जेना गुणगान करवामां शेपनाग पण समर्थ न हतो. ते पुण्यवान श्रेष्ठी पोताना पुत्र सहित, आचार्य महाराजने वंदन करवा गयो. त्यां संसारनी असारताने जणावनार चतुर्विध धर्म तेणे गुरुना मुखथी सांभळ्यो. गुरुना उपदेशथी **अभयकुमार**ने वैराग्य उत्पन्न थवाथी संयम लेवाने उत्सुक थतां तेणे पोताना पितानी अनुमति मागी. श्रेष्ठीए अनुज्ञा आपतां गुरु महाराजे **अभयकुमार**ने दीक्षा आपी. पछी तेणे ग्रहण अने आसेवनरूप बंने शिक्षा ग्रहण करी अने सिद्धांतोनो अभ्यास तथा तेनुं चिंतवन करतां महाक्रियानिष्ठ एवा ते मुनि श्री संघरूप कमळने विकास पमाडवामां भास्कर समान शोभवा लाग्या. एटले **श्री वर्द्धमानसूरि**ना आदेशथी **श्री जिनेश्वरसूरि**ए गुणना निधान एवा ते मुनिने आचार्य पदवी आपी अने **श्रीमान् अभयदेवसूरि** एवुं तेमनुं नाम राख्युं. पछी यशनी साथे हळवे-हळवे विहार करता **श्री अभयदेवसूरि पल्यपद्र** नगरमां आव्या. त्यां **श्रीवर्द्धमानसूरि** आयुष्य समाप्त थतां अनशन लईने स्वर्गे गया.

एवामां ते वखते दुर्भिक्षनो उपद्रव थतां देशनी दुर्दशाने लईने सिद्धांत तथा तेनी वृत्तिनो उच्छेद थवा लाग्यो, तेमां जे कंई सूत्र रह्या, तेमां प्रज्ञानिपुण मुनिओने पण शब्दार्थ दुर्बोध थई पड्यो. आ बधी स्थिति उपस्थित थई, तेवामां एकदा अर्धरात्रे धर्मध्यानमां सावधान अने मग्न रहेला **श्री अभयदेवमुनीश्वर**ने नमस्कार करीने शासनदेवी कहेवा लागी के—'पूर्वे कोटयाचार्य एवा नामथी प्रसिद्ध श्री शीलांक नामना निष्पाप आचार्ये अगियार अंगनी वृत्ति बनावी छे. तेमां कालने लईने बे अंग विना बधा विच्छेद गया छे. माटे संघना अनुग्रहथी हवे तेनी वृत्ति रचवानो उद्यम करो.'

त्यारे आचार्य बोल्या—'हे माता! हुं अल्पमति जड शुं मात्र छुं. **श्री सुधर्मास्वामी**ए बनावेल ग्रंथो जोवानी पण मारामां बुद्धि नथी. **एवा अज्ञपणाथी क्यांक उत्सूत्र कहेवाई जाय,** तो महापाप लागे. प्राचीन आचार्योए तेवा पापनुं फळ अनंत संसारनुं भ्रमण बतावेल छे. वळी तमारी वाणी पण अलंघनीय छे. माटे आदेश करो, हुं शुं करुं?' एम मननी व्यामूढतार्थी कंईक उत्तर सांभळवानी इच्छाथी ते मौन रह्या.

एवामां देवी कहेवा लागी के—'हे सुज्ञ शिरोमणि! सिद्धांतना अर्थ विचारमां, हुं विना चिंताए कहुं छुं के

1. आ व्याकरण अत्यारे पूर्ण रूपे मळतुं नथी. परंतु एनी प्रशस्तिमां (पत्र १६८) ग्रंथ प्रमाण सात हजार श्लोक प्रमाण अने विक्रम संवत् १०८०मां रचना थयानुं जणाव्युं छे.

श्री विक्रमादित्य नरेन्द्रकालात् साशीतिके याति समासहस्रे ।
सश्रीक जावालिपुरे तदाद्यं दृब्धं मया सप्त सहस्रकल्पम् ।। - (कथाकोष प्रस्तावना पृ. ६)

तारामां योग्यता छे, एम हुं मानुं छुं. तेम करतां कदाच संदेह पडे तो मने पूछजे, हुं सीमंधर स्वामी पासे जईने ते पूछी आवीश. माटे धीरज धरीने तेनो प्रारंभ कर. मारा वचनमां शंका लावीश नहीं. स्मरण मात्रथी हुं अहीं आवीने हाजर थईश. आ संबंधमां **हुं तारा चरणना शपथ लउं छुं.**'

ए प्रमाणे सांभळतां **श्री अभयदेवसूरि**ए दुष्कर कार्यनो पण स्वीकार कर्यो अने ग्रंथ संपूर्ण थाय, त्यां सुधी आंबिल करवानी प्रतिज्ञा लीधी. पछी नवे अंगनी वृत्तिओ तेमणे विना क्लेशे संपूर्ण करी अने देवीए पण जे पूर्वे प्रतिज्ञा करी हती, ते प्रमाणे तेनो निर्वाह कर्यो. **ते वृत्तिओने वृद्ध महाश्रुतधरोए शुद्ध करी**, एटले श्रावकोए ते पुस्तकोनुं लेखन शरु कराव्युं.

एवामां एक वखते शासनदेवीए एकांतमां **अभयदेवसूरि**ने जणाव्युं के—'हे प्रभो! प्रथम प्रति मारा द्रव्यथी करावजो.' एम कही पोतानी ज्योतिथी दृष्टितेजने आंजी, **त्यां एक सुवर्णनुं भूषण मूकीने देवी अदृश्य थई गई.** पछी मुनिओ गोचरीथी आव्या, एटले सूर्यना बिंब समान ते आभूषण तेमना जोवामां आव्युं, जे जोतां आश्चर्यमुग्ध बनेला तेमणे आचार्यने पूछ्युं. त्यारे प्रमोद पामता गुरुमहाराजे ते बधो वृत्तान्त तेमने कही संभळाव्यो. पछी त्यां श्रावकोने बोलाव्या अने गुरुए तेमने ते भूषण बताव्युं. परंतु तेनुं मूल्य न जाणतां ते श्रावको पत्तन (पाटण)मां गया. त्यां रत्नपरीक्षकने तेमणे ते भूषण बताव्युं. एटले तेनुं मूल्य न करी शकवाथी तेमणे पण एवो अभिप्राय आप्यो के-'अहीं **भीमराजा**नी आगळ आ आभूषण मूको ते आपे तेटलुं एनुं मूल्य समजवुं. अमे एनी कींमत आंकी शकता नथी.' आथी जाणे स्नेहथी इंद्रे भेट मोकलावेल होय तेम ते भूषण श्रावकोए राजा आगळ धर्युं अने तेनो वृत्तान्त पण कही संभळाव्यो. जेथी राजा संतुष्ट थईने कहेवा लाग्यो के-'ते तपस्वीनी वस्तुनुं मूल्य न थाय अने मूल्य विना हुं लई शकुं तेम नथी.'

त्यारे श्रावकोए जणाव्युं के—'हे स्वामिन्! एनुं मूल्य आपना मुखे ज थशे अने जे आपो, ते अमने प्रमाण छे.' एटले राजाए भंडारी पासेथी तेमने त्रण लाख द्रम्म (टका) अपाव्या. पछी तेमणे तेना पुस्तको लखावीने आचार्य महाराजने अर्पण कर्यां. तेम ज **पाटण, ताम्रलिप्ती, आशापल्ली** अने **धवलक्क** नामना नगरमां चोराशी चतुर अने श्रीमंत श्रावको हता के जे धर्मवासनाथी निर्मळ आशयवाळा हता, तेमणे प्रत्येक अंगवृत्तिना पुस्तक लखावीने आनंदपूर्वक आचार्यने आप्यां. एटले सुधर्मास्वामीए बतावेल ईष्ट तत्त्वरूप ताळानी कुंची समान तेमणे बनावेल नवे अंगनी वृत्तिओ ए प्रमाणे प्रवर्त्तमान थई.

पछी संयमयात्रा निमित्ते आचार्य **धवलक्क** नगरमां पधार्या. कारण के **स्थानोमां अप्रतिबंध एज सिद्धांत-उपासनानुं लक्षण छे.** एवामां आंबिलनुं तप करतां, रात्रे निरंतर जागरण करतां अने अतिपरिश्रमथी आचार्य महाराजने दुष्ट रक्तदोष लागु पड्यो.[1] ते वखते **ईर्ष्याळु लोको** कहेवा लाग्या के—'उत्सूत्रना कथनथी कुपित थयेला शासनदेवोए ए वृत्तिकारने कोढ उत्पन्न कर्यो छे.' ए प्रमाणे सांभळतां शोकथी व्याकुळ थयेला अने पोताना अंतरमां परलोकने ईच्छता एवा तेमणे रात्रे **धरणेंद्र**नुं ध्यान कर्युं. त्यां सत्त्वकसोटीना पाषाणतुल्य एवा तेमणे स्वप्नमां तरत पोताना देहने चाटता नागेंद्रने जोयो. आथी तेमणे विचार कर्यो के—'कालरूप आ विकराल सर्पे मारा शरीरने चाटेल छे, तेथी मारुं आयुष्य क्षीण थयुं लागे छे, तो हवे अनशन आदरवुं ए ज मने योग्य छे.' ए प्रमाणे चिंतवतां बीजे दिवसे स्वप्नमां धरणेंद्रे आवीने तेमने कह्युं के-'में तमारा देहने चाटीने रोगने दूर कर्यो छे.'

एम सांभळतां गुरु बोल्या के—'मृत्युना भयथी मने खेद थतो नथी; परंतु रोगने लीधे पिशुन (निंदक) लोको जे अपवाद बोले छे, ते माराथी सहन थई शकतुं नथी.'

1. विधितीर्थकल्प (कल्प-५६) गणधर सार्धशतक (पृ. १३-१४) अने उपदेश सप्ततिका (२-११) प्रमाणे तीर्थस्थापना द्वारा रोग निवारण थया पछी टीकाओ लखी.

त्यारे धरणेंद्र कहेवा लाग्यो के—'ए बाबतमां तमारे अधीराई-खेद न करवो. हवे आजे दीनता तजीने जिनबिंबना उद्धारथी तमे एक जैन शासननी प्रभावना करो. **श्रीकांता**नगरीना **धनेश** श्रावक, वहाण लईने समुद्रमार्गे जतां तेना वहाणने त्यांना अधिष्ठायक देवताए स्तंभेल हतुं. आथी श्रेष्ठीए तेनी पूजा करतां ते व्यंतरे व्यवहारीने आपेल उपदेशथी ते भूमिमांथी भगवंतनी त्रण प्रतिमा तेणे बहार काढी तेमांनी एक प्रतिमा तेणे **चारूप** गाममां स्थापन करी, जेथी त्यां तीर्थ थयुं. बीजी **अरिष्टनेमि**नी प्रतिमा पाटणमां आमली वृक्षना मूळमां स्थापन करी, त्रीजी प्रतिमा **स्तंभन** गाममां **सेटिका** नदीना तटपर वृक्षघटानी अंदर भूमिमां स्थापन करेल छे. ते **श्री पार्श्वनाथ**नी प्रतिमाने तमे प्रगट करो. कारण के त्यां ए महातीर्थ थवानुं छे. वळी पूर्वे विद्या अने रससिद्धिमां भारे प्रवीण एवा **नागार्जुने** भूमिमां रहेल बिंबना प्रभावथी रसनुं स्तंभन कर्युं अने तेथी तेणे त्यां स्तंभनक नामनुं गाम स्थापन कर्युं, तेथी तमारी पण पवित्र कीर्त्ति अचल थशे. वळी क्षेत्रपालनी जेम श्वेत स्वरूपथी तमारी आगळ, अन्य जनोना जोवामां न आवे तेम एक देवी त्यां मार्ग बतावनार रहेशे.' ए प्रमाणे कहीने **धरणेंद्र** अंतर्धान थई गयो.

पछी संतुष्ट थयेल आचार्ये रात्रिनो अद्‌भुत वृत्तान्त बधो श्री संघने कही संभळाव्यो. जे सांभळतां भारे हर्षित थयेला धार्मिकजनो ते वखते यात्राए जवाने तैयार थया अने नवसें गाडांओ त्यां चालता थयां. श्रीसंघना आग्रहथी श्रावकोथी अनुसराता आचार्यदेव वृद्धा अने श्वाननी पाछळ तृण कांटाथी घवायेल मार्गे धीरे धीरे चाल्या. एम आगळ चालतां संघ ज्यां **सेटिका** नदीना किनारे आव्यो, त्यारे त्यां वृद्धा अने श्वान अदृश्य थई गया. एटले ए निशानीथी संघ त्यां रह्यो अने आचार्य महाराजे आगळ जईने गोवाळोने पूछ्युं के—'अहीं तमारे कंई पूजनीय छे?' त्यारे तेमांनो एक गोवाळ कहेवा लाग्यो के—'हे प्रभो! सांभळो—आ पासेना गाममां **महीणल** नामे मुख्य पटेल छे. तेनी काळी गाय अहीं आवे त्यारे सर्व आंचळथी दूध झरे छे. एटले अहीं खाली थईने ज ते घरे जाय छे अने त्यां दोहवामां आवतां महाकष्टथी अल्प दूध पण ते आपती नथी, तेनुं कारण कंई समजातुं नथी,' एम कहीने तेमणे त्यां आचार्यने क्षीर बताव्युं. एटले आचार्य देव ते स्थळे बेसीने प्राकृत गाथाओथी श्री पार्श्वनाथनुं स्तोत्र कहेवा लाग्या. त्यां नासिकाना अग्रभागे दृष्टिस्थापन करीने **जयतिहूअण** ईत्यादि बत्रीस गाथाओवाळा स्तवननी रचना करी. तेथी त्यां हळवे-हळवे जाणे प्रभुनुं प्रतिबिंब होय तेवुं **श्री पार्श्वनाथ** भगवंतनुं तेजस्वी बिंब प्रगट थयुं. एटले संघ सहित आचार्य महाराजे तरत तेने वंदन कर्युं, जेथी समस्त रोग तरत दूर थयो अने तेमनो देह कनक समान तेजस्वी भासवा लाग्यो. ते वखते चतुर अने भाविक श्रावकोए गंधोदकथी प्रभुबिंबने नवडावीने कर्पूरादिकना विलेपनथी तेनी पूजा करी. पछी तेमणे उज्ज्वळ पडदाथी ते बिंबपर छाया करी अने त्यां श्री संघे अनिवारित दानशाळामां बधा ग्राम्यजनोने भोजन कराव्युं. वळी **प्रासाद करावव़ा माटे श्रावकोए त्यां द्रव्य एकठुं कर्युं.** तेमां क्लेश विना एक लक्ष द्रव्य तरत थई गयुं, तेमज ग्राम्यजनोए भूमिनी अनुमति आपी. पछी श्री आम्रेश्वर नामना श्री मल्लवादि आचार्यना शिष्य जे अति बुद्धिमान हता. तेमने महिषपुरथी श्रावकोए बोलाव्या. मंदिरना कार्य माटे विचक्षण एवा तेमने नियुक्त कर्या. एमणे चैत्यनुं काम शरू कर्युं अने अल्प काळमां तेमणे ते काम संपूर्ण कर्युं. ते कामना अध्यक्षनो प्रतिदिन एक द्रम्म पगार कर्यो हतो, तेमांथी अल्प भोजनादिकमां वापरतां बाकीना वधेल द्रव्य वडे तेणे चैत्यमां पोताना नामनी एक देवकुलिका करावी के जे अद्यापि त्यां विद्यमान देखाय छे. पछी शुभ मुहूर्ते आचार्य महाराजे त्यां बिंबनी प्रतिष्ठा करी. ते दिवसे रात्रे **धरणेंद्रे** आवीने तेमने जणाव्युं के—'मारा वचनथी तमे ए स्तवनमांनी बे गाथा गोपवी द्यो; कारण के केटलाक पुण्यहीन जनोने मारे प्रत्यक्ष थवुं पडशे.' आ तेना आदेशथी अद्यापि ते स्तुति त्रीस गाथानी रही छे अने ते भणतां गणतां पुण्यशाळी जनोना अत्यारे क्षुद्र उपद्रवोनो नाश करे छे. त्यारथी ए तीर्थ मनोवांछित पूरनार अने रोग, शोकादि दुःखरूप दावानळने शांत करवामां मेघ समान

प्रवर्त्तमान थयुं. वळी जन्मकल्याणकना महामहोत्सवमां प्रथम **धवलक्क**ना मुख्य श्रावके जळकळश लईने भगवंतने स्नान कराव्युं. त्यां **बिंबासनना पाछळना भागमां ऐतिहासिक अक्षरपंक्ति पूर्वे लखवामां आवेल छे. एम लोकोमां संभळाय छे.**

श्री नमिनाथना तीर्थमां २२२२ वर्ष गया पछी गौडदेशना **अषाड** नामना श्रावके त्रण प्रतिमा करावी हती.

श्रीमान् जिनेश्वरसूरि तथा श्री बुद्धिसागरसूरि चिरकाळ आयुष्य पाळी प्रांते अनशन करीने स्वर्गे गया. वळी **श्रीमान् अभयदेवसूरि** शासननी प्रभावना करता अने चरणोपासनाथी शोभता ते **कर्ण** राजानी राजधानी पाटणमां योगनिरोधथी वासनाने परास्त करी तथा धर्मध्यानमां एकतान लगावीने देवलोके गया.

ए प्रमाणे सज्जनोने माननीय, कल्याणना एकस्थानरूप, कलिकालरूप, पर्वतने भेदवामां वज्र समान, दुर्धर अज्ञानरूप अंधकारनो नाश करवामां सूर्योदय समान एवुं **श्री अभयदेवसूरि**नुं चरित्र तमारा कल्याण अने लक्ष्मीने वृद्धि पमाडनार थाओ, तथा अनंत उदयरूप परम ब्रह्म-आत्मज्ञानमां लीन बनावो.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना मनपर लेतां **श्री प्रद्युम्नाचार्ये** संशोधन करेल पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्री अभयदेवसूरि**ना चरित्ररूप आ ओगणीशमुं शिखर थयुं.

इति श्री अभयदेवसूरि-प्रबंध

आत्मा अनादि से है। अनंत काल तक शाश्वत है। कर्म है। आत्मा और कर्म का संबंध अनादिसे कर्म मुक्ति का उपाय है। मोक्ष है। पांचों गति अनादि से है। पाचों गति में जीव अनादि से है। धर्म अनादि से है। आराधक अनादि से है। विराधक अनादि से है। शाश्वत तीर्थ अनादि से है। पृथ्वी पर अशाश्वत तीर्थ भी अनादि से है। पृथ्वी पर साधु अनादि से है। दोष अनादि से है। गुण अनादि से है। पृथ्वी पर केवलज्ञान अनादि से है। षड्-द्रव्य अनादि से है। उपदेश अनादि से है। उपदेश दाता अनादि से है। श्रवण कर्ता अनादि से है।

मंच मंगल महाश्रुत स्कंध शाश्वत है। करेमि भंते सूत्र शाश्वत है।

-जयानंद

२०. श्री वीरसूरि-प्रबंध

ते **श्री वीराचार्य** तमारुं कल्याण करो के जेनी पासे अभ्यास करता संतजनो क्रोधादि शत्रुओनो नाश करवाने समर्थ थया छे. वळी जेमना हस्तस्पर्शमात्रथी सरस्वती कन्यादिकमां संक्रम करीने बोलती हती. ते **श्रीवीर**नुं वर्णन शी रीते थई शके? तेमनुं चरित्र बहुश्रुतना मुखथी कंईक सांभळीने हुं वर्णवीश. कारण के **बाळक शुं पोताना अनुमानथी बोलतो नथी.**

श्री चंद्र महागच्छरूप सागरमां रत्नशैल समान **षंडिल्ल** एवा बीजा नामथी प्रख्यात थयेल गच्छ छे, तेमां रत्नमान **श्री भावदेव** नामे सूरिरत्न हता के जे पात्रने विषे स्नेहादिकथी रहित छतां लोकहितमां सदा अनुरक्त हता. तेमना पाटे **श्री विजयसिंह** नामे सूरि थया के जे प्रतिवादीरूप गजघटाने हठाववाने समर्थ हता. तेमना पट्टरूप मानस सरोवरमां हंस समान **श्री वीरसूरि** थया के जे गति अने शब्दथी असाधारण शोभाने धारण करता हता. तेमना गुणोथी आकर्षाईने **सिद्धराज** राजाए तेमने पोताना मित्र बनाव्या हता. कारण के निर्मळ स्वभावना कुमुदने राजा (चंद्रमा) जरूर प्रमोद पमाडे छे.

एकदा सभामां बेठेल राजाए हास्य करतां पोताना मित्र **वीरसूरि**ने कह्युं के—'राजाना आश्रयथी ज तमारुं तेज विकसित लागे छे.'

त्यारे आचार्य कहेवा लाग्या के—**'भाग्यने लीधे ज पोतानी प्रज्ञा उदयमान होय छे, अन्यथकी प्रतिष्ठा थती नथी.** एक श्वान राजानो आदर पामतां शुं ते सिंह समान ओजस्वी बनी शकशे?'

एटले राजा बोल्यो—'मारी सभा मूकीने तमे विदेशमां जाओ, तो एक अनाथ भिक्षुकना जेवा बाह्य भिक्षाचर देखाओ.'

आचार्य बोल्या—'आटला दिवस हे राजन्! मात्र तारा प्रेमना बंधनने लीधे ज अमे अहीं रह्या. हवे अत्यारे ज तारी अनुमति लईने अमे जईशुं.' त्यारे राजाए कह्युं 'मारा नगरमांथी तो तमने नहीं जवा दउ!' त्यारे- अमने जतां कोण रोकी शकशे? एम कहीने भारे कळाना निधान एवा आचार्य पोताना उपाश्रयमां आव्या. एवामां राजाए पोताना माणसो मोकलीने सर्वत्र नगरना द्वारनो निरोध कर्यो. अर्थात् आचार्यने न जवा देवा माटे तेणे द्वारपर माणसो उभा राखी दीधा.

हवे अहीं गुरु महाराजे धर्मकृत्य करी सेवनना पट्ट पर आसन लगावीने विधिपूर्वक ध्यान शरू कर्युं एटले अध्यात्मना योगे प्राणवायुना निरोधथी तेमज विद्याना बळथी आकाशमार्गे उडीने तेओ **पल्ली** नामनी नगरीमां गया, एवामां प्रभाते तपास करावतां गुरुने त्यां न जोवाथी राजा चिंतववा लाग्यो के—'अहो! सदा मोहने शिथिल करवानी बुद्धि धरावनार ए मारा मित्र शुं चाल्या ज गया? अनेक सिद्धिना निधान एवा मित्र हवे मने फरी शी रीते मळे? खरेखर! **सिद्धिना स्नेहमां पुण्यहीन अमे खोळ समान ज छीए.'**

एवामां **पल्ली**वासी ब्राह्मणोए पाटणमां **श्री जयसिंह** राजाने जणाव्युं के—'अमुक तिथि, वार, नक्षत्रना दिवसे **वीरसूरि** अहीं आव्या छे अने ते अमने साक्षात् मळ्या छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा विचारवा लाग्यो के—'आ तो एवा प्रकारनी क्रीडामात्र हती के जेथी ते दिवस तेमने मोह दूर करनार थई पड्यो. तेथी ते रात्रे ज अवश्य आकाशमार्गे त्यां गया छे अने मश्करीने बीजे दिवसे

ते ब्राह्मणोने मळ्या छे.' एम वधारे उत्सुक थवाथी राजाए तेमने बोलाववा माटे पोताना प्रधानो मोकल्या. एटले महाभक्त ते प्रधानोए तरत त्यां जईने विनयपूर्वक राजानो स्नेहभाव कही बताव्यो. त्यारे संयममां मग्न अने उदासीन भावे रहेला आचार्य महाराजे जणाव्युं के—पोताना विद्याबळने जाणवा माटे अमे पहेलां पण देशांतर विहार करवानी ईच्छावाळा हता ज कारण के पोताना स्थानमां ते जाणी शकातुं नथी 'राजानुं हास्यवचन एमां अहीं सहकारी कारण बन्युं माटे अन्य देशोमां विहार करतां कदाच तमारा नगरमां आवीशुं. राजाना स्नेह अने मोहमां पोताना दुर्लभ मनुष्यजन्म, व्रत, विद्या, बळ अने श्रुत वृथा कोण गुमावे?'

एम सांभळी ते कहेवा लाग्यां के—'राजानुं एक वचन तमे सांभळो—तमारा संगथी अमारुं सिद्धपणुं साचुं छे, वळी तेटलो काळ पितानुं नाम रहेशे. तमे सिद्ध पासे होवाथी ज अमे सिद्ध थईशुं, अन्यथा नहिं.' ए प्रमाणे सांभळतां आचार्ये तेमनुं वचन स्वीकार्युं अने जणाव्युं के—'अमे ते नगरमां आवीशुं तमे ए बाबतनी चिंता करशो नहिं.'

पछी **महाबौद्धपुर**मां घणा बौद्धोने वादमां जीतीने **श्री वीरसूरि गोपालगिरि**मां आव्या, त्यां राजाए तेमनो भारे सत्कार कर्यो त्यां पण परवादीओने तेमणे जीती लीधा. तेथी **राजाए आनंदपूर्वक तेमने छत्र अने चामरयुगल राजचिह्न आप्यां.** त्यांथी पाछा फरतां मार्गमां तेओ **नागपुर** नगरमां रह्या अने त्यां तेमणे शासननी प्रभावना करी. ए वृत्तान्त जाणवामां आवतां भक्तिशाळी **सिद्धराजे** तेमने बोलाव्या. एटले **गोपगिरि**ना राजाए आपेल परिवार तेमणे सिद्धराजने मोकली दीधो. पछी त्यां संयमयात्रा निमित्ते हळवे-हळवे तेमणे विहार कर्यो अने अणहिल्लपुरनी पासे **चारूप** नामना गाममां तेओ पधार्या, एवामां **श्री जयसिंह** राजा तेमनी सामे आव्यो अने देवताओने पण अपूर्व लागे तेवो तेणे प्रवेश-महोत्सव कर्यो.

हवे त्यां **वादिसिंह** नामे सांख्यमतनो वादी आव्यो. तेणे आ प्रमाणेना श्लोकथी दुर्घट एवो एक लेख राजाने मोकल्यो के—

उद्धृत्य बाहुं किल रारटीति, यस्यास्ति शक्तिः स च वावदीतु ।
मयि स्थिते वादिनि वादिसिंहे नैवाक्षरं वेत्ति महेश्वरोऽपि ।।१।।

अर्थात् - हुं बाहु उछाळीने कहुं छुं के जेनामां शक्ति होय, ते मारी सामे आवीने वाद करे. हुं वादिसिंह वाद करनार छतां महेश्वर पण एक 'अक्षर बोली शके तेम नथी.'

त्यां **श्री कर्ण** महाराजाना बाळमित्र अने **वीराचार्य**ना कळागुरु **श्री गोविंदाचार्य** मुनीश्वर हता. एटले रात्रे गुप्तवेषे राजाए आवीने एकांतमां तेमने जणाव्युं के—'शुं ते भिक्षुनी आप राह जुओ छो?'

आचार्य बोल्या—'तारा वचनथी ते अहीं होय तेम लागे छे, प्रभाते वादीने **वीरसूरि** जीती लेशे.' आथी प्रसन्न थयेल राजाए प्रभाते ते वादीने राजसभामां बोलाव्यो एटले निःस्पृहनी जेम शांत एवा ते वादीए दंभथी कह्युं के—'जो राजा निःसंग छे, तो अमे त्यां शुं आवीए? अमारा वचननो जो ते कौतुकी होय, तो ते पोते अहीं आवीने भूमिरूप आसन पर बेसे.' आथी कौतुकी राजा ते वातनो पण स्वीकार करीने तेना आवासमां गयो अने (ऊँची) जमीन पर ते बेसी गयो. पछी तेणे परिवार सहित **गोविंदाचार्य**ने बोलाव्या त्यां देखावमां जोरदार बीजा सामान्य विद्वानोने पण ते वादीनी आगळ बेसाड्या अने महाप्रज्ञाथी अने शास्त्रोने जाणनार तथा कविओमां अग्रेसर एवा **वीरसूरि**ने अमुक अवधिमां पाछळ राख्या. थोडीवारमां ते आचार्य त्यां आव्या अने पोताना कंबलासन पर तेओ बेसी गया.

त्यां राजाए जणाव्युं के—'आ वादी साथे एमनामां कोण वाद करशे?'

त्यारे **गोविंदाचार्य** बोल्या—अनौचित्यना ज्वरथी पीडाता आ अज्ञनी साथे शास्त्र समुद्रमां नाव जेवी

प्रज्ञावान विद्वानो वाद दूरता शरमाय छे. माटे आ प्राज्ञ वीर बाळ शिष्य वाद करशे.' ए प्रमाणे सांभळतां वादी कहेवा लाग्यो—'आ मुग्ध धावणो बाळक मारी साथे शुं बोलवानो हतो? माटे आ असमान विग्रह (वाद) अमने शुभ भासतो नथी.'

एटले राजाए कह्युं—'अर्थरूप अमृतथी सुगंधि एवा पोताना दुग्धपान करता मुखथकी आ बाळक तारा मदरूप धतूरानी भ्रांतिने दूर करशे.'

एम सांभळतां अवज्ञाना वशथी ते वादी तर्कयुक्त वाक्य बोलवा लाग्यो. पछी ते विराम पाम्यो, एटले सुज्ञशिरोमणि **श्री वीरे** जणाव्युं के—'हुं गद्यमां बोलुं के पद्यमां? जे तने रुचे, तेमां बोलुं.'

त्यारे वादी बोल्यो—'तारी इच्छानुसार तुं मारी आगळ गमे ते छंद के अलंकारमां बोल; सर्वानुवादरूप के अर्थथी तुं सत्वर वाद चलाव.'

ए प्रमाणे सांभळीने **वीरसूरि** पुनः बोल्या के—'आ गुर्जरनो आडंबर करनार बाळक हवे आगळ गमन करे छे, शुं तुं तेमां समजी शकीश?

ते बोल्यो—'पद्य के छंदमां बोलवानी जो तारी शक्ति होय, तो **मत्तमयूर छंदमां** अथवा **अलंकार के अपह्नुतिमां** सर्वानुवादने आश्रयीने बोल.' एम सांभळतां **वीरसूरि** कहेवा लाग्या के—'तुं आसनपरथी उठ अने नीचे बेसीने बधुं सावधान पणे सांभळ. कारण के अमे अडधा सूतेला सामे वाद करी कदापि सरस्वतीनी हीलना करता नथी.' आथी ते वादनी अधवचमां त्यांथी उठ्यो, पछी वचन बोलवामां वीर एवा **वीरसूरि** पूर्वनी प्रतिज्ञा प्रमाणे अस्खलित वाग्धाराथी बोलवा लाग्या, जे सांभळतां वादीनुं वचनबळ बधुं क्षीण थई गयुं. **श्री वीर** बोलतां विराम पाम्या अने अर्थथी तेनो अनुवाद करतां ते वादीने कहेवा लाग्या के-'हवे सर्वानुवादथी तुं बोल.' त्यारे ते वादिसिंह बोल्यो के—'हुं ते प्रमाणे बोलवाने समर्थ नथी.' आथी राजाए पोते तेनो हाथ पकडीने तेने जमीन पर पाडी नाख्यो अने जणाव्युं के—'जो बोलवाने तुं समर्थ नथी, तो ऊँचा आसन पर शा माटे बेठो?'

एवामां **श्रीपाल** कवीश्वर बोल्यो के—**पुरुष ऊँचे आसने बेसवाथी श्रेष्ठ कहेवातो नथी पण गुणोने लीधे ते श्रेष्ठता पामे छे. काका (कागडो) प्रासादना शिखर पर बेसे, तेथी शुं ते गरुड बनी जशे?'** एम विडंबना पामता ते वादीने जोईने **श्री वीरसूरि** कहेवा लाग्या के—'हे राजन्! एम सांभळवामां आवे छे अने मारुं पण ए ज वचन छे के माणस गर्वथी जीताय छे, कारण के शुद्ध न्यायनिष्ठ अने वर्णाश्रमना गुरु एवा तमारा जेवा राजानी सभामां एणे अवज्ञा करी जेथी तेणे प्रसन्न करेल वाग्देवी कोपायमान थईने एने पोतानी वाणीमां मंदता आपी, वळी वादविवादमां प्रथमथी ज अमारामां एवो नियम छे के वादीनो निग्रह थतां प्रतिवादीए तेनुं रक्षण करवुं. माटे हे नरेंद्र! ए मदांध दयाने पात्र छे तेथी एने मूकी द्यो.' एम सांभळतां राजाए ते वादीने छोडी मूक्यो. पछी राजाए **वीरसूरि**ने जयपत्र अर्पण कर्युं अने तेमने भारे सन्मान आप्युं. कारण के पोते **निःस्पृह होवाथी ते द्रव्यनो तो स्पर्श पण करता न हता.**

एकदा जळयात्रामां रेणुथी सूर्यतेजने आच्छादित करता चतुरंग सैन्य लईने राजा गुर्जरभूमि तरफ वळ्यो. त्यां **श्रीवीराचार्य**ना चैत्य आगळथी चालतां प्रसिद्ध **कवींद्र** राजाने जोवा माटे आव्यो. एवामां अनुक्रमे त्यां **सिद्धराज** पण आवी चड्यो. तेने जोतां कोई कवि समस्यापद बोल्यो. एटले तेने उद्देशीने राजाए **वीराचार्य** कवि तरफ दृष्टि करी जेथी ते सुज्ञ कविए तरत ज अनायासे ते समस्या पूरी करी तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे-हे कालिन्दि (यमुना) बोल कुंभोदभव! (अगस्त्य) हुं जलधि छुं. ने मारा शत्रुनुं नाम केम ल्ये छे? हुं नर्मदा छुं ने तुं पण मारी शोक्यनुं नाम के मले छे? तुं मेली केम छे? मालवी स्त्रीओनी काजल आंजेली आंखथी वहेता अविरत अश्रुथी.. केम एमने शुं थयुं? गुर्जराधीश दिग्विज्य करवा निकळ्यो छे.

ए प्रमाणे सांभळतां राजा कहेवा लाग्यो के—'तमारा ए सिद्ध वचनथी हुं मालवपतिनो निग्रह करीश. ए बाबतनो मारा हृदयमां लेश पण संशय नथी. परंतु तमे बलानकमां उभा उभा शत्रु निग्रहनी वात करी तेथी आ विजयनी पताका त्यां ज दृढ थाओ त्यारथी **श्री भावाचार्य**ना चैत्यनी पताका बलानकमां चडती हती; कारण के **महापुरुषे करेल कालांतरे पण नाश पामतुं नथी.**

एवामां एकदा अन्य विद्वानोनी अवगणना करनार अने वादमुद्राने धारण करतो **कमलकीर्ति** नामे दिगंबर वादी साधु, **सिद्धराज**नी राजसभामां आव्यो. वादने माटे तेनी जीह्वा तनमनाट करी रही हती, त्यारे राजाए विद्वानोना विग्रहमां ब्रह्मास्त्र समान एवा **वीराचार्य**ने बोलाव्या. एटले ते पांच वरसनी एक बाळाने साथे लईने आव्या अने अवज्ञापूर्वक वादीने जोईने त्यां आसनपर बेठा. ते गुरु पोताना सर्व सामर्थ्यथी वादनो उपन्यास करवा लाग्यो. ते वखते जाणे कौतुकथी ज **श्रीवीर** ते बाळा साथे रमवा लाग्या. ते जोईने वादी कहेवा लाग्यो के 'हे राजन्! आ तमारी सभा विद्वानोने उचित नथी, कारण के तेमां आवी बाळचेष्टा थाय छे, राजाथी दूर एक हस्तप्रमाण आ महापंडित क्रीडा करी रह्यो छे.'

त्यारे ए महापंडित स्वतंत्र छे. एटले बोले एम कही राजाए वीराचार्य सामे नजर करी. ते हास्यपूर्वक बोल्या के—'समान वयवाळानो ज वाद होय, एम धारीने हुं आ नग्न बाळाने अहीं लाव्यो छुं. आ वादी पण नग्नपणाने लीधे बाळक समान देखाय छे, माटे ए बंनेनो वाद भले थाय. तेमां कोई जातनी लज्जा नथी. स्त्री निर्वाणना निषेधथी आ बाळानी साथे ज एनो विग्रह थवो जोईए. माटे वादमुद्राथी आ बाळा ए वादीने जीती लेशे.' पछी स्पर्श विना तेना शिरपर हाथ मूकीने यतीश्वर बाळाने कहेवा लाग्या के-'आ वादीनी साथे हे बाळा! स्त्री निर्वाणने स्थापन कर.'

एटले मोटा विद्वानोनी जेम ते निपुण बाळाए पोतानी वाग्धाराथी ते वात (स्त्री निर्वाणनी वात) स्थापन करी जेनो उत्तर आपवाने ते वादी असमर्थ थयो. ए प्रमाणे मनमां भयभीत थईने ते बहेरा मुंगा जेवो बनी गयो, एटले सभ्यो अने राजा जय जय शब्दो बोलवा लाग्या. पछी राजाए जणाव्युं के—'अनेक सिद्धिओमां सिद्ध बनेला अने वादीओमां वीर समान **श्री वीरसूरि** विद्यमान छतां मारी सभाने कोण जीते तेम छे? जेना हस्तस्पर्शथी ज्यां त्यां संक्रांत थयेल सरस्वती निरंतर बोल्या करे छे, तेनुं वर्णन कोण करी शके?'

ए प्रमाणे युग प्रधान समान गुणो (तंतुओ) थी संधायेला पटनी माफक **श्री वीरसूरि** भव्य जनोनी जडता (टाढ) ने दूर करनारा थाओ. **श्री कालकाचार्य**नी अद्‌भुत प्रभा अवर्णनीय छे के जेना वंशमां अद्यापि आ **वीरसूरि** जेवा वीर पुरुषो प्रगट थाय छे.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे राजहंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना मनपर लेतां **श्री प्रद्युम्नाचार्ये** शोधेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्रीवीरसूरि**ना चरित्ररूप आ वीसमुं शिखर थयुं.

इति श्री वीरसूरि-प्रबंध

रसनेन्द्रिय पर विजय प्राप्त करने वाला पांचों इंद्रियों के विकारों पर अति शीघ्र विजय प्राप्त कर सकता है।

-जयानंद

२१. श्री देवसूरि-प्रबंध

श्री देवसूरि तमारुं रक्षण करो के जेणे दिगंबरने हठावीने स्त्री सिद्धिनी साथे पोतानी कीर्तिने पण स्थापन करी दीधी. **श्री देवाचार्य** तमारा कल्याण निमित्ते थाओ के जेमणे केवळीनो कवलाहार सिद्ध करीने शासननी प्रभावना वधारी; अनेक विधुर-मिथ्यात्वीजनोने द्रोह उपजावनार सदा विकसित कमळ समान तथा भव्यात्माओने हितकारी एवा ते श्रीसूरिना मुखनी स्तुति करीए छीए. अज्ञानरूप संवर्तकनी भ्रांति तथा दुर्वृतरूप रजने शमाववामां मेघ समान एवा **श्रीदेवसूरिनुं** चरित्र हुं वर्णवुं छुं.

नवीन समान साररूप तथा स्वर्गना एक खंड समान, गुर्जर देशमां **अष्टादशशती** नामे मंडळ (प्रांत) छे. त्यां **मड्डाहृत** नामे नगर के जे पर्वतोनी श्रेणिने लीधे अंधकारना महादुर्गरूप अने सूर्यकांतिने अगम्य छे. त्यां सद्वर्त्तनशाळी, परोपकारी पोताना तेजथी शोभायमान तथा **प्राग्वाट** वंशमां मुक्ताफळ समान एवो **वीरनाग** नामे गृहस्थ हतो, तेनी **जिनदेवी** नामे पत्नी के जे सत्क्रियाना पात्ररूप प्रियंकर गुणोने धारण करनार तथा **हिमवंत**ने **मेनकादेवी**नी जेम शोभती हती.

एकदा तेणे रात्रे स्वप्नमां पृथ्वीपर जाणे अवतार लेवानी इच्छाथी ज पोताना मुखमां प्रवेश करतां चंद्रमाने जोयो, तेना वंशमां **श्री मुनिचंद्रसूरि** गुरु हता के जेमना नामाक्षरो पण **शांतिकमंत्रक** समान हता. पछी प्रभाते नगरमां जई गुरुने नमस्कार करीने महासत्वशालिनी अने प्रमुदित थयेल **जिनदेवी**ए अतिशययुक्त ते स्वप्ननो अर्थ तेमने पूछ्यो.

एटले आचार्य कहेवा लाग्या के—'हे भद्रे! तारा उदरमां **देव चंद्र** समान कोई जीव अवतर्यो छे के जे जगतने आनंद पमाडशे.'

हवे अवसर थतां, **जिनदेवी**ए वज्र समान तेजस्वी पुत्रने जन्म आप्यो, के जेना तेजथी भयभीत थयेल कळिकालरूप पर्वत कंपायमान थयो. पछी हृदयने आनंद पमाडनार ते बाळक वृद्धि पामतां, चंद्रस्वप्नना अनुसारे पिताए तेनुं **पूर्णचंद्र** एवुं नाम राख्युं.

एकदा ते नगरमां उपद्रव जाग्यो के जेथी लोको भारे त्रास पामवा लाग्या अने तरत ज पोताना बचावनो लांबो विचार करवा लाग्या. ते वखते **वीरनाग** विचार करीने दक्षिण दिशामां चाल्यो अने **लाट**देशना भूषणरूप **भृगुकच्छ** नगरमां पहोंच्यो, एवामां जंगम तीर्थरूप **श्री मुनिचंद्रसूरि** पण विहार करीने त्यां गया. तेमना आदेशथी साधर्मीओए **वीरनाग**ने आश्वासन आपीने त्यां राख्यो. तेनो आठ वरसनो **पूर्णचंद्र** पुत्र बाळकने उचित मसालानी फेरी करवा लाग्यो. ते इच्छानुसार गृहस्थोना घरे जतो अने त्यां उपसेल चणा जेवी द्राक्ष पामतो. कारण के **बाल्यावस्थामां पण पुण्य तो जाग्रत ज होय छे.**

एक दिवसे व्यंजन (मसाला) वेचवाने ते कोई गृहस्थना घरे गयो. त्यां रूपिया अने सुवर्ण-समूहने तजी देता ते गृहपतिने तेणे जोयो. कारण के पोताना दुर्भाग्यना उदयथी ते द्रव्यने कांकरा अने अंगाररूपे जोतो हतो. आथी अत्यंत विस्मय पामेल पूर्णचंद्र कहेवा लाग्यो के—'मनुष्योने संजीवन-औषध समान आ पुष्कळ द्रव्यने तमे शा माटे नाखी द्यो छो?'

ए प्रमाणे तेना कहेवाथी पेलो गृहस्थ विचार करवा लाग्यो के—'आ बाळक पुण्यशाळी लागे छे.' पछी

तेणे बाळकने जणाव्युं के—'हे वत्स! आ द्रव्य तुं मने वांसना पात्रमां (टोपलीमां) नाखीने आप.' एम कहेतां ते बाळके पात्रोमां ते भरीने गृहस्थने आप्युं. एटले तेना कर स्पर्शना माहात्म्यथी गृहस्थने ते बधुं द्रव्य जोवामां आव्युं. अहो! पुण्य-पापनुं साक्षात् आवुं अंतर जोवामां आवे छे. पछी ते श्रेष्ठीए बधुं धन पोताना घरनी अंदर दाटी दीधुं. त्यारे बाळके चीज लेवा माटे एक सोनामहोर तेनी पासे मागी. ते श्रेष्ठीए आपतां बाळक खुशी थतो पोताना घरे आव्यो अने पोताना पिताने ते बधी हकीकत संभळावीने प्रमोदथी ते सोनामहोर आपी. **वीरनागे** ए बधो वृत्तान्त गुरु महाराजने निवेदन कर्यो. जे सांभळतां गुरु संतोष पामीने चिंतववा लाग्या के—'आ बाळक शुं पुरुषोत्तम छे? के जेने ईच्छती लक्ष्मी पोतानुं रूप बतावे छे. लोकोरूप कुमुदोने आनंद पमाडवामां चंद्रमा समान चळकती प्रभायुक्त ए बाळक जो मारो प्रिय शिष्य थाय, तो शासननी भारे उन्नति थाय.'

पछी गुरुए **वीरनाग**ने जणाव्युं के—'हे भद्र! अमारुं वचन सांभळ—अमारुं तने वरदान छे के जे वस्तु तने प्राप्त थाय, तेना अमे भागीदार थईए.

ए प्रमाणे सांभळतां **वीरनाग** कहेवा लाग्यो के—'गुरुताने धारण करनार आप पूज्यना कुळमां हुं एक पुत्रवाळो छुं. वळी वृद्ध होवाथी मारुं जीवन ए पुत्रना आधारे छे. हुं एनो पिता, अत्यारे कयो व्यवसाय करी शकुं? वळी अन्य संतानरहित एवी एनी माता पण वृद्ध थई गई छे. तो हुं शुं कहुं? आ बाबतमां आप पूज्यनो जो आग्रह होय, तो मारे विचार करवानो कंईज नथी, ए बाळकने आप ग्रहण करो.'

त्यारे गुरु महाराज बोल्या—'मारा गच्छमां पांचसे साधुओ छे, ते बधा तारा पुत्रो ज छे. तो आ एकने माटे तारो आग्रह केवो? वळी आ श्रावको तने यावज्जीवन गुजरान आपशे माटे अहीं बेसीने परलोकना संबलरूप धर्मनुं निश्चिंतपणे सेवन कर.' पछी आदेशने प्रमाण करनार ते बाळकनी माताने मनावीने गुरुए भक्तिशाळी (भाग्यशाळी) **पूर्णचंद्र**ने दीक्षा आपी अने शासनने उल्लास पमाडनार, संघरूप सागरने वृद्धि पमाडनार तथा आनंदी आकृतिने धारण करनार एवा तेनुं **रामचंद्र** एवुं नाम राख्युं, दूर्ज्ञेयपणाना कलंकने दूर करी जेनी प्रज्ञा दुर्गम शास्त्रोनी पण उपकारी बनी ते मुनिनी शुं वात करवी? (के दुर्नयरूप कलंकने दूर करनार होवाथी जे नाम सार्थक हतुं. वळी जेना शिष्यो दुर्गमशास्त्रोना पण रहस्यने जाणनार थवाना छे, ते शुं सामान्य कहेवाय?)पछी तर्क, लक्षण तथा साहित्यविद्याना पारंगामी एवा **रामचंद्र**मुनि, वर्तमान स्वपर-सिद्धांतमां असाधारण प्रवीण थया. **धवलक्कपुर**मां शिव-अद्वैतने बोलनार घंघ ब्राह्मणने तेमणे परास्त कर्यो. **काश्मीर**, सागर तथा **सत्यपुर** नगरमां वाद करतां तेमणे विजय मेळव्यो, **नागपुर**मां **गुणचंद्र** दिगंबरने पराजित कर्यो, **चित्रकूट**मां भागवत **शिवभूति**ने अने **गोपगिरि**मां **गंगाधर**ने तथा **धारा** नगरीमां **धरणीधर**ने परास्त कर्यो. **पुष्करिणी**मां वचनमदथी उद्धत बनेल **पद्माकर** ब्राह्मणने तथा **भृगुक्षेत्र**मां **कृष्ण** नामना प्रधान ब्राह्मणने तेमणे जीती लीधो. ए प्रमाणे **रामचंद्र** मुनि वादजयथी वसुधा पर भारे विख्यात थया.

वळी मेरु जे कुल पर्वतनी जेम विद्वान् **विमलचंद्र**, प्रभानिधान **हरिचंद्र**, पंडित **सोमचंद्र**, कुळभूषण **पार्श्वचंद्र**, प्राज्ञ **शांतिचंद्र**, तथा चंद्र समान निर्मळ यशथी उल्लास पामता **अशोकचंद्र**-ए तेमना मित्रो हता.

पछी विद्वान् **श्री रामचंद्र** मुनिने योग्य जाणीने गुरु महाराजे तेमने आचार्यपदे स्थाप्या अने **देवसूरि** एवुं तेमनुं नाम राख्युं.

हवे **श्री देवसूरि**ना पिता **वीरनाग**नी बहेन के जे पूर्वे व्रतधारी हती, एटले पापपंकने दूर करनार एवी तेणीने महा प्रतिष्ठा पूर्वक महाव्रत आपीने गुरुए **चंदनबाळा** एवुं नाम राख्युं.

एक वखते गुरुनी अनुमतिथी **श्री देवसूरि**ए **धवलक्क** नामना नगरमां विहार कर्यो, त्यां धार्मिक शिरोमणि एवो **उदय** नामे प्रसिद्ध श्रावक हतो. तेणे **श्री सीमंधर** स्वामीनुं बिंब कराव्युं हतुं, **ते बिंबनी प्रतिष्ठाने माटे**

सद्गुरुनो निश्चय करवा त्रण उपवास करीने तेणे शासनदेवीनी आराधना करी, एटले देवीए तेने आदेश कर्यो के- 'युगप्रधान समान **श्रीदेवसूरि**ना हाथे ए बिंबनी प्रतिष्ठा करावः' पछी ते श्रावकनी प्रार्थनाथी आचार्य महाराजे ते बिंबनी प्रतिष्ठा करी. **उदावसती** नामे ते चैत्य अद्यापि विद्यमान छे.

एकदा **नागपुर** तरफ विहार करवानी इच्छाथी आचार्य महाराज अर्बुद पर्वत पासे आव्या अने शिष्यो तथा श्रावकोना आग्रहथी तेओ अर्बुद गिरि पर चड्या. ते वखते अंबाप्रासादनो मंत्री तेमनी साथे पर्वतपर आरोहण करतो हतो. एवामां कर्मनी विचित्रताथी तेने पगे सर्प करड्यो, ते जाणवामां आवतां गुरुए तेने पादोदक (पगधोवण) मोकल्युं; तेनाथी पग धोतां तरत ज सर्पनुं विष दूर थई गयुं. पछी संसार-सागरना तारक एवा **श्रीयुगादिदेव**ने नमस्कार करीने श्री गुरुए प्रत्यक्ष थयेल शासनदेवी **श्री अंबादेवी**नी स्तुति करी. एटले देवी कहेवा लागी के—'बहु मानने लीधे मारे तमने कंईक कहेवानुं छे. सपादलक्ष देश दूर दूर छे. त्यां तमे मारा वचनथी न जाओ. कारण के तमारा गुरुजीनुं आजथी आयुष्य मात्र आठ महिना बाकी छे,' माटे तमे सत्वर अणहिल्लपुर तरफ पाछा फरो.' एम कहीने देवी अंतधार्नन थई गई.

पछी आचार्य चिंतववा लाग्या के—'अहो! मातानी जेम **अंबादेवी**नुं मारा पर केटलुं बधुं वात्सल्य छे?' एम धारी त्यांथी पाछा फरीने **देवसूरि** सत्वर गुरु पासे आव्या अने देवीनुं वचन तेमणे गुरुने कही संभळाव्युं, एटले पोताना काळज्ञानथी ते अत्यंत संतोष पाम्या.

हवे एकदा घणा वादना जयथी मस्त बनेल एवो **देवबोध** नामे एक भागवतदर्शनी **श्री अणहिल्लपुर**मां आव्यो अने मदोन्मत्त थयेल तेणे राजद्वार पर अवलंबनपत्र लटकाव्युं के जेमां तेणे पंडितोने दुर्बोध एवो आ प्रमाणे एक श्लोक लखेलो हतो—

एक द्वित्रिचतुःपञ्च—षण्मेनकमनेनकाः ।
देवबोधे मयि क्रुद्धे षण्मेनकमनेनकः ।।१।।

बुद्धिमानोने पण दुर्बोध ए श्लोक जोईने विद्वानो बधा सूर्यदर्शननी जेम पोताना लोचनने बंध करवा लाग्या. त्यारे छ महिनाने अंते अंबादेवीनो राजा पर प्रसाद थयो, जेथी तेणे राजानी समक्ष सुज्ञशिरोमणि एवा **देवसूरि** गुरु बताव्या. एटले बुद्धिना निधान **श्री देवसूरि**ए गिरिनदीनो प्रवाह जेम पर्वतशिलाने भेदे, तेम राजानी समक्ष ते श्लोकनो भेद करी बताव्यो, जेथी राजाए तेमने मित्रसमान मानी लीधा.

ए श्लोकनुं विवरण आ प्रमाणे छे—

एक प्रत्यक्ष प्रमाणने माननारा **चार्वाक;** प्रत्यक्ष अने अनुमान—ए बे प्रमाणने माननारा **बौद्ध** अने **वैशेषिक;** प्रत्यक्ष, अनुमान अने आगम—ए त्रण प्रमाणने माननारा **सांख्यो;** प्रत्यक्ष, अनुमान. आगम अने उपमान—ए चार प्रमाणने माननारा **नैयायिक;** प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमान अने अर्थापत्ति—ए पांच प्रमाणने माननारा **प्रभाकर;** प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमान, अर्थापत्ति अने अभाव—ए छ प्रमाणने माननारा **मीमांसक,** ए छए प्रमाणवादीओने ईच्छनार एवो हुं देवबोध क्रोधायमान थतां **विष्णु, ब्रह्मा** अने **सूर्य मेनकमनेना मां-लक्ष्मी, तेनो इन-स्वामी विष्णु, कमनः-ब्रह्मा, ईन्-सूर्य**पण मुंगा बेसी रहे छे, अर्थात् मारी सामे कांई बोली शकता नथी, तो पटुवादी विद्वान् मनुष्यो मारी आगळ शुं मात्र छे?'

हवे **बाहड** नामे एक धार्मिक धनवान् हतो, तेणे गुरुचरणे नमस्कार करीने विनंती करी के—'हे भगवन्! मने शुभ कार्यनो आदेश करो के जेमां हुं मारा धननो व्यय करुं.'

त्यारे गुरु महाराज कहेवा लाग्या के—'हे भद्र! जिनालयमां द्रव्यनो व्यय करवाथी ते सफळ छे.' एम आदेश थतां **बाहड** श्रावके हिमालय समान धवल अने उन्नत तथा कुंभ अने महामणिओथी विराजित एवो

जिनप्रासाद कराव्यो, तेम ज तेजथी चंद्रकांत अने सूर्यकांतमणिनी प्रभाने जीतनार एवुं **श्री वर्द्धमान** स्वामीनुं तेणे अद्‌भुत बिंब कराव्युं.

एवामां विक्रम संवत् ११७८ वर्ष व्यतीत थतां आराधना विधि पूर्वक अनशन करीने शमामृतना कल्लोलथी व्याप्त एवा **श्री मुनिचंद्रसूरि** स्वर्गे गया. पछी एक वर्ष व्यतीत थतां **श्री देवसूरि** पासे प्रमोद पूर्वक **श्री वीरबिंब**नी बाहडे प्रतिष्ठा करावी.

हवे **श्री देवसूरि नागपुर**मां गया, त्यां श्रीमान् **आल्हादान** राजा तेमनी सामे आव्यो, ते वखते आर्य आचारमां कुशळ भागवतेश्वर ते **देवबोध** त्यां आव्यो अने तेणे आचार्यने प्रणाम करीने आ प्रमाणे एक श्लोक कही संभळाव्यो—

यो वादिनो द्विजिह्वान्, साटोपं विषममानमुद्गिरतः ।
शमयति स देवसूरि-नरेन्द्रवन्द्यः कथं न स्यात्? ।।१।।

अर्थात् - अमित अभिमान रूप विषने वमता वादी रूप सर्पोने जे शमावे छे, ते श्री देवसूरि नरेंद्रने वंदनीय केम न थाय?

ए प्रमाणे राजाए महाभक्तिपूर्वक तेमने नगरमां स्थापन कर्या, एटले तत्त्वार्थना ज्ञाता एवा ते गुरु भव्य जनोने प्रतिबोध आपवा लाग्या. एवामां **सिद्धराज** राजाए ते नगरने घेरो घाल्यो, पण त्यां **श्री देवसूरि** हजी बिराजमान छे, एम समजीने ते पाछो फर्यो अने चिंतववा लाग्यो के—'मारा ते मित्र अहीं नगरमां विद्यमान छे, माटे दुर्ग लई न शकाय.' पछी तेणे आचार्य महाराजने राजाए भक्तिपूर्वक पाटणमां बोलाव्या, त्यां वर्षाकाळमां तेमने राखीने पोते **आल्हादन राजा** पर चडाई करी अने **सिद्धराजे** सत्वर दुर्ग कब्जे करी लीधो.

पछी एकदा उत्कंठित थयेल **कर्णावती**ना श्री संघे चातुर्मासने माटे भक्ति पूर्वक **श्री देवसूरि**ने बोलाव्या, एटले श्रीसंघना आदेशने मान आपीने आचार्य त्यां पधार्या अने सिद्ध-उपाश्रयमां आवीने तेमणे त्यां रहेवानो निश्चय कर्यो. तेओ **अरिष्टनेमि**ना प्रासादमां व्याख्यान चलावता अने ते सांभळता घणा अज्ञ जनो प्रतिबोध पाम्या.

हवे **कर्णाटक**ना राजा अने **श्री सिद्ध**नी माताना पिता **श्री जयकेशि** राजाना गुरु **दक्षिण** देशमां वसनार, अनेक वादीओने जीतनार, जीतेला वादीना पूतळाओने डाबा पगमां धारण करनार, गर्वरूप पर्वत पर आरूढ थयेल, पोते जन्मे जैन छतां जैन मतनो द्वेषी, दर्परूप सर्पना करंडीया समान, वादीओमां चक्रवर्ती, वर्षाकाळने व्यतीत करवा **श्री वासुपूज्यस्वामी**ना चैत्यमां रहेल, **श्री देवसूरि**ना धर्मव्याख्याननी ईर्ष्या लावनार एवो **कुमुदचंद्र** नामे दिगंबर हतो. तेणे पोताना वचनथी चारणोने वाचाल बनावीने समतावंतमां अग्रेसर एवा **श्रीदेवसूरि** पासे मोकल्या. तेमांनो मुख्य चारण सूरिने क्रोधमां लाववा माटे दिगंबरनी स्तुतिना काव्यो बोलवा लाग्यो. वळी तेणे स्तुति करतां जणाव्युं के—

'शास्त्र अने विद्याना स्थानरूप तथा जेमनी असाधारण अने शास्त्रपारगामिनी मति जोतां वीणा-पुस्तकने धारण करनारी तथा वेदप्रवीण सरस्वती पण विस्मय पामे छे, माटे ब्रह्मव्रतमां रही तेमनी उपासनामां आस्तिक बनीने श्वेतांबरो परम आनंद मग्न केम थता नथी? वळी ते तो श्वेतांबरोने जाग्रत करवा एटले सुधी कहे छे के- 'हे श्वेतांबरो! तमे मिथ्या आडंबर अने वचनरचनाथी मुग्ध जनोने अतिविषम संसाररूप खाडामां शा माटे नाखो छो?' जो तत्त्वातत्त्वनी विचारणामां लेश पण तमारी इच्छा होय, तो रातदिवस **कुमुदचंद्र**ना चरणयुगलनुं सत्य रीते सेवन करो.'

एवामां दर्शनने प्रतिकूल वाणी सांभळतां रोषने धारण करनार, श्री देवसूरिनो **माणिक्य** नामे एक प्रधान शिष्य कहेवा लाग्यो के—'सिंहना कंठपर रहेला केसराने पोताना पगथी कोण स्पर्श करे? तीक्ष्ण भालावती

पोताना नेत्रने खंजवाळवा कोण ईच्छे छे? शेषनागना शिरपर रहेला मणिने लेवानी कोण हिम्मत करे? के जे वंद्य श्वेतांबर दर्शननी आवी निंदा करे छे?' एटले शिष्योमां माणिक्य समान एवा **माणिक्य** शिष्यने **श्री देवसूरि** कहेवा लाग्या के—'हे वत्स! कर्कश बोलनार ए दुर्जनपर क्रोध करवानो अवकाश नथी.'

त्यारे आवेल **बंदिराज** बोल्यो के—'हे चणाचावनार श्वेतांबर! ए वादी तमारा श्वेतांबररूप अंधकारनो नाश करवामां सूर्य समान छे अने श्वेतांबररूप मच्छरने परास्त करवामां धूम्र समान छे. वळी श्वेतांबरने मश्करीथी हसी काढवामां **कुमुदचंद्र** प्रभु सूत्रधार समान छे. हवे अहीं अन्य वचनना आडंबरथी शुं? तारे कंई कहेवुं होय, तो स्पष्ट जणावी दे.'

एटले **देवसूरि** गुरु कहेवा लाग्या के—'अमारा दर्शनमां व्रतधारीने अहंकार लाववानुं कहेल नथी तो पण दिगंबरशिरोमणि मारा बंधुने एक संदेशो संभळावजे—

हे सुज्ञ! गुणमां विमुख रहेवुं ते योग्य नथी, कारण के जेम लक्ष्मी पंकजमां वसे छे, तो गुण ग्रहण करवामां ज ज्ञाननुं फळ छे. माटे मदनो त्याग करीने पोताना गुणोने प्रशमरसयुक्त बनाव. कारण के दम-ईंद्रियदमन ए मुनिओनुं भूषण छे अने ते मदनो क्षय करवाथी ज रही शके छे.'

एम आचार्ये कहेतां ते चारणे पोताना वादी मुनि पासे जईने ते वात बधी निवेदन करी जे सांभळतां ते कुमुदचंद्र बोल्यो के—'प्रशमशब्दथी उत्तर आपवो, ए मूर्ख साधुओनुं लक्षण छे. आ उत्तेजन तो एवुं छे के एनी विद्याकळा खरी रीते चित्तने पीडवारूप जणाय छे.' एम धारीने ते पोताना शिष्यो मारफते वैरानुबंधनी चेष्टाथी ते मार्गे आवेल श्वेतांबर साधुओने बहु ज सतावबा लाग्यो. एम उपसर्ग थया छतां **देवसूरि** मेरुनी जेम निष्कंप रह्या, त्यारे ते दिगंबर पोतानी दुष्टताने उचित अवशिष्ट कर्म करवा लाग्यो. एटले एकदा पोताना चैत्य पासे थईने गोचरी माटे जती एक वृद्ध साध्वीने ते उपसर्ग करवा तत्पर थयो, त्यां साहसी एवो ते दिगंबर आकाश-वृक्षना पल्लव समान पल्लवोने एक कुंडामां भरीने तेमां ते साध्वीने नचाववा लाग्यो. त्यारे लोकोमां तेनो एवो अवर्णवाद थयो के—'अहो! आ दुष्ट पापी दिगंबर, वृद्ध साध्वीने विडंबना पमाडे छे.' पछी केटलाक दयाळु पुरुषोए छोडावतां ते साध्वी आचार्य महाराजना उपाश्रये आवी अने गद्‌गद् शब्दथी ते हकीकत कहेवा लागी. त्यारे आचार्ये तेने पूछ्युं के—'तेणे तारुं शुं अपमान कर्युं?' एटले जरा अने शोकथी दबायेल साध्वीए तेमनी आगळ व्यक्त स्वरे बधो व्यतिकर कही संभळाव्यो अने पुनः ते कहेवा लागी के—'मारा गुरुए तमने वृद्धि पमाड्या, भणाव्या अने आचार्यपदे स्थाप्या, ते खरेखर! अमारा जेवानी विडंबना माटे ज! बीभत्सदर्शनी आ दिगंबरे पोताना दुष्ट जनोना हाथे, राजमार्गे जतां मने अनाथनी जेम भारे उपद्रव पमाड्यो, तो आ निष्फळ तमारी विद्वत्ता अने प्रभुतानुं फळ शुं? जो हाथमां रहेल शस्त्रथी शत्रु न हणाय, तो तेवा शस्त्रथी शुं? शम अने समतारूप महालतानुं फळ शुं दृढ पराभव हशे? राहु पोतानी इच्छानुसार चंद्रमाने ग्रस्त करे छे अने मूकी दे छे. आजे तमारा पराक्रमनो समय छे अने विद्यानुं आ फळ छे. धान्य शुष्क थई जाय अने धन नष्ट थाय, ते वखते मेघनुं वरसवुं शा कामनुं?'

ए प्रमाणे सांभळतां **देवसूरि** क्रोधथी दुर्धर वचन कहेवा लाग्यो के—'हे आर्ये! तमे विषाद न करो, ए दुर्विनीत पोते पतित थशे.'

एटले साध्वी बोली के—'ए दुर्विनीत तो पतित थशे के नहि, परंतु तमारा पर आधार राखीने बेसी रहेल संघ तो नेतरनी जेम पतित थशे ज.'

त्यारे आचार्य बोल्या—'हे भद्रे! जो तमे स्थिर चित्तथी अवलोकन करो, तो **मुक्ता-मोतीओनी जेम आपणो वेध गुणथी जोडावा माटे थशे**' पछी तेमणे पोताना माणिक्य शिष्यने जणाव्युं के—'हे भद्र! श्री पाटणना संघ प्रत्ये मारी विनययुक्त विज्ञप्ति लख.' एटले गुरुना आदेश प्रमाणे तेणे स्फुटाक्षरे विज्ञप्ति लखी अने ते गुरुने

बतावी. आचार्य ते आ प्रमाणे वांचवा लाग्या—'हे स्वस्तिश्री जिनेश्वरने नमन करीने कर्णावतीथी **श्री देवसूरि** भक्तिपूर्वक **श्री अणहिल्लपुर**ना संघने विज्ञप्ति करे छे के—अहीं दिगंबर वादी साथे वाद करवानो निश्चय करेल होवाथी अमारे त्यां सत्वर आववानुं छे.' ए प्रमाणे विज्ञप्ति शीघ्र गमन करनार एक पुरुषना हाथमां आपी एटले ते त्रण प्रहरमां गुर्जर राजधानीमां पहोंच्यो त्यां श्री संघे भोजन, वस्त्रादिकथी तेनो आदरसत्कार कर्यो अने प्रतिलेख आपीने तेने तरत ज पाछो मोकल्यो. तेणे **देवसूरि** पासे आवतां प्रमोदपूर्वक श्री संघनो आदेश समर्पण कर्यो. एटले तेने ललाटे स्थापन करतां खोलीने आचार्य आ प्रमाणे वांचवा लाग्या-'स्वस्ति श्री तीर्थनायकने वंदन करीने पाटणथी संघ हर्षपूर्वक **कर्णावती**मां बिराजमान अने परवादीओना जयथी प्रकृष्ट एवा **श्री देवसूरि**ने आदेश करे छे के—हे वादीविशिष्ट! तमारे अहीं सत्वर आववुं अने वळी वादिवेताल **श्रीशांतिसूरि** सद्गुरु पासे अभ्यास करनार अने शैवमतना वादीने जितनार एवा **मुनिचंद्रसूरि** महात्माना शुं तमे शिष्य शिरोमणि नथी? वर्तमानकाळे श्री संघनो उदय तमारा पर ज रहेलो छे, माटे अहीं **श्री सिद्धराज**ने विनंती करीने अमे तमारा विजयने कौतुकपूर्वक पोतानो विजय समजीने अवश्य जोईशुं. वळी हे प्रभो! तमारा विजय निमित्ते अहीं त्रणसें श्रावक अने सातसो श्राविकाओ आयंबिल करे छे. श्री शासनदेवी तमने बळ आपे अने विरोधी देवोना प्रभावने सत्वर परास्त करे.'

ए प्रमाणे तत्त्वथी ते आदेशनो अर्थ विचारी विश्ववंद्य अने बुद्धिनिधान **श्री देवसूरि**ए ते चारणने पोतानी हकीकत समजावीने दिगंबर वादी पासे मोकल्यो. एटले तेणे जईने निवेदन कर्युं के—'वादींद्र **देवसूरि** पोताना मुखथी तमने एम कहेवडावे छे के—हुं पाटण नगरमां जाउं छुं अने तमे त्यां आवजो के जेथी सिद्धराजनी सभामां तेना सभासदोना देखतां स्वपरना अभ्यासनुं प्रमाण मळी शके.' ए प्रमाणे तेणे बधुं लक्ष्यपूर्वक सांभळीने जणाव्युं के—'भले एम थाओ. हुं त्यां आवीश.' एम वादीए कहेतां तरत तेने छींक आवी, ते तेनुं अपशुकन समजी, गुरु पासे आवतां तेणे कही संभळाव्युं.

पछी शुभ दिवसे **सूर्य मेषलग्ने, चंद्रमा सातमे** अने **रिपुद्रोही राहु छट्ठे लग्ने** स्थित रहेतां **श्री देवसूरि** महाराजे त्यांथी विहार कर्यो. ते वखते तेमने शुभ शुकन थयां. एटले जमणी आंख फरकी तथा शिर पण बहु ज फरक्युं, आकाशमां **चाष पक्षी (लीलछा) दृष्टिगोचर थयो** मयुरे शब्द पण कर्यो. विघ्नोने निवारनार मृगलांओए तेमनी प्रदक्षिणा करी तथा लोकोए पूजित प्रतिमायुक्त तीर्थंकरनो रथ तेमने सन्मुख मळ्यो. इत्यादि निमित्तोथी श्रेष्ठताने पामेला आचार्य महाराज विना विलंबे पाटण नगरमां पहोंच्या. एटले उत्कंठित थयेल श्री संघे तेमनो प्रवेश-महोत्सव कर्यो. पछी शुभ समये तेओ **सिद्धराज**ने मळ्या.

हवे पेलो चारण दिगंबर पासे जतां पुनः श्री देवसूरिनो संदेशो स्फुट वचनथी कहेवा लाग्यो के—'हे महात्मन्! तमे मद मूकी द्यो. कारण के ते (मद) पुरुषोने महासंकट आपे छे. पूर्वे **रावणे** शलाकापुरुष छतां मदथी ते भारे आपत्ति पाम्यो.' ए प्रमाणे कहीने वैतालिक-चारण मौन रहेतां दिगंबर बोली उठ्यो के—'श्वेतांबरो कथाना ज्ञाता होय छे, तेमनुं तेजमात्र जीवित छे. एटले हुं कांई तेमनी कथाथी भय पामनार नथी, हुं तो केवळ वादथी प्रसन्न छुं, के जेथी स्वपरनुं प्रमाण जाणवामां आवे तेथी राजा पासे जवानुं जे तेणे जणाव्युं, ते उचित ज थयुं. माटे वादमां उभा रहीने ए प्रमाणे करीए. तो आजे आपणे पण त्यां अवश्य जईए.' एम कहीने ते सुखासन-पालखीपर आरूढ थयो. एवामां तेने पुनः छींक आवी, एटले ते विचारवा लाग्यो के-'ए तो श्लेष्मनो विकार शब्द छे, मारा जेवाए तेमां आस्था शी राखवी? अथवा तो तेथी पण जीह्वाने कदाच वधारे श्रम वेठवो पडशे, पण अन्य कांई प्रतिघात थाय तेम नथी. जो के वादने माटे ए छींक आपणने अटकावे छे, तथापि आपणे तो जवानुं ज छे.' एम कहीने ते आगळ चाल्यो, त्यां कालरात्रिना कटाक्ष समान काळो नाग आडे उतर्यो. ए अपशुकनना संभ्रमथी तेनो परिवार विलंब करी रहेतां बोल्यो के—'आपणा स्वामीनुं आ काममां कुशळ देखातुं नथी.'

त्यारे दिगंबर वादी कहेवा लाग्यो के—'ए सर्प नथी, पण श्री पार्श्वनाथना तीर्थाधिष्ठायक धरणेंद्र आ कार्यमां सहायता आपवा माटे मने दर्शन देवा आव्यो हतो.' ईत्यादि अपशुकनोथी प्रतिघात पामतां पण अने पोताना परिवारथी पण निषेध पाम्या छतां वादी दिगंबर **अणहिल्लपुर**मां आवी पहोंच्यो.

हवे **श्री देवसूरि**ए नगरमां प्रवेश कर्यो त्यारे **थाहड नागदेव** तेमनी सन्मुख आव्या, तेमणे नमस्कार करीने आचार्यने विनंती करे के—'हे भगवन्! दिगंबरना पराजयमां तमारी इच्छानुसार धन अपावो कारण के आ धन तेटला माटे ज उपार्जन करेल छे.'

त्यारे **श्री देवसूरि** कहेवा लाग्या के—'कदाच भारतीना प्रसादथी जय न थाय, तो सत्यज्ञानीओने संकोच के उल्लास पामवानुं शुं कारण छे?'

एटले **थाहड** बोल्यो—'हे नाथ! त्यां रहेल **शांबरे** धननो व्यय करतां कोशाध्यक्षथी गांगिलादिकने वश कर्या छे.

गुरुए जणाव्युं—'हजी देवगुरु जाग्रत छे, माटे तमारे अस्थानो द्रव्यने व्यय न करवो.'

एवामां नगरनी अंदर आवेल **कुमुदचंद्रे** श्वेतांबरनो जय करवानी पोतानी उन्नति बतावता माटे पत्रो लटकावी दीधां. एटले यतिओना दरेक उपाश्रये वीस दिवस जळ-तृण मूकीने वाद्यो वगडाव्या. तेना पक्षमां त्रण केशव सभ्य थईने रह्या, तेमज बीजा पण नूतनदर्शनी बधा तेना पक्षमां गया.

ते वखते **थाहडे** दिगंबरनी जयलक्ष्मीना शृंगाररूप त्यां राजद्वार पर लटकतुं पत्र फाडी नाख्युं, एटले सिद्धराजे श्रीपालना मुखथी बधो वृत्तान्त जाणीने तेणे श्वेतांबर अने दिगंबरने त्यां बोलाव्या अने सभानी व्यवस्था करीने सत्वर पोताना दूतने मोकल्यो तेमज तेमनो संबंध (प्रतिज्ञा पत्र) उतारी लेवा माटे **गांगिल** मंत्रीने तेणे आदेश कर्यो, पछी मंत्रीए श्री करणमां (वहीखातामां) (कचेरीमां) **श्रीदेवसूरि**ने बोलाव्या.

एवामां कोई ब्राह्मण त्यां आव्यो. अने जातिमदथी द्वेष भर्युं वचन बोल्यो. मळतो जथ्थो जामवाथी जेमना दांत स्थूळ थई गया छे. भिक्षानुं भोजन करीने अेंठवाडना जळथी जेओ शौच करे छे. शरीर शुद्धिना विषयमां जळतो जेमने साक्षी रूप छे. ते श्वेतांबरो पण राजा समक्ष जल्पोत्सव वाद ईच्छे छे. ते कौतुक ज छे ने?

त्यारे **देवसूरि** स्फुर्त्ति लावीने बोल्या के—'धीवरो (मच्छीमारो) मीमांसा अने आसक्तियुक्त होय छे, तेथी शौचाचारनी विचारणा तेमने उचित छे. परंतु कह्युं छे के—विचार करो के अहो! जठरना मध्य भागमां रह्या छतां अल्प मळ जे जळथी दूर थई शकतो नथी, तो अरूपी आत्मामां रहेल पातक रूप कादव ते जळथी शी रीते दूर थई शके? अर्थात् न ज थई शके.' ते तो विचारो.

एवामां **माणिक्य** नामे शिष्य बोल्यो के—'आ ब्राह्मणनो शो दोष छे? विवेकमां बृहस्पति समान अहीं **सिद्धराज** उपालंभ पात्र छे. लोकोमां संस्कार अने सूत्रपालनमां हृदयोनी स्थिति चार प्रकारनी छे अने अन्य अन्य रूपथी शरीर, मन, वचन अने काया रूप छे. कर्तव्यशाळी पुरुषोने सदा अकृत्य अने कृत्यनी तुलना होय छे. अहीं ब्राह्मणोनुं जे प्रधानत्व छे, ते अन्य दर्शनोने विडंबना रूप छे.'

ए प्रमाणे उहापोहथी थयेल संबंध तेमणे गांगिल मंत्रीने न आप्यो. पछी प्रभाते आवेल गांगिल मंत्रीने राजाए पूछ्युं के—'बंने वादीओनो संबंध तमे लखी लीधो छे के नहि?'

एटले तेणे जणाव्युं के—'एमनी अपवित्रताथी राजसभानी स्थिति उचित न लागी, तेथी में संबंध लख्यो नथी.' आथी समुद्र जेम वडवानलने धारण करे, तेम हृदयमां कोपानलने धारण करतो राजा कहेवा लाग्यो के-'ए प्रमाणे सदसत् मनुष्यना विशेषने जाणनार एवा तारा माटे जे व्यय थाय छे, ते अलंकारथी आरोपण करेल प्रशंसा समान छे. अज्ञ जनोने गौर वर्ण पण काळ जेवो ज भासे छे. परंतु आ संबंधमां तारो लेश पण दोष नथी,

पण मारुं ज अविचारीपणुं छे, परंतु तुं नागर-नगरवासी छतां दर्शनशास्त्रथी बाह्य होवाथी एक ग्राम्यनी जेम अंतर्दृष्टि रहित छे, जेथी गुणोने दोष रूप करीने बोले छे. वळी ए एक तारुं महाभाग्य के ते ब्रह्मचारीएवि वाद करतां छतां तने शाप-श्रापथी भस्मीभूत न कर्यो. माटे हवे तेनो सत्कार करीने बंने वादीओना वाद समये जय पराजयनो संबंध लखीने मने अत्यारे ज समर्पण कर.'

ए प्रमाणे राजानो आदेश ग्रहण करीने स्वामीना सांत्वन माटे तेणे पोताना लघु बंधुने मोकल्यो, अने आ. देवसूरिजीने श्री करण (कचेरी)मां बोलाव्यो. गांगील मंत्री स्वयं न आव्यो एटले पोतानुं जवुं उचित न हतुं तेथी तेमणे विजयसेन नामना विद्वानने मोकल्यो. पछी तेमणे आ प्रमाणे लेख लखीने राजा पासे मोकल्यो के—'जो दिगंबर जीताय, तो एक चोरनी माफक तेने पकडीने तिरस्कार पूर्वक नगर थकी बहार काढी मूकवो. अने जो श्वेतांबर हारे, तो तेना शासननो उच्छेद करीने दिगंबर मतनुं स्थापन करवुं. कारण के पछी ते अहीं शा माटे रहे?'

ए रीते पक्ष करवामां आवेल छतां बलोन्नत्त एवा तेमणे ते संबंध मान्य राख्यो. पछी सिद्धराजे श्रीपाल कवीश्वरने शिखामण आपीने अत्यंत वात्सल्यथी तेने **देवसूरि** पासे मोकल्यो. एटले तेणे जई, प्रणाम करीने गुरु समक्ष राजानो संदेशो संभळावतां जणाव्युं के—'स्वदेशी के परदेशी पंडितो बधा मने माननीय छे, छतां हे बंधो! वादलीलामां तमारे एवी रीते बोलवुं के मारा श्रेयने माटे देशांतरीनो पराजय थाय. तमे विद्यमान होवाथी ज मारा धननी आवी दृढ अवस्थिति छे, माटे आपणी सभाने लज्जा पामवानो वखत न आवे, एवी रीते तमारे वाद करवो.'

एटले **श्री देवसूरि** प्रत्युत्तर आपता बोल्या के—'हे महाराज! तमारो प्रताप ज परदेशी पंडितोने जीतनार छे, तेमां अमे तो मात्र सहकारी छीए, छतां तमे मनमां क्षोभ न लावशो. गुरुए बतावेल पक्ष-प्रमाणोथी हुं ते वादीने अवश्य जीतीश. तमारी जेम आवा विद्वानोने शासन पमाडनार तथा तेना वचनमां कौतुक धरावनार कोण छे? के संसारने न ईच्छनार छतां हुं जेनी साथे वाद करवा तत्पर थयो छुं.' ए प्रमाणे **देवसूरि**नां वचन **श्रीपाल** कविराजे राजाने संभळाव्यां, जे वचनामृतथी राजा भारे प्रमोद पाम्यो.

पछी विक्रम संवत ११८१ ना **वैशाख** मासनी पूर्णिमाना दिवसे वादी अने प्रतिवादीने वादशाळामां बोलाववामां आव्या. एटले **कुमुदचंद्र** वादी छत्र, चामर युक्त सुखासनमां बेसीने आडंबर सहित त्यां आव्यो त्यारे प्रतिहारे मूकेल पाट पर बेसतां ते बोली उठ्यो के—'श्वेतांबर भयने लीधे केम हजी आव्यो नथी?'

एवामां **श्री देवसूरि** राजसभामां आवी पहोंच्या त्यां पोताना बुद्धि बळथी गर्विष्ठ बनेल **कुमुदचंद्र** कहेवा लाग्यो के—'आ श्वेतांबर मारा वादरूप रणांगणमां शुं बोलवानो हतो? माटे अत्यारे एने सत्वर पलायन करी जवुं उचित छे.'

त्यारे आचार्य बोल्या के—'आ मारो बंधु असत्य शुं बोली रह्यो छे? कारण के श्वेतांबर श्वान छे, एटले रणांगणमां तेनुं भसवुं बस छे, पण रणमां तेनो अधिकार नथी. परंतु शीघ्र पलायन जे ए कहे छे, ते युक्त ज छे.' ए प्रमाणे आ शब्दखंडनायुक्त वचन सांभळतां सभासदो बधा विस्मय पाम्या अने हास्यपूर्वक तेओ चिंतववा लाग्या के—'अहो! आ श्वेतांबरनो अवश्य जय थवानो छे.'

हवे जिनशासनना पक्षपाती अने एकाग्रमनवाळा एवा **थाहड** अने **नागदेव** ते वखते बंने साथे प्रमोदपूर्वक त्यां आवी पहोंच्या. तेमां **थाहडे** आचार्य महाराजने विनंती करी के—'हे भगवन्! द्रव्यथी सभ्योने भेद पमाडवानी में प्रतिज्ञा लीधी छे, माटे अवश्य द्विगुण द्रव्य आपीश, के जेथी स्वशासननी प्रभावना थाय, तो आ दासने आदेश करो.' त्यारे गुरु कहेवा लाग्या के—'हे भद्र! तारे द्रव्यनो व्यय न करवो. कारण के आजे **श्री मुनिचंद्रसूरि** महाराजे मने स्वप्नमां जणाव्युं छे के—हे वत्स! तारे स्त्रीनिर्वाणनो प्रयोग कहेवो अने ते पण **श्री शांतिसूरि**ए **उत्तराध्ययन**

ग्रंथनी टीका बनावी छे, तेना अनुसारे तारे बोलवुं तेथी शत्रु अवश्य पराजय पामशे.' एम कहीने स्वदर्शनने उचित, आनंदना कारणरूप तथा वादीओने केतु-विघ्नरूप एवो आशीर्वाद तेमणे आ प्रमाणे राजाने कही संभळाव्यो—'श्वेतांबरनी उल्लासमान कीर्तिना विकासथी मनोहर तथा नयमार्गना विस्तारनी रचनाना स्थानरूप तेमज जे स्त्रीनिर्वाणने स्थापन करे छे, ज्यां सदा परमतना अभिमानने जीतनारा केवली छे. हे चौलुक्यवंशी राजन्! ते श्री जिनशासन अने राज्य पक्षे उज्ज्वल गगनमां उछळती कीर्ति विस्तारथी मनोहर न्यायमार्गना (नयमार्गना) विशाल शोभाना घर रूप ज्यां शत्रुना मानने हरनार हाथीओ सदा छे. जे शत्रुंने शांतिनुं स्थान रहेवा देतुं नथी एवुं तमारु राज्य जयपामो.'

एवामां अनेक राजाओना विद्वानोना विजयथी शोभा पामनार एवा **कुमुदचंद्र** वादीए **सिद्धराज**ने आशिष आपतां जणाव्युं के—'सूर्य खद्योत जेवो लागे छे, चंद्रमा जीर्ण करोळीआ समान भासे छे अने पर्वतो मच्छर जेवा बनी गया छे-ए प्रमाणे नभनुं वर्णन करतां हे भूपाल! तमारो यश स्मृतिगोचर थयो के ज्यां आकाश भ्रमर समान भासे छे, तेथी वाणी बधी मुद्रित थई जाय छे.'

ते वखते **महर्षि उत्साह** कलानिधान **सागर** अने प्रज्ञाशाळी **राम** ए राजाना सभासद हता. ते कहेवा लाग्या के-'वाणी मुद्रित थई गई, एम जे दिगंबरनुं कथन छे, ते अयुक्त छे माटे ज्यां स्त्रीनिर्वाण-ज्ञानीभुक्ति छे, त्यां अवश्य जय छे.'

वळी **भाभू** अने महाकवि **श्रीपाल** देवसूरिना पक्षमां तेमज दिगंबरना पक्षमां त्रण केशव मान्य हता. एटले दिगंबरना पक्ष थकी कंईक हास्यगर्भित वचनने जोई उत्साह युक्त **उत्साह** त्यां स्पष्टाक्षरमां बोल्यो के-'वस्त्रावृत अने दूषण रहित साधन बतावतां सभामां आ केशलोचीना केवळ त्रण **केशव** सभासद छे.' पछी **देवसूरि**ए दिगंबरने विनंती करी के—'कंईक प्रयोग बोलो,' एम कौतुकथी सम्यक् प्रकारे आदेश कर्यो.

एटले ते दिगंबर कहेवा लाग्यो के—'स्त्रीभवमां रहेला जीवने तुच्छ सत्त्वने लीधे निर्वाण नथी, कारण के ज्यां तुच्छ सत्त्व छे त्यां मुक्ति नथी. आ संबंधमां बाळक, तुच्छ पुरुष अने अबलावतार-ए उदाहरणरूप छे, माटे त्यां निर्वाण नथी.'

त्यारे **श्री देवसूरि** तेना वचनने असिद्ध करता बोल्या के—'मरुदेवा स्त्रीभवे मुक्ति पाम्या, ए वात आगममां मान्य छे. जो ए वात तारा जाणवामां न आवी होय, तो आगमनो अभ्यास कर. ते सिद्धांतना मार्गनुं उल्लंघन करीने जे निश्चय करवो, ते अन्याय छे. वळी अनेकांतिकपक्षने लईने तारो हेतुपण दूषित छे. कारण के महासत्त्वशाळी स्त्रीओ पण आगममां प्रत्यक्ष देखाय छे ते सीतादि आगममां सिद्ध छे, तेम ज महीपतिनी माता श्री मयणल्लादेवी साक्षात् सत्त्व अने धर्मना एक स्थानरूप छे. एम प्रतिव्यासि प्राप्त थतां तारी ए व्यासि असत्य ठरे छे. स्त्रीओ बधी तुच्छ जे तुं प्रतिपादन करे छे, ते तेमनामां सत्त्व उपलब्ध थवाथी ए वचन पण असिद्ध छे. वळी स्त्रीनिर्वाण पण तेथी सिद्ध थयेल होवाथी तारुं उदाहरण पण दूषित छे. तेम बाळकने माटे जे ते लक्षण बांध्युं, ते पण अतिमुक्तक साधुना दृष्टांतथी सदोषित थयेल पूर्व सिद्धांतथी एनो उपनय असिद्ध छे अने तेथी निगमन पण दूषित छे, कारण के ते अनुमानथी ज साबीत थाय छे.'

ए प्रमाणे परपक्षने दूषित करी पोताना पक्षने स्थापन करतां स्त्री निर्वाणने सिद्ध करवा माटे **श्री देवसूरि** कहेवा लाग्या के—'प्राणीओ सत्त्वनी विशिष्टताथी स्त्रीभवमां पण निर्वृति पामी शके. **कुंती, सुभद्रा** वगेरे सत्त्वाधिक स्त्री मारा जोवामां आवी छे अने आगममां तेमना दृष्टांतो मोजुद छे. एटले स्त्रीओ पण महासत्त्वयुक्त होय छे अने तेथी तेओ मोक्षे पण अवश्य जाय छे' एम कही **देवसूरि** विराम पाम्या त्यारे दिगंबर वादी बोल्यो के—'ए युक्तिओ तमे फरी बोलो जाओ, एटले आचार्य ते फरीवार बोल्या. एम त्रण वार बोली गया, छतां ए वातपर तेणे

लक्ष्य न दीधुं. एम न जाणवाथी ते तेमने दूषित न करी शक्या. त्यारे प्रतिवादीए जणाव्युं के—'आ वाणीमां अबोध ए ज तारो प्रगट उत्तर छे.'

एटले दिगंबर कहेवा लाग्यो के—'आ जल्प (वाद) वस्त्रपर लखी ल्यो.'

त्यारे महर्षि बोल्यो के—'वादमुद्रा संपूर्ण थई लागे छे. अहीं दिगंबर जीतायो अने श्वेतांबर विजय पाम्या.' एम राजाए कबूल करतां ए प्रयोग केशवे लखी लीधो, त्यारे तेने दूषित थयेल जाणी दूषण भेदीने पोताना पक्षने स्थापन करता बोल्यो, तेमां दूषणरहित कोटाकोटि शब्दनो तेमणे प्रयोग कर्यो. आथी वादीए जणाव्युं के—'ए अपशब्द छे.' एटले प्रधान सभासद **उत्साह** कहेवा लाग्यो के—'**पाणिनिए** सूचन करेल ए शुद्ध शब्द छे. कारण के कोटाकोटि, कोटिकोटी अने कोटिकोटि ए त्रण शब्दो पाणिनिए बराबर सिद्ध कर्या छे अने आर्हत मतने पण मान्य छे, माटे ए प्रयोग निवारवा लायक नथी. आथी तो तने पोताने ज बंधाई जवानो वखत आव्यो. तो हवे कदाग्रहथी निवृत्त था.' त्यारे **देवसूरि**ने प्रत्युत्तर आपवामां असमर्थ एवो वादी दिगंबर विलक्ष अने अनुत्तर बनीने कहेवा लाग्यो—'हे महाराज! शुं कहेवुं, देवाचार्य महान् वादी छे.'

त्यां राजाए कह्युं—'तुं निस्तन्द्र थईने बोल, विस्मृत हुं कहीश.' त्यारे वादी कंई पण मुखथी बोली न शक्यो. एटले अन्य सभासदो ताळीओ पाडवा लाग्या. पछी राजाए पोताना पुरुषो पासे संबंधविधि लखावीने **श्रीदेवसूरि**ने जयपत्र अर्पण कर्युं.'

त्यारे गुरु कहेवा लाग्या के—'अमारे कांईक कहेवानुं छे. शास्त्रीय वादमुद्रामां वादीनो जे निग्रह अने पराजय थयो, तेथी तेनो तिरस्कार कोई करशो नहि.'[1]

राजाए कह्युं—'आपना वचनथी भले एम थाओ. आडंबर तजीने ते भले दर्शनीपणाने पामे.'

एवामां **श्री कामदेवी**ए **अवज्रार्गला** नामे **सिद्धयोगिनी**ने मोकली तेणीए कह्युं 'हे सिद्धराज! तुं अने तारा मित्र देवसूरि अक्षय बळवाळा थाओ' एम आशीर्वाद पूर्वक अभिनंदन आपीने गौरव विनाना दिगंबरना भालपर मसीनो कूसको मार्यो पछी बधाना देखतां ते आकाशमार्गे चाली गई.

त्यारे राजाए तुष्टिदानमां एक लक्ष द्रव्य आपवा मांड्युं. पण निःस्पृह अने निर्ग्रंथ एवा आचार्ये तेनो निषेध कर्यो, एटले गण, गंधर्व अने सिद्धादिक देवाए पूर्वे पण जोयेल एवो प्रवेश-महोत्सव राजाना आदेशथी प्रवर्त्तमान थयो त्यारे समस्त वाजिंत्रोना नादपूर्वक कुलीन कांताओना संगीत मंगल थतां **श्री देवसूरि**ए वसतिमां प्रवेश कर्यो.

एवामां राजाना चारणे सदा औचित्य कृत्यने जाणनार एवा **श्री देवाचार्य**ने उच्च स्वरे आशिष आपतां जणाव्युं के—

'अत्यंत संतोष अने निःस्पृह वचनथी जेमणे काम, हिंसादिकथकी निवृत्त करीने दिगंबर वादीने शमादिकमां स्थापन कर्यो अने राजा तरफथी अपमान पामतां वादीने जेणे पुण्यमार्गे वाळ्यो तथा पवित्र मतिथी जेने विभूषित कर्यो, एवा **श्री देवसूरि** आनंद पामो-जयवंत वर्त्तो.'

वळी श्री सिद्ध-हेम नामना शब्दानुशासनमां सूत्रधार **श्रीमान् हेमचंद्र** प्रभुए कह्युं छे के—'जो **देवसूरिरूप** सूर्ये **कुमुदचंद्र**ने न जीत्या होत, तो जगतमां कयो श्वेतांबर कटिपर वस्त्र धारण करत?'

त्यां जाणे सिद्धांतनी मूर्ति होय एवा **श्री चंद्रसूरि**ए शासन-उद्धारमां कूर्म समान एवा **श्री देवसूरि**ने शासननी धुरा सोंपी. एटले **श्री देवसूरिरूप** सूर्य सिंहासनपर आरूढ थतां महात्माओना चरित्रो पण तेमनी प्रतिष्ठामां न आवी शक्या. ते वखते गच्छमां रहेल समस्त श्री संघने प्रकाशमान ते रात्रि हर्षने लीधे निद्रा विना क्षणवारमां व्यतीत थई गई, एवामां प्रभात थतां साधुओए पडिलेहण माटे उपधि जोई, तो उंदरोए उपद्रव करीने तेना कटकेकटका करी नाख्या हता, एटले प्रवर्त्तके गुरु महाराजने ते निवेदन करतां तेमणे जणाव्युं के—'दिगंबर

1. प्रबंध चिंतामणि पृ. १११मां केटलोक फेरफार छे.

मने पण पोतानी समान वेषधारी (नग्न) करवा ईच्छे छे, परंतु गुरुना प्रसादथी तेनो प्रतीकार करवानी मारामां शक्ति छे.' पछी तेमणे एक शिष्य पासे कांजीथी भरेल एक कुंभ मंगाव्यो. तेनुं मुख लोटना पिंडथी बांधीने ते अंदर मूकाव्यो. तेने मंत्रीने साहसी एवा तेमणे सर्वत्र साधुओने जणावी दीधुं के—'तमे कंई पण खेद करशो नहि. आ तमे एक मोटुं कौतुक जोया करो एमने पोताना दुर्विनयनुं फल मळवानुं छे.'

पछी एक प्रहरना त्रण भाग व्यतीत थतां दिगंबरना श्रावको आव्या अने विनयथी कहेवा लाग्या के'अमारा पर प्रसाद लावीने अमारा गुरुने तमे मूकी दो.'

एटले गुरु बोल्या—'मारा बंधुने शी बाधा थाय छे, अमे तो कंई जाणता नथी.' अज्ञतानो डोळ करीने तेमने सर्व रीते निषेध्या. एवामां अर्ध पहोर संपूर्ण थतां प्रशंसाने प्रगट करतो दिगंबराचार्य पोते आव्यो. तेने भेटीने अर्धासनपर बेसाडतां देवसूरि कहेवा लाग्या के—'हे बंधो! तने शी पीडा छे, माराथी तो ते बधुं अज्ञात छे.

त्यारे तेणे जणाव्युं के—'मने तमे मारो नहि अने आटलो बधो रोष न लावो मारो निरोध (मात्रुं न आववुं) मूकावी द्यो, जो ते निरोध रहेशे, तो अवश्य मारुं मरण थशे.'

ए प्रमाणे तेनुं दीन वचन सांभळतां आचार्य बोल्या के—'तमे परिवार सहित मारी वसतिथी बहार नीकळी जाओ.'

हवे तेमना आदेशथी जेमनुं पेट फूली गयुं छे. एवा ते पुरा अंगमां पीडाता पाडा जेवा त्यां द्वार आगळ उभा रह्या. एटले आचार्ये साधु पासे ते कांजीनो कुंभ मंगावीने तेनुं मुख छोडयुं. एटले दिगंबरनो मुत्र निरोध छूटो थयो. एटले एटलो मूत्र प्रवाह चाल्यो के बधा लोको आश्चर्य पाम्या. पछी सत्कार पाम्या छतां ते पराभवने लीधे शोकथी भारे तप्त थयेल कुमुदचंद्र क्यांक चाल्यो गयो.

पछी राजाए आचार्यने तुष्टिदान आपतां तेमणे ते लीधुं नहि. त्यां राजा अने मंत्री बगीचामां जतां भातना कोठारपर बेठेल शुक कहेवा लाग्यो—'हे देव! ए निःस्पृह यतिओने धननी इच्छा न होय माटे जो जिनालय करावावामां आवे तो एमने अने तने पुण्य प्राप्त थाय.' एम सांभळतां राजाए जणाव्युं के—'भले एम थाओ' एटले मंत्रीए राजानी आज्ञाथी तेमां बीजा द्रव्यनो उमेरो करीने अल्प दिवसोमां मेरुनी चूलिका समान उन्नत अने महान् प्रासाद तैयार कराव्यो, जे सुवर्ण अने रत्नना कुंभ तथा ध्वजाओथी भारे शोभवा लाग्यो, तेमज **श्री आदिनाथ** प्रभुनुं पीतळनुं अद्‌भुत बिंब के जे कांतिना समूहथी सूर्य बिंबनी जेम दृष्टिने आंजी देतुं हतुं. पछी विक्रम संवत् ११८३ना वैशाख मासनी द्वादशीना दिवसे चार आचार्योए तेनी प्रतिष्ठा करी. ए प्रमाणे प्रभावनाना पूरथी भींजायेल धर्मी जनोना हृदयरूप क्षेत्रमां बोधिबीजने आरोपता एवा **श्री देवसूरि** चिरकाळ विचरवा लाग्या.

एकदा **पिप्पलवाटक** नामना अरण्यमां जतां गुरुराजे शार्दूलने (सिंहने) रेखा मात्रथी निषेध कर्यो अर्थात् तेने अटकावी दीधो, त्यां वनभूमिमां विहार करतां बाल वृद्धादि साधुओ क्षुधादिनी बाधाथी व्याकुळ थवा लाग्या. कारण के ते वखते अन्य कांई उपाय न हतो. एवामां आचार्ये गच्छनी चिंतामात्र करतां अकस्मात् त्यां कोई सार्थ आवी चड्यो, तेणे साधुओने प्रासुक भक्त पानादिक वहोराव्या. पूर्वे अगस्त्यऋषिए समुद्रनुं पान करेल जोईने परवादिरूप अगस्त्यने अगम्य एवुं **स्याद्वादरत्नाकर** नामे नवुं शास्त्र तेमणे बनाव्युं के जे स्वादिष्ट वचनामृतयुक्त तथा प्रमेयरूप सेंकडो रत्नो सहित अने लक्ष्मी (अद्‌भुत रचना) थी विभूषित छे.

ए प्रमाणे अनेक अतिशययुक्त अने सदा ज्ञान ध्यानमां तत्पर एवा **श्री देवसूरि** महाराजे त्र्याशी वर्ष व्यतीत कर्या. पछी **श्री भद्रेश्वरसूरि**ने गच्छनो भार सोंपीने पोते जैनप्रभावनाथी स्थिर एवा आत्मकल्याणमां निमग्न थया, एटले विक्रम संवत् १२२६ना श्रावण मासना कृष्णपक्षमां सप्तमी अने गुरुवारना दिवसे पाछला पहोरे मनुष्य लोकना भव्योने प्रतिबोध पमाडीने जाणे इंद्रने बोध करवानी इच्छा थई होय एम समजीने **श्रीदेवसूरि** स्वर्गे गया. संवत्

११४३मां तेमनो जन्म थयो, ११५२मां तेमणे दीक्षा लीधी अने ११७४मां तेओ आचार्यपद पाम्या. एम नवमे वर्षे दीक्षा लीधी. अने ते पछी एकवीशमे वर्षे आचार्यपदे आव्या. बधुं मळीने तेमणे त्र्याशी वर्षनुं आयुष्य भोगव्युं.

ए रीते क्षुद्र वादीओना प्रवादने हठावनार, सत्त्वहीन जनोने अलभ्य तथा जिनशासन अने भव्यात्माओने विकास पमाडनार **श्री देवसूरि**नुं श्रेष्ठचरित्र आज कालना भव्य जनोने कल्याणकारी थाओ तथा सेंकडो पंडित जनोना अभ्यासमां आवतां ते यावच्चंद्रदिवाकरौ जयवंत वर्तो.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्रीप्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना मनपर लेतां **श्री प्रद्युम्नाचार्ये** संशोधन करीने शुद्ध करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्रीदेवसूरि**ना चरित्ररूप आ एकवीशमुं शिखर थयुं.

जे गुरु संसारी प्राणीओना, दुःखने दूर करवामां समर्थ तथा कल्पवृक्ष अने चिंतामणिरत्न करतां पण अद्‌भुत अर्थ (द्रव्य) ने आपे छे, तथा जेमना नामरूप मंत्रना स्मरणथी **प्रद्युम्नमुनि** आचार्यपदना अधिकारी थया, एवा **श्रीमान्‌कनकप्रभसूरि**नुं माराथी यथार्थ वर्णन शी रीते थई शके?

इति श्री देवसूरि-प्रबंध

द्वादशांगी अनादि से है। सिद्ध शिला अनादि से है। जो पदार्थ अनादि से है वह अनंत काल तक रहेगा। केवल जीव और कर्म का संबंध अनादि से है, परंतु कितनेक जीवों का कर्म संबंध विच्छेद होने वाला भी है।

आहार संज्ञा को जीतने के लिए किया हुआ तप तपधर्म में, मैथुन संज्ञा जीतने के लिए किया हुआ शील पालन शीलधर्म में, परिग्रह संज्ञा को जीतने के लिए किया हुआ दान दानधर्म में और भय संज्ञा को जीतने के लिए किये हुए विचार भावधर्म में आते है।

-जयानंद

२२. श्री हेमचंद्रसूरि-प्रबंध

श्री हेमचंद्रसूरिनुं वचनामृत अपूर्व छे के राजानी मनोभूमिमां रहेल छतां समस्त प्राणीओना धर्म-जीवनना आधाररूप छे. सुवर्णजळनी कांतियुक्त **श्री हेमचंद्र** महाराजनी वाणी ते पातक अने यमरूप मातंगना स्पर्श-दूषणथी बचाववा माटे कनकभूषण समान छे, अनंत आगम तथा विद्याने धारण करनार अज्ञानतामां दुःख पामता भव्यात्माओने जीवाडनार तथा ज्ञानादि लक्ष्मीना तिलक समान एवा **श्री हेमचंद्र** प्रभु तमारुं रक्षण करो. पंडितोना सद्वृत्तरूप मौक्तिकमाळामां मेरु समान एवुं **श्री हेमचंद्र महाराज**नुं चरित्र सज्जनोना हृदयरूप भवनमां प्रकाश करवाने हुं अंतरमां स्थापन करुं छुं.

क्लेशना आवेश रहित **गुर्जर** नामे देश छे. पुरुषार्थत्रयनी लक्ष्मीने माटे स्वर्ग पण जेनी समानताने ईच्छे छे, त्यां स्नेही जनोने कामधेनु समान **अणहिल्लपुर** नामे नगर छे के जे प्रासादनी पंक्तिओथी पर्वतनी भूमि समान शोभे छे, त्यां वचनामृतनी वृष्टिथी चकोर-चतुर जनोने आनंद पमाडनार एवा **सिद्धराज** नामे राजा हतो के जेनो यश सिद्धपुरुषो गाता हता अने सुरासुर तथा नागेंद्रो अने लोकपालो पण जेनी उपमाने पामी शक्या न हता ते देशमां कमळ समान **धंधुका** नामे एक श्रेष्ठ नगर के जे सत्पूजा, भोग, शृंगार अने प्रभावनी दृढ रंगभूमि समान छे त्यां विशाल **मोढ** वंशमां प्रौढ, महिमाशाळी धर्मी जनोमां अग्रेसर, गर्वरहित, सत्तारूप मंडपमां चंदरवा समान तथा विद्वानजनोने मान आपनार एवो **चाच** नामे शेठ हतो. साक्षात् लक्ष्मी समान **पाहिनी** नामे तेनी पत्नी हती के जे सतीना सतीत्वथी **सीता, सुभद्रा**नुं सतीत्व सिद्ध थतुं हतुं. एकदा ते स्त्री रत्ने स्वप्नमां चिंतामणिरत्न जोयुं अने भक्तिना आवेशथी ते पोताना गुरुने आपी दीधुं.

हवे त्यां [1]चंद्रगच्छरूप सरोवरमां पद्म समान अने गुणोथी मंडित एवा **श्री देवचंद्रसूरि** बिराजमान हता के जे **श्रीप्रद्युम्नसूरि**ना शिष्य हता. एटले प्रभाते पाहिनीए ते दिव्य स्वप्न ते गुरु पासे निवेदन कर्युं. त्यारे गुरुए शास्त्रविहित तेनो अर्थ संभळावतां जणाव्युं के—'हे भद्रे! जिनशासनरूप महासागरमां कौस्तुभ समान तने पुत्र प्राप्त थशे के जेना सुचरित्रथी आकर्षाईने देवो पण तेना गुणगान करशे.'

पछी एकदा **पाहिनी**ने श्री वीतरागना बिंबोनी प्रतिष्ठा करावववानो दोहलो उत्पन्न थयो, ते भारे पुण्यथी तेना पतिए प्रमोदपूर्वक पूरो कर्यो. एवामां समय थतां पवित्र दिवसे पोतानी कांतिथी अग्निथी प्रभाने जीतनार अने मलयाचलना शिखरपर रहेल चंदन समान एवा **नंदनने** तेणे आनंदपूर्वक जन्म आप्यो, एटले विविध प्रकारना वाजिंत्रोना आडंबरपूर्वक वर्धापन करतां बार दिवस व्यतीत थया त्यारे सदाचारथी शोभता **चाच** श्रेष्ठीए ते बाळकनुं नाम पाडवानी इच्छाथी भक्तिपूर्वक पोताना स्वजनोने बोलावीने जणाव्युं के—'आ बाळक अमारा घरे अवतरतां एनी माताने प्रतिष्ठानो दोहलो उत्पन्न थयो, ए प्रतिष्ठाने लीधे पूजावडे देवताओ पण रमणीय थाय छे माटे एनुं अन्वययुक्त **चंगदेव** एवुं नाम उचित छे कारण के समस्त वस्तुओमां सत्यता छे, ए ज तेनो शुभ उत्तर काळ सूचवे छे.' पछी तेणे कपूरयुक्त पान सोपारीथी स्वजनोनो सत्कार करीने विसर्जन कर्या.

हवे मंगलना आधाररूप वर्धमाननी जेम वृद्धि पामतो अने अक्षत दक्षतायुक्त ते **चंगदेव** बालपणमां भारे प्रतिभाशाळी थयो. एटले पांचमे वर्षे निर्दोष एवा तेने एक पुख्त व्यक्तिनी जेम सद्गुरुनी शुश्रूषा करवानी बुद्धि उत्पन्न थई.

---

१. प्रबंधकोश मुजब तेओ चन्द्रकुलना पूर्णतल्लगच्छनी परंपरामां थया छे.

एवामां एक दिवसे मोढचैत्यमां गुरु चैत्यवंदन करता हता, ते वखते पुण्यशाळी पाहिनी पुत्र सहित त्यां आवी अने प्रदक्षिणा दईने जेटलामां ते भगवंतनी स्तुति करवा लागी, तेवामां **चंगदेव** तरत गुरुना आसनपर बेसी गयो ते जोईने गुरु **पाहिनी**ने कहेवा लाग्या के—'हे भद्रे! ते महास्वप्न तने याद छे? में कह्युं हतुं के एकवार तेनी निशानी तारा जोवामां आवशे. हवे अत्यारे तारा पुत्रे जे कर्युं, ते तुं जाते जोई ले.

ए प्रमाणे कहीने गुरुए संघरूप नंदनवनने शोभावनार कल्पवृक्ष समान ते पुत्रनी माता पासे मागणी करी. त्यारे ते बोली के—'हे प्रभु! तमे एना पिता पासे याचना करो, ते युक्त छे.' एटलें तेनी परवानगी न होवाथी भय पामता गुरु कंई पण बोल्या नहि. त्यां गुरुनी वाणी अलंघनीय समजी अने स्वप्नने याद करीने आचारने मान आपनारी एवी पाहिनीए मनमां दूभाया छतां स्नेहथी पोतानो पुत्र गुरु महाराजने अर्पण कर्यो. अने तेने लईने गुरु **श्री स्तंभन**तीर्थे आव्या अने त्यांथी श्री पार्श्वनाथना मंदिरमां माघ महिनानी श्वेत चतुर्दशीना दिवसे ब्राह्म मुहूर्त्ते अने शनीवारे आठमो **धिष्ण्य** धर्मस्थित अने वृषनी साथे चंद्रमानो योग्य थतां बृहस्पति लग्नमां सूर्य अने भौम शत्रुस्थानमां रहेतां **श्रीमान् उदयने** दीक्षामहोत्सव करतां गुरु महाराजे **चंगदेव**ने दीक्षा आपी अने तेनुं **मुनि सोमचंद्र** एवुं नाम राख्युं. पछी योग्य शिष्योने उचित अने आर्हत आगममां बतावेल आचारो तेमणे एक ध्यानथी ते शिष्यने कही समजाव्या.

एवामां चाच श्रेष्ठीना जाणवामां आवतां ते तरत त्यां गयो अने क्रोधायमान थईने कर्कश वचन बोलवा लाग्यो. तेने गुरु पासे लई जईने **उदयने** पोते मधुर वचनथी ते चाचने शांत पड्यो.

हवे **श्री सोमचंद्रमुनि**ए पोताना चंद्र समान उज्ज्वळ प्रज्ञाबळथी सत्वर तर्कशास्त्र, व्याकरण अने साहित्य विद्यानो अभ्यास करी लीधो. एवामां एकदा **सोमचंद्रमुनि** विचारवा लाग्या के पूर्व पुरुषो एकपदथी लक्षपदनुं चिंतन करतां हता. तेमना करता—'अल्पबुद्धि एवा मने धिक्कार छे, माटे चकोरपक्षी जेम चंद्रमानी तेजस्वी ज्योत्स्नाने आराधे, तेम मारे काश्मीरवासी देवीनुं आराधन करवुं छे.' एम निश्चय करीने **सोमचंद्रमुनि**ए भारे नम्रतापूर्वक गुरुमहाराजने विनंती करी, एटले देवीनुं सन्मुख आगमन जाणीने तेमणे ते मान्य राखी. पछी गीतार्थ साधुओ साथे अनेक विद्याओना निधान एवा **श्री सोमचंद्रमुनि**ए ताम्रलिप्तिथी **काश्मीर**देश तरफ प्रयाण कर्युं. एवामां **श्री नेमिनाथ**ना नामथी प्रसिद्ध एवा श्रीरैवतावतारतीर्थमां गीतार्थोनी अनुमतिथी तेमणे एकाग्र ध्यान कर्युं. एटले नासिकाना अग्रभागे दृष्टि स्थापन करी सावधानपणे ध्यान करतां अर्धरात्रे ब्रह्मतेजना निधानरूप **सरस्वती देवी** ते मुनिने साक्षात् थई अने कहेवा लागी के—'हे निर्मळमति वत्स! तुं देशांतर जईश नहि. तारी भक्तिथी संतुष्ट थयेल हुं अहीं ज तारी इच्छा पूर्ण करीश.' एम कहीने भारती देवी अदृश्य थई गई. एटले तेनी स्तुतिमां रात गाळीने प्रभाते ते पाछा उपाश्रयमां आव्या. एम सरस्वतीना प्रसादथी **सोमचंद्रमुनि** सिद्धसारस्वत, विद्वानोमां अग्रेसर अने उद्भवता अंतर शत्रुओने अगोचर थया.

एवामां प्रभावक पुरुषनी धुराने धारण करवामां समर्थ एवा **सोमचंद्रमुनि**ने सूरिपदने योग्य समजी श्रीसंघने बोलावीने **श्री देवचंद्र** गुरु विचारवा लाग्या के—**'योग्य शिष्यने आचार्यपदे स्थापी अमारे आत्मसाधन करवुं उचित छे.** अमारा पूर्वना आचार्यो पण सदा ए आचार आचरता आव्या छे' पछी ते ज वखते **सुज्ञ नैमित्तिको पासे** तेमणे लग्ननो विचार चलाव्यो. एटले तेमणे पण विचार करीने आ प्रमाणे सर्वोत्तम गुणयुक्त समय बताव्यो—'कर्कराशिमां गुरु होय, मेषमां बुधयुक्त सूर्य होय, वृषमां चंद्र अने धनमां छट्ठो भौम लाभस्थ होय, धर्मस्थान मीनमां शुक्र अने वृषमां अगियारमो शनी होय, कन्यामां त्रीजो राहु सर्व विघ्नोनो नाश करे छे, एम सर्व ग्रहोना बलयुक्त लग्न समृद्धि करनार नीवडे छे. वळी पूर्व होरा चांद्री होय, द्रेष्काण प्रथम होय, वर्गोत्तम चंद्रांश नवमो के बारमो होय, गुरुनो त्रीशमो अंश होय के छट्ठो होय-आ गुणमंडित लग्नमां जे देव के पुरुषनी प्रतिष्ठा थाय छे,

ते राजमान्य, जगत्पूज्य अने जगतमां मुगट समान माननीय थाय छे.'

ए प्रमाणे मुहूर्त्तनो निर्णय कर्या पछी वैशाख महिनानी तृतीयाना दिवसे श्री संघ तथा नगरना अधिकारीओए महोत्सव शरू करतां, चोतरफ मंगल वाद्योना नादथी वातावरण शब्दमय बन्युं. पछी समय सूचित थतां अवाज बंध थयो. नंदी विधि पूर्वक पूरक ध्यानथी श्वास पूरतां अने कुंभकथी तेनो उद्‌भेद करतां **श्री देवचंद्रसूरि**ए अंतरात्मामां निष्ठावाळा अने सुज्ञ शिरोमणि एवा **श्री सोमचंद्रमुनि**ना कानने अगरू, कपूर अने चंदनना द्रवथी चर्चित करीने पूर्वे **श्री गौतमादिसूरीश्वरोए अबाधितपणे आराधेल सूरिमंत्र तेमने कानमां संभळाव्यो.** एटले कामदेवनो तिरस्कार करनार तथा अनेक कळाओना आधाररूप एवा **श्री सोमचंद्रमुनि श्रीहेमचंद्रसूरि** एवा नामथी विख्यात थया.

ते वखते पोतानो पुत्र आवी उच्च पदवीपर आवतां स्नेहने धारण करनार **पाहिनी** श्राविकाए पोताना मनमां लेश पण व्याकुळता न लावतां गुरुना हाथे चारित्र अंगीकार कर्युं, एटले ते अभिनव आचार्ये गुरुने विनंती करीने सभा समक्ष ते ज वखते गुरुना हाथे पोतानी **माता साध्वीने प्रवर्त्तिनी पद अपाव्युं** अने **तेने सिंहासनपर बेसवानुं श्री संघ पासे तेमणे कबूल रखाव्युं.** अहो! **उत्तम पुरुषोनी मातृभक्ति केवी अद्‌भुत होय छे.**

हवे श्री संघरूप सागरना कौस्तुभ समान **श्री हेमचंद्रसूरि**ए एकदा **अणहिल्लपुर** नगर तरफ विहार कर्यो. त्यां एक दिवसे **सिद्धराज** रयवाडीए नीकळेलो ते वखते बजारमां एक बाजु उभेला **श्री हेमचंद्रसूरि**ने जोतां तेणे अंकुशथी हस्तीने नजीकमां उभो राखीने जणाव्युं के—'तमारे कंई कहेवानुं छे?'

त्यारे आचार्य पण बोल्या के—'हे **सिद्धराज**! शंका विना गजराजने आगळ चलाव. दिग्गजो भले त्रास पामे, पण तेथी शुं? कारण के पृथ्वीने तो तुं ज धारण करी रह्यो छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां भारे संतुष्ट थयेल सुज्ञ शिरोमणि राजा कहेवा लाग्यो के—'तमे बपोरे हंमेशां मने प्रमोद पमाडवा आवजो.' आ एवा समये गुरुनुं तेने प्रथम दर्शन थयुं के जेथी राजाने भारे आनंद थयो अने दिग्यात्रामां तेनो जय थयो.

पछी एकदा मालवदेशने जीतीने **सिद्धराज** पोतानी राजधानीमां आव्यो त्यारे बधा दर्शनीओए तेने आशिष आपी, एटले अनेक कळाना भंडार एवा **श्री हेमचंद्रसूरि** त्यां अव्यग्रमतिथी, अत्यंत श्रवणीय काव्यथी आशिष आपतां बोल्या के—'हे कामधेनु! तुं तारा गोमय-रसथी भूमिने लींपी काढ, हे रत्नाकर! तुं मोतीओथी स्वस्तिक पूरी दे, हे चंद्रमा! तुं पूर्णकुंभ बनी जा, हे दिग्गजो! तमे पोताना कर-सुंढ सीधा करी कल्पवृक्षना पत्रो लईने तोरणो बनावो, कारण के **सिद्धराज** पृथ्वीने जीतीने आवे छे.' ए प्रमाणे पोताना चारित्रनी जेम व्याख्यानथी विभूषित ते श्लोक सांभळवाथी संतुष्ट थयेल **सिद्धराज** तेमने वारंवार पोताना राजभवनमां बोलावता लाग्यो.

एकदा **अवंती**ना भंडारमां रहेलां पुस्तको त्यांना नियुक्त पुरुषोए बतावतां तेमां एक लक्षणशास्त्र (व्याकरण) राजाना जोवामां आव्युं. एटले तेणे गुरुने पूछ्युं के—'आ शुं छे?' त्यारे आचार्य महाराज कहेवा लाग्या के—'ए भोज व्याकरण शब्दशास्त्र तरीके प्रवर्त्तमान छे. विद्वानोमां शिरोमणि ए मालवपतिए शब्द शास्त्र, अलंकार, निमित्त अने तर्कशास्त्र रचेलां छे, तेमज चिकित्सा, राजसिद्धांत, वृक्ष, वास्तु-उदय, अंक, शकुन, अध्यात्म अने स्वप्न तथा सामुद्रिक शास्त्रो पण अहीं छे अने निमित्तशास्त्र, व्याख्यान अने प्रश्नचुडामणि ग्रंथो छे, वळी मेघमाला अने अर्थशास्त्र पण छे अने ए बधा ग्रंथो ते राजाए बनावेल छे.'

ए प्रमाणे सांभळतां **सिद्धराज** बोल्यो के—'आपणा भंडारमां शुं ए शास्त्रो नथी? समस्त गुर्जर देशमां शुं कोई विद्वान् नथी?' त्यारे बधा विद्वानो मळीने **श्री हेमचंद्रसूरि**ने जोवा लाग्या. एटले महाभक्तिथी राजाए नम्रतापूर्वक प्रभुने विनंती करी के—'हे भगवन्! एक व्याकरणशास्त्र बनावीने तमे अमारा मनोरथ पूरा करो. हे

महर्षि! तमारा विना ए मनोरथ पूरवाने कोण समर्थ छे? वळी आ समयमां प्रवर्त्तमान थयेल ए कलापक व्याकरण संक्षिप्त छे तेम तेमां शब्दोनी निष्पत्तिपण तेवी नथी, तथा पाणिनिनुं व्याकरण छे, ते वेदना अंगरूप मनाय छे, तेथी ब्राह्मण गर्व लावीने ए व्याकरण पर घमंड करे छे. कदाच ते विप्रो नाराज थाय, तो तेथी शुं? (अर्थात् ते व्याकरण पण शा कामनी?) माटे हे मुनीश्वर! विश्वजनोना उपकार माटे एक नवुं व्याकरण बनावो के जेथी मने यश मळे अने तमने कीर्त्ति तथा पुण्य प्राप्त थाय.'

एम सांभळीने बुद्धिनिधान **श्री हेमचंद्रसूरि** बोल्या के—'कार्योमां अमने जे प्रेरणा करवी, ते तमारे केवळ याद करवा माटे ज छे, परंतु व्याकरणना आठ पुस्तको छे, ते श्री भारतीदेवीना भंडारमां छे, तो तमारा माणसो मोकलीने ते काश्मीर देशथकी मंगावो, के जेथी व्याकरणशास्त्र सारी रीते रची शकाय.'

गुरुनुं वचन सांभळतां राजाए तरत ज पोताना प्रधान पुरुषोने काश्मीर देशमां मोकल्या. तेओ **प्रवर** नामना नगरमां पहोंच्या अने भारतीदेवीने चंदनादिकथी पूजीने स्तुतिपाठ करवा लाग्या. एटले संतुष्ट थयेल देवीए पोताना अधिष्ठायकोने आदेश कर्यो के—'**श्री हेमचंद्र** श्वेतांबर मारो प्रसादपात्र छे, एटलुं ज नहि पण जाणे मारी बीजी मूर्तिरूपे होय एवा छे, माटे तेमना निमित्ते प्रेष्यवर्गने पुस्तको आपीने विदाय करो.' पछी भारतीदेवीए ते प्रधान पुरुषोनो सारो सत्कार करी, तेमने पुस्तको अपाव्यां अने उत्साहपूर्वक विदाय कर्या. एटले देवीना प्रसादथी भारे हर्षथी रोमांचित थता ते अल्प समयमां पोताना नगरमां आवी पहोंच्या. त्यां एक निष्ठावाळा **श्री हेमचंद्रप्रभु**पर भारतीदेवीनो केवो आदर अने संतोष छे, ते तेमणे राजाने निवेदन कर्यो. जे सांभळतां चमत्कार पामेल राजा कहेवा लाग्यो के—'अहो! हुं अने मारो देश धन्य छे के ज्यां आवा सुज्ञ शिरोमणि गुरु बिराजमान छे.'

पछी **श्री हेमचंद्रसूरि**ए पण ते आठे व्याकरणोनुं अवलोकन करीने **श्री सिद्धहेम** नामे नवुं अद्‌भुत व्याकरण बनाव्युं के जे आठ अध्यायना बत्रीश पादथी संपूर्ण, उणादि, धातुपाठ, लिंगानुशासन, सूत्र, सद्‌वृत्ति, नाममाला अने अनेकार्थना पाठथी रमणीय छे, वळी सर्व व्याकरणोमां जे मुगट समान अने समस्त विद्वानोने आदरपात्र छे. प्रथमना व्याकरणो बहु विस्तीर्ण हतां, तेथी समस्त आयुष्यभरमां पण शीखी शकाय तेवा नहोतां अने तेथी पुरुषार्थ साधवामां स्खलना पमाडनार हतां, तेमज केटलांक संक्षिप्त, दुर्बोध अने दोषना स्थानरूप हतां. तेथी आधुनिक विद्वानोए ए व्याकरणने प्रमाण कर्युं. तेना दरेक पादने अंते एक-एक श्लोक छे, के जेमां मूलराज तथा तेना पूर्वज राजाओनुं वर्णन करवामां आवेल छे अने सर्व अध्यायने अंते चार श्लोक छे तेमज पांत्रीस श्लोकमां तेनी प्रशस्ति करवामां आवेल छे. नगरना विद्वानोए तथा राजाना पुरोहितोए तेनुं त्रण वर्ष सुधी वांचन कर्युं. पछी ते पुस्तक लखाववाने माटे राजाना नियुक्त पुरुषोए सर्व स्थानोथकी त्रणसें लेखकोने बोलाव्या त्यां राजाए तेमनो सारो सत्कार कर्यो. वर्षमां त्रण लाखनो लखाववानो खर्च कर्यो. एटले पुस्तको लखावतां सर्व दर्शनोना प्रत्येक अभ्यासीने ते आपवामां आव्यां. जेथी अंग, बंग, कलिंग, लाट, कर्णाटक, कोंकण, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, वत्स, कच्छ, मालव, सिंधु, सौवीर, नेपाल, पारसीक, मुरंडक, गंगापार हरिद्वार, काशी, चेदि, गया, कुरूक्षेत्र, कान्यकुब्ज, गौड, श्रीकामरूप, सपादलक्ष, जालंधर, खस, सिंहल, महाबोध चौडकौशिक,-ईत्यादि बधा देशोमां ते व्याकरण खूब विस्तार पाम्युं, वळी राजाए उपनिबंध सहित वीस पुस्तको अत्यादरपूर्वक काश्मीर देशमां मोकल्यां त्यां ते भंडारमां राखवामां आव्यां कारण के सर्व लोको पोताना वचननो निर्वाह करे छे, तो देवीनी शी वात करवी?

हवे पोताना कुळने शोभावनार एवो **काकल** नामे एक कायस्थ हतो के जे आठ व्याकरणनो अभ्यासी अने पोतानी प्रज्ञाथी शेषनागने जीतनार हतो, तेने जोतां ज आचार्ये ए शास्त्रना तत्त्वार्थने जाणनार एवा तेने तरत अध्यापक बनाव्यो. **पछी प्रतिमासे ज्ञानपंचमीना दिवसे ते प्रश्नो पूछी लेतो अने त्यां अभ्यासमां प्रवृत्त थयेला**

विद्यार्थीओने राजा कंकणादिथी विभूषित करतो. एम ए शास्त्रमां निष्पन्न तैयार थयेला जनोने राजा रेशमी वस्त्रो, कनकाभूषणो सुखासन अने आतपत्रथी अलंकृत करतो हतो.

एवामां एकदा इंद्रसभा समान विद्वानोथी शोभायमान राजसभामां एक चारण आव्यो. एटले रत्नो जोतां जेम तृणने कोई ने जुए तेम अवज्ञाथी कोईए तेनी सन्मुख पण जोयुं नहि, त्यारे जाणे पोताना पुण्यनो दोहद अथवा सरस्वतीनो प्रसाद होय तेवी एक अपभ्रंश भाषामां ते गाथा बोल्यो—

हेमसूरि अत्थाणि ते ईसर जे पंडिया ।
लच्छि-वाणि महुकाणि सापइं भागी मुह मरउं ।।१।।

ए गाथाना पूर्वार्धमां सूरिनुं नाम ते उच्च स्वरे बोल्यो, जेथी सभासदोनी दृष्टि कोपथी अवज्ञायुक्त थई गई. एटले तेणे जणाव्युं के—'तमे कोपायमान न थाओ' आथी तेओ बधा सावधान थतां चारणे तेना त्रण पद कही संभळाव्यां. जे सांभळतां ते रोमांचित थई गया अने चिंतववा लाग्या के—एनी वाणी चमत्कारी अने उन्नत छे. ज्यां पंडितनी स्थिति होय, त्यां ज गुरुनो महिमा थवानो छे. एम धारी ते आनंदथी एकत्र थईने कहेवा लाग्या के—'हे भद्र! ए गाथा तुं पुनः पुनः बोल' एटले चारण ते प्रमाणे बोल्यो त्यारे गुरु बोल्या के—'क्षोभ विना पुनः त्रणवार बोल, पछी त्यां सुज्ञोए चारवार बोलवाने माटे आदरथी जणाव्युं त्यारे जाणे कृत्रिम कोप धरावतो होय तेम विचार करतो चारण कहेवा लाग्यो के-तमे जो यथेष्ट दातार हो तो पण मजुर दुर्वह भारने जेम प्रमाणमां उपाडे तेम हुं मारा अनुमानथी ज ए दुर्वह भार ग्रहण करवानो छुं. ए गाथा त्रणवार बोलतां मने जे प्राप्त थयुं छे तेटलेथी ज मने संतोष छे, ते करतां अधिकनी मारे इच्छा नथी; कारण के हृदय अने भुजाने ते ईष्ट नथी; आथी गुरु महाराजे सभ्यो पासेथी तेने त्रीस हजार द्रव्य अपाव्युं. एटले ते बोल्यो के—**'आ धन मने संपूर्ण छे, ते सात पेढी सुधी मने चाले तेटलुं छे. हुं प्रमाण पूरतुं ज लउं छुं, ते करतां अधिक कंई पण लेतो नथी.' एम कहीने ते चारण पोताना ईष्ट स्थाने चाल्यो गयो.**

हवे एक वखते सिद्धराज राजाए गुरु महाराजने पूछ्युं के—'हे भगवन् तमारा पट्टने योग्य अधिक गुणवान् कयो शिष्य छे, ते मारी जेम चित्तना उत्कर्ष माटे अमने बतावो, के जेथी पूर्वजो पुत्र (शिष्य) रहित होवाथी अनुकंपाने योग्य एवा तमारी चिंता न करे.'

त्यारे **श्री हेमचंद्रसूरि** कहेवा लाग्या के—'एवी चिंता करनार कोई नथी. आद्य राजा पण सत्पात्ररूप सागरने चंद्रमा समान हतो. वळी आवी स्थितिने चलावनार तथा कल्पवृक्ष समान तारा जेवो राजा होय त्यां मुनिओने ज्ञान, महिमा अने स्थिरता शा माटे न होय? सुज्ञशिरोमणि **रामचंद्र** नामे मारो शिष्य छे ते समस्त कळाना निधान एवा श्री संघमां बहुमान पामेल छे.' पछी एक वखते आचार्ये राजाने ते शिष्य बताव्यो. एटले शिष्ये प्रथमना विद्वानोए कोई वार न कहेल अने हृदयने उल्लास पमाडनार एवी राजानी स्तुति करी के—

मात्रायाप्यधिकं किञ्चिन् न सहन्ते जिगीषवः ।
इतीव त्वं धरानाथ धारानाथमपाकृथाः ।।१।।

अर्थात् - जयशील पुरुषो एक मात्रा (अंश) अधिक पण कांई सहन करता नथी. एटला माटे ज हे धरानाथ! तुं मने धारानाथ (भोज) समान भासे छे.

ए प्रमाणे सांभळतां महिमा पामेला विद्वानोमां सरल आचारवाळा एवा **श्री रामचंद्रमुनि**पर राजाए शिर धुणावतां दृष्टि नाखी अने जणाव्युं के हे वत्स! तमे जिनशासनमां एक दृष्टिरूप थाओ. वळी आचार्य पण महापुण्यशाळी छे के जेना पद (पट्ट) ना तमे रक्षक छो' एम **रामचंद्रमुनि**नी प्रशंसा करीने राजा विराम पाम्यो. कारण के सुकृत-अतिशय युक्त पुरुषोनी दृष्टि दुःसह्य होय छे.

अने उपाश्रयमां रहेता ते मुनिनुं दक्षिण नेत्र महापीडापूर्वक नष्ट थयुं एटले कर्म प्रमाणनो विचार करतां मनमां शांतता धारण करी, तपमां स्थिर थईने श्री हेमचंद्राचार्य त्यां चातुर्मास रह्यां. पछी **चतुर्मुख** नामना जिनालयमां श्रीसंघनी आगळ **श्री हेमचंद्राचार्यजी श्री नेमिनाथ** चरित्रनुं अद्‌भुत व्याख्यान करवा लाग्या त्यारे सुधा समान वचनथी आकर्षायेला बधा दर्शनीओ त्यां सांभळवानी इच्छाथी आववा लाग्या. एक वखते पांडवोनी दीक्षानुं व्याख्यान चालतां ब्राह्मणोए भारे मत्सर लावीने राजाने जणाव्युं के—'हे स्वामिन्! पूर्वे **वेदव्यास** महामुनिए पोताना भविष्यज्ञानथी युधिष्ठिरादिकनुं अद्‌भुत वृत्तान्त कहेल छे, तेमां एम बतावेल छे के—पोताना आयुष्यना प्रांते पांडवो हिमालय पर्वतमां गया त्यां **केदार**मां रहेल शंकरने स्नान पूजन पूर्वक परम भक्तिथी आराधीने शांत थई तेमणे पोतानो अंत समय साध्यो छे, तेम छतां स्मृतिनो अनादर करनारा आ शुद्र श्वेतांबरो पोतानी सभामां ते करतां विपरीत बोले छे, तो आपना नगरमां अनुचित बोलनारा ए अनिष्टसूचक छे, तेथी नीतिने मान आपनार **राजाए प्रजाना विचारोमां आवनार दुराचार अटकाववो जोईए.** माटे हे विचारकुशळ राजन्! हृदयमां कार्यनो विचार करीने योग्य उपाय ल्यो.'

ए प्रमाणे कहीने ब्राह्मणो विराम पाम्या. राजा बहु ज गंभीर वचनथी कहेवा लाग्यो के—'हे विप्रो! राजाओ दरेक काम विचारीने ज करे छे, पूरतो विचार कर्या विना तेओ दर्शनोनो तिरस्कार करी शकता नथी. आ संबंधमां तेमने पूछवानी जरूर छे, जो तेओ सत्य उत्तर आपे, तो मारे तेमनो सत्कार करवो जोईए, कारण के न्याय ए ज अमारो मित्र गणाय छे. **हेमचंद्राचार्य** निर्ग्रंथ, संगत्यागी अने महामुनि छे, तो ते असत्य केम बोले? ए बहु ज विचारवा जेवी वात छे.'

त्यारे प्रवीण ब्राह्मणोए पण जणाव्युं के—'भले, एम करो.' पछी राजाए **हेमचंद्र मुनीश्वर**ने बोलाव्या अने पूछ्युं. कारण के **माध्यस्थ्य-भावथी राजाने सर्वने साधारण-समान होय छे.** 'शुं पांडवोए जैनदीक्षा लीधी, एम शास्त्रमां कह्युं छे?'

त्यारे आचार्य बोल्या के—'पूर्वाचार्योए व्यास शास्त्रमां एम कहेल नथी. भारतमां तेमनुं हिमालय प्रत्ये गमन बतावेल छे, परंतु अमे समजी शकता नथी के अमारा शास्त्रोमां जे पांडवो वर्णव्या छे, ते ज व्यासशास्त्रमां छे के बीजा कोई वर्णव्या छे.'

एटले राजाए प्रश्न कर्यो के—'हे मुनिराज! शुं ते पण पूर्वे घणा थई गया छे?'

गुरु बोल्या—'हे राजन्! आ संबंधमां हुं उत्तर कहुं छुं, ते सांभळो—**श्री व्यासे** रचेल आख्यानमां **गांगेय पितामह** आवे छे, तेणे युद्धप्रवेशना अवसरे पोताना परिवारने जणाव्युं के—मारा प्राणनो जो त्याग थाय, तो ज्यां पूर्वे कोईने अग्निसंस्कार न थयेल होय, तेवा पवित्र भूमिप्रदेशमां मारा शरीरने अग्निदाह आपजो. पछी न्यायथी संग्राम चलावतां पितामह प्राणमुक्त थया, एटले तेमना वचनने याद करी, तेमनुं शब उपाडीने तेओ पर्वत पर गया के ज्यां कोई उन्नत शिखर पर मनुष्योनो संचार ज न हतो. त्यां तेमणे शब मूक्युं, एवामां दिव्य वाणी थई के—

अत्र भीष्मशतं दग्धं, पाण्डवानां शतत्रयम् ।
द्रोणाचार्य्यसहस्रं तु कर्णसङ्ख्या न विद्यते ।।१।।

अर्थात् - अहीं सो भीष्मो बाळवामां आवेल छे, त्रणसो पांडवो अने एक हजार द्रोणाचार्यो बाळवामां आवेल छे, तेमज कर्णोनी तो संख्या ज थई शके तेम नथी.

ए प्रमाणे अहीं सांभळतां अमे अमारा मनमां विचारीए छीए के ए वर्णनमांथी वखतसर जैनपांडवो पण हशे, कारण के शत्रुंजय पर्वत पर तेमनी साक्षात् मूर्तिओ छे. वळी **श्री नासिक्यपुर**मां **श्री चंद्रप्रभस्वामि**ना मंदिरमां पण तेमनी प्रतिमाओ छे. तेम **केदार** महातीर्थमां पण छे. तेथी जेने ज्यां योग्य लागे ते, त्यां श्रद्धा लावे छे; अधिक

ज्ञानमां पण ज्यां प्रगटज्ञान छे, त्यां धर्म छे. ए स्मृतिवादीओ अने वेदविद्याना विशारदोने पण तमे पूछो गमे त्यां ज्ञान होई शके छे, कारण के गंगा कोईना बापनी नथी.

एम सांभळतां राजा बोल्यो के—'जैनमुनि जे कहे छे, ते सत्य छे, माटे जो तमारा मतमां होय, तो तमे आ संबंधमां सत्य उत्तर कहो. आ काममां तमे एक सत्य वचन बोल्या छो के राजाए दरेक कार्य विचारीने ज करवुं जोईए. एटले आ कार्यमां दर्शनोने माटे समानता धरावनार एवो हुं पोते ज दृष्टांतरूप थयो, वळी बधा देवोना मंदिरो पण में कराव्यां छे.' त्यां कंई पण उत्तर न आपतां ब्राह्मणो मौन धरी रह्या, कारण के **जगतना स्वभावमां कोई पण हेतु निरर्थक नथी.**

पछी राजाए सत्कारपूर्वक आचार्य महाराजने कह्युं के—'पोताना आगम प्रमाणे सत्य व्याख्यान करतां तमारो लेशपण दोष नथी.' ए प्रमाणे राजाथी सत्कार पामेल **श्री हेमचंद्रप्रभु** जैनशासनरूप आकाशमां सूर्य समान प्रकाशवा लाग्या.

एक वखते **आभिग** नामे राजानो पुरोहित वृथा रोषने वहन करतो ते राजसभामां बिराजमान आचार्य महाराजने कहेवा लाग्यो के—'तमारो धर्म शम अने कारुण्यथी शोभित छे, पण तेमां एक न्यूनता छे, के व्याख्यानमां स्त्रीओ सर्वदा श्रृंगार सजीने आवे छे, वळी ते तमारा निमित्ते अकृत अने प्रासुक आहार आपे छे, ते विकारजनक आहार होवाथी तमारुं ब्रह्मचर्य शी रीते टकी शके? कारण के—

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो ये चाम्बुपत्राशनास्तेऽपिस्त्रीमुखपङ्कजं सललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ।
आहारं सुदृढं (सुघृतं पयोदधियुतं) पुनर्बलकरं ये भुञ्जते मानवा
स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद् विन्ध्यः प्लवेत् सागरे ।।१।।

अर्थात् - विश्वामित्र, पराशर के जे मात्र जळ अने पांदडांनुं भोजन करता, तेओ पण स्त्रीना विलासयुक्त मुखने जोतां ज मोहमूढ बनी गया, तो जे मनुष्यो घृत, दूध, दहीं सहित स्निग्ध भोजन करता होय, तेओ जो ईंद्रियनिग्रह करी शकता होय, तो समुद्रमां विंध्याचलने डुब्या जेवुं थाय.

त्यारे आचार्य बोल्या के—'पुरोहितनुं ए वचन विचार विनानुं होवाथी ते विद्वानोने उचित नथी. कारण के जगतमां प्राणीओनी चित्तवृत्तिओ विचित्र प्रकारनी होय छे, ज्यारे पशुओमां पण तेवी भिन्नता जोवामां आवे छे, तो चैतन्ययुक्त मनुष्योनी शी वात करवी कारण के—

सिंहो बली हरिणशूकरमांसभोजी, संवत्सरेण रतिमेति किलैकवारम् ।
पारापतः खरशिलाकणभोजनोऽपि कामी भवत्यनुदिनं बत कोऽत्र हेतुः? ।।१।।

अर्थात् - बलिष्ठ सिंह हरिण, डुक्करनुं मांस खानार छतां वरसमां एकवार रतिसुख भोगवे छे अने कबूतर शुष्क धान्य खानार छतां प्रतिदिन कामी बने छे. तेमां शुं कारण हशे?

ए प्रमाणे सांभळतां **सिद्धराज** बोल्यो के—'सभामां जे उत्तर आपवाने समर्थ न होय अने बोलवा जाय, ए खरेखर! पुरुषोनुं अतिसाहस कहेवाय.' एम राजाने सन्मान्य अने सुकृतार्थी जनोमां अग्रेसर एवा **श्रीहेमसूरि** संघनो उद्धार करवामां धुरंधर थई पड्या.

हवे एकदा महाविद्वान् **देवबोध** नामे भागवतदर्शनी के जे क्रमथी शास्त्रार्थ करनार अने बुद्धिनो भंडार हतो, ते **अणहिल्लपुर**मां आवी चड्यो. एटले नियुक्त पुरुषोए **सिद्धराज**ने तेना आगमननी वात निवेदन करी. त्यारे राजाए सहोदर समान मानेल **श्रीपाल** कविराजने एकांतमां विचार चलाव्यो के—'ए महाविद्वान् **देवबोध** शी रीते आपणा जोवामां आवे? ते निःस्पृह अने तपथी बलिष्ठ छे, तेथी राजसभामां आवनार नथी. वळी आपणा देशमां आवेल आवो समर्थ विद्वान् जो सन्मान न पामे, तो ए आपणी अपकीर्ति अने लघुता केम टळी शके?'

एटले कवीश्वर कहेवा लाग्यो के—'जे विद्वान् आडंबरी होय, ते निःस्पृह केम होई शके? अने लक्ष्मी विना परिवारने पण ते केम राखी शके? लक्ष्मी तो विद्वानोने वल्लभ छे जे आप जेवा राजाओथी ज पामी शकाय. ए लक्ष्मी मेळववानो बीजो कोई उपाय नथी. परंतु भारतीनी भक्तिने लीधे आपनी जो तीव्र इच्छा होय, तो इंद्रसभा समान आपणी राजसभामां एने बोलावो.'

त्यारे राजाए 'भले, एम थाओ' ए प्रमाणे कहीने तेणे पोताना प्रधान पुरुषो मोकल्या. त्यां मदथी उद्धत बनेल तेणे तेमने जणाव्युं के—'तमे राजाना आदेशथी मने बोलाववा आव्या छो, पण स्पृहारहित अमारे राजाओनुं शुं काम छे? वळी काशीपति अने कान्यकुब्जना स्वामीने जोया पछी अल्प देशना अधिपति गुर्जरेश्वरनी अमारी पासे शी गणना? तेम छतां तमारो स्वामी अमने जोवा ईच्छतो होय, तो पोते जमीन पर बेसी मने सिंहासनपर बेसाडीने जुए.' एम संभळावी विसर्जन करेला ते प्रधान पुरुषोए आवीने बधो यथास्थित वृत्तान्त राजाने निवेदन कर्यो. एटले तेनी वाणीथी भारे चमत्कार पामेल राजाए कविराजने कह्युं के—'**शांत जैन मुनिओ विना कोने अभिमान नड्युं नथी?** ज्यां तरतमतायुक्त ज्ञान होय, त्यां मदने अवकाश केवो? माटे कौतुकथी एनुं पण आ चेष्टित तो जोवुं.'

पछी बीजे दिवसे **श्रीपाल** सहित राजा तेना स्थाने गयो. त्यां विद्वानोथी सेवित अने सिंहनी जेम दुर्धर्ष एवो **देवबोध** कवीश्वर सिंहासन पर बेठेल, राजाना जोवामां आव्यो. त्यारे दृढ भक्ति अने विनयथी वामन बनीने राजाए तेने नमस्कार कर्यो, कारण के गुणपूर्ण सज्जनोना चित्तमां मदने अवकाश मळतो नथी. पछी साक्षात् विश्वरूप एवा राजाने उत्तम आशिषथी अभिनंदन आपी, हस्तसंज्ञाथी भूमि बतावतां ते बोल्यो के—'हे राजन्! अहीं बेसो.' ते सांभळतां राजाए, **श्रीपाल** कविए बनावेल काव्य बोलतां स्पष्टाक्षरे जणाव्युं के ज्यां एक तरफ 'समस्त पर्वतोना मुगट समान मेरुपर्वत छे अने बीजी तरफ पोताना भारने स्थापन करी रहेल सात समुद्रो छे, ते शेष नागना शरीरना स्तंभ उपर स्थिर थईने रहेलुं आ धरणीतल ज अमारा जेवाने उचित छे.

ए प्रमाणे कही प्रतिहारे धरणीतलपर आसन बिछावतां दोष-शत्रुनुं मंथन करनार राजा त्यां बेसी गयो. एवामां ते विद्वाने हस्तथी कविराजने बतावतां कह्युं के—'सभाने अयोग्य आ कोण छे?' त्यारे निर्दोष वचनथी राजाए जणाव्युं के—'भारे आकर्षक प्रबंध रचनार आ **श्रीपाल** नामे प्रसिद्ध कवीश्वर छे. एणे **रुद्रमहालय**मां अद्भुत रसयुक्त काव्योथी **दुर्लभराज**नी प्रशस्ति करेल छे, तेमज **वैरोचनपराजय** नामे महाप्रबंध रचेल छे. सज्जन पुरुषो तो एक सामान्य जननी पण हांसी करता नथी, तो आ समर्थ कविनी शी वात करवी?'

एम सांभळतां जरा हसतां हसतां **देवबोध** कवि गर्वरूप पर्वतनी उपरनी भूमि समान एक काव्य बोल्यो-

शुक्रः कवित्वमापन्नः, एकाक्षिविकलोऽपिसन् ।
चक्षुर्द्वयविहीनस्य युक्ता ते कविराजता ।।१।।

अर्थात् - एक लोचनथी विकल छतां शुक्र कविपणाने पाम्यो, बंने लोचनथी हीन एवा तने कविराजपणुं युक्त ज छे.

त्यारे **श्रीपाल** कहेवा लाग्यो के—'हे धीमान्! आ तो अंतरमां भय लावीने ते उतावळथी काव्य बनावेल छे, तो अभिमान शा माटे लावे छे? अमारुं एक वचन सांभळ—

'हे बंधो! ग्राम्य वणकरनी जेम आ गोणी-बारदान समान वस्त्रो वणतां तुं आत्माने (पोताने) अनेक प्रकारे परिश्रम शा माटे आपे छे? भले लांबा काळे पण मात्र एक ज सुंदर अने अभिनव वस्त्र तैयार कर के राजरमणीओ जेने क्षणवार पण पोताना कुचस्थळथी दूर न करे.'

एवामां राजाए कह्युं के—'कोई दुर्गम समस्या पूछो.' त्यारे **श्रीपाल** कविए एक शिखरिणी-पद कह्युं—

कुरङ्गः किं भृङ्गो मरकतमणिः किं किमशनिः ।

एनो पाठ पूछवामां आवतां तरत ज ते कविनायक बोली उठ्यो. श्लोकना आवा त्रण चरण कहेतां तेवा विद्वानने विलंब केवो?

चिरं चित्तोद्याने चरसि च मुखाब्जं पिबसि च
क्षणादेणाक्षीणां विषयविषमुद्रां हरसि च ।
नृप! त्वं मानाद्रिं दलयसि च किं कौतुककरः
कुरङ्गः किं भृङ्गो मरकतमणिः किं किमशनिः ।।१।।

अर्थात् - हे राजन्! तुं मृगाक्षीओना चित्त रूप उद्यानमां लांबा वखतथी संचरे छे, तेमना मुख-कमळनुं पान करे छे, क्षणवारमां तेमना विषय-विषनी मुद्राने हरे छे अने तुं तेमना मान-पर्वतने भेदे छे, तेथी हरिण, भ्रमर, मरकतमणि के अशनि (वज्र) कंई पण आश्चर्य पमाडे तेम नथी.

किं शब्द एक व्यवहारथी मारी पासे ग्रहण कर. कारण के ज्यां जेनी दुःस्थता आवे, त्यां ते शुं देवादार न गणाय? आवी विषमार्थ समस्याओ कहेवाय के जे एक पाद, द्विपाद के त्रण पादवाळी अने पंडितोने उचित होय. हे राजन्! आ तो शून्य प्रश्न तुल्य अने किं शब्दोथी भरेल छे, तेथी एना जेवी समस्याओ विद्वानोने अवश्य निंदनीय थई पडे छे. जेमके—

पौत्रः सोऽपि पितामहः (एक पाद)
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् (द्वि पाद)
नभः कर्पूरपूराभं चंद्रो विद्रुमपाटलः
कज्जलं क्षीरसङ्काशं (त्रि पाद)

एम कहेतां तरत ज श्रीपाल कवीश्वरे ए समस्याओ पूरी करी. कारण के जे सिद्ध सारस्वत होय, तेने कविता करतां विलंब शो? ते त्रणे समस्याओ अनुक्रमे आ प्रमाणे छे—

मूर्त्तिमेकां नमस्यामः शम्भोरम्भोमयीमिमाम् ।
अब्जोत्पन्नतया यस्याः पौत्रः सोऽपि पितामहः ।।१।।

अर्थात् - शंभुनी एक ए जळमय मूर्त्तिने अमे नमस्कार करीए छीए के कमळमां उत्पत्ति होवाने लीधे जेनो पौत्र ते पण पितामह कहेवाय छे.

चलितश्चकितो भीत-स्तव देव प्रयाणकेः ।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।।२।।

अर्थात् - हे देव! तमारा प्रयाणथी शेषनाग चलायमान थयो, इंद्र चकित थयो अने विष्णु भय पाम्यो.

नभः कर्पूरपूराभं चन्द्रो विद्रुमपाटलः ।
कज्जलं क्षीरसङ्काशं करिष्यति शनैः शनैः ।।३।।

अर्थात् - विद्रुम समान पाटल-रक्त चंद्रमा हळवे हळवे आकाशने कपूरना पूर समान अने काजळने क्षीर समान उज्ज्वळ करशे.

ए प्रमाणे महा विद्वानना शिरने कंपावनार गोष्ठीमां केटलोक समय गाळीने राजा पोताना भवनमां चाल्यो गयो.

हवे एकदा **श्री देवसूरि**ए जीतेल वादना अवसरे राजाए प्रमोदपूर्वक एक लक्ष द्रव्य आपेलुं हतुं, तेमां बीजुं द्रव्य उमेरीने एक उन्नत जैनप्रासाद बनाववामां आव्यो. तेना ध्वजारोपणना महोत्सवमां राजाए **देवबोध**ने सत्पात्र

समर्जीने मानपूर्वक त्यां बोलाव्यो. कारण के तेने कोईनो पक्षपात न हतो. एटले आवतां आवतां, **जयसिंहे** करावेल शंकरना मंदिर आगळ महेशने जोईने ते शार्दूलमां एक चरण बोल्यो—

एको रागिषु राजते प्रियतमा देहार्द्धहारी हरः

अर्थात् - प्रियतमा-पार्वतीना अर्धदेहथी मनोहर एवा शंकर रागी जनोमां शोभे छे.

पछी उत्सवथी उन्नत **सिद्धराज**ना प्रासादमां श्री अरिहंतने जोईने ते बीजुं पद-चरण बोल्यो—

नीरागेषु जिनो विमुक्त ललनासङ्गो न यस्मात् परः ।

अर्थात् - निरागी जनोमां एक जिन समान अन्य कोई नथी के जे रमणीना संगथी विमुक्त छे.

आथी त्यां महासभाना पंडित सभासदोने अवहीलनापूर्वक जोईने पोताना ज्ञानथी गर्वरहित एवा आचार्य बोल्या के—

दुर्वारस्मरघस्मरोरगविषव्यासङ्गमूढो जनः
शेषः कामविडम्बितो न विषयान् भोक्तुं न मोक्तुं क्षमः ।।१।।

अर्थात् - दुर्वार कामरूप विकट उरगना विषना व्यासंगथी मूढ बनेल अने कामथी विडंबना पामेल शेष जनो विषयोने भोगवी शकता नथी के मूकी शकवाने पण समर्थ नथी.

पछी भद्रासने बिराजमान आचार्ये पोतानी शक्ति प्रगट करवा माटे राजाने जणाव्युं के—'कोई पामर पुरुषने अहीं लावो.' एटले राजाना आदेशथी प्रतिहार तरत ज **श्री सिद्धराज**ना तळावपरथी कोई जळवाहक मजुरने लई आव्यो त्यारे गुरुमहाराजे तेने पूछ्युं के—'अक्षरमां तारो परिचय छे?'

त्यारे ते पोतानी प्रज्ञानुसारे बोल्यो—'हे स्वामिन्! कंईक परिचय छे. जन्मथी **था जा** ए बे अक्षर विना हुं कंई शीख्यो नथी. ते सिवाय तो पाडापर गुस्सो लावीने हुं तेना पुंछने मरड्यानो अभ्यास करुं छुं.'

एटले सुज्ञशिरोमणी **देवबोध** तेना मस्तकपर पोतानो हाथ राखीने बोल्यो के—'हे सभ्यो! तमे एनी वाणी सांभळो'—आथी सभ्यो बधा सावधान थई गया. एवामां काव्यना अभ्यासीनी जेम ते मतिमान् स्थिर अने धीर वचनथी कहेवा लाग्यो के—

तं नौमि यत्करस्पर्शाद् व्यामोहमलिने हृदि ।
सद्यः सम्पद्यते गद्य-पद्यबन्धविदग्धता ।।१।।

अर्थात् - जेना करस्पर्शथी व्यामोहथी मलिन बनेल हृदयमां गद्य-पद्य रचवानी कुशळता सत्वर प्रगट थाय छे, तेने हुं नमस्कार करुं छुं.

ए प्रमाणे भारे चमत्कारथी बधा विद्वानो चकित थई गया. ते वखते **सिद्धराजे** ए कवीश्वरने लक्ष द्रव्यदान आप्युं. जे **श्रीपाल** कविथी सहन न थई शकवाथी अने तेना आचारमां शंका पडवाथी ते **देवबोध**नुं चरित्र पोताना खात्रीदार माणसो मारफते तपासावा लाग्यो. एवामां ते भागवतनुं अद्भुत चरित्र, महानिंदनीय अने अवज्ञा करवा लायक तेमना जोवामां आव्युं, जे तेमणे सौ समक्ष निवेदन करतां जणाव्युं के—'जे वचन अश्रद्धेय छतां अमारी प्रतीतीथी श्रद्धा करवा लायक छे. कारण के जे अमे साक्षात् नजरे जोया छतां अमारुं मन संदिग्ध रहे छे, के गंगाजळथी भागवत व्रतने धारण करनार, वेदज्ञ अने सोमरसने पीनार एवा तेणे यज्ञोपवीतने दग्ध करीने मदिरानुं पान कर्युं. संन्यस्ताश्रमना आचारनुं आडंबर राखनार ए अर्धरात्रे पोताना परिवार सहित सरस्वतीना तटपर मदिरापान करे छे. वळी राजा (चंद्र) बुध, कवि, शूर, गुरु अने वक्र शनैश्चर ए बधा वारूणी (मद्य अथवा पश्चिम दिशा) ना संगथी अस्त पामे छे अने आ उदयमान छे, ए ज मोटुं आश्चर्य छे.'

एवामां एकदम संभ्रांत लोचन करतां श्रीपाल कवि बोल्या के—'ए केम संभवे?' ए तो नजरे जोया छतां

पण सत्य न मानी शकाय तेवुं छे. चोथा संन्यस्त आश्रममां वर्त्तनार एने व्यावहारिक भोगोनी साथे कंईपण प्रयोजन नथी. तेना दर्शनाचारथी विरुद्ध भोगादिक तो ते केम सेवी शके?

त्यारे ते सेवको कहेवा लाग्या के—'अमे आ बधुं जाते नजरे जोईने कहीए छीए, पण जोया विना नहि; तेम छतां तमे जेने आदेश करो, तेने अमे प्रतिज्ञापूर्वक ते बतावीए.

एटले **श्रीपाले** कह्युं के—'आजे अर्धरात्रे **श्री जयसिंह** राजा त्यां आवे, तेने तमे बतावो.' तेमणे ए वचन कबूल करी राजा पासे जईने सिद्धसारस्वत कविनी बधी हकीकत यथार्थ रीत कही संभळावी. जे सांभळतां राजा कहेवा लाग्यो के-'जो आ वात सत्य होय, तो मने नजरे बतावो. कारण के ए साक्षात् प्रगट रीते नजरे जोया छतां मानवामां न आवे तेवी वात छे.'

पछी अर्धरात्रे राजा बतावेल मार्गे चालीने कायर जनोने दुष्प्राप्य एवा सरस्वतीना किनारे आव्यो, त्यां वृक्ष-लताओनी निबिड घटामां तेणे दृष्टि करी, तो मदोन्मत्त अनुचरोथी आश्रित, इच्छानुसार गुणगान थवाथी अव्यक्त ध्वनियुक्त तथा मद्यपात्रथी नीकळता मद्यवडे मलिन मुख सहित ते **देवबोध** राजाना जोवामां आव्यो, एटले आ अनुचित जोईने **सिद्धराजने** पण खात्री थई अने मनमां सूग थतां तेणे पोतानी नासिका मरडी, वळी तेने विचार आव्यो के—'अहो! संसारनी केवी विचित्रता छे? के **दर्शनना आधाररूप आवा विद्वानो पण आम पोतानी मर्यादा लोपीने कुत्सित कर्म करे छे.** अत्यारे जो हुं एने साक्षात् न बोलावुं, तो प्रभाते शुं ए पोतानुं आ दुश्चरित्र मानवानो छे?' एम राजा विचार करे छे, तेवामां अतिक्रीडाथी जाणे कोटिरसने पामेल होय, तेम तेना प्रगट वचन राजाना सांभळवामां आव्या. त्यां पोतानो स्वामि चंद्रने अंतिम दशामां जोईने तेजना विस्तारथी उज्ज्वल एवी ज्योत्सना एनी पाछळ सत्ती थवा जती होय एम लागे छे. ' हवे आपणे प्रसन्न अति प्रसन्न आस्वादनो एक-एक घुंटडो लई पोताना स्थाने जईने हवे आराम करीए. ए सांभळी राजा बोल्यो अमारो पण आ (मदिरापान)मां भाग करो. स्वादिष्ट संविभागमां कोण विमुख होय?'

एवामां क्षणभर विचारीने तात्कालिक मति उत्पन्न थतां **देवबोध** बोली उठ्यो के—'हे राजन्! तमे अचानक दैवयोगे दृष्टिए आव्या. एटले अमे तमने वधावीए छीए; एम कही तेणे एक सुवर्णपात्र मद्यथी भरीने राजाने आप्युं. ते जोतां राजाने क्षीरपूर्ण जोवामां आव्युं. एटले अमृत समान तेनुं राजाए पान कर्युं अने क्षणभर तेने विचार थई पड्यो के—'आ दूध के मद्य? एणे पोतानी शक्तिथी तेनो रस फेरवी नाख्यो हशे अने जो रस-परावर्त्तन कर्युं होय, तो एनी शक्ति अने प्रतिभा अद्‌भुत छे.' पछी ते कविराजे राजाने विसर्जन कर्यो. ते वखते 'आ अवसर ठीक छे' एम धारी प्रभाते राजसभामां आवीने तेणे निवेदन कर्युं के—'हे महाराज! अमारे तीर्थाटन करवुं छे, माटे आपनी अनुज्ञा लईए छीए.'

त्यारे राजाए जणाव्युं के—'तमारा जेवा मुनीश्वरो तो देशना शांतिनीर समान छे. तो कयो सुज्ञ तमने जवानी अनुमति आपे?'

एटले तेणे कह्युं के—'हे राजन्! आ वखते अर्थवादनुं प्रयोजन नथी. ज्यां पंडित खल-भाषाथी पराभव पामे अथवा ओळखाय, त्यां स्थिति करवी योग्य नथी. कुळ, विद्या, वय, ज्ञान के शक्ति जो पुरुषने निंदनीय कर्मोथी न अटकावे, तो नगरमां रहेवाथी शुं? देव, देवीओ, महामंत्रो, अनेक विद्याओ अने अष्ट सिद्धिओ जेमने वश होय, छतां तेमनुं वचन मान्य न थाय, तो तेवा लोकोथी पण शुं? माटे हे भूपाल! तारी सभा अमारा जेवाने योग्य नथी, ए स्पष्ट छे. आवा गामडीया माणसो अने गामडीया नर जेवो संयोग तमने मुबारक.'

त्यारे राजा **श्रीपाल** कवीश्वरने कंईक आशयसहित वचन बोल्या के—'तमे कोपगर्भित सज्जननुं वाक्य सांभल्युं के नहि?'

एटले प्रज्ञावान् **श्रीपाल** कवि विचारवा लाग्यो के—'आ भिक्षु कार्य अने सन्मानथी दंडित अने क्रियाभ्रष्ट थाय, तेम करुं, एम धारीने ते बोल्यो के—'हे महाराज! आ मुनिओ अचिंत्य शक्तिधारी अने महा प्रभावशाळी छे, माटे स्वदेशमांथी एमने मोकलवा न जोईए, कारण के विद्वानो द्रव्य के खुशामतथी संतुष्ट थता नथी, पण तेमनो स्वभाव जाणवामां आवतां तेओ केवळ सद्वात्सल्यथी प्रसन्न थाय छे.'

ए प्रमाणे सत्य अने श्रवणीय वचन सांभळतां राजा पोतानुं मस्तक मुनिना चरणे लगाडीने विनयपूर्वक कहेवा लाग्यो के—'मुनिओना व्रत-माहात्म्यथी ज पृथ्वीनुं पालन करता राजाओ इंद्रनी जेम शोभा पामे छे. तेमां बीजुं कंई कारण नथी. माटे हे मुनीश्वर! तमे **क्रियानिष्ठ थईने** अमारा देशमां ज रहो. कारण के महात्माओ अर्थी जनना प्रणय-स्नेहनो भंग करता नथी.' एम राजाना वचनथी ते **देवबोध** संतुष्ट थईने त्यां रह्यो अने त्रण वरस थतां ते हळवे-हळवे दरिद्र थई गयो. कारण के क्रय विक्रयना व्यवहारथी तेने धननी प्राप्ति थती नथी, त्यां तो मात्र राजानुं आपेल भोगववानुं हतुं, एटले धन विना तेने दरिद्रता आवी गई. ए बधो वृत्तान्त **श्रीहेमचंद्रसूरि** तो जाणता हता, छतां **श्रीपाल** कविए एकांतमां तेमनी पासे विचार चलाव्यो के—'ए भिक्षु पोताना आचारथी भ्रष्ट, क्रियाहीन, दुश्चरित्रवान् अने आचारनिष्ठ यतिओने मुख जोवा लायक नथी. वळी दरिद्रतानी राजधानी होवाथी ते अत्यारे ऋणथी जर्जरित बनी गयो छे. तेमज मद वडे उद्धत अने लालचुं जीह्वाने वश थवाथी अत्यारे परिवार सहित ते भिक्षावृत्तिथी पोतानो निर्वाह चलावी रह्यो छे. ए दर्शनी पोताना लक्षणोथी दर्शनाचारमां स्थापन थयेल छे. वळी एना सद्गुणोथी आठ सिद्धिओमांथी छ तो चाली गई, पण अणिमा अने लघिमा एटले कृशता अने लघुता ए बे सिद्धिओ एनी पुष्ट थई छे, ए आश्चर्य छे. तेजथी साक्षात् देवेंद्र समान अने वर्णाश्रमना गुरु एवा **श्रीसिद्धराजने** एणे भूमि पर बेसाड्या अने पोते महेलना शिखर पर रहेल कागनी जेम सिंहासन पर बेठो. ए अवज्ञा रूप लतानुं ते निर्विवेकीने फळ मळ्युं. अने वळी मारा सांभळवा प्रमाणे ते एवो विचार चलावे छे के दरिद्रतानो उपद्रव राजपूज्य **श्री हेमचंद्र गुरु** विना प्रतिघात पामे तेम नथी. माटे जो ए पूज्य गुरुनी पासे आवे, तो पण आपे तेने मान आपवुं न जोईए. कयो सुज्ञ ए पतित-भ्रष्टनुं मुख पण जुए?'

त्यारे गुरु महाराज बोल्या के—'तमे कहो छो, ते सत्य छे, पण एना एक गुणने लीधे बहुमान करवानी जरूर छे के जे गुण बीजामां नथी. आ समये जेमां बीजा गुणो संक्रात थयेला छे एवुं असाधारण **सिद्धसारस्वत** एना विना बीजे क्यांय नथी. माटे जो निर्विष सर्पनी जेम पोताना मानने म्लान करनार ए धीमान् आवे, तो एने सत्कार मळवो जोईए.'

एटले **श्रीपाल** कवि कहेवा लाग्यो के—'महापुरुषनी दृष्टि तो गुणने जोवानी ज होय छे. श्याम अने मरण पामेल कूतराना धवल दांतने **कृष्ण महाराजे** वखाण्या हता. आ संबंधमां में तो मारो अभिप्राय निवेदन कर्यो हवे बहुश्रुत एवा आप पूज्यने विचार करतां जे गौरवोचित लागे, ते प्रमाणे करो.'

पछी एक दिवसे महाकवि श्रीपाल अभिनव ग्रंथनी रचनामां आकुळ हतो, पट्टिका अने पटपर ते पदो लखी रह्यो हतो, शब्द-व्युत्पत्तिने माटे ते अन्योन्य उहापोह करी रह्यो हतो, पुराण कविओना दृष्टांतो जोईने ते वाक्यरचनामां उतारतो हतो, एवामां ब्रह्म उल्लासना निवासरूप, ब्रह्माना मंदिरमां पंडितोथी विभूषित **श्रीहेमचंद्रसूरि**नी सभामां क्षुधातुर अने पोताना परिवारथी प्रेरायेल **देवबोध** मध्याह्न पछी **प्रतिहारनी परवानगीथी** त्यां आवी चड्यो एटले मंत्र-औषधिनी प्रभाथी स्तब्ध थयेल अग्नि जेम चंद्रने जोतां उद्भवे, तेम ते **महा विद्वान्ने जोई आचार्य महाराज उभा थया** अने कहेवा लाग्या के—'हे सुज्ञशिरोमणि तमारुं स्वागत छे. आजे जोवामां आव्या तेथी आजनो दिवस धन्य छे. हे कलानिधान! आजे आ अमारा अर्ध आसनने अलंकृत करो. संकटमां पण प्रगल्लभताथी विभूषित अने कळाओनो बराबर निर्वाह करी रह्या छो.'

ए प्रमाणे सांभळतां **देवबोध** पण चिंतववा लाग्यो के—'मारा मर्मने तो आ जाणे छे. अथवा तो कथनथी के कथनातीत कळाथी अमे कांई समजी शकता नथी. गमे तेम हो, पण ए महा विद्वान् अने सौभाग्य-लक्ष्मीथी अत्यारे विकासमान छे. माटे ए स्वच्छ-पवित्र पर मत्सर शो? एनुं बहुमान करवाथी ज शुभनो उदय थाय तेम छे. आ समये पुण्य अने विद्यामां एनी तुलनामां कोण आवे तेम छे? वळी गुणोमां प्रतिकूल कोण थाय? माटे ए माननीय छे.' एम धारी आचार्यनी अनुमतिथी ते तेमना अर्धासनपर बेठो. वळी ते सुज्ञ आचार्य महाराजने पुरुषरूपे साक्षात् सरस्वतीना रूपमां मानतो हतो. पछी श्रेष्ठ सारस्वतथी उज्ज्वळ एवो **देवबोध**, सभासदोना रोमांकुरने प्रगट करवामां मेघ समान एवुं सविस्मय वचन कहेवा लाग्यो—

पातु वो हेमगोपालः कम्बलं दण्डमुद्वहन् ।
षड्दर्शनिपशुग्रामं चारयन् जैनगोचरे ।।१।।

अर्थात् - दंड अने कंबळने धारण करता श्री हेम-गोपाल तमारुं रक्षण करो के जे जैन-गोचरमां षट्दर्शनरूप पशुओने चारी रह्या छे.

आ श्लोक सांभळतां शिर धूणावता सभासदो, तेमां सत्यार्थनी पुष्टि समजीने हृदयमां अतुल विस्मयने धारण करवा लाग्या.

पछी आचार्य महाराजे **श्रीपाल**ने बोलावीने तेनी साथे मैत्री करावी. कारण के **विरोध शमाववो ए व्रतधारीओनो प्रथम धर्म छे.** ते वखते गुरुए तेनो वृत्तान्त **सिद्धराज**ने जणावी तेने राजा पासेथी लक्ष द्रव्य अपाव्युं. एवामां अन्य दर्शनना संबंधमां आवतां विद्वानोना परिचयथी अने पोतानुं भाग्य क्षीण थतां पोतानी आयुस्थितिनो विचार करी, महामति **देवबोधे** ते द्रव्यथी त्यां अनृण-ऋणरहित थई गंगा किनारे जईने परभवनुं साधन कर्युं.

हवे एकदा पोताने संतान न होवाथी खेद पामेल **सिद्धराज** उपानह विना पगे चाली तीर्थयात्रा करवा नीकळ्यो, त्यां **हेमचंद्र प्रभु**ने पण तेणे साथे लीधा. कारण के चंद्रमा विना शुं नीलोत्पल (कमळ) विकसित थाय? ते वखते जीव रक्षाने माटे हळवे-हळवे चालता अने जाणे साक्षात् संयम होय एवा गुरु द्विधा चरणे (चारित्रे) संचरता देखावा लाग्या एटले **राजाए तेमने वाहनपर आरोहण करवानी अभ्यर्थना करी पण चारित्रस्थित आचार्ये तेनो निषेध कर्यो** त्यारे राजाए मनमां कंईक दूभाईने मित्राईथी तेमने कही दीधुं के—'तमे तो जड छो.'

जेथी तेमणे प्राकृतमां उत्तर आप्यो के—'हा, अमे निजड छीए.' एटले राजा चमत्कार पामतां चिंतववा लाग्यो के-'एमणे तो अमने सजड-जड कह्या पण पोते तो पोताना आचारने पाळता होवाथी अने सुज्ञ होवाथी अमे निजड छीए, एम कहेतां एमणे पोतानी आचार निष्ठा व्यक्त करी. अहो! आमां आचार्यनी व्याख्याचातुरी जणाई आवे छे.

पछी त्रण दिवस सूरि राजाने मळ्या नहिं एटले तेमने कोपायमान समजीने राजा शांत पाडवा माटे त्यां गयो, ते वखते तंबुमां बेसीने तेओ आयंबिल करता हता. राजाए पडदो जरा दूर करीने तेमनुं लुखुं भोजन जोई लीधुं. ते जोतां राजाने विचार आव्यो के—'अहो आ तो जितेंद्रिय, **शुष्क भोजनमां पाणी मेळवीने खाय छे.** खरेखर! एमनुं तप भारे दुष्कर छे. आ लोको (अन्य दर्शनीओ) भक्तिना अतिशयथी भव्य लोको पासे एमने मिष्टान्ननुं भोजन लेनारा ओळखावे छे, ते अज्ञान छे.' एम चिंतवीने राजाए प्रगट जणाव्युं के—'हे प्रभो! अवज्ञाथी नहि, पण मित्रताथी करेल मारो ए अपराध आप क्षमा करो आपनी देहव्यथाना उच्छेद माटे में ए कर्कश वचन कह्युं हतुं.'

त्यारे आचार्य कहेवा लाग्या के—'हे राजन्! राग द्वेषना स्वभाव रहित एवा अमारे राजा के दरिद्रनी

कर्कश के प्रियवाणी शुं करवानी हती? कारण के—

भुञ्जीमहि वयं भैक्ष्यं, जीर्णवासो वसीमहि ।
शयीमहि महीपृष्ठे कुर्वीमहि किमीश्वरैः ।।१।।

अर्थात् - अमे भिक्षावृत्तिथी भोजन करीए छीए, जीर्ण वस्त्र पहेरीए छीए अने पृथ्वीपीठपर शयन करीए छीए, तो अमारे राजाओनुं शुं प्रयोजन छे?

पछी राजाए तेमनो सत्कार करीने **सिंहासन** नामे स्थान ब्राह्मणोने आपीने ते **श्री शत्रुंजय** पर्वतपर चड्यो त्यां भावथी श्री युगादि प्रभुने नमी, तेमनी पूजा करीने राजा भारे प्रमोदथी पोताना जन्मने कृतार्थ मानवा लाग्यो. त्यां राजाए तीर्थनी पूजा माटे बार गाम आप्यां. कारण के महापुरुषो तेवां काम अनुमानथी पण करे छे. पछी पर्वत मार्गे अल्प वखतमां पुण्यशाळी राजा **रैवताचल**नी नजीकमां आवी पहोंच्यो त्यां **संकल** गामनी पासे आवास देवडाव्या अने लोचनने अमृत-रसायन समान श्री गिरिनार गिरिने तेणे जोयो, ते वखते पर्वतना शिखरपर रहेल **श्री नेमिनाथ**ना चैत्यनो **श्री सज्जन** मंत्रीए जीर्णोद्धार कराव्यो हतो. एटले धवलप्रसाद जोईने राजाए आचार्यने पूछ्युं, त्यारे तीर्थ प्रभावनाना हर्षथी लोचनने विकासित करतां तेमणे जणाव्युं के—'हे देव! यादववंशना मुगट समान **श्री नेमिनाथ** भगवंतनो आ प्रासाद देखाय छे, ते आपनो ज बनावेल छे.'

राजाए कह्युं के—'हे भगवन्! आपना उपदेशथी आ **उज्जयंत** महातीर्थने हुं जाणुं छुं अने अहीं जगत्पूज्य **श्रीनेमिनाथ** भगवंत बिराजमान छे, परंतु ए मारी कृति छे-एम जे आप कहो छो, तेमां मने संशय छे.'

एम सांभळतां अमात्य कहेवा लाग्यो के—'हे स्वामिन्! बराबर लक्ष्यपूर्वक सांभळो—आजथी नव वर्ष पूर्वे तमे मने आ प्रदेशनो अधिकारी बनाव्यो हतो. ते वखते पर्वतपर आरोहण करतां जीर्ण जिनालय मारा जोवामां आव्युं. एटले राज्यनी आवक द्रव्यनो तेमां व्यय करीने ए चैत्यनो में उद्धार कराव्यो. हवे जो आपने ए कबूल अने प्रमाण होय तो ठीक, नहि तो आप सत्यावीश लाख-द्रम्म-टका लई ल्यो.'

ए प्रमाणे सांभळीने हर्षथी रोमांचित थतो राजा कहेवा लाग्यो के—'हे मंत्रिन्! आवुं तुच्छ वचन तमे केम बोल्या? अस्थिर द्रव्यना व्ययथी तमे मारुं यशोजीवन अत्यंत स्थिर, पुण्यमय अने गरिष्ठ बनाव्युं छे, तेथी आ लोक अने परलोकमां तारा जेवो मारो अन्य स्वजन कोण छे? माटे हे मित्र! खेद न कर. आपणे हवे आ पर्वतपर आरोहण करीए.' एम कहेतां ज राजाए पर्वतपर आरोहण कर्युं. त्यां मंडपमां शुद्ध भूमिकापर बेसीने तेणे अष्टांगे जिनेश्वरने वंदन कर्युं. एवामां बेसवाने माटे आसन लावेल सेवकने अटकावतां राजाए जणाव्युं के—**'आ तीर्थमां कोईए पण आसनादिकपर न बेसवुं, शय्यापर निद्रा न लेवी, भोजन के रसोई न करवी, स्त्री संग न करवो, सूतिकाकर्म पण न करवुं अने दधिमंथन न करवुं.'** ईत्यादि सिद्धराजनी मर्यादा अद्यापि शाश्वती वर्त्ते छे. पछी सुवर्ण, रत्न अने श्रेष्ठ पुष्पोथी भगवंतने पूजीने राजा अंबादेवीना मंदिरमां गयो. त्यां देवीनुं पूजन करीने तेने प्रणाम कर्या, त्यांथी कौतुकी राजा अवलोकन-शिखरपर गयो, त्यां भक्तिथी **श्रीनेमिनाथने नमी**ने ते दिशाओनुं अवलोकन करवा लाग्यो. एवामां एक चारण बोल्यो के—

मइं नायं सीद्धेस जं चडिउ गिरनारसिरि ।
अईआ च्यारु देस अलयउं जोअइ कर्णऊत्र ।।१।।

पछी पर्वतपरथी नीचे उतरीने राजा **श्री हेमचंद्रसूरि** सहित **प्रभास** पाटणमां **शिवालय**मां गयो. त्यां आचार्ये परमात्मास्वरूपे शिवनी स्तुति करी अने नमस्कार कर्या कारण के **अविरोध ए ज मुक्तिनुं परम कारण छे.** आचार्ये आ प्रमाणे स्तुति करी हती.—

यत्र तत्र समये यथा तथा, योऽसि सोस्यभिधया यया तया ।
वीतदोषकलुषः स चेद् भवा-नेक एव भगवन्नमोस्तु ते ।।१।।

अर्थात् - गमे ते समय (शास्त्र) मां गमे ते रीते अने गमे ते नामथी जो ते तमे दोषनी कलुषितता रहित हो, तो हे भगवन्! तमे एक ज छो माटे तमने नमस्कार छे.

पछी त्यां महादान आपी, महिमाथी अद्‌भुत पूजा करीने राजा त्यांथी पाछो फरीने अंबिकाथी अधिष्ठित **कोटि नगर**मां आव्यो, त्यां संतान चिंताथी व्याकुळ थयेल राजाने जाणीने **श्री हेमचंद्रसूरि**ए आदरपूर्वक **अंबिकादेवी**नुं आराधन करवा मांड्युं. एटले त्रण दिवसना उपवासने अंते तेमणे ते शासनदेवीने बोलावी त्यारे ते साक्षात् आवीने कहेवा लागी के-'हे मुनि! मारुं वचन सांभळो—ए राजाना भाग्यमां संतति नथी, तेम आ समये तेवो कोई पुण्यशाळी जीव पण नथी. ए राजाना भ्रातानो पुत्र कुमार छे ते पुण्य, प्रताप अने महिमाथी बलिष्ठ एवो राजा थशे. ते अन्य राज्योने जीतशे अने भोगवशे तथा परम श्रावक थशे.' ए प्रमाणे देवीनुं वचन सांभळतां पुत्रना अभावे अंतरमां खेद पामनार अने प्रजानी पीडाथी शंका पामतो सिद्धराज सतत उत्सवोथी अलंकृत एवा **अणहिल्लपुर**मां आव्यो.

हवे क्षत्रियोमां शिरोमणि अने जाणे संपदाओनो प्रसाद होय एवो **देवप्रसाद** नामे **कर्णराजा**नो बंधु हतो. सद्‌व्रतने पाळनार **त्रिभुवनपाल** नामे तेनो पुत्र हतो तेनो **कुमारपाल** नामे पुत्र के जे राज्यना लक्षणोथी अलंकृत हतो.

अहीं पुत्रनी आशाना भंगथी विषाद पामेल **श्री सिद्धराजे** परमज्ञानी समान नैमित्तिकोने बोलाव्या. एटले ग्रहगतिने माटे **सद्‌भाव** अने **प्रश्नचूडामणि** ग्रंथना आधारे केवलीथी अविरुद्ध अने परस्पर विचार चलावीने तेमणे राजानी आगळ निवेदन कर्युं के—'हे स्वामिन्! आपना बंधुओमां ए **कुमारपाल** कोईने नम्या विना राज्य चलावशे, ए वचन अन्यथा थनार नथी. पोताना प्रतापथी अनेक राजाओने जीतीने दिशाओने ताबे करशे, पण तेनी पछी राज्य विनाश पामशे.' ए प्रमाणे सांभळीने जेम थवानुं होय, तेम थाय छे.' ए वाक्य जाणतां छतां तेने कुमारपाल पर द्वेष आव्यो अने तेनो वध करवानो तेणे विचार कर्यो. ए हकीकत कोई रीते पण कुमारपालना जाणवामां आवी, एटले ते शिवदर्शनीनी जेम शरीरे भस्म लगावीने जटाधारी तापस थयो.

एक वखते चरपुरुषोए आवीने राजाने जणाव्युं के—'त्रण सो जटाधारी तापसो आवेला छे, तेमां तमारो शत्रु कुमारपाल पण छे. ते सर्व तापसोने भोजन माटे निमंत्रण करो अने तेमां जेना पगे पद्म, ध्वज अने छत्र होय तेने तमारो शत्रु समजी लेजो.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजाए तेमने बोलाव्या अने पोते भक्तिथी तेमना पग धोवा लाग्यो, एवामां **कुमारपाल**नो वारो आव्यो. एटले तेना पगे पद्मादिक जोवामां आवतां ते पुरुषोए दृष्टिसंज्ञाथी राजाने जणाव्युं. तेथी राजा समजी गयो अने पोताना माटेनी संज्ञापरथी **कुमारपाल** पण जाणी गयो, जेथी कंईक प्रसंगनो दंभ करी, हाथमां कमंडळ लई, राजभवनथी बहार नीकळी, दिवसे पोताने ओळखवाना भयथी शरीरे कंपतो अने त्रास पामतो तथा 'राजा थकी मारुं रक्षण करो.' एम स्खलित वचनथी बोलतो कुमारपाल **श्री हेमचंद्रसूरि**ना उपाश्रयमां आव्यो, एटले आचार्ये साहसथी तेने लाख्खो ताडपत्रोमां छूपाव्यो. एवामां तेना पगना अनुसारे राजपुरुषोए त्यां आवीने तपास करी, पण ते जोवामां न आववाथी तेओ पाछा चाल्या गया. पछी रात्रे आचार्ये तेने बहार काढ्यो अने ते देशांतर चाल्यो गयेा. एवामां फरीने ते पूर्वनी जेम त्यां आवी चड्यो. अहो! साहसिकता ए ज भाग्यनुं लक्षण छे. एटले त्यांथी पण तीर्थस्नानना दंभथी नीकळी संकटथी भय पामतो ते जटाधर **वामदेव** तापस पासे जवा लाग्यो अने जेटलांमां ते **आली** नामना कुंभारना घर पासे आव्यो तेटलामां पाछळ लागेला असवारो तेना जोवामां आव्या. एटले

तेणे कुंभार पासे जईने कह्युं के—'हे शरणागतवत्सल प्रजापति! आ आवता संकट थी तुं मारुं रक्षण कर.' त्यारे तेणे तैयार करेल नींभाडाना एक खुणामां छूपावी तेटलो भाग मूकीने तरत तेणे अग्नि सळगाव्यो. एवामां असवारोए आवीने तेने पूछ्युं के—'अहिं कोई जटाधर आव्यो छे के नहि?'

ते बोल्यो—'हुं काममां व्यग्र होवाथी जोई शक्यो नथी.' आथी तेओ खेद पामता अनादरथी पाछा चाल्या गया.

पछी रात्रे कुंभारे तेने बहार काढ्यो एटले ते देशांतर चाल्यो अने कोई ब्राह्मण साथे ते **स्तंभतीर्थपुर**मां गयो, त्यां **श्री मालवंश**नो सुचरित्रशाळी अने महाधनवान एवो **उदयन** नामे व्यवहारी रहेतो हतो. तेनी पासे एक ब्रह्मचारी छोकरो हतो तेणे एकांतमां श्रेष्ठीने **कुमारपाल**नो बधो सत्य वृत्तान्त निवेदन कर्यो. एवामां **कुमारपाले** तेनी पासे कांईक भातुं माग्युं, त्यारे व्यवहारी कहेवा लाग्यो के—'जे राजाने अभीष्ट न होय, तेनी साथे अमारे कांई प्रयोजन नथी. माटे राजपुरुषो तने न जुए, तेटलामां सत्वर दूर भागीजा. हे बटुक! एने तुं आपणा नगरनी सीमा बहार मूकावी दे.

ए प्रमाणे श्रेष्ठीना वचनथी ते निराशा अने भय पाम्यो, वळी एम सांभळवाथी **कुमारपाल** पण रात्रे ते नगरमां दाखल थयो. ते वखते चार लांघण थतां क्षुधाथी तेनी कुक्षि उंडी उतरी गई हती. आ अवसरे चारित्रना योगे उत्पन्न थयेल लब्धिओथी गौतम समान एवा **श्री हेमचंद्रसूरि** त्यां चातुर्मास रह्या हता. ते आचार्य महाराज वृष्टिथी मेघ जेम भूमिने शीतल करे, तेम व्याख्यानकलाथी भव्यजनोना हृदयने शांत-शीतल करता हता, एवामां **कुमारपाल** अचानक त्यां आवी चड्यो. एटले विचक्षण गुरुए तेने जोयो तथा आकृति अने लक्षणोथी ओळखी लीधो. पछी आश्वासन आपतां तेने सारा आसनपर बेसाडीने तेमणे जणाव्युं के—'हे राजपुत्र! शांत था. आजथी सातमे वर्षे तुं राजा थईश.'

राजकुमारे कह्युं—'आप जेवा योगी पुरुषनी कृपाथी ए बधुं केम सुप्राप्य न थाय?'

पछी आचार्ये श्रावक पासेथी तेने बत्रीस द्रम्म (रूपिया) अपावीने पुनः जणाव्युं के—'हे भद्र! अमारुं एक वचन तुं बराबर दृढता पूर्वक सांभळ—आजथी तारी पासे दारिद्र्य आवनार नथी, पण भोजन, आच्छादनादि व्यवहारथी तुं अत्यारे मान पामी शक्यो नथी.'

त्यारे **कुमारपाल** बोल्यो—'हे भगवन्! जो एम थाय अने मने राज्य मळे, तो पछी जोईए शुं? अत्यारे हुं वधारे शुं कहुं?' एम कही मेघथी आच्छादित पूर्ण चंद्रनी जेम ते गूढ राजा देशांतर चाल्यो गयो. त्यां कोईवार कापालिक व्रत आचरतां, कोईवार कौलव्रत आचरतां अने कोईवार क्यां कृत्रिम के विचित्र पंथे चालतां कृत्रिमक्रमथी तेणे सात वर्ष व्यतीत कर्यां, छतां गुरुना वचनथी संकटमां पण ते हृदयमां दृढता धारण करी रह्यो हतो. **भूपालदेवी** तेनी स्त्री सर्व अवस्थामां छायानी जेम सदा तेनी पाछळ-पाछळ अनुसरती हती, कोईवार ते पतिना पार्श्व भागने (पडखाने) मूकती न हती.

हवे ११९९ वर्ष व्यतीत थतां सिद्धराज मरण पाम्यो. ए वात क्यांकथी जाणवामां आवतां सत्त्वशाळी **कुमारपाळ** पोताना नगरमां आव्यो. त्यां पासेना एक श्रीवृक्ष नीचे बेसतां दुर्गादेवीनो मधुर स्वर ते सुज्ञना सांभळवामां आव्यो. एटले पोताना भाग्यनुं प्रमाण जाणवानी इच्छाथी तेणे देवीने बोलावीने निवेदन कर्युं के—'हे ज्ञाननिधान देवी! जो मने राज्य मळे, एम तारा जोवामां आवतुं होय, तो मारा मस्तक पर बेसीने तुं कर्णने प्रिय लागे तेवो स्वर संभळाव.' आथी तेणे तरत ज ते प्रमाणे करतां अति स्फुट स्वरे जणाव्युं के—'तुं राजा थईश.' आ तेणीनो स्वर तेना मनरूप महेलमां दीपक समान थई पड्यो.

पछी अंतरमां राज्यप्राप्तिनी शंका छतां तेवा निमित्त शोधवामां तत्पर एवो **कुमारपाल** नगरमां आव्यो अने

श्रीमान् सांबने मळ्यो. तेनी साथे ते **श्री हेमचंद्र गुरु** पासे गयो, त्यां तेमने वंदन करीने विशिष्ट बुद्धिवाळो ते, आसनयुक्त गुरुना पाटपर बेसी गयो. त्यारे श्री गुरु कहेवा लाग्या के—'तुं अमारा आसनपर बेठो, तेथी तने अवश्य राज्यनी प्राप्ति थशे. तेमां ए ज मोटुं निमित्त छे.' एटले **कुमारपाल** बोल्यो के—'हे प्रभो! राज्यनी इच्छा करतां मने अपवादनी भीति नथी, पण आपनो अविनय थाय, तेथी मने भारे शंका रहे छे.'

हवे त्यां दशहजार अश्वोनो स्वामी **कृष्णदेव** नामे सामंत तेनो बनेवी हतो, तेने कुमार रात्रे मळ्यो. एवामां राज्यनी सर्व सत्ता चलावनार अने राज्ययोग्य पुरुषनी परीक्षा करनार प्रधानो **सिद्धराज**ना शिवमंदिरमां एकठा थया. अहीं कुमार पण नगरना राजमार्गे आवतां एकत्र थयेला प्रधानोने मळ्यो. त्यां **कृष्णे** तेनो हाथ पकडीने तेने राजमहेलमां प्रवेश कराव्यो. ते वखते त्यां बीजा बे राजकुमारो दाखल थया. तेमां एक सभासदोने प्रणाम करीने बेठो अने बीजो पण पोतानुं उत्तरीय वस्त्र विस्तारीने बेठो. एटले **कृष्णदेवे कुमारपाल**ने कह्युं के—'अहीं बेस.' त्यारे ते पोताना वस्त्रयुगलने संकेलीने एक श्रेष्ठ आसनपर बेसी गयो. आ बधो देखाव जोतां त्यां बेठेला केटलाक नीतिज्ञ प्रधानो विचारवा लग्या के-'आमां एक कुमारे तो प्रणाम कर्या. जे निंद्य बुद्धि निस्तेज होय, ते पोताना स्वजनो तथा शत्रुओथी पराभव पामे छे. तेमज संभ्रांत दृष्टिथी जोनार अने पोताना वस्त्रना छेडाने छूटो करनार होय, तेनी पासेथी शत्रु राजाओ समस्त राज्य छीनवी ले; परंतु आ कुमारपाल के जेने माटे नैमित्तिकोए अनुमति आपी छे अने जे धैर्यपूर्वक दृष्टि चलावतो तथा पोताना वस्त्रने संकेलतो अहीं आव्यो छे, ए शत्रुओनो निग्रह करशे अने दिशाओने ताबे करशे तेम ज ए महाभाग्यशाळी लक्ष्मी वडे चक्रवर्ती समान थशे, माटे दुर्बुद्धिनो ध्वंस करनार एवा आ **कुमारपाल**नो अहीं राज्याभिषेक करो. ए समुद्र पर्यंत पृथ्वीनुं अवश्य पालन करशे.' एम धारीने बार प्रकारना वाजिंत्रोथी आकाशने ध्वनिमय करतां प्रधानोए त्रणे भुवनना मंगलरूप तेनो राज्याभिषेक कर्यो. पछी महोत्सवपूर्वक **कुमारपाल** राजाए राजमहेलमां प्रवेश कर्यो अने ते राज्यासनपर बिराजमान थतां **गोत्रनी वृद्ध स्त्रीओए** तेने अक्षतथी वधाव्यो. एटले महा तेजस्वी, प्रताप वडे प्रचंड अने शांत स्वभावथी वर्तनार एवो **कुमारपाल** राजा पृथ्वीनुं राज्य चलाववा लाग्यो.

एवामां **सपादलक्ष** देशनो राजा **अर्णोराज** के जे भारे मदोन्मत्त हतो, तेनी साथे विग्रह करवाने **कुमारपाल** राजाए पोतानी सेना सज्ज करी अने ग्रह, नक्षत्र, तारा तथा औषधिथी परिवरेल चंद्रमानी जेम हस्ती, अश्व, पदाति अने रथोना समूहथी परिवरेल तथा सामंतमंडळ तेमज अन्य क्षत्रियोथी सेवातो ते राजा पोतानुं सैन्य लईने आगळ चाल्यो. केटलाक दिवसे मेरुनी माफक दुर्ग्राह्य अने लंकादुर्गनी जेम अगम्य एवा शत्रुराजाना किल्ला पासे ते पहोंच्यो. त्यां प्रतिपक्षी राजाए दुर्गनी चोतरफ बे योजनमां बोरडी, बावळ, खदिर (खेर) तथा करीर (केरडा) ना वृक्षो वावेल होवाथी ते किल्लो लोकोने भारे दुर्गम्य थई पड्यो हतो, एटले कुमारपाल राजाए घणा माणसो लगाडीने ते वृक्षो कपाववा मांड्या, पण तेनो पार न आव्यो. आथी ते कंटाळीने पाछो फर्यो अने वर्षाकाल पहेलां अणहिल्लपुरमां आवीने चार मास सुधी खिन्नता पामेल पोतानी सेनानुं पोषण कर्युं. पछी चोमासुं खलास थतां ते पोतानुं सैन्य लईने शत्रुप्रत्ये गयो अने ग्रीष्मऋतुमां फरी पाछो वळ्यो. एम राजाने अगियार वरस चाल्या गया. एटले ते चिंतववा लाग्यो के—'पश्चिम समुद्र सुधी मारुं राज्य छतां ए **अर्णोराज** मारा करतां अधिक केम गणाय अने मारे ताबे केम थाय?' एम क्षणभर ते विचारणामां लीन थई गयो.

हवे देवमंत्री समान तथा नीति अने क्षत्रिय संबंधी विचारमां चालाक एवो **वाग्भट** नामे ते राजानो मंत्री के जे **उदयन**नो पुत्र हतो. एटले आ संकट आवी पडतां राजाए तेने पूछ्युं के—'कोई देव, यक्ष के देवी सप्रभावी छे? के जेना प्रभावथी आपणे विजय पामीए अने आपणुं मन तेनामां लीन करीए.' एटले वचन बोलवामां कुशळ एवो वाग्भट कहेवा लाग्यो के—'हे स्वामिन्! तमे मारुं वचन बराबर सावधान थईने सांभळो—ज्यारे आपना

आदेशथी आपनो बलिष्ठ बंधु **कीर्तिपाल** सौराष्ट्रना स्वामी **नवघण**नो निग्रह करवा गयो अने अनेक विग्रहो करतां ते कंटाळी गयो, ते वखते **स्तंभतीर्थ** पुरवासी **उदयन** नामे मारो पिता संग्राममां सैन्यबळ आपनार हतो. एकदा त्यांथी पाछा फरतां जेना दर्शन दुर्लभ छे अने अत्यंत रमणीय एवो उन्नत **पुंडरीकगिरि** तेमना जोवामां आव्यो, एटले तेणे पोताना अधिकारीने तेनुं अद्‌भुत माहात्म्य कही संभळाव्युं. जेथी भारे भक्तिपूर्वक श्री युगादीशने नमस्कार करतां अने ध्यानथी ते पोताना आत्माने कृतार्थ मानवा लाग्या. त्यां तेणे जीर्ण प्रासाद जोयो. एटले **कीर्तिपाले** भंडारीने कह्युं के—'आ प्रासादनो जीर्णोद्धार करवानी अमारी इच्छा छे, पण आ संग्राम जीतीने पाछा वळतां ए बधुं थई शकशे.' पछी पर्वतथी नीचे उतरतां तेणे शत्रुराजा तरफ प्रयाण कर्युं, ते पण भारे मदोन्मत्त हतो. त्यां भाला सामे भाला अने गदा सामे गदा एम शौर्यना आवेशथी प्रहारनी दरकार विना बंने सैन्य वच्चे युद्ध चाल्युं. ते वखते **उदयन** पोताना स्वामीनी आगळ उभो रहीने प्रहार करतो हतो. एवामां पोताने प्रहार न लागतां पण ते पृथ्वीपर पडी गयो. त्यां युद्धमां जय थयो अने शत्रु हणायो. एटले रणभूमिमां तपास करतां **उदयन**ने लगभग मरणावस्थाए पहोंचेल जोईने **कीर्तिपाले** तेने जणाव्युं के—'अनित्य भौतिक देहने स्थिर यशथी तें चिरस्थायी बनाव्यो छे हे भद्र! वणिक्‌व्यवहार तो तने ज बराबर रीते करतां आवड्यो, हवे जो तारा मनमा कांई शल्य खटकतुं होय, तो मने कहे, एटले ते प्रमाणे काम करतां हुं तारो कंईक अनृणी (ऋणरहित) थाउं.'

त्यारे उदयन कहेवा लाग्यो के—'हे नाथ! अमे सदा पोताना स्वामीना ताबेदार थईने रह्या छीए, तेथी तेना ज कार्यमां एकचित्ते होवाथी अमे ते उपरांत बीजुं कंई कार्य समजता नथी. पण सिद्धराजथी भय पामता तमारा बंधु **कुमारपाल** राजाए मारी पासे एक ब्रह्मचारीने मोकल्यो हतो, परंतु में तेनो तिरस्कार कर्यो; ते वखते **श्रीमान् कुमारपाल**ने पण मारापर बहु गुस्सो आव्यो अने मारामां पण भारे प्रचंडता आवी गई, तो अत्यारे तमारा चरणनी आगळ ते दोष मूकतां हुं मारा बंने लोकने सफळ समजुं छुं, तेमज मारुं कुळ, शील अने श्रुतने पवित्र मानुं छुं. हवे आ मारा मृत्युनो प्रतीकार थई शके तेम नथी, माटे हुं तमने विनंती करुं छुं, ते सांभळो. मारा पुत्र वाग्भटने मारे कंईक कहेवानुं छे, ते तमे संभळावजो के **शत्रुंजय** महातीर्थना प्रासादनो जीर्णोद्धार करवानी में प्रतिज्ञा लीधी छे, माटे ए मारा शुभ हेतुने पार पाडजे.' एटले **कीर्तिपाले** ए बधुं स्वीकार्युं, एवामां **श्री उदयन** तरत ज त्यां प्राणरहित थई गयो. पछी पितानुं ते कार्य करतां हुं अत्यारे ऋणरहित थयो. वळी पोतानी एक देवकुलिका में नगरमां करावी छे. तेम ज आज नगरमां महा धनवान **श्री छदुक** नामे व्यवहारी वसे छे के जे श्रेष्ठी पासे नेवुं लाख द्रव्य छे. मारी मित्रताने लीधे तेणे ए धर्मस्थाननो एक गोखलो कराव्यो अने त्यां तेणे **श्री अजितनाथ** स्वामीनी मूर्ति स्थापन करी छे. ज्ञानना निधान **श्री हेमचंद्रसूरि**ए तेनी प्रतिष्ठा करी छे. तेमना हस्तना मंत्रोना माहात्म्यथी बधुं सिद्ध थाय तेम छे. माटे हे स्वामिन्! त्यां मानता करवाथी ए शत्रु राजानो अवश्य पराजय थाय. ए प्रभुनुं नाम ज एवा प्रकारनो विजय सूचवे छे. आ मारी विज्ञापना सांभळीने तमे ए प्रमाणे विचारपूर्वक करो. कारण के आपना करतां मारी मति आगळ जाय तेम नथी.'

ए प्रमाणेनी विनंतीथी अमात्यना वचनक्रमनो विचार करतां राजा कहेवा लाग्यो के—'हे मंत्रिन्! तमारा वचनथी बधुं कार्य मने याद आव्युं छे. हे मित्र! सांभळ—ज्यारे पूर्वे अमे सामान्य स्थितिमां हता, ते वखते त्रण दिवसना उपवासी थतां अमे श्री स्तंभतीर्थे गया अने **वोसिरि** बटुक (ब्रह्मचारी)ने **उदयन** पासे मोकल्यो हतो, पण ते गयो तेवो ज प्रयोजन साध्या विना पाछो आव्यो. आ तेनो अपराध मने न लाग्यो, परंतु अहो! आ स्वामीनी केवी भक्ति साचवे छे, एम मारा मनमां असर थई. कारण के **पोताना दुर्भाग्यने जोयां छतां बीजापर रोष लावनार सुज्ञ न गणाय.** वळी ते वखते संध्या समये लक्ष्मी-कांतिवडे कल्पवृक्ष समान एवा श्वेतांबराचार्य **श्री हेमचंद्रसूरि** मारा जोवामां आव्या, त्यारे कृपाथी तेमणे मने भातुं अपाव्युं अने जणाव्युं के-'तने राज्यनी प्राप्ति थशे.' आ तेमनुं वचन

दिव्य वाक्यनी जेम सत्य थयुं अने ते अद्यापि घंटारवनी जेम मारा हृदयमां गाज्या करे छे. वळी ए बिंबनी प्रतिष्ठाना मिषथी ए गुरुने याद करावतां तें मारा पर अत्यंत उपकार कर्यो छे. कारण के करेल गुणने न जाणनारने अधम नर समजवो. तथा **श्री सिद्धराज** पण खेंगार भूपतिने हणीने तेना घणा भायातोने लीधे देश वसाववाने समर्थ न थयो. अत्यारे तारा पितानी बुद्धिथी ते बधा शत्रुओनो एवी रीते विनाश करवामां आव्यो के तेमनुं नाम पण जणातुं नथी. हवे ते देशने भोगवटामां नाख्यो अने त्यां अधिकारीओ नीमवामां आव्या छे. तारो पिता आवो बुद्धिमान हतो ए बधुं स्वामि भक्तिनुं फळ समजवुं. वळी आ **कीर्तिपाल** कुमार तो विग्रहादिकमां पदाति समान संग्राममां अज्ञात हतो, छतां तारा पिताए ज एने वधारे चालाक बनाव्यो. तेणे तने तीर्थोद्धारनुं जे काम फरमाव्युं छे, ते कार्य पण अमारुं ज छे, माटे अत्यारेज तने हुं आदेश करुं छुं के—'राज्यना भंडारमांथी जोईए तेटलुं धन लईने ए तीर्थनो संपूर्ण उद्धार करो तथा मारा प्रधानना अने अमारा मनोवांछित पूर्ण करो. वळी अत्यारे ए देवनुं बिंब तुं मने सत्वर बताव के जे पुण्यथी ज प्राप्त थई शके. तेनी पूजा करतां हुं मारा जीवनने कृतार्थ बनावुं.'

पछी वाग्भट मंत्रीए मार्ग बतावतां **कुमारपाल** राजा चालीने ते जिनमंदिरमां गयो त्यां प्रथम राजाए मूलनायक **श्री पार्श्वनाथ**ने वंदन कर्युं अने पछी मंत्रीए वर्णवेल **श्री अजितनाथ**ना दर्शन कर्यां. वळी भावनाना वशे तेणे कुंकुम, अगुरु, कपूर, करी तथा चंदनद्रव, तेमज सुगंधि पुष्पोथी प्रभुनी पूजा करी. पछी भगवंतने विनंती करतां तेणे जणाव्युं के—'हे नाथ! आ अवसरे तमारा प्रभाव अने प्रसादथी ज हुं शत्रु राजाने जीतीश. एटले पछी तमे ज मारा देव, माता, पिता अने गुरु छो. आ संबंधमां हे मंत्रिन्! तमे साक्षीरूप छो. ए वचन मारे अवश्य पाळवानुं छे.' ए प्रमाणे कही, प्रभुने नमी रोमांचित थयेल राजाए तरत विजययात्रा माटे सेना तैयार करावी. अने अनेक प्रयाणो करतां ते **चंद्रावती** पासे पहोंच्यो. त्यां राजाए प्रमोदथी आवास देवडाव्या.

हवे ते चंद्रावतीना राजाना राज्यमां **विक्रमसिंह** नामे एक मुख्य अधिकारी हतो (पर्यालोचनामां विक्रमसिंहने ज चंद्रावतीनो राजा कहेल छे.) ते राजाना सैन्यनी सेवाथी कंटाळी गयो हतो. छतां ते जवाने ईच्छतो न हतो. तेणे पोताना सारा अमात्यो साथे विचार चलाव्यो के—'आपणे आ निर्बळ कुमारपाळ राजानी सेवाथी हवे बहु कंटाळी गया छीए. देशांतरमां भ्रमण करनार पुरुषमां प्रताप के बळ क्यांथी होय? तेम चित्रपटमां आळेखेल समान आ राजाने नमस्कार करवो तो अति दुष्कर ज छे, माटे शरीरे भस्म लगावी, हाथमां कमंडळ धारण करी, मस्तके जटा राखनारा बावा जेवा शिवनुं पूजन के नमन करीए, पण आ तो आपणने राज्यनी विडंबना ज छे. तो अहींज कोई रीते जो ए कुमारपाल राजा सधाय तो बधुं ठीक ठीक थई जाय. आ तो जाणे लंगडो ससलो चोळाना वाडाने रूंधे तेवुं छे., ते पछी क्षत्रिय तेजथी अद्‌भुत एवा कोई चौलुक्यवंशी राजाने राज्य पर बेसाडी, तेनी आज्ञा पाळवी ज आपणने उचित छे.

त्यारे प्रधानो कहेवा लाग्या के—'हे स्वामिन्! आपणा कुळमां स्वामिद्रोह करवो उचित नथी. ए **सिद्धराज**ना पदे आवीने रहेल छे, माटे आपणने सर्वथा आराधवा लायक छे. कारण के युद्धमां जय थाय, ते तो अनिश्चित छे, माटे आपणे किल्लाने घेरो नाखवानुं कार्य करवुं जोईए.'

एवामां **विक्रमसिंह** बोल्यो—'आ कुमारपाल राजाने शी रीते मारवो ते जणावो? तमारे बीजा कोईनी सलाह देवानी जरूर नथी.'

एटले तेओ बोल्या के—'हे नाथ! अमे तो बोलवाना अधिकारी छीए. बाकी तमारी मतिने जे उचित लागे, ते करो ते अमने प्रमाण छे.'

त्यारे **विक्रमे** जणाव्युं के—'अत्यारे मारा महेलमां एक अग्नियंत्र करो के जेथी ए विना क्लेशे विनाश पामशे.' आ सांभळी सचिवोए बुद्धिनी प्रगल्भीताथी विचार्युं पोताना महेलमां आग लगाववानी वात आ कुबुद्धिनो

(विक्रमनो) विनाश सूचवे छे. पण 'आपणे अहीं शुं करीए? भवितव्यता ओळंगाय तेम नथी. अने राज्यनो भ्रंश थवानो छे अने कुमारपालनो विजय थवानो छे. पूर्वना पुण्योदयथी जे **श्री सिद्धराज**नी गादीपर बेठो, एटले एना सेवक बनवानी पण आ योग्यता धरावतो नथी.' एम चिंतवी ललाटपर अंजलि जोडीने ते कहेवा लाग्या के—'स्वामीनो आदेश अमने प्रमाण छे, तेमां अमारे विचार करवानो नथी.'

पछी सुतारोने बोलावीने तेणे महेल बांधवानी शरूआत करी, के जेमां जमीनमां भोयरुं अने उंचे वस्त्रना छेडा समान चंचल स्तंभ पाट करावावामां आव्या अने तेनापर तंबू नाखीने तेने एक विशाल वस्त्रथी आच्छादित कर्यो. तेने विस्तृत चंद्रवाथी मंडित कर्यो अने मोती तेमज पुष्पोना गुच्छथी तेने शणगारवामां आव्यो. सुतरना तांतणावाळी सुंदरशय्या बनावी. ते तंबु जो के बहारथी तो बहु रमणीय देखातो, परंतु तेनी एवी रचना करवामां आवी हती के तेनी एक खीली खेंची लेतां ते खेरना अंगाराथी भरेल खाडामां पडे अने तरत भस्मीभूत थई जाय. ए प्रमाणे महेल तैयार थतां प्रधानोए आंखमां आंसु लावीने निवेदन करतां तेमनो नायक बोल्यो के-'मति ए कार्यने साधे छे.' पछी तेणे विचार कर्यो के—'ज्यारे ए बीचारो आ आश्चर्यकारी रचनाओ जोतो ज्यारे आवी विलास शय्यामां दृष्टि लगावीने बेसशे, के तरत अधःपतन थवाथी ते मरण पामशे.' एम चिंतवीने ते प्रभाते सैन्यनी छावणीमां आव्यो अने जमीन सुधी मस्तक नमावीने तेणे कुमारपाल राजाना चरणे नमस्कार कर्या. पछी दंभथी, विषथी भरेल अने मुखे अमृतने धारण करता घटनी जेम सुज्ञ एवा ते मरु प्रदेशना मंडलेश्वरे कुमारपाल राजाने विनंती करी के—'हे स्वामिन्! महेरबानी करीने मारा महेलने अलंकृत करो. अने आज त्यां ज भोजनादिक करीने आराम लेजो. (आप आवशो, ते पछी ज अमे अने अमारो परिवार भोजन लेशे.)' त्यारे कुमारपाळे विचार्युं आनो विश्वास करवा जेवो नथी एटले एणे कह्युं के अमारो परिवार भोजन करे पछी ज अमे जमीशुं!

त्यारे राजाए कह्युं के—'तारा जेवा हितकारी अने स्वामिभक्त बीजु कोण छे. **परमार** कुळमां उत्पन्न थयेल तारा विना बीजो कोई निर्भय नथी, आवा शुभ कार्यमां कोण प्रतिषेध करे? तारो आवास अमारे जोवालायक ज छे.'

एटले तेणे जणाव्युं के—'स्वामीनो आदेश मने प्रमाण छे.' एम कहीने ते भक्ते बपोर सुधीमां प्रथम परिवारने भोजन कराव्युं अने पछी स्वामीना शरीरनी रक्षा करवामां सदा तत्पर एवा अंगरक्षकोने बोलाव्या. तेमने ते पुरी मंडप रचना तेंणे बतावी., ते वखते एक महाबुद्धिशाळी वृद्ध पुरुष उभो हतो, अंगारानो अत्यंत उग्र गंध तेना जाणवामां आव्यो, जेथी ते पोताना मनमां विचारवा लाग्यो के—'अहीं कंईक आश्चर्य जणाय छे. स्वामीना द्रोहने माटे त्यां अग्निनो प्रबंध कर्यो लागे छे.' एवामां दृष्टिविकारना लक्षणथी तेने बधुं जाणी गयेल समजीने भारे वक्र आशय धरावनार **विक्रमे** तेनो अत्यंत सत्कार कर्यो. पछी तेनी साथे ज **विक्रमसिंह** राजमंदिरे गयो अने कुमारपाल राजाने तेणे विनंती करी के—'हे नाथ! मारा महेलमां पधारवानी कृपा करो.' एटले ते वृद्ध पुरुषे भ्रूसंज्ञाथी जवानो निषेध कर्यो. त्यारे कुमारपाल राजाए जणाव्युं के—'तें मारा बधा परिवारने भोजन कराव्युं. पण अमे रात्रे चिंता अने उजागराथी खेद पाम्या छीए, तेथी अत्यारे भोजन करवानी अमारी इच्छा नथी. अने वळी दैवज्ञोए अत्यारे ज प्रयाणने माटे मुहूर्त्त बातवेल छे, माटे प्रयाणनी नोबत वगाडो के जेथी बधा तैयार थाय अने तुं पण पोतानी सेनाने सज्ज करीने सत्वर आव, कारण के कुशळ ते ज कहेवाय के जे कार्यने माटे उत्साह अने त्वरा करे.'

आथी शंका लावतां ते 'जेवी आपनी आज्ञा' एम कहीने पोताना स्थाने गयो, पण 'पोतानी कपटरचना जाणवामां आवी गई छे.' एम तेणे मानी लीधुं. पछी तरत ज शुभ मुहूर्त्ते कुमारपाळनी छावणी तरफ प्रयाण क्युं अने शत्रुदुर्गनी पासे तेणे पोतानुं सैन्य स्थापन कर्युं. त्यां यथास्थाने तेणे सैन्यने स्थापन करी रातदिवस जागरण

करतां व्यग्र सुभटो प्रहरनो पहेरो भरता हता.

हवे अहीं **अर्णोराज** पण **कुमारपाल**ना व्रतने (प्रतिज्ञा) न जाणतां अभिमानयुक्त वचनथी तेने तुच्छ मानवा लाग्यो. वळी तेणे एम समजी लीधुं के—'अगियार वरस जेम ए हारीने चाल्यो गयो, तेम अत्यारे बारमे वरसे पण ते मारुं शुं विपरीत करवानो हतो?' तेमज सत्त्वहीन छतां उद्धत अने भयने लीधे मात्र देखाव आपता तथा 'चिरंजीव'ना पोकार करतां एवा पोताना सेवकोएथी घेरायेला राजाए—'एक हाकलना स्वरथी हस्तीने पण भ्रांति पमाडनार एवो सिद्धराजनो पुत्र **चारुभट्ट** मारी पासे ज रहे छे.' तो मने शानो भय छे? ए प्रमाणे अनेक विल्कपोथी तेणे ते वखते किल्लापर यंत्रो सज्ज न कराव्या अने स्वर्गमां रहे तेम निर्भय छतां उदासीन थईने ते रहेवा लाग्यो. वळी पोताना भाग्यथी कदर्थना पामेल ते भाला वगेरे हथीयारोथी किल्लानी अटारीओ भरेल होवा छतां सुभटो मेळवी न शक्यो.

ए बधो वृत्तान्त पोताना सेवको पासेथी जाणवामां आवतां **श्रीमान् कुमारपाल** राजाए दान, मानादिकथी पोतानी सेनानो भारे सत्कार कर्यो. हाथीओना प्रमाण पूरती तेणे शृंखला अने झुल तैयार करावी, अश्वोनी लगाम तथा पलाण, रथोना घुघरीओ युक्त चक्रो वगेरे सजाव्या तेमज कुमारपाले योद्धाओने वीरवलयो पहेराव्या. चतुरंग सैन्यने तेणे बहु ज प्रसन्नतापूर्वक सुवर्ण, रत्न, माणिक्य वगेरेना आभूषणो आप्यां. चंदन, कपूर अने केसरना विलेपनथी तेणे पोताना हाथे चालाक सुभटोना मुखे विलेपन कर्युं. तेमज कुमारपाल राजाए पोते चंपक अने कमळ पुष्पोनी माळाओ तेमना मस्तके बांधी. वळी हेमंतऋतुना कमळो समान सुवर्णकमळोवती तेणे प्रमोदपूर्वक सेनापतिओना स्कंध पूज्या. पछी अंधकारमय अर्धरात्रे सुधा समान वचन तरंगोथी ते सुभटोने उत्साह पमाडतो भारे तेज, प्रताप अने प्रमोदना स्थानरूप एवो ते राजा वाजिंत्रना अवाज विना एकांतमां रहेल योगीनी जेम विना शब्दे चाल्यो. पछी पर्वतनी उपरनी भूमिए जईने तेणे वाजिंत्रोना नाद विस्तार्यो. ते वखते वाग्भट अमात्यने तेणे आदेश कर्यो के—'प्रभात पहेला पांचसों पाडाओनुं आर्द्र चामडुं लावो.' एम राजाना हुकम प्रमाणे ते लाव्यो, एटले बख्तरने धारण करता केटलाक प्रचंड सुभटो ते किल्लानी अंदर पड्या. तेमज केटलाक दांते खड्ग उपाडीने सत्वर किल्ला पर आरोहण करवा लाग्या. एम उपर झडपथी चडी जई पोताना पराक्रमथी ते किल्लाना कांगरा उपर पहोंची गया. अंदर जईने तेमणे तोफान मचाव्युं. त्यारे **कुमारपाल** राजाथी दबायेल शत्रुराजा **अर्णोराज** प्रभाते मुख्यद्वार उघाडीने बहार नीकळी गयो. आ वखते ते संग्राममां तेणे पोताना जीवितनी पण आशा मूकी दीधी हती. एवामां बंने पक्षना रणवाद्यो वागतां प्रतिध्वनिथी आकाश एक शब्दमय बनी गयुं. ते वखते कायर पुरुषोना प्राणो देहमां रहेवाने असमर्थ थवाथी पातालना शरणने ईच्छता ते तरत देह छोडीने चालता थया. पछी बाण सामे बाण, खड्ग सामे खड्ग तथा बाहुयुद्ध चाल्युं के जेमां सुभटोना मुख देखाता न हता. सूर्यना संक्रांतिकाळे पत्थरमय पर्वतोनी जेम लोको अनेक रीते शरीरे घायल अने खंडित थता देखावा लाग्या. पाकेल कोळानी जेम त्यां अश्वो खंडित थवा लाग्या, तेमज चोखाना पापडनी जेम रथो अत्यंत चूर्ण थवा लाग्या. वळी पाकेला कलिंगडानी जेम त्यां पडेला सुभटोना जठर मांस अने आंतरडाथी ओतप्रोत देखाता हता. प्राणेशना समागम माटे विमानमां रहेल अप्सराओना दूतोनी जेम मांसना अभिलाषी गीध पक्षीओ आकाशमां संचरवा लाग्या. ए प्रमाणे वंश, ख्याति अने नामना उच्चारपूर्वक संग्राम चालतां अने हस्तीओना मदजळथी धूळ बधी शांत थतां; तेमज त्यां पट्टहस्ती बंने एक बीजानी सामे आवी दंतशूळथी लडवा लाग्या त्यारे कुमारपाल राजाए **चारुभट्ट**ने शत्रुनो महावत बनेलो जोयो. अने त्यां **श्यामल** महावते **अर्णोराज**ना हस्तीनी हाक मारवाना भयने दूर करवा स्वच्छ वस्त्र लईने तेना बे टुकडा करी कान ढांक्या. एवामां **चारुभट्टे** गर्वथी हाथीना दांतपर पग मूक्यो अने मनमां विचार कर्यो के—'आ प्रतिमातंग (सामे आवेल कुमारपालनो हस्ती) शुं मात्र छे?' ते वखते **कुमारपाल** राजाए बंने पक्षपर दृष्टिपात कर्यो. एटले

बधुं सैन्य अस्तव्यस्त थवा लाग्युं. त्यारे कुमारपाल राजाए शंकित थईने कह्युं के— हे मित्र'**श्यामल!** तुं पण फरी गयो छे शुं? जेथी हाथीने पाछो वाळे छे.' त्यारे ते श्यामल बोल्यो—'हे नाथ! श्यामल महावत, स्वामी अने महामतंगज ए त्रणेनो भेद स्वप्ने पण शक्य नथी.' त्यारे कुमारपाळे कह्युं - के आ चारुभट दुश्मनना सर्वस्व जेवो छे ते पाछा पगे हाथी उपरथी नीचे उतरी रह्यो छे. तेने पकडील्यो एवामां स्वामिना तेजनी साथे तरतज बन्ने दांत पड्या. हाथीना दांत तुटतां चारुभट पडयो सैनिको ए तेने पकडी लीधो अने राजाए अर्णोराजना ललाटमां भालो मार्यो जेथी चारुभट न होवाथी गभरायेला तेणे पोतानो हाथी पाछो वाळ्यो अने तेनी सेना पण पाछी वळी. आथी **कुमारपालराजा**ए पोतानी जीत थयेल प्रकाशीने पट फेरव्यो अने ते पोताने एक पराक्रमी राजा मानवा लाग्यो. ते वखते तरत ज (फरी गयेला) फुटी गयेला सामंतो बधा तेनी पासे आव्या. एटले राजाए तेमने जणाव्युं के—'ए राजाने तमे ज जीत्यो छे.' एम कही तेमने प्रसन्न कर्या. पछी तेणे पोताना योधाओ मारफते तेनो देश, भंडार अने सेना लुंटावी तेमां जेओ क्रूर, सत्त्वहीन अने युद्धमां पुंठ आपनार हता, तेवा बधा सैनिको, तेना अगणित द्रव्यना संग्रहथी सात पेढी सुधी तृप्त थई गया.

हवे विजयना हर्षमां राजाए अंतःपुरना रक्षक तथा सुभटोने आदेश कर्यो अने पछी पोताने जयशील माननार राजा कल्पवृक्षनी जेम याचकोने मनमानतुं दान आप तो पोताना नगर भणी पाछो वळ्यो अने **अष्टादशराती** देशना मुख्यनगर (चंद्रावती)मां ते आवी पहोंच्यो. त्यारे तेना राजा विक्रमना दुष्ट वर्तननी कुमारपाळने खबर पडी गई हती. पछी निमंत्रणथी त्यां आवेला (विक्रम)ने पाछळथी बांधी दीधो अने पोताना सेवकोने मोकळीने अश्व शाळा युक्त तेना महेलने तरत ज बाळी नखाव्यो, क्षणवारमां बधुं हतुं न हतुं जेवुं थई गयुं. पछी तेने पाथरणा विनाना गाडामां नाख्यो, बंधायेलो होवाथी पोताना अंगोपांग चलावी शकतो न हतो. हुंकारो करवानी पण ताकात न हती. तो वचननी शी वात करवी? नदीना ढाळ अने पथराळ जमीनमां गाडां चाल्या त्यारे पछडाटना कारणे विक्रम लोही लुहाण थई गयो त्यारे परमार वंशीय राजकुमारोए प्रणाम करी विनंती करी त्यारे कुमारपाळे गाडामां घास पाथरवानी रजा आपी. पछी राजा माचडा अने उंचा तोरणोथी शणगारेल एवा **अणहिल्लपुर** आगळ विजय प्राप्त करीने आव्यो, ते वखते प्रवेश महोत्सवमां सुरेंद्रनी जेम गजराजपर आरूढ थईने आवतां दृष्टिने रसायनरूप एवुं वाग्भटनुं चैत्य तेना जोवामां आव्युं. एटले त्यां प्रवेश करी आसन्न उपकारी एवा **श्री अजितस्वामी**नी राजाए सुगंधि द्रव्योथी पूजा करी. पछी श्री पार्श्वनाथनुं स्मरण, पूजन करीने तेणे जणाव्युं के—'हे नाथ! पूर्वे जे में कह्युं छे, ते तेम ज समजवुं.' पछी पुनः प्रणाम करी, सिंहासनथी मंडित गजराजपर आरूढ थईने ते पोताना भवनमां आव्यो, ते वखते गोत्रनी वृद्ध स्त्रीओए मंगल गीत तथा वर्धापन कर्युं, जेनो राजाए स्वीकार कर्यो.

एवामां **विक्रमसिंह**ने स्थाने पोताना प्रतिनिधि स्थापी, तेने पोतानी पासे बोलावी राजाए विस्मयपूर्वक जणाव्युं के—'हे **विक्रम**! अग्नियंत्रथी राजाओ ज पंचत्वने पामे छे, पण सामंतो नहि एम तने कोणे शीखव्युं हतुं? त्यां ज जो में तने अग्निमां होमी दीधो होत, तो तुं पुत्र, पशु अने बांधव सहित भस्मीभूत थई जात, पछी क्यां जोवामां आवत, जेवा तमे मारा सेवको मलिन छो, तेवा अमे तमारा नाथ मलिन नथी माटे हवे जीवतो रहे.' एम कही तेना दुष्ट कामने याद करीने राजाए तेने बंदीखानामां नाख्यो कारण के **पोताना कर्मने लीधे आ लोकमां ज केटलाक लोको राजाओथी पराभव पामे छे.** पछी तेना **रामदेव** नामना भ्रातानो पुत्र **श्री यशोधवल** हतो तेने राजाए चंद्रावतीमां स्थापन कर्यो.

हवे एक दिवसे धर्मवासनाथी अत्यंत वासित थयेल **कुमारपाल** राजाए पोताना **वाग्भट** अमात्यने आर्हत आचरनारा उपदेशक एवा गुरुने माटे प्रश्न कर्यो त्यारे तेणे **श्री हेमचंद्रसूरि**ना अतुल विद्या उपशम तथा गुण-गौरव कही संभळाव्या. जे सांभळतां राजाए जणाव्युं के—'तेमने सत्वर अहीं बोलावो.' एटले **वाग्भट** मंत्री आचार्य

महाराजने बहु मानथी राजभवनमां तेडी आव्यो त्यारे राजाए उभा थईने तेमने मान आपतां आसन आप्युं, जेनापर गुरु बिराजमान थया. त्यां राजा बोल्यो के—'हे भगवन्! अज्ञताने टाळनार एवा जैनधर्मनो मने उपदेश आपो.' आथी आचार्य महाराज तेने दयामूल धर्म संभळावतां बोल्या के—'हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म (मैथुन) अने परिग्रहनो त्याग ए धर्म छे तथा रात्रिभोजन अने मांसाहारनो त्याग करवो. कारण के श्रुति, स्मृति वगेरे पोताना सिद्धांतो बनावतां अन्य जनोए पण तेनो निषेध करेलो छे. वळी योगशास्त्रमां पण कहेवामां आव्युं छे के—

चिखादिषति यो मांसं, प्राणिप्राणापहारतः ।
उन्मूलयत्यसौ मूलं, दयाख्यं धर्मशाखिनः ।।१।।

अर्थात् - जे प्राणीओनो संहार करीने मांस खावानी इच्छा राखे छे, ते धर्मरूप वृक्षना दयारूप मूलने उखेडी नाखे छे.

वळी जे मांसनुं भक्षण करतां दया पाळवानी इच्छा राखे छे, ते बळता अग्निमां लताने रोपवानी इच्छा राखवा जेवुं करे छे. तेमज **मनु**ए कह्युं छे के—'प्राणीने हणनार, मांस खानार, मांस वेचनार, पकावनार, खरीदनार, अनुमोदन आपनार अने दातार ए बधा हिंसक समजवा.' तथा बीजी रीते पण ए ज वात बतावेल छे के—अनुमोदन करनार मारनार, बांधनार, क्रय-विक्रय करनार, पकावनार, लावी आपनार अने खानार ए बधा जीवहिंसाना भागीदार समजवा. प्राणीओनी हिंसा कर्या विना क्यांय मांस मळतुं नथी अने जीववधथी स्वर्गनी प्राप्ति नथी, माटे मांसनो त्याग करवो जोईए.' ईत्यादि सर्व त्याग करवा लायक वस्तुओनो गुरुए उपदेश आप्यो, जेथी राजाए तेनो स्वीकार करीने तेमांना केटलाक नियमो तेणे अंगीकार कर्या. वळी चैत्यवंदन, स्तोत्र, स्तुति प्रमुखनो तेणे अभ्यास करी लीधो, तथा वंदन, क्षमापन, आलोचन अने प्रतिक्रमण पण ते शीख्यो. तेम ज सर्व प्रत्याख्यानो अने विचारवानी गाथाओ तेणे धारी लीधी. ते प्रतिदिन बे वार (बेसणुं) अने पर्वना दिवसे एकवार (एकासणुं) भोजन करतो. वळी स्नात्रना प्रकार अने आरति पण ते शीख्यो. एम जैन विधिनो अभ्यास करवाथी ते एक सारा श्रावकनी जेम शोभवा लाग्यो. पण पूर्वे मांसाहार करेल होवाथी भारे पश्चात्तापमां पडतां ते कहेवा लाग्यो के—'अहा! नरकमां पाडनार ए मारुं पातक तो खरेखर अवाच्य छे. ए मारा पापनो निस्तार थई शके तेम नथी, तेथी हुं एम कहेवा मागुं छुं के-अपराधीनो निग्रह करवो-ए राजनीति छे, माटे मारा दांतने आ ज पाडी नाखुं, कारण के ते मांसाहारथी अपराधी बनेला छे. वळी स्मृतिमां पण एम संभळाय छे के—**'कर्ताने सर्वत्र सहन करवुं पडे छे.'**

त्यारे गुरु कहेवा लाग्या के—'हे राजन्! ए तो स्थूल लौकिक वचन छे के एकवार देहने कष्ट आपवाथी कृत कर्मनो नाश थाय, परंतु ते अज्ञानता छे. तुं आर्हत् धर्मनी इच्छाथी पवित्र मनवाळो थईने धर्माराधन कर, के जेथी समस्त पापरूप पंक धोवाई जाय. बत्रीश दांत छे माटे पापथी मुक्त थवाने उपवनमां मनोहर बत्रीश चैत्यो कराव, तथा तारा पिता त्रिभुवनपालना सुकृत निमित्ते मेरु शिखर समान एक उन्नत जिनचैत्य कराव.'

ए प्रमाणे सांभळतां राजा कहेवा लाग्यो के—'ए रीति अति उज्ज्वळ छे अने संसारवनथी निस्तार पामवा माटे एक श्रेष्ठ संबल छे.' पछी परम भक्तिथी तेणे गुरु महाराजने तेमना स्थाने मोकल्या अने पोते बीजे दिवसे वाग्भटना जिनालयमां आव्यो, त्यां जतां **ने**पाळ देशमांथी एकवीस अंगुलनुं चंद्रकांतमय जिनबिंब साक्षात् चिंतामणि समान भेट आव्युं, जेथी पूर्णिमानी रात्रि समान राजा भारे उल्लास पाम्यो. पछी मुखपर निर्मळ प्रसाद बतावतां मंत्रीने बोलावीने राजाए जणाव्युं के—'हुं तमारा कोईक कार्यमां भागीदार थाउं.' एम सांभळतां मंत्री बोल्यो के-'आ प्राण पण आपने ताबे छे, तो परिवार, धनभूमि के अन्य वस्तुओमां शी आस्था?'

एटले राजा अंजलि जोडीने कहेवा लाग्यो के—'हे मंत्रिन्! तमे मने प्रासाद आपी द्यो के जेथी हुं तेने आ

प्रतिमाथी सनाथ करुं.'

त्यारे मंत्री बोल्यो—'हे नाथ! आ तो मारापर मोटो प्रसाद थयो, एम थवामां मारी प्रसन्नता छे. हवे पछी ते **कुमारविहार** एवा आपना नामथी भले प्रसिद्ध थाय. परंतु मारे आपने कंईक विनंती करवानी छे, ते लक्ष्यपूर्वक सांभळो-**कीर्तिपाल**ना मुखथी पिताए मने आदेश कर्यो छे के जीर्ण थई गयेल श्री शत्रुंजय तीर्थना प्रासादनो तारे मारा कल्याण निमित्ते उद्धार करावको. ए मारुं कर्तव्य छे तेम ज ते वखते यात्राना अवसरे देवस्मरणनी वेळाए तमे पोते पण **कीर्तिपाल**नुं वचन सांभळतां जणाव्युं हतुं के—अमारा भंडारमांथी धन लावीने तारे चैत्यनो उद्धार करवो, तो पिताना ऋणथी मुक्त थवा माटे आप मने ते आदेश फरमावो.'

एम सांभळीने राजाए कह्युं के—'हे सखे! आ अमारा कार्यमां ज तारो बंधु समान आदर छे, माटे ए प्रमाणे करो. अमाराथी तारुं वचन ओळंगाय तेम नथी.' एटले अमात्ये कह्युं—'हे स्वामिन्! ए आपनो मोटो प्रसाद थयो' एम कही श्रेष्ठीओना परिवार सहित ते सिद्धाचलपर गयो. त्यां तीर्थपर भारे भक्तिपूर्वक श्रीआदिनाथ भगवंतने प्रणाम करी, मोटा द्वारवाळा चोतरफ तंबु उभा करीने तेणे निवास कर्यो, के जेमां वाडीओ मांचडा अने हवाने माटे बारीओ राखवामां आवी हती, जे मोटा चोक अने रेशमी वस्त्रोथी वधारे सुशोभित लागता, उछळती ध्वजाओना देखावथी ते स्वर्गना विमानो जेवा भासता अने ते मोटी संख्यामां होवाथी त्यां पर्वतनी भूमिपण संकीर्ण थई गई हती.

हवे त्यां पासेना गाममां एक वणिक रहेतो हतो के जे भारे दरिद्र होवाथी जीर्ण वस्त्रने धारण करतो हतो, ते त्यां आवी चड्यो. तेनी गांठमां छ द्रम्म (टका) हता, जेनाथी ते घृत खरीद करी पोठीआ पर नाखीने कटक-संघमां फेरी करतो हतो, त्यां घराक बहु मळवाथी एक रूपियो अने अधिक द्रम्म उपार्जन करी, भारे संतुष्ट थतां तेणे ते रूपियाना पुष्पो लईने भगवंतनी भक्तिपूर्वक पूजा करी. पछी पोतानी गांठे सात द्रम्मने सात लाख समान आनंदथी धारण करतो ते वणिक अमात्यने जोवानी इच्छाथी तेना तंबुना द्वारपासे आव्यो एटले द्रहमां शेवालजालना रंध्रमांथी काचबो जेम चंद्रमाने जुए, तेम पडदामांथी तेणे मंत्रीने कंईक जोई लीधो. मंत्रीने जोतां ज ते पूर्वना पुण्य-पापना अंतरनो विचार करवा लाग्यो के-'अहो! पुरुषत्व समान छतां मारी अने एनी स्थितिमां केटलो बधो तफावत छे? ए सुवर्ण, मौक्तिक, माणिक्यना आभरणोथी देदीप्यमान छे तथा श्रेष्ठीओ अने सेवकोना परिवारथी परिवृत छे, तेम ज चक्रवर्तीनी जेम मुगटबंध मांडिलक राजाओ एना चरणनी सेवा करी रह्या छे, वळी श्री युगादीशना महातीर्थनो जीर्णोद्धार करवामां ए मनोरथ करी रह्यो छे अने हुं निर्धनपणाने लीधे पोतानी स्त्रीथी पण पराभव पामुं छुं. संध्या सुधी पोताना पूरतो आहार खोराक पामवाथी पण मने शंका रह्या करे छे अने वृथा परिश्रम कर्या करुं छुं. वळी बाल्यावस्थाथी घीनो कुडवो उपाडीने (एक जातनुं साधन) कंटाळी गयो छुं, तेमज दिवसभरमां एक रूपियानो लाभ थतां तो हुं पोताने भाग्यशाळी मानी लउं छुं.' एम ते चिंतवन करतो हतो, तेवामां द्वारपाले तेने दूर करी दीधो. एवामां दैवयोगे श्रीमान् वाग्भट मंत्रीना ते जोवामां आव्यो. एटले तेणे हुकम कर्यो के-'ए वणिकने बोलावो.' आ वखते जो के ते दूर नीकळी गयो हतो, छतां स्वामीना आदेशथी द्वारपाल तेने बोलावी लाव्यो. त्यां सभानी अंदर अमात्यनी पासे आवतां ते ठुंठा वृक्षनी जेम स्थिर थईने उभो रह्यो, कारण के ते ग्राम्य होवाथी सरलताने लीधे प्रणाम वगेरेना विवेकथी अज्ञ हतो. त्यारे मंत्रीए तेने बोलावतां कह्युं के—'हे भद्र! तुं कोण छे?' एटले भारे दुःख लावीने तेणे पोतानो पूर्व वृत्तान्त बधो मंत्रीने कही संभळाव्यो. जे सांभळी मंत्रीश्वरे तेने जणाव्युं के—'हे भद्र! तें क्लेशथी उपार्जन करेल रूपियानो व्यय करीने जे जिनेश्वरनी पूजा करी, तेथी तुं धन्य छे.' एम कहेतां मंत्रीए तेनो हाथ पकडीने तेने पोताना अर्धासनपर बेसाड्यो अने कह्युं के—'तमे मारा धर्मबंधु छो, माटे मारा लायक कंईक काम बतावो.'

ए प्रमाणे मंत्रीना मधुर वाक्योथी अंतरमां प्रसन्नता पामतां ते प्रमोदपूर्वक चिंतववा लाग्यो के—'अहो! मने दरिद्रने पण एणे सभा समक्ष आटलुं बधुं मान आप्युं.' एवामां तीर्थोद्धारना काममां नियुक्त करेला व्यवहारीया श्रावको तीर्थोद्धार माटे द्रव्य उघरावववा वही लईने त्यां आव्यां. तेमां तेमणे प्रथम मंत्री अने पछी ज्येष्ठानुक्रमथी नामो लख्या हता, ते नामो जोतां पेलो दरिद्र वणिक विचारवा लाग्यो के—'जो मारा सात द्रम्म आ कार्यमां वपराय, तो मारा जेवो बीजो भाग्यशाळी कोण?' त्यारे मंत्रीए तेने जणाव्युं के—'शुं तारे कंईक बोलवानी इच्छा छे?'

एटले वणिक बोल्यो—'आ सात द्रम्म लईने हे प्रभो! मारा मनने संतुष्ट करो.' एम तेना सदाचारथी अमात्य परम आनंद पामीने कहेवा लाग्यो 'हे भ्रात! तुं मारो धर्ममित्र छे, माटे सत्वर ए द्रम्म अर्पण कर. श्रीतीर्थोद्धारनी मारी आशा आजे सफळ थई.' वळी 'पोताना जीवितनी माफक क्लेश विना ते तमाम पुंजीनो व्यय कर्यो.' एम कही तेनुं नाम मंत्रीए वहीनी आदिमां लखाव्युं, ते पछी पोतानुं नाम अने तेनी नीचे बीजा धनवंतोना नाम राख्यां. पछी तेणे विचार कर्यो के-'आपणे तो खरकर्मथी कोटि द्रव्य उपार्जन करेल छे अने तेमांथी आ आपवानुं छे एम धारी तेणे पोताना खजानामांथी त्रण रेशमी वस्त्र अने पांचसें द्रम्म मंगावीने मंत्रीए तेने जणाव्युं के—'हे धर्मबंधु! आनो स्वीकार कर.' त्यारे वणिक जरा हसीने कहेवा लाग्यो के—'हे स्वामिन्! अस्थिर धनलेशथी हुं पुण्यनो विक्रय करनार नथी. तमे पोते पूर्व पुण्यथी विभव पाम्या छो, तो मारा जेवाने छेतरतां शरमाता केम नथी?' एम सांभळतां रोमांचित थतो मंत्री बोल्यो के—'तुं मारा करतां पण अधिक धन्य छे, के जेनुं मन आवुं निःस्पृह छे.' एम कहीने तेणे कर्पूरथी वासित पाननुं बीडुं ते साधर्मी वणिकने आप्युं, ते लई, सन्मान पाम्या छतां पोतानी कडवा स्वभावनी दुर्मुखी पोतानी गृहिणीथी भय पामतो ते पोताना घरे आव्यो, कारण के कहेवामां आवेल दुर्वाक्यो कुळनो क्षय करे छे. एवामां घरे आवतां अकस्मात् स्त्रीए मीठां वचनोथी तेने संतोष पमाड्यो. एटले पूर्वे कोईवार अदृष्ट तेणीनुं आचरण जोतां ते आश्चर्य पाम्यो. पछी तेणे बधो यथास्थित वृत्तान्त स्त्रीने कही संभळाव्यो. जे सांभळतां ते कहेवा लागी के-'तमे मंत्री पासेथी जे पारितोषिक न लीधुं, तेथी मारुं मन बहु ज संतुष्ट थयुं छे, जो तमे मंत्री पासेथी लोखंडनो अर्ध टको पण लीधो होत, तो हुं अवश्य तमारा घरमां होत नहि. हवे गायने बांधवानो खीलो बराबर मजबुत करो.' एम पोतानी स्त्रीना कहेवाथी ते कोदाळी मागीने त्यां भूमि खोदवा लाग्यो. जमीनने कंईक खोदतां कोदाळी खटकी, एटले तेणे पोतानी गृहिणीने बोलावीने ते वात कही. त्यारे ते बोली के—'रात्रे एकांतमां कंईक करवा जेवुं छे, अत्यारे खोदवानुं मूकी द्यो.' पछी रात्रे खोदवा जतां तेमांथी चार हजार सोनामहोर नीकळी, ते जोतां वणिक भारे प्रमोद पामीने चिंतववा लाग्यो के—'अहो! जिनेश्वरनी अल्प पूजानुं पण आटलुं बधुं फळ? आ धन तो हुं वाग्भट मंत्रीने अर्पण करीश. कारण के आवा तीर्थमां एनो व्यय थतां, ते कोटिगणुं थवानुं,' आ तेना विचारने पत्नीए अनुमोदन आपतां प्रभाते ते पर्वतपर मंत्री पासे जई, ते द्रव्य बतावीने कहेवा लाग्यो के—'आ धन तमे ग्रहण करो.'

ए प्रमाणे सांभळतां मंत्रीश्वर बोल्या के—'हे बंधु! मारुं एक वचन सांभळ—तारा सत्त्वथी आपेला सात द्रम्मथी ज मारो मनोरथ पूर्ण थयो छे माटे ते उपरांत तमारुं द्रव्य लेवाने हुं समर्थ नथी, कारण के आटला द्रव्यथी तो समस्त पर्वत सुवर्णनो थई शके, तेम करवानी मारी प्रतिज्ञा नथी. तो तुं तारुं द्रव्य यथारुचि धर्ममां वापर, भोग भोगव अने वेपारमां वृद्धि पमाड. त्यारे वणिक कहेवा लोग्यो के—'कुडळीया एवा मारे आ कनक केवुं? **आ मारा कनकनो कोण जाणे कोण मालीक थशे? माटे वृथा क्लेश कोण अंगीकार करे?** तमे तमारी प्रभुताने लईने गमे ते रीते एनो व्यय करी शको छो, माटे महेरबानी करीने ए ग्रहण करी ल्यो. मने मारा चामडाना बनेला घी भरवाना कुडलाथी संतोष छे.'

त्यारे मंत्रीए जणाव्युं के—'हुं निरर्थक द्रव्य लेवानो नथी. एक मजूरनी जेम ए दुर्वह भारने वहन करवाने हुं समर्थ नथी.' ए प्रमाणे मंत्री अने वणिकना विवादमां दिवस पूर्ण थयो. पछी रात्रे कपर्दी यक्षे साक्षात् आवीने वणिकने कह्युं के—'तें युगादीश प्रभुनी करेल एक रूपियानी पूजाथी हुं संतुष्ट थयो अने तेथी में तने ए धन बताव्युं, माटे तुं तेनो ईच्छानुसार व्यय करजे. बहु दान आपतां के भोग भोगवतां पण ए कदापि क्षीण थनार नथी, तेमज बीजा कोईने आधीन पण ए थवानुं नथी माटे बीजो विचार करीश नहि. आ संबंधमां ए निशानी छे के तारी पत्नी बहुज कटु वचन बोलनारी हती ते अकस्मात मीठा बोली बनी गई, तेम ज भक्तिथी नम्र थई गई, ए ज निशानी समजी ले.' ए प्रमाणे साक्षात् जोईने प्रभाते ते वणिके भारे भावनापूर्वक सुवर्ण, रत्न अने पुष्पादिकथी श्री आदिनाथ भगवंतनी पूजा करी, तेमज श्री कपर्दी यक्षनुं पूजन करीने ते पोताना घरे आव्यो अने पुण्य कार्योथी पोताना जन्मने पवित्र करवा लाग्यो.

एवामां श्रीमान् वाग्भट मंत्रीए पण तीर्थनो जीर्णोद्धार कराव्यो. तेमज अत्यंत भक्तिथी देवकुलिका सहित ए प्रासादमां धननो व्यय करतां तेणे लेश पण दरकार न करी. पछी विक्रम संवत् १२१३मां आनंदपूर्वक उपर जईने तेणे ध्वजारोपण कराव्युं अने **श्री हेमचंद्रसूरि**ना हाथे प्रतिमानी प्रतिष्ठा करावी.

हवे अहीं पाटणमां कुमार विहार एवा नामथी प्रसिद्ध विमान समान शोभाने धारण करनार तथा भव्य जनोने पुण्यना कारणरूप एवुं ते स्वर्ग समान चैत्यमां राजाए कुशळ कारीगरोना हाथे **श्री पार्श्वनाथ**नुं अत्यंत रमणीय बिंब कराव्युं. पछी शुभ लग्ने चिंतामणि करतां अधिक अने वांछितार्थ वस्तुने आपनार एवा ते बिंबनी **श्रीहेमचंद्रसूरि** पासे प्रतिष्ठा करावी ते वखते जगतनो उपकार करवामां तत्पर एवा राजाए ते शिखरना शुकनासमां मोक्षक नामनुं छिद्र मूकाव्युं एटले पूर्णिमानी अर्धरात्रे रोगी जननी प्रार्थनाथी छिद्र खोलवामां आवतुं. ते समये बिंबमांथी अमृत झरतुं हतुं तेना प्रभावथी लोकोमां चक्षु वगेरेना रोगो दूर थता हता. ए प्रमाणे कयो राजा सर्व रीते उपकार करे? वळी राजाए सात हाथना अने वर्णना अनुसारे बत्रीश श्रेष्ठ प्रासाद कराव्या. तेमां बे श्वेत, बे श्याम, बे रक्तोत्पल समान वर्णवाळा, बे नील अने सोळ कनक समान वर्णवाळा प्रासाद हता. त्यां चोवीस चैत्योमां **श्रीऋषभादिक चोवीस जिनेश्वरोने** तथा चार चैत्योमां सीमंधर प्रमुख चार जिनवरो, तेमज श्री रोहिणी, समवसरण, प्रभुपादुका अने अशोक वृक्ष एम बत्रीस (प्रसाद) स्थापन कर्या. एटले 'हुं बत्रीस पूर्वज पुरुषोना ऋणथी मुक्त थयो' एम जाणे सूचव्युं होय; पछी मंत्रीए पूर्व वाक्यना अनुसारे राजाने निवेदन कर्युं के—'पचीस हाथ उंचा **श्रीतिहुअणपाल** नामना मंदिरमां पचीस अंगुल प्रमाण **श्रीमान् नेमिनाथ** जिनेश्वरने स्थापन करो.' वळी तेणे समस्त देश अने स्थानोमां अन्य लोको पासे पण जिनमंदिरो कराव्यां.

पछी एकदा धर्मोपदेशना अवसरे गुरु महाराजे दुर्गति अने दुर्योनि भव-संसारमां भमावनार एवा सात व्यसनोनुं वर्णन राजाने संभळाव्युं, जे सांभळतां तेणे पोताना देशमां सप्त (सात) व्यसनोनो निषेध कर्यो. तेमज घोषणापूर्वक अमारिपटह वगडाव्यो.

अपुत्रियाना धननो त्याग - हवे पोताना नगर अने राज्यमां भमतां **कुमारपाल** राजाए एक एवी स्त्री जोई के जेनो पति मरण पाम्यो हतो अने राजपुरुषो जेने सतावी रह्या हता तेनी दया आववाथी ते ज वखते राजाए तेनुं धन लेवानो निषेध कर्यो अने पोते नियम लीधो के—'जो समस्त राज्य मारी पासे छे, तो तेवा धननुं मारे कांई प्रयोजन नथी.' एवामां कोई प्रसिद्ध व्यवहारी त्यां मरण पाम्यो, ते पुत्र रहित होवाथी अधिकारीओ तेना धन सहित स्त्रीने राजा पासे लई आव्या, त्यारे राजाए तेमने पूछ्युं के—'ए अपुत्रीयानुं धन कोने मळे?' एटले तेओ बोल्या के-'हे स्वामिन्! तेना पुत्रने अथवा राजाने मळे, एवी रूढि छे.'

एम सांभळतां भूपाल हसीने कहेवा लाग्यो के—'पूर्वज राजाओनी ए अविवेकबुद्धि हती; कारण के

कुटिलता राख्या विना पोताना गुरु (वडील)ना पण दोष बतावी देवा जोईए. सर्वने अधीन थनार क्षणिकलक्ष्मीने खातर राजाओ उत्तम, मध्यम अने अधम जनोना पुत्रपणाने पामे छे. अर्थात् तेमना पुत्र जेवा बनी जाय छे, माटे हुं तो जगतना लोकनो पुत्र थनार नथी, पण पति अने पुत्ररहित अबळाना धननो त्याग करतां जगतने आनंदकारी थईश.' एम कहीने सुज्ञ राजाए पति अने पुत्र रहित अबळाना धननो त्याग कर्यो के जे धन पूर्वे **नळ, राम** वगेरे राजाओ पण लेता हता. आ बनावथी पोताना उपदेशनी सफळता मानता **श्री हेमचंद्रगुरु** भारे संतोष पाम्या अने राजानी विकसित वृत्ति तेवा आचरणमां दृढ करवा माटे तेमणे आ प्रमाणे श्लोक कही संभळाव्यो—

न यन्मुक्तं पूर्वैं रघुनघुषनाभागभरत,
प्रभृत्युर्वीनाथैः कृतयुगकृतोत्पत्तिभिरपि ।
विमुञ्चन् सन्तोषात्तदपि रूदतीवित्तमधुना,
कुमारक्ष्मापाल! त्वमसि महतां मस्तकमणिः ।।१।।

अर्थात् - कृतयुगमां उत्पन्न थयेला एवा रघु, नघुष, नाभाग अने भरत वगेरे राजाओ पण जे अबळाधनने मूकी न शक्या, ते संतोषथी निराधार अबळाना धनने मूकतां हे कुमारपाल! महा पुरुषोमां तुं ज एक मुगट समान छे.

ए प्रमाणे अंतःपुरसहित प्रत्याख्यानपूर्वक राजा, देवेंद्रनी जेम निष्कंटक राज्यनुं पालन करवा लाग्यो.

एवामां एक वखते जैनधर्ममां तत्पर बनेल राजा **कुमारपाल**ने बंने रीते बल (बळ तथा सैन्य) हीन जाणीने केटलाक बातमीदार सेवकोए ए वात **कल्याणकटक**ना अधिपति राजाने निवेदन करी, जेथी ते मोटुं लश्कर लईने तेनी सामे आव्यो. ए समाचार पोताना खानगी पुरुषो पासेथी जाणवामां आवतां **कुमारपाल**ने चिंता थवाथी तेणे गुरु महाराजने विनंती करी के—'हे भगवन्! हुं जैन छतां ए राजाथी जो मारो पराभव थाय, तो जिनशासननी लघुता थशे.'

त्यारे आचार्य कहेवा लग्या के—'हे नरेंद्र! शासनदेवी तारुं रक्षण करशे अने तेनो समय सातमे दिवसे छे, ते तारा जाणवामां आवशे.' एम चमत्कारी वचन सांभळीने राजा पोताना स्थाने गयो. अहीं रात्रे गुरु महाराजे विधिपूर्वक अर्हं पदनो जाप कर्यो. एटले तेनो अधिष्ठायकदेव साक्षात् आव्यो अने तेणे जणाव्युं के-'कुमारपालना भाग्यथी तेना शत्रुनो उद्यम नष्ट थयो छे.' एवामां सातमे दिवसे चर पुरुषोए राजाने शत्रुना मरणना समाचार आप्या जे सांभळतां राजा बोली उठ्यो के—'अहो! मारा गुरुनुं जेवुं ज्ञान छे, तेवुं बीजे क्यांय पण नहि होय.'

खरताडनुं श्रीताडमां रूपांतर - हवे एकदा बुद्धिना निधानरूप शास्त्रनो विस्तार करवा पूर्वनी रीति प्रमाणे पोताना गुरुना ग्रंथनो समूह लखावतां जंतुओ अने दावानळना उपद्रवथी ताडपत्र खूटी पड्या अने देशांतरथी मंगावेल आव्या नहि, जेथी राजाने भारे चिंता थई पडी. ते चिंतववा लाग्यो के—'अहो! मारा गुरु ग्रंथ बनाववामां जेटली शक्ति धरावे छे, तेने संपूर्ण लखाव ानी पण मारी शक्ति नथी, तेथी मारा पूर्वजोने आजे लज्जा पमाडवानो वखत आव्यो.' एम धारी उद्यानमां जतां तालवृक्षोनी घटामां बेसी, तेनुं सुगंधि द्रव्य अने पुष्पोथी पूजन करीने राजाए जणाव्युं के—'ज्ञानवडे उपकार करवाथी हे वनराज! तुं पूजनीय छे, सुंदर पत्रोने लीधे तुं सर्व दर्शनीओना शास्त्रोना आधारभूत छे. पुस्तकोने कायम राखवा माटे जो मारुं भाग्य जागतुं होय, तो आ बधा तालवृक्षो नव पल्लवित थई जाओ.' एम कही माणिक्यथी मढेल सुवर्णनुं पोतानुं कंठाभरण, निःशंक थईने राजाए वृक्षना स्कंधपर स्थापन कर्युं. पछी पोते पोताना राजभवनना उपला भागपर बेसी गयो. पछी प्रभात थतां उद्यानपालकोए प्रमोदपूर्वक राजाने वधामणी आपी के—'हे स्वामिन्! अग्निथी दग्ध थयेला वृक्षो बधा उद्यानमां नव पत्रोयुक्त बनी गया छे, माटे हवे इच्छानुसार लेखको पासे शास्त्रो लखावो.' आथी प्रसन्न थतां निर्दोष एवा राजाए तेमने वस्त्राभरणादि एटलुं ईनाम आप्युं के तेमनी गरीबाई दूर थई गई. पछी राजाना यशनी साथे जाणे भाग्यनो समूह

भव्यो होय, तेम पुस्तकोनुं लखाण चालवा मांड्युं. पोताना अंतःपुर सहित निर्दोष व्रतने धारण करतो राजा जाणे तेरमो चक्रवर्ती होय, तेम सम्यक् प्रकारे साम्राज्य चलाववा लाग्यो.

पछी एकदा रिपुच्छेदना संकल्पथी पूर्ण एवा **श्री हेमचंद्र महाराजे श्रीमान् अजितस्वामी**नी स्तुति करता अने तेनो प्रासाद बनाववाने ईच्छता राजाने प्रगट रीते आदेश कर्यो के—'हे भूपाल! अनेक सिद्धथी उन्नत स्थितियुक्त एवा **श्रीतारंगाजी** पर्वतपर अक्षयस्थान अने वैभवथी सुशोभित एवो प्रासाद करावववानी जरूर छे. **ए पर्वत पण श्री शत्रुंजयनी जाणे अपर मूर्ति होय, एम समजी ल्यो.'**

ए प्रमाणे श्री गुरुनी आज्ञा थतां राजाए चोवीस हस्तप्रमाण मंदिर कराव्युं अने तेमां एकसोएक अंगुल प्रमाणनुं **बिंब** स्थापन कराव्युं, के जे प्रासाद अद्यापि देवो अने राजाओनी स्तुतिथी शोभित अने पर्वतना मुगट समान श्रीसंघजनोने दर्शनीय छे.

हवे उदयननो बीजो **अंबड** नामे मोटो पुत्र के जे असाधारण पराक्रमी हतो, तेणे **कुमारपाल**ना आदेशथी कुंकणना अधिपति **मल्लिकार्जुन** राजानो शिरच्छेद कर्यो अने पोते स्वामीना प्रसादथी तेमज पोताना पराक्रमथी लाट, सहस्रनवक, मंडळ, भंभेरी, कुंकण, पद्र, राष्ट्र, पल्ली अने वनोना अमात्य पणाने भोगवतो हतो. वळी ते **राजसंहार** एवा सान्वय उग्र बिरुदने धारण करतो हतो.

एकदा **श्री भृगुकच्छ** नगरमां **श्री मुनिसुव्रत** स्वामीनुं पुरातन काष्ठमंदिर जीर्ण थयेल तेना जोवामां आव्युं. कीटकोने लीधे तेना जीर्ण काष्ठमांथी पडता चूर्णथी जमीन आच्छादित थई हती. अने तेना लोखंडना खीला शिथिल थवाथी तेना पाटीया पडवामां हतां. वळी वधारे वृष्टि थतां तेमांथी पाणी गळतुं तथा भींतो बधी जीर्ण होवाथी गभारामां तेमज भगवंतनी प्रतिमा पर पाणी पडतुं हतुं; आथी प्रथमना प्रासादने उखेडी जीर्णोद्धार शरू करावतां तेणे पायो खोदाव्यो ते वखते प्रभुने पोताना स्थाने पधराव्या. एवामां ते स्थळे योगिनीओ बत्रीश लक्षणने लीधे श्रीमान् अंबडने छळवा लागी. जेथी सर्वांगे तेने व्यथा थवा लागी, तेनी कांति क्षीण थई गई. क्षुधा के तृषानी अरुचि वधतां केवळ तेनुं शरीर क्षीण थवा लाग्युं आथी तेनी **पद्मावती** माताए **पद्मावती** देवीनुं आराधन कर्युं एटले तेणे स्वप्नमां आवीने जणाव्युं के—'हे वत्से! सत्य वचन कहुं छुं, ते सांभळ—समस्त योगिनीओनुं ए महापीठ स्थान छे, अहीं ते आवीने आनंद करे छे तेओ जेने नडे छे तेने **हेमचंद्राचार्य गुरु** विना अन्य कोई छोडावी न शके.'

त्यारे प्रभाते गुरुने बोलाववा माटे तेणीए पोताना माणसोने आदेश क्र्यो जेथी तरत तेओए गुरु पासे जईने तेणीना आदेश मुजब निवेदन क्र्युं . के - **'छींक न आवे त्यारे सूर्यनुं ज शरण लेवाय,** अन्य कोईनुं नहि. हे नाथ! पुत्र सहित मने जीवित आपो.' त्यारे **यशश्चंद्र** गणी सहित पगे चालीने गुरु महाराज अंबड मंत्री पासे आव्या, त्यां गणितमां निष्णात एवा गणी महाराजे तेनी बधी चेष्टा जोई अने पोताना चित्तमां चिंतवीने अलक्ष्य बुद्धि धरावनार तेमणे तेनी माताने सूचना करी 'मध्य रात्रे तारा विश्वासपात्र पुरुषने चोळाना बनावेला सुगंधित बलि **नैवेध लईने मोकलजे.'** नगरना द्वारपाळोने द्वार उघाडवानो आदेश अपावराव्यो. पछी रात्रे आचार्य महाराज ते गणी तथा पुरुष साथे किल्लानी बहार चाल्या. त्यां द्वार उघाडीने आगळ चालता मार्गमां एक चकलानो समूह तेमना जोवामां आव्यो. एटले चग चग अवाज करतां तेओना मुखमां यशश्चंद्रगणिए बलि नाख्यो. ते तरत ते अलोप थई गया. पछी त्यांथी आगळ चालतां केटलेक दूर वांदरानो समूह जोवामां आव्यो, त्यारे तेमणे त्या पण तरत अक्षत नांख्या. जेथी ते पण बधा अदृश्य थई गया. त्यांथी आगळ चालतां कायरजनोने भय पमाडनार श्री सैंधवी देवीना मंदिर पासे बिलाडाओनुं एक मंडळ तेमना जोवामां आव्युं. ते निरंतर महारौद्र शब्दथी बाळकोने बीवरावे तेवुं हतुं. तेमना पर रक्त पुष्पो फेंकतां ते पण बधां भागी गया. पछी महादेवीना तोरण आगळ आचार्य आवीने उभा रह्या. एवामां गणी महाराज आकुळता लाव्या विना कहेवा लाग्या के—'हे देवी! बहु दुरथी पगे चाली कष्ट वेठीने **श्री हेमसूरि**

तारे आंगणे आव्या छे माटे अभ्युत्थानादिक सत्कार करवो उचित छे. कारण के सर्व **जालंधर** आदि योगिनी पीठोए एमनी पूजा करी छे.' ते ए प्रमाणे बोलता हता. तेवामां श्री **सैंधवी** देवी चंचल कुंडळथी शोभती अंजलि जोडीने समक्ष उभी रही त्यारे गणी बोल्या के—'हे विबुधेश्वरी! अम अतिथिओनुं आतिथ्य कर परिवार अने तारा पासेथी बलात्कारे पण अंबडने मुक्त कर.' एम गुरुनुं वाक्य सांभळता ते कहेवा लागी के—'तमे बीजुं कांई मागो, कारण के ए तो हजार योगिनीओमां वहेंचायेल छे.' त्यारे एकदम उग्रताथी बोल्या 'तारुं पाछुं तारा स्थाने बेसवानुं सामर्थ्य होय तो भले तेम हो! बाकी तुं गणी हेमचन्द्रप्रभुने अद्‌भुत मान आप जेथी पृथ्वीतलमां तमारा बधानुं मान रहे. एम सांभळतां भयथी भ्रांत थयेल देवीए एक मोटो शब्द कर्यो, जेथी बधी देवीओ अंबड मंत्रीने मूकीने तरत त्यां आवी. पछी देवीए जणाव्युं के—'तमने केवुं वचन अपावुं? एटले गणी बोल्या के—'परम ब्रह्मना निधान एवा गुरु महाराजने ब्रह्मादिकना वचनपर आस्था केवी? परंतु प्रभाते अमे तमारो कंईक सत्कार करीशुं,' एम कही देवीने पोताना स्थाने विसर्जन करी अने आचार्य पण त्यांथी स्वस्थाने आव्या. ए प्रमाणे समाधान थवाथी रात्रे अंबड मंत्रीने निद्रा आवी. पछी तेणे प्रभाते श्री सैंधवीदेवीने माटे साहसिक भोग धराव्यो.

ए रीते **सैंधवी देवी** थकी **अंबड**ने आचार्य महाराजे मुक्त कराव्यो, एटले तेणे **श्री मुनिसुव्रतस्वामीना** चैत्यनो जीर्णोद्धार कराव्यो. अढार हस्त प्रमाण, असाधारण रचनायुक्त तथा अनेक देवगृहोथी सुशोभित एवुं ते चैत्य कनकाचलना कूट (शिखर) समान शोभवा लाग्युं. त्यां मंत्रीश्वरे ध्वजारोपणनो महोत्सव कराव्यो. ते जोतां अत्यंत संतुष्ट थयेला आचार्ये तेने आशिष आपता जणाव्युं के—

किं कृतेन न यत्र त्वं यत्र त्वं तत्र कः कलिः? ।
कलौ चेद् भवतो जन्म कलिरस्तु कृतेन किम् ? ।।१।।

अर्थात् - ज्यां तुं नथी, तेवा कृतयुगनुं शुं प्रयोजन छे अने ज्यां तुं छे, त्यां कलि (कळिकाळ) शुं मात्र छे? जो कलिमां तारो जन्म थयो, तो भले काळ रह्यो. कृतयुगनी कांई जरूर नथी.

'माटे यावच्चंद्रदिवाकरौ तुं तारा वंशजोना मनोरथने पूर्ण करतां अने आंतर तथा बाह्य शत्रुओने क्षीण करतां जयवंत रहे.'

पछी **अंबड** मंत्रीनी अनुमति लई गुरु महाराज स्वस्थाने आव्या अने प्रधानने आयुष्यदान आपवाथी राजाने तेमणे भारे आनंदित बनावी दीधो. आथी राजा संतुष्ट थईने मुक्तकंठे कहेवा लाग्यो के—'अहो! जे गुरुनी आवी दुसाध्य कार्य साधवानी असाधारण शक्ति छे तेथी हुं ज खरेखर! अत्यंत भाग्यशाळी छुं.'

हवे एक वखते श्री संघनी साक्षीए उपदेश पामतां राजाए सम्यक्त्व अंगीकार कर्युं. त्यारे ते आ प्रमाणे गुरु समक्ष गाथा बोल्यो—

तुब्भाण किंकरोऽहं तुब्भे नाहा भवोयहिगयस्स ।
सयलधणाइसमेओ मइ तुम्ह समप्पिओ अप्पा ।।१।।

अर्थात् - तमारो हुं किंकर-दास छुं अने आ भवसागरमां एक तमेज मारा नाथ छो. भले, धनादिक बधुं मने प्राप्त थाय, तथापि में मारो आत्मा तो तमने ज अर्पण कर्यो छे.

ए गाथाना अर्थने सत्य करी बतावता राजाए गुरुने राज्य अर्पण करी दीधुं, त्यारे गुरु महाराज बोल्या के- 'हे राजन्! अमारे निःसंगी अने निःस्पृहीने राज्यनुं शुं प्रयोजन छे? वमेला भोगने केम स्वीकारीए? ए तो अनुचित ज छे.' ए प्रमाणे दान न लेवा संबंधी राजा अने गुरुनो संवाद थतां मंत्रीए तेमां आ प्रमाणे विशिष्ट प्रकारे समाधान कर्युं के—'हवे पछी राजाने करवा लायक तमाम कार्यो हे स्वामिन्! तमने पूछ्या विना अमे कर्या करीशुं?' एटले श्रावकव्रत तथा सद्‌ध्यानने माटे राजाए ए वचन मान्य राख्युं.

पछी राजाने तत्त्वार्थनो बोध करवा माटे आचार्य महाराजे बधा शास्त्रोमां मुगट समान एवुं योगशास्त्र

बनाव्युं. गुरुए पोते राजाने तेनो अभ्यास कराव्यो. तेणे गुरु समक्ष ते ग्रंथ विचारी लीधो. पछी सम्यक्त्ववासित राजाए एवो नियम लीधो के—'जिनदर्शनमां गमे तेवो साधु होय, ते राजमुद्रानी जेम मारे वंदनीय छे.'

एवामां एकदा चतुरंग सैन्यमां गजारूढ थईने राजा राजमार्गे जतो हतो, तेवामां माथे केशनुं मुंडन करावेल, उत्तरीय वस्त्रथी आवृत, पगे कथीरनी पादुका पहेरेल, हाथमां नागवल्लीना पाननुं बीडुं धारण करेल तथा वैश्याना खभापर पोतानी भुजाने लटकावेल एवा एक जैनर्षिने राजाए वेश्यानी साथे एक मकानमांथी बहार नीकळतो जोयो. एटले हाथीना कुंभस्थळपर मस्तक नमावतां राजाए ते मुनिने प्रणाम कर्या त्यारे पाछळना आसनपर बेठेल नडुल राजाने हसवुं आव्युं. ते जोई वाग्भट अमात्ये स्वामीने निवेदन कर्युं, एटले गुरुमहाराजे राजानी आगळ धर्मकथा करतां जणाव्युं के--

पासत्थाइ वंदमाणस्स, नेव कित्ती न निज्जरा होइ ।
कायकिलेसं एमेव, कुणइ तह कम्मबन्धं वा ।।१।।

अर्थात् - पासत्थादिकने वंदन करतां कीर्ति के निर्जरा पण न थाय, परंतु तेम करवाथी कायक्लेश अने कर्मबंध थाय.'

एटले राजाए विचार कर्यो के—'मारो वृत्तान्त आजे गुरुने कोईए जणावेल छे, पण पूज्य गुरुनी शिक्षाथी हवे हुं तेवा कर्मथी निवृत्त थयो छुं.'

हवे अहीं राजाना नमस्कारने जोतां ते मुनिने विचार थयो के—'नमस्कारनी मारामां योग्यता क्यां छे? कारण के वीतरागमार्गथी हुं पतित थयो, तजेल भोगनो में पुनः स्वीकार कर्यो, प्रतिज्ञाथी भ्रष्ट थयो अने तेथी हुं मुख जोवा लायक के नाम ग्रहण करवा लायक रह्यो नथी.' एम चिंतवता तेणे कामदेवना धनुष्य तुल्य वेश्यानी भुजानो त्याग कर्यो, कुबुद्धि उपजावनार अने व्रतना कंटकरूप एवा पानना बीडाने तजी दीधुं, तेमज **नरकमार्गमां यान समान पादुकानो पण त्याग कर्यो.** एम विरागी थईने ते स्वल्प परिवार सहित पोताना स्थाने आव्यो अने मोटा मनथी गुरु पासे पुनः महाव्रत धारण करी, सर्व संगने तजीने तेणे अनशननुं प्रत्याख्यान कर्युं. ते वखते पोताना परिवारे तेने वार्या छतां ते दृढताने लीधे पोताना आग्रहथी पाछो न हठ्यो. कारण के **महासागरमां मळेल नावनो कोण त्याग करे?** पछी त्यां अनशनने उद्देशीने प्रभावनाओ थवा लागी, कारण के कल्याणनी आकांक्षा राखनार, तपस्यानो महिमा कोण न करे? एवामां अधिकारी पुरुषोए ए हकीकत राजाने निवेदन करी, जेथी पोताना अंतःपुर अने परिवार सहित राजा प्रमोदपूर्वक त्यां ते तपोनिधान मुनिने वंदन करवा आव्यो अने जेवामां तेमनुं मुख जोयुं, त्यां तरत तेना जाणवामां आव्युं के—'आ मुनि तो ते ज छे के जेने कुवेशरूपे पण वेश्याना द्वार आगळ में नमस्कार कर्या हता.' एम धारी तेना गुरु अने मुनिवर्गने वंदन कर्या पछी राजा ते महात्माना चरणे प्रणाम करवा गयो, तेवामां तेनो हाथ पकडीने निषेध करतां मुनिए जणाव्युं के-'हे महाराज! तुं मारो गुरु छे, भवसागरथी तें मारो निस्तार कर्यो. जगतने वंदनीय एवा तारा प्रणाम पण मारा जेवाने अतिदुर्जर छे. प्राणीओमां बंने लोकना कष्टने हरनार तारा जेवा जो पृथ्वीपर अपूर्व स्वामी न होत, तो जिनवचननी विराधना करनार, चारित्रथी भ्रष्ट अने नरकपथना पथिक बनेला मारा जेवा आराधक केम थात? अवंद्य एवा मने वंदन करतां मारो निस्तार करवाने सर्व संगथी मूकावनार एवी शम संवेगनी वासना तें मारामां भरी दीधी. पोताना गृहस्थो अने यतिओथी युक्त छतां जीवनमां निर्बळ एवा हुं व्रतनुं कष्ट सहन करवाने असमर्थ होवा छतां समर्थ थयो.'

ए प्रमाणे सांभळतां **कुमारपाल** राजा कहेवा लाग्यो के—'हे महात्मन्! तमारी समानता कोण करी शके? के एक ज निमित्तथी तमे प्रत्येकबुद्धनी जेम सर्व संगना त्यागी थया. जैनमुनिने प्रणाम करवानो तो मारे नियम छे, छतां तेमां तमे उपकार मान्यो, तेथी कृतज्ञ जनोमां मुगट समान छो. कोईपण प्रकारना बदलानी अभिलाषा विना तमे न ईच्छता होवा छतां वंदन करवाना सुकृतनुं मने भाजन बनावो, एटली आपने मारी नम्रता प्रार्थना छे, संत

जनोने स्वार्थी बनवुं कोईरीते युक्त नथी.' ए प्रमाणे अवसरने उचित बोलीने राजाए बलात्कारथी ते मुनिने वंदन कर्युं.

एटले अनशनधारी मुनि कहेवा लाग्या के—

'आ देश धन्य छे अने प्रजा पूर्ण भाग्यशाळी छे के ज्यां तारा दर्शनरूप अमृतवृष्टिथी ते पोताना पाप-पंकनुं प्रक्षालन करे छे.'

एम सांभळतां भारे प्रमोदथी गद्‌गदित थयेल राजाए जईने ए वृत्तान्त **श्री हेमचंद्र** प्रभुने निवेदन कर्यो के-'हे भगवन्! तमे आदेश करेल नियमोनुं पालन करतां ते कामधेनुनी जेम बधाना हृदयने अभीष्ट आपनार नीवड्या छे.'

त्यारे गुरु महाराज बोल्या के—'हे राजेंद्र! गुरुभक्तिरूप अग्निथी अर्चा पामेल ए तारा पुण्यनी जाग्रती समस्त वस्तुओने प्रकाशित करे छे.' आथी राजानुं हृदय भारे प्रफुल्लित थयुं, पछी सात क्षेत्रे धन वापरतां अने पोताना जन्मने कृतार्थ करता भूपाले संप्रति राजानी जेम पृथ्वीने जिनभवनोथी विभूषित करी दीधी.

एवामां एकदा राजाने धर्ममां वधारे स्थिर करवा माटे गुरु महाराजे स्वोपज्ञ अने श्लोकबद्ध श्रीशलाकापुरुषोना चरित्रोनी व्याख्या करवा लाग्या. तेमां एक वखते महावीर चरित्र कहेतां तेमणे व्याख्यानमां राजानी समक्ष देवाधिदेवनो संबंध बतावतां जणाव्युं के—'पूर्वे **उदयन** राजानी **प्रभावती** नामे राणी के जे **चेटक** राजानी पुत्री हती. समुद्रमां कोई व्यंतरे यानपात्र स्तंभीने बंध करेल एक पेटी ते राणीने आपतां कह्युं के—'आ देवाधिदेव प्रभुने जे ओळखशे, ते प्रकाशित करशे.' एम कहीने व्यंतर अदृश्य थई गयो. पछी वीतभय नगरमां यानपात्र पहोंच्युं, त्यारे बीजा कोईथी ते पेटी न उघडी, एटले **प्रभावतीदेवी**ए ते बिंबने प्रकाशित कर्युं. ते पछी ते प्रतिमा **प्रद्योत** राजाना हाथमां गई. पछी ते प्रतिबिंब दासीए वीतभय नगरमां मूक्युं, अहीं ग्रंथगौरवना भयथी ते कथानुं वर्णन करेल नथी. पण सांभळवानी इच्छावाळा भव्य जनोए ते वात **श्रीवीर** चरित्रमांथी जाणी लेवी. ए प्रमाणे सांभळतां निपुणमति राजा **कुमारपाले** शून्य **वीतभय** नगरमां माणस मोकलीने तरत ते भूमि खोदावी. त्यां भूमिनी अंदर राजमंदिर जोतां तेमांथी जिनबिंब प्राप्त थयुं. एटले भारे हर्षथी अतिशय महोत्सवपूर्वक राजाए ते आर्हत बिंबने पोतानी राजधानीमां लेवडावतां प्रवेश महोत्सव कर्यो अने ते पोताना राजभवनमां स्थापन कर्युं. पछी ते बिंबने योग्य स्फटिक रत्ननो प्रासाद राजाए पोताना महेलमां तैयार करवानो प्रारंभ कर्यो. एटले भाविने जाणनार आचार्य महाराजे तेनो निषेध कर्यो के—'राजभवनमां देवगृह न थाय.' एम गुरुनी आज्ञाने मान आपीने राजाए ते कार्यबंध राख्युं.

ए प्रमाणे श्री जिनशासननी सर्वत्र असाधारण प्रभावना करता अने मिथ्यात्वरूप पर्वतने भेदवामां वज्र समान एवा **श्री हेमचंद्रसूरि** शोभवा लाग्या.

एवामां एक वखते लोलार्क चैत्यनी आगळ क्षेत्रना मंदिरमां मांसथी भरेल रामपात्र दंडाधिपना जोवामां आव्युं, एटले संहार करनार शंकर जेवा **त्रिलोचन** नामना कोटवाळने बताव्युं, त्यारे असंख्य जनोना संचारमां पद (पग) न मळवाथी तपास करतां ते मतिमानने एक उपाय हाथ लाग्यो. पछी तेणे बधा कुंभारोने बोलावीने दरेकने ते रामपात्र बतावतां पूछ्युं के—'आ कोणे बनावेल छे.' त्यारे तेमांनो एक बोल्यो—'ए में बनावेल छे. नडुलेशना **लक्ष** नामना स्थगीधर सेवके तेवां एक सो रामपात्र मारी पासे कराव्यां छे.' पछी तेमने विसर्जन करीने कोटवाले ते वात राजाने निवेदन करी. वळी तेणे **केल्हण** नामना मंडलेश्वरने जणाव्युं के—'आज्ञाभंगना अपराधथी देशने आबाद करवानो तारो प्रयत्न धिक्कारवा लायक छे.' एटले ते बोल्यो के—'हे स्वामिन्! ए शुं? हुं कांई जाणतो नथी.' आथी तेणे कुंभारे कहेल स्थगीधरनुं चरित्र कही संभळाव्युं. जेथी विलक्ष थयेला **लक्ष** स्थगीधरने मारीने तेणे स्वामीने संतोष पमाड्यो. पछी चैत्र, माघ अने आसो महिनाना महोत्सवोमां देवीओ अहिंसाथी प्रमोद पामी.

कारण के **गुणमां मत्सर कोण धारण करे?** एटले कर्पूर प्रमुख भोग, बलि अने मोदकादिकथी संतोष पामेल ते देवीओ बीभत्स, मद्य, मांसमां अनादरवाळी बनी गई. **ते वखते शैवाचार्यो पण मिथ्याधर्ममां आदररहित थया अने वंदन करवा माटे जटामां स्थापनाचार्यने धारण करवा लाग्या.** श्री वीतरागनी पूजा करीने तेओ परमेष्ठि नमस्कार महामंत्रनुं परावर्त्तन करवा लाग्या. कारण के **राजाए मान्य करेल धर्मनो पण लोको आदरथी स्वीकार करे छे.**

सचराचर प्राणीओने अभयदान आपवामां कुशळ, मिथ्यादृष्टिरूप नदीथी पार उतारवाने चरण (शरण) रूप रत्नराशि आपनार, स्व अने पर आगमना प्रगट तत्त्वने जाणनार तथा चंद्रकुळमां मुगट समान एवा **श्री हेमचंद्र** प्रभु जयवंत वर्ते छे. ए आचार्ये **पंचांग व्याकरण, प्रमाणशास्त्र, प्रमाणमीमांसा, छंदशास्त्र अने अलंकार चुडामणि शास्त्रो रच्यां** छे. वळी कवितारूप नदीना उपाध्याय समान **एकार्थ अनेकार्थ, देशीनाममाळा** अने **निघंटु** ए चार शब्दकोश बनाव्या. तेमज जगतनो उपकार करवानी इच्छावाळा तेमणे **त्रिषष्ठि शलाकापुरुषोना चरित्र** तथा गृहस्थ (श्रावक) व्रतना संबंधमां **अध्यात्म-योगशास्त्रनी** रचना करी छे. वळी **व्याकरण अने साहित्यना लक्षणने बतावनार द्व्याश्रय महाकाव्य** बनावेल छे, तेमज वीतरागना अद्‌भुत वीस स्तवनो (**वीतराग स्तोत्र**) रच्यां छे. ए प्रमाणे तेमणे बनावेल ग्रंथो केटला छे, तेनी संख्या मळवी मुश्केल छे तो मारा जेवा मंदबुद्धि ते ग्रंथोना नाम पण क्यांथी जाणता होय? (साडा त्रण क्रोड श्लोक प्रमाण ग्रंथोनी रचना करेल छे. एम श्रुति छे.)

एकदा राजानी आगळ **श्री हेमचंद्र गुरु**ए व्याख्यान करतां **श्री शत्रुंजयनी स्तुति** अने **श्री रैवताचलनी पण स्तुति** करी, एटले तेमना उपदेशरूप दीपकथी अज्ञानरूप अंधकारनो नाश थतां इंद्र समान उज्ज्वळ कीर्तिधारी राजाए तीर्थयात्रा करवानो निश्चय कर्यो. पछी पगे पांच-पांच गाउना प्रयाण करतां, उपानह विना चालता गुरु साथे ते सत्वर वल्लभीपुर पासे आव्या. त्यां तळेटीमां प्रभाते गुरु महाराजे आवश्यक क्रिया करी. एवामां भावनाथी भारे संतुष्ट थयेल अने प्रभुपणाथी अत्यंत विशिष्ट बुद्धि धरावनार राजाए गुरुना चरणे आवीने नमस्कार कर्यां अने आ छेल्ला प्रयाणमां तेणे गुरुभक्तिथी त्यां बे प्रासाद कराव्या. त्यां श्री आदिनाथ प्रमुख त्रेवीस जिनबिंबो करावीने गुरुना हाथे प्रतिष्ठा करावतां त्यां स्थापन कर्यां. पछी अति भक्तिपूर्वक राजाए विमलाचलपर भगवंतने वंदन कर्युं अने पोताना प्रभुत्व प्रमाणे पूजा करीने ते रैवताचल पर गयो. त्यां पगथीया विना ते पर्वत दुरारोह (दुःखे चडी शकाय तेवो) जोईने पोताना वाग्भट मंत्रीने ते पगथीया बनाववा माटे तेणे आदेश कर्यो एटले मंत्रीए ते प्रमाणे सुगम मार्ग तैयार कराव्यो. **ते वखते मोटी-मोटी शिलाओने लीधे पर्वतपर आरोहण करवानुं दुष्कर समजीने राजाए भूमि (तळेटी)मां रहेता ज श्री नेमिनाथ भगवंतनी पूजा करी,** पछी त्यांथी पाछा फरीने राजा पोताना नगरमां आव्यो अने त्यां **जिनयात्रानो महोत्सव** करीने ते पोताने कृतकृत्य मानवा लाग्यो.

ए प्रमाणे विक्रम संवत् ११४५ वर्षे कार्त्तिक मासनी पूर्णिमानी रात्रे **श्री हेमचंद्र प्रभु**नो जन्म थयो तथा ११५०मां तेमणे **व्रत** ग्रहण कर्युं अने संवत् ११६६मां गुरुए तेमने **आचार्यपदे** स्थापन कर्या तेमज १२२९मां वर्षे तेमणे **स्वर्गगमन** कर्युं. ए रीते श्री जिनशासनरूप आकाशमां सूर्य समान श्री हेमचंद्र प्रभुनुं चरित्र के जे मारा जेवा अज्ञजनोना अज्ञानरूप अंधकारने हरनार, विद्यारूप कमलिनीने विकास पमाडनार तथा **श्री कुमारपाल** राजाना जीवनने भारे उन्नतिमां लावनार एवुं ते विश्वविख्यात चरित्र जगतना बोध निमित्ते अने दुष्कर्मने भेदवा निमित्ते थाओ.

श्री चंद्रप्रभसूरिना पट्टरूप सरोवरने विषे हंस समान तथा **श्रीराम** अने **लक्ष्मी**ना पुत्र एवा **श्री प्रभाचंद्रसूरि**ए पोताना विचारपर लेतां, **श्री प्रद्युम्न मुनीश्वरे** संशोधन करेल, श्री पूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे **श्रीहेमचंद्रसूरि**ना चरित्ररूप आ बावीसमुं शिखर पूर्ण थयुं.

इति श्री हेमचंद्रसूरि-प्रबंध

।। समाप्त ।।

प्रशस्ति

सुपात्रोथी देदीप्यमान, कवि, मुनि अने पंडितोथी शोभायमान, राजाओने सेवनीय, सर्व ईष्टार्थ आपनार गुरुरूप कल्पवृक्षथी विराजित, जिनशासनरूप भव्य भूमिने शोभावनार अने अनेक सिद्धिरूप भद्रशाळाने शिर (शिखर) पर धारण करनार एवो **चंद्र (चांद्र)** नामे गच्छ के जे मेरुपर्वतनी तुलनाने धारण करे छे. तेमां पूर्वे **श्रीप्रद्युम्न** नामे आचार्य थया के जे कल्पवृक्षनी एक मोटी शाखा समान हता. वळी जेमना समागमरूप अमृतरसथी पुष्ट बनेला अनेक सुज्ञ मुनिओ आचार्यपदथी विभूषित थई पंडितोमां अधिक माननीय बन्या छे. वळी **अल्लुराजा**नी सभामां दिगंबरनो पराजय थतां तेनो पक्ष पोताना आचार्यने एक पट (वस्त्र) आपवा माटे लई आव्यो. एटले सुज्ञ जनोमां अग्रेसर एवा जे **प्रद्युम्नसूरि**ए बधाना देखतां तेने पोतानो सेवक बनाव्यो. तेमना शिष्य **श्री अभयदेवसूरि** थया के जे भव्यात्माओना मनोवांछित पूरतां भास्करनी जेम पोताना वचनरूप किरणोथी जगतना अंधकारने दूर करता हता. वळी प्रौढ प्रमाणरूप तरंगोयुक्त, जेमणे बनावेल **वादमहार्णव** ग्रंथ ते सांयत्रिक (संसारी जीवो)ने जिनशासनरूप प्रवहण (वहाण) आपे छे. **खरेखर!** ए महा आश्चर्य छे. तेमनी पाटे **श्रीधनेश्वरसूरि** थया के जेओ **त्रिभुवनगिरि**ना स्वामी **श्रीमान् कर्दमभूपति** नामना राजा हता अने त्यारथी ते गच्छ **राजगच्छ** एवा नामथी जगतमां प्रख्यात अने प्रशंसनीय थयो. तेमना पदरूप कमळने विकास पमाडवामां सूर्य समान अने भव्य कमळोने शोभा पमाडनार एवा **श्री अजितसिंहसूरि** थया के जेमनी दिव्य अने देदीप्यमान वचनरचनाने मिथ्यात्वीओ सहन करवाने समर्थ नथी. त्यारपछी कर्क (अर्क) समान अत्यंत तेजस्वी, जिनमत तथा श्री संघना आधाररूप अने समस्त जनोना लग्नदोषने (लागेला दोषने) हरनार एवा **श्रीवर्द्धमानसूरि** थया. तेमना पदे **श्री शीलभद्र सूरि** आव्या के जे तेमना पट्टरूप वृक्षने पोषण आपवामां वर्षाऋतु समान हता. तथा जेमना धर्मोपदेशरूप जळ प्रवाहथी जगतमां कीर्त्तिरूप लता विस्तार पामी. तेमना चरणरूप सरोवरने विषे हंस समान एवा **श्री चंद्रसूरि** थया के जे तेमनी पवित्र वाणीना विवेचक अर्थ प्रकाशक अने शास्त्ररूप चक्षुने अमृत-अंजन हता. वळी संसारथी सत्वर पार पामवाने सदा ध्यानलीन थईने जे रहेता हता, तेमज नैयायिक जनोमां अग्रेसर एवा **श्री भरतेश्वरसूरि,** नामस्मरणथी पातकने हरनार **श्री धर्मघोषसूरि** तथा कल्याणरूप कंदने प्रगट करवामां मेघ समान एवा **श्री सर्वदेवसूरि** ए चार **श्रीशीलभद्रसूरि**ना शिष्यो के जे राजपूजित हता. श्री संघरूप सागरने उल्लास पमाडवामां चंद्रमा समान अने ज्ञानलक्ष्मीना पात्र एवा **श्रीजिनेश्वरसूरि,** विकसित विद्याथी देदीप्यमान अने महाबुद्धिशाळी एवा **श्री जिनदत्तसूरि** तेमज चारित्ररूप कनकाचलने विषे नंदनवन समान एवा **श्री पद्मदेवसूरि** ए त्रण **श्री चंद्रसूरि**ना जयवंत शिष्यो हता. एमना पदे श्री संघरूप रोहणाचलमां रत्न समान एवा **श्री पूर्णभद्रसूरि** थया के जेमना समागममां आवता भव्यजनो सत्यवस्तुस्वरूपने जाणी शकता हता. तेमना पट्टरूप उदयाचलने विषे चंद्रमा समान अने भव्य-चकोर समूहने आनंद पमाडनार **श्रीचंद्रप्रभसूरि** थया के जे अद्‌भुत मतिरूप ज्योत्स्नाना निधान हता. वळी आश्चर्य तो ए छे के जे कलंकना स्थान न हता तथा अज्ञान (राहु) ने ग्राह्य न हता; तेमज ज्ञानसागरने विकास पमाडनार छतां जे दोषाकार (दोषना स्थान) न हता. तेमना चरण-कमळने विषे भ्रमर समान एवा **श्री प्रभाचंद्र** आचार्य थया के जे सदा पंडित छतां

गुरुना क्रम (चरण)मां अनुरक्त हतां. **श्री हेमचंद्र** महाराजे बनावेल परिशिष्ट पर्वमांना चरित्रो पछी **श्रीवज्रस्वामी** प्रमुख आचार्योना चरित्रो के जे दुष्प्राप्य छतां केटलाक ग्रंथो थकी अने केटलाक श्रुतधरोना मुखथी सांभळीने मारी मतिने निर्मळ बनावबा तथा जिज्ञासुओनी इच्छाने पूर्ण करवा माटे आ निर्मळ अने चमत्कारी चरित्रो रचवानो में प्रयास कर्यो छे. ए **चरित्रोमां संप्रदायना भेदने लईने जे कांई स्खलना थई होय,** तो पंडितजनो मारापर प्रसाद लावीने ते संशोधन करीने वांचे. कारण के संयोगवशे जे कांई सांभळतां मने प्राप्त थयुं अने मारा जाणवामां आव्युं, ते पोताना शब्दोमां आ में कथारूपे रचेल छे.

गुफाना रंध्रोमां रहेतां सिद्ध अने किन्नरोने ओळंगीने अग्र शिखरे स्थिति करनार, अत्यंत प्रौढ अर्थसंपत्तिने करनार एवा आ अक्षय निधान ते असाधारण प्रभाथी परज्योतिने पराभव पमाडी पूर्ण प्रकाश पामनार, ते श्रीपूर्वर्षिओना चरित्ररूप रोहणाचलने विषे शरदऋतुना चंद्रमा समान सदा प्रकाशित रहे.

चंद्रमा समान निर्मळ, सुंदर पगले पूर्व पुरुषोना यशने प्रकाशित करनार, ज्ञानलक्ष्मीथी शोभायमान एवा **श्रीप्रद्युम्न गुरुनो** पवित्र बोध के जे आ ग्रंथरूपे गुंथायेल छे अने साक्षरजनोने आदरपात्र छे, ते चिरकाळ जयवंत रहो. विक्रम संवत् १३३४ना चैत्र मासनी शुक्ल सप्तमीए पुनर्वसु नक्षत्र अने शुक्रवारना दिवसे आ पूर्वर्षिचरित्र संपूर्ण थयुं.

पोताना गुरुना शिक्षाप्रसादना वशथी तथा प्रयास करतां अहीं मने जे कंई पुण्य प्राप्त थयुं होय, ते व्याख्यान करवामां तत्पर तथा श्रवणमां आदर धरावनार भव्यात्माओने कल्याण साधवामां असाधारण सहाय करनार थाओ.

ग्रंथाग्र ५७७४ श्लोक जेटलुं आ ग्रंथनुं प्रमाण थयुं.

।। इत्यलम् ।।

।। समाप्त ।।

वस्तु के मुल स्वभाव को, यथार्थ भेदे जान ।
समभावे सभी देखते, सम्यग्दृष्टि वह मान ।।
काच दर्पण में दिखतां, पुद्गल का प्रतिबिंब ।
सम्यग्दर्पण में दिख रहा, आत्म केरा प्रतिबिंब ।।
है आत्म बुद्धि देह में, भव भ्रमण वह करेह ।
आत्मबुद्धि स्वरूप में, भ्रमण दूर करेह ।।
स्व पर के जो भेद का, ज्ञाता दृष्टा होय ।
पर ममता तजे भाव से, निश्चय दर्शन जोय ।।
मिथ्यामत के मोह से, जो भजे रागी देव ।
जयानंद आत्मदेव की, विडंबना नित मेव ।।

संदेश

१) विकारोत्पादक, खान-पान-वेशभूषा, टी.वी., वीडियो, आदि से दूर रहना, परिवार को बचाना और अनाचार की प्रवृत्तियों को घर में प्रविष्ठ न होने देना...

२) शादि-विवाह में जाने से परहेज रखना । जाना ही पड़े तो मौन, निर्लेपभाव को मुख्यता देना....

३) पूर्व पुरुषों की मर्यादाएँ न तूटे इसका ध्यान रखना जैसे घूंघट प्रथा, सदाचारी वेशभूषा आदि....

४) अभक्ष्य, अनंतकाय, रात्रिभोजन से स्वयं बचना, परिवार को बचाना....

५) भीखमंगों के जैसे बूफे भोजन का [illegible] । न खाने जाना, न खिलाना....

गुरु रामचंद्र प्रकाशन समिति द्वारा प्रकाशित साहित्य जैन धर्म की मूलभूत मान्यताओं का प्रचार-प्रसार के सिद्धांत को लेकर ही प्रकाशित किया जा रहा है । आप तक साहित्य निःशुल्क पहुँचाया जा रहा है । आप इसे पढ़ते ही होंगे । पढ़कर आप इसे दूसरों से पढ़वाने का कार्य भी करते होंगे । इस साहित्य के वांचन मनन द्वारा आप सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर शिव पद प्राप्त करें यही.....

-जयानंद

Mesco Prints :
080-22380470